१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥



यह जन्म साखी आज तक छप चुकीं सब जन्म साखीयों
से बड़ी और पुरातन है

भाई बाले वाली

जन्म साखी

श्री गुरू नानक देव जी की

पंजे साहिब की साखी और दसां पातशाहीयों के जीवन सहित
मुकंमल साखीयें हैं

प्रकाशकः–

भा० जवाहर सिंह कृपाल सिंह
पुस्तकां वाले, बाज़ार माई सेवां अमृतसर



१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तसवीरां समेत

भाई बाले वाली जन्म साखी

का

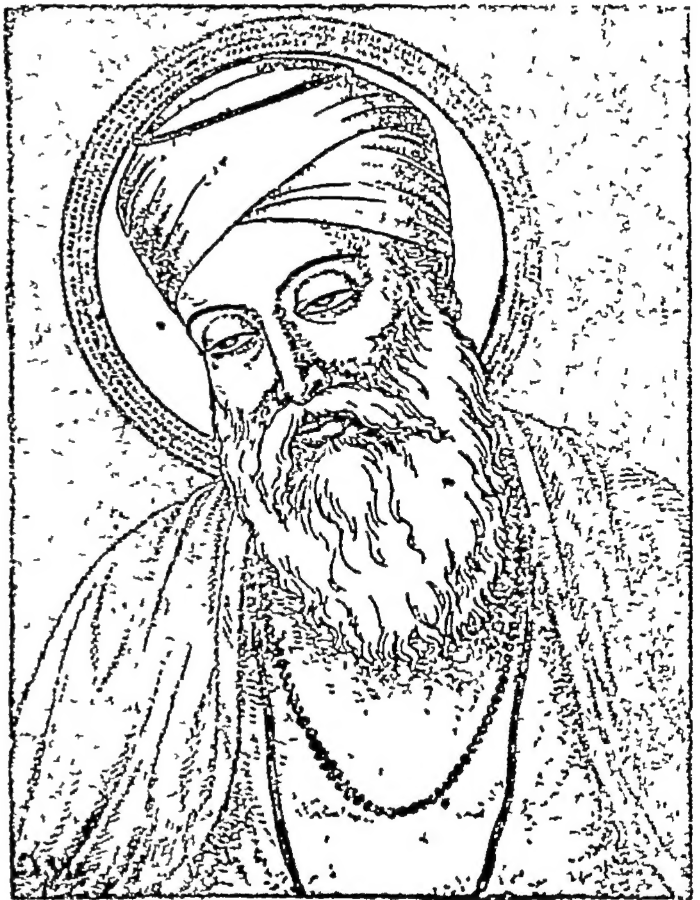
ततकरा

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

अथ जन्म साखी श्री गुरू नानक जी की प्रारंभः ॥

श्री वाहिगुरू जी सहायता करें ।

संवत १५९७ विक्रमीय वैशाख शुक्ल पक्ष की पंचमी को पैड़े मोखे सुलतान पुर के क्षत्री ने पुस्तक लिखी ।



एक दिन श्री गुरू अंगद देव जी खडूर नगर में बैठे थे तथा श्री गुरू नानक जी महाराज के प्रेम का वियोग होने से गुरू महाराज के ध्यान में निमग्न थे । उस समय श्री गुरू अंगद देव जी के हृदय में विचार हुवा, कि मेरे परम पूज्य श्री गुरू नानक देव जी महाराज पूर्ण ब्रह्म रूप पुरुष थे । गुरू जी में तथा परमेश्वर में भेद नहीं है । अब मुझे किसी ऐसे सिख की आवश्यकता है । जो पूज्य गुरू जी की कथा सुनाए ।

उस समय भाई बुडा जी जो गुरू अंगद जी के निकट ही विराजमान थे । कहने लगे, हे गुरुदेव ! इस प्रकार का सिख तो बाला संधू है जो तलवंडी राय भोय में निवास करता है । और एक भाई मरदाना है यह दोनो गुरू नानक जी के साथ रहा करते थे । इनों ने गुरु-लीला देखी है । आप उनको निमंत्रण दें । वह आप को गुरू कथा संपूर्ण सुनायेंगे ।

यह सुन कर गुरु अंगद जी ने बाले का ध्यान किया। उस समय भाई बाला अपने नगर तलवंडी में बैठा था तथा गुरु नानक देव जी की कथा सिखों को सुना रहा था। अचानक बाले ने उन श्रोताओं से पूछा कि हे गुरु जी के प्यारे सिखो। गुरु जी तो वैकुंठ लोक को पधार गये हैं। तो अपनी गद्दी पर किस को नियत कर गये हैं? तब एक प्रेमी नें कहा कि मैनें सुना है कि गुरु जी अपने स्थान पर एक अंगद नाम के त्रिहण क्षत्री को जो फेरु जी का सुपुत्र है नियत कर गये हैं। जब भाई बाला नें यह सुना तो हृदय में गुरु जी के उत्तराधिकारी गुरु अंगद जी के दर्शणों की लालसा उत्पन्न हुई।तथा भाई बाला खडूर की ओर रवाना हुवा। तथा श्रद्धा पूर्वक भेंट लेकर गुरू दर्शणों को चल दिया।

गुरू अंगद देव जी एकांत वास कर रहे थे। बाला पूछता हुवा गुरू जी के निकट उपस्थित हुवा। गुरू अंगद देव ध्यान अवस्था में थे। गुरू जी के चणों में भाई बाले नें नमस्कार किया। गुरू जी ने बाले को उचित स्थान पर बैठने का संकेत किया। फिर गुरू जी बाले के साथ वार्तालाप करने लगे। गुरू जी बोले। हे सज्जन आप कहां से आ रहे हो? और अपनें आने का कारण तथा अपना पूर्ण परिचय दो।

बाला कहनें लगा—हे गुरू देव। मैं जाति का जाट हूं मेरा गोत्र संधू है। तथा राय भोय की तलवंडी का रहने बाला हूँ मेरा नाम बाला है। तथा आप के दर्शणों को उपस्थित हुवा हूं। उत्तर में गुरू जी नें कहा कि आप का गुरू कौन है। नेत्रों में प्रेम आंसू भर कर बाले नें कहा कि मेरे पूज्य गुरू देव श्री कालू वेदी जी के सुपुत्र श्रद्धास्पद गुरू नानक देव जी महा-राज हैं। अंगद जी नें प्रश्न किया हे बाला। आप नें गुरू नानक देव जी का दर्शण तो किया ही होगा। तब बाले ने कहा हे महाराज। गुरू नानक देव जी मुझ से तीन वर्ष आयु में बड़े थे। मैं गुरू जी के ही पवित्र चरणों में रहा हूं। देशांतरों का भ्रमण भी मैंनें गुरू देव के साथ ही किया है। गुरू जी नें अनेक प्राणीयों का उद्धार किया है। गुरू जी के साथ रहते हुवे

भी हम उन को पूर्णतथा पहिचान नहीं सके। केवल देश देशांतरों का भ्रमण ही हमारा ध्येय रहा। यह सुन कर गुरू अंगद जी के हृदय से वैराग्य छूट गया। तथा नेत्रों से जलधारा बहने लगी। कुछ काल निस्तब्धता रहने के पश्चात रात्री हो गई। भाई बाला आज्ञा लेकर निवास करने गया।

दूसरे दिन गुरू जी नें भाई बाले को बुलाकर अपनें कंठ से लगा कर आदर सहित बैठा कर पूछा—हे बाला। आप को यह तो ध्यान होगा, कि गुरू नानक देव जी का जन्म किस दिन हुवा था। बाले नें हाथ जोड़ कर कहा—हे महाराज। मुझे अच्छी तो स्मर्ण नहीं। अपितु लोग कहते थे कि श्री गुरू नानक देव जी का जन्म कार्तिक शुक्ल पक्ष की पूरण माशी के दिन हुया था मैंनें गुरू जी की जन्म पत्रिका श्री कालू जी से (गुरू नानक देव जी के पिता) देखी थी। जो पंडित हरदयाल ने लिखी थी। हरदयाल ने फलादेश कहते हुए कहा था कि यह बालक जो श्री कालू जी के घर उतपन्न हुआ है इसके ग्रह ऐसे हैं जिसे मैं पूर्ण अवतार कह सकता हूं। अर्थात यह बालक (गुरू नानक) ईश्वर अवतार है। यह सुनकर गुरू अंगद जी ने कहा। हे बाला! वह जन्म पत्री क्या हमें प्राप्त हो सकती है? तब बाले ने कहा कि यदि उस जन्म पत्री की देख भाल की जाए तो आशा है कि मिल ही जायेगी। तब गुरू जी ने कहा हे बाला! आप तो उसी नगर के निवासी हैं। सो इस कार्य को आप ही कर सकते हो। बाले ने कहा हे गुरु देव! कालू वेदी तो स्वर्ग सिधार चुका है। उसका भाई जिस का नाम लालू जी है। उस से पता चल सकता है। तब गुरू जी ने कहा कि यह काम आप ही कर सकते हो। बाले ने कहा कि एक पुरुष आप का यदि मेरे साथ हो तो हम दोनों लालू जी से प्रार्थना करें। कि हे वेदी जी! आप की तो अब वृद्धावस्था है। तथा गुरू नानक की आप पर अत्यंत कृपा रही है। इस समय हमने गुरू जी के उत्तराधिकारी प्राप्त कर लिये हैं। सो कृपया गुरू जी की जन्म पत्रिका हमें दे दो। गुरू जी के उत्तराधिकारी का शुभ नाम श्री गुरू अंगद देव जी है। तथा खडूर में विराज रहे हैं। श्री गुरू

यह सुन कर गुरु अंगद जी ने बाले का ध्यान किया। उस समय भाई बाला अपने नगर तलवंडी में बैठा था तथा गुरु नानक देव जी की कथा सिखों को सुना रहा था। अचानक बाले ने उन श्रोताओं से पूछा कि हे गुरु जी के प्यारे सिखो। गुरु जी तो वैकुंठ लोक को पधार गये हैं। तो अपनी गद्दी पर किस को नियत कर गये हैं? तब एक प्रेमी नें कहा कि मैंनें सुना है कि गुरु जी अपने स्थान पर एक अंगद नाम के त्रिहण क्षत्री को जो फेरु जी का सुपुत्र है नियत कर गये हैं। जब भाई बाला नें यह सुना तो हृदय में गुरु जी के उत्तराधिकारी गुरु अंगद जी के दर्शणों की लालसा उत्पन्न हुई।तथा भाई बाला खडूर की ओर रवाना हुवा। तथा श्रद्धा पूर्वक भेंट लेकर गुरू दर्शणों को चल दिया।

गुरू अंगद देव जी एकांत वास कर रहे थे। बाला पूछता हुवा गुरू जी के निकट उपस्थित हुवा। गुरू अंगद देव ध्यान अवस्था में थे। गुरू जी के चर्णों में भाई बाले नें नमस्कार किया। गुरू जी ने बाले को उचित स्थान पर बैठने का संकेत किया। फिर गुरू जी बाले के साथ वार्तालाप करने लगे। गुरू जी बोले। हे सज्जन आप कहां से आ रहे हो? और अपनें आने का कारण तथा अपना पूर्ण परिचय दो।

बाला कहनें लगा—हे गुरू देव। मैं जाति का जाट हूं मेरा गोत्र संधू है। तथा राय भोय की तलवंडी का रहने बाला हूँ मेरा नाम बाला है। तथा आप के दर्शणों को उपस्थित हुवा हूं। उत्तर में गुरू जी नें कहा कि आप का गुरू कौन है। नेत्रों में प्रेम आंसू भर कर बाले नें कहा कि मेरे पूज्य गुरू देव श्री कालू वेदी जी के सुपुत्र श्रद्धास्पद गुरू नानक देव जी महा- राज हैं। अंगद जी नें प्रश्न किया हे बाला। आप नें गुरू नानक देव जी का दर्शण तो किया ही होगा। तब बाले ने कहा हे महाराज। गुरू नानक देव जी मुझ से तीन वर्ष आयु में बड़े थे। मैं गुरू जी के ही पवित्र चरणों में रहा हूं। देशांतरों का भ्रमण भी मैंनें गुरू देव के साथ ही किया है। गुरू जी नें अनेक प्राणीयों का उद्धार किया है। गुरू जी के साथ रहते हुवे

भी हम उन को पूर्णतथा पहिचान नहीं सके। केवल देश देशांतरों का भ्रमण ही हमारा ध्येय रहा। यह सुन कर गुरू अंगद जी के हृदय से वैराग्य छूट गया। तथा नेत्रों से जलधारा वहने लगी। कुछ काल निस्तब्धता रहने के पश्चात रात्री हो गई। भाई बाला आज्ञा लेकर निवास करने गया।

दूसरे दिन गुरू जी नें भाई बाले को बुलाकर अपनें कंठ से लगा कर आदर सहित बैठा कर पूछा–हे बाला। आप को यह तो ध्यान होगा, कि गुरू नानक देव जी का जन्म किस दिन हुवा था। बाले नें हाथ जोड़ कर कहा–हे महाराज। मुझे अच्छी तो स्मर्ण नहीं। अपितु लोग कहते थे कि श्री गुरू नानक देव जी का जन्म कार्तिक शुक्ल पक्ष की पूरण माशी के दिन हुया था मैंनें गुरू जी की जन्म पत्रिका श्री कालू जी से (गुरू नानक देव जी के पिता) देखी थी। जो पंडित हरदयाल ने लिखी थी। हरदयाल ने फलादेश कहते हुए कहा था कि यह बालक जो श्री कालू जी के घर उतपन्न हुआ है इसके ग्रह ऐसे हैं जिसे मैं पूर्ण अवतार कह सकता हूं। अर्थात यह बालक (गुरू नानक) ईश्वर अवतार है। यह सुनकर गुरू अंगद जी ने कहा। हे बाला! वह जन्म पत्री क्या हमें प्राप्त हो सकती है? तब बाले ने कहा कि यदि उस जन्म पत्री की देख भाल की जाए तो आशा है कि मिल ही जायेगी। तब गुरू जी ने कहा हे बाला! आप तो उसी नगर के निवासी हैं। सो इस कार्य को आप ही कर सकते हो। बाले ने कहा हे गुरु देव! कालू वेदी तो स्वर्ग सिधार चुका है। उसका भाई जिस का नाम लालू जी है। उस से पता चल सकता है। तब गुरू जी ने कहा कि यह काम आप ही कर सकते हो। बाले ने कहा कि एक पुरुष आप का यदि मेरे साथ हो तो हम दोनों लालू जी से प्रार्थना करें। कि हे वेदी जी! आप की तो अब वृद्धावस्था है। तथा गुरू नानक की आप पर अत्यंत कृपा रही है। इस समय हमने गुरू जी के उत्तराधिकारी प्राप्त कर लिये हैं। सो कृपया गुरू जी की जन्म पत्रिका हमें दे दो। गुरू जी के उत्तराधिकारी का शुभ नाम श्री गुरू अंगद देव जी है। तथा खडूर में विराज रहे हैं। श्री गुरू

नानक तथा श्री गुरू अंगद में कोई अंतर नहीं है।

हे लालू जी! प्रेमी जनता कि कहने से गुरू अंगद जी ने पत्री लाने का कार्य मुझे सौंपा है। कृपया गुरू नानक देव जी की जन्म पत्रिका आप मुझे दें।

इस प्रकार में लालू जी से आग्रह करूंगा। आशा है कि इस सेवा कार्य में मुझे सफलता प्राप्त होगी।

यह सुन कर अंगद जी ने प्रसन्न होकर कहा कि आप जिस को अपने साथ ले जाना चाहें ले जायें। तब बाला ने कहा कि जिसे आप उचित समझें मेरे साथ भेज दें। तब गुरू जी ने एक जाट जिस का नाम लाले पुनु था बुलाया और कहा कि भाई आप इस बाला जी के साथ जायें। तथा तलवंडी से श्री गुरू नानक देव जी की जन्म पत्रिका ले आयें।

यह सुन कर लाले पुनु ने कहा कि हमारे अहोभाग्य हैं जो हम श्री गुरु नानक देव जी महाराज की जन्म पत्री का दर्शन करेंगे। यह हमें गुरु जी का ही दर्शन होगा। यह कह कर बाला और लाला पुनु तलवंडी में आये। और महिता लालू के निकट आकर प्रार्थना की। कि आप कृपया गुरु जी की जन्म पत्रिका हमें दे दीजीये। क्योंकि पत्रिका श्री गुरु अंगद जी ने मांगी है। हम ने सतिगुरु नानक देव जी के उतराधिकारी प्रयत्न से पाये हैं। यह सुन लालू ने कहा कि गुरु नानक की जन्म पत्रिका मेरे पास नहीं है। तब बाले ने कहा कि आप कालू जी के भाई हैं पत्रिका को घर में देखो क्योंकि कालू जी और माता जी यह तो वैकुंठ को सिधार गये हैं। अब तो केवल आप ही इस घर में हैं। तब लालू जी ने कहा हे बाला! इस समय नानक देव जी का एक तू ही मित्र है। गुरु नानक की गदी पर तो बाबा श्री चंद जी हैं। और तुम तो किसी और ही का नाम ले रहे हो। जो अंगद कहते हो। बाला कहने लगा कि मैं सत्य कहता हूं कि गुरु नानक जी ने स्वयं अपने कर कमलों से पांच पैसे और नारयल रख कर श्री अंगद देव जी को अपना उत्तराधिकारी था इस लिये गुरु नानक जी

के स्थान में केवल श्री अंगद जी ही एक गुरु हैं। बाकी श्री चंद जी की पूजा केवल प्रथम गुरु पुत्र होने के नाते ही होगी।

तब लालू जी ने कहा कि भाई कालू और माता जी तो स्वर्ग सिधार चुके हैं। अब मैं घर में कहीं देखूंगा। यह कह कर लालू जी घर में पत्री को खोजने लगे। अनेकों कागज़ देखे। पांच दिन के पीछे पत्रिका मिल गई। जो भाई को दे दी गई, लाले पुनु ने कहा कि अब आप भी मेरे साथ ही गुरू अंगद जी के निकट चलें। बाले ने स्वीकार किया। जब लाला पुनु और बाला चलने लगे। तब लालू जी ने कहा कि आप तो पत्री लेकर चल पड़े हो। मैं चाहता हूँ कि कुछ भेंट गुरु जी के लिये मेरी ओर से लेते जायें। तब बाला जी ने कहा कि जो कुछ आप देना चाहें दें। तब लालू जी ने भेंट करने के लिये पांच पैसे और एक नारयल दिया। और कहा कि वस यह भेंट मेरी ओर से गुरु चर्णों में अर्पण करके श्रद्धा से नमस्कार करना। तथा प्रार्थना करनी कि यदि श्री चंद जी कुछ कहें तो धैर्य से काम लेना। उत्तर में बाला जी ने कहा कि आप चिंता न करें। श्री गुरू अंगद देव परम शांत स्वरूप हैं।

यह कह कर बाला और लाला पुनु खडूर में वापस आ गये। तथा श्री गुरू जीके आगे जन्म पत्री रखी लालू जी की दी हुई भेंट रख कर नमस्कार किया। इस पर गुरू जी ने प्रसन्न होकर वाले और लाला पुनु को आशीर्वाद दिया। और कहा कि तुमारे प्रयत्न से आज हमने श्री गुरू अंगद देव जी का दर्शन प्राप्त किया है। नानक देव जी की जन्म पत्रिका को नेत्रों से लगाया और शिर पर धर कर सन्मान किया। जब पत्रिका खोल कर देखी तो उस के अच्तर हिंदी में देख कर कहा कि कोई ऐसा पुरुष हो जो दोनो में लिख सकता हो। यह सुन कर एक पुरुष जिसका नाम महिमा खैहरा जाट था कहने लगा। उस के घर में गुरु अंगद देव जी निवास करते थे। वह कहने लगा कि सुलतान पुर में पैड़ा मोखा च्त्री है। वह दोनो प्रकार के अच्तर लिख पढ़ सकता है। तब गुरु जी ने कहा कि उस

को जरूर ही यहां लाना चाहिये तब महिमा गुरु जी की आज्ञा से सुलतान पुर गया और पैड़े मोखे को लेकर आ गया। उस ने गुरु चर्णों में प्रणाम किया। गुरु जी ने आशीर्वाद देकर उसे गुरु नानक जी की जन्म पत्री दिखाई। उस ने इस प्रकार पढ़ कर सुना दी जैसे उसे कंठ ही होती है। गुरु अंगद जी बहुत ही प्रसन्न हुवे। फिर आज्ञा दी कि यह जन्म पत्रिका आप गुरमुखी अक्षरों में कर दें। तब भाई पैड़े ने कहा कि आप कागज़ कलम दुवात वगैरा मंगवा दें तो दास इसे गुरमुखी में करने को तैयार है। गुरु जी ने कागज़ आदिक मंगवा दिये, तो वह जन्म पत्रिका लिखने लगा बाले संधू का कहना है कि गुरमुखी अक्षर श्री गुरू नानक देव जी ने बनाये तथा श्री गुरू अंगद देव जी ने इन का प्रचार किया। यह एक बहुत भारी संसार पर गुरू जी का उपकार है। क्योंकि संस्कृत भाषा का समझना साधारण जनता के लिये अत्यंत कठिन था तथा गुरमुखी भाषा सुगम है। श्री गुरू नानक देव जी जानते थे कि कलियुग के जीव अल्प बुद्धि होने से संस्कृत नहीं पढ़ सकेंगे। उनों ने गुरमुखी अक्षरों की रचना करके संसार का कल्यान किया है। गुरू जी ने गुरमुख मार्ग निर्माण करके संसारी जीवों के कल्याण की गाड़ी उस पर चलाई। मुमुक्षु नरनारी इस मार्ग को अपना कर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं गुरमुखी भाषा सुगम कल्याण कारी मार्ग है संदेह नहीं। धन्य गुरू देव ॥

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साखी श्री गुरू नानक देव जी के अवतार धारने की ॥



श्री गुरू नानक देव जी की जन्म पत्रिका लिखने की विधि गुरू अंगद जी के दीवान में भाई बुढा जी से आदि ले कर बहुत से श्र सिख

उपस्थित थे। तब भाई पैड़ा मोखा लिखने लगा।

विक्रमीय संवत १५२६ कार्तिक मास की पूरनमाशी के दिन श्री गुरू नानक देव जी महाराज का जन्म हुवा। उस समय आधी रात्री से एक घड़ी ऊपर थी। नक्षत्र अनुराधा था। महूर्त अत्यंत शुभ था। राय भोय भट्टी की तलवंडी में माता त्रिप्ता के गर्भ से श्री कालू वेदी के गृह में गुरू प्रकट हुवे। कालू जी ने पुत्र जन्म सुन कर अपने घर के पुरोहित जिस का नाम पंडित हरदयालु था। उस के घर जा कर नमस्कार कर के कहा कि पंडित जी आप की कृपा से मेरे गृह विषे पुत्र उत्पन्न हुवा है। आप मेरे गृह में चलकर बालक की जन्म पत्रिका लिखें। पंडित जी ने कहा कि मैं पूजा पाठ करके आप के घर में आता हूं। आप चलें। कालू जी अपने घर पर आ गये। दो घंटे दिन चढ़ने के पश्चात पंडित हरदयालु जी कालू के घर में पधारे। कालू जी ने पंडित जी का उचित सत्कार किया। और सुंदर आसन पर बैठाया। पंडित जी ने कहा। हे कालू! आप कागज़ केसर वगैरा ले आओ तब कालू जी कागज़ केसर चावल गुड़ आदिक थाली में धर कर ले आये।

पंडित जी ने कहा हे कालू! आप यह बताओ कि बालक ने जन्म समय में क्या कुछ शब्द किया तथा समय कौन था। कालू जी कहने लगे कि उस समय दो पहर रात्री व्यतीत हुवे अभी एक घड़ी व्यतीत हुई थी। तथा लड़के ने क्या शब्द किया यह मुझे स्मर्ण नहीं है। पंडित ने कहा दाई को बुलाओ। जब दौलतां नाम की दाई आई तो उससे पंडित जी ने पूछा कि हे दाई! लड़का जन्म समय किस शब्द द्वारा जन्मा था? तब दाई ने कहा-पंडित जी! मेरे हाथों अनेक बालक पैदा हुवे हैं। परंतु यह बालक तो अलौकिक ही है। इस बालक ने जन्म लेते समय इस प्रकार किया है। जैसे कोई बुद्धिमान पुरुष प्रथम मिलाप पर हंस कर मिलता है। मुझे इस बालक के जन्म की हैरानी हो रही है। पंडित जी ने कहा हे कालू जी! यह बालक सताईसवें नक्षत्र में पैदा उत्पन्न हुवा है यदि रात्री के प्रथम दो पहर में जन्मा है तो यह धनी होगा यदि दो पहर के पश्चात जन्म लिया है तो

को जरूर ही यहां लाना चाहिये तब महिमा गुरु जी की आज्ञा से सुलतान पुर गया और पैड़े मोखे को लेकर आ गया। उस ने गुरु चर्णों में प्रणाम किया। गुरु जी ने आशीर्वाद देकर उसे गुरु नानक जी की जन्म पत्री दिखाई। उस ने इस प्रकार पढ़ कर सुना दी जैसे उसे कंठ ही होती है। गुरु अंगद जी बहुत ही प्रसन्न हुवे। फिर आज्ञा दी कि यह जन्म पत्रिका आप गुरमुखी अक्षरों में कर दें। तब भाई पैड़े ने कहा कि आप कागज़ कलम दुवात वगैरा मंगवा दें तो दास इसे गुरमुखी में करने को तैयार है। गुरु जी ने कागज़ आदिक मंगवा दिये, तो वह जन्म पत्रिका लिखने लगा बाले संधू का कहना है कि गुरमुखी अक्षर श्री गुरू नानक देव जी ने बनाये तथा श्री गुरू अंगद देव जी ने इन का प्रचार किया। यह एक बहुत भारी संसार पर गुरू जी का उपकार है। क्योंकि संस्कृत भाषा का समझना साधारण जनता के लिये अत्यंत कठिन था तथा गुरमुखी भाषा सुगम है। श्री गुरू नानक देव जी जानते थे कि कलियुग के जीव अल्प बुद्धि होने से संस्कृत नहीं पढ़ सकेंगे। उनों ने गुरमुखी अक्षरों की रचना करके संसार का कल्यान किया है। गुरू जी ने गुरमुख मार्ग निर्माण करके संसारी जीवों के कल्याण की गाड़ी उस पर चलाई। मुमुक्षु नरनारी इस मार्ग को अपना कर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं गुरमुखी भाषा सुगम कल्याण कारी मार्ग है संदेह नहीं। धन्य गुरू देव ॥



१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साखी श्री गुरू नानक देव जी के अवतार धारने की ॥

श्री गुरू नानक देव जी की जन्म पत्रिका लिखने की विधि गुरू अंगद जी के दीवान में भाई बुढा जी से आदि ले कर बहुत से -

उपस्थित थे। तब भाई पैड़ा मोखा लिखने लगा।

बिक्रमीय संवत १५२६ कार्तिक मास की पूरनमाशी के दिन श्री गुरू नानक देव जी महाराज का जन्म हुवा। उस समय आधी रात्री से एक घड़ी ऊपर थी। नक्षत्र अनुराधा था। महूर्त अत्यंत शुभ था। राय भोय भट्टी की तलवंडी में माता त्रिप्ता के गर्भ से श्री कालू वेदी के गृह में गुरू प्रकट हुवे। कालू जी ने पुत्र जन्म सुन कर अपने घर के पुरोहित जिस का नाम पंडित हरदयालु था। उस के घर जा कर नमस्कार कर के कहा कि पंडित जी आप की कृपा से मेरे गृह विषे पुत्र उत्पन्न हुवा है। आप मेरे गृह में चलकर बालक की जन्म पत्रिका लिखें। पंडित जी ने कहा कि मैं पूजा पाठ करके आप के घर में आता हूं। आप चलें। कालू जी अपने घर पर आ गये। दो घंटे दिन चढ़ने के पश्चात पंडित हरदयालु जी कालू के घर में पधारे। कालू जी ने पंडित जी का उचित सत्कार किया। और सुंदर आसन पर बैठाया। पंडित जी ने कहा। हे कालू! आप कागज़ केसर वगैरा ले आओ तब कालू जी कागज़ केसर चावल गुड़ आदिक थाली में धर कर ले आये।

पंडित जी ने कहा हे कालू! आप यह बताओ कि बालक ने जन्म समय में क्या कुछ शब्द किया तथा समय कौन था। कालू जी कहने लगे कि उस समय दो पहर रात्री व्यतीत हुवे अभी एक घड़ी व्यतीत हुई थी। तथा लड़के ने क्या शब्द किया यह मुझे स्मर्ण नहीं है। पंडित ने कहा दाई को बुलाओ। जब दौलतां नाम की दाई आई तो उससे पंडित जी ने पूछा कि हे दाई। लड़का जन्म समय किस शब्द द्वारा जन्मा था? तब दाई ने कहा-पंडित जी! मेरे हाथों अनेक बालक पैदा हुवे हैं। परंतु यह बालक तो अलौकिक ही है। इस बालक ने जन्म लेते समय इस प्रकार किया है। जैसे कोई बुद्धिमान पुरुष प्रथम मिलाप पर हंस कर मिलता है। मुझे इस बालक के जन्म की हैरानी हो रही है। पंडित जी ने कहा हे कालू जी! यह बालक सताईसवें नक्षत्र में पैदा उत्पन्न हुआ है यदि रात्री के प्रथम दो पहर में जन्मा है तो यह धनी होगा। यदि दो पहर के पश्चात जन्म लिया है तो

वह रात्री एक महान रात्री है। इस के शिर पर छत्र झूलेगा। मुझे अब यह ध्यान है कि वह कौन सा छत्र होगा। जो इस बालक के शिर पर होगा मैं चाहता हूं कि आप के इस बालक को मैं एक बार देख लूंगा तब काल जी ने बालक को पंडित जी के साहमणे लाने के लिये मांगा। तब त्रिपता जी ने कहा कि शीत अधिक है। इस लिये बालक को बाहर ले जाना उचित नहीं।

जब पंडित जी ने बालक का कष्ट अपने ऊपर लिया। तब माता त्रिपता जी मान गये! अतः वस्त्र के भीतर बालक को अच्छी प्रकार लपेट कर कालू जी बाहर ले कर आ गये। पंडित त्रिकालज्ञ था। उस ने बालक देख कर सन्मान के लिये उठ कर बालक को दंडवत प्रणाम किया तथा भली प्रकार देख कर कहा कि अब आप इसे भीतर ले जायें लड़के को कालू ने भीतर जा दिया। तथा स्वयं पंडित जी से लड़के के नाम करण के लिये अनुरोध किया। तथा ग्रहों की दशा का फल सुनना चाहा। पंडित जी ने कहा। हे कालू जी। मैं इस लड़के के बारे जल्दी नहीं कर सकता। कुछ काल सोच कर उतर दूंगा। जब त्रियोदश दिन व्यतीत होंगे तब इस लड़के का नाम रखूंगा और इसे चोला भी पहनाऊँगा। यह कह कर पंडित जी चले गये। और तेरह दिन इसी सोच में पड़े रहे।

दिन जाते देर नहीं लगती। तेरह दिनों के पश्चात पंडित जी कालू वेदी के घर में आये शुभ लग्न देख कर बालक को चोला पहना कर उस का नाम "नानक निरंकारी" रक्खा। इस नाम पर कालू जी ने आपती की और कहा हे पंडित जी यह नाम तो हिंदू और मुसलमानों का मिला जुला सा नाम है। नाम कोई और ही होना चाहिये। पंडित जी ने उतर दिया वेदी जी यह आप का पुत्र दिव्य ज्योति का अवतार है। ऐसा अवतार आज तक नहीं हुवा। रामचंद्र कृष्ण चंद्रादिक जितने भी अवतार हुवे हैं उनकी पूजा हिंदू करते हैं। परंतु इस का पूजन हिंदू और मुसलमान दोनो ही करेंगे। इस का प्रताप सूर्य की भांति चमकेगा। जल स्थल तथा नभ इस

की स्तुति से भर जायेंगे। यदि यह बालक समुद्र तट पर जायगा। तो सागर भी इस के लिये मार्ग छोड़ देगा। कहां तक कहा जाय यह बालक अद्वितीय होगा और एक पूरण ब्रह्म की पूजा तथा स्मर्ण का प्रचार करेगा। यह बालक पूर्ण धर्मात्मा तथा ग्यान वैराग्य का अद्वितीय ग्याता होगा। परमात्मा के बिना और किसी की पूजा नहीं करेगा। हे परम मित्र वेदी! मुझे अब यह चिंता है कि इस लड़के के प्रताप का जब सूर्य चमकेगा। उस समय स्यात हम रहें अथवा न रहें। यह बालक पूर्ण अवतार है। नवनाथ चौरासी सिद्ध तथा बावनबीर और चौसठ योगनीयें भूत प्रेत देवता दानव देवीयें रिषिमुनि तथा पीर पैगंबर सभी इस की आग्या शिरोधार्य करेंगे। बालक साधारण बालक नहीं। वह जगत निर्माता स्वयं अवतार धार कर संसार का कल्यान करने के लिये प्रकट हुवा है। इस प्रकार कह कर पंडित जी अपने घर को गये।

इधर कालू जी अत्यंत प्रसन्न हुवे। घर में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी। बालक के जन्मोत्सव की प्रसन्नता में वस्त्र अन्न स्वर्ण और गाय आदि अनेक प्रकार के दान किये। अनेक नरनारी कालू जी तथा त्रिप्ता जी को वधाई देने आने लगे। सब का उचित सन्मान किया गया।



अथ साखी दूसरी २॥

गुरू जी ने बालकों के साथ खेलना॥

आनंद मंगल के दिन शीघ्र ही व्यतीत हो जाते हैं। अब श्री नानक देव जी महाराज पांच वर्ष की आयु को प्राप्त हो गये। भाई बाला जी कहने लगे। जब नानक देव पांच वर्ष के हुवे तो सम वयस्क बालकों के साथ खेलने लगे। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"। इस उक्ति के अनुसार नानक देव जी भी

वस्तु घर से ले जाते। वह सब निर्धनों को बांट देते थे। उस के हृदय में दया तथा करुणा का सागर लहरें मारता था।

एक दिन किसी बहु मूल्य वस्तु को नानक ले गये। और वह एक अपाहज निर्धन को दे आये। इस पर कालू जी कुछ क्रुद्ध होकर पंडित हरदयाल जी के घर गये। तथा कहने लगे। पंडित जी! आप ने तो कहा था कि यह बालक छत्र पति होगा। परंतु यह तो घर ही साफ करने लगा है। छत्र पति क्या होगा? पंडित ने कहा–मेहता जी, आगे आगे देखना होता है क्या। जब इस बालक के वे दिन आयेंगे, तब आप ने हम जैसों से तो बात भी नहीं करनी।

नानक देव जी का बालकों के साथ खेलना भी विलक्षण ही था। आप जब कहीं बैठते तो सिद्धों की भांति चौंकड़ा मार कर बैठते थे। और जब बातें करते तो सिवाय ईश्वर चर्चा के और कोई बात नहीं करते थे। जिस में भक्ति भाव ही प्रधान विषय होता था। नानक को देख कर हिंदु अनुमान करते थे कि यह बालक कोई देवता है। तथा मुसलमान उसे कोई पैग़ंबर खयाल करते थे।

जब नानक देव सात वर्ष की अवस्था में पहुंचे तब कालू जी ने पंडित जी से प्रार्थना की कि आप कृपया महूर्त देखकर बतायें कि नानक को किस दिन अक्षरारंभ करवाया जाये। पांधा जी ने पत्री देखकर कहा कि मेहता जी! आज का दिन अत्यंतुत्तम है क्योंकि आज मार्ग शीष का मास है। और तिथी पंचमी है। वार भी बृहस्पति उत्तम है। क्योंकि शास्त्र ने कहा है कि विद्यारंभे गुरू यथा अरथात विद्या आरंभ करने के समय गुरू वार उत्तम होता है। इसी प्रकार रोहिनी नक्षत्र भी बहुत उत्तम है। यह सुन कर बेदी जी अपने घर गये।

अब कालू जी ने पंडित जी के लिये दक्षिणा तथा तिलक पुष्प माला आधिक लेकर और नानक देव को संग लेकर पंडित जी के घर की ओर प्रस्थान किया।

पंडित जी के साहमने नानक जी को बैठा कर कालू जी ने कहा बेटा नानक ! अब तूं अपने इस गुरू जी से अत्तरों का बोध प्राप्त कर ।

उस वेले पांधे ने श्री गणेश पूजा करके फिर नानक की पट्टी के ऊपर कुछ अत्तर लिख दिये । जब नानक का ध्यान अत्तरों की ओर हुवा । तब कालू जी प्रसन्न होकर अपने घर की ओर आ गये । समस्त दिन नानक जी पढ़ते रहे । जब सायंकाल होने लगा । तब छुट्टी लेकर नानक देव घर को आ गये । नानक को पढ़कर आते देख कर माता जी अत्यंत ही प्रसन्न हुई । पुत्र का माथा चूमा । और प्रेम पूर्वक अपनी गोदि में बैठा लिया । प्यार करने के पश्चात भोजन करवाया । तथा रात्री को शयन किया ।

प्रातःकाल नानक देव जागे । माता जी ने हाथ मुख धुलाया । नित्य कर्म से फारुग होकर नानक देव अपने पिता जी के साथ पाठशाला की ओर गये । पंडित जी ने नियम के अनुसार फिर पट्टी लिख दी । तब नानक देव ने कहा कि-हे पंडित जी ! आप कुछ पढ़े लिखे हो अथवा नहीं ? पंडित ने कहा हम तो बहुत कुछ जानते हैं । जमां-खर्च-लेन- देन आदिक प्रत्येक विद्या हमें कंठस्थ है । फिर पूजा पाठ वेद उपनिषद आदिक भी हमें याद हैं । तब नानक जी ने कहा हे पंडित जी ! इस विद्या के साथ तो बंधन होता है । अरथात यह विद्या बाद रूप है । उत्तर में पंडित कहने लगा कि और कौन सी विद्या है । जिस से बंधन न हो ? यदि तुझे कुछ ग्यान है तो मुझे बता । यह समस्त संसार तो इसी विद्या के पढ़ने में कल्यान समझता है ।

पंडित गोपाल को संवत १५३३ मार्ग शीर्ष शुकला सप्तमी को श्री नानक देव ने निम्न लिखित श्लोक कहा ।

श्री राग महला १ ॥

जालु मोहु घसि मसु करि मति कागद कर सारु ॥ भाउ कलम
करि चितु लिखारी गुर पुछि लिखु बिचारु ॥ लिखु नाम सालाह
लिखु अंत न पारावार ॥ बाबा इहु लेखा लिख जाए ॥
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होय सच्चा निसानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥



अथ साखी
पांधे के साथ उपदेशादि ॥

श्री नानक देव जी ने कहा कि पांधा जी ! और पढ़ना लिखना सभी बाद में है । पढ़ना तो सार है । अपितु यह जो संसार की पढ़ाई है । वह तो दीये की कालख (स्याही) तथा कागज़ सन का और कलम काने की इस को लिखने वाला मन है । इस ने लिखा तो क्या लिखा ? केवल माया जंजाल ही लिखा है इसी के लिखने से इस जीव को माया जाल पड़ता है । और बंधन का हेतु है । और विकार उत्पन्न होते हैं । तथा जो सत्य की लीपि है । वह माया के जाल को तथा मोह के जाल को समाप्त करने की स्याही है । तथा उस लीपि के भीतर जो प्रीति भाव है । वह एक लेखनी के तुल्य है । तथा निर्मल मति ही पवित्र कागज़ है । महात्माओं से प्रथम समझ कर जब भी लिखने को यह जीव उद्यत होता है। तो बस वह परमात्मा का नाम ही लिखता है । इस लेख से संसार के सभी विकार नष्ट हो जाते हैं । तथा लोक परलोक उज्वल होता है । उस अपार ईश्वर का पार नहीं पाया जाता। और उसके गुण अंत से रहित हैं । हे पांधा जी ! मुझे तो इस प्रकार का पढ़ना रुचिकर है । और जो विद्या आप को आती है । वह विद्या कृपया मुझे न पढ़ाओ । हे पाधा जी ! जब आप का जीवात्मा परलोक वासी होगा। तब मेरी कही हुई विद्या ही आप के काम आयेगी । तथा ईश्वरीय नाम के यश की पताका आप के हाथ में होगी । तब आप को यम यातना का कष्ट वा दुःख नहीं होगा ।

यह सुन कर पांधा जी हैरान हो गये । और कहने लगे हे नानक ! इस प्रकार की बातें आप ने कहां से सीखी हैं ? अभी तो तू अबोध बालक है । हे नानक ! मैं पूछता हूँ कि जो पुरुष परमात्मा का नाम जपता है । उसे

साखी पांधे से पढ़ने की



भाई जवाहर सिंह किरपाल सिंह पुस्तकां वाले, बजार माई सेवां
अ मृ त स र

फल की प्राप्ती होती है तब। श्री नानक देव जी ने दूसरी पौड़ी कही।

जिथै मिलन वडयाईआं सद खुशीयां सद चाउ ॥
तिन मुख टिके निकलहि जिन मन सचा नाउ ॥
करम मिलै तां पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥ २ ॥

श्री नानक देव ने कहा, पांधा जी ! जहां जीवात्मा जायगा। तहां परमात्मा के नाम जपने का आप के पास पुण्य होगा। तहां आप का सतकार होगा। सदैव खुशीयें होंगी। तथा अत्यंत आनंद होगा। बहुत मंगल होंगे। समस्त प्रकार सुख प्राप्त होंगे। जिनों ने मन से ईश्वर स्मर्ण किया है। उन की परलोक में सदगति होगी। तथा प्रताप का सूर्य चमकेगा। बातों से परमात्मा नहीं मिलता जब उस की कृपा होती है। तभी उस के भजन में मन प्रविर्त होता है। यह सुन कर पांधा जी हैरान हो गये। पांधे ने कहा कि हे नानक। एक पुरुष वे हैं जो ईश भजन करते हैं। परंतु उन का कहीं कोई नाम नहीं लेता। और उन को वस्तु तथा अन्न भी प्राप्त नहीं होता। एक वे भी हैं जो समस्त आयु ईश्वर से विमुख रहते हैं। परंतु वे सारी आयु राज्य करते हैं। सारी आयु मोज ही मनाते हैं। वे ईश्वर से डरते भी नहीं। उन का क्या बनेगा ? तब बालक नानक ने तीसरी पौड़ी इस प्रकार कही–

इक आवहि इक जाहि उठि रखिअहि नाव सलार
॥ इकि उपाये मंगते इकना वडे दरवार ॥
अगै गइआ जाणिऐ विणु नावै वेकार ॥ ३ ॥

नानक जी ने कहा, पांधा जी ! एक आते हैं और एक जाते हैं। एक तो महाराजा हैं। और एक भीष मांगते हैं। जो यहां सुख भोगते हैं। ईश्वर स्मर्ण नहीं करते उन का परलोक में यह हाल होगा। उनों को दंड मिलेगा। जिस प्रकार चक्की अन्न के दानों को देती है। तथा तेली तिलों को दंड देता है। जैसे दूध को मथनी मथने का दंड देती है। जिस प्रकार धोबी कपड़ा धोता है। पांधा जी। इसी प्रकार उन पुरुषों को दंड मिलेगा।

जो परमेश्वर से विमुख हैं। और जो यहां ईश्वर स्मर्ण करते हैं। परंतु भीष से गुज़ारा करते हैं। तिन को परलोक में बहुत ही बड़ाई और सुख प्राप्त होगा। धर्मराज उन का सतकार करेगा यह सुन कर पांधा जी हैरान हो गये। और कहा-हे नानक! तू तो महान भक्तों जैसी वार्ता करता है। अभी तो तुम बालक हो अभी माता पिता तथा कुटुंब से सुख प्राप्त करो। अभी तो तुम नें गृहस्त आश्रम का आनंद भोग करना है। अभी २ तू ऐसी बातें मत कर। यह सुन कर श्री नानक नें नीचे लिखी पौड़ी उच्चारण की-

भै तेरे डरू अगला खपि खपि छिजै देह।
नाव जिना सुलतान खान होंदे डिठे खेह।
नानक उठि चलिआ सभकूड़े तुटे नेह ॥ ४ ॥ ६ ॥

नानक जी ने कहा-कि मुझे उस साहिब का इतना डर है कि मेरी बुद्धि भयभीत हो रही है। तथा शरीर कांप रहा है। मेरा जीव थर्रा रहा है। जो यहां बादशाह चक्रवर्ती कहलाते हैं वह मरने के पश्चात मट्टी में मिल जाते हैं। जिन की आज्ञा को संसार मानता था। जिन के भय से यह धरती भय भीत रहा करती थी। वे सब संसार से चल दिये। और मर कर मट्टी में मिल गये। हे पांधा जी! मैं असत्य संनेह किस के साथ करूं! जब हम सब ने शरीर त्याग जाना है। और यह शरीर मट्टी में मिल जायगा। इस लिये संसार के साथ जो मिथ्या प्रेम है। उसे क्या करना है? उस परमात्मा का नाम स्मर्ण ही उत्तम है। जो सब को उत्पन्न करता है। पालन करता है तथा फिर संहार करने वाला है। उसी परमात्मा से प्रेम करना उचित है। यह बाणी अर्थ सुना कर नानक देव जी अपने घर को चल दिये।

घर में आकर अन्न पाया तथा प्रेम पूर्वक विश्राम किया प्रातःकाल माता जी ने नानक जी को मीठी स्वर से जगाया। नित्य कर्म करके नानक देव उस दिन पाठशाला न जाकर घर में ही कागज़ कलम दुवात लेकर एक चौंकी पर बैठे। जिस प्रकार कोई पंडित कथा करने के लिये व्यास गद्धी पर शोभाय मान होता है। जब कोई बालक इन का मित्र इनें बुलाने के लिये आये तो

आप कहें कि मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

एक दिन आप के माता पिता ने आप से पूछा कि तुम आज कल कौन सी पुस्तक पढ़ा करते हैं ? जो पढ़ते हो वह मुझे भी सुनाओ। उत्तर दिया हे पिता जी ! मैं सप्त श्लोकी गीता पढ़ा करता हुं।

श्लोक

ओं मित्येकाक्षारं ब्रहम व्याहरण मा मनु स्मरन् ॥
यः प्रयाति त्या जां देहि सयाती परमां गतीम् ॥
॥ अर्जुनो वाच ॥
स्थान रिषि केश तव प्रकीर्त्या जगत प्रहिशबत्यनु
यरत्येतेच ॥ रक्षायस्यांसि भीतानि द्रिशो प्रवंति
सर्वे नमस्यंतिच सिद्ध संघाः ॥
सर्वतः पाणि पांद तत् सर्व तोखिश्रो मुखम् ॥
सर्वतः श्रुतिमल्लो सब्रह्मा वृत्यतिकृति ॥
कवि पुराण मनुशा सितार मेणो रणीयां मनुस्मरे द्यं ॥
सर्वस्य धाता रणचिंत्य रूपमादित्य वर्णतम सः परस्तास् ॥
ऊर्ध्व मूल मधः शाख अश्वस्थं प्राह रव्ययं ॥
छंदासि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेद वित् ॥

इस प्रकार जब सप्त श्लोकी श्रीमद् भगवत् गीता का जब नानक देव ने सरल और शुद्ध कंठाग्र पाठ सुनाया। तब माता पिता अत्यंत प्रसन्न हुवे। माता पिता ने कहा बेटा यह संस्कृत में होने से हमें इस का ज्ञान नहीं होता। इस का अर्थ बताओ।

यह सुन कर नानक देव जी ने इस प्रकार अर्थ कहा–श्री कृष्ण भगवान अपने मित्र अर्जुन को कहते हैं हे अर्जुन। जो वेदो के भीतर ओंकार शब्द है उसे प्रणव भी कहा जाता है वह जो परम पुरुप है उस ओंकार को पुरुपोतम भी कहा जाता है। वही वाणी रूप होकर ब्रह्मा रूप होकर प्रवेश करता है। उसी वाणी के बल से संसार की रचना की। तथा संसार को वेद का ग्यान

दिया। उसी की भक्ती और भजन पवित्र है। मैं परमेश्वर हूं जो मेरा ध्यान करता है। वह जब देह का त्याग करेगा। तो वह मेरे ही धाम को प्राप्त करता है। मैं सदैव एक रस हूँ। तथा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म हूं। मैं निश्चित रूप से समस्त संसार का स्वामी हूँ। मेरा स्वरूप तथा मेरा भय सब के शिर पर सवार है। कोटि सूर्य के सदृश्य मेरा प्रकाश है। वह प्रकाश रात्री काल में दूसरे भूमि मंडल को प्रकाशित करने चला जाता है। मेरा प्रकाश युगांतर में एक रस रहता है। क्योंकि मेरे प्रकाश को अंधेरा स्पर्श नहीं कर सकता। हे अर्जुन ! जो मेरे भक्त हैं वह मेरी कथा तथा मेरा ही कीर्तन अनन्य प्रेम से सदैव करते हैं। तथा संसार को सुना कर पवित्र करते हैं। जो प्रीति से श्रवण करते हैं मैं उन की सदैव रक्षा करता हूँ। हे अर्जुन जो मेरा हृदय से भक्त है। तथा मुझे सचिदानंद जान कर तथा सभी कामनायें त्याग कर मेरा स्मर्ण करते हैं। उन की रक्षा हर एक दिशा से करता हूँ।

हे प्यारे पिता जी ! जब श्री कृष्ण जी ने इस प्रकार अर्जुन को कहा तब अर्जुन का भ्रम मोह ततकाल दूर हो गया।

इस प्रकार श्री नानक देव जी अपने माता पिता को गीता अर्थों के सहित सुनाई तो माता पिता अत्यंत प्रसन्न हुवे। पहले तो माया की निवृती हुई थी। परंतु फिर माया ने भ्रम में डाल दिया।

दूसरे दिन नानक देव को साथ लेकर श्री कालू जी पांधा जी के निकट पाठशाला में गये। प्रतिष्ठा बाद पश्चात पांधा जी ने नानक देव जी से कहा बेटा नानक ! तुम कल नहीं आये। लाओ मैं आज तुम को पटी लिख देता हूं। उत्तर में श्री नानक देव जी ने निम्न लिखित शबद उचारण किया—

आसा महला १

पटी लिखी—ससै सोइ स्रिसटि जिन साजी सभना साहिबु एक भया ॥
सेवत रहे चित जिन का लागा आया तिनका सफल भया ॥
मन काहे भूले मूढ़ मना जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ॥१॥रहाउ॥

तब गुरू जी ने कहा जिस ने सृष्टी रचना की है वही कर्ता है सभ का

स्वामी एक ही है। तो उस एक की भक्ति करते हैं उनका आना सफल होता है। उसको त्याग जो और विद्या पढ़ते हैं वह यम लोक में हिसाव देंगे। तथा यह भूला हुवा मन समय को गँवा रहा है। यदि प्रभु भक्ति हृदय में हो, तव यह जीव यम धाम को नहीं जाता।

ईवड़ी आदि पुरुष हैं दाता आपे साचा सोई ॥
एनां अखरां में जो गुरमुखि बूझै तिस सिरि लेखु न होई ॥२॥

श्री नानक देव जी ने फर्माया कि–ईवड़ी जो है वह उस अमर परमात्मा की महान शक्ती है। वह सब को देने वाला और सत्य रूप है। जो इन अक्षरों में उसका स्मर्ण करते हैं। वह धर्म राज के ऋणि नहीं होते।

ऊड़े उपमां तांकी कीजै जाका अंत न पाया ॥
सेवा करहि सेई फल पावहि जिनी सच कमाया ॥ ३ ॥

नानक देव कहते हैं। हे पंडित जी! ऊड़ा अक्षर ओंकार का ही रूप है। इसकी उत्पन्न की हुई सृष्टी का अंत नहीं देखा जाता। ऊड़ा कहता है उसकी उपमा करो। जिन प्राणिओं ने गुरू आज्ञा से प्रभु भक्ति की है। तिन को ज्ञान के फल की प्राप्ति हुई है। सत्य मन से नाम लेने वाले सदैव प्रसन्न रहते हैं।

ङंङै ङिआन बूझै जे कोई पढ़िआ पंडित सोई ॥
सरव जीआं मे एको जाणै तां हउमै कहे न कोई ॥ ४ ॥

ङ अक्षर कहता है जो पुरुष सत्य शब्द का विचार करता है वही विज्ञाकी है। जिस ने सब जीवों में उस परमात्मा का निवास जाना है। उस का अहंकार नाश होता है।

कक्के केस पुंडर जब हुवे विणु साबुणै उजलिआ ॥
जम राजे के हेरू आए माया कै संगलि बंधि लइआ ॥ ५ ॥

क अक्षर कहता है कि मन के काले पन को मलमल कर धोना चाहीये। फिर भी इसका साफ होना कठिन है। जब श्वेत केश हो जायें सब से प्रथम कानों के ऊपर थोड़े से केश श्वेत होते हैं। मालूम होता है कि वे भगवान के

संदेश लेकर आये हैं और कहते हैं कि जैसे खेती पक कर श्वेत हो जाती है। उसी प्रकार अब युवा अवस्था समाप्त हो गई है। अब तो संत सेवा तथा प्रभु नाम स्मर्ण ही मुख को उज्जल करने का साधन है। यदि अब भी उसी प्रकार तृष्णा ही रही। तो यमदूत तुझे बेड़ी डाल कर ले जायेंगे। तथा पश्चाताप होगा।

खखै खुंद कारु साहु आलमहु करि खरीदि जिनि खरचु दिया ॥
बंधनि जाकै सभु जुग बांधिया अवरी का नहीं हुकम पया ॥६॥

खखे अखर कहिआ संपूरण संसार दा मालक श्री वाहिगुरू है। जिनां ने नाम रूपी धन देकर समस्त जगत को मोल लिया है। वे पुरुष सतगुरु जी के ग्यान बंधन में बंधे हुवे हैं। उन को धर्मराज के बंधन नहीं होते। उनको ग्यान के होने से गुरू जी की कृपा से और बंधन नहीं बांध सकता। वे पुरुष निर्भय रहते हैं।

गगै गोइ गाय जिनि छोडी गली गोविंद गरभि भया ॥
घड़ि भांडे जिनि आवी साजी चाढ़न वाहै तई कीआ ॥७॥

गगा कहता है कि परमात्मा ने समस्त ब्रहमंड रचे हैं। यह जीव अहंकार करता है। उस परमात्मा ने शरीर रूपी बर्तन बना कर संसार रूपी आवे पर चढ़ा दिये हैं। इस प्रकार ब्रहमा जी ने सृष्टी की रचना की है। जिस स्थान पर बर्तन आग में तपा कर पुखता किये जाते हैं। उसे आवा कहा जाता है।

घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥
बुरा भला जे सम करि जानै इन बिधि साहिबु रतुतु रहै ॥८॥

"घ" अक्षर कहता है कि जिन जीवों ने गुरू महाराज के शब्दों का स्मर्ण किया है। संतोष सेवा आदिक कठिनाइयें सहन की हैं। गुरू शब्द से लगे रहे हैं। जिने सुख दुख समान हैं। इस प्रकार प्रभु से मिले हैं।

चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चार जुगा ॥
जुग जुग जोगी जाणी भोगी पढ़िआ पंडित आपि थीआ ॥६॥

चचा अक्षर कहता है उस परमात्मा ने जीवों के हित के लिये चार वेद

रचे हैं। और चारों युग बनाये हैं। वे परमात्मा चार युगों से पृथक भी है। सभी योनियों में वही भोक्ता है। तथा पंडित रूप में उपदेशक है।

छछै छाया वरती सभ अंदरि तेरा किया भरमु हुआ ॥
भरम उपाय भुलाईअन आपे तेरा कर्म हुआ तिन गुर मिलिआ ॥१०॥

छछा अक्षर कहता है कि उस परमात्मा की माया की जो छाया है वह समस्त संसार में छा रही है। उसी की आग्या से भ्रम की उत्पति होती है। भ्रम ने ही जीव को भुला दिया है। जिस पर उस की कृपा है उसे उस का दर्शन हुवा है।

जजै जान मंगल जनु जाचै लख चौरासी भीख भविआ ॥
एको देवै एको लेवै अवर न दूजा मैं सुणिआ ॥ ११ ॥

जजा अक्षर कहता है जितने दान याचक चाहता है । उन में से यही चाहता है कि चौरासी लक्ष योनी में से हमारी रक्षा करने वाला एक तू ही है। देने लेने वाला ईश्वर बिना और कोई भी नहीं है।

झझै झूरि मरहु क्या प्राणी जो कुछ देणा सु दे रहा ॥
देदे वेखै हुकमु चलाए जिउं जीआ का रिजकु पइआ ॥ १२ ॥

झझा अक्षर कहता है हे पुरुष! तू पश्चाताप क्यों करता है? जिस समय परमात्मा ने तुमें उत्पन्न किया। उसी समय तुमारा सुख तुमारे मस्तक में लिख दिया है। प्रभु देता भी और देखता भी है। तथा अपनी आज्ञा में चलाता है।

ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥
एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥ १३ ॥

ञञा अक्षर कहता है जब मैं ध्यान करता हूँ तो बगैर ईश्वर के और कोई नहीं है। वही परमात्मा सर्व व्यापक है । वही हमारे भीतर निवास करता है।

टटै टंचु करहु किआ प्रानी कि मुहति कि उठि चलणा ॥
जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पढ़हु तुम हरि सरणा ॥ १४ ॥

"ट" अक्षर कहे–हे जीव तू कपट झूठ न बोल और छल न कर। क्योंकि दो घड़ी को प्राण त्यागने हैं। झगड़े और वाद विवाद में जन्म न गुवाओ। झूठ और कपट को त्यागो।
साधु संगत अथवा गुरू शरण जो है। उसे प्राप्त करो।

ठठै ठाडि वरती तिन अंत कि हरि चरणी जिन का चित लागा ॥
सोइ गाला सोइ जन निसतरे तउ परसादि सुखु पाइआ ॥ १५ ॥

"ठ" अक्षर कहता है कि जिन के हृदय शुद्ध हैं वही पार उतरते हैं। वही सुखी होते हैं। नहीं तो जन्मते मरते रहते हैं।

डडै डंफु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सो सभ चलणा ॥
तिसहि सरे वहु तां सुखु पावहु सरब निरंतरि रवि रहिआ ॥ १६ ॥

"ड" अक्षर ने कहा कि–विश्वास क्यों करते हो जो कुछ नज़र आता है वह सभ नाशवान है। प्रभु स्मर्ण से सुख होता है। वही सभ में शक्ति दे रहा है।

ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥
करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जाकउ नदरि करे ॥१७॥

"ढ" अक्षर कहता है कि बने हुवे को तोड़ता है। और टूटे हुवे को बनाता है। परमेश्वर सभ को बनाता है। जो उस की इच्छा है वही करता है। अपनी आज्ञा में चलाता है। जिसे कृपा दृष्टी से देखता है उसे ज्ञान देता है। और उसे ही पार करता है।

णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥
आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥१८॥

"ण" अक्षर कहता है कि संसार में ईश्वर व्यापक है। जो उस के गुण गायन करता है वही उसे जानता है। जिस को प्रभु स्वयं सतसंग में मिलाता है। उनका जन्म नहीं होता।

ततै तारू भवजल होआ ताका अंतु न पाइआ ॥
ना तर ना तुलहा हम बूडसि तार लेहि तारण राइआ ॥ १६ ॥

"त" अक्षर कहता है कि अज्ञान रूप यह संसार अपार है इसका अंत नहीं है। न तो कोई नाव है। और न ही कोई साधन है। बगैर सतसंग के सारा जगत डूब रहा है। परमात्मा ने जिसे तारना होता है। उसे सतसंग देता है।

थथै थानि थनंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ॥
किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोइ भला॥ २० ॥

"थ" अक्षर कहता है कि स्थान तथा स्थानांतर में तथा तमाम पुरियां में वही परमात्मा व्यापक है। उसी का किया हुवा होता है। माया का जो भ्रम है वह सभी मिथ्या है, उस परमात्मा को जो स्वीकार है वही अच्छा है।

ददै दोसु न देउ किसै दोस करंमा आपणिआ॥
जो मैं कीआ सो मैं पाइआ दोसु न दीजै अवरु जना॥ २१ ॥

द अक्षर कहता है कि–किसीं अन्य जीव का दोष नहीं । क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपने कर्म का ही फल भोगता है। जितने भी जीव हैं वह सब एक यंत्र हैं तथा उस यंत्र (बाजा) को बजाने वाला ईश्वर है । वह जैसे बजाता है वैसे बजते हैं।

धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजि जिनि रंग किआ॥
तिसदा दीआ सभनी लीआ कर्मों कर्मों हुकमु पइआ॥ २२ ॥

ध अक्षर कहता है कि ईश्वर ने पृथ्वी तथा आकास की कला धारण कर रखी है। सब के वर्ण किये हैं। जैसे जिस के कर्म हैं वैसे उसे फल दिया है।

ननै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना संमलिआ॥
गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहु मैं मिलिआ॥ २३ ॥

न कार कहता है कि जो स्वामी सत्य रूप गुरू है और सब का स्वामी है। तथा सब के अंदर भोगों को भोग रहा है। तथा प्रत्येक का द्रष्टा है। उसे कोई भी नहीं देख सकता। वह सब को देख रहा है।

पपै पातशाहु परमेशुर वेखन कउ परपंच कीआ॥

देखै बूझै सभ किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥ २४ ॥

प कार कहता है कि सब का स्वामी वही जगदीश है। जगत देखने के लिये लीला रच रखी है। वह सब को देता भी है। और सभी में व्यापक भी वही है।

फफै फाही सब जगु फासा जमकै संगिल बंधि लइआ ॥
गुर परसादी सो जनु उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥ २५ ॥

फ अक्षर कहता है कि संपूरण जगत इस माया रूपी जाल में फसा हुवा है। यम के पाश में सब बंधे हुवे हैं। प्रभु कृपा से छूटते हैं। जिन को सतसंग प्राप्त हुवा है। उन के संशय मिटते हैं।

बबै बाज़ी खेलन लागा चौपड़ि कीते चारि जुगा ॥
जीअ जंत सब सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥ २६ ॥

ब अक्षर कहता है कि उस परमेश्वर ने माया को प्रेर कर दिशायें चौसर किये हैं। तथा चौरासी लाख योनीयों के घर बनाये हैं। और स्वयं बाज़ी खेलने लगा है। जो गोटें पक कर घर में आ जाती हैं व नतमस्तक होती हैं। जो नहीं पकतीं, उन के शिर ऊपर होते हैं। इसी प्रकार जो गुरु भक्त हैं उनका मन नत है अर्थात नतमस्तक हैं। वही आवागमन से छूटते हैं।

भभै भालहि से फलु पावहि गुरपरसादी जिन कउ भउ पाइआ ॥
मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पाइआ ॥ २७ ॥

भ कार कहता है कि जो सतगुरू जी के शब्द को पालता है। वह नाम और ज्ञान रूपी फल को प्राप्त होता है। वह संसार को गोपद की भांति तैर कर पार हो जाता है। जो गुरू जी से विमुख हैं तथा मन की बात करते हैं। वे चौरासी लक्ष योनि में भटकते हैं।

ममै मोहु मरणु मधुसूदन मरणु भइआ तब चेतविआ ॥
काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मंमा अखरु वीसरिआ ॥ २८ ॥

म अक्षर कहता है कि मन को शुद्ध करके जो नाम लेता है। वही परमात्मा रूप हो जाता है। माया का जो मोह है वह आश्चर्य जनक है।

जो प्राणी मोह में फस जाता है। उसे पश्चाताप होता है।

यये जनम न होवी कदही जेकर सचु पछाणे ॥
गुरमुखि आखे गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणे ॥ २६ ॥

"य" अक्षर कहता है कि जो सतगुरु जी के उपदेशों को सत्य मानकर चलते हैं। उनका दोवारा जन्म नहीं होता। गुरू जी के मुख का कथन गुरू के प्यारे भक्त ही पहिचानते हैं। परमात्मा सर्व व्यापक है। यह जानकर वैर विरोध का त्याग करते हैं।

रारै रवि रहिआ सभि अंतरि जेते कीए जंता ॥
जंत उपाइ धंधै सब लाए करम होआ तिन नामु लइआ ॥ ३० ॥

"र" अक्षर कहता है कि जो संपूर्ण जीव चराचर हैं उन में राम व्यापक है। जैसे समस्त भूमि में जल रमा हुवा है। जहां कूप खोदा जाता है। वहां ही जल प्रकाशित होता है। इसी प्रकार सतसंग से शांति होती है। जो नाम का स्मर्ण करते हैं।

ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु किया ॥
खाणा पीणा समकरि सहिणा माणै जाकै हुकमु पइआ ॥३१॥

"ल" कहता है कि सारे जगत को ईश्वर ने काम पर लगा रखा है माया का प्यार मीठा कर दिया है। खाता पीता हँसता सोता है। परमात्मा का नाम भूल बैठा है।

ववै वास देउ परमेशर वेखण कउ जिनि वेस किआ ॥
वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि वाहरि रवि रहिआ ॥ ३२ ॥

"व" अक्षर कहता है कि वासना को रोक कर जिसने इंद्रियें जीत ली हैं। संसार तमाशा देखने के लिये सद् गुरू का रूप मन में धारण किया है। सभी जीवों में सत्ता देकर देख रहा है जो उसकी आग्या को सत्य मानते हैं वही संत हैं।

ड़ाड़ै राड़ करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥
तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुर्बाणु कीआ ॥ ३३ ॥

"ड़" अक्षर कहता है कि–हे जीवो ! निशफल झगड़े क्यों करते हो ? जो कुछ प्रभु की आग्या हैं। वही मानों। जो प्रभु आग्या मानता है। उसी का धन्यवाद।

हाहैं होर न कोई दाता जीअ उपाइ जिन रिजकु दीआ॥
हरिनामु धिआवहु हरिनाम समावहु अनदिनु लाहा हरिनामु लीआ ॥३४॥

"ह" अक्षर कहता है कि–जो प्रभु ने जीव पैदा किये हैं। उन सब की पालना करता है। जिन गुरु जनों ने उस परमात्मा का नाम उच्चारण किया है। वही गुरू लोग ग्यान के दाता हैं। ईश्वर और गुरू इन के बिना और कोई भी नहीं है। सभ को कर्मानुसार अन्न जल वस्त्रादिक देता है। उस के विना कोइ नहीं।

ऐड़ा आपि करे जिनि छोडी जो किछ करणा सु करि रहिआ॥
करे कराए सभ किछु आपे नानक साइर रव रहिआ ॥ ३५ ॥

"ऐड़ा" कहता है कि–जिस भगवान ने आदि ते सृष्टी रच रखी है। समस्त जो कुछ परमात्मा ने करना था किया और जो कुछ करना चाहे कर सकता है। वह सामर्थ्य युत हैं। वह ईश्वर करने कराने वाला है। कवि नानक इस प्रकार कहते हैं।

श्री नानक देव जी ने कहा हे पंडित जी ! मैंने प्रभु महिमा का गीत गाया हैं। आप भगवान का स्मर्ण करो। संसारी विद्या का त्याग ही अच्छा हैं। आत्म विद्या संसार को सिखाओ। संसारी विद्या बंधन का कारण है। और कमाने के लिये सीखी जाती है। और ब्रह्म विद्या बंधनों को काटने वाली हैं।

जब नानक देव जी ने यह शब्द कहे–तब पंडित जी ने कहा–हे कालू जी ! चारों वेदों की विद्या संसार से लोप हो रही थी। यह तुमारा पुत्र उसे प्रकट करने के लिये आया है।

यदि कभी श्री नानक भीतर बैठें तो वहीं समाधिस्थ हो जाते थे। और यदि नदी किनारे बैठ जायें तो वहां ही समाधी लग जाती थी। कालू जी

इधर उधर देखते तथा अन्न लेकर फिरते थे। कभी २ नानक देव जी अपना भोजन साधुओं को खिला देते थे ॥ ४ ॥

॥ मुल्लां की साखी ॥

ईश्वर मिलाप की चर्चा से नानक जी बहुत प्रसन्न होते थे। पुत्र की यह अवस्था देख कर कालू जी बहुत चिंतातुर रहते थे। नानक जी की उदासीनता राय बुलार ने सुनी तथा पुत्र-दुख से कालू भी दुखी सुना बुलार ने कालू को बुला कर कहा कि नानक को फारसी पढ़ने के लिये मुल्लां को पास भेज दो यह स्वयं बुद्धिमान हो जायगा। मैं मुल्लां को कह दूंगा कि वह नानक को मुहबत और मेहनत से पढ़ायेगा। कालु जी नानक देव जी को साथ लेकर मुल्लां के निकट गये। और मुल्लां से प्रार्थना की कि आप मेरे पुत्र नानक को फारसी पढ़ायें। मुल्लां ने कहा हे कालू जी! मैं आप के पुत्र को अपना पुत्र समझ कर पढ़ाना शुरू करूंगा। तब एक रुपया गुरू भेंट रूप नानक जी से मुल्लां को दिया गया। मुल्लां ने नानक के हाथ में तखती दी। तथा अलफ़ से ये तक तमाम हरूफ़ लिख दिये। जब उन का उच्चारण बताने लगा तो, श्री नानक देव जिन के हृदय में चारों वेद और तमाम पुस्तकें जिन में कुरान शरीफ़ भी है। सभी विराज रही थीं। चुप चाप बैठे रहे तखती और कायदा (फारसी की पहिली पुस्तक) अपने आगे ज्यों का त्यों रख छोड़ा। मुल्लां ने देखा कि और लड़के तो पढ़ रहे हैं। परंतु नानक परमात्मा के ध्यान में मग्न है। मुल्लां ने कहा अरे नानक पढ़ता क्यों नहीं? सबक याद कर। नानक जी ने उत्तर दिया-मैं क्या पढ़ूं? मुझे आप क्या पढ़ा रहे हो? तो मुल्लां ने कहा मैं तुम को अलफ़ से ये तक समझा चुका हूँ उस को याद करो जब यह याद हो जायेंगे। तब कोई और किताब शुरू की जायगी। नानक जी ने कहा, यह हरफ किस काम आयेंगे? मुल्लां ने कहा इस के पढ़ने से बुद्धि बढ़ती है। तब नानक जी ने अलफ़ से ये तक जितने भी हरफ़ थे सभी परमात्मा की भक्ति की ओर करके सुना दिये।

मुल्लां हैरान हो गया। और कहने लगा नानक! तू तो सभ कुछ जानता है। मैं तुझे क्या पढ़ा सकूंगा। तू तो सारे संसार को पढ़ायेगा। कालू को बुला कर मुल्लां ने कहा-बेदी जी! यह आप का साहिबज़ादा कोई बड़ा भारी बली है। इस ने हिन्दु और मुसलमान को समान रूप से इकठे करना है। इस ने गंगा कांशी मक्का मदीना में अपना यश पैदा करना है।

इधर जब पाठशाला के लड़कों ने सुना कि नानक देव पंडित जी को छोड़ कर मुल्लां से पढ़ने गये हैं। तब नानक जी के प्रेम से सभी लड़के मुल्लां से पढ़ने के लिये आ गये। जो कुछ मुल्लां जी लिखते थे। उसे नानक शीघ्र ही सुना देते थे। मुल्लां कहता हे खुदा वंद यह अजीब लड़का है। यह तेरी कुदरत है। यह हिंदु और इलम तुरकी-इसे पढ़ना तो निहायत मुशकिल है। इस के पढ़ने में तो कुछ बरस दरकार हैं। मगर नानक तो कमाल कर रहा है। जो लिखता हूँ वह उसी वकत सुना देता है। इस तरह का ज़ेहन मैंने आज तक किसी का नहीं देखा। इस पर अल्लाह की पूरी मेहरबानी है। जिन लड़कों को दस २ बरस पढ़ते हो गये हैं। यह कल का आया उन से भी आगे है।

इस के अतिरिक्त जो कोई भी गुरू जी के पास आता था। उसे आप ईश्वर संबंधी शिक्षा देते थे। तब आप की स्तुति संसार में होने लगी। सभी कहते कि नानक ईश्वर भक्त है।

नानक देव मुसलमानी भाषा में मुसलमानों की तसल्ली करते तो हिंदी भाषा में हिंदुओं की शंकायें दूर करते थे। भाव यह है कि प्रत्येक को पूर्ण करते थे। हिंदी, फ़ारसी, संस्कृत, तुरकी, अरबी आदिक सभी भाषायें नानक देव को कंठस्थ थीं।

कुछ काल के पश्चात नानक देव घर में आकर मौन हो कर बैठ गये। किसी से बात नहीं करते थे। तब कालू जी ने मुल्लां को बुलाया। मुल्लां ने नानक देव को बुलाया। मुल्लां ने नानक देव पर कोई ज़ोहद (जंत्र मंत्र) किया। परंतु असफल ही रहा। नानक देव मौन रहे। लोग इकठे होने लगे

कभी कहते थे कि नानक क्यों चुप है। तब चालाक मुल्लां ने कहा हे नानक! तू आपने प्यारे परमात्मा के लिये बोलो। जब परमात्मा का वास्ता सुना तो नानक देव मुलां के सामणे बैठ गये। मुलां बहुत प्रसन्न हुवा। कहने लगा, हे नानक! तेरे को पीरों की रच्छा हो। तू तो खुदावंद करीम का भेजा हुवा है। तेरे पर रब्बी मेहर है। तेरी खामोशी से दुनियां दुखी होती है। ज़रा बोलो, नानक देव जी ने मुसकरा कर राग तिलंग में एक शब्द उच्चारण किया।

राग तिलंग महला १ ॥

यक अर्ज़ गुफतम पेस तो दर गोस कुन कर्तार ॥
हका कबीर करीम तूं बे ऐब परवरदगार ॥

इस का अर्थ गुरू जी कहते हैं। हे साहिब! तेरे आगे मेरी एक प्रार्थना है। उसे आप कान लगा कर सुनो। तू कैसा है कर्तार करन कारण है। मनुष्य दुर्गुण की कान हैं। परमात्मा अनंत हैं। सब का पालन करता है उस के बगैर और कोई नहीं।

तब मुल्लां ने कहा हे नानक! तेरे मौन रहने से जनता दिल गीर हो जाती है। अब उठो—तब नानक देव जी ने पौड़ी दूसरी उच्चारण की।

दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल जानी।
मम सर मूए अज राईल गरिफ़तह दिल हेचि न दानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

॥ अर्थ ॥

नानक देव जी कहने लगे—हे मुल्लां साहिब! यह संसार नाश होता जा रहा है। मैं किस से बात करूं ? यह सत्य है कि जिस मनुष्य के शिर के बाल फरिश्ते ने आपने हाथ में पकड़े हुवे हैं। वह इसे एक आध पल में ले जायगा। हे मुल्लां इसे यह मनुष्य नहीं जानता। कि मेरे शिर के बाल यम के हाथ में हैं। मुझे आपने मरणे की चिंता नहीं। यह भी नहीं जानता कि मेरा क्या कुछ बनेगा। मुझे यह अचंभा है। कि मनुष्य को और कुछ किस प्रकार सूझता है ? मुल्लां ने उत्तर दिया नानक ? अभी तुम अल्प

वयस्क हो। इस वैराग्य में पड़ने का अभी समय नहीं है। युवा होने पर तब जो इच्छा होगी करना। नानक जी ने कहा-हे मुल्लां! जो आदमी किसी का दास होता है। भले ही वह आयु में छोटा हो परंतु जहां तक उसमें शक्ति होती है। वहां तक अपने स्वामी की सेवा करता है। यदि मैं उस प्रभु की सेवा स्मर्ण आदिक न करूं तो मुझ में कृतघ्नता दोष आयेगा। मुलां ने कहा नानक! तेरा कथन तो सत्य है। फिर महाराज ने कहा-कि जब इस पुरुष को अंत समय यम राज पकड़ेगा। उस समय इस की सहायता कोई भी नहीं कर सकता। उस समय कोई मित्र नहीं बनता। प्रभु नाम बिना कोई रक्षक नहीं होता। जिस पर अकाल पुरुष कृपा करे उसे ही छुडा लेता है।

मुलां ने कहा-नानक! तेरे अहोभाग्य हैं। तुम ने उस परमात्मा की कृपा अल्प आयु में ही प्राप्त करली है ईश्वर की अनुकंपा से तुझे सही ग्यान प्राप्त हुवा है। तुम में कोई भी बुराई नहीं है। और न ही होगी। यह सुन कर श्री नानक देव जी ने तीसरी पौड़ी उच्चारण की-

जन पिसर पदर बिरादरां कसनेस दस्तंगीर ॥
आखर बिहफतं कस नदारद चूं सवद तकबीर ॥ २ ॥
सबरोज़ गसतम दर हवा कर देम बदी खयाल ॥
गाहे न नेकी करदम ममईं चिनी अहिवाल ॥ ३ ॥

॥ अर्थ ॥

गुरू जी कहते हैं मुलां जी! परमेश्वर मार्ग की बात तो यह जीव करता नहीं। और निंदा करता रहता है। तथा आठों याम यह आलस्य में रहता है। सभी की बुराई में लगा रहता है। सदैव इस की दृष्टी दोषमय रहती है। यह जीव आलस का मारा बेलगाम फिर रहा है। हे मुलां यह मनुष्य एक क्षण भी परमात्मा का भजन नहीं करता। बस मैं तो यही करता हूं। मैं उस परमात्मा का सेवक हूं।

यह सुन कर मुलां ने कहा-हे नानक। तू तो उस मालक के साथ जुड़ गया है। तब गुरू नानक जी ने चतुर्थ पौड़ी का उच्चारण किया-

वद वखत हम चू वखील गाफ़ल वेनजर वेवाक ॥
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा ख़ाक ॥४॥

॥ अर्थ ॥

गुरू नानक जी कहते हैं। मुल्लां जी ! परमात्मा के जान लेने की बात यह इनसान नहीं करता। प्रत्येक की बुराई करता है। आठों याम आलस्य में रहता है। बुराई करता है। गफलत का मारा हुआ शुतर वे मुहार है। जो ईश्वर के भक्त हैं वह मृत्यु को सदैव याद रखते हैं। मैं उनके पांव की रज हूं। यदि वे कृपा करें तो मैं कृत कृत्य हो जाऊँगा। इस जीव के शिर पर ऋण है। जिसे चुकाना होगा और यह कहता है कि मेरे शिर कोई रिण नहीं है। वे फिकर फिर रहा है। मैं परमात्मा से प्रार्थी हूँ कि हे परमात्मा मैं तेरे दासन का दास हूं। मेरे हृदय में गरीबी का वास हो। यह सुन कर मुल्लां ने कहा नानक ! तू तो परमात्मा से मिला हुवा है हम लोगों की रक्षा तुमने ही करनी है हमारी प्रार्थना उस मालक के दरवार में तुम ने स्वीकार करवानी है, गुरू जी ने कहा–आप भी उस प्रभु को स्मर्ण किया करो तव तुमारा भी कल्याण होगा और मैं भी आप की सहायता करूंगा, यह सुन कर मुल्लां ने गुरू जी को नमस्कार करके गुरू चर्णों पर अपना शिर रखा तथा घर को गया। गुरू जी के पवित्र उपदेश से मुल्लां भी भक्ति के रंग में रंगा गया। संसारी विषयों को त्याग कर प्रभु भजन करने लगा तो अंत में प्रभु के धाम को गया। वोलो भाई जी वाहिगुरू ॥

॥ साखी कुल के पुरोहित की ॥

अव श्री गुरू नानक देव महाराज की आयु नौं वर्ष की हुई। तव यज्ञोपवीत संस्कार करने के लिए कालू जी ने कुल पुरोहित हरिदयाल जी को निमंत्रण दिया। महूर्त वता कर सामग्री एकत्र की गई। वरादरी तथा नगर के ब्राह्मण सव को वुलाया गया, सभी एकत्र हो गये। वेद विधि से गोवर का लेपन करके चौक पूरे गये, जव स्नान करवा कर गुरू नानक देव

जी को बुलाया गया। गुरू जी की शोभा नक्षत्रों में चंद्र के तुल्य थी। पुरोहित जी ने क्षत्री कुल के अनुसार सभी कार्य प्रारंभ किया, संध्या, तरपण, शिखा सूत्र धोती आदिक की मर्यादा बताने लगा, षट कर्म गुरू जी सिखा कर उपदेश करने लगे। तब जगत गुरू श्री नानक देव जी पुरोहित को कहने लगे—हे विप्रवर! इस यज्ञोपवीत के पहरने से क्या विशेषता होगी? इस के पहरने का धर्म क्या है? तथा इस से कौन सी उपाधी प्राप्त होगी। यदि इसे न पहिरा जाय तो क्या न्यूनता है? पुरोहित ने कहा यज्ञोपवीत न पहरने से मनुष्य अपवित्र रहता है जब वेद विधि के अनुसार ब्राह्मण क्षत्री वैश्य यज्ञोपवीत धारण करते हैं तब प्रत्येक धर्म कार्य के अधिकारी हो जाते हैं। गुरू जी बोले, पंडित जी! यदि ब्राह्मण क्षत्री आदि होकर तथा गले यज्ञोपवीत आदिक पहर कर भी उस में झूठ व्यभिचार आदिक दूषित कर्म ही किये तो फिर उस के इस बाहरी टीप टाप से क्या लाभ होगा? जब तक उस का अंतरात्मा ही शुद्ध नहीं तो यह बाहर से दिखावे उस का क्या सुधारेंगे। मेरे विचार में यदि यज्ञोपवीत आदिक धारण करके भी बुरे कर्म ही करे तो वह ब्राह्मण क्षत्री नहीं है अपितु चांडाल है। उसे एक दिन यम राज के साहमणे जाना होगा। जब इस प्रकार गुरू जी ने कहा—तब वहां जितने लोग उपस्थित थे सभी अचंभित हो गए और कहने लगे कि हे परमेश्वर! नानक तो अभी बालक है परंतु इस की बातें तो महान बजुर्गों के तुल्य हैं। पंडित भी अचंभे में आकर कहने लगा—हे नानक देव! तब प्राणी को कौन सा यज्ञोपवीत धारण करना उचित है। जिस से इस जीव का धर्म स्थिर रह सके। तब श्री गुरू नानक देव ने नीचे लिखा श्लोक प्रेम पूर्वक उच्चारण किया—

॥ श्लोक ॥

दया कपाह संतोख सूत जतु गंढी सतु वटु ॥
एह जनेउ जीअ का हई त पांडे घतु ॥
ना एहु तुटे न मलु लगै न एहु जलै न जाइ ॥

धनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥

श्री नानक देव जी कहते हैं–मैं आप को असल यग्यो पवीत सुनाता हूं–जैसे प्रथम दया की कपास हो उस से संतोष रूपी सूत्र वने और सत्य का उसे वट्ट लगाये तथा यति पन की गांठ लगावे ऐसा यग्यो पवीत जिस में दया यत सत्य आदिक कर्म हों वह गले में पहिरे। यह आप का सूत्र से बना हुवा यग्यो पवीत मेरे काम आने का नहीं है। यह तो आग से जल जायगा। और जीर्ण हो जायगा। तथा टूट भी जायगा। परंतु मेरा कहा हुवा जो यग्यो पवीत है। वह पुराणा नहीं होता जलता टूटता नहीं है। श्री मान! धन्य वे पुरुष हैं जिनों ने यतित्व तथा सत्य संतोष का यग्यो पवीत पहिरा हुवा है। यह आप का यग्यो पवीत तो कुछ भी नहीं है। यह मिथ्या है। यदि आप के पास सत्य आदिक के लक्षणों वाला यग्यो पवीत हो तो मुझे पहिरा दो। नहीं तो पहिरने को तैयार नहीं।

पंडित जी कहने लगे–हे नानक यह यग्यो पवीत जो हमारे पास है और जिसे सभी लोग पहिरते हैं हमारा बना हुवा नहीं। यह तो आदि सृष्टी से चला जाता है। और है। और संसार इसी को पहिर ता है। तब गुरू जी कहने लगे–हे ब्राहमण! यह तुमारा सूत्र का यग्यो पवीत तो यहीं अर्थात इसी संसार में पड़ा रहेगा। तथा आगे जाने का नहीं है। पंडित जी ने उत्तर दिया, यह यज्ञोपवीत तो सब से पूर्व सनकादिक महर्षियों ने पहना था, तुम प्राचीन मर्यादा को क्यों मिटा रहे हो। उत्तर में श्री नानक देव जी ने श्लोक उच्चारण किया–

॥ श्लोक ॥

चउकड़ि मुलि अणाइआ वहि चउके पाइआ ॥
सिखा कंनि चढ़ाईआ गुरु ब्रहमणु थिआ ॥
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥ १ ॥
मः १ ॥ लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गाल ॥

लख ठगीआं पहिनामीआ रात दिनसु जीअ नालि ॥२॥

॥ अर्थ ॥

श्री गुरू नानक देव जी कहते हैं, हे पंडित जी जो कुछ आप ने कहा है वह सब कुछ कोरी कल्पना मात्र है। स्वयं मनुष्य ने चौका डाला और उस में मनुष्यों को बैठाया। स्वयं ब्राह्मण को गुरू मान लिया। उस ते सूत्र का यज्ञोपवीत डाला। स्वयं उसे गुरू मान लिया। जब वह नकली जनेऊ वाला मर गया तब यज्ञोपवीत भी जल गया। ब्राह्मणों को उचित है कि उसी यज्ञोपवीत की पुष्टी करें जो इस जीव के साथ जाने वाला है। सन्सारक वस्तु तो सन्सार तक ही है। परमात्मा के दरबार में सन्सारी वस्तु का कुछ मूल्य नहीं है। परमात्मा के दरबार तक जाने वाली जितनी भी वस्तु हैं वे मनुष्य को अच्छी नहीं लगती परंतु हे पंडित जी ! मैं तो परमार्थिक वस्तु का ग्राहक हूँ। सांसारिक वस्तु से मुझे प्रेम नहीं है। आप मुझे सन्सारिक बंधन न डालें। मेरे किसी काम की वस्तु नहीं है। गुरू नानक जी के इन शब्दों को सुन कर तमाम जनता वाह वाह की ध्वनी करने लगी। तथा मुक्त कंठ लोगों ने कहा कि देखो इस छोटे से बालक पर परमात्मा की कितनी कृपा है। पंडित ने कहा हे नानक ! तुमें यज्ञोपवीत पहनाने के लिए तुमारे पिता ने कितना द्रव्य खर्च किया है तथा कुटंबी लोग उपस्थित हो रहे हैं। यदि तुम ने यज्ञोपवीत न पहना तो सभी लोग जिन में वेदज्ञ ब्राह्मण भी हैं सभी निराश और हतोत्साह हो जायेंगे। मैंने तो कहना है, मानना न मानना तुमारी इच्छा पर है। यह सुन कर गुरू जी ने श्लोक उच्चारण किया–

॥ श्लोक ॥

तगु कपाहहु कतीऐ बाहमणु वटे आइ ॥
कुहि बकरा रिंनि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥

॥ अर्थ ॥

श्री गुरू नानक देव कहते हैं, हे देवता ! हमारे गले में यज्ञोपवीत तब डालो। जब यह टूटे नहीं। यदि इस ने टूट जाना है तो इस से क्या लाभ है ? और सुनों ऐसे धागे चाहे कितने ही पहिराओ परंतु इस धागे से मुक्ति नहीं मिलेगी।

पंडित निरुत्तर होकर कहने लगा-वेदी कालू जी ! यह आप का सुपुत्र कोई महान देवता है। यह तो स्वयं यज्ञोपवीत पहने तो पहन सकता है। हमारी सामर्थ्य नहीं कि इसे यज्ञोपवीत धारण करा सकें। तब कालू जी कहने लगे, हे प्यारे बेटा ! महापुरुष भी संसार की मर्यादा को बनाई रखते हैं। तब गुरू जी ने कहा, जैसे आप की इच्छा हो करो।

यह सुन कर पंडित बहुत प्रसन्न होकर कहने लगा, हे नानक देव ! तब तुम इस यज्ञोपवीत को पहन कर पवित्र करो। तब गुरू जी ने आपने गले में उन लोगों को प्रसन्न करने के लिये यज्ञोपवीत धारण कर लिया।

महापुरुषों तथा अवतारी जीवों की यह मर्यादा होती है कि किसी को दुखी देख कर उनके दुख को दूर करने के लिये उन का कथन मान लेते हैं परंतु उपदेश द्वारा सत्यमार्ग को भी दिखा देते हैं। इसी मर्यादा को गुरू नानक देव जी ने पाल कर यज्ञोपवीत धारण किया था। (अनुवादिक)

पंडित जी ने कहा, हे नानक देव ! जो सत्य का यज्ञोपवीत है, जो मलीन तथा जीर्ण नहीं होता। अतःएव टूटता जलता नहीं है। उस सत्य सूत्र के लक्षण कहो-मैं सुनने की इच्छा रखता हूँ। तब गुरू जी ने श्लोक उच्चारण किया-

॥ श्लोक ॥

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥
दरगह अंदर पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥

हे पंडित जी ! पुरुष को उचित है कि परमात्मा की आज्ञा पालन

करे। और सत्य भाषण करे। तथा सत्य के सूत्र का यज्ञोपवीत धारण करे। जिस यज्ञोपवीत में सत्य की शक्ति है वही सूत्र स्थिर है। प्रथम परमेश्वर के नाम की कपास उपजाये। तथा सत्य संकल्प का सूत्र तैयार करे। प्रभु के नाम का धागा बना कर यज्ञोपवीत बना कर पहने। यह यज्ञोपवीत ईश्वर कृपा से प्राप्त होता है। यह टूटता नहीं, जलता नहीं, इस लोक और परलोक में यह सूत्र साथ ही रहता है।

यह सुन कर पंडित हरिदयाल प्रभावित होकर कहने लगा हे नानक! अपनी महिमा तू स्वयं ही जानता है। हे नानक! हस अल्पज्ञ जीव क्या जान सकते हैं।

इस के पश्चात ब्रह्म भोज किया गया। कुल की रीति तथा और मर्यादा भली प्रकार पूर्ण की गई। ब्राह्मणों को दक्षिणा दी गईं। और आशीर्वाद प्राप्त किया गया। ब्राह्मण अथवा अन्य जो सम्बन्धी मित्र वर्ग एकत्र हुवे थे प्रसन्न होकर गये।

॥ साखी गाय भैंस चराने की॥

एक दिन श्री बेदी कालू जी ने कहा हे बेटा नानक! यदि तुम घर की गाय भैंस बाहर जा कर चरा लाया करो तो जहां यह पशु पेट भर कर आ सकते हैं वहां तुमारा आलस्य भी दूर हो सकता है। भले ही नौकर चाकर इस काम पर लगा रखे हैं परंतु मालक की देख रेख में पशु हृष्ट पुष्ट होते हैं जैसे श्री कृष्ण भगवान अपनी गाय चराने के लिये जाया करते थे। वैसे तुम भी अपने पशु चराने जाया करो। यह मेरी हार्दिक इच्छा है। पितुआज्ञा श्री गुरू नानक देव जी महाराज ने स्वीकार कर ली। तथा गाय भैंस लेकर चराने के लिये जाने लगे। तब माता जी ने आप को भूख लगने पर कुछ खाने के लिये दे दिया।

गुरूदेव! गाय और भैंस चराने के लिये उसी प्रकार घर से चले जैसे श्री कृष्ण बृज में जाया करते थे। गाय भैंस जंगल में एक ओर छोड़ कर

साखी खेती हरी करनी



ਸਾਖੀ ਖੇਤੀ ਹਰੀ ਕਰਨੀ

भाई जवाहर मिंह किरपाल सिंह पुस्तकां वाले, वजार माई सेवां
अ मृ त स र

गुरू नानक देव एकांत स्थान में बैठ गये। अपनी प्रकृति के अनुसार श्री गुरू नानक ईश्वर के ध्यान में समाधिस्थ हो गये।

उधर गाय भैंस चरती २ एक हरी भरी सुंदर खेती में जा घुसीं। खेती में से पेट भली प्रकार भर कर सभी पशु वहीं बैठ गये। खेती बहुत सी नष्ट भ्रष्ट हो गई। इतने में खेती का स्वामी आ गया। खेती का नाश देख कर वह गुरू नानक देव जी के पास आ कर कहने लगा, हे नानक! मैं तुमें जानता हूँ तुम पटवारी के पुत्र हो मेरी खेती तमाम बरबाद हो गई है इसका उत्तर दायत्व तुम पर हैं। क्योंकि पशु तुमारे हैं। भाई तुम नये चरवाहे बने हो। इस प्रकार उस जाट ने कुछ अधिक भी कहा, तब श्री नानक देव जी ने कहा, भाई अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं। तेरी तो हानि नहीं हुई। फिर व्यर्थ बोलने में क्या लाभ है? यदि किसी बेजुबान पशु ने मुख मार लिया तो इतने रोष में क्यों आते हो। परमात्मा इसी में उन्नति कर देगा, चिंता न करो। नानक जी ने बहुत समझाया परंतु वह जाट बोलता गया। अब झगड़ा बढ़ गया तब श्री नानक देव और वह जाट राय बुलार के पास आये. राय बुलार उस इलाके का हाकम था। जाट ने कहा हजूर आप के पटवारी कालू बेदी के लड़के ने पशुओं द्वारा मेरी खेती उजाड़ दी है। सुनने वाले लोगों ने कहा, भाई नानक तो मस्त लड़का है। इसके पिता को बुलाओ। कालू जी आये, बुलार ने कहा भाई कालू! तुम अपने लड़के को समझाओ। इस ने गरीब जाट की खेती नष्ट करवा दी है इस का यह मस्ताना कार्य आपत्ति कारक है। कालू ने उत्तर दिया हजूर यह बालक तो मस्त मौला है। कुछ काम नहीं करता। बुलार ने न्याय की दृष्टी से कहा अच्छा जो जाट की हानि हुई है। वह दे दो। तब नानक देव जी ने कहा श्रीमान इस जाट का तो एक तिनका भी नाश नहीं हुवा। चल कर देखा जाय। मेरा कोई पशु इस की खेती में नहीं गया।

जाट ने कहा हजूर मैं झूठ नहीं बोलता खेती में तो एक बूटा भी नहीं रहा। अब खेती को देखने के लिये राय ने अपने सिपाही भेजे। सिपाहीयों

ने देखा तो खेती बिलकुल ठीक थी। एक तिनका भी नुकसान नहीं हुवा था जाट देख कर हैरान हो गया। सिपाही आकर कहने लगे, हज़ूर खेती की तो रंचक भी हानि नहीं हुई। जाट को झूठा किया गया। कालू और गुरू नानक देव अपने घर को आ गये। यह है गुरू नानक देव जी की बाल लीला का एक दृश्य॥



॥ साखी सर्प की ॥

यह लीला संवत १५३५ वैशाख मास की है। जब श्री गुरू नानक देव जी महाराज गाय भैंस चरा रहे थे। दोपहर के समय गुरू देव एक वृक्ष की छाया में बैठ गये भैंसें छाया में बैठ गई। तब गुरू जी एक वस्त्र बिछा कर लेट गये। सूर्य देव कुछ पश्चिम की ओर हुवे तो गुरू जी के मुख पर धूप आ गई। पसीने के बिंदु गुरू मुख पर मोतिओं की भांति झलकने लगे। उस समय शेष नाग अपना स्वामी सोया देख कर आया और अपने फन को फैला कर गुरू जी के मुख पर छाया कर दी। दैव योग से राय बुलार अपने कुछ सिपाहीयों के साथ उसी ओर आया जहां नानक देव सो रहे थे। देखा कि नानक सो रहे हैं और फणिहर सांप छाया कर रहा है। राय बुलार ने कहा कि यदि यह सोने वाला बालक जीवित है तो अवश्य कोई महापुरुष है नहीं तो सांप ने इस को समाप्त कर दिया है। लोगों ने देख कर कहा कि यह तो कालू पटवारी का पुत्र नानक है। राय बुलार के कहने से नानक जी को जगाने लगे तो वह सर्प उसी जगह अंतर्धान हो गया।

नानक जी ने जाग कर देखा तो हाकम बुलार खड़ा है। नानक जी ने लोक मर्यादा के अनुसार बुलार को सलाम किया। राय बुलार ने नानक को गले से लगा कर माथा चूमा और सत्कार से बंदगी की। नानक को

साखी सर्प छाया



भाई जवाहर सिंह किरपाल सिंह पुस्तकां वाले, बजार माई सेवां
अ मृ त स र

अब तुम जुवान हो गये हो कोई काम करो। काम करने वाले की शोभा होती है। यह पागलपन छोड़ दो संसार कहता है कि पटवारी का पुत्र नीम पागल है और कमाने के अथवा काम अरने योग्य नहीं है। शरीकों की इन बातों से हम लोग दुखी हो रहे हैं।

माता पिता आदिक के समझाने का कोई लाभ न हुवा नानक देव जी उसी प्रकार ध्यान अवस्था में ही रहते थे। नानक देव जी की माता ने पटवारी जी से कहा कि लड़का न तो बोलता है और अन्न भी नहीं खाता किसी लम्बे ध्यान में मस्त पड़ा रहता है। तब पिता ने समझाना चाहा, हे पुत्र! उठो स्नान करो कुछ खाना खाओ और प्रसन्न चित रहा करो तथा कोई व्योपार ही करो जिस से मन लगे। यदि किसी से बात करनी पसंद नहीं तो कम अज़ कम उठो फिरो तुरो खाओ पहनो तथा रोज़गार में लग जाओ। अपने मन की व्यथा हमें बताओ। क्षत्री के पुत्र को व्योपार अवश्य करना चाहिये। इस से यश और अर्थ की वृद्धि होती है। बाहर हमारी खेती पक रही है यदि तुम इस की रक्षा करो तो नाश होने से बच सकती है। लोग कहते हैं खेती खसमां सेती।

उत्तर में गुरू नानक देव जी ने कहा, हे पिता जी! मैं ने तो अब एक एकांत खेती तैयार की है उस में हल चलाया गया है, उसमें बहुत फल होगा। अब तो उसी अपनी खेती की रक्षा करूंगा। दूसरों की खेती की रक्षा करनी व्यर्थ है। कालू जी को यह उत्तर बेतुका सा प्रतीत हुवा। कहने लगा–देखो लोगो यह लड़का किस प्रकार की बातें करता है? पिता ने कहा, हे पुत्र! यदि तू अपनी पृथक खेती करना चाहेगा तो हमें यह भी स्वीकार है, कर लेना। गुरू जी ने कहा मैं ने तो अपनी खेती में हल भी लगा दिया है उस में बहुत फल आने ही वाला है। पिता ने कहा, हम ने तो तेरी अलैहदा खेती देखी नहीं, कैसी है? गुरू जी कहने लगे पिता जी! उसे आप स्वयं देख लोगे और सुन लोगो। यह कह कर आप ने एक शब्द उच्चारण किया–

राग सोरठ महला १ ॥ घरु १ ॥

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नाम बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥
बाबा माया साथ न होई ॥
इन माया जगु मोहिआ विरला बूझै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह सुन कर कालू जी ने कहा कि इस का अर्थ बताओ। तब श्री गुरू जी ने कहा कि अपने मन को सतसंग में लगाना यही हल करना है और शरीर रूपी पृथवी में सुकर्मों की बीजा रोपणि यही सुंदर वाही है। साधुओं के दरशनों का उस में जल देना है। ईश्वर नाम का बीज डाला है। सन्तोष का सुहागा है। बुरे कर्मों से भय खाना यह खेती का जमना है जिस गृह में इस खेती के व्योपार से शुभ प्रारब्ध रूपी जो धन आता है। वही सुधन है और जो मिथ्या माया की रचना है सो द्रोह है वह संसारी माया ईश्वर नाम से विमुख करती है तथा परलोक में साथ भी नहीं जाती।

कालू जी ने फिर कहा बेटा यदि तू खेती करनी नहीं चाहता तो दुकान ही कर ले। हम लोगों की खेती तो दुकान है। तब गुरू जी ने दूसरी पौड़ी उच्चारण की–

हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥
सुरति सोच करि भांडसाल तिसु विचि तिसनो रखु ॥
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मनि हसु ॥

अर्थ

हे पिता जी ! मैं ने तो दुकान भी की हुई है, आप तो जानते नहीं। सुनिये–मनुष्य देह की जो आयु है वही हमारी दुकान है। सुरत की वृत्तियों को पाप कर्म से हटा कर पवित्र किया है। वही हमारी भांडसाल है, परमेश्वर के सत्य नाम का जो सदैव स्मर्ण है वही उन वर्तनों में चीज़ है। और संत समागम वही इस व्योपार में लाभ है और यही कमाई है।

तब कालू जी ने कहा, हे नानक ! यदि तेरा दिल यात्रा करने को है तो मैं तुझे घोड़ों का सौदागर बनाने को तैयार हूं जिस से तुम अनेक देशों की यात्रा कर सकते हो। गुरू जी ने कहा मैं तो पहले ही सौदागर हूं यह कह कर तीसरी पोड़ी उच्चारण की-

सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥
खर्च बंनु चंगिआईआ मतु मनु जाणहि कलु ॥
निरंकार के देस जाहि तां सुख लहहि महलु ॥ ३ ॥

अर्थ

हे पिता जी ! सदशास्त्रों का श्रवण तथा उन से प्रेम श्रद्धा यह हमारी सौदागरी है। सत्य भाषण यह घोड़े हैं बुरे कर्मों का त्याग तथा सुकर्मों का ग्रहण यह मार्ग व्यय है। मन में यह निश्चय कि परमात्मा सर्ब व्यापक है उसी की कृपा से निगु ण ब्रह्म के देश में पहुँच गये हो। उसके स्थान में हैं। बस यही व्योपार में लाभ है। जिस से परमानंद है तब कालू जी ने कहा बेटा ! तू हमारे काम का नहीं रहा। अब घर में बैठो। तेरी कमाई तो हम ने देख ली है। शरीक कहते हैं कि एक ही लाल पैदा हुवा है यदि तू साधु होकर कहीं चला गया तो लोग कहेंगे निकम्मां था, फ़कीर हो गया है। इस में निंदा होगी। कुछ नहीं करना तो किसी की नौकरी ही कर ले-यह सुन कर गुरू जी ने चुतुर्थ पोड़ी का उच्चारण किया-

लाइ चित करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥
बंनु बदीआ करि धावणि ता को आखै धंन ॥
नानक वेखै नदरि कर चड़ै चवगण वनु ॥ ४ ॥

अर्थ

हे पिता जी ! हमने नौकरी कर ली है। हमारा मन परमात्मा में लग गया है। यही चाकरी है। हमारा काम उस परमात्मा के नाम पर श्रद्धा है। बुरे कर्मों से मन रोकना यह हमारी दैनक क्रिया है। संसार में यश होता है प्रभु कृपा करे तो चारगुण रंग चढ़ता है। जिन पर प्रभु अथवा गुरू कृपा है

उन के मन रूपी आकाश में ग्यान का चंद्र चढ़ता है। वह निर्गुण ब्रहम के देश वासी हो गये हैं। यह शब्द सुन कर कालू जी खामोश हो गये। तथा गुरू जी की अवस्था उसी प्रकार रही।

॥ साखी वैद्य की ॥

श्री गुरू नानक मस्तानों की भांति रहने लगे। किसी के साथ बात चीत न करते तथा ध्यान में लंबे पड़े रहना इन की दैनक क्रिया हो गई। विरक्तों की भांति संसार के जंजाल काट दिये। समस्त बेदी कुल नानक जी को देख कर दुखी रहने लगी। सभी कहते कि कालू पटवारी का पुत्र पागल हो गया है। जब कोई मित्र आप से मिलने आता तो उस से अपरिचितों की भांति मिलते थे। समस्त दिन एकांत वास और उपवास ही में पड़े रहना नानक जी का कर्तव्य बन गया। माता चिंतातुर हो कर कहने लगी हे पुत्र! फकीरों का संग त्याग दो तथा तुम अपनी ओर देखो—उठो खाओ कमाओ और नाम पैदा करो। तुमारी ओर देख कर सारा परिवार तथा कुटंबी दुखी हो रहे हैं पिता की ओर अपनी कमाई की रक्षा करो। अच्छी प्रकार रहोगे तो तुमारा विवाह भी किसी सुयोग्य घराने में हो जायगा। जिस से मुझे सुख प्राप्त होगा तथा तुमारी कीर्ति होगी। तुमे मस्त मौला देख कर लोग मज़ाख करते हैं। तथा तेरा नाम 'नालायक' पड़ गया है। दरिद्री—निर्बुद्धि तथा बेकार यह शब्द तेरे नाम के साथ विशेषण लग रहे हैं। तुम जानते हो कि शरीकों के शब्द वज्र की भांति लगते हैं। मैं सुन २ कर जलती रहती हूं। यह सुन कर गुरू जी ने माता जी को कोई उत्तर नहीं दिया। बस वही चाल रही न बोलना, न खाना, न पहिरना। बस पड़े रहना इन का काम रहा। नानक देव जी महाराज उनमत्त पुरुषों की भांति दृष्टी गोचर हो रहे थे। माता जी के बहुत ही अनुरोध करने पर गुरू जी अल्प सा आहार करते थे और कभी कभी तो निर्जल ही दिन व्यतीत हो जाता था। शरीर निर्बल हो गया माता कहे बेटा तुमें कौन सी

व्याधि है ? कुछ अपनी औषधि करो । मुख पीत वर्ण हो गया है, हे पुत्र ! मैं अपने मन की व्यथा क्या कहूं । हे मेरे भगवान ! तू ही कृपा कर मेरे पुत्र को आरोग्यता प्रदान कर मैं दंडवत प्रणाम करती हूँ इस प्रकार माता परमात्मा से प्रार्थना करती थी ।

एक दिन माता ने कहा मैं अभी वैद्य को लाती हूं, और तेरा इलाज करवाऊंगी । बताओ तुम को क्या रोग है ? गुरू जी मौन ही रहे । लोग नानक देव की खबर लेने आने लगे तथा आप को मस्ताना देख कर दुखी होते थे । सब ने पटवारी जी से कहा कि आप चुप चाप मत बैठो । नानक देव का उपचार करने के लिये किसी सुयोग्य वैद्य को बुला कर चिकित्सा करवाओ । तुमारा एक ही पुत्र है । धन तो फिर भी हो जाता है । जीवन पहिले है । पुत्र पर अपना धन न्योछावर करना तुमारा कर्तव्य है । इलाज से नानक देव ठीक हो जायगा परमात्मा तुमारे पुत्र की आयु दीर्घ करे । कालू जी स्वयं उठे । और आप के भाई श्री लालु जी नानक देव के पास बैठे रहे । महिता कालू जी एक वैद्य जी को जिन का नाम हरि दास था ले कर गये । जहां गुरू नानक मुख पर वस्त्र डाले पड़े थे । वैद्य महोदय वहां आये । वैद्य जी ने गुरू जी की नाड़ी हाथ में लेकर पूछा कि इसे क्या रोग है । कालू जी ने कहा बस यह दिन रात पड़ा रहता है । बात चीत नहीं करता खान पान से विमुख रहता है । शरीर निर्बल तथा पीत वर्ण हो गया है । यह सुनकर वैद्य गुरू नानक जी के निकट जा बैठा । जब वैद्य ने नाड़ी देखी तो गुरू जी ने अपना हाथ खींच लिया । तथा कहने लगे कि आप ने मेरा हाथ किस लिये पकड़ रखा है । वैद्य जी ने कहा मैं रोग की पहिचान करने लगा हूं । रोग देख कर उपचार किया जायगा । तब गुरू जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया—

श्लोक महला १ ॥

वैद बुलाइआ वैदगी पकड़ ढंढोले बाहि ॥
भोला वैद न जाणई करक कलेजे माहि ॥ १ ॥

वैदा वैद सु वैद तूं पहिला रोगु पछान ॥
ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥
जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुख वसै आइ ॥
रोग गवाइहि आपणा तां नानक वैद सदाइ ॥ २ ॥

अर्थ

पिता जी ने श्री गुरू नानक देव जी का इलाज कराने के लिये वैद्य बुलाया, वैद्य ने गुरू जी का बाजू देखा। वह भोला भाला वैद्य गुरू नानक के रोग को नहीं जानता, नानक जी कहते हैं हे वैद्य उत्तम वैद्य मैं तो तब तुम को सुयोग्य वैद्य मानूंगा जब तुम मेरे रोग को पहिचान लोगे और वह दुवाई देनी जिस से रोगों का समूह नाश हो जाय और शरीर को सुख हो गुरू जी कहते हैं यदि ऐसी औषधि तुमारे पास है तो तब तुम सच्चे वैद्य हो फिर अपना भी रोग दूर करो तब तू सुवैद्य हैं यह सुन कर वैद्य ने प्रार्थना की– हे महाराज! वह रोग मुझे कहो अर्थात मेरा रोग आप ही बता सकते हैं, गुरू जी ने कहा हे हरिदास ध्यान से सुनो, पहले तो प्रत्येक प्राणी को अहंभाव का महान रोग है। जिस से संसार दुखी है। यह रोग जन्म मृत्यु का कारन है। किसी भी उपचार से यह रोग नहीं जाता जो इस रोग से अपने को दुखी जानते हैं वे दूसरों के रोग किस प्रकार दूर कर सकते हैं? हे वैद्य! जिस दुवाई से यह रोग दूर हो जाय उस औषधि को मैं देखना चाहता हूं। जो अपने रोग को दूर करे वही उत्तम वैद्य है। जो जन्म मरण से रहित हो जाय, उस को यह अहंकार का रोग नहीं होता। हे हरिदास! हम तो अपने प्यारे परमेश्वर में समाए हुवे हैं इस प्रेम रोग का तो कोई उपचार ही नहीं है। संसारी रोगों के इलाज तो अनेक हैं सभ में परमेश्वर व्यापक जाने तथा ईरषा न करे। आतमा एक रस सत चित आनंद है। यह उपदेश सुन कर वैध्य ने कहा हे कालू जी! आप के पुत्र को कोई रोग नहीं है। आप चिंता न करें। इसे ईश्वर भक्ति का रंग चढ़ा हुवा है। यह संसार के रोग दूर करने की सामर्थ्य रखता है। इतना कह कर वैध्य गुरू जी के चणों में

प्रणाम करके अपने स्थान को चल दिया।



॥ साखी खरा सौदा ॥

श्री गुरू नानक देव मस्ती में बैठे थे, कालू जी ने देखा तो दुःख हुवा। कहने लगे हे पुत्र ! मुझे तेरे ग़म ने मार दिया है। परंतु तुम नहीं समझते। गुरू जी ने कहा–हे पिता जी ! अब तो मुझे क्षमा कर दो आगे जो कुछ आप की आज्ञा होगी वही करूंगा। कालू जी ने कहा बेटा व्योपार करो। गुरू जी ने स्वीकार कर लिया तब कालू जी ने बीस रुपये देकर कहा लो बेटा कोई सत्य व्यापार करो। जिस में लाभ हो, गुरू जी ने कहा हे पिता आप स्वयं देखोगे कि मेरा व्यापार कैसा उत्तम है तब भाई बाले को बुला कर कालू जी ने कहा कि आप नानक के साथ जाओ। क्योंकि आप बुद्धिमान हो इसे व्यापार में सहायता प्रदान करें। भाई बाले ने गुरू नानक देव जी के वस्त्र भी उठा लिये और रुपये भी। गुरू जी के साथ हो लिया। मार्ग में संसार सम्बन्धि शिक्षा बाल्ले ने गुरू जी को दी। कुछ दूर तक पिता जी भी साथ शिक्षा देते चले गये। कहा हे पुत्र ! मुझे तुम पर बहुत विश्वास है कि व्यापार करके धन और मान प्राप्त करोगे। मेरा आप के सिवाय और कौन है ? संतान सुनोग्य हो तो माता पिता को यश प्राप्त होता है, हे पुत्र ! जिस चंद्र दर्शन से प्रत्येक प्राणी प्रसन्न होता है उसी प्रकार तुम को देख कर सभी नरनारी प्रसन्न हो। यह मेरी हार्दिक इच्छा है। जब तुम व्यापार में दक्षता प्राप्त करोगा तथा क्षत्री वर्णोचित कार्य करोगा तब तुम धनद कहलाओगे, संसार मान की दृष्टी से देखेगा। फिर मेरा मन शांत होगा। भाव यह है कि तुम व्यापार करो। इस प्रकार शिक्षा देकर कालू पीछे को आया।

साखी साधूओं को भोजन खिलाना



भाई जवाहर सिंह किरपाल सिंह पुस्तकां वाले, बजार माई सेवां
अ मृ त स र

न:



श्री गुरू नानक देव जी परमेश्वर संबंधिनी गाथा गायन करते। तथा बाले को ईश्वर महिमा सुनाते जा रहे थे। जब घर से बारह कोस पर आये तो उस वन में साधु मंडली बैठी देखी। वे साधु तप कर रहे थे। किसी ने अपनी भुजा ऊपर कर रखी थी तथा कोई खड़े होकर तप कर रहा था। पदमासन सिद्धासन मयूरासन अनेक आसन लगाये महात्मा बैठे थे। कोई स्वाध्याय में लीन है तो कोई प्रभु कीर्तन में मग्न है। उन के मन में स्वर्गादिक की कामना थी संसार के दुःखों को त्याग कर ऐकांत सेवन कर रहे थे। उन में एक महंत था जो मृगछाला बिछाये बैठा था। सिरपर जटाओं का मुकुट और ह्रदय में परमात्मा का ध्यान था।

श्री गुरू नानक देव इन महात्माओं को देखने लगे। फिर बाले को कहा, हे बाला! मुझे तो यहां ही खरा सौदा नज़र आता है। मैं इस को त्याग नहीं सकता। पिता जी की आज्ञा अच्छे व्यापार की है, इस से उत्तम व्यापार और कोई भी नही हैं। यह जो रुपये हमारे पास हैं इन के अर्पण कर दो। जिस से यह भोजन तथा वस्त्र खरीद सकें। बाले ने कहा महाराज! महिता कालू जी का भय है। उस ने व्यापार के लिये रुपये दिये हैं। कालू का स्वभाव भी कटु है। मैं तो आप का दास हूं। जो कहो करूंगा। परंतु पिता जी से आप ने ही निपटना होगा। वह कहीं मुझ पर कुपित न हो। यह कह कर बाले ने बीस रुपये नानक देव को दे दिये रुपये लेकर श्री गुरु देव एक साधु के निकट जाकर बैठ गये। तथा नम्रता पूर्वक कहा—हे संतवर! क्या आप वस्त्र नहीं पहिना करते? अथवा वस्त्र प्राप्त नहीं होता? शीत घाम दुःख तो देते होंगे। साधु ने उत्तर दिया कि हम निर्वान साधु हैं हमें वस्त्र की अधिक आवश्यकता माननी ही नहीं चाहिये। साधु ने फिर कहा—कि आप को ऐसे प्रश्न करने से क्या लाभ है? तब बाले ने कहा हे नानक देव! आप जिस काम के लिये आए हैं वह काम करो। गुरू जी ने कहा, बाला जी! मुझे पिता जी ने अच्छा सौदा करने की आज्ञा दी है, मैं तो कोई खरा अर्थात अच्छा सौदा ही करूंगा। गुरू जी की यह वाणी सुन कर बाले ने कहा, हे नानक!

कालू पिता और तुम पुत्र हो जैसे तुमारी इच्छा हो सोई करो। हमें क्या ?

फिर गुरू नानक देव जी ने संत जी से कहा, कि यदि आप वस्त्र नहीं पहिरते तो भोजन भी तो शायद ही करते होंगे ?

साधु बोला, अरे भोले नानक! हम उदासी अर्थात संसार से उदास होकर बनों में ही बिचरते हैं तथा जो कुछ परमात्मा देता है वही खान पान आदिक करते हैं।

गुरू नानक देव जी ने कहा, हे संत जी! आप का पवित्र नाम क्या है ? साधु ने कहा मेरा नाम संत रेणु हैं।

सुन कर श्री नानक देव बहुत ही प्रसन्न हुवे तथा कहने लगे, हे बाला! मैं यह सौदा (व्यापार) अवश्य ही करूंगा। मुझे तो यह सौदा (व्यापार) बहुत ही अच्छा नजर आता है। जैसा इस में लाभ है उतना लाभ और कहीं नहीं। बाले ने कहा, आप की जो मन आवे करो। मैं तो कुछ कहने सुनने का नहीं।

गुरू जी ने बाले से बीस रुपये लेकर संत रेणु के आगे रख दिये। संत कहने लगा, अरे बालक रुपये हमें नहीं चाहिये। फिर यह रुपये तो तुमारे पिता ने व्यापार के लिये दिये हैं। तुम फ़कीरों को क्यों दे रहे हो ? अभी तुम छोटी अवस्था के हो। तुमारा तो अपना लालन पालन अभी माता पिता के कंधों पर है। गुरू जी ने परम मृदुवाणी से कहा, हे संतवर! मेरे पिता जी ने मुझे अच्छा व्यापार करने के लिये कहा है। इस व्यापार से अच्छा व्यापार मुझे नहीं मिला। इस लिये मैं इसी कर्तव्य को करना श्रेयस्कर जानता हूँ। संत गुरू जी की ओर देख कर बोला, हे बालक! तुम पहिले अपना पूर्ण परिचय दो। तब श्री गुरू जीने कहा कि मेरा तलवंडी राय बुलार निवास है महिता कालू बेदी जो आज पटवारी हैं उनका पुत्र हूं। तथा मुझे नानक निरंकारी कह कर पुकारा जाता है। हे संतवर! मैंने पहले सत्युग में भक्ति की थी परंतु उस में उत्तीर्ण न हुवा फिर त्रेतायुग और द्वापर युग में भक्ति की। तब कुछ सफलता मिली। हमारी भक्ति उसी निरंकार

की भक्ति है अर्थात अनन्य भक्ति हमें प्रिय है। हम तो पहिले भी निरंकारी थे और अब भी निरंकारी हैं।

साधु ने प्रसन्न हो कर कहा, नानक! जो कुछ चाहो हम से मांग सकते हो, गुरू जी ने कहा कि यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे निरंकारी अर्थात सर्वेश्वर परमातमा दीजिये।

साधु ने कहा, जो कुछ मांग रहे हो वह तो तुम स्वयं ही हो तथा यह रुपये हमें नहीं चाहिये। यदि तुमें संत सेवा करनी ही है तो इन रुपयों का आमान्न अर्थात कच्चा भोजन ला दो यह साधु जो हमारे साथ हैं वे बना कर क्षुधा निवारण कर लेंगे। श्री गुरू नानक देव जी रुपये लेकर निकट की किसी वस्ती में गये तथा आटा, चावल, दाल आदिक वर्तनों के सहित लेकर आये।

तब उस महंत साधु ने कहा, हे नानक देव! आप तो उस परमात्मा के रूप हो। इस कलियुग में निरंकारी नानक रूप धार कर प्रगट हुवे हो। इन महात्माओं को आज भूखे रहते सात दिन व्यतीत हो चुके हैं। सिवाय उस दिव्य शक्ति के इस निर्जन वन में और कौन सहायक बन सकता है। हम ने अपने योग बल से आप को पहिचान लिया है। आप के पदार्पण से यह पंच नद प्रदेश कृत कृत्य होगा और कोटिशः प्राणी आप के दर्शनों से मोक्ष को प्राप्त करेंगे। हम अपने अहोभाग्य समझते हैं जिनों ने इन चर्म चक्षुओं से आप के पवित्र दर्शन किये हैं। यह कह कर उस महंत ने प्रणाम किया।

प्रणाम का उत्तर प्रणाम में ही देते हुवे और मंद २ मुसकराते हुवे जगदाधार श्री नानक वाले के साथ घर की ओर लौटे।

जब श्री नानक जी चले आये, तब एक साधु ने महंत जी से पूछा- कि आप ने उस लड़के को जाने की आज्ञा क्यों दी? अभी तो उस श्रद्धालु क्षत्री बालक (नानक देव) ने संतों की सेवा अपने हाथ से करनी थी।

तब महंत ने कहा, भाई! जिसे आप साधारण क्षत्री का बालक समझ रहे हो वह तो साक्षातकार ब्रह्म है जो निराकार वा साकार हो कर संसार

इकलौते बेटे पर भी दया नहीं है। तुमें तो केवल अपने धन से मोह है। तुम तो इनसानी सूरत में राक्षस हो, तुम श्री नानक जैसे सुपुत्र के पिता होनें के अधिकारी नहीं हो। मेरा मन चाहता हैं कि मैं नानक जी को अपने घर रखूं और दिल से सत्कार करूं। परंतु विवश हूँ। तुम इसे दुखी करते हो यह अत्यंत अनुचित है। इस का पाप मुझे लगता है। यह साधारण बालक नहीं।

इतना कहते कहते राय बुलार के नेत्रों में जल आ गया तथा कालू पर अति क्रोध आ गया, राय बुलार क्रोध में कांपने लगा तथा कहने लगा सुन पटवारी मैंने आज तक तेरा मान किया है परंतु नानक के मुंह पर तेरे हाथ से लगे हुवे निशान देख कर मैं कह सकता हूं कि तुम इनसान नहीं हो पिता की शकल में कसाई (व्याध) हो। तब डरते हुवे कालू ने कहा हज़ूर ! मैं क्या करूं बहुतेरा समझाया है मगर इस ने तो मेरा नाक में दम कर रखा है। मैंने इसे बीस रुपये व्यापार के लिये दिये और इस के साथ बाले को भेजा। बाले ने आकर कहा है कि नानक ने वह बीस रुपये साधुओं को दे दिये हैं। जब से नानक चलने फिरने योग्य हुवा हैं तब से इस ने घर का बहुत नुकसान किया है। अब यह रुपये बरबाद करके नगर के बाहर छुप कर बैठ गया था जहां मैंने इसे जा पकड़ा।

राय बुलार ने तब बाले को बुला कर पूछा कि बाला तुम नानक के साथ गये थे। सो सत्य २ सुनाओ। बाले ने जो कुछ हुवा था वह सुना दिया सुन कर बुलार ने कहा, पटवारी जी तुमारी किसमत बुरी है। तुम इस बालक को पहिचान नहीं सके तथा इस का उचित आदर नहीं करते। जैसे पारस को त्याग कर कोई मूर्ख कौड़ीयों की परवाह करता हैं तुमारी हालत उसी जैसी है, मैं विवश हूं क्योंकि मैं शरीर से एक मुसलमान हूँ और नानक देव का जन्म एक हिन्दु घराने का है इस लिये मैं क्रयात्मक तौर से कुछ भी करने को असमर्थ्य हूँ। और तुम माया के भूखे हो, अच्छा जो कुछ नानक तुमारा नुकसान करे। वह तमाम मुझ से ले लिया करो।

यह कह कर बुलार ने अपने निजी नौकर इमैदा खां को कहा, जाओ मेरे घर से बीस रुपये लाकर पटवारी को दे दो। नौकर ने बुलार की बेग़म जिस की जाति खोखरां थी उस से बीस रुपये मांगे। नौकर ने बेग़म से वीस रुपये लाकर कालू जी को दे दिये परंतु कालू ने वह रुपये न लेते हुवे कहा, हज़ूर! रुपये आगे भी तो आप के ही दिये हुवे हैं। जब मैं आप का नौकर हूं तो रुपये भी तो आप के ही हैं। मैं और नानक तथा हमारा सारा परिवार भी आप ही का है। मैं इस प्रकार आप से रुपया नहीं लेना चाहता, बुलार ने फिर कहा कि यदि मैं मुसलमान न होता तो इस अद्वितीय बालक की पालना स्वयं करता परंतु मजबूर हूँ। अब मैं वायदा करता हूं कि नानक देव जब तक अबोध बच्चा है तब तक इस का पालन पोषण सेवा भाव से मैं स्वयं करूंगा तथा इस का तमाम खर्च मेरे घर से दिया जायगा। दौलत के मोह से निरंकारी नानक को नालायक कह कर गुनाह के भागी न बनो। तथा जो नुकसान नानक ने किया है वह तमाम मैं इसी समय देने को तैय्यार हूँ। कालू ने धन लेना अस्वीकार कर दिया। फिर बुलार ने कहा, पटवारी साहिब! यह बालक जो खुदा ताला का रूप है इस ने संसारी जीवों के बंधन तोड़ने के लिये तेरे घर में जन्म लिया है। यह बालक तो दिव्य संत रूप है परंतु तुम इसे दंड देते हो, मैं हैरान हूँ। राय कहीं कुपित न हो इस लिये कालू जी ने रुपये ले लिये। फिर आज्ञा लेकर अपने घर को आया।

श्री नानक देव को कालू ने चपतें लगाई हैं यह सुन कर नगर निवासी कालू की निंदा करने लगे, कालू के इस कुकर्म पर सारा नगर दुखी हुवा तथा लोग कहते थे, देखो तो इस व्याध कालू ने अपने संत पुत्र को बुरी तरह पीटा है और अब बुलार से रुपये भी प्राप्त कर लिये हैं। बाबा! यह कालू अत्यंत कठोर मन वाला क्षत्री है।

दूसरे दिन कालू महिता राय बुलार के दरबार में उपस्थित होकर तथा क्षमा याचना मांग कर जो रुपये लिये थे। वह लौटा लेने का अनुरोध करने

लगा। बुलार ने कहा, हे कालू ! यह रुपये जो तुम लौटा रहे हो तुम को नहीं दिये। यह तो नानक देव के देने थे वे मैंने श्री नानक के अर्पण कर दिये हैं।

कालू ने कहा, हज़ूर ! नानक के पास रुपये कहां से आये जो आप ने लिये और अब लौटा रहे हो। मुसकरा कर बुलार ने कहा कि भाई! दुनीआं के अंदर जितनी दौलत है उस का स्वामी नानक है तथा जो कुछ मेरे घर में हाथी, घोड़े, स्वर्ण तथा जुवाहरात हैं उस सब का मालक तेरा सुपुत्र नानक ही है। मैं क्या सारा संसार ही इस बालक का दिया हुवा ग्रहण कर रहा है।

राय बुलार के यह शब्द सुन कर सभी लोग हैरान हो गये। उन की श्रद्धा श्री कालू दुलारे निरंकारी नानक के पवित्र चर्ण कमलों में अनन्य रूप से हो गई।

॥ साखी जय राम पलते की ॥

चैत्र वैशाख के दिनों में एक मनुष्य जिस का नाम जय राम था उस की जाति पलता थी, सुलतानपुर कसबे का निवासी था। वह खेतिओं के निरीक्षण के लिये तलवंडी में आया। एक दिन वह राय बुलार के निकट बैठा था तब सगाई की बात होने लगी। उस ने बुलार से कहा कि मुझे अपने लिये किसी क्षत्री कन्या की आवश्यकता है। तब अनेक बातों के पश्चात ब्राह्मण निधे को इस काम के लिये नियत करने का प्रस्ताव राय बुलार ने रखा और कहा कि मैं मुसलमान हां इस लिये अच्छी प्रकार नहीं कह सकता। यदि आप का रिश्ता हो सके तो कालू बेदी की पुत्री है आप उसे पूछ कर देख सकते हो। मैं भी आप की ओर से कहने को तैयार हूं। तब एक दिन निधे ब्राह्मण ने कालू जी से मिल कर कहा, हे श्री कालू जी ! आप भी क्षत्री हैं और जय राम भी क्षत्री है यह संयोग उत्तम है। आप जय राम के साथ रिश्ता बना लें तो अच्छा है। तब कालू जी ने कहा

पंडित जी ! आप कहते हो अथवा जय राम जी कहते हैं तब बुलार ने कहा पटवारी जी ब्राह्मण के रूप में जय राम ही कह रहा है। तब कालू ने कहा हजूर मैं आप का कहना अस्वीकार नहीं कर सकता ।

अंत तो गत्वा बीबी नानकी का विवाह सुलतान पुर में किया गया ! तब एक दिन कालू जी ने कहा हे बेटा नानक ! तू सुलतान पुर जा कर अपनी बहिन नानकी को ले आओ । गुरू जी ने कुछ टाल मटोल किया । फिर माता त्रिप्ता जी के बार बार कहने पर श्री नानक देव जी अपने प्रेमी वाल्ले को साथ लेकर सुलतान पुर की ओर रवाना हो गये । बहिन नानकी को मिलकर बहुत ही प्रसन्न हुवे । फिर जय राम जी मिले; दोनो ओर बहुत ही प्रसन्नता हुई । दूसरे दिन श्री गुरू जी ने बहिन नानकी को साथ ले जाने का अनुरोध किया । जय राम ने कहा हे नानक ! यदि तुम दोनो अर्थात तुम और नानकी यदि यहां ही रहो तो मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ । मैं तुम दोनों को नहीं भेजना चाहता तब नानक जी ने कहा कि आप कृपया एक बार तो मुझे भेज दो । क्योंकि इस प्रकार मेरे माता पिता भी प्रसन्न रहेंगे । तब जय राम जी ने नानकी जी से कहा कि तुमारा भाई बहुत उदास है और जाना चाहता है नानकी जी ने कहा जैसे आप की इच्छा हो वही ठीक है । मेरे विचार में आप इस बार नानक के साथ मुझे भेज दो क्योंकि जहां माता पिता प्रसन्न होंगे वहां नानक भी प्रसन्न हो जायगा । मैं अपने भाई नानक देव जी से भय मानती हूं । इस बार आप को उस का कथन मानना ही उत्तम है । नानक देव भाई जो कुछ अपनी रसना से कह देता है वही अक्षरशः सत्य होता है ।

जय राम जी ने नानकी जी के विचार मान लिये तो कहा अच्छा अब तुम जाओ परंतु फिर कब तक यहां पर आओगी । जय राम को उत्तर में नानकी ने कहा कि जब आप वहां आयेंगे तब अपने साथ ही ले आना ।

अंत में भाई वाला गुरू जी और बीबी नानकी तलवंडी की ओर

चल दिये। घर में आकर माता पिता को मिले। यह समाचार राय बुलार ने भी सुना कि नानक देव आ गया है, राय बुलार श्री गुरू नानक जी से मिल कर अति प्रसन्न हुवा।

जब फिर वैशाख के दिन आये तो फिर खेती के निरीक्षण पर जय राम जी तलवंडी में आये। तमाम काम से जब फुरसत हुई तब वापस जाने का बंदोबस्त करने लगे। राय बुलार ने जय राम जी का बहुत ही स्वागत किया। राय बुलार ने कहा, हे जय राम जी ! आप मेरे योग्य सेवा बताओ और एक बात मैं कहनी चाहता हूँ वह यह है कि आप का श्वशुर कालू पटवारी स्वभाव का अत्यंत कड़वा है और आप का जो श्याला श्री नानक है वह तो अत्यंत उत्तम स्वभाव का संत पुरुष है। मैं चाहता हूँ कि नानक देव जी को आप अपने पास सुलतान पुर ही रखो। नानक देव जी जब महात्माओं से मिलते तथा उनकी सेवा करते हैं तब कालू दुखी होकर अपशब्द कहता है। इस लिये नानक जी को आप अपने पास रखें। इस से यह कुछ काम काज भी सीख जायगा और पिता के कोप का भाजन भी नहीं बनेगा। जय राम ने कहा मुझे स्वीकार है। मैं इसे अपने पास रखूंगा और किसी अच्छे घर में इस की शादी भी करवा दूंगा। तब राय ने कहा कि अब नानक तुमारे साथ जाता शोभा नहीं देता। दूसरे महीने हम लोग श्री नानक देव को आप के पास भेज देंगे। इस की सगाई उधर ही किसी नेक घराने में करवा देनी। इस के पश्चात श्री जय राम जी द्विरागमण (मुकलावा) लेकर अपने घर को आए।





॥ साखी एक अतीत की ॥

अब श्री गुरू जी महाराज की आयु बीस वर्ष की हो गई तथा इन का रहन सहन उसी प्रकार मस्ती में भरा हुवा था, वही चाल थी, जो बचपन से चली आ रही थी। जिधर मन माना चले जाना और जहां बैठना, वहीं बैठे रहना। शरीर धरती पर और मन अकाल पुरुष की ओर लगाये रहना यह आप की दिन चर्या थी।

एक दिन एक साधू वहां आया, जिस ने नगर के बाहर आसन लगाया तब नानक जी उस के पास जा बैठे। उस समय श्री गुरू नानक जी के हाथ में एक स्वर्ण की मुंद्री थी। तथा एक गड़वा (लोटा) था। उस साधू ने गुरू जी का परिचय पूछा। उत्तर में गुरू जी ने कहा मैं क्षत्री का पुत्र हूं। मुझे लोग नानक निरंकारी के नाम से बुलाते हैं। उस साधू ने कहा हे नानक! आप निरंकारी हो और हम निरंकार के हैं। इस लिये हमें कुछ खाना दीजिये। गुरू जी ने अंगूठी और गड़वा साधू के आगे रख दिया। उस ने कहा यह छाप और गड़वा आप अपने पास ही रखो। गुरू जी ने उत्तर दिया कि पुरुष को चाहिये जो कुछ कहे उसी पर अमल करे। तब साधू ने कहा हे नानक! तुम सत्य रूप में निरंकारी हो। तथा हम लोग मिथ्या ही निरंकार के बनते हैं। तब श्री गुरू जी अपने घर को आ गये। गड़वा और अंगूठी लेकर वह साधू नौं दो ग्यारह हो गया।

कालू जी ने पूछा नानक! लोटा और अंगूठी कहां है? गुरू जी खामोश हो रहे। अति कुपित होकर कालू ने कहा कि नानक! तेरा मेरे घर में ठहरना कठिन है। अभी २ निकल जाओ। मैं तुम को अपने घर में नहीं रख सकता। मैं तुमें समझा कर थक गया हूं। परंतु तुमें ज्ञान नहीं

होता इस लिये जिधर मन माने चले जाओ।

इस बात की सूचना राय बुलार को मिली तब बुलार ने कालू को बुला कर कहा हे कालू ! आज फिर क्या हो गया है। कालू ने रोष से कहा कि हजूर आज मेरा अनोखा लाल लोटा और अंगूठी कहीं बोड़ आया हैं तथा बताता तक नहीं। तब बुलार ने धैर्य देते हुवे कहा, कि नानक को श्री जय राम जी के पास सुलतान पुर भेज दें तो ठीक है। यहां तुम भी प्रति दिन क्रोध करते हो। और नानक भी दुखी होता है। जय राम जी के निकट निवास करके किसी काम में लग जायगा और ठीक हो जायगा।

कालू जी ने बुलार का कथन मान लिया। बुलार ने एक पत्र अपनी ओर से जय राम जी को लिख कर एक अपने पुरुष के साथ श्री नानक देव को सुलतान पुर भेज दिया। उस पत्र में लिखा कि आप इसे भली प्रकार रखें। तथा किसी काम पर लगायें। केवल रिश्तेदार ही न जानना। अपितु इसे अपना समझ कर प्रसन्न रखना। नानक जी के प्रस्थान पर माता त्रिप्ता उदास होकर कहने लगी। बेटा ! मैं तुमें देख कर अति प्रसन्न होती थी। अच्छा ईश्वर तुमें आयु प्रदान करे। श्री गुरू जी ने माता को दुखी देख कर कृपा दृष्टी से निहारा। जिस से माता को जो मोह हुवा था वे दूर कर दिया, फिर कहा, माता जी ! सौ बात की एक बात कहता हूँ कि आप ने उस सर्व शक्तिमान परमात्मा को सदैव स्मर्ण करना। इतना कह कर तथा सब को प्रणाम कह कर बाले को साथ लेकर गुरू जी सुलतान पुर की ओर चल दिये।

पांचवें दिन गुरू जी सुलतान पुर पहुंच गये। संवत १५४४ मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी को गुरू जी अपनी बहिन बीबी नानकी को जा मिले। बीबी नानकी अपने भाई के चर्णों पर गिर गई। गुरू जी ने शीघ्र ही उठा कर कहा, बहिन जी ! आप बड़ी हो। इस लिये इस प्रकार चर्णों पर गिरना उचित नहीं है। मुझे आप के चर्णों पर अपना शिर रखना योग्य है। बीबी जी ने कहा, हे नानक ! यदि तुम साधारण मनुष्य होते तो तुमें ही मेरे पांव

छूने उचित थे। परंतु आप तो साक्षातकार ईश्वर हो। और संसार के उद्धार करने को प्रकट हुवे हो। यह कह कर आदर सतकार से सुंदर आसन पर बैठाया। तथा सभी कुशल-मंगल पूछने लगी।

इतने में श्री जै राम जी भी घर आये ; तो क्या देखते हैं कि श्री नानक देव जी घर में विराजमान हैं। नानक देव जी अपने बहिनोई के चर्णों में लग कर प्रणास करने लगे। जै राम भी बुद्धिमान था, उसे भी ग्यान था। उस ने गुरू जी को उठा कर फिर स्वयं उन के चर्ण स्पर्श किये। गुरू जी ने मुसकरा कर कहा जीजा जी ! यह उलटी गंगा क्यों वहाने लगे हो। अर्थात नमस्कार तो मुझे करना उचित है। परंतु उलटा आप कर रहे हो। तब जै राम जी ने कहा–हे गुरू जी ! संसार की दृष्टी में भले ही आप मेरे श्याला हैं। परंतु मेरे नेत्रों में बैठ कर देखो तब सत्य तत्व का पता चलता है। मैं जानता हूं कि आप संसार के तारने को मनुष्य बन सच्चिदा नंद ही प्रकट हुवे हो। यह मेरी दृढ़ धारणा है। आज मेरे जैसा भाग्य शाली और कौन है। कि जिस के घर में समस्त संसार का स्वामी स्वयं बिराजमान हो। अब आप को कोई भी तकलीफ़ न होगी। जिस कार्य के लिये आप ने नर तन धारण किया है। उसी कार्य को निःसंकोच करो। तब गुरू जी ने कहा कि यदि लोक हित के लिये कोई काम किया जाये तो अच्छा हैं।

जै राम जी ने कहा जैसे आप की इच्छा। अच्छा आप यह बताओ। कि आप ने तुर्की भाषा सीखी है या नहीं ? गुरू जी ने कहा यथा योग्य कार्य होता ही रहेगा। तब जै राम ने कहा कि यदि आप को नवाब दौलत खान का मोदी खाना लेकर अफ़सर बनाया जाय तो अच्छा है। परंतु नवाब का मोदी खाना बड़ा है। गुरू जी ने कहा कोई बात नहीं वह कर्तार सभ कुछ करने को सामर्थ्य है।

श्री गुरू नानक देव जी मोदी खाने के कार्य भार को सहन करने के लिये तैयार देखे तो बीबी नानकी ने कहा भाई जी मेरा विचार है कि अपनी प्रकृति के अनुसार भजन ही करो तो ठीक है। जहां भगवान हमें

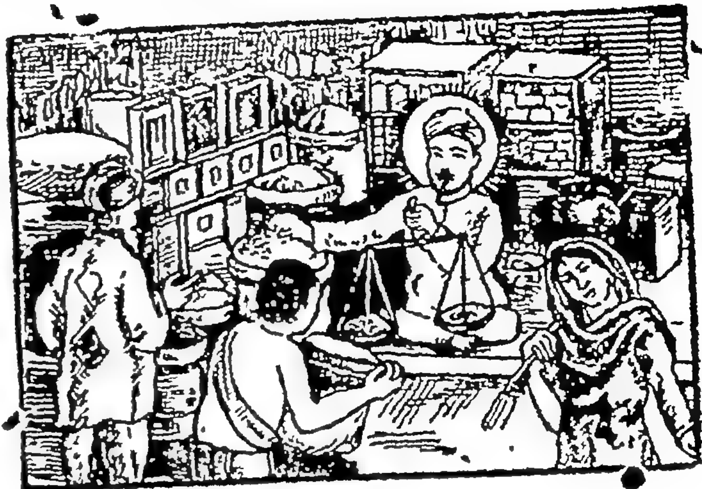
खाने पहिरने को देता है। वहां आप का भी गुज़ारा हो सकता है। फिर आप तो परमात्मा के रूप हो। फिर नानक जी ने जय राम जी से कहा कि आप नानक देव जी को संसारी झंजटों में न डालो। मेरा भाई तो साधुओं का प्यारा है। इस से काम नहीं लेना चाहिये। इस पर श्री गुरू जी कहने लगे। बहिन जी! पुरुष को सदैव कमा कर ही खाना उचित है। इस से पवित्रता होती है। तब नानकी जी ने कहा, जैसे आप की इच्छा।

फिर नानकी जी ने जय राम से कहा, कि आप मेरे भाई की सगाई का भी ध्यान रखें। जब भाई गृसस्थी हो जायगा तब कमाई की ओर भी स्वयं अग्रसर हो जायगा। जय राम जी ने कहा, सुनो जी जब काम पर लग जायगा तब स्वयं सगाईयें चली आयेंगी। इस की चिंता व्यर्थ है। उतावली होना ठीक नहीं। तब नानकी जी ने कहा, मैं तो नादान हूँ और आप बुद्धिमान हैं। जो कुछ भी उचित होगा वही करोगे।

तब जय राम जी ने मार्ग शीर्ष शुक्ल चतुर्दशी के दिन नवाब दौलत खां से गुरू जी का मेल करवाया। और जय राम जी ने नवाब को कहा कि आप ने एक बार मोदी खाने के लिये कहा था, सो आप के हुकम अनुसार यह जुवान जिस का नाम नानक देव है लाया हूँ। आप इसे मोदी खाने का काम दो नवाब ने श्री गुरू जी की मन मोहनी ईश्वरीय सूरत देख कर प्रसन्न होकर कहा, कि नानक देव बुद्धिमान दृष्टि गोचर होता है। आशा है कि मोदी खाने को भली प्रकार संभाल लेगा, यह कह कर मोदी खाने पर श्री नानक देव जी को लगा दिया गया। बीबी नानकी को अति प्रसन्नता हुई।



॥ साखी मोदी खाने की ॥



संवत १५४७ मार्ग शीर्ष मास की पूर्णमाशी वीरवार के दिन जय राम जी ने एक सहस्र रुपया पेशगी गुरू जी को नवाव से ले दिया। गुरू जी कुछ काल मोदी खाने का काम चलाते रहे।

एक दिन भाई वाले ने श्री गुरू जी से प्रार्थना की, हे महाराज! आप मोदी खाने पर लग गये हो। अब कृपा करके हमें भी आज्ञा दीजिये। हम भी अपने खेती वाड़ी के काम पर जाएं। गुरू जी ने कहा, हे वाला! यह कच्ची प्रीति अच्छी नहीं होती। अभी २ जाने की क्या पड़ी है। मुझे अभी आप से एक काम है। बाले ने कहा आप तो क्षत्री पुत्र हो काम पर लग गये। हमें भी तो काम करना उचित है। इस लिये आज्ञा दीजिये।

गुरू जी मुसकरा कर कहने लगे–हे वाला! हम ने तो अपना काम करना है। तू कुछ समय निरंकार के हुकम की प्रतीक्षा कर। और हमारे साथ ही निर्वाह कर। वाले ने कहा हे महाराज! मैं तो प्रारंभ से आप का हो चुका हूं जैसे आज्ञा हो वैसे ही करूंगा। यह कह कर गुरू जी के साथ ही रहने लगा।

गुरू जी हर एक महीने के प्रारंभ में मोदी खाने की आय व्यय नवाव को वताते थे। हिसाव से श्री गुरू नानक जी का ही कुछ नवाव की ओर शेष होता था। यदि कोई कुछ मांगने आता तो गुरू जी उसे खाली नहीं जाने देते थे। अन्न वस्त्रादिक सभी को दे देते थे। इस के अतिरिक्त यदि नवाव की ओर से किसी को पांच सेर देने की लिखत आज्ञा होती। तो गुरू जी उसे सवा पांच सेर ही देते थे। भिक्षुकों को जिस स्थान से मिले वहां अवश्य जाते हैं। नानक जी महाराज की ख्याति हो गई। वस फिर तो

भिक्षुकों का तांता ही बंधा रहने लगा।

सुलतानपुर के कुछ लोग तलवंडी में आये जिन से कालू जी ने नानक जी की प्रख्याति सुनी। नानक बहुत दान कर रहा है। यह सुन कर श्री कालू जी सुलतान पुर में आये।

श्री गुरू नानक जी ने जब पूज्य पिता कालू जी को देखा तो सत्कार करने के लिये चर्णों पर प्रणाम किया। कालू ने पुत्र को गले लगा कर माथा चूमा। फिर बाले ने सत्कार किया। अंत तो गत्या बाला और कालू जी तथा गुरू जी जय राम जी के घर में आये। जय राम जी की ओर से बहुत सत्कार किया गया, मर्यादा के अनुसार कालू जी ने पुत्री नानकी तथा जय राम जी को वस्त्र भूषण तथा रुपयों की भेंट की। फिर कुछ इधर उधर की बातों के पश्चात कालू जी ने श्री नानक देव जी से पूछा, बेटा! तुम को यहां पर आये हुवे बहुत दिन हो गये हैं। बताओ तो क्या कुछ लाभ प्राप्त किया है। श्री नानक जी ने कहा, हे पिता जी! यहां आकर बहुत कुछ कमाया और खाया है परंतु मेरे पास तो एक फूटी कौड़ी भी जमां नहीं है। उस समय कालू जी बाले पर कुपित हो कर कुछ अपशब्द भी कहने लगे। गुरू जी ने बाले को संकेत किया तो बाला जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। कालू जी ने फिर जय राम जी से कहा, कि आप ने नानक देव की ओर ध्यान नहीं दिया तथा इस की सगाई का भी प्रबंध नहीं किया। बीबी नानकी जी को पिता जी की बात कुछ अखरी कहने लगी, पिता जी! जब से मेरा भाई यहां आया है। तब से इस ने आप की कोई हानि नहीं की। आप को प्रसन्नता होनी चाहिये कि नानक काम पर लगा हुवा है अब आप यह नहीं कह सकते कि नानक बेकार बैठा रहता है। वह दिन दूर नहीं जब कुछ एकत्र भी करेगा। तथा हम लोग सगाई के पीछे लगे हुवे हैं आप चिंता न करें। जय राम ने कहा, हम ने एक जगह देखी है। मूला नाम का एक चौना क्षत्री है। पखोके रंधावे में निवास करता है उस की पुत्री युवा है। वह पखोके रंधावे का पटवारी लगा हुवा है। यह पुण्य का संबंध है। हम ने

वहां ही नानक की सगाई की आशा कर रखी है। आगे जो उस परमात्मा की इच्छा है वही होगा।

जै राम जी ने कहा हे महिता जी! मैं तो चाहता हूं कि आप और माता जी भी यहां सुलतान पुर आ जाओ। तब कालू ने कहा जै राम! यह उचित नहीं। उधर पटवार का सारा काम मेरे ऊपर है। इस लिये मुझे वहां रहिना चाहिये। परंतु जिस समय नानक की सगाई होने वाली हो तो उस समय मुझे शीघ्र ही बुला लेना। तथा इस का ध्यान रखना। कहीं यह धन को व्यर्थ न गँवा दे।

नानकी जी ने कहा-पिता जी आप अपने भाग्य महान जानो। जो भाई नानक का यहां मन लगा हुवा है। तथा काम कर रहा है। पिता जी! अब तो भाई प्यारा अपनी कमाई का धन बचा कर किसी भिक्षु को दान रूप कुछ देता है। तो उस से हमारी अथवा आप की क्या हानि है? यदि किसी बुरे काम में लगावे तो हम उसे रोक भी सकते हैं। अपितु भलाई से रोकना तो पाप है। हां! एक बात की अवश्य चिंता है। कि नानक देव के निकट सदैव मांगने वाले साधु रहते हैं। और नवाब का सुभाव कड़वा है। जब कभी हम देखते हैं। तो मोदी खाने के आगे साधु संतों तथा मांगने वालों का तांता सा बंधा होता। तथा नानक किसी को भी कुछ दिये वगैर खाली हाथ नहीं लौटाता। नवाब के स्वभाव से प्रभावित होकर हम लोग भय भीत रहते हैं। कि कहीं सरकारी धन में कोई कमी न आ जाय। परंतु पिता जी! जब कभी हिसाब का निरीक्षण होता है। तो सदैव नानक का पल्ला ही भारी निकलता है। इस लिये हमें विश्वास हो जाता है कि नानक देव अवश्य कोई अवतार है। साधारण जीव नहीं। इसी लिये हम लोग नानक देव को कुछ भी नहीं कहते। यह सुन कर कालू जी ने कहा-हे जै राम जी! अब जब कभी मोदी खाने का निरीक्षण हो तथा नानक के कुछ रुपये अधिक निकलें तो उसी समय वे रुपये तुम ने अपने अधिकार में कर लेने। इस काम के परामर्श के लिये, भाई वाले की सहायता चाहीये।

फिर बाले को बुलाया गया । तथा कहा गया हे बाला ! तू एक बुद्धिमान है इसी लिये नानक की देख रेख तेरे ऊपर ही रखी गई है । तुझे इस बात की ताकीद की जाती है । कि नानक को फ़जूल खरची से सदा सचेत रखो ।

इस बात से बाले को कुछ क्रोध हुवा-तथा कहने लगा-हे पटवारी जी ! आप यह स्वप्न में भी न समझें कि नानक से मैं किसी प्रकार का लाभ प्राप्त कर रहा हूं । मेरे लिये तो एक फूटी कौड़ी भी जो बना कर लेनी है । वह बुरी चीज़ के तुल्य है । हे महिता जी ! आप तनिक मन में विचार करें । कि नानक कोई बच्चा नहीं । जिसे हम डांट डपट कर अपनी इच्छा के अनुसार कर सकें । यदि कुछ अधिक कहें तो अपने अपमान का भय है । हे पटवारी जी ! यदि आप मुझ से सत्य पूछते हैं । तो मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि तेरा पुत्र नानक सारे संसार का पिता है । उन का प्रत्येक कर्तव्य अमानुषीय है । उस से हानि की संभावना निरर्थक है । तथा अपनी अल्पज्ञता का चिन्ह है । इतना कह कर बाला किसी विशेष ध्यान में निमग्न हो गया ।

फिर अचानक बोला-हे कालू जी ! हम ने तो निश्चय कर रखा है कि नानक का विवाह शीघ्राति शीघ्र हो जाय, तो फिर यह स्वयं गृहस्त की ओर अग्र सर होगा । जिस से फ़जूल खर्ची अपने आप रुक जायगी । इस कार्य के लिये श्री जय राम जी ही पर्याप्त हैं । आप निश्चिंत रहें ।

अतंतोगत्वा यही निश्चय हुवा कि श्री नानक जी का विवाह शीघ्र ही किया जाय । कुछ दिनों के पश्चात कालू जी अपने नगर को आये । त्रिपता जी ने अपने पुत्र पुत्री की कुशलता पूछी । तब कालू जी ने उद्विग्न मन से कहा-कि नानक की चाल ढाल तो पूर्व वत ही है । अच्छा वह ईश्वर उसे सुबुद्धि प्रदान करे । इस के पश्चात अपनी यात्रा का विवर्ण विस्तार पूर्वक सुनाया ।

इधर एक दिन जय राम जी नानकी के निकट एकांत में बैठे थे । तब परम विदुषी नानकी ने जय राम जी से पूछा कि आप आज चिंतातुर प्रतीत

हो रहे हैं। यदि उचित हो तो आपनी चिंता का कारण मुझे बताने की कृपा करें। पुरुष की सहायता दूसरा पुरुष कर सकता है। इस लिये आप की चिंता में हाथ बटाना अर्धांं होने के नाते मेरा भी कर्तव्य है। सुन कर जय राम बोले! हे नानकी! मुझे लोग कहते हैं कि तुम आपने श्याले नानक की फ़ज़ूल खर्ची से एक दिन नवाब साहिब के कोप भाजन बनोगे। अब करूं तो क्या करूं। यदि नानक को वापस तलवंडी भेजूं तो संसार में मेरी निंदा होगी और यदि मौन रहूं तो नवाब का भय मेरी चिंता का कारण बनता है। मेरी बुद्धि की नैया डगमगा रही है।

नानकी अपने पति की बात सुन कर मुसकरा कर कहने लगी, हे स्वामिन! जैसे उस परमात्मा के ज्ञान का परिचय सब से प्रथम इंद्र देवता को हुवा था। तथा पश्चात ईश्वरीय ज्ञान इस संसार में फैला था। यह कथा उपनिषदों में आती है। उसी प्रकार श्री गुरू नानक देव जी महाराज का परिचय सर्व प्रथम मुझे प्राप्त हुवा है। यह मेरा सौभाग्य है। हे पतिदेव! आप श्री नानक देव जी को साधारण मनुष्य न समझें वे तो अखिल भुवन पति साक्षात ब्रह्म ज्योति हैं। जो संसार की हित कामना से अवतार हुवे हैं लक्ष्मी इनकी दासी है। जहां नानक तहां लक्ष्मी हाथ बांधे खड़ी रहती है। मैं सत्य कहती हूं कि अब जब आय व्यय का निरीक्षण होगा। तब सदैव कोष की वृद्धि ही दृष्टी गोचर होगी। स्वामी जी! जहां लक्ष्मी पति स्वयं उपस्थित हों वहां हानि की तो संभावना एक उपहास्यपद बात है। अधिक क्या कहूं। आप श्री नानक देव जी को परम ज्योति जान कर निश्चिंत रहें तथा लौकिक मर्यादा के अनुसार मैं अपने भाई को बुला कर कुछ समझाने का प्रयत्न करती हूँ। सत्य तो यह है कि मैं इसी बहाने नूरी जोत के दर्शनों से अपने नेत्र पवित्र करूंगी। यह कह कर तुलसां गोली को बुला कर कहा, हे तुलसां! तू मोदी खाने से नानक देव को बुला ला।

तुलसां से बहिन जीका संदेश सुनकर श्री गुरू नानक जी वाले को कहने लगे। हे बाला! मुझे ग्यान होता है कि आज फिर किसी ने

शिकायत की है। इसी लिये पूज्य भगती नानकी ने मुझे बुला भेजा हैं। मैं घर में जाना चाहता हूँ। तुम भीतर से बताशों का बर्तन ले आओ। बाला बताशों का मटका उठा लाया। श्री गुरू जी ने उस में से अढ़ाई सेर बताशे जो उस में थे वे अपने दामन में उलट लिये। तथा नानकी जी की ओर प्रस्थान किया।

नानकी जी ने सुना कि संसार के रचने वाले मेरे भ्राता श्री नानक जी आ रहे हैं। तब स्वागत के लिये हाथ बांधे खड़ी हो गई। एक सुंदर आसन पर श्री गुरू जी को सन्मान के साथ बैठाया गया। तथा संग आए बाला जी को उचित आसन दिया गया। गुरू जी ने नानकी जी से पूछा, आप ने मुझे जिस कार्य के लिये बुलाया है, वह कहो। नानकी जी ने कहा कि आप के दर्शणों को मेरा मन चाहता था, क्योंकि बहुत दिनों से आप का दर्शन नहीं हुवा। गुरू जी मुसकरा कर कहने लगे कि बहिन जी बहाना करने की आवश्यकता नहीं। जिस काम के लिये मुझे बुलाया गया है। उसे ही सुनना चाहता हूँ। नानकी ने कहा, वीर जी! आप तो सर्वज्ञ हैं। मुझ से पूछने की आवश्यकता नहीं। श्री गुरू नानक देव कहने लगे कि आप लोग मोदी खाने की आय व्यय पूछना चाहते हो। सो कृपया जब दिल चाहे निरीक्षण कर सकते हो। मैं जानता हूँ कि किसी ने मेरी शिकायत की है। बहिन जी फालगुन शुक्ल पंचमी के दिन जब हम ने नवाब के साथ हिसाब किताब किया तब हमारे १३७) एक सौ सैंतीस रुपये नवाब की ओर अधिक निकले थे। तथा कहा, हे जय राम जी! अब तो आप कोई उपालंभ नहीं। इस लिये आज से मोदी खाना किसी और को संभाल दिया जाय तो अच्छा है। तथा आज से हम आप से जुदा होते हैं यह सुन कर जय राम भय भीत हो गया और बीबी नानकी रोने लग गई। कहने लगी भाई जी पहले मुझे समाप्त करो। पीछे कहीं जाना। गुरू जी ने कहा कि अब तो मोदीखाने की आय व्यय ठीक है, कल को कोई गड़बड़ हो जाय तो तुमारी ज़िम्मेवारी पर धब्बा आयगा। यह उचित नहीं है।

जय राम ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे गुरुदेव ! मैं आज तक भूल में था, मैंने आज आप को सत्य रूप से जान लिया है मैं आप से क्षमा याचना करता हूँ बहिन नानकी ने भी अपनी भूल पर पश्चाताप किया, यह सभी कार्य बाला जी देख रहे थे, कहने लगे–हे सतगुरु ! आप तो प्रत्यक्ष अवतार हो तथा आप पर कोई भी बात अप्रत्यक्ष नहीं, अप्रकट नहीं, आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करो आप के बहिनोई तथा बहिन प्रार्थना कर रहे हैं, इन पर कृपा करो, गुरू जी ने फरमाया हे प्यारे बाला ! मैं तेरा कथन भी अस्वीकार नहीं कर सकता तथा मैं अपना विचार स्थगित करता हूँ । नानकी और जय राम भाई बाले के कृतज्ञ हुवे ।

इस के पश्चात १३५) एक सौ पैंतीस रुपये तो गुरू जी के नवाब की ओर बाकी थे वे प्राप्त हुवे तथा एक हज़ार सात सौ रुपये और भी पेशगी मिला इस पर नगर निवासी श्री गुरू जी की सफलता पर प्रसन्न होकर वधाई देने आये, हिंदु मुसलमान सभी नानक जी के परीक्षा में उत्तीर्ण होने की प्रसन्नता प्रकट करने लगे, श्री गुरू जी सदैव की भांति फिर मोदी खाना चलाने लगे, सब ने कहा हे नानक ! सुनने में आया था कि आप मोदी खाना छोड़ रहे हैं, तब हम उदास हो गये थे आज फिर आप को मोदी खाने पर देख प्रसन्न हो रहे हैं, इस के पश्चात श्री गुरू नानक देव जी की वही प्रकृति रही उसी भांति जो आया सब की मांग पूरी की तथा प्रत्येक दुखी पर दया दृष्टि की वृष्टि करते रहे । बोलो गुरुदेव जी की जय !

॥ साखी श्री गुरू की मंगना की ॥

एक दिन पखो के रंधाविआं का पटवारी जिस का नाम मूला चौना था वह सुलतान पुर में आया, उस का घर बटाला में था, वैसे तो गुरू श्री नानक देव जी के लिये अनेक स्थानों से रिशते के शगण आते थे, परंतु जहां संबंध होना हो वहीं होता है । मूले ने १५१० पंद्रां सौ दस विक्रम में ब्राहमण के द्वारा शगण भेजा शगण के मिलने पर नानकी जी और जै राम जी को

चारों ओर से वधाईयें मिलने लगीं। जै राम जी ने एक पत्र केशर लगा कर श्री कालू जी के पास भेजा, जिस में श्री गुरू जी की सगाई (मंगनी) का विवर्ण था। अतःएव वधाई के साथ ही गुरू जी के माता पिता को निमंत्रण भी भेजा, कालू जी ने अपार प्रसन्नता का प्रदर्शण किया, पत्र लाने वाले को प्रत्येक दृष्टी से आदर सतकार से प्रसन्न किया, और समस्त बरादरी के नर नारी बुला कर आनंदोत्सव किया गया, कालू पटवारी आज अपने को धन्य मानता था, अधिक क्या लिखा जाय, अत्यधिक प्रसन्नता की गई।

फिर कालू जी ने यह शुभ सूचना अपने सभी सम्बन्धियों को दी, गुरू जी के ननिहाल में भी निमंत्रण का पत्र लिखा और आशा प्रकट की कि आप सभी मिल कर आओ ताकि हम सब लोग सुलतान पुर इकठे ही चलें, नाना रामा और मातुल कृष्णा आदिक ने यह समाचार सहर्ष सुना, विशेष कर नानी भराई जी बहुत ही प्रसन्न हुवे और सब मिल कर तलवंडी की ओर चल पड़े, यह तमाम तलवंडी में आकर श्री गुरू जी से मिले, आदर सत्कार आदिक के पश्चात माता मही (नानी) भिराई, मातुल कृष्णा, माता महा राम लुभाया, इस के अतिरिक्त श्री कालू श्री लालू और माता त्रिप्ता इन के साथ नौकर रामा तथा चार और पुरुष सभी मिल कर बारह मनुष्य (नर नारी) सुलतान पुर की ओर रवाना हुवे, अब राय बुलार से छुट्टी लेने के लिये पटवारी श्री कालू जी आये, राय ने पूछा; कालू आज क्या बात है, तुम प्रसन्न दृष्टि गोचर होते हो तब श्री कालू ने अपने पुत्र नानक देव जी की सगाई की सब गाथा सुनाई यह सुन कर राय बुलार ने कहा हे कालू! जाओ बेशक परंतु नानक से बच कर रहना क्योंकि वह तो साधु वृत्ती का जीव है मालूम नहीं हो सकता वह किस समय क्या कुछ करने के लिये उद्यत हो जाय, कालू जी ने कहा, श्रीमान आप मुझे उत्साहित करो क्योंकि आप को परमातमा ने मान दिया है, तब राय बुलार ने मुबारक बाद दिया और कहा अल्लाह मेहर करे, मेरी ओर से श्री गुरू नानक देव जी को गले लगाना और सम्मान करना तथा दोनों हाथ बांध कर बंदगी कहना तथा

जय राम जी को भी मेरी सलाम दुआ कहनी। बीबी नानकी को भी प्रेम भरी आशीर्वाद के साथ मुबारक अर्ज़ करनी।

राय से छुट्टी लेकर वह सभी सुलतान पुर पहुंचे तथा परमानंद पलते के घर में आ गये, श्री गुरू नानक देव जी को इनके आने की सूचना मिली, यह भी सुना कि मर्दाना डूम भी इन के साथ मंगल गीत गाने के लिये आया है।

सुनते ही श्री गुरू नानक देव जी मोदी खाने से उठ कर इधर आये आते ही प्यारे पिता जी के चर्णों से लिपट गये, अन्य सब को आदर पूर्वक मिले, राय बुलार का कुशल मंगल पूछा, बज़ुर्गों के चर्ण छुह कर श्री गुरू नानक ने आशीर्वाद प्राप्त किया राय बुलार का प्रेम-संदेश श्री गुरू नानक देव जी ने सुना।

उस समय एक विचित्र घटना घटी कि सब ने प्रेम पूर्वक नानक जी के शिर पर वारना किया परंतु लेने वाला कोई नहीं था तब तुलसां बांदी आज्ञा पा कर गई और कुछ मांगने वाले याचक लोग लेकर आ गई, उस समय सभी ने वारनां किया, रुपये पैसे आदिक दिल खोल कर याचकों को दिये गये, किसी ने बीस किसी ने दश तथा किसी ने पांच रुपये दान करके याचकों को दिये।

संवत १५५० मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचमी को जब कि गुरूवार का दिन था, तब सुलतान पुर से चले-कालू, रामा, कृष्णा, परमानंद पलता श्री जय राम जी का पिता तथा जय राम ने निधे ब्राह्मण को रंधावे ग्राम में रवाना किया, पखो के रंधावे का चौधरी जित्ता रंधावा था, उस का पटवारी मूला चौणा था, उस के घर जाकर निधे ब्राह्मण ने खबर की, मूले ने कहा नमस्कार पंडित जी! प्रार्थना की कि आप का आना कैसे हुवा? पुरोहित निधे ने कहा मैं सुलतान पुर से आ रहा हूं। जय राम जी ने कहा है कि मूले चौणे को सूचना दे दो कि मैहता कालू लालू रामा कृष्णा जय राम यह सभी आ रहे हैं मूले ने कहा मेरे अहोभाग्य जो इन लोगों का पदार्पण हुवा

है। इतने में ऊपर लिखे सभी लोग पखो की ग्राम में आ गये, फिर वधाई के पश्चात सभी कार्य किये गये, आनंद मंगल की वृष्टि होने लगी दोनों ओर से प्रसन्नता का अपार प्रदर्शण हुवा फिर विवाहके दिन की अर्थात साहा का दिन नियत करने को कहा तथा यह भी कहा कि लड़की युवा है और लड़का भी युवा है इस लिये विवाह का दिन भी शीघ्र ही नियत होना उचित है तब मूले ने विश्वास दिलाते हुवे एक बरस की अवधि मांगी तथा अन्य शगण आदिक के पश्चात वे लोग सुलतान पुर की ओर लौट पड़े।

सुलतान पुर में बीबी नानकी जी ने फिर अधिक से अधिक उत्साह प्रदर्शण किया, सभी स्त्रीयें प्रसन्नता भरे गीत गानें लगीं जब कालू जी अपने साथीओं के साथ तलवंडी को तैयार हो गये तब मरदाने रबाबी ने कहा, हे श्री नानक देव! आप की ओर से हमें भी वधाई मिलनी उचित है। तब गुरू जी ने कहा हे मरदाना तू अपने ही मुख से जो लेना चाहता है मांग। मुझे तो आप के साथ बहुत सा काम है तब मरदाने ने कहा आप जो कुछ उत्तम वस्तु देना चाहो सो दे दो, गुरू जी ने कहा भाई उत्तम वस्तु लेकर तुझे प्रसन्नता के स्थान पर उल्टा कष्ट होंगा मरदाने ने कहा कि उत्तम वस्तु से दुख नहीं हो सकता गुरू जी फरमाने लगे हे मर्दाना तुम लोग मिरासी हो अतः सद्य फल (जिहड़ा अभी लाभ दायक होवे) चाहते हो तुमें इतना ज्ञान नहीं होता कि कौन सी वस्तु सदा के लिये लाभ दायक है तब मर्दाने ने कहा जो कुछ दोगे वह मुझे स्वीकार होगा तब गुरू जी ने प्रसन्न होकर अपना चोला उतार कर मरदाने के गले में डाल दिया और कहा मर्दाना हमारी एक बात मानो तब मर्दाने ने कहा आप फरमायें, गुरू जी कृपा दृष्टि से देख कर कहने लगे, हे मर्दाना तूं बेदी जाति का मरासी नियत हो रहा है और किसी भी जाति से कुछ नहीं मांगना, मर्दाने ने कहा मुझे स्वीकार है परंतु आप के हृदय में हमारा विशेष ध्यान सदैव होना चाहिये फिर गुरू जी ने कहा, हे मर्दाना! सब का रत्तक वह परवरदिगार है तब मर्दाने ने गुरू जी के पवित्र चर्णों में प्रणाम किया, तत पश्चात सब

अपने घर को गये, तथा गुरू नानक देव जी उसी प्रकार प्रत्येक की इच्छा पूरण करते रहे।

फिर शनैः शनैः गुरू जीकी प्रशंसा सारे सुलतान पुर में तथा इर्द गिर्द के नगरों में होने लगी, लोग कहते थे कि जय राम जी का श्याला सब की इच्छा पूरण करता है, कुछ नीच प्रकृति के लोग गुरू जी की निंदा जय राम के निकट आ कर करते थे, सुन जय राम इस तेरे श्याले ने तेरी बेइज़्ज़ती का कारण बनना है, नवाब के स्वभाव को तुम जानते हो हम आप के मित्र हैं इस लिये सचेत करना अपना कर्तव्य समझते हैं, नानक की चाल वही है, मोदी खाना बरबाद करने पर उस ने कमर बांध रखी है, जय राम जी ने जब इस प्रकार लोगों से सुना अक्षरशः नानकी जी को कह दिया, नानकी जी ने कहा, स्वामी जी! आप किसी के कहने पर विश्वास न करें।

नानकी जी बहुतेरा कहती परंतु जय राम के हृदय में श्री गुरू नानक देव पर विश्वास न होता था, एक दिन गुरू जी ने जय राम को आ कर स्वयं ही कह दिया कि–मैं चाहता हूँ कि नवाब साहिब हिसाब देख लें, क्योंकि बहुत दिन व्यतीत हो चुके हैं तब जय राम ने नवाब से प्रार्थना की कि आप अपने मोदी खाने का हिसाब देख लें, नवाब की आज्ञा से निधे ब्राह्मण ने जाकर गुरू जी से कहा कि आप को श्री जय राम तथा नवाब साहिब याद करते हैं तब गुरू जी तमाम वही खाता लेकर नवाब के निकट आ गये, नवाब ने श्री गुरू नानक देव जी का आदर और सतकार किया, नवाब ने कहा आप का नाम क्या है? तब गुरू जी ने उत्तर दिया मेरा नाम नानक निरंकारी है, नवाब ने कहा हे जय राम आप इस के अर्थ कहो, क्योंकि मैंने कुछ भी नहीं समझा तब जय राम ने सीस झुका कर कहा, हे हज़ूर! जिस का रंग रूप नहीं जिस के कोई सानी नहीं जो अपने जैसा सिरफ आप ही है जो सर्व शक्ति का मालक है, यह कहता है कि मैं उस की स्तुति करने वाला एक नाचीज़ मनुष्य हूँ यह सुन कर नवाब हसने लगा और कहने लगा हे जय राम अभी इस की शादी की है या नहीं, जय राम ने कहा इस का

विवाह निकट ही होने वाला है, नवाब ने कहा कि इस की ज्ञान की बातें तभी तक हैं जब तक शादी नहीं होती, जब इस की औरत घर में आयगी तब इस की यह अकल जो अब है वह नहीं रहेगी, बड़े २ फ़कीर जब औरत का मुंह देखते हैं तब सारे ही ज्ञान ध्यान भूल जाते हैं यह सुन कर जगत बंद्य श्री नानक देव जी इस को उत्तर देते हैं हे नवाब साहिब ! जिन के मन में उस अकाल पुरुष का सत्य प्रेम नहीं है आप उन की बातें करते हो जिन के मन की अगाध श्रद्धा ने उस सर्व शक्तिमान को सर्व व्यापक जान तथा मान लिया है उन का वेचारी स्त्री क्या कर सकती है यह मल मूत्र की पूतरी नारी उन ईश्वर के सच्चे भक्तों पर प्रभाव नहीं डाल सकती, नवाब ने श्री नानक जी को ईश्वर का सच्चा सेवक देख कर अपनी बात का पहिलू बदल लिया, नवाब ने कहा, हे नानक ! मैंने सुना है कि तुम हमारे मोदी खाने से बहुत ही वस्तु निकाल २ कर लोगों में मुफ़त बांटते रहते हो अर्थात मोदी खाना लुटा रहे हो इतना स्मर्ण रहे कि मेरा नाम दौलत खान लोधी है, श्री नानक देव जी ने कहा नवाब साहिब ! आप अपने मोदी खाने को अच्छी प्रकार देख लें यदि कुछ हमारा बाकी निकले तो दे दीजिये यदि न देना चाहो तो भी हमें चिंता नहीं, हां अगर आप का कुछ नुकसान हुवा हो तो हम से उसी समय ले सकते हो।

एक अफ़सर जिस का नाम जादो राव था उसे नानक जी के हिसाब देखने पर लगाया गया, क्योंकि लोग कहते थे कि इस नानक देव ने मोदी ख़ाने को बर्बाद करने पर कमर बांध रखी है, जादो राव की पहिले भी कुछ श्री गुरू नानक देव से अनबन थी, दिव्य ज्योति श्री नानक तो किसी के साथ विरोध नहीं करते थे परंतु अकारण विरोध करने वाले भी इसी संसार में उत्पन्न होते हैं ईश्वर के परम उपासकों की यही पहिचान होती है कि वह किसी के साथ द्वेष नहीं करते।

जोधा राव उनी कलियुगी जीवों में एक था, जो श्री गुरू नानक देव जी से अकारण बैर रखता था, उसने जब अपनी निपुक्ती श्री नानक देव

जी के हिसाव की परताल पर लगी देखी तो मन में प्रसन्न हुवा। उस ने मन में सोचा कि नानक ने हमें रिशवत के रूप में कभी एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी, यह तो मांगने वाले साधुओं को खिलाने पिलाने का शौकीन है, अब मैं इस से उस गुस्ताखी का बदला लूंगा।

यह सोच कर हिसाब को भली प्रकार देखने तथा समझने लगा, बात बात पर नुकता चीनी होती थी, पांच रोज़ हिसाब होता रहा, जादो राव ने बहुतेरा ज़ोर लगाया कि कहीं पर श्री नानक देव की न्यूनता देखी जाय। परंतु सत्य के आगे चतुराई को कोई स्थान नहीं मिलता, अंत में तीन सौ इक्कीस ३२१) रुपये श्री गुरू जी के नवाब की ओर बाकी निकले। अब जादो राव अति ही लज्जित हुवा।

उधर नवाब को पता चला कि हिसाब समाप्त हो गया हैं तब जादो राव को बुला कर पूछा गया। नवाब ने कहा ! हे जादो राव हिसाब की बात सुनाओ, जादो राव ने कहा कि हज़ूर हिसाब बिलकुल ठीक है,परिणाम रूप श्री नानक देव के आप की ओर अर्थात सरकार की ओर ३२१) तीन सौ इक्कीस रुपये शेष निकलते हैं, जो श्री नानक ने आप से लेने हैं, नवाब ने कहा "हैं" आप कहीं भूलते तो नहीं, भाई हमारे रुपये नानक की ओर निकलते होंगे, जादो राव ने अदब के साथ कहा–नहीं हज़ूर नानक ने दरे दौलत से ३२१) तीन सौ इक्कीस शेप अपने लेने हैं। यह सुन कर नवाब क्रुद्ध होकर कहने लगा। अरे जादो तुम लोग तो मुझे प्रति दिन यही कहा करते थे कि नानक मोदी खाने को बरबाद कर रहा है। मगर आज तो उस के ३२१) सरकार की ओर शेष हैं। इतनी कह कर भवानी दास कोशाध्यक्ष (खज़ांची) को बुलाया गया, और हुकम दिया कि सब से प्रथम नानक जी के ३२१) तीन सौ इक्कीस रुपये दे दिये जायें। तथा तीन हज़ार रुपये और उसे दे दिये जावें।

जब नानक देव जी को ३२१) रुपये मिल गये, और रुपये लेकर श्री जगदाधार नानक घर आ रहे थे, तो उस समय जय राम और बीबी नानकी

प्रतीक्षा में थे, रुपयों की थैलियों के साथ श्री नानक जी को देखकर बहिन बहिनोई के आनंद की सीमा न रही, हिसाब की परीक्षा में श्री नानक देव जी को उत्तीर्ण सुनकर सभी सज्जनों को विशेष हर्ष हुवा, और जय राम तथा नानकी जी को लोग वधाई देने लगे।

नानकी जी ने जय राम जी से पूछा कि हिसाब का परिणाम सुनाओ, जै राम ने कहा–कि मैं हैरान हूं कि तमाम लोग कहते थे कि नानक मोदी खाना लुटा रहा है तथा साधुओं के लिये मोदी खाने का दरवाज़ा खुला रहता है परंतु अचंभे की बात है कि ३२१) तीन सौ इकीस रुपये नानक जी ने सर्कार से बाकी लेने निकले हैं तथा इसी प्रसन्नता में नवाब की ओर से तीन सहस्र रुपया और भी दिया गया है।

अपने भाई श्री नानक देव जी की प्रशंसा सुन कर बीबी नानकी जी अत्यंत प्रसन्न हुईं।



साखी श्री गुरू जी के विवाह की

इस के पश्चात संसार के श्री गुरू नानक देव जी फिर मोदी खाने का काम सुचारु रूप से करने लगे।

तब एक पत्र श्री गुरू जी के सुसराल से आया जिस में आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी का विवाह नियत किया हुवा था वह विवाह पत्र पढ़ कर जितनी प्रसन्नता नानकी जी को हुई वह कथन से बाहर है यह शुभ सूचना तलवंडी में श्री कालू जी को दी गई, पताशे और पांच रुपये निधे ब्राह्मण के हाथ तलवंडी में पहुंचाये गये, कालू जी के तथा अन्य संबंधियों के आनंद की सीमा न रही, कालू जी ने अपने सुसराल में वा अन्य संबंधियों को सूचना पत्र भेज दिये अनेक प्रकार से उस प्रसन्नता का प्रदर्शण किया गया।

साखी गुरु नानक देव जी के विवाह की



भाई जवाहर सिंह किरपाल सिंह पुस्तकां वाले, बजार माई सेवां
अ मृ त स र



तत पश्चात श्री कालू जी ने राय बुलार के निकट जा कर विवाह की सूचना दी और कहा कि हजूर ! आप के दास नानक का विवाह आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी को नियत हुवा है यह शब्द सुन कर राय बुलार को अत्यंत क्रोध हुवा, उस ने श्रद्धा से मिले हुवे क्रोध के साथ कहा, हे कालू ! तू अल्प बुद्धि है, तू संसार के पिता को अपना पुत्र मान रहा है, तेरे यह शब्द कि ...... आप के दास नानक का विवाह है, सुन कर मन को ठेस लगी है, पटवारी साहिब ! श्री नानक देव के चर्णों के अनेक दास मेरे जैसे हैं, वह तो अखिल विश्व स्वामी है। कालू जी को कुछ ग्यान हुवा और क्षमां याचना की।

राय ने कहा कि हे कालू ! तू भी मुंह का कड़वा और जैसे को तैसा मिले, मैं मूले को भी जानता हूं वह भी धैर्य विहीन पुरुष है तुम दोनो कुड़म एक जैसी बुद्धि के स्वामी हो परमात्मा ही सब काम ठीक करे तो करे, तब कालू जी ने कहा, हजूर ! मेरा एक ही पुत्र है, मैं उस के विवाह में कोई ऐसे शब्द क्यों कहूँगा जिस में विघ्नों का भय हो। राय ने कहा अच्छा आप लोग सुलतान पुर को जाओ। ततः श्री नानक देव जी के चर्णों में मेरा सलाम कहना और सत्कार करना।

तब श्री कालू जी के साथ-लालू जी, परस राम, इंद्र सेन फिरंदा, जगत मल्ल, लाल चंद, जगत राय, जट्टू मल्ल इन के अतिरिक्त जितने भी वेदी उपस्थित थे सभी तैय्यार हो गये और माझे से रामा जी आदिक भी आ गये, सभी सुलतान पुर में पहुंच गये।

जब विवाह के दिन में पांच दिवस रहे, तब विवाह का कार्य प्रारंभ हुआ, अतः बरात सुलतान पुर से आनंद पूर्वक विदा हुई, श्री मूले जी को सूचना देने के लिये निधे ब्राह्मण को भेजा गया। कहा गया कि मूला जी को जाकर पता करो कि सुलतान पुर से वेदीयों की बरात आ गई है। निधा जी गये तथा जा कर आशीरवाद दिया और कहा कि हे यजमान ! बाहर बाग़ में बरात ठहरी हुई है। मुझे श्री परमानंद जी ने आप के पास सूचना

के लिये भेजा है।

मूला जी ने अपनी बरादरी को सूचना दी, तथा स्वयं अजीते रंधावे के निकट गया जो पखो के का चौधरी था, मूला जी ने उसे कहा कि चौधरी जी बेदीयों की बरात बाग़ में ठहरी हुई है। आप भी स्वागत के लिये चलें, उस चौधरी के पिता ने अपने पुत्र को कहा कि तुम जाओ, मैं बृद्ध हूं जाना कठिन है, तुम जा कर मूला जी के कथनाऽनुसार सभ काम करो, हे मूला जी ! मेरा शरीर शिथिलसा होने से जा नहीं सकता, तब चौधरी ने कहा, सुनो मूला जी मैं आप के स्वभाव से परिचित हूँ। बरात ऊंची कुल की है अर्थात बेदी लोग हैं, कोई शब्द ऐसा नहीं कहना जिस से हम लोगों की निंदा हो, मैं ने सुना है कि लड़के का पिता जो पटवार का काम करता है, वह भी ज़बान का कड़वा है, तथा परमानंद जी बहुत ही बुद्धिमान सुन रखे हैं, आप की ओर से उन का सन्मान तथा सतकार ही उचित है।

यह सुन कर मूला जी ने कहा कि हे चौधरी जी हमें तो उस परमात्मा का आश्रय है। तत पश्चात निधे ब्राह्मण को कुल रीति करके विदा किया, और आप सभी मिल कर बरात के स्वागत को चले, तथा पूर्व रीति अनुसार बटेहरी का सामान भी साथ ले लिया। "बरात को पहिली रोटी कच्चा अन्न देने की प्रथा पंजाब में थी जिसे बटेहरी कैहते हैं" फिर आदर सत्कार के सहित बरात को नगर में प्रवेश करवाया गया, कालू और जय राम जी का पिता रुपये पैसे श्री नानक देव जी के शिर से वार कर फैंकते जा रहे थे, एक अच्छे स्थान बरात को ठहिराया गया, वर को देख कर समस्त नर नारी अपार प्रसन्न हुवे, सभी लोग मूला जी की प्रारब्ध की सराहना करते थे, इंद्रादिक देवता तथा उन की देवांगनायें विवाहोतसव देखने को वहां आ गये, जिस समय वर को घोड़ी सुवार करके बरात गई, उस समय का दृश्य देखने से ही संबंध रखता था, उसे लेखनी से लिखना धृष्टता है, क्योंकि जगत पिता का विवाह था, श्री गुरू नानक देव जी की आरती उतारी गई, ब्रह्मा ने वेद उच्चारण किये, इसी प्रकार सभी देव गण मंगल कार्य करने लगे।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष की सप्तमी प्रातःकाल श्री गुरू नानक देव जी महाराज का विवाह हुवा, श्री सुलक्षणी जी को विधि पूर्वक स्नानादिक करवा कर खारों पर श्री गुरू जी के साथ बैठाया गया, अभी पांच घड़ी रात्रि शेष थी जब लावां का शुभ कार्य संपन्न होने लगा।

राग सूही महला १ ॥ श्री मुख वाक ॥

राम पहिलड़ी लाउ सतिगुर सतजुग साजिआ वलिराम जीओ ॥
त्रय गुण बिस्थार अनहद बाजिआ वलिराम जीउ ॥
वजाया अनहद समुंद मथिआ लछ कउला निकली ॥
तेतीस करोड़ छोडिकै आइ ठाकुर कउ मिली ॥
विआह ठाकुर चरन लाई ओड़ भगत निबाहिआ ॥
अरदास नानक लाउ पहिली भला सतजुग सतगुर साजिआ ॥ १ ॥
राम दूसरी लाउं त्रेता जुग वरताइआ बलिराम जीओ ॥
धंन धंन संत पिआरे जिन हरिनाम धिआइआ वलिराम जीओ ॥
संत जपते नाम हरि का मिले राम पिआरिआ ॥
गंभीर धनष रघुपति चढ़ाइआ परस राम का वलि हारिआ ॥
विआह सीता ग्रहि महि आणी ओड़ भगत निवाहीआ ॥
अरदास नानक लाउं दूजी सीता राम विहाहीआ ॥
राम तीजी लाउं जुग दुआपर वरताइआ वलिराम जीओ ॥
सरव सखीआं सहिज सेती रुकमणी मंगल गाइआ वलिराम जीओ ॥
रुकमणी मंगल गाइआ सहिज सेती ससपाल राजा मारिआ ॥
वचन पूरे दोस धरिआ चकर संख विदारिआ ॥
विआह रुकमणी ग्रह में आणी ओड़ भगत निवाहिआ ॥
अरदास नानक लाउं तीजी रुकमणी कृष्ण जी वर पाइआ ॥ ३ ॥
राम चौथी लाउं करते कलजुग प्रगटाइआ वलिराम जीओ ॥
जिना हरि सिओ प्रीति नाही ते संग भरमे माइआ वलिराम जीओ ॥
माइआ ते लागे भरम जागे सगल वजहु तिन घाटिआ ॥

नाम दान इशानन नाही कीआ जम का पंथ नहीं कड्डिआ ॥
निह कलंकी आप होआ छपहि नाहि छपाइआ ॥
अरदास नानक लांऊं चौथी प्रभ सभना माइआ ॥
इस के आगे मंगल राग सूही में प्रारंभ हुवा ॥

श्री मुख वाक मंगल ॥

राम पहिलड़े मंगल हरि हरि नाम धिआईऐ ॥
मेरे मन तन स्री रंग अगर चंदन घस लाईऐ ॥
अगर चंदन घास लाइ कपूर कुंगू ढोईऐ ॥
राम नाम उचरंत रसना सदा हरि रस गोईऐ ॥
घस लगाइऐ अगर चंदन कुंगू प्रेम प्रभ का पाईऐ ॥
कुरबान कीता गुरू विटहु तिस एह काज रचाइऐ ॥ १ ॥
राम दूजड़े मंगल काज सुहाइआ ॥
उतसाह होया सोभ सेती फुलीं मांग भराइआ ॥
फुलीं तां मांग भराइऐ आप करता पुरुष बिआहुण आइआ ॥
सुर नर गण गंधरभ सभी कौतक देख बिसमाइआ ॥
कुरबान कीता गुरू विटहु जिस एहु काज रचाइआ ॥
बिनवंत नानक सुणहु संतहु सभ सफलिओ काज सुहाइआ ॥ २ ॥
राम तीजड़े मंगल पीड़त जाण लिआइऐ ॥
इंदर पुरी विच जंमी ता जण सुरगों जीन मंगाइऐ ॥
गल सच्च गंढी पाइ ताजण तगाम तुरत कराइऐ ॥
अजब सोभा पाइ ताजण ठाकर आप सजाइऐ ॥
जित चढ़े स्री रंग आप सुआमी अजब सोभ मोहाइऐ ॥
बिनवंत नानक तीजड़े मंगल पीड़ ताजण लिआइऐ ॥ ३ ॥
राम चौथड़े मंगल सतिगुर बिआहुण आइआ ॥
एह अजब दरस अपार तेरिआं संतां के मन भाइआ ॥
तेतीस करोड़ी सरब संगत नाल गण पत आइआ ॥

सद ब्रहमे सारदाइक मोतिआं चौक पुराइआ ॥
धरो खारे देहु फेरे सतिगुरू विआहुण आइआ ॥
विनवंत नानक मंगल चउथे सरब काज सुहाइआ ॥ ४ ॥

श्री गुरू नानक देव जी का विवाह निर्विघ्न संपन्न हुवा, बाले ने कहा जो मैं कहने लगा हूँ वह अपने नेत्रों से देखी हुई बात है। अनेक बातें सुन कर श्री गुरू अंगद जी को वैराग्य होता रहा, जिस समय लावां का समय आया तब गुरू जी ने कहा, भाई बाला! तुम हमारे निकट ही रहो। मैंने कहा मैं तो आप के निकट ही हूं जो कुछ छुप कर खर्च हुवा हैं वह तो मेरे द्वारा ही हुवा है अंत तो गत्ला विवाह कार्य मंगल मय तथा आनंद पूर्वक व्यतीत हुवा। बरात तीन दिन ठहरी रही, चतुर्थ दिन गुरू जी डोली लेकर बरात के सहित सुलतान पुर आए उस समय कालू और लालू जी ने कहा कि नानक जी और नव विवाहिता कन्या को अब तलवंडी में जाना उचित है परंतु नानकी जी और जय राम चाहते थे कि नानक जी तथा कन्या यहीं सुलतान पुर में ही निवास करें तब परमानंद ने कहा सुनो मूल चंद जी यह प्रथम बार है अब तो इन को अपने घर तलवंडी में जाना उचित हैं, क्योंकि श्री माता जी ने भी शगण आदिक करने हैं फिर नानक जी ने यहां ही रहना है क्योंकि मोदी खाने की देख रेख भी करनी है अंत में डोली के सहित गुरू जी तलवन्डी को चले। गुरू जी ने कहा बाला जी! जब तक हम नहीं आते तब तक तुम ही काम चलाओ, बाले ने कहा मैं तो एक अशिक्षित जाट हूँ मैं मोदी खाने का काम चलाने में असमर्थ हूँ। श्री गुरू जी ने कहा हे बाला! सब काम परमात्मा करेगा हम लोग एक मास तक लौट आएंगे। बाले ने कहा मैं तो आप की आज्ञा पालन करने वाला हूँ परंतु मेरा मन चाहता था कि मैं आप की लीला जो तलवंडी में होगी उस से दूर रहूंगा वह देखने की इच्छा थी परंतु आप की आज्ञा शिरोधाय है।

एक महीने के पीछे श्री गुरू जी सुलतान पुर में आ गए बहिन बहिनोई को प्रेम सहित मिले। यथोचित सन्मान हुवा, माता चौणी जी ने

अपनी ननद के चण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया, दूसरे दिन गुरू जी मोदी खाने में विराजमान हुवे।

रीति के अनुसार मूल चंद जी एक दिन आ कर चौणी जी को उन के मायके ले गये। इधर गुरू जी मोदी खाने में तुला पकड़ कर लोगों को प्रत्येक वस्तु तोल कर देने लगे तथा बाला जी पकड़ २ कर देते थे, गुरू जी अपनी प्रकृति के अनुसार साधु समाज की बिना मूल्य ही सेवा करते थे। अल्प बुद्धि लोग कहते थे कि नवाब का मोदी खाना कुछ दिनों की खेल है, नानक इसे बर्बाद कर देगा, कोई कहता भाई ! जब हिसाब होता है तब एक पाई का भी नुकसान नहीं होता। नानक के पास पारस की वट्टी है जिस से कमी पूरी हो जाती है, इत्यादि।

इधर श्री गुरू नानक देव जी अपने घर में प्रत्येक ज़रूरी वस्तु उदारता से भेजते थे, अन्न वस्त्रादिक किसी भी वस्तु के देने में कोई संकोच नहीं था, कुछ समय के पश्चात माता चौणी जी भी सुलतान पुर आ गये, गुरू जी ने चौणी जी को सभी वस्तु भेजनी अपना कर्तव्य जाना था, परंतु संसारी मोह गुरू जी में न होने के बराबर था, माता सुलच्चणी जी अपनी ननद नानकी जी को यह उपालंभ देती थी कि आप के भाई जी में मोह की न्यूनता हैं! वे तो साधु स्वभाव के पुरुष हैं, वैसे तो मुझे प्रत्येक प्रकार से सुख है तथा एक महापुरुष की पत्नि होने का भी गर्व है परंतु उन के भीतर पत्नि प्रेम की न्यूनता देख कर मन को कुछ कष्ट होता है जिस में आप के समच्च ही कह सकती हूं।

माता सुलच्चणी जी मूले चौणे की पुत्री होने के नाते उस को चौणी भी संबोधन किया जाता है, चौणी जी के मन को चोभ देख कर नानकी जी अधिक से अधिक दुलार करती थी फिर छोटी भौजाई वैसे भी दुलार की इच्छुक होती है गुरू जी महाराज जिस दिन प्रभु नाम की मस्ती में ओत प्रोत होते थे तब आप को घर आना भी विस्मर्ण हो जाता था।

जब कभी मूला जी अपनी पुत्री को मिलने आते थे तब सुलच्चणी जी

उपालंभ भरे वाक्य कहती थी कि आप ने मुझे कहां दे दिया जिस को आप ने मेरा पति वनाया है वह तो कई कई दिन घर में भी नहीं आते और पूर्ण रूपेण वात भी नहीं करते तव मूला जी जय राम से झगड़ते तथा कहते थे कि मैंने तुमारे ही आग्रह से अपनी कन्या को दुखी किया है। जब कभी नानक जी से मूले का अथवा उस की स्त्री जिस का नाम चंदो रानी था उस से मिलाप होता था तो सास शशुर नानक जी पर क्रोध की वुछार करते थे परंतु सतगुरू जी प्रभु मस्ती में ओत प्रोत वोलना तक भी पसंद नहीं करते थे, प्रत्येक मास के पश्चात मूला और चंदो रानी अपनी पुत्री सुलक्षणी को मिलने आते थे तथा मन का क्रोध निकाल कर ही दम लेते थे, चंदो रानी वीवी नानकी जी से लड़ाई झगड़ा करती थी, कहती सुन नानकी ! तुम लोगों को परमात्मा का भय नहीं है यदि तूं अपने भाई को समझाने वाली हो जाय तो मेरी पुत्री पति प्रेम से कभी वंचित न रहे। तेरा ही दोश है। जो हमें दुखी कर रहा है, तू अपने भाई को कुछ नहीं कहती और जय राम अपने श्याले को कुछ कहने के लिये तैयार नहीं, यह काम कैसे वने ?

नानकी जी ने आदर सूचक शब्दों में कहा, मासी जी ! मेरा भाई ना तो चोर ना द्यूत कर्म करता हैं तथा ना ही वह पर स्त्री गामी हैं अता ना कोई और बुराई करता है फिर में उसे कहूँ तो क्या कहूँ। हां दान करता है, साधु संत की सेवा तथा ईश्वर भक्ति करने वाले को में तथा उस का वहिनोई क्या कहे ?

हे मासी जी ! यदि आप की कन्या नंगी भूखी तथा वस्त्र और आभुषणों से वंचित रहे तो तव आप का उपालंभ उचित है तथा भौजाई का भी क्रोध करना उचित है जिस नारी का पति प्रत्येक दृष्टि से शुभ काम करने वाला हो तो फिर वह स्त्री दुख को अनुभव करे तो यह उस की प्रारब्ध का दोप है उसे तो हर्प और गर्व का अनुभव होना उचित है प्रत्येक सुख होते हुवे तथा प्रत्येक प्रकार का दुलार करते हुवे भी यदि हम वुरे हैं तो यह आप की इच्छा पर निर्भर है हम लोग आप के अधिक वोलने का वुरा नहीं मनाते।

हम तो सदैव आप के ऋणि हैं, इस प्रकार उत्तर सुन कर गुरू जी की सास वहां से उठ कर चली गई।

फिर चंदो रानी अपनी कन्या के पास आई तथा कहने लगे तेरी ननद ने तो मुझे लज्जित करके भेजा है मुझे तो उत्तर देना कठिन हो गया था, सुलक्खणी जी ने कहा माता जी! मुझे खान पान वस्त्र तथा आभूषण आदिक की तो कोई कमी नहीं बिना मांगे प्रत्येक वस्तु प्राप्त होती है तथा काम करने वाले अनेक दास दासियें हाथ बांधे रहते हैं, दुलार की तो कोई न्यूनता नहीं है, यदि कष्ट है तो यह है कि मेरे पति मेरे साथ वैसा मोह नहीं करते जैसे अन्य पुरुष किया करते हैं, अर्थात उपराम से रहते हैं, बस यही मुझे दुख है।

यह सुन कर चंदो रानी फिर नानकी जी से मिली तथा जो कुछ सुलक्खणी जी को कष्ट था वह कहा, यह भी कहा कि नानक देव बहुत २ दिन घर से अनुपस्थित रहता है।

नानकी जी ने कहा, मासी जी! मैं सत्य कहती हूं कि भाबी जी का स्वभाव भी गर्म सा है मेरे अनेक बार बुलाने पर यदि कभी मेरे घर में आ भी जाती है तो क्रोध में भरी बातें करती है परंतु मैं उसे अपनी छोटी भौजाई समझ कर सदैव प्रेम करती हूँ। चंदो रानी ने कहा देख बीबी नानकी! एक सुलक्खणी ही नहीं अपितु संसार में स्त्री जाति को पति प्रेम अवश्य चाहिये। नानकी जी ने कहा, यह तो आप का कथन सत्य है ईश्वर कृपा करेंगे परंतु अपनी कन्या को भी कुछ समझा कर जाओ जिस से उन के स्वभाव में परिवर्तन हो। पति के हृदय में प्रेम उत्पन्न करना स्त्री की पवित्र चातुर्यता है इस बात को आप ध्यान से विचारेंगे तो अक्षरशः सत्य पाओगे। फिर मासी जी! मैं तो अपने भाई नानक देव को परमेश्वर अवतार मानती हूं मैं आशा करती हूँ कि मेरा भाई मेरी बात स्वीकार करेगा, जिस से भौजाई कष्ट से मुक्त हो जायगी, इतनी बात के पश्चात चंदो रानी चली गई।

एक दिन श्री नानक देव जी बहिन नानकी को आकर मिले, प्रसन्नता पूर्वक सतकार के पश्चात नानकी जी ने कहा मैं आज अपने अहोभाग्य समझती हूँ जो परम ज्योति रूप भ्राता के पवित्र दर्शणों से चर्म चक्षु प्रसन्न कर रही हूँ तब श्री नानक देव कहने लगे बहिन जी मैं तो आप का सेवक हूँ नानकी ने कहा, आप ऐसे न कहा करो, गुरू जी ने कहा आप मुझ से बड़ी हो इस लिये यही कहना उचित है। नानकी जी ने कहा इस में संदेह नहीं कि मैं आयु के दिनों में बड़ी हूं परंतु भाई जी आप कर्तव्य में बहुत ही बड़े हो, बड़ा वही है जिस में बड़ाई पाई जाय तब नानक जी ने एक रहस्य पूर्ण दृष्टि से बहिन को देख कर कहा, नानकी जी ! आप के ऊपर उस अकाल पुरुष की अपार अनुकंपा है जिस पर प्रभु कृपा होती है उसे ही ज्ञान चक्षु प्राप्त होते है दूसरो को नहीं। नानकी जी ने कहा कि मैं प्रभु कृपा तब मानूंगी जब आप मेरा आग्रह स्वीकार करोगे तब श्री सर्वज्ञ नानक बोले, बहिन जी आप की प्रत्येक आज्ञा को स्वीकार करूंगा। आप इसी जन्म में ही मेरी बहिन नहीं हो। अपितु पूर्व जन्म में भी मैं आप का भाई था तथा आप मेरी पूज्या बहिन थीं। फिर आप की मुझ पर सदैव कृपा रही है। मैं आप का आभारी हूं। इस लिये आप की आज्ञा अवश्य मानूंगा।

श्री गुरू नानक देव जी की यह प्रतिज्ञा सुन कर नानकी जी ने कहा, भाई जी ! आप जानते हैं कि स्त्री के लिये पति देव का केवल प्रेम ही इस लोक में आश्रय होता है। अधिक क्या कहूं। मैंने सुना है कि आप हमारी भौजाई जी को प्रेम दान नहीं देते। नानक जी ने कहा कि मैं आप के समक्ष प्रण कर चुका हूँ अब तो तुमारा ही कथन करना होगा और करूंगा। अब इस बात को छोड़ दो।

नानकी जी ने कहा हे भाई जी ! बहिनों के हृदय में सदैव भाई की संतान को गोदी में लेकर खिलाने का अत्यधिक चाव होता है मैं भी आप की संतान को गोदी खिलाना चाहती हूं गुरू जी ने मुसकरा कर कहा ईश्वर

तेरी इच्छा पूरण करे इतनी कह कर गुरू जी निवास स्थान को चल दिये। उस दिन से गुरू नियमाऽनुसार घर में ही निवास करने लगे।

॥ साखी और ॥

जब श्री गुरू नानक देव जी बाईस वर्ष के हुवे तब आप के गृह में एक पुत्र उत्पन्न हुवा। उस का नाम श्री चंद्र रखा गया जब श्री चंद्र की अवस्था साढ़े चार वर्ष की हुई तब द्वितीय पुत्र हुवा जिस का नाम लक्ष्मी दास रखा गया। वह माता के गर्भ में था।

श्री गुरू नानक देव जी नित्य प्रति एक प्रहर रात्रि शेष होते समय स्नान करने जाया करते थे। एक दिन नानक जी ने जब नदी में गोता मारा तो फिर बाहर नहीं निकले। इस दुखद घटना को देख कर कुछ लोग जो निकट ही स्नान कर रहे थे। उनों ने नानक देव जी के डूब जाने की खबर चारों ओर फैला दी। संसार के लोग जो भिन्न भिन्न खोपड़ी के होते हैं वह नाना प्रकार की बातें करने लगे, कोई कहता था कि नानक बेदी यदि डूब कर न मरता तो और क्या करता। सरकारी मोदी खाने को अपना जान कर लुटाना तो इस की दैनिक कृया बनी हुई थी। अब जब हिसाब में बहुत सा अंतर दृष्टि गोचर हुवा होगा तब सिवाय आत्म हत्या के और कुछ नहीं सूझा होगा इस प्रकार की अनेक किंवदंतियें होने लगीं। यह घटना नवाब ने भी सुनी। बहिन नानकी और जय रास अत्यंत चिंतित हुवे।

अकस्मात तीसरे दिन गुरू जी उसी नदी से प्रकट हो गये, देखने वालों ने यह कहना आरंभ कर दिया कि नानक बेदी भूत योनि पा कर आ गया है श्री गुरू जी को नगर निवासी संदेह की दृष्टि से देखने लगे, नानक घर में आकर अभी बहिन बहिनोई को मिले ही थे तब नवाब का सिपाही आ गया उस ने कहा कि जय राम जी! आप को हज़ूर याद फरमा रहे हैं, निमंत्रण पर जय राम गुरू जी दोनों नवाब के समक्ष उपस्थित हुए।

स्वार्थी संसार की रीति के अनुसार नवाब ने जय राम जीको कहा कि मैं

आज और अभी अभी मोदी खाने की आय व्यय देखना चाहता हूं ! जय राम कुछ चिंतित होने को था, तव संसार के कल्याण कर्ता गुरू जी ने कहा-कि चलिये और आय व्यय की देख रेख कर लीजिये ! अंत तो गत्वा जब मोदी खाने को देखा गया। तो उस की न्यूनता का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होना था। उलटे श्री गुरू जी का मोदी खाने की ओर सात सौ साठ ७६०) रुपये बाकी निकले। अर्थात मोदी खाने में सात सौ साठ लाभ देखा गया अब नवाब ने वह रुपये नानक जी के आगे रख दिये। तव श्री गुरू जी ने कहा-कि यह रुपये मेरे नहीं हैं। यह तो उस परमात्मा के हैं तथा इन को निर्धनों और असहाय प्राणियों को दे दिया जाय।

इस के पश्चात नवाव के लाख प्रयत्न करने पर भी श्री गुरू जी परम वैराग्य को प्राप्त हो गये। अब मोदी खाना ही क्या । घर में जाना भी छोड़ दिया।

उधर जव गुरू जी के स्वसुर ने सुना कि नानक साधू हो गया है ! तव एक पंडित जिस का नाम शामा पंडित था उसे साथ लेकर सुलतान पुर आया। इधर उधर देखने के पश्चात श्री गुरू जी का मेल कब्रस्तान में हो गया। पंडित शामा ने गुरू जी से कहा-नानक ! यह आप ने क्या स्वांग रचा है। उठो और काम करो। आगे वसंत रितु आने वाली है । आनंद से वंचित होना एक युवक के लिये उचित नहीं है। तव गुरू जी ने आगे का शब्द कहा-

राजा वालकु नगरी दुसटा नालि पिआरो ॥
दुइ माई दुई वापा पड़ीअहि पंडित करहु विचारो ॥ १ ॥
सुआमी पंडिता तुम देहु मती ॥
किन विधि पावउ प्रान पती ॥ १ ॥ रहाउ ॥

अर्थ

यह काया कांची नगरी है। काम क्रोध लोभ मोह अहंकार यह पांचों दुष्ट हैं और दोनों आंखे माता है तथा दोनों कान पिता है। इतना ही गुरू

जी ने फरमाया था तब मूला श्वसुर कहने लगा तुम को अपना पेट बढ़ाने की लालसा थी और अभी निराशा का पल्ला पकड़ कर तू बैठ गया तथा गृहस्थ का बोझ भय के मारे उठाना त्याग कर भाग गया, यह सुन कर श्री गुरू जी ने आगे का शब्द उच्चारण किया-

भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ ॥
चंद सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा ग्यान न पाइआ ॥ २ ॥

अर्थ

भीतर जो अग्नी है उसे तृष्णा कहा जाता है । तथा पुत्र पुत्रियें बनास्पति हैं। और स्त्री धन रोज़ गार संबंधी तथा पुरोहित जैसे शामा पंडित यह हैं। चांद और सूर्य का उजाला है नाभी कमल में वह प्रकाश है। इस जीव की आंख तब खुलनी है। जब इसे पूर्ण गुरु मिल जाय । तब अंधेरा दूर हो कर ग्यान का प्रकाश होता है। तब शामा पंडित कहने लगा-कि हे नानक तुमें चाहिये कि प्रभु का यष घर में बैठ कर करो। तथा पुरुषार्थ से गृहस्थ पालन करो। प्रभु सर्व व्यापक है-तब गुरु जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया-

राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥
ता के लखण जाणिअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥ ३ ॥

अर्थ

वह राम (ईश्वर) सब का है। पर जिस को क्षमा और धैर्य का दान देता है उसी पर उस की विशेष कृपा होती है यह सुन कर मूला चौणा कहने लगा, हे नानक ! तुम हठी और ज़िदी हो जो किसी का भी कथन नहीं मानते। तब गुरू जी ने शब्द कहा-

कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिनाहि सेती वासा ॥
प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥ ४ ॥

अर्थ

यह रसना किसी कहने से नहीं जानती। आठों याम इसी का साथ है,

यह क्षण में तोला है और क्षण में मासा हो जाती है हे शामा पंडित जी ! यदि ईश्वर कृपा करे तब यह रसना विषय विकारों की ओर से दूर होती है ॥ १७ ॥

—o—

॥ साखी और चली है ॥

तव मूला चौणा नवाव के पास जाकर फरयाद करने लगा, दौलत खान के पूछने पर मूले ने कहा-मैं नानक देव का स्वसुर हूं। तथा नानक के विरुद्ध कुछ प्रार्थना करने आया हूं। नवाव ने मूले को कहा कि तुमारी क्या शिकायत है ? तव मूले ने कहा-हजूर इस वार जो मेरे दामाद नानक के सात सौ साठ रुपये सरकार की ओर वाकी हैं, वे सब रुपये नानक के घर में दिये जायें, नवाव ने कहा-भाई ! नानक ने वे रुपये साधुओं के लिये देने कहा है, तव मूले ने कहा नानक का कुछ दिमाग खराव हो गया है, तव यार खां वज़ीर से नवाव ने कहा-देखो इन रुपयों पर पूर्ण अधिकार तो नानक का है, वह जिसको कहे हम उसी को दे सकते हैं, यह कह कर नवाव ने श्री नानक देव को बुला लिया, उस समय मूला एक मांदरी मुल्लां को ले आया, तथा मूले के कहने से वह मांदरी श्री गुरू नानक पर अपनी कलाम फूंकने लगा, अंत में वह मुल्लां एक पलीता जला कर श्री नानक देव जी के नाक में उस का धूआं देने लगा तब संसार के स्वामी नानक वोले-

खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥
नानक ध्रिग तिना का जीविआ जो लिख २ वेचहि नाउ ॥

यह सुन कर वह मुलाना कहने लगा तुम कौन हो तथा तुमारा नाम क्या है ? तव गुरू जी ने फरमाया।

कोई आखै भूतना को कहै वेताला ॥
कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥ १ ॥
भइआ दिवाना साह का नानकु वउराना ॥
हउ हरि विनु अवरु न जाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥

तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरुन जाणै कोइ ॥ २ ॥
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥
हुक्म पछाणै खसमु का दूजी अवर सिआणप काइ ॥ ३ ॥
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु
मंदा जाणै आपु कउ अवरु भला संसारु ॥ ४ ॥ ७ ॥

गुरू जी के शब्द सुन कर मुल्लां हैरान हो गया। तथा नवाबं को आकर कहने लगा हजूर नानक का दिमाग बिलकुल दुरुस्त है। नानक मामूली पुरुष नहीं है। वह तो कोई ओलिया है। नवाब ने जय राम को बुलाकर कहा–हे जय राम मैंनें नानक देव के रुपये अपने पास तो रखने नहीं। और नानक देव ने कहा था कि यह मेरे रुपये आप ग़रीबों में बांट दें। तथा नानक का सुसर कहता हैं कि यह रुपये नानक की औरत को अर्थात उस की लड़की को दिये जांयें। और नानक पागल हो गया है। मगर मुल्लां ने कहा है कि नानक बिलकुल ठीक ठाक है। अब जो कुछ कहो उस पर गौर किया जाय। जै राम यह सुन कर खामोश ही रहा। तब नवाब ने फिर कहा जय राम बोलते क्यों नहीं। वैसे अधिकार तो उस की औरत का भी है। मगर उस ने ग़रीबों को देना कहा है। वैसे कानूनन नानक का पूरा पूरा हक है। तब जय राम ने कहा हजूर नानक भी तो हाज़र है उस से पूछ लेना चाहीये। जब नानक को बुलाया गया। तो गुरू जी ने कहा–अब मेरा नवाब से कोई काम नहीं है। में उन के पास जा कर क्या करूंगा ? जब नौकर ने आकर कहा कि नानक आने को तैयार नहीं। तब नवाब ने हकूमत के नशे में कहा कि जाओ नानक को ग्रिफतार करके ले आओ। जब नवाब को क्रोधित हुवा सुना। तब नम्रता के अवतार श्री गुरू नानक देव जी नवाब के निकट आ गये। परंतु सलाम नहीं किया नानक देव ने कहा–हे नवाब ! जब मैं आप के मोदी खाने में नौकर था। तब आप का था। अब मैं किसी का नौकर नहीं। मैं तो अब खुदा का नौकर हुं।

नवाब ने कहा-तब तो और भी ठीक है। क्यों कि आज जुमा है। चलो हमारे साथ मसजिद में निमाज़ पढ़ो। तब नानक देव ने कहा-कि मैं कब इनकार करता हूं। अब नानक नवाब के साथ निमाज़ पढ़ने गये। तब तमाम सुलतान पुर में यह शोर हो गया कि नानक देव मुसलमान हो गया है। यह सुन कर जै राम दुखी हुवा। नानकी जी अपने पति को दुखी देख कर कारण पूछा। जय राम ने कहा-कि हे नानकी! तुमारा भाई नानक नवाब के साथ जुमे की निमाज़ अदा करने मसजिद में गया है। सारे सुलतान पुर में इस बात की चार्चा हो रही है। कि भाज वेदी नानक इसलाम की गोद में जा बैठा है। अर्थात मुसलमान हो गया है। यह मेरी चिन्ता का महान कारण है, नानकी जो अपने भाई का प्रभाव जानती थी। वह कहने लगी आप निश्चित रहो। और भोजन करो, ततपश्चात जय राम ने निधे ब्राह्मण को जासूस बना कर नानक देव की ओर भेजा।

कुछ समय के पश्चात निधे ब्राह्मण ने जा कर जय राम को बधाई दी जय राम और नानकी ने ब्राह्मण से बधाई का कारण पूछा निधे ने कहा यह मेरी आखों देखी घटना नहीं अपितु मैंने कुछ एक मुसलमानों के मुख से सुना है जब नवाब अपने साथीयों के साथ नमाज़ पढ़ने लगा, तब नानक चुप चाप खड़ा रहा तब नवाब ने पूछा नानक तुम ने नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी? तब नानक ने उत्तर दिया हे नवाब! तू तो कंधार में घोड़े खरीद रहा था मैं नमाज़ किस के साथ पढ़ता? नवाब ने कहा मैं तो यहां हूँ तुम तो झूठ बोलते हो श्री गुरू नानक देव जी ने कहा, कि आप का शरीर यहां था परंतु आप का दिल कंधार में था, जो घोड़ों का व्यापार कर रहा था, एक काज़ी ने कहा देखो हज़ूर यह हिंदु कितना झूठ बोल रहा है, नवाब ने कहा नहीं नहीं झूठ नहीं बोल रहा दर असल मेरा दिल कंधार में घोड़े खरीद रहा था काज़ी ने कहा भाई नानक मैं तो यहां ही था, आप मेरे पीछे नमाज़ पढ़ लेते, तब गुरू नानक देव जी ने कहा, आप तो अपने बच्छड़े की देख रेख में थे जो कहीं गुम हो गया हुवा है, काज़ी सुन कर हैरान हो गया।

निधे ने कहा–जय राम जी ! इस प्रकार नानक देव ने अपनी लीला का प्रदर्शन किया, तथा निमाज़ नहीं पढ़ी, तब जै राम से कहा बस मैं तो इतनी लीला ही देख कर आया हूँ,और नानक देव अभी वहां ही हैं,नानकी ने जै राम से कहा–हे पति देव ! आप चिंता न करें,नानक अभी२ आने ही वाला है, इतने में गुरू नानक जी आ गये, तब नानकी ने कहा मेरे भाई का रक्षक वही है, जिसे वह दिन रात स्मर्ण करता रहता है, जब नानक जी जै राम जी को मिले तब नानकी और जै राम जी को बहुत ही प्रसन्नता हुई, तब जै राम ने पूछा कहो नानक देव ! कैसे गुज़री। तब नानक जी ने तमाम बात सुना दी, जो कुछ निधे ने कहा था, वही कुछ गुरू जी ने सुनाया, और कहा कि मैंने नवाब के कहने पर नीचे लिखा शब्द कहा था–

मथा टेके ज़िमी पर मन उडे असमान ॥
घोड़े कंधार खरीद करे दौलत खान पठान ॥

तब मुझे सत्य सत्य बोलने का सार्टिफिकेट मिला, अर्थात मेरे सत्य बोलने की दाद सब ने दी। काज़ी और नवाब ने मेरा कथन सत्य माना।

फिर नवाब ने मेरे रुपयों के बारे कहा–कि तुमारा सुसर शिकायत करता है, कैहता है कि रुपये नानक की औरत को दे दो। परंतु तुम कहते हो गरीबों को बांट दो, मैंने कहा कि मैं तो जो कुछ कहना था कह चुका हूं। अब तुमारी जैसे भी इच्छा हो करो। तब नवाब ने कहा कि मेरे विचार में यह है कि आधे रुपये तो आप की औरत को दे दिये जाएं, और आधे ग़रीबों को खिला दिये जायें, मैंने कहा जैसे आप की इच्छा हो करो, नानकी जी ने कहा भाई जी ! जो कुछ आप की इच्छा है वही ठीक है, तब जै राम ने कहा कि हे नानकी ! तू एक महा पुरुष की बहिन है, तथा तुम पर उस का प्रभाव अधिक है। हमें उतना ग्यान नहीं हो सकता असल बात तो यह है कि धन्य हैं वह परमात्मा और धन्य है श्री गुरू नानक देव। तथा हे नानकी ! हम भी धन्य हैं जिन का संबंध आप के साथ है। तब मूले के साथ चंदो रानी जी उस जगा आई। गोदी में लखमी दास था। तथा

श्री चंद्र उस समय चार वर्ष तथा ६ नौं मास का था॥ १८॥

—०—

॥ साखी और चली ॥

जब संवत १५५६ विक्रमी हुवा तब श्री गुरू नानक जी परम वैराग्य को प्राप्त होकर घर से जाने को तैयार हो गये, चंदो और मूला अब यहां रहना नहीं चाहते थे,क्योंकि नानकी और जय राम अधिक चंदो को रखना नहीं चाहते थे, अंत यह निश्चय हुवा कि श्री चंद्र जी यहां सुलतान पुर में रहें, और चंदो तथा लक्ष्मी दास मूले के साथ चले जायें, जाती समय चंदो ने जब श्री नानक देव जी को देखा तो महान क्रोध में आग बागूला होकर बोली, मैं पूछती हूं हे नानक ! क्या इसी बल बूते पर विवाह किया था, क्या अपनी स्त्री और बच्चों को छोड़ जाना इसी का नाम पुरुषत्व है ? यह सुन कर श्री नानक देव ने कहा-

मात पिता मिल पिंड कमाइआ ॥
तिन करते लेख लिखाइआ ॥
लिख दात जोत वडिआई ॥
मिल माइआ सुरत गवाई ॥ १ ॥
मूरख मन काहे कर सहि माणा ॥
उठ चलसी खसमै भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
तज साद सहज सुख होई ॥
घर छडणे रहै न कोई ॥
किछ खाजै किछ धर जाईऐ ॥
जे बाहुड़ दुनीयां पाईऐ ॥ २ ॥
सज काइआ पट हंडाए ॥
फुरमाइस बहुत चलाए ॥
पै सेज सुखाली सोवै ॥
हथीं पाउंदी काहे रोवै ॥ ३ ॥

घर घुम्मन वाणी भाई ॥
पाप पत्थर तरिश्रा न जाई ॥
भाउ बेड़ा जीउ चढ़ाऊ ॥
कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥ २ ॥

कुछ काल के पश्चात कालू ने भाई मरदाने को सुलतान पुर खबर लेने को भेजा। और कहा कि तुम जाकर नानक देव की खबर ले आउ मैनें कुछ अशुभ समाचार सुना है, मर्दाना सुलतान पुर में आया। मर्दाने ने नानक जी को तपस्वी वेष में देखा। नानकी जी से पूछने लगा कि यह घटना क्या देख रहा हूं। नानकी ने कहा हे मर्दाना! जो कुछ देख रहे हो वही घटना प्रत्यच्च है। यदि कुछ पूछना चांहते हो तो स्वयं नानक से पूछ देखो, जो कुछ कहे वही खबर पिता जी को दे देनी।

—o—

॥ साखी और चली ॥

मर्दाना श्री गुरू नानक जी से सम्मान पूर्वक मिला, तथा कहने लगा कि–हे नानक देव! यह क्या स्वरूप धारण कर लिया है? गुरू जी ने कहा–हमने तुम को तार–गुण दिया था, मैं तो तुमारी प्रतीच्चा में था, मैं चाहता हूं कि तुम हमारे साथ ही चलो। मर्दाने ने कहा कि आप किधर को जाने का विचार रखते हैं! गुरू जी ने हस कर फरमाया भाई! जिधर उस परमात्मा की आज्ञा होगी उधर चले जायेंगे, मर्दाने ने कहा–मैं तो आप की खबर लेने आया हूं। कालू जी और माता जी मेरी प्रतीच्चा में होंगे, तथा आप अपने साथ ले जाना चाहते हैं,तब गुरू जीने कहा हमारे साथ रहने से भूखा प्यासा रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा, यदि सुख खान पान चाहते हो तो तलवंडी में चले जाओ। मर्दाने ने कहा हे गुरू देव! अब मैं आप को छोड़ कर कहीं भी जाने का नहीं हूं। गुरू जी ने कहा कि तार बताओ, तब मरदाने ने कहा मैं तार नहीं जानता गुरू जी ने कहा हम ने तुम को तार का वर दे रखा है, वह कहां रखा है,

मरदाने ने कहा जहां आप ने रखा होगा वहीं पड़ा होगा, गुरू जी ने कहा मरदाना हमारी आग्या मान कर रबाब बजाओ, तब मरदाना रबाब लाने के लिये नगर में गया,उसने एक मिरासी साज़ बजाता एक पठान के साहमणे देखा, तब मरदाने ने उस मिरासी को कहा-हे मित्र ! तुझे एक परमात्मा का अनन्य भक्त बुला रहा है, इस लिये मेरे साथ चलो, दोनों चल पड़े रास्ते में उस मिरासी ने मरदाने से पूछा, क्या आप भी मिरासी ही हो ? मरदाने ने कहा जी हां ! उस ने पता पूछा तो मरदाने ने कहा मेरा नाम मरदाना है, और राय की तलवंडी का रहने वाला हूँ। इतने में वे दोनों सत गुर जी के निकट आ गये, उस समय गुरू जी समाधी में थे, मरदाने के अनुरोध से उस ने रबाब को बजाना प्रारंभ किया, गुरू जी उस्तान अवस्था में आये तथा कहने लगे हे मरदाना ! अब तुम रबाब बजाओ, मरदाना बजाने लगा। तो उस से बजे नहीं, क्योंकि मरदाना बजाना नहीं जानता था, गुरू जी के वर के प्रभाव से मरदाने ने ऐसी बजाई, जिस से जंगली पशु भी मस्ती में विभोर हो गये, गुरू जी को प्रसन्न देख कर मरदाना अत्यंत सुख सागर में निमग्न हो गया, मरदाना सोचता था कि यह सब गुरू जी की कृपा का फल है, क्यों कि मैं तो बजाना नहीं जानता था, परंतु अब तो इस के बजाने में पूरा उस्ताद हो गया हूं। यह सब गुरू नानक की कृपा का फल है, गुरू जी ने कहा हे मरदाना इस रबाब साज़ को हम सदा अपनायेंगे, तथा और साज़ विषयों की ओर ले जाने वाले हैं अतः तुम को अपने साथ एक रबाब अवश्य रखना चाहिये, मरदाने ने कहा-महाराज मैं कहां से लाऊं, तब गुरू जी ने कहा आप नगर में जाकर नानकी जी से आग्रह करें, मरदाना नानकी जी के निकट जा कर कहने लगा हे नानकी जी ! मैं गुरू जी को प्रसन्न करना चाहता हूँ। उस के लिये आप मुझे एक रबाब ले दो, यदि वह माने तो ले आना यदि न माने तो वैसे ही चले आना, उस मिरासी ने कहा-हे गुरू जी कहीं जाने की और मांगने की क्या आवश्यकता है, आप यह मेरा रबाब ले सकते हैं, गुरू जी कहने लगे। तुमारा दिया हमें पहुंच गया,

परंतु यह तेरी चीज़ जिस पर तेरी रोटी है, हम नहीं लेना चाहते। तब मरदाना नानकी जी के निकट जा कर कहने लगा हमें एक रबाब ले दो। मुझे श्री नानक देव ने आप के निकट भेजा है, नानकी ने कहा-कि मेरा भाई जो कुछ मांगे मैं देने को तैयार हूँ। परंतु वह मुझे आपना सुंदर मुख स्वयं दिखाये तो मैं सब कुछ करूंगी, नानकी जी का संदेस भाई मरदाने ने गुरू जी को अक्षरशः सुना दिया, गुरू जी मरदाने को साथ ले कर बहिन नानकी के घर में आए। नानकी जी ने आदर सतकार के साथ अपने प्राणों से अधिक प्यारे भाई को सुंदर आसन पर बठाया, तब गुरू जी ने कहा-कि बहिन जी हमारा एक कथन मानों, नानकी जी ने कहा कि जो कुछ आज्ञा करो उसे मैं सहर्ष स्वीकार करूंगी, परंतु आप मेरे पास ही निवास करो। गुरू जी ने कहा कि मैं आप को विश्वास दिलाता हूं। कि आप जिस सयम याद करोगी, मैं उस क्षण तुमारे निकट उपस्थित हो जाऊंगा, इस लिये मुझे अपने पास ही समझो, फिर रबाब की मांग की गई, नानकी जी ने कहा हे मरदाना आप बाज़ार जा कर जितनी कीमत का रबाब चाहिये ले आओ उस की कीमत मैं दे दूंगी। फिर गुरू जी ने बाले को बुलाया। जब बाला आया तब गुरू जी ने कहा हे बाला ! तुम हमें प्रिय हो ऐसा मालूम होता है कि तुम हम पर कुछ कुपित हो, बेचारा बाला कांप कर कहने लगा कि हे गुरु देव ! मेरी क्या शक्ति है जो आप के लिये मेरे मस्तक पर एक बल भी पड़े। परंतु यह संसार अनेक बातें करता है, गुरू जी ने कहा हे बाला ! संसार श्वान तुल्य हैं, तू हमारे शरीर के माता पिता के लिये संदेश लेकर जाओ, तथा उनको शुभ संदेश दे आओ। बाला तो तलवंडी को चला गया, और मरदाना रबाब लेने गया, सभी घर मिरासीयों के देखे कहीं भी मरदाने का सतकार न हुवा, उदास होकर वापस आ गया, तथा लोगों की ओर से जो अपशब्द सुने थे, जैसे किसी ने मरदाने को कुराहीया अर्थात बुरे मार्ग का पथिक। सभी कुछ गुरू जी को सुनादिये। गुरू जी ने कहा मर्दाना चिंता न करो। संसार झख मारता है। यही

संसार एक दिन तेरी स्तुति के गीत गायेगा, अब तू जा और अच्छा रबाब लेकर आ; मरदाने ने कहा–गुरु देव ! रबाव कहीं प्राप्त नहीं हुवा गुरू जी ने कहा–हे मरदाना। इसी वन में एक गांव जाटों का है उस का नाम अकबर पुर है। और दो नदियों के मध्य में है, वहां एक मिरासी का घर है, उसका नाम फिरंदा है, और उसे फेरू भी कहते हैं उस से रबाब मांगो, यदि न देवे तो हमारा नाम लेना।

मरदाने ने कहा गुरू जी ! कीमत के रुपये भी तो चाहिये, गुरू जी ने कहा–रुपये नानकी जी से ले लो, मरदाने ने नानकी जी से सात रुपये लेकर गुरू जी के दर्शन किये।

गुरू जी की आग्या पाकर मरदाना रबाब लाने के लिये चला, तीन दिन में मरदाना उस गांव में पहुँचा, फेरू-फिरंदे का पता पूछता फिरता था, दो दिन तक उस का कोई पता नहीं चला। मरदाना निराश होकर वापस लौटने की सोचने लगा।

—o—

॥ साखी और चली ॥

जब फिरंदे को ढूंडते २ मरदाने को तीन दिन व्यतीत हो गये, तब फिरंदा अचानक मिल गया, फिरंदे ने पूछा आप कौन हैं। तब मरदाने ने बताया कि मेरा नाम मरदाना है, तथा मैं फिरंदे रबाबी को जिस का नाम फेरू भी है ढूंड रहा हूँ। फिरंदे ने मरदाने का पूरा पूरा पता पूछा मरदाने ने कहा मैं तलवंडी राय का रहने वाला रबाबी हूं गुरू नानक देव एक साधु हैं, मैं उस का सेवक हूं। उन की आज्ञा से मैं आप से रबाब (एक प्रकार का साज़) लेने के लिये आया हूं, आप मुझ से कीमत लेकर रबाब दे दो। उसी समय फिरंदा गया, और रबाब लेकर आ गया, फिरंदे ने कहा हे मरदाना ! यह रबाब आप के समक्ष है तथा आप ले सकते हो। परंतु शर्त यह है कि यह रबाब सिवाय वेदी नानक देव के और किसी के आगे नहीं बजाना, क्यों कि जहां से मैने यह रबाब प्राप्त किया है, उन की यही आज्ञा है, तथा यही

इस की कीमत है।

मर्दाने ने कहा कि यदि आप की आज्ञा हो तो मैं इसे तनिक बजा कर देख लूं। फिरंदे ने कहा–कि यह तो गुरू नानक के साहमने ही बजाना उचित है। और मैं भी नानक देव का दर्शण करना चाहता हूं। मर्दाने ने कहा–कि मैं उन के लिये ही लेने आया हूं। तथा इस की परीक्षा भी उन्हीं की आज्ञा से करनी चाहता हूँ। फिरंदे ने कहा कि जैसे आप की इच्छा। मर्दाना रबाब मेलकर रबाब बजाने लगा। रबाब में से निरंकार निरंकार की आवाज़ आने लगी।

फिरंदा और मर्दाना दोनों गुरू जी के दर्शणों को चले। कुछ दिनों के पश्चात गुरू जी के पास आ गये। प्रनाम करके बैठ गये। गुरू जी ने कहा मर्दाना! इतने दिन व्यतीत कर आये हो। मर्दाने ने कहा। हे सतगुर! आप सर्वत्र हो फिर तमाम व्यथा सुनाई। फिर गुरू जी ने फिरंदे से उस का परिचय पूछा। तब फिरंदे ने कहा हे गुरू देव! आप भूल नहीं सकते। जब दुवापर युग में आप हरिचंद्र थे। और मैं आप का सेवक था। आप ने मुझे एकाग्र भक्ति का उपदेश दिया था। मेरा जन्म नीच घर का था। मैं आप के समक्ष सरोद बजाया करता था। आप की मुझ पर अपार कृपा थी, गुरू जी ने कहा आप का नाम क्या था, उसने उत्तर दिया मेरा नाम प्रेमा था, फिर गुरू जी ने कहा–कि अब यह रबाब कहां से तुम को मिला है? उस ने कहा हे गुरु देव! मैं इसी रबाब से नगर से तीन मील दूर जाकर बजाता और ईश्वर भक्ति करता रहा।

इस के पश्चात फिरंदा रबाबी गुरू जी की अपार स्तुति करके तथा प्रणाम करके और आज्ञा लेकर चला गया, मरदाना उसे विदा करने के लिये दूर तक गया, अचानक वह फिरंदा मरदाने की आखों से कहीं लोप हो गया, मरदाना हैरान था, अब मरदाना गुरू जी पास आया। गुरू जी ने पूछा मरदाना छोड़ आये हो, तब मरदाने ने कहा हे महाराज! वह तो कहीं अलोप ही हो गया है, गुरू जी मुस्करा दिये।

फिर मरदाना रबाब का ठाठ मेलने लगा, गुरू जी ने फरमाया हे मरदाना ! इसे बजाना प्रारंभ करो, ठाठ स्वयं ठीक हो जायगा। मरदाना आग्या मान कर रबाब बजाने लगा, रबाब में से तूही निरंकार तूही निरंकार यही ध्वनी निकली थी, उसकी सुर में सुर मिला कर मरदाना कहने लगा हे नानक ! मैं तेरा बंदा हां। उस समय गुरू जी समाधिस्थ हो गये, दो दिन समाधी लगी रही, अब मरदाने ने रबाब बंद कर दिया, उस समय मरदाने को भूख ने बहुत सताया, मरदाना मन में विचार करता था कि कब गुरू जी समाधी से जागें, और मैं आज्ञा लेकर कुछ खान पान करूं। तीसरे दिन गुरू जी की उत्थान अवस्था हुई, तब मरदाने से पूछा-भाई मरदाना ! क्या हाल चाल है ? मरदाना भूख से व्याकुल था। उत्तर दिया कि हे गुरू देव ! आप तो भूख प्यास से दूर हो चुके हो। तथा जोत में ज्योति का मिलन हो गया है, परंतु मैं तो एक साधारण जीव हूँ। आप के साथ मिल नहीं सकता, गुरू जी ने कहा हे मरदाना ! हमारे पास तो सदैव दुख और भूख है, मरदाने ने कहा हे सतगुर या तो हमें अपने जैसा कर लो, नहीं तो हमारा कोई और इलाज करो, तभी हम लोग आप के साथ रहने की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं गुरू जी ने कहा हे मरदाना ! यह दोनों ताकतें उस परमात्मा के हाथ हैं, मेरे साथ रह कर तो उस परमात्मा की इच्छा के साथ खेलना होगा, यदि तुमारे भीतर सहिन शक्ति हो तो रहो, नहीं तो आप जा भी सकते हो, मरदाने ने कहा कि आप हमें छुट्टी दे दो, गुरू जी ने कहा बहुत अच्छा तुम जाओ। परंतु यह रबाब बीबी नानकी को दे जाना, तब मरदाना रबाब लेकर नानकी के पास गया।

—o—

॥ साखी और चली ॥

जब मरदाना नानकी जी के घर रबाब लेकर गया, तब बीबी जी ने मरदाने से पूछा-हे भाई मरदाना ! आप अकेले हो, और मेरा भाई नानक कहां छोड़ आये हो ? मरदाने ने कहा बीबी जी ! नानक तो भूख प्यास

को पार कर गया है। परंतु हमें तो भूख और प्यास बहुत ही दुखी करती हैं। उन से कहते है तो वह कुछ सुनते ही नहीं। असल में आप का भाई नानक देव दुनीयां को त्याग फ़कीर हो गया है। अब हम लोग नानक जी से छुट्टी ले आये हैं। और उनों ने मुझे खुशी के साथ विदा किया हैं, साथ ही यह कहा है कि रबाब बहिन जी को दे देना, सो आप यह रबाब ले लो, उस समय नानकी जी को वैराग्य हो गया, तथा ज़ार ज़ार रोने लगी, तुलसां दासी बहुत धैर्य देने लगी, सायंकाल को जय राम घर में आये, उनों ने तुलसां से पूछा कि नानकी क्यों रो रही है ? तुलसां ने कहा कि आज मर्दाना भाई नानक देव को छोड़ कर वापस आ रहा है। यह सुन कर बीबी जी रोने लगी है, जै राम ने कहा हे नानकी ! हम प्रत्येक प्रकारे से तुम को प्रसन्न करने के लिये तैयार हैं। जैसे तुम आग्या करोगी वही किया जायगा, नानकी ने कहा कि हे स्वामी ! आज मेरे भाई को छोड़ कर मर्दाना चला आया है, अब भाई जी अकेले रह गये हैं, यह चिंता मुझे दुखी कर रही है, जै राम ने कहा कि देख नानकी ! तूं तो स्वयं कहा करती थी, कि मेरा भाई किसी के आश्रित नहीं है, अपितु वह तो संसार का आश्रय दाता है। परंतु आज तुम इस प्रकार अधीर हो रही हो, यह आश्चर्य है, फिर मरदाने को कहा–हे मरदाना ! तूं नानक देव जी को अकेला क्यों छोड़ आया है ? तुमारे साथ तो नानक जी का बहुत प्रेम है। मरदाने ने कहा–कि श्री मान जी ! नानक जी की समाधी तीन२ दिन तक लगी रहती है,और कोई नगर अथवा बस्ती भी निकट न होने से भय रहता है, जैराम ने कहा-यदि तुम को रोटी कपड़े की आवश्यकता है तो हम पूरी करने को तैयार हैं। नानकी जी ने कहा हे मरदाना यदि आप हमारे नगर के निकट निवास करो तो भोजन दोनों समय यहां से प्राप्त कर सकते हो और अगर दूर जाना हो जाय तो हमारे से खर्चा लेते जाओ। यह सुन कर मरदाना प्रसन्न हुवा, और कहने लगा। हे जय राम जी ! मैं आप की आग्या मानने को तैयार हूं। रात्री को मरदाना भोजन वगैरा खा

कर वहीं रहा, प्रातः भी रसोई खा कर तथा जय राम जी से कुछ खर्चा ले कर भाई मरदाना विदा हुवा, जाती बेर मरदाने को नानकी जी ने २०) वीस रुपये दिये, और कहा-कि हे मरदाना ! भाई जी को कहना कि तुमारी प्यारी बहिन नानकी तुमारे दर्शणों को लोच रही है।

अब मरदाना गुरू जी के निकट आ गया, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह रबाव फिर तुमारे पास देख रहा हूं। मरदाने ने बीबी नानकी तथा जय राम की सारी वार्ता सुना कर कहा कि उनोंने मुझे आप के पास लौटा दिया है, तथा मुझे बीस रुपये खर्चे के लिये भी दे दिये हैं। तथा जब तक हम सुलतान पुर के नज़दीक हैं तब तक भोजन देने का वायदा भी किया है। तथा दूर जाने पर खच देना भी स्वीकार किया है, तथा नानकी जी ने आप के दर्शणों की तीव्र इच्छा प्रकट की है। गुरू जी ने कहा-हे मरदाना आखर तू एक मिरासी ही निकला, आगे जय राम जी को श्री चंद का पालन करना पड़ रहा है। अब तुम रुपये ले आये हो, मरदाने ने कहा हे गुरू देव ! मैं ने तो मांगे नहीं, उनों ने स्वयं प्रसन्नता से दिये हैं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह रुपये लौटा आओ, किसी के आश्रित रहना ठीक नहीं। परमात्मा प्रत्येक का आश्रय है, किसी प्राणी का आश्रय लेना उचित नहीं है। तब मरदाने ने कहा कि आप भी चलो क्योंकि बीबी जी आप का दर्शण चाहती है, गुरू जी ने कहा कि हम तुमारा कैहना मानेंगे। क्योंकि हमें आप से आवश्यक काम है, अब गुरू जी और मरदाना नानकी जी को मिलने चले।

तुलसां गोली ने नानक जी को आते देखा। भाग कर नानकी जी के निकट आ कर कहने लगी। हे नानकी जी ! आप के प्यारे भाई जी आ रहे हैं। नानकी जी प्रेम के वश होकर कहने लगी-तुलसां तूं झूठ तो नहीं बोल रही, सच सच कहो, तुलसां ने कहा बहुजी ! मेरी क्या शक्ति है जो आप के समक्ष झूठ बोल सकूं, इतने में श्री गुरू देव जी आ गये, तब नानकी जी भाग कर गुरू जी के चणों में गिरने वाली ही थी तब नानक जी ने थाम लिया, और कहा बहिन जी ! आप मुझ से वड़े हो, जब आप मेरे

पैरों पर गिरते हो तबी तो मैं आप के पास आना उचित नहीं समझता, बहिन जी ! मेरा और आप का संबंध दुवापर युग से चला आ रहा है। और इस कलियुग में भी है, तब नानकी जी ने कहा। हे भ्राता जी। आगे से जैसे आप की आग्या होगी वैसे ही किया जायगा, मैं आप को कष्ट देने को तैयार नहीं हूं। परंतु आप ने मुझे दर्शन देना होगा। तब गुरू जी ने कहा हे मरदाना बहिन जी को रुपये लौटा दो, और कहा हे बहिन जी ! आप हमें ईश्वर के आश्रय ही रहने दो, नानकी ने कहा आप मेरे भाई ही नहीं। अपितु मैं तो आप को सर्वग्य परमात्मा रूप मानती हूं। गुरू जी ने कहा बहिन जी जब कभी मरदाना आप के पास आवे तो इस का सतकार करना और श्री चंद्र को आप ने गोदी ले लिया है। उस का तो पालन पोषण आप के ऊपर हो ही गया है, तथा हम लोग तो चलते ही भले हैं। नानकी जी ने कहा हे भ्राता जी ! यदि आप किसी दूर देश में चले गये तो मैं उदास हो जाऊंगी, गुरू जी ने कहा उदास और निराश होने की आवश्यकता नहीं। आप जब कभी स्मर्ण करोगे, तब मैं शीघ्र ही आप के समक्ष आने का विश्वास दिलाता हूं।

अंत में रुपये लौटा कर गुरू जी और मरदाना चल दिये सुलतान पुर से चल कर गुरू जी मर्दाने को साथ लेकर एमना बाद के निकट एक तरखाण (बढ़ई) जिस का नाम भाई लालो था उसके घर आ गये।

—o—

॥ साखी और चली ॥

सात दिन पश्चात गुरू नानक देव और मर्दाना भाई लालो के घर पहुंचे, आगे भाई लालो जो ईश्वर का परम भक्त था, वह लकड़ी का काम कर रहा था, गुरू जी का देखते ही सन्मान के लिये उठ कर खड़ा हो गया। गुरू जी ने कहा हे सज्जन ! बैठ कर काम करो, वह बोला हे महाराज ! मैं तो एक मूरख हूं। आप कृपया अपना परिचय स्वयं देने की कृपा करो, गुरू

जी ने कहा भक्त जी हम लोग तो परदेसी हैं। लालो ने कहा हे महाराज ! परदेसी तो सारा संसार ही है, मैं तो आप का पूर्ण परिचय चाहता हूं। क्योंकि भलाई आप के चरण चूमती देख रहा हूँ। तथा आप बातों में टाल रहे हो, गुरू जी ने कहा यदि हम टाल रहे हैं तो आप भी तो सब कुछ जानते हुवे एक अनजान बन रहे हो, तब लालो ने कहा कि यदि मेरी बुद्धि चक्षु ठीक अनुभव कर रहे हैं, तो क्या आप श्री गुरू नानक निरंकारी तो नहीं हो ? मैंने सुना है कि श्री गुरू नानक देव प्रकट हो गये हैं मुझे तो आप वही नज़र आ रहे हो, गुरू जी ने कहा जब आप जानते हो तो फिर पूछने की आवश्यकता क्या है। लालो ने कहा कि हमारी तुच्छ बुद्धि है गुरूजी ने कहा कि इस प्रकार जान और पहिचान लेने वाला कभी तुच्छ बुद्धि नहीं हो सकता, तब गुरू जी ने उसका नाम परिचय पूछा, उसने कहा मुझे लालो कहते हैं, तब उसके पूछने पर मर्दाने ने पूर्ण परिचय दिया,कहा हे भाई जी मैं एक इनका दास मर्दाना नाम का मिरासी हूँ। और आप निरंकारी श्री सतगुर नानक देव हैं। बस फिर क्या था लालो गुरू चर्णों पर गिर गया, गुरू जी ने उसे प्रेम से गले लगा लिया। और कहा हे लालो ! हमारा तुमारा एक वचन हुवा था, तब लालो ने कहा हे महाराज ! मन की मन में रहने दीजिये। तब गुरू जी मंद मुसकरा दिये, लालो ने मुसकराने का कारण पूछा, तब गुरू जी ने कहा हे लालो कोई बात छुपी नहीं रैहती। तब लालो रसोई घर में गया तो मर्दाने ने हसने का कारण जानना चाहा, और कहा कि हे महाराज भाई लालो कोई महा पुरुष मालूम होता है, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! आप और यह लालो पहिले भी हमारे साथ इकठे रहे थे। मर्दाने ने शंका की कि हे महाराज सुनने में आता है कि महा पुरुष जन्म धारण नहीं करते, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना। जो अवतार के भक्त होते हैं उनके हृदय में अवतार के दर्शण की लालसा होती है, जिस से वह जन्म लेते हैं। जन्म लेने के बिना दर्शणों की इच्छा पूरण नहीं होती, और जो निरगुण के उपासक होते हैं तथा इच्छा रहित होते हैं **उनका** जन्म नहीं

होता, इस लिये प्रत्येक युग में हम तेरे और इसके संगी रहे हैं,मर्दाने ने कहा महाराज ! सत्य है।

इतने में भाई लालो रोटी तैयार करके आ गया, और प्रार्थी हुवा कि महा राज भोजन तैयार है, गुरू जी कहने लगे हे भाई लालो ! रोटी यहां ही ले आओ। उस ने कहा महाराज आप चौंके में बैठ कर खाने के अभ्यासी होंगे, तब गुरू जी ने कहा हे लालो ! जहां तक पृथिवी है हमारा चौंका वहां तक है। तब लालो रोटी ले आया। रोटी देख कर गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह कोदरे की रोटी और शाक है। मर्दाने ने देख कर मन में कुछ ग्लानी की तब गुरू जी की आग्या से थोड़ा रोटी का टुकड़ा उस ने अपने मुख में डाला। उस रोटी का स्वाद मर्दाना को अमृत जैसा ही लगा। गुरू जी ने कहा कहो मर्दाना ! यह रोटी कैसी है। लालो ने कहा हे महाराज ! आप रोटी की ओर न देखो। मेरे मन की श्रद्धा को देखो, गुरू जी ने कहा हे लालो ! क्या अमृत से रोटी तैयार की गई है ? तब लालो ने कहा हे गुरु देव ! आज मैं कृत कृत्य हो गया हूं आप ने मेरी जन्म जन्मांतर की मल नाश कर दी है।

इस के पश्चात गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! अब किधर को जाने का विचार हैं ? मर्दाने ने कहा हे कृपा नाथ ! आप जिधर आग्या दो गे उधर ही चल निकलेंगे, गुरू जी ने कहा कि हम लालो के घर तीन दिन ठहरे हैं, अधिक नहीं ठहरना चाहीये। हमारा मन यहां बहुत प्रसन्न हुवा है, हमें तो संत पुरुष प्यारे हैं, मर्दाने ने कहा हे गुरू देव लोग आप को शूद्र कहते हैं तथा मेरी भी निंदा करते हैं, कहते हैं कि देखो जी इतने महात्मा बनते हैं। परंतु भोजन शूद्र का खाते हैं, लालो ने कहा हे महाराज आप तो निरलेप पूरण ब्रह्म हो। संसार की मल आप को कदापि लग नहीं सकती। संसार का काम ही ऐसा हैं, आप की किसी से भी अदावत नहीं है, आप तो संत जनों के प्यारे हैं, जात पात आप नहीं जानते, गुरू जी ने कहा हे लालो ! यह संसार विकराल रूप है, सत्य और तत्व की यहां पहिचान नहीं, परंतु

अब हमें आप छुट्टी ही देवो तो अच्छा हैं, और तेरा प्रेम तो हमें रोकता है। परंतु मर्दाना भी कुछ उदास हो रहा। इस लिये हमें चलने ही देना उचित हैं, लालो ने कहा आप को मैं अधिक नहीं कहूँगा, परंतु एक महीना दास पर और कृपा करो बस यही प्रार्थना है, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना। लालो का भी हमारे ऊपर कुछ अधिकार है, उसका कथन भी हमें मानना ही उचित है। मर्दाने ने कहा-यदि आप एक महीना यहां ठहिरना चाहते हो तो मैं चार दिन तलवंडी जाकर मिलकर फिर लौट कर आ जाऊंगा, मुझे आग्या दे दी जाय। गुरू जी ने कहा यदि तुमारी ऐसी ही इच्छा है तो जाओ परंतु शीघ्र चले आना।

मर्दाना तलवंडी की ओर चल दिया, गुरू जी दिन में तो वन में रहें तथा रात्री को भाई लालो के गृह को पवित्र करने लगे। जब इसी प्रकार पंद्रह दिन व्यतीत हो गये तब एक भागो क्षत्री जो बहुत ही अभिमानी था उसने एक दिन ब्रहम भोज किया, उस ने तमाम वर्ण के पुरुषों को निमंत्रण दिया। एक ब्राह्मण से गुरू जी ने उस उत्सव के बारे पूछा, तब ब्राह्मण ने कहा मलक भागो ने बड़ा भारी ब्रह्म भोज किया है, आप को भी वहां चलना उचित है। तब गुरू जी ने कहा हे ब्राह्मण देवता हम लोग फकीर हैं, हमारी किन में गिणती है? उस ब्राह्मण ने कहा हे नानक! लोग आगे ही तुम को कुमार्गी कहते हैं, यदि तुम इस यग्य में न जाओगे तो मलक भागो आप पर बहुत ही नाराज होगा।

उस की बात सुन कर श्री गुरु देव नहीं गये, लालो के घर में ही रहे। तब उसी ब्राह्मण ने मलक से जाकर कहा-देखो जी नानक क्षत्री साधु होते हुवे भी आप के यग्य में नहीं आया, मलक ने कहा हे पंडित जी! आप ने उन को निमंत्रण दिया था, तब ब्राह्मण ने कहा हे मलक जी! मैंने तो बहुत ताकीद की थी। परंतु वह परमात्मा जाने क्यों नहीं आया, तब मलक ने कहा-अच्छा जाओ नानक को बुला लाओ।

ब्राहमण ने लालो से जाकर पूछा कि नानक जी कहां हैं अगर यहां

हैं तो उन को बाहर भेज दो। लालो के संदेश देने पर गुरू जी बाहर आ कर कहने लगे। कहो ब्राहमण देव! कैसे दर्शण दिये । ब्राहमण ने कहा कि मलक साहिब आप को बुला रहे हैं। गुरू जी ने कहा हे ब्राहमण मलक का मेरे साथ क्या काम है, जो मुझे याद किया है, अब ब्राहमण ने मलक के पास जा कर फिर निंदात्मक शब्दों में कहा देखो मलक जी यह नानक एक क्षत्री का पुत्र है। उस शूद्र लालो के घर भोजन खाता है परंतु आप के इस महान यग्य में आना नहीं चाहता। फिर आप के बुलाने पर भी नहीं आया, मलक ने क्रोध में भर कर पंजे को कहा जाओ उसे पकड़ कर ले आओ।

ब्राह्मण ने आकर कहा देख नानक मलक को बहुत क्रोध हो रहा है चलना ही उचित है, गुरू जी अपनी महान लीला को करने के लिये ब्राह्मण के साथ हो लिये, तथा भाई लालो भी संग हो लिया।

पंजे ब्राह्मण ने नानक देव को लाने की खबर मलक को दी, तब मलक ने भीतर बुला लिया, गुरू जी ने जाते ही प्रश्न किया हे मलक! तुम ने मुझे क्यों बुला भेजा है? तब मलक ने कहा हे नानक! तुम ब्रह्म भोज में क्यों नहीं आये। गुरू जी ने कहा हम फकीर हैं, तथा स्वतंत्र हैं, मलक ने कहा तुम क्षत्री हो कर शूद्र का अन्न खा रहे हो परंतु यग्य से दूर रहते हो बताओ यह कहां की रीति है, तब गुरू जी ने कहा—अच्छा यदि तुम कुछ मुझे खिलाना चाहो तो अब भी खिला सकते हो, मलक ने ब्राह्मण को कहा—जाओ इसे कुछ खाने के लिये ला दो। गुरू जी ने पीछे देखा तो लालो नज़र आया, जिस के हाथ में एक रोटी कोदरे की पकड़ी हुई थी, उधर ब्राह्मण पूरी लुची और कचौरी लेकर आ गया। गुरू जी ने दायें हाथ कोदरे की रोटी ले ली और बायें हाथ पूरी कचौरी पकड़ ली, जब उन को अच्छी प्रकार दबाया तो रोटी में से दूध टपकने लगा और पूरी में से खून की कुछ बूंदें गिरीं। देखने वाले बहुत थे, सभी अचंभे में आ गये, गुरू जी ने कहा हे मलक! तुमने पुरुषों के लहू का ब्रह्म भोज किया है, हमें यही खिलाना

चाहते हो ? इस गरीब लालो के घर में नित्य प्रति असली ब्रह्म भोज हो रहा है। यह सुन कर तथा देख कर मलक की कोई भी पेश न चली तथा लज्जित हो गया, गुस्सा तो किया मगर क्या कर सकता था ॥२३॥

—o—

॥ साखी और चली ॥

एक वार तान खान का पुत्र बहुत ही बीमार हो गया, बहुत से इलाज किये परंतु सभी निष्फल रहे, तब उस ने मलक को बुला कर कहा हे मित्र ! मैं क्या करूं मेरा लड़का ठीक नहीं होता, तुम कोई इलाज बताओ, तब मलक ने कहा कि यदि कोई सच्चा साधु मिल जाय तो लड़का अरोग्य हो सकता है। खान ने कहा कि हम सच्चे साधु को कहां से लायें, मलक ने कहा कि तमाम साधु ग्रिफतार करो, जब अनेक साधु पकड़े गये तो उन में श्री नानक देव भी आ गये, यह बात लालो तरखान ने भी सुनी। लालो ने जाकर देखा तो श्री गुरू देव भी उन पकड़े हुवे साधुओं में बैठे हैं, लालो को बहुत ही कष्ट हुवा, तथा कहा हे गुरु देव यह क्या रहस्य है ? गुरू जी ने कहा हे लालो यह उस करतार की लीला है।

फिर गुरू जी ने कहा हे लालो इस पठान के पुत्र को यदि तुमारा जूठा टुकड़ा खिलाया जाये तो यह अरोग्य हो सकता है। तब लालो ने जूठा गुरू जी का टुकड़ा जब पठान के पुत्र को खिलाया। तब उस के सभ रोग दूर हो गये, तथा वाहिगुरू २ स्मर्ण करके बैठ गया, पठान ने सुना तो उस ने गुरू देव की अपार प्रशंसा की। उस के मन के पटल खुल गये, तथा गुरू चर्णों में गिर गया, मलक भी गुरू जी के चर्णों गिर कर क्षमा प्रार्थना कहने लगा, गुरू जी ने कहा—हे भागो ! हम ने तुमें क्या कहना है, देखो फकीरों से वैर करना भला नहीं, मलक ने हाथ जोड़ कर कहा आप तो अपार और सर्व शक्ति संपन्न हैं। गुरू जी प्रसन्न होकर कहने लगे हे मलक तूं भी आज से पवित्र हो गया। वह भूला नहीं जी सायं घर आ जाय। फिर वह पठान भी गुरू जी के चर्णों पर गिर पड़ा, उस ने कहा मैं बहुत

पापी हूं। जो संतों को मैनें दुख दिया है। हे गुरू देव मुझे क्षमा कर दो। आप पूरे तथा पहुंचे हुवे संत हो, मैं चाहता हूं। कि आप मुझे भव सागर से पार कर दो। गुरू जी ने प्रसन्न होकर कहाकि तुम और भागो यदि तमाम साधुओं की सेवा करके उन को प्रसन्न करो, तो तुमारी चौरासी कट जायेगी तब पठान शीघ्र ही तमाम साधुओं के चर्णों पर माथा झुका कर क्षमा प्रार्थना करने लगा, इस के पश्चात पठान तो गुरू जी का मुरीद हो गया और भागो गुरू जी का शिक्ष बन गया। और वह समस्त नगरी गुरू घर की सेवक हो गई।

इधर बाला और मर्दाना तलवंडी आये, तो कालु बेदी ने बाले को कहा कि बाला! तुम ने ही मेरे पुत्र नानक को मेरे हाथ से गँवाया है, तब मर्दाने ने कहा हे कालू! आप अपनी पुत्री नानकी तथा अपने जवाई जै राम जी से पूछ कर पीछे किसी को कहना, असल बात तो यह है कि तेरे कुल के भाग्य का सूर्य उदय हो गया है, जैसे दशरथ के घर राम चंद्र तथा वसुदेव नंद के घर कृष्ण जी प्रकट हुवे थे। उसी प्रकार इस कलियुग में आप के पवित्र घर में श्री पूर्ण गुरू देव नानक जी महाराज प्रकट हुवे हैं।

कालू ने कहा-हे संसार वालो सुन रहे हो इस मिरासी की बातें, नानक ने मेरे घर पैदा होकर खान दान का नाम डुबो दिया हैं, परंतु यह डोम कुछ और ही बक रहा है। खानदान अंधेरा करने वाले नानक को सूरज कह रहा है, मुझे तो इस डोम की अकल पर हंसी आती है, मर्दाने ने कहा हे यजमान! तेरे पुत्र को समस्त संसार पूज्य कहता है, तुझे सत्य की कोई खबर नहीं।

उसी समय राय बुलार ने मर्दाने को बुलाया, मर्दाने ने आकर सम्मान से प्रणाम किया, इनों ने कहा हे मर्दाना! तू हमारे नानक देव की क्षेम कुशल बता, तब मर्दाने ने कहा-आप श्री गुरू देव नानक जी के बारे क्या पूछते हैं, नानक पीरों का पीर तथा गुरू जनों का गुरू और बादशाहों का सम्राट है, उस की स्तुति तो ऐसे है जैसे सूर्य को दीपक से तुलना करनी

होती है, नानक की तारीफ करने के लिये संसार के किसी भी व्यक्ति की रसना पर्याप्त नहीं है, और कोई लेखक गुरू जी के बारे कुछ भी लिखने में असमर्थ्य है। नानक के नीचे समस्त संसार है, और नानक के ऊपर केवल उस परमात्मा की ही जात है, अर्थात नानक साक्षात ईश्वर है।

यह सुन कर राय कहने लगा कि हे मर्दाना! हम लोग अब बूढ़े हो गये हैं तथा नानक के दर्शणों की इच्छा है। तुम उन को यहां ले आओ, मर्दाने ने कहा कि नानक हमारी इच्छा से बहुत ही दूर है, उस की इच्छा के हम मुहताज हैं। नानक तो सदैव स्वतंत्र है यदि आप नानक जी के दर्शण चाहते हैं, तो बाला जो जाट है, यदि वह मेरी मदद पर हो तो आशा कर सकता हूं कि फिर आप अपनी ख्वाहश की बेल को फलती फूलती देख सकते हो।

राय ने बाले संधू को अपने निकट बुला कर कहा हे बाला! तू मर्दाने के साथ जाकर श्री नानक देव को यहां तक लाने की हिम्मत करो। ताकि हमारी कामना पूर्ण हो, नानक को मेरी ओर से हाथ जोड़ कर कहना-कि तुमारा खादम दर्शणों की भिक्षा मांगता है, इतनी कह कर बुलार के नेत्रों में जल बिंदु ढलकने लगे। बाले ने स्वीकार किया, तब बाला और मर्दाना तलवंडी से विदा हुवे।

बाला और मर्दाना लालो वढई के घर आ गये। प्रणाम करके गुरू जी के चणों में विनय करने लगे-बाले ने कहा हे सतगुर तलवंडी में राय बुलार आप के दर्शणों के लिये तरस रहा है, उस को आप आपना चंद्र मुख एक बार जरूर ही दिखाने की कृपा करें, गुरू जी ने कहा-हे बाला! वहां श्री कालू जी से मिलना होगा। तथा पुत्र माया के वश उन को कुछ कष्ट होगा। तब बाले ने कहा-आप ने वहां जाकर पिता जी के पास तो रहना ही नहीं तथा राय ने बहुत ही इच्छा प्रकट की है, मैं भी आप के चणों में प्राथना करता हूं कि आप बुलार को जरूर ही दर्शण दें।

गुरू जी ने कहा हे बाला! राय बुलार का हम पर कुछ रिण भी है।

उसे भी अदा करना हमारा कर्तव्य है। तथा अवश्य ही तलवंडी जायेंगे, यह सुन कर बाला और मरदाना बहुत ही प्रसन्न हुवे। लालो ने सुना कि गुरू जी तलवंडी जा रहे हैं। तब वह उदास होकर कहने लगा–हे गुरू देव, आप ने तो यहा एक मास रहने की कृपा करनी थी। अभी महीना पूर्ण नहीं हुवा गुरू जी ने कहा हे सज्जन ! आज पच्चीस दिन हो गये हैं। बाकी पांच दिन हम यहां आकर अवश्य ठहरेंगे। भाई लालो को बाले का आना कुछ अखरने लगा, जिसे बाला भी जान गया। उस ने धैर्य देने के लिये कहा–हे भाई लालो ! आप की भांति राय बुलार भी श्री गुरू देव के दर्शणों के लिये ललायत हो रहा है। इस लिये मैंने प्रार्थना की है, तथा ज्योति स्वरूप श्री गुरू सारे संसार के हैं। आप कुछ दिन धैर्य करें। लालो ने कहा–अच्छा शक्ति मानों से कोई ज़ोर नहीं चलता, जैसे आप की इच्छा।

बाला और मरदाना तथा संसार के स्वामी श्री गुरू नानक जी तलवंडी के लिये रवाना हुवे।

—o—

॥ साखी और चली ॥

गुरू जी बाले मर्दाने के साथ तलवंडी पहुंच गये। तथा नगर के बाहर चंद्रभान संधु के कूंएं पर आसन लगा दिया, श्री कालू तथा माता जी और राय बुलार सूचना पाकर बहुत ही प्रसन्न हुवे, अब तीनों श्री गुरू जी के दर्शणों को तथा स्वागत के लिये बाले के पिता चंद्रभान के कूंएं पर गये, कालू जी ने अपने पुत्र को साधारण साधु लिबास में देखकर दुःख किया। कालू जी का भाई लालू बुद्धिमान था, उसने कालू जी के दुख को शिक्षा से दूर किया, फिर लालू जी ने गुरू जी से कहा–हे नानक मैं लालू तेरा चचा हूं। तथा मैं तुमें कहता हूँ कि उठो और घर में चलो, गुरू जी ने कहा ! चचा जी मैंनें तो बहुत विशाल घर अपनाया है, छोटे से घर में जाने की इच्छा नहीं, तब माता जी श्री नानक देव जी के चरणों में गिर गई। फिर लालू ने कहा–नानक देव अब आप साधू हैं, साधू के हृदय में दया का होना

आवश्यक है। फिर भरजाई जी आप की जन्म दाता है, अधिक क्या कहूँ हमारे कहने आप घर में चलें, तव गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द कहा-

॥ राग रामकली ॥

खिमा हमारी माता कहीऐ संतोष हमारा पिता ॥
सति हमारा चाचा कहीऐ जिसु संगु मनुआ जिता ॥१॥
सुण लालू गुण ऐसा ॥
सगले लोक बंधना के बंधे सो गुण कहीऐ कैसा ॥ १ ॥

॥ रहाउ ॥

भऊ भाई संग हमारे प्रेम प्रीत सो चाचा ॥
धीअ हमारो धीरज बनी है ऐसा संग हमराचा ॥ २ ॥
शांति हमारी संग सहेली मत हमारी चेली ॥
एह कुटंब हमारा कहि अहि सास हमारी खेली ॥ ३ ॥
एकंकार हमारा खावंद जिन इह बणत बणाई ॥
उस को त्यागि अवर को लागे नानक सो दुख पाई ॥४॥

यह सुन कर लालू ने कहा कि हे भाई! यह नानक ; अब हमारा नहीं रहा। अब तो इस को साथ लेकर बुलार के जाना उचित है अब गुरू जी बुलार के निकट गये ॥ आगे बुलार पलंग पर बैठा था। देखते ही उठा- तव गुरू जी ने उसे मान के साथ थामा तथा कहा कि हे बुलार! हम आप के नौकर हैं, राय ने नीचे शिर कर के कहा हे नानक! आप हमें क्षमां करो, तथा आप उस परमेश्वर से भी हमें हमारे पापों की क्षमा करवाने के लिये भी आप प्रार्थना करें। क्यों कि आप में और उस परमात्मा में कोई भेद नहीं है। गुरू जी ने कहा हे राय जी! कहां आप और कहां हम साधारण पुरुष, आप तो वड़े आदमी हैं, तव बुलार ने कहा हे गुरू देव! मैं अब अपने को खुश किस्मत समझता हूं। जव आप मेरे शिर पर अपने पवित्र चर्ण कमल रखें, गुरू जी बुलार की अधीनता तथा प्रेम देख कर पलंग पर बैठ गये, तथा बुलार ने गुरू जी के चर्णों पर **अपना** शिर रख **दिया**।

तब बुलार ने सुधा नाम के ब्राहमण को बुलाया, और कहा हे पंडित जी ! आपने बर्तन यहा ले आओ, तथा आज भोजन मेरे ही करो, फिर गुरू जी से प्रार्थना करने लगा, हे गुरू देव ! आप भोजन कैसा पसंद करते हैं ! गुरू जी ने कहा–हे राय ! जैसा भी वह परमात्मा हमें भेज दे वही उत्तम हैं । यहा फरमायश नहीं हैं, अब राय ने कहा अच्छा यहां ले कुछ मीठा खा लें, पीछे नमकीन खाना हाज़र किया जायगा, गुरू जी ने राग मारू में एक शब्द उच्चारण किया–जो आगे लिखा गया है–

मिठा सरम सलोना संजमु खटा खरा धिआनु ॥
ऐसा भोजन जो नर अचवै सो माणस परधान ॥ १ ॥
राय जी भोजन ऐसा करीऐ और सगल परि हरीऐ ॥१॥रहाउ॥
मेवा मगन लगा सचु सेती जिस खाधे त्रिपतावे ॥
दूख भूख सगला ही नासै जां सचा नाम चित आवै ॥२॥
अमृत फलु है नाम धनी का सो पीवे जिस देवे ॥
सफलिओ दरसन अकाल मूरति है तांके रिदै समावै ॥३॥
कहु नानक सो खरा सुआदी एकंकार सलीआ ॥
अउर सुआद मन फीके लागै जद सचु नामु मुख दिआ ॥४॥

तब कालू जी ने कहा हे लालू ! यह बात अजीब सी है, लालू जी ने कहा कि आप खामोश रहें। उसी समय माता तृप्ता जी राय बुलार के पैरों पर गिर पड़ी, और गिड़ गिड़ाकर कहने लगी। आप कृपा करके नानक देव को अपने पास ही रखें, राय ने कहा हे नानक देव ! आप की माता जी बहुत विरलाप करती है। परंतु हम कह नहीं सकते, गुरू जी ने कहा कि आप निःसंकोच जो कहना चाहो कहो। राय ने कहा कि आप तलवंडी रहो–खेती करो। नौकर चाकर में लगा दूंगा, आप को अधिक परिश्रम नहीं करना होगा, तब गुरू जी ने आगे लिखा एक शब्द उच्चाण किया–

॥ राग सोरठ ॥

मन हाली किरसाणी करणी सरम पाणी तन खेत ॥

नाम बीज संतोष सुहागा रख गरीबी वेस ॥
भाउ कर्म करि जम्मसी से घर भागठ देख ॥ १ ॥
बाबा माया साथ न होइ ॥
इन माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

फिर कहा गया कि यदि आप चाहो तो दुकान भी कर सकते हो, फिर गुरू जी ने नीचे लिखी पौड़ी उच्चारण की-

हाणु हटु कर आरजा सच नाम कर वथ ॥
सुरति सब्द करि भांडि साल तिस विच तिसनो रख ॥
संतां सेती वणज कर लै लाहा मन हस ॥ २ ॥

फिर कालू जी ने राय से कहा कि आप इसे घोड़ों की सौदागरी पर भी लगने को कहो। फिर गुरू जी ने पौड़ी कही-

हुण सासत्र सौदागरी सत घोड़े लै चल ॥
खरच वन्न चंगिआइआ मत मन जाणे कल ॥
निरंकार कै देस जाइ तां सुख लहै महल ॥ ३ ॥

फिर नौकरी का आग्रह कालू जी की ओर से किया गया, तब नीचे लिखी पौड़ी गुरू जी ने उच्चारण की-

लाइ चित कर चाकरी मन्न नाम करि कम्म ॥
वन्न वदिआ कर धावणी ता को आखै धन्न ॥
नानक नाम अराधते चड़ै चवगण वन्न ॥ ४ ॥

तब कालू जी ने नानक जी से कहा-अच्छा जो काम आप करना चाहो वही हमें स्वीकार है। राय ने कहा कि मैं इस में साक्षी हूं। तब गुरू जी ने सारंग राग में निम्न लिखित शब्द उच्चारण किया-

राग सारंग

इक फरमाइस आखीए जे मन्ने साई ॥
जिसते जोर न चलई करि जोर धिआई ॥
ऐसा सतिगुरू राय जी किसे हथ न आवै ॥

सोई कार कमावनी ज़ो उस को भावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥
हिक्मत हुकम न चलई कोई करि देखै ॥
सेख मसाइक सिध साध सभ लिखीऐ लेखै ॥२॥
दस अवतारी आइआ जुग हुकम चलाइआ ॥
अंतकाल धरती पए कुझ हथ न आइआ ॥ ३ ॥
वडे वडे महा बली जोधे अर सूरे ॥
कहु नानक सभ देखिआ सभ धरती धूरे ॥ ४ ॥

तब फिर राय ने कहा हे नानक देव ! आप लंगर लगाओ। (जहां गरीबों को भोजन मुफ़त मिले उसे पंजाबी में लंगर कहा जाता है)।

तीन कूंएं जो हमारे चल रहे हैं उन की आय से आप ग़रीबों की पालना करो, हिसाब नहीं लिया जायेगा। तब गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया–

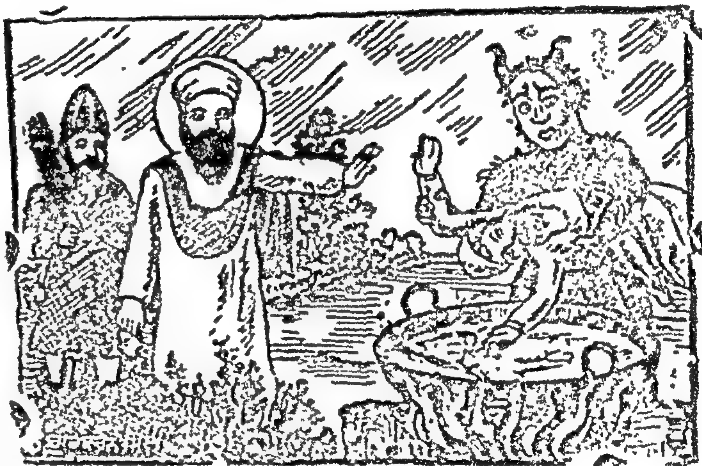
राग आसा महला १ ॥

लंगर एक खुदाइ दा दूसर लंगर नाही ॥
दूसर लंगर ना चलै जग थिर ना रहाई ॥ १ ॥
राय बुलार सुन बेनती यह अरज हमारी ॥
खालक सचा एक है जिनि खलक सवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
दाता आपे रहीम है खालक सब खेले ॥
देवनि को आपे धनी सगलिआ प्रतिपाले ॥
जीऊ प्राण तन धन दीए रस भोग ॥
आपे कछू न होवई प्रभ कीए संजोग ॥
सभना के सिर एक है सिध साध बीचारे ॥
नानक मंगता सब को इक दाता सिरजनहारे ॥

संवत १५५५ पोष वदि षष्टी को जब गुरू नानक देव जी तलवंडी से रवाना होने लगे, तब कालू पटवारी राय बुलार के पास जाकर रोने लगे। तब राय ने श्री गुरू जी को अपने निकट बुलाया, और बहुत नम्रता से

कहा हे नानक देव आप मुझे क्षमा कर दें। और प्रार्थना यह है कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करके यहां तलवंडी में ही रहो। गुरू जी ने कहा हे बुलार! मैं हफ़सोस से कहता हूं कि यह बात मेरे अधिकार में नहीं।

तब राय ने बहुत यत्न किया, परंतु गुरू जी उदास हो गये, राय ने देखा कि अब नानक यहां नहीं रहेगा। तब कहा हे नानक देव! आप को जो कुछ चाहिये। वह मुझे सेवा करने का सौभाग्य दो। गुरू जी ने कहा– कि मेरी ज़रूरत पूरी करने वाला कोई और ही है, गुरू जी रात्री समय स्नान करने गये परंतु कूएं सब बंद थे। गुरू जी ने कहा–क्या यहां कोई टोबा भी नहीं है। यह बात राय ने सुन ली तब टोबा तैयार करने का हुक्म दे दिया। टोबा गुरू जी के नाम से बनवाया गया, इस प्रकार यह साखी समाप्त हुई, आगे प्रथम उदासी श्री गुरू नानक देव जी की लिखी जाती है।



॥ साखी और चली ॥

तलवंडी से श्री गुरू जी और बाला मर्दाना फिर भाई लालो के घर में आ गये, लालो को अपार प्रसन्नता हुई, पश्चात पांच दिन निवास करके फिर चल दिये, और बंगाल तथा ढाके में जा पधारे। वहां कुछ भी खान पान को नहीं मिला गुरू जी ने कुछ दिन पवन खा कर ही व्यतीत किये भूख प्यास पर गुरू जी का तो पूर्ण अधिकार था। परंतु मर्दाना भूख से व्याकुल हो कहने लगा– हे गुरुदेव! मैं भूखा मरने लगा हूं। कृपया मेरा इन्तज़ाम करो, गुरू जी ने कहा इन वृक्षों को खखड़ीयें लग रही हैं, जाओ पेट भर खाओ। मर्दाना खखड़ियें खाने लगा। गुरू जी ने कहा भाई मर्दाना! पेट भर कर खाओ। परंतु फिर के लिये जमां नहीं करनी। खखड़ियों का स्वाद अमृत जैसा था मर्दाना भूखा था, खूब खाने लगा फिर कुछ तोड़ कर कपड़े में बांध लीं।

मर्दाने ने सोचा यह कल को काम आयेंगी। दूसरे दिन भूख लगी तो निकाल कर फिर खाने लगा, खाने के पश्चात हाथ पांव मारने लगा। देख कर गुरू जी हँसने लगे, मर्दाने ने कहा मैं मरने लगा हूँ परंतु आप हँस रहे हैं। गुरू जी ने कहा मैंने तुमें बंद किया था परंतु तुमने हमारी आज्ञा नहीं मानी। यदि आज्ञा ही ले लेते तब भी यह अवस्था न होती। अरे पागल यह बूटे तो आक के थे। फिर गुरू जी ने स्वयं तोड़ कर दीं। जिस के खाने से मर्दाना ठीक हो गया। फिर गुरू जी वहां से आगे रवाना हुवे। फिर एक राजा के राज्य में पहुंचे, जिस जगह झंडे बाढी की चारपाई है। वह समुद्र के टापू में है उस जगह मरदाना अवग्या करने को तैयार हो गया और कहने लगा हे गुरू जी मैं आगे जाने को तैयार नहीं। मुझे आप अब आज्ञा ही दे दो। गुरू जी कहने लगे हे मर्दाना ! हमारा कथन मान। इस देश में बहुत सी मुसीबतें आने का भय है। इस लिये हमारे साथ ही रहना उचित है परंतु मर्दाने ने फिर अस्वीकार किया तब गुरू जी ने बाले से कहा हे बाला ! यह मर्दाना हमारी बात नहीं मानता अंततो गत्वा मर्दाना गुरू जी की आज्ञा न मान कर पीछे को लौट चला। यह कथा भाई बाला सुना रहा है फिर गुरू जी ने मुझे पूछा कि हे बाला ! अब क्या किया जाय ? बाले ने कहा जो कुछ आप की इच्छा हो वही करो।

अब गुरू जी वहीं बन में बैठ गये, जब दोपहर व्यतीत हुई तब गुरू जी ने कहा हे बाले मर्दाना एक राक्षस के पंजे में फस गया है, और अब उसे तेल के कड़ाहे में तलना चाहता है तब मैनें भी मर्दाने को बचाने का आग्रह किया। तथा गुरू जी भी उस पर कृपा करने के लिये उठे। और उसी ओर चल दिये जिधर मर्दाना गया था, बाले ने पूछा गुरू जी ! कितनी दूर जाना होगा ? गुरू जी ने कहा कि अभी नौं कोस दूरी हैं, मैनें प्रार्थना की कि हे स्वामिन ! मर्दाना तो इतनी देर तक मारा जायगा। गुरू जी ने कहा बाला आंखें बंद करके खोल लो। जब इस प्रकार किया तो तत क्षण उसी स्थान पर जा पहुँचे जहां राक्षस ने मरदाने को पकड़ रखा

था। गुरू जी कहने लगे हे वाला! वह तेरे साहमणे तेल का कड़ाहा है, जिस में मर्दाने को तलकर वह राक्षस खा जावेगा। हमें उचित है कि यह कौतुक हम छिप कर देखें। वाले ने कहा हे महाराज आप का यहां आना अथवा न आना फिर तो समान ही है। गुरू जी ने कहा हे वाला! जो कुछ उस करतार की इच्छा होगी वही होगा। उस की लीला चुप चाप देखते जाओ।

अब उस राक्षस ने मर्दाने को उठा कर तेल के कड़ाहा में जो आग की भांति तप रहा था उस में फैंक दिया, ईश्वर की लीला तपा हुवा तेल बरफ की भांति शीतल हो गया। यह देख कर वह राक्षस हैरान हो गया, गुरू जी को देख कर राक्षस ने कहा तुम कौन हो? मेरे तेल सर्द होने का कारण केवल तू ही है। गुरू जी ने कहा कि भाई तू इसे खाता क्यों नहीं। अरे कौडे राक्षस तुम को किस की प्रतीक्षा है। कौडे ने कहा कि तुम मेरा नाम कैसे जानते हो। तथा तुम मेरे वैरी कहां से आ गये हैं। तब गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया।

॥ राग मारू महला १ ॥

फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ प्रगास ॥
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलास ॥ १ ॥
आवणु जाणु रहिओ ॥ रहाउ ॥
जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गत निग हार ॥
जिस की अटक तिस ते छुटी तऊ कहां करे कोट वार ॥२॥
चूका भारा भरम का होइ निहकरमा ॥
सागर ते कंडे चढ़े गुरि कीनो परमा ॥ ३ ॥
सच थान सचु बैठका सचु सुआउ वणाइआ ॥
सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥ ४ ॥

तब कौडा राक्षस गुरू जी के चर्णों पर गिर गया। कहने लगा हे सतगुरु देव! मैंने बहुत पाप किये हैं आप मुझे क्षमा करें। गुरू जी ने

कहा हे कौडा ! यदि तू मर्दाने के चर्णों पर गिरे और उस से क्षमा याचना करें। तो तुम पापों से मुक्त हो सकते हो। राक्षस ने कहा-मैं आप जी का दास हूं। जैसे आग्या होगी वही करूंगा, राक्षस ने गुरू जी से भोजन के लिये आग्रह किया गुरू जी कहने लगे हे कौडा ! हमें तो आप की श्रद्धा का भोजन चाहिये। तब कौडा बन से बहुत से मेवे ले आया। और गुरू जी के अर्पण किये, मर्दाने को गुरू जी कहने लगे हे मर्दाना ! यह मेवे खाओ। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! मैंने आप की आग्या नहीं मानी। आप मुझ पर अप्रसन्न हैं। आप मुझे पहिले क्षमा कर दो, गुरू जी ने कहा हम तुम पर प्रसन्न हैं। उसने कहा कि हे कृपालो ? यह मेवा बांट दो जितना मेरे हिसे आयेगा। उतना ही लेना उत्तम है, बाले ने गुरू जी की आग्या से तीन स्थान पर बांट कर एक हिस्सा मर्दाने को दिया तथा एक भाग गुरू जी के अर्पण किया, और एक स्वयं लिया। गुरू जी ने अपना भाग कौडे को दे दिया। कौडे ने सहर्ष स्वीकार करके तत क्षण अपने मुख में रख लिया जब गुरू जी का दिया हुवा प्रसाद कौडे ने खाया, तब उस के हृदय पटल खुल गये। उस का शरीर परम सुंदर हो गया;बाला और मर्दाना देख कर हैरान हो गये। गुरू जी ने कहा भाई हैरान होने की आवश्यकता नहीं परमात्मा ने मुझे इन लोगों का उद्धार करने की आग्या दे रखी है। गुरू जी सात दिन तक कौडे के यहां रहे, फिर चार पाई कौडे को देकर गुरू जी आगे को रवाना हो गये।

॥ साखी और चली ॥

आगे सैंतालीस दिन चलते रहे, एक दिन फिर मर्दाने को भूख ने सताया। मरदाने ने कहा हे महाराज अब तो चलना भी कठिन हो गया है। गुरू जी ने



कहा धैर्य करो आगे एक सुंदर नगर आने वाला है। मर्दाने ने कहा कि हमारे पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। क्या किसी मुर्दे को बड़े नगर में ले जाओगे ? तब गुरू जी ने अपने पांव से रेत बखेरी तो उस में से एक लाल निकला। मर्दाने को उठाने की आज्ञा हुई तब मर्दाने ने कहा हे महाराज मैं इस पत्थर को क्या करूं। जब तक पेट में कुछ न डाला जाय तब किसी बेशकीमत वस्तु को बांधने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि इस तरह भूख नहीं मिटती तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना वह देखो नगर नज़र आने लगा, मरदाने ने कहा नज़र आने से क्या है अभी तीन कोस की दूरी पर है यह कह कर मर्दाना कुछ उद्विगण मन हो गया और झल्ला सा हो गया तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! तुम इस नगर का नाम जानते हो ? मर्दाने ने कहा मैं तो नहीं जानता, गुरू जी ने कहा अच्छा बाज़ार में जाकर किसी जुवाहरी की दोकान पर यह पत्थर बेच कर पैसे ले आओ, इस नगर का नाम विशंभरपुर है। मर्दाने ने उस पत्थर की कीमत पूछी, गुरू जी ने कहा जो कोई कीमत कहे मुझे आकर बताना, मरदाना गया एक जुवाहरी ने उस लाल की कीमत तीन पैसे बताई मरदाने ने उस की कीमत तीन पैसे गुरू जी से बताई। गुरू जी ने कहा भाई ! किसी बड़े जुवाहरी के पास ले जाओ, उस ने कहा मैं छोटा बड़ा नहीं जानता। गुरू जी ने कहा कि एक जुवाहरी जिस का नाम सालस राय जुवाहरी है उस के पास जाओ अब मरदाना सालस राय के पास गया उस ने लाल देख कर पहिचाना, उस लाल पर लिखा नज़र आया कि इस लाल को देखने का मूल्य १००) एक सौ रुपया है। उस ने एक सौ रुपया दे दिया और लाल रख लिया। मरदाने ने कहा हे जुवाहरी ! मैं अपने मालक से पूछ कर लाल दूंगा। उस जुवाहरी की स्वीकृति से मरदाना गुरू जी के पास आया, और गुरू जी के आगे सौ रुपया रख दिया गुरू जी ने कहा कि तुम इस की कीमत ले आये हो मरदाने ने कहा उस ने दिये मैं ले कर आ गया। गुरू जी ने कहा–उस से पूछो कि यह सौ रुपया कैसे दिया है मर्दाने

ने जुवाहरी से कहा कि आप ने यह सौ रुपया कैसे दिया है जुवाहरी ने लाल पर लिखी शर्त सुनाई तथा उसी के अनुसार सौ मुद्रिका देने की बात कहीं और यह भी कहा लाल तुमारी धरोहर हमारे पास है, ले सकते हो। मर्दाने ने सारी बात गुरू जी को आकर सुना दी। गुरू जी ने कहा–हे मरदाना! अब तू लाल बेचना चाहता है या नहीं? मरदाने ने कहा मैं नहीं जानता गुरू जी ने कहा मैं इस लिये पूछ रहा हूँ कि यह लाल नहीं यह तो परमात्मा का नाम है। पहिला जुवाहरी तीन पैसे कीमत देता था। अपितु इस ने केवल लाल के दर्शणों का सौ रुपया दे दिया है। मेरे कथन का मतलब यह है कि ईश्वर का नाम एक लाल है उसे चाहे तू बेच ले और चाहे भूख प्यास सुख दुख आदिक सहन करके अपनें अधिकार में रख। यह तेरी इच्छा पर निर्भर है अब मर्दाना इस रहस्यवाद को समझ गया फिर मर्दाना जुवाहरी के निकट जा कर उस का सौ रुपया लौटा कर और लाल को वापस करने के लिये कहा कि मेरा स्वामी लाल बेचना नहीं चाहता आप लाल फेर दे रुपये ले ले। उस ने कहा यह सौ तो उस लाल की दिखाई है यह रुपया और लाल दोनों ही तुमारे हैं। अब मर्दाना लाल और रुपये लेकर गुरू जी के पास आ गया तब गुरू जी ने कहा यह लाल और रुपये कैसे ले आया है तब मर्दाने ने सारी बात सुना दी। गुरू जी ने कहा नहीं इक बार फिर जाओ तथा वायदा करो। मरदाने ने जाकर जुवाहरी को रुपये वापस लेने की कही। जुवाहरी के इनकार करने पर मरदाना फिर गुरू जी के निकट आ गया। इसी प्रकार जुवाहरी लेता नहीं और गुरू जी भी नहीं लेते थे मर्दाना बहुत बार इधर उधर गया अब मरदाना थक कर घबरा गया और रुपये जुवाहरी के घर फैंक कर वापस आ गया इधर जुवाहरी ने सोचा कि यह रुपये उन के हैं मुझे नहीं रखने चाहिये। माया ने तो सनकादिक रिषियों का मन भी विचलित कर दिया था परंतु यह रुपये लेते ही नहीं। दूसरे मैंने अधिक लाल जीवन में देखे हैं परंतु किसी पर लिखा हुवा नहीं देखा। यह लाल अजीब ही है इस के मालक को देखना भी उचित है।

उस जुवाहरी ने अपने नौकर को मर्दाने के पीछे दौड़ाया कहा कि पता लेकर आओ कि वह लाल लेकर किधर को गया है नौकर ने नगर के वाहर आ कर तीन साधु बैठे देखे। उधर मर्दाना भूख के मारे बोल नहीं सकता था। गुरू जी सर्वज्ञ थे। सभ कुछ जान गये। कुछ ही समय के पश्चात सालस राय भी आ गया। नौकर के शिर पर अनेक वस्तु थीं। सौ रुपया और वस्तु रख कर उस ने गुरू जी के चर्ण छुए। गुरू जी ने कहा–हे भाई! यदि हम लाल वेचें तव तो यह नज़राना भी ले सकते हैं। यदि हमने देना ही नहीं तो फिर यह सौ रुपया क्यों लें। जुवाहरी ने कहा हे महाराज! यह तो साधारण लाल हैं परंतु आप तो सत्य रूप से लाल हो मैं अत्यधिक अचंभे में हूं तव गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया–

राग माझ महला १ ॥

लालो लाल उपाइआ लालो लाल दिसंन ॥
जिना लाली नेतर माही दूजा नाहि चाणंन ॥
सुन सालस राय तूं जउहरी अपणा लाल पछाण ॥
कूड़े लाल न गंढ बंन अपना साह सिञाण ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कंकर पथर मेल कै नाउं सदाइओ साह ॥
विन सतिगुरु परे अंध है सूल न वूझै राह ॥ २ ॥
मेरा मेरा कर संजिओ राती अते ढेह ॥
काई साख न ऊपजी कलर वुठे मेह ॥ ३ ॥
सुण सालस इक वेनती जो करम प्रापति होइ ॥
नानक एक अराधीऐ दुख न लागै कोइ ॥ ४ ॥

अव जुवाहरी ने गुरू जी से उनका परिचय पूछा और कहा कि हमें अचंभा हो रहा है हम ने अनेक महात्मा जो षट दर्शणों के वक्ता होते हैं वह सव देखे हैं परंतु आप का भेद नहीं जाना जाता सो कृपया आप ही वतायें गुरू जी ने कहा हमारा नाम नानक निरंकारी है हम निरंकार देश के हैं। तथा हमारा भेष भी निरंकार का ही है। जुवाहरी ने कहा **कि आप ने**

निरंकार को देखा है तब गुरू जी ने मारू राग में शब्द उच्चारण किया-

राग मारू महला १ ॥

बिमल मझारि बससि निरमलु जल पद मनि जावल रे ॥
पद मनि जावल जल रस संगति संग दोष नहीं रे ॥ १ ॥
दादर तूं कबहि न जानसि रे ॥
भखसि सिबालु बखसि निरमल जल अमृत न लखसिरे ॥१॥ ॥रहाउ॥
बसु जल नित नवसत अलि अल मेर चचा गुन रे ॥
चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अन भउ-कारनि रे ॥ २ ॥
अमृत खंडु दूधि मधु संचसि तूं बन चातर रे ॥
अपना आप तूं कबहु न छोडसी पिसन प्रीति जिउरे ॥ ३ ॥
पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥
अपना आप तूं कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिऊ रे ॥ ४ ॥
इकि पाखंडी नामि न राचाहि इकि हरि हरि चरनी रे ॥
पूरब लिखिआ पावसि नानक रसना नाम जपि रे ॥ ५ ॥

यह सुन कर जुवाहरी ने कहा आप यह रुपये लेकर मुझे कृतार्थ करो। गुरू जी ने कहा यह रुपये आप ही को रखने उचित हैं, हम तो साधु हैं, रुपये आप ही को शोभा देते हैं हमें नहीं, उस ने कहा यह मेवा पकवान तो स्वीकार करो, गुरू जी स्वीकार नहीं करते थे, परंतु मर्दाना मौन धारे बैठा था, मन में कहता कि गुरू मान ले तो अच्छा है, मुझे भूख लग रही है, तब गुरू जी ने राग मारू में शब्द उच्चारण किया।

॥ राग मारू महला पहिला १ ॥

प्रीति अकवान जो भोजन करीऐ लुची लोचा पूरी ॥
मिठाइ रसना रसि कसि बोले तां मनु रहे हजूरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सुन सालस तूं भाई मेरा । समझ पवी तां होइ निबेरा ॥ १ ॥
सेवा मिलन तुमारा कहीऐ सत के बागे जोड़े ॥
खावन आइ अघाए सोई जो इन तों मन तोड़े ॥ २ ॥

फिर जुवाहरी के नौकर ने गुरू चर्णों पर प्रणाम किया तव गुरू जी उस पर वहुत प्रसन्न हुवे, तव गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! प्रसाद पा लो, मर्दाना तो यही चाहता था उस ने भोजन ले लिया तव गुरू जी के आगे हाथ जोड़ अरदास करके कहा-हे महाराज ! क्या आग्या है, गुरू जी ने कहा हमने तुमारे लिये सालस राय को यहां वुलाया है, तव मर्दाना प्रसन्न होकर खाने लगा, गुरू जी ने शव्द उच्चारण किया।

उत्तम जनम सो सालस कहिए नीच नराइण पांवों ॥
लोभ लहिरते तेई छूटे साध संगत गुणगावों ॥ ३ ॥
सुण सालस इस गोला तेरा आप नराइण माना ॥
नानक भगत संग मिल उच्चे पद ठहिराना ॥ ४ ॥

सालस ने प्रार्थना की कि आप मेरी मुक्ती करो। गुरू जी ने कहा यदि तुम अपने इसी नौकर के चर्णों पर गिरो तो भव सागर को पार करोगे, सालस ने कहा जैसे आप आग्या दें मैं उपास्थित हूं। यह कह कर सालस ने पैर पकड़ लिये, नौकर को कहा कि तुम मुझे पार करने के लिये इन को लाये हो, गुरू जी सालस राय ऊपर ही प्रसन्न हुवे, औंर एक सिरो पा भी दिया जो सालस राय ने अपने शीश पर वांध लिया, वस उस जौहरी के हृदय के पटल खुल गये, और उसे एक पवित्र शव्द भी प्राप्त हुवा

शवद ॥

सतिगुरु दाता नाम का दीनो खोल कपाट ॥
इको वणजा वणजिआ वहुड़ न आवै घाट ॥ १ ॥
सतिगुर नानक पूरा ॥ वचन का सूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
अगम निगम विखावै तां खोलै नेत्र अनंत ॥
जगत वणजारा सगल है साह एक भगवंत ॥ २ ॥
वणज हमारा सतिगुरू पूंजी हमारी नाम ॥
आठ पहर धुनि लाग रहे सोइ हमारे काम ॥ ३ ॥
सालस विनवै वेनती तुम सुनि लेहु करतार ॥

कचा रंग उतार के चाढ़ों रंगि अपार ॥ ४ ॥
राग बिलावलु शब्द गुरू नानक जी कीता-
गुरू शबद निधान है मनमुख आवा गउण ॥
लख जूनी भरमाइओ फिर पावैगा भउण ॥ १ ॥
तेरा निर्मल हीरा नाम है कोई परखे परखणहार ॥ रहाउ ॥
वेदी अंन न जाणिआ पढ़ पंडत वीचार ॥
वेड़ा हरि का नाम है जिस चढ़ उतरै पार ॥ २ ॥
अंजन पाये सभ को देखण विच विणास ॥
जिन लोइण जग देखिऐ सो लोइण परगास ॥ ३ ॥
कंचन कंचन होइआ नानक धरे अपार ॥
जंदरा खोल्हा कोठड़ी जन नानक धर्म दुआर ॥ ४ ॥

तव गुरू जी अधरके नौकर पर और सालस राय पर अपनी अपार कृपा की। फिर आप ने फरमाया कि यह चारपाई हमारी ओर से है तथा हमने ईश्वर नाम का तुमको दान दिया है हे सालस राय जब तक तुमारा जीवन है तव तक इस मंजी के तुम अधिकारी हो तथा तुमरे पीछे यह तुमारा नौकर अधिकारी होगा। असल में इस मंजी का अधिकारी तो यही तुमारा चाकर है। हम ने तुमारा कुछ पक्ष लेकर प्रथम अधिकारी तुम को नियत किया है पश्चात नौकर को। तुमारी संतान इस की अधिकारी नहीं होगी फिर तुमारी शेष आयु दो वर्ष और सात महीने है इसी लिये तुम को पहिला अधिकारी बनाया है यही उस कर्तार की इच्छा है। हे सालस! जो ईश्वरीय आज्ञा मानते हैं वही उत्तम पुरुष परमपद को प्राप्त करते हैं और उन की ही संसार में पूजा होती है चतुर जुवाहरी सच्चे लाल को रख लेते हैं और झूठे को त्याग देते हैं इसी प्रकार संत लोक उत्तम पुरुषों की पहिचान करते हैं तथा उन पर ही कृपा दृष्टि करते हैं। आयु थोड़ी का परम पुरुष विचार नहीं करते। हम सत्य कहते हैं कि तेरा आवा गमन छूट गया है। अब तू शरीर त्याग कर मुक्त हो जायगा।



॥ साखी और चली ॥

अब गुरू जी आगे को प्रस्थान करने लगे। मरदाने ने पूछा हे गुरुदेव ! अब किधर का विचार है ? गुरू जी ने कहा कि विसंभर एक टापू समुद्र में है यहां एक साधु महात्मा है उसके दर्शणों की इच्छा है।

आगे समुद्र आ गया मर्दाने ने कहा, हे सतगुरु ! धरती समाप्त है। अब जल में चला नहीं जा सकता, गुरू जी ने कहा जहां खड़े हो वहां से चुप चाप चलते रहो यह धरती नहीं है यह एक विशाल मछली है जो पैंतीस कोस लंबी है और पांच कोस चौड़ी है मर्दाने के मन में शंका तो हुई परंतु चुप रहा तीन दिन तक चलते रहे तब मछली का एक चानां देखा। फिर मछली ने अपना मुख खोला तब मर्दाना भयभीत हो गया। बाले के पूछने पर मर्दाने ने डरते २ कहा यह मच्छी हमें खा जायगी। बाले ने कुछ ज़ोर से कहा कि हे मर्दाना ! तू अभी तक संशय आत्मा ही रहा है फिर मछली ने जुगाली की तथा उस के मुख से अनेक प्रकार की खाद्य वस्तु निकलीं। मर्दाना कुछ प्रसन्न हुवा। उस मछली को गुरू जी ने कहा—भाई तू कौन है? उसने उत्तर दिया मैं मत्स्य (मच्छ) हूँ। गुरू जी बोले, भाई ! जो कुछ तू हैं वही बता। मच्छ ने कहा कि आप नानक निरंकारी हो, आप विदेह मुक्त हो तथा मैं आप का सेवक हूं फिर अपनी कथा सुनाने लगा। हे गुरुदेव ! मैं आप का शिश्य था। एक समय आप ने मुझे एक काम की आज्ञा दी। मैंने कुछ कोताही की, आप ने फरमाया कि जब तुमें कोई काम कहा जाय तब तू मछली की भांति तड़पने लग जाता है बस उसी शब्द से मुझे मछली योनि में आना पड़ा। अब आप का दर्शण हो गया है अब मुझे मोक्ष की इच्छा है। गुरू जी ने कहा कि भाई कल को तेरी यह देह छूट

जायगी, मच्छ ने प्रार्थना की कि मेरा यह शरीर छूटने तक आप मेरे निकट रहने की कृपा करो। गुरू जी ने बाले से कहा कि बाला! जैसे कहो तैसा किया जाय तब मर्दाना कुछ बाले के साथ वाद विवाद करने लगा। अंत में गुरू जी ने मर्दाने को कहा भाई मर्दाना क्या बात है। मर्दाने ने कहा हे सतगुरुदेव! हमें आप के साथ रहते कुछ समय हो गया है परंतु आप की पहिचान नहीं कर सका, भूला ही रहा। सो हे गुरुदेव! आप मेरी भूल को क्षमा कर दो। गुरू जी ने कहा मर्दाना! हमने अपनी ही इच्छा से आप को अपने साथ रखा है तथा तुमारी प्रत्येक बात मानी है तुम तो मेरे प्राण हो, मन से दुई निकाल दो।

दूसरे दिन लग पग डेढ़ प्रहरी बीतने पर मच्छ ने अपने प्राण त्यागे। गुरू जी ने फरमाया–हे मच्छ! तुम चलो, हम भी तुम को आ कर मिलेंगे ॥ २८ ॥

—०—

॥ साखी और चली ॥

अब गुरू जी आगे यात्रा करने लगे। एक पहाड़ी पर एक नगर देख कर मर्दाना बोला। गुरू जी! यह कोई नगर है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! तुमें तो नगरों का विशेष ध्यान रहता है। मर्दाने ने कहा, आप को तो हम पर दया नहीं आती। हम अनेक दिनों के भूखे प्यासे चले आ रहे हैं। गुरू जी ने बाले की ओर देख कर कुछ पूछने का संकल्प किया। बाला ततक्षण कहने लगा। हे गुरुदेव! यह मर्दाना स्वभाव ही से ऐसा है। मरदाने ने कहा, हे बाला! तूं तो ऐसी बात क्यों न करें। गुरू जी की तेरे पर कृपा है तथा हम लोक आज तक कोरे ही चले आ रहे हैं।

गुरू जी कहने लगे। हे मर्दाना! यह शहर ऐसा है, जहां पुरुष तेल के कड़ाहा में तले जाते हैं, मर्दाने ने कहा–हमें इसे देखने की कोई इच्छा नहीं है, गुरू जी ने कहा–कि इसे तो अवश्य ही देखना होगा, मर्दाने ने कहा हे महाराज! मैनें कुछ मनुष्यों से कुछ बातें सुनी हैं, जब हम तीनों नगर के

निकट आये थे, तब वे लोग बातें करते थे, कि इस नगर का नाम देव गंधार है, यहां का राजा देवलूत है, १७ सत्रह लक्ष देव इस के अनुचर हैं देवलूत राजा को पता हो गया है, कि तीन मनुष्य हमारे इस नगर में आने वाले हैं, तथा वे तीनों हमारी खुराक हैं, यह बातें मैंनें सुनी हैं।

उसी समय वहां देव आ गये, जिसे देख कर मर्दाना अत्यंत भयभीत हो गया, मर्दाने ने कहा हे गुरू जी! देव आ गये हैं, अब क्या किया जाय? गुरू जी ने मुस्करा कर कहा हे मर्दाना! उस वाहिगुरू के रंग देखते जाओ, डरो नहीं, जब वे देव इन तीनों के निकट आये, तब उसी समय नेत्रों से अंधे हो गये, कौतुक यह था कि उन को और तो सभी वस्तु नज़र आती थी, परंतु गुरू जी-बाला-और मर्दाना नज़र नहीं आते थे, देवों ने अपने राजा को कहा कि हमें तो वहां कुछ नज़र नहीं आता तब दोबारा राजा ने कहा कि जाओ तथा तीनों पुरुषों को ले आओ, जब फिर आये तो फिर अंधे हो गये, इस प्रकार उस राजा ने सात बार बदल बदल कर दूत भेजे, परंतु सभी का वही हाल हुवा, तब वज़ीर ने कहा हे श्रीमान्! मुझे यह मालूम होता है कि वे तीनों नवागत कोई असाधारण पुरुष हैं, वज़ीर ने कहा कि मैं उन की सेवा के लिये जाता हूँ। यदि मैं अंधा न हुवा तो आप ने उन का सत्कार तथा सेवा अवश्य करनी, उस समय वज़ीर भी अपना हृदय शुद्ध करके गुरू जी के निकट आया, और चर्णों पर निमस्कार करके कहने लगा, महाराज आप कौन हैं, अपना परिचय देने की कृपा करें, गुरू जी ने कहा हम अमर पुरी से आ रहे हैं। वज़ीर ने कहा कि अमर पुरी किस दिशा में है,गुरू जी ने कहा-भाई हमारी अमर पुरी दिशा की ओर नहीं है, वहां दिशा का कोई प्रश्न ही नहीं, तथा हमारा नाम नानक निरंकारी है, तथा हमारी जाति भी निरंकार है, उस ने कहा आप नगर में चलें। गुरू जी ने कहा-जहां फकीर बैठ जांय वहीं नगर होता है, वज़ीर ने जाकर राजा को कहा कि आप के नगर में महान पुरुष आया है राजे के मन में कपट था, कुछ सेना अफसर भी साथ ले लिये, जब

जी के निकट पहुंचे तो वज़ीर के सिवाय सभी नेत्र हीन हो गये। तब वज़ीर ने कहा हे राजा क्या हाल है ? मैंनें कहा था कि यह कोई कलावान महान पुरुष है राजा ने कहा मेरे मन में कपट था, जिस का फल मुझे मिला है, तब वज़ीर ने कहा कि अब क्या इच्छा है, राजे ने उत्तर दिया कि अब तो मन में उन के चर्ण पड़कने की इच्छा है, क्यों कि मैंनें परीक्षा ले ली है, तब वज़ीर ने हाथ जोड़ कर कहा हे निरंकारी ! आप हमारे राजा को भी दर्शण दो, बस उस पर गुरू जी की कृपा हो गई, तथा राजा ने गुरू के चर्ण गहे, गुरू जी ने कहा हे राजन ! तू अपना यह बुरा कर्म छोड़ दे, तब राजा ने कहा हे महाराज मैं समझ रहा हूँ कि आप उद्धार करने ही इधर आये हैं। गुरू जी ने कहा कि हम ने कहा था कि हम आयेंगे, सो इकरार पूर्ण हो गया। राजा ने गुरू जी की अपार स्तुति और सेवा कर के अपने मंदिर में ले आया। तब राजा के कर्म चारियों ने राजा की आग्या से उत्तम से उत्तम मेवे लाकर गुरू जी के आगे रख दिये।

गुरू जी ने कहा हे राजन ! पुरुषों को मार कर खाना बहुत ही बुरा है, इसे त्याग दो। राजा ने कहा–आप की कृपा होगी तो सब ठीक हो जायगा, गुरू जी ने कहा कि तुम राजा सुधर सैन कों जानते हो ? उस ने कहा वह तो मेरी खुराक है। तब गुरू जी ने कहा–हे राजन ! यदि उसे तुम हमारे समान जानों तब तुमारा भोजन स्वीकार करेंगे। राजा ने कहा यही होगा। तथा आप की आग्या सदैव मानूंगा। गुरू जी ने फिर उस का मेवा प्रेम के साथ खाया। तथा बाला और मरदाना ने भी पेट भर कर खाया। फिर भोजन तैयार हुवा और उनों ने उस का भी भोग लगाया। भोजन आगे था, और गुरू जी समाधि रूप हो गये जब उत्थान अवस्था हुई तो वह भोजन प्रसाद के रूप में राजा वज़ीर आदिक को दिया गया। उस प्रसाद के खाने से राजा और वज़ीर के हृदय पटल खुल गये। और एक प्रकार की मस्ती छा गई गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह ईश्वर के रंग हैं देखते जाओ। चार घड़ी के पश्चात उन की अवस्था ठीक हुई। तब

कहने लगे कि हम तो कंकर पत्थर से भी निकंमे हैं, तव गुरू जी ने कहा कि आज से तुमें महा पुरुष किया जाता है, और वज़ीर भी तुमारे साथ रहेगा। तुम सदैव उस ईश्वर की उपासना किया करो। और किसी की बुराई न करो, इस सतसंग से सभी पापी उत्तम मार्ग पर चलने लगे। और गुरू जी के शिश्य हो गये, नौं महीने गुरू जी वहां रहे। फिर वहां से प्रस्थान किया।

---o---

॥ साखी और चली ॥

फिर गुरू जी वहां से परस राम के नगर को चले मार्ग में तीन महीने लग गये। वहां का राजा तीक्षण सैन था। वह वन मानसों का राजा था, और स्वयं भी वन मानस था। जव वहां पहुंचे तो वन मानसों को देख कर मर्दाने ने कहा हे गुरू जी! मुझे इन वन मानसों से भय हो रहा है। गुरू जी ने पूछा हे मर्दाना क्या हाल है? उसने कहा हे महाराज! यह क्या वलाई हैं? गुरू जी ने कहा यह वन मानस हैं। मरदाने ने कहा और तो भाग गये हैं। परंतु यह एक अभी तक खड़ा है। जव मैंने इस से पूछा कि तुम कौन हो तव इस ने एक चीख ही मारी है। वाले ने पूछा महाराज यह चीख क्यों मारते हैं गुरू जी ने कहा हे वाला! इन की यही भाषा है। वाले ने कहा हे महाराज! वह जो चीख मार कर भाग गया था। वह देखिये कुछ मेवे ले आया है। और आगे रख आप पीछे दूर हट गया है। गुरू जी ने कहा हे वाला! जाओ मेवा उठा लाओ। मैंने कहा महाराज! आप अपवित्र वस्तु तो स्वीकार नहीं करते। गुरू जी ने कहा-भाई यह तो परम पवित्र हैं। यह वन मानस हैं और शाक पात खाते हैं तथा पुरुषों से भय मानते हैं। इसी प्रकार गुरू जी एक मास उसी वन में वन मानसों से सेवा करवाते रहे। फिर आगे प्रस्थान किया।



॥ साखी और चली ॥

चलते चलते संसार के स्वामी गुरू नानक समुद्र तट पर पहुंचे। आगे समुद्र की अपार तरंगें देख कर मर्दाने ने कहा कि आप आगे कहां जाओगे, क्योंकि भारी समुद्र आगे है। गुरू जी ने कहा–मर्दाना तुम चुप चाप चले आओ। ईश्वर के रंग देखो और चले आओ। गुरू जी ने कहा–जिस के मुख में आगे लिखा परम पवित्र शब्द होगा वह स्वयं पार हो जायेगा और जो प्रेम से सुनेगा। वह भी पार हो जायगा। वह शब्द इस प्रकार हैं–

॥ परम पवित्र शब्द ॥

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि
जपु ॥
आदि सचु जुगादि सचु ॥ हैभी सचु नानक
होसी भी सचु ॥

इसी परम पवित्र शब्द की ओर ध्यान देते हुवे हे मर्दाना तुम हमारे पीछे पीछे चले आओ। बस फिर क्या था वे इस प्रकार जल पर चलने लगे जैसे पृथिवी पर चला जाता है, मर्दाना ने कहा हे महाराज! आप में और उस अल्लाह में तो अब कोई भेद नहीं नज़र आता। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! हमारा कथन मानकर चुप चाप चले आओ। मर्दाने ने कहा–अब हमें किसी का भय नहीं।

गुरू जी ने कहा हे मरदाना! आगे एक भारी विपत्ति आने वाली है मरदाने ने कहा–तब आगे जाने की क्या आवश्यकता है। गुरू जी ने कहा पीछे लौटने से भी विपत्ति टलेगी नहीं। पांच दिन रात चलते रहे तब आगे से एक लंबे लंबे दांतों वाली एक महान भयानक मूर्ति आती देखी। तब गुरू जी ने एक डंडा पड़ा देख कर कहा इसे उठा लाओ। डंडा गुरू जी को मरदाने ने ला दिया गुरू जी ने डंडा पकड़ा तो यह भयानक मूर्ति गुरू

जी के साहमणे भागती हुई आने लगी। गुरू जी ने उस के मुख डंडा दे दिया। बस वह चीखें मारती हुई भाग खड़ी हुई फिर उसी स्थान पर नारद जी आ गये। गुरू जी ने कहा हे बाला ! तूं कल की भांति होश्यार रहो तथा मैं नारद जी से कुछ खेल खेलूंगा। नारद ने कहा, आप इस भयानक प्रतिमा को क्या कहना चाहते हो ? यह तो सभी कुछ परमात्मा की आज्ञा से कर रही है। गुरू जी ने कहा, हे नारद ! इस ने साधारण संसारीयों जैसा वर्ताव हम पर भी किया है इस को भले बुरे की भी पहिचान नहीं। नारद ने कहा कि इस बला को बुला कर पूछना चाहिये गुरू जी ने कहा हे नारद तुम ही पूछो तब नारद ने उस बला को बुला कर कहा हे कलमाता ! तुम को किसी साधु पर लपकने की आज्ञा नहीं उस ने कहा हे नारद ! यह स्वयं तो छूट सकता है परंतु यह साधारण जीवों को भी छुड़ा रहा है यह कहता है (नानक देव जी की ओर इशारा करके) कि जो भी मेरा शिश्य होगा सभी छूट जायगा और तेरे दांत तोड़ेगा और तेरे अर्थात मेरे बाल नोचेगा तब गुरू जी ने कहा हे कल ! तू किस की आज्ञा से भ्रमण कर रही है उस ने कहा मैं निरंकार की आज्ञा से भ्रमण करती हूं। गुरू जी ने कहा हमें किस ने भेजा है। उसने कहा कि आप भी उसी के भेजे हुवे संसार में आये हो। गुरू जी ने कहा कि तुमे इस स्थान पर आना उचित नहीं था। तेरे लिये और संसार है। जो पुरुष हमारे उपदेश को मानेगा उस पर तेरा वार नहीं चलेगा। नारद जी ने कहा हे कल माता यह नानक निरंकार अत्यंत शक्ति का स्वामी है। तुझे भी इस का सम्मान करना उचित है॥ ३१ ॥



॥ साखी और चली ॥

श्री गुरू नानक देव और मर्दाना तथा बाला जी आगे चले पंद्रह दिन और पंद्रह रात्रि चलते ही गये। कुछ भी खान पान भी न किया। आगे समुद्र के टापू में बिसहर देश में पहुँचे। उस देश का राजा सुंदर सैण राज करता था। नगर के बाहर गुरू जी ने डेरा लगा दिया तीन चार

दिन के पश्चात मर्दाने ने कहा हे गुरुदेव ! यदि आज्ञा हो तो मैं नगर में जाऊं क्योंकि मुझे अत्यंत क्षुधा लग रही है। नगर में कुछ खाने को प्राप्त होगा। गुरू जी ने बाला की ओर देखा तब बाला जी ने कहा महाराज इस की जाति में भूख प्रारंभ से ही अधिक होती है। गुरू जी ने हंस कर कहा हे मर्दाना ! तू किधर को जायगा ? मरदाने ने कहा जिधर आज्ञा होगी मैं उधर ही जाने को तैयार हूँ। गुरू जी ने कहा हे मरदाना ! एक झंडा बाढी बढ़ई है तू उस के पास जाय तो अच्छा है। मरदाने ने कहा-हे गुरुदेव ! मैं उसे जानता नहीं। आप उस का पता दें। गुरू जी ने कहा उस के पिता का नाम पाखर है। बस यह पूछ कर पता कर लेना। मरदाना नगर में आ कर पूछने लगा कि पाखर का पुत्र झंडा कहां रहता है? जब एक कोस चल कर भी पता न चला। तब एक पुरुष मिला। उस ने कहा, भाई ! तुम कौन हो ? और नाम ग्राम आदिक का पूरा पूरा परिचय दो। मर्दाने ने कहा-भाई तू मुझे बता। जब वह मुझे मिलेगा, तब वह स्वयं जो मुझ से पूछना होगा पूछ लेगा। उस ने कहा-पहिले तुम अपना परिचय दो तब बता सकता हूँ। मर्दाने ने कहा कि इस नगर की उलटी मर्यादा है, उसने कहा-भाई ! नाराज़ होने की आवश्यकता नह, यहां के राजा की यही आज्ञा है कि-जब कोई विदेशी आकर पता पूछे तो पहिले उस नवागत का परिचय पूछो। तब मर्दाने ने कहा मेरा नाम मर्दाना तथा जाति का मिरासी हूँ। तथा मैं पंजाब प्रांत का रहने वाला हूँ। उसी पंजाब में एक नगर जिस का नाम तलवंडी राय बुलार है वही मेरा जन्म स्थान है। उस ने कहा हे मरदाना ! वहां एक नानक बेदी उत्पन्न हुवा है। क्या तुम जानते हो ? मर्दाने ने कहा, भाई मैं उसी का मिरासी सेवक हूं। अब तू अपना परिचय दे। उस ने कहा भाई वह तो हमारा पुराना मित्र है। मर्दाने ने कहा क्या तुम उस को पहिचानते हो ? उस ने कहा यदि वह मेरे सन्मुख हो तो पहिचान भी सकता हूं मर्दाने ने कहा, वह तो नगर के बाहर आसन लगाए बैठे हैं। उस ने गुरू नानक के दर्शणों को कहा तो मरदाने ने कहा,

भाई श्री नानक मुझ पर कुपित ही न हों, तू पहिले मुझे झंडे का पता बता, पीछे मैं तुम को गुरू जी के निकट ले चलूंगा, वह मर्दाने को झंडे के घर में ले गया।

मारग में मर्दाने ने कहा हे मित्र! मैनें तो अपना परिचय दे दिया, परंतु तुमने आपना परिचय नहीं दिया, उस ने कहा भाई जी ! मुझे गुरू नानक भली प्रकार जानता है, मर्दाने ने कहा- मैं भी तो जानना चाहता हूं! उस ने कहा-मेरा नाम इंद्र सैन है, तथा यहा का जो राजा है उस की मैं बहिन का पुत्र हूं। इतने में झंडे का घर आ गया, वह एक चार पाई बुन रहा था। उस ने मरदाने को देख कर उस का आदर सतकार किया, फिर बैठने को कहा-फिर लाने वाले से पूछा कि यह साधु कौन है, उस ने कहा कि यह तुमारा पता पूछते आ रहा था। तथा मैं इसे आप के निकट ले आया हूँ उसने मरदाने से परिचय पूछा-तब मरदाने ने कहा कि मेरा नाम मरदाना है, और अपना परिचय दिया, उस ने कहा अच्छा अब यह बताओ कि आप का मेरे साथ क्या काम है, तब मरदाने ने कहा कि मुझे आप से ज़रूरी काम है, मुझे गुरू नानक ने आप के पास भेजा है, उस ने कहा मैं तो नानक देव जी को नहीं जानता, तब मर्दाना ने कहा- भाई वे तो आप को जानते हैं। उनों ने मुझे आप के पास भेजा है, कृपया आप मेरे साथ चलें। उस नें कहा यह चार पाई बुन लूं तो चलूंगा, उतावला होना ठीक नहीं अंत तो गत्वा काम खतम करके उस ने सोचा कि नानक देव जी के लिये क्या ले जाऊं ? फिर उस ने पूछा हे मर्दाना! नानक देव जी कैसे हैं यह तो बता दो, में कुछ भेंट ले जाना चाहता हूं उस ने (मर्दाने ने) श्री गुरू जी का जन्म स्थान आदिक बताया तब झंडे ने सोचा कुछ भोजन बनवा कर ले जाना उचित है, जब मर्दाना ने शीघ्र चलने का आग्रह किया। तब झंडे ने कहा भाई! उतावला पन ठीक नहीं होता। गुरू नानक एक साधू है, साधू के निकट कुछ भेंट ले कर ही जाना उचित होता है।

अब मर्दाने ने सोचा कि गुरू जी तो केवल पवन आहार ही करते हैं, परंतु मैं और बाला तो भूख से व्याकुल हो रहे हैं दूसरे मैं तो नगर में पेट के लिये ही आया हूँ। उस ने झंडे से कहा भाई ! मैं उतावला इस लिये हो रहा हूँ कि नगर के बाहर दो साधु भूखे प्यासे बैठे हुवे हैं। इस लिये जो करना है वह शीघ्र ही करो।

झंडा उस नगर के राजा का बढ़ई भी था, वह सुधर सैण के बाग में गया। घर में कह गया कि तुम बढल कवल फल जो मैं देकर चला हूँ। उस का शाक बनाओ। और साथ रोटियें बना लो, और फूल की भाजी तैयार कर लो। स्वयं बाग से सुंदर२ मेवे लेकर शिर पर रख कर मर्दाने को कहा चलो तुमारे गुरू के दर्शण करते हैं। अब झंडे को लिये हुवे मर्दाना गुरू ज़ी के निकट आ गया। तब गुरू जी ने कहा आ भाई झंडा ! भोजन वगैरा देख कर कहा हे भाई झंडा यह सामान क्या लेकर आये हो ? झंडे ने कहा-आप के लिये भोजन लाया हूं। गुरू जी ने कहा-हे झंडा ! आप हम को जानते हैं ? तब उसने कहा हे महाराज ! यदि मैं नहीं जानता तो आप तो जानते हैं, आप ने स्मर्ण किया तथा हम उपस्थित हो गये हैं, गुरू जी ने कहा कि यह भोजन किस ने भेजा है। उस ने उत्तर दिया कि यह भोजन परमात्मा ने भेजा है। गुरू जी ने कहा कि-तुम परमात्मा को जानते हो। झंडे ने कहा-महाराज ! उस परमात्मा को कौन नहीं जानता। मैं तो फ़िर एक पुरुष हूँ। परमात्मा को तो प्राणी मात्र सभी जानते हैं। गुरू जी ने मुसकरा कर पूछा हे भाई झंडा तूं परमात्मा को कब से जानता है ? झंडे ने कहा आप पहिले भोजन पा लो-क्योंकि आप बहुत दिनों से भूखे हो। बाकी बातें पीछे कर ली जायेंगी। मर्दाने ने कहा हां ! जी यह सत्य ही कहता है। पहिले भोजन छकना चाहीये। तथा पीछे दूसरे उपदेश काम आ सकते हैं, गुरू जी हँसने लगे, और बाले को कहा बाला ! इस में तुमारी सम्मती क्या है। बाले ने कहा हे महाराज ! यह जो मर्दाना कहता है सो सत्य है। क्योंकि इस को भूख बड़े ज़ोर से लग रही मालूम

होती है।

तब गुरू जी ने कहा हे झंडा यहां तुमारा सब से अधिक मित्र और हितैषि कौन है। उस ने उत्तर दिया कि यहां राजा सुधर सैन की बहिन का एक पुत्र है। वह बहुत ही भला पुरुष है। बस उसी के साथ मेरा सभ से अधिक प्रेम चला आ रहा है। गुरू जी ने कहा मर्दाना ! जाओ उसे भी बुला लाओ। मर्दाना गया और उसे भी अपने साथ ले आया। उस का नाम इंद्रसैन था। गुरू जी ने आज्ञा दी कि तुम इस के पांच भाग करो। तथा उस में से एक भाग मर्दाने का निकाल लो। झंडे ने कहा महाराज ! आप तीन पुरुष हैं यह पांच भाग करने का रहस्य मेरी समझ में नहीं आता। गुरू जी ने कहा–तीन तो हम हैं और चौथे तुम तथा पांचवें आप के मित्र हैं। जिन का नाम इंद्रसैन है। सभ के एकत्र हो जाने पर भोजन बांट कर दिया जायगा। सब से पहिले मर्दाने को भाग दिया गया, उस ने कहा हे महाराज मैं सब से पहिले खाने को तैयार नहीं हूँ। यदि आप पहिले खायें, तो पीछे मैं खा सकता हूं। गुरू जी ने कहा–हे मरदाना तुम भूखे हो, और हमारा विशेष ध्यान न किया करो, हम कहते हैं कि निर्भय हो कर खाओ ! तब मर्दाना खाने लगा, झंडे ने कहा हे महाराज ! अब आप भी खायें तो आप की बहुत अनुकंपा है। गुरू जी ने कहा हे झंडा ! तुम कहते हो कि यदि मैं (नानक) भोजन पाऊं तो तुमारी मनो कामना पूर्ण हो और प्रसन्न हो, परंतु मेरा विचार है कि तुम और इंद्र सेन प्रसाद पा ले तो तुमारे मन के कपाट खुल जायें तो मेरी प्रसन्नता पूर्ण हो जाय। यह प्रवचन सुन कर झंडे को विचार हुवा कि नानक देव एक पहुंचे हुवे साधु हैं तथा हमारी उत्तम प्रारब्ध से हमें दर्शण हो गये हैं, हम ने इन की कीर्ति और ख्याति संसार में अनंत सुनी है, इंद्र सेन ने कहा कि हे झंडा मैं इन को पहिले ही जानता हूँ। झंडे ने हैरान होकर पूछा वे तो कहता, कि हम यहां से लग भग पंद्रह सौ कोस की दूरी के निवासी हैं, और इस से पूर्व वे यहां कभी नहीं आये। और आप तो

कहते हो वह हमारा पहिले का जाना और पहिचाना हुवा है। यह तुम ने झूठ बोला है। इंद्र सेन ने कहा झंडा ! यह तुमे उस समय पता चलेगा। जब हम इकठे होंगे। तथा हम कल को इकठे हो जांएगे अब तुम जाओ, झंडे ने कहा वहा आप का भोजन धरोहर के रूप में पड़ा हुवा है। वे तो खाते नहीं और आप कहते हो हम कल को मिलेंगे। यह बात बनती नहीं है। जब छः घड़ी रात्री व्यतीत हो गई तब इंद्रसैन झंडा जी का कथन स्वीकार करके चल पड़े। इंद्र सैन ने पूछा कि नानक स्वभाव का कैसा है तथा उनके शब्द किस श्रेणी के हैं। झंडे ने कहा-स्वभाव तो बहुत ही उत्तम है और उनके बोल भी बहुत पवित्र हैं, अब दोनों ने गुरू जी के निकट आ कर सत्य करतार की ध्वनि लगाई। गुरू जी ने हंस कर कहा सत्य करतार भाई पुराने मित्र हो, झंडे ने इंद्र सेन से पूछा यह साधु क्या कहता है, इंद्रसेन ने मचल मार कर कहा जी मैं तो कुछ भी नहीं जानता, मर्दाना ने कहा आप तो कहते थे कि नानक हमारा पुरातन मित्र है, और अब कहते हो कि मैं जानता नहीं। उस ने कहा कि यदि कोई निशानी (चिन्ह) बताएं। तब मानूं यह वही हैं। गुरू जी ने कहा-हे इंद्रसेन इस झंडे को तो कुछ खबर नहीं, अपितु तुम तो जानते ही हो उस ने कहा-मैं तो नहीं जानता यदि कुछ बताओ तो मैं जान सकता हूँ गुरू जी ने कहा-हे इंद्रसेन वह दिन याद करो जब तुम राजा जनक के सेवक थे, और तभी त्रेता युग में राजा जनक ने हंसनी की बाबत स्वांग उठाया था, और कहा कि हंसनी मेरी है। और आप को पूछा कि हंसनी किस की है, तुम को इस लिये भय दिखाया है जो तुम ने मिथ्या साक्षी दी, तुम राजा के अधिक निकट वरती थे। तुम ने पूर्ण गुरू रूप ही जाना। हमें कहा कि-भय है, और राजा जनक ने तो छल किया है, राजा जनक ने हंसनी क्या करनी है, तुम को परमात्मा ने भुलाया तब तुम ने झूठी साक्षी दी, बताओ हम क्या करें, तब राजे जनक ने अपने मुख से कहा कि तुमारा दोबारा जन्म होगा। तब तुम और यह इकठे रहते चले आये, तब

तुम ने कहा कि यहां के विछड़े कहां पर मिलेंगे। हम ने कहा तुमारा हमारा मिलाप होगा कि न होगा, उस समय तुम ने कहा हे भाई ! तुमारी भक्ति पूरण हुई। तुम से दोष तो हुवा है। एक तो तुम मूर्ती पूजा करते रहे। और फिर झूठ बोला। तुम को जनक जी रोकते रहे। कि मूर्ती पूजा न करो। तुम से पहिले जो सेवक रहा वह मच्छ बना। फिर तुम मिल कर राजा के निकट खड़े हुवे, और कहा यह क्या हुवा। हम ने तुमारा कथन माना था। और हम फिर जन्म मरन चक्र में डाले गये फिर जनक ने कहा भाई ! मैं तुम को सत्य कहा था। तुम ने मेरा कथन नहीं माना। तब मैंने कहा-परंतु मेरी सेवा का तुम को यही फल है। कि तुम को मनुष्य योनि प्राप्त होगी तब तुम ने कहा कि हम आवा गमन में रहेंगे। अथवा कभी मुक्ति भी होगी। राजा ने कहा तुमारी भक्ति पूरण है। इस लिये कलियुग में तुमारा उद्धार होगा। कलियुग में तुम को पूरण पुरुष के दर्शण होंगे। तथा उस का नाम कलयुग में नानक होगा, तथा तुमारे साथ बहुत प्राणीयों का उद्धार होगा। तथा मैं तुम को वहां मिलूंगा।

तब इंद्र सेन को कहा-सुन भाई ! कोई निशान मांगो तो और भी देने को तैयार हूं। यदि यही पर्याप्त है तो जैसे तुमारी इच्छा हो वह करो। इंद्र सेन ने कहा मेरे अहोभाग्य हैं जो मुझे दर्शण हुवे हैं। तब इंद्र सेन ने प्रणाम किया और मौन हो गया।

फिर वहां जब एक घड़ी व्यतीत हुई तो कहने लगा कि मेरा एक प्रश्न है गुरू जी ने कहा जो कुछ भी मन में है वह निःसंकोच कहो। उस ने कहा कि अब मैं आप की इच्छा सुनना चाहता हूं। गुरू जी ने कहा मेरी इच्छा यह है कि हम और तुम इकठे रहते थे और तुम ने भक्ती भी बहुत की है। इसी लिये हम तुमारे पास आये हैं। इंद्र सेन ने कहा-आप को यहां परमात्मा लाया है। तो हमारा उद्धार करके जाना होगा, यह आप का इकरार भी है, इंद्र सेन ने वाले को कहा-हे भाई ! मैं भी इन का सेवक हूँ। मैं यह भी जानता हूँ। कि आप ने मेरे ऊपर बहुत कृपा की है, परंतु इस

झंडे पर भी कृपा दृष्टी हो गुरू जी ने कहा–हे मित्र ! हम तुमारे और झंडे के लिये ही यहां आये हैं। परंतु तेरे साथ तो हमारा इकरार था, तब इंद्र सेन ने कहा कि आप इकरार के दृढ़ हो, परंतु मैं तो झंडे के लिये आग्रह कर रहा हूँ। झंडे पर जो कृपा करोगे, वह मुझ पर ही होगी गुरू जी ने कहा अच्छा हम ने तो किया हुवा इकरार पूरण करना है तब इंद्र सेन ने कहा झंडा जी ! जो कुछ गुरू नानक कहे। उसे तन मन से स्वीकार करना होगा, झंडे ने कहा कि मैं कैसे जानूं कि क्या कुछ नानक देव कहते हैं ? तब गुरू जी ने एक शब्द राग रामकली में उच्चारण किया–

॥ राग रामकली ॥

इंधन ते बैसंतरु भागै ॥ माटी को जलु दहिदिसि त्यागै ॥
ऊपरि चरण तलै आकासु ॥ घटि महि सिंधु कीओ प्रगासु ॥१॥
ऐसा संम्रिथ हरि जिओ आपि ॥ निमख न बिसरै जीअ भगतन कै ॥
आठ पहिर मन ताकिओ जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥

झंडे ने कहा हे महाराजा ! मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आई। तब गुरू जी ने अर्थ कर के सुनाया।

इस शरीर के भीतर जो अस्थियें हैं। वह लकड़ी है। जो लकड़ी जलाने के काम आती है उसे ईंदन कहा जाता है। और देह के भीतर जो जठर है। जिस आग से अन्नादिक पचते हैं उसे जठर कहा जाता है, वही अग्नि है। तथा शरीर मट्टी है। तथा माता जो जल पान करती है। उस से बालक का शरीर बढ़ता है। परमात्मा का स्मर्ण कैसा है, जो प्रकाश करने वाला है। भक्त जनों को वह परमात्मा एक क्षण भी नहीं बिसरता। हे मन तू आठों पहर उसी का स्मर्ण कर।

हे भाई झंडा ! तू परमात्मा का स्मर्ण कर इस में तेरा कुछ व्यय नहीं है। झंडे ने कहा। आप तो कहते हैं कि प्रभु स्मर्ण कर। परंतु मैं तो एक निर्धन बढ़ई हूँ। मेरा बाल बच्चा किस प्रकार निर्वाह करे। यह सुन कर श्री नानक देव जी ने दूसरी पौड़ी का उच्चारण किया–

प्रथमै माखनु पाछैं दूध ॥ मैलू कीनो साबुनु सूध ॥
भै ते निरभै डरता फिरै ॥ होंदी कऊ अण होंदी हिरै ॥२॥

झंडे ने फिर कहा हे महाराज ! मैं कुछ भी नहीं समझा। गुरू जी ने अर्थ किया-

जब बालक माता के गर्भ में होता है। तब दूध नहीं होता। और बालक गर्भ से बाहर आता है तब दूध माता का स्तनों से निकलने लगता है सो तू चिंता न कर निश्चिंत हो जा। उस परमात्मा ने पालन पोषन प्रथम उपस्थित कर रखा है। तथा जीव संसार में पीछे आता है। हे भाई ! तुझे भय किस बात का है। तू तो निर्भय है। जो किसी को अपना सहारा जानता है। और जो किसी का आश्रय अपने को मानता है। वह दोनों ही कुछ नहीं जानते। यह न होने वाली विचार है। यह जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होगा। यह सब कुछ उसी की लीला है।

झंडे ने कहा-हे महाराज ! जो कुछ आप फरमा रहे हो यह गुप्त रहस्य की बातें हैं जिसे मेरे जैसा अल्पज्ञ जान ही नहीं सकता, फिर गुरू जी ने तीसरी पौड़ी उच्चारण की-

देही गुपत बिदेही दीसै ॥ सगले साजि करत जगदीसै ॥
संत सभा मिलि कर बखिआण ॥ सिम्रित सासत्र वेद पुराण ॥३॥

झंडे ने फिर कहा आप अर्थ कहो-तब गुरू जी ने इस का अर्थ कहा-

इस देही के भीतर सुक्ष्म देही है, वह गुप्त है; तथा यह प्रत्यक्ष है, उसी सुक्ष्म देही के साथ यह जाता है, और प्रत्यक्ष देह यहां रहती है, वह देह इस को नज़र नहीं आती। यह सभी लीला परमात्मा की रची हुई है, इस पर विचार साधु पुरुषों में बैठ कर करना उचित है, तथा वेद शास्त्रों में करे। परंतु साधु पुरुषों द्वारा सुगम प्राप्त है ॥३॥

झंडे ने कहा हे महाराज ! वह तो नज़र नहीं आता। और यह तो नज़र आ रहा है। फिर गुरू जी ने अंतिम पौड़ी पढ़ी।

द्रिष्ट मान को कहे अद्रिष्ट ॥ अद्रिष्ट वेख भूली सब स्रिष्ट ॥

ब्रहम वीचार विचारे कोइ ॥ नानक तां की परम गति होइ ॥४॥

झंडे के कहने पर गुरू जी अर्थ करते हैं-जो कुछ दृष्टि गोचर हो रहा है। वह सभी अदृष्टी है। वह नज़र आ आ कर छुप जाता है। एक क्षण में अनेकों स्वरूप धारण करता है। जो प्रत्यक्ष देखा जाता है। उसे संसार अदृष्ट कहता है। तथा जो प्रत्यक्ष चले जाते हैं उने दृष्टिमान मान रखा है। इस ब्रह्म विचार करने वाले की उत्तम गति होती है ॥४॥

यह सुनकर झंडा गुरू जी के चर्णों में गिर कर कहने लगा-क्षमा क्षमा मैने बहुत व्यर्थ बातें की हैं। आप मुझे क्षमा कर दो। तब इंद्सैन ने कहा-भाई झंडा उठो ! कोई भय नहीं। सत गुरू जी तेरे लिये ही यहां पधारे हैं।

अब गुरू जी ने कहा भाई झंडा प्रसाद ले आओ। रात अभी अढ़ाई पहर व्यतीत हुई थी। जब झंडा भोजन ले आया। जब गुरू नानक प्रसाद कर रहे थे। और आधा किया था तब गुरू जी ने कहा-अच्छा यह प्रसाद करो। तब इंद्सैन ने कहा हे झंडा ! प्रसाद उठा ले। जब झंडे ने वह भोजन पाया तो झंडे के हृदय पटल खुल गये। झंडे को कुछ भी इस संसार की सुधीन रही। इंद्रसैन ने झंडे को विदेह मुक्त हुवे देखा। इंद्रसैन ने कहा यह आप ने क्या किया है। तब गुरू जी ने कहा-हमें वह ईश्वर इसी लिये यहां लाया है। इंद्रसैन ने कहा हे महाराज आप ने करना तो कुछ और ही था। तथा कर कुछ और ही दिया है। गुरू जी ने कहा इंद्रसैन ! तुम क्या चाहते हो ? उस ने कहा आप ने इसे मंजी पर बैठाना है। परंतु यह इस प्रकार मंजी पर कैसे बैठेगा गुरू जी ने कहा-रात्री कितनी शेष है ? इंद्सैन ने कहा-केवल एक पहर और रात्री है। गुरू जी ने कहा-स्नान के लिये जल ले आओ। तथा झंडे को भी स्नान करवाओ।

फिर गुरू जी ने स्वयं स्नान किया, और झंडे को भी सनान करवाया। तब उस की उत्थान अवस्था हुई, उस ने गुरू चर्ण स्पर्श किये, गुरू जी ने कहा-हमने तुमें मंजी पर बैठाना है, फिर गुरू जी ने उसे मंजी दी, राजा

सुधर सैन को यह सूचना मिली, कि एक तुमारे नगर में तपीश्वर आया हुवा है उस ने भंडे तरखान को मंजी बख्शी है, राजा ने कहा-उस तपीश्वर को मेरे पास ले आओ, जब हम पांचों ही जंगल में बैठे थे तब सिपाही ने कहा नानक तपीश्वर कौन है। उसे राजा जी बुला रहे हैं। तब इंद्रसैन ने सिपाही को कहा तुम चलो मैं राजा को सभी कुछ कह सुन लूंगा। गुरू जी ने कहा हे इंद्रसैन तुम बैठो। इंद्रसैन ने कहा हे महाराज! राजा तो आप को पहिचानता नहीं है। तथा मेरा वह मातुल है मैं उस से आप के लिये जो उचित होगा। वह कह कर हाजर होता हूं।

तब इंद्रसैन ने राजा के पास जाकर प्रणाम किया। तब राजा सुधर सैन ने कहा-हे बेटा! जो कुछ कहना चाहते हो कहो। इंद्सैन ने गुरू जी के निमंत्रण बारे पूछा। राजा ने कहा, हां मैं उसे बुलाने के लिये सिपाही भेजा था। क्योंकि मैंने सुना है कि उस तपीश्वर ने भंडे तरखाण को पूरण किया है। मैंने उस तपी को दर्शणों के लिये बुलाया है। इंद्सैन ने कहा हे राजन! देखने और सुनने में बहुत अंतर होता है। एक देखना अच्छा है, और देखना बुरा भी होता है। राजा ने कहा देखना अच्छा कौन होता है इंद्सैन ने कहा-वह तो पूरण साधु है। उस में और ईश्वर में कोई अंतर नहीं है। वह लोभ लालच से दूर है। तथा तुझे कुछ न कुछ लालच है। राजा ने कहा-मैं तो साधु जान कर बुलाया है। इंद्सैन ने कहा-कि किसी महान पुरुष को ऐसे नहीं बुलाया जाता। आप को योग्य है कि श्रद्धा और प्रेम से आप उनके दर्शणों को उनके निकट जाओ। राजा ने इंद्सैण का कथन मान लिया। तब राजा सुधर सैन अच्छे २ भोजन लेकर गुरू जी के सनमुख आया। और फलादिक भेंट करके अपना शिर प्रणाम करने के लिये गुरू जी के चर्णों पर झुका दिया। तब इंद्रसैन ने कहा-हे गुरू देव! यह राजा भाग्यवान है। आप इस पर कृपा करो। गुरू जी ने राजा की पीठ पर थापना दी और राग विलावल में एक शब्द उच्चारण किया-

राग बिलावल महला १ ॥

एको राज दिया सुधर सैन ॥ अंजन गिआन पाइआ जिहि लैन ॥
मिटे अंधिआरा गए बिकारा ॥ ऐसा साहिब मीत हमारा ॥ १ ॥
सुधर सैण यह बात हमारी ॥ एको राज दिया छत्र धारी ॥१॥रहाउ ॥
अठारां राजे तुमारी रयति कीनें ॥ सभ से वखरे प्रभ सो मन भीने ॥
ऐसी प्रभ जी कृपा धारी ॥ जद गुर मति उपजी रिदे विचारी ॥२॥
सऊ टापू का राज तुमारा ॥ तीन दीप तुम चरन पुजारा ॥
ब्रहमा बिशन महेश ते ऊचे ॥ सुधर सैण तुम निर्मल सूचे ॥३॥
इंद्र सैन यह संग तुमारा ॥ करण कारण आपे करतारा ॥
कहु नानक जिस आप दिखाला ॥
तिस सरब सूख सभ मिटे जंजाला ॥ ४ ॥

श्री गुरू नानक देव जी ने सुधर सेन को शत टापू का राजा कर दिया। निष कंटक राज्य दे दिया। और अठारां राजाओं का महाराजा नियत कर दिया, वह तीन दीप का राज्य करने लगा, इस राज्य के अतिरिक्त वह महा पुरुष हो गया, गुरू जी ने कहा हे राजन ! तुम को झंडे की बराबरी करनी योग्य नहीं। कहीं राज्या मद में आ कर झंडे का अपमान न करना, तब राजा ने हाथ बांध कर कहा हे महाराज यदि आग्या हो तो मैं राज्य भी झंडे को देने के लिये उपस्थित हूं। मैं तो राज्य त्याग कर आप की सेवा में भ्रमण करने को तैयार हूं यही अपने अहोभाग्य मानूंगा।

गुरू जी ने कहा-हमने यहां जो झंडे तरखाण को नियत किया है, वह मंजी हमारी है। और तुम को जो एक छत्र राज्य दिया है; वह भी हमारा ही है। झंडे को हमारे ही सदृश देखना। तब झंडे और इंद्र सेन दोनों ने नमस्कार किया। गुरू जी ने कहा-वह परमात्मा हमें इधर आप के लिये ही लाया है। अब राजा को अत्यंत वैराग्य हुवा। कहने लगा हे गुरू जी यदि आप चले जायेंगे तो हमारे प्राण नहीं रहेंगे। गुरू जी ने कहा-हम और आप एक ही हैं। तथा सदैव आप के निकट ही हैं। राजा

ने फिर कहा-आप कुछ दिन यहां ही निवास करो, इंद्र सैन के कहने पर गुरू जी वहां एक महीना और रहे, पश्चात गुरू जी ने वहां से प्रस्थान किया ॥ ३१ ॥

---o---

॥ साखी और चली ॥

फिर श्री गुरू नानक देव जी ! सिलमिला द्वीप की ओर चले। जिस स्थान पर समुद्र आ जाय उस स्थान पर भी स्थल की भांति ही चले जा रहे थे। तीन मास लगातार चले। जहां गुरू जी की इच्छा हो वहां बैठ जाते थे वहां हम भी निवास कर लेते थे।

आगे उस द्वीप में पहिले ही गुरू जी की ख्याति हो रही थी कि गुरू नानक देव जी राजा सुधर सैन को तीन द्वीप का राज्य दे कर आ रहे हैं। और एक तरखान को महा पुरुष बना कर आ रहे हैं। अब हम तीनों एक उद्यान में जा ठहरे। ज़हां सात दिन रहे। तव मर्दाने ने कहा-यदि आग्या हो तो नगर देख आऊं। गुरू जी ने कहा-क्या भूख लगी है? मर्दाने ने कहा-आप को तो उस करतार ने भूख प्यास हीन बनाया है, और हम लोग आप के साथ तो हठ वादी बने हैं। अब नगर देखकर सोचा कि कुछ खान पान ही कर आऊं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! कुछ संतोष कर तव मर्दाना बैठ गया। और कहने लगा हे महाराज ! इस नगर का नाम तो वता दो ! गुरू जी ने कहा-इसका नाम ब्रह्मपुर है। इस का राजा मधुर वैन है, तथा जाति का ब्राह्मण है। इतने में राजा मधुर वैन आखेट करता २ इधर ही आ गया। हमें देख कर राजा खड़ा हो गया, और पूछने लगा आप कौन हैं। मर्दाने ने कहा हम मनुष्य हैं राजा ने कहा नगर के वाहर क्यों वैठे हो। मर्दाने ने कहा और कहां जायें। राजा ने कहा कि तुम तीनों साधु हो? मर्दाने ने कहा कि तुमें क्या नज़र आ रहा है? राजा ने कहा-कि तुम इस प्रकार व्यंग वोल रहे हो। तुम को किस वात का मान है। वाला कहता है कि मैंने देखा कि गुरू जी तो मौन हैं। तथा मर्दाने को

भूख लग रही है। उसी के कारण इस के शब्दों में कटु व्यंग है।

बाला–हे राजन हम परदेसी हैं।

राजा–तो आप किस नगर से आ रहे हो ! तुमारी भाषा तो मेरी समझ में पूर्णतया नहीं आती ॥

बाला–हम पंजाब से आ रहे हैं, आशा है कि आप ने पंजाब का नाम तो सुना ही होगा।

अब राजा ने सोचा कि यह तीनो साधू नजर आते हैं राजा ने कहा हे भाई ! बिसहर देश राजा सुधर सैन का है। क्या आप ने वह भी देखा है अथवा नहीं। मैंने (बाला) कहा–वहां से तो हम आ ही रहे हैं। हम ने राजा से पूछा आप का नाम तथा जाति हम जानना चाहते हैं। राजा ने कहा कि मैं सब कुछ बताऊंगा परंतु मैं आप के महंत का परिचय पहिले प्राप्त करना चाहता हूँ बाले ने कहा--हमारे महंत जी का पवित्र नाम श्री नानक निरंकारी है। और मेरा नाम बाला है। और यह जो बैठा है। इस का नाम मर्दाना है, राजा ने कहा-कि राजे सुधर सैन और झंडे तरखान को जो महान वर देने वाला है। क्या वह यही आप का महंत ही है ? मैंने कहा हां सत्य है। अब आप आपना परिचय दें। राजा ने कहा सुनो। मेरा नाम मधुर बैण है। नगर का नाम ब्रह्म पुर है। मैं इस वलायत का राजा हूं। जाति का ब्राह्मण हूँ। मैंने कहा इस द्वीप का नाम क्या है ? राजा ने कहा इसे सिल मिला द्वीप कहा जाता है। यहां तीन द्वीपों में अठारह राजा राज्य कर रहे। बाले ने पूछा उन के नाम क्या हैं ? राजा ने कहा–एक तो राजा कवल नैन २ मधुर सैन ३,सुधर सैन ४ सुख चैन ५ असनाहा ६ सुगर सैन ७ बीर सैन ८ लाल सैन ९ राय सैन १० सुख सागर ११ नाग परस राम १२ राजा अटका घटका १३ सुधम मालका १४ बुध बिवेक बालका १५ राजा नैन जोत १६ राजा बाल शिंगार १७ राजा तुरांत रंज १८ राजा मगन राय। राजाओं के नाम सुन कर मैंनें कहा इन में सरदार कौन है ? राजा ने कहा– सब का सरदार राजा कवल

नैन है। बाले ने कहा यह तो झूठ है। सब से ऊपर कवल नैन नहीं है। सब का सरदार तो सुधर सैन है, क्यों कि मेरे पूज्य गुरू देव ने सुधर सैन को सर्वोपरि किया है राजा ने कहा तुम बात कर रहे हो,परंतु तुमारा महंत बात ही नही करता, मैंनें कहा—गुरू जी उस समय बोलेंगे, जब कोई उन से बात करने वाला आयगा, राजा ने कहा अच्छा मैं बुलाता हूँ। बाले ने कहा आप राजा हैं बुला लो, राजा ने घोड़े से उतर कर कहा कि इन को क्या कह कर संबोधित किया जाता है। बाले नें कहा—करतार करतार कहने से उत्तर देते हैं, राजा ने निकट होकर कहा हे महंत जी करतार करतार, गुरू जी समाधी से उत्थान में आकर कहने लगे सत्य करतार सत्य करतार जी, आओ भ्राता! बैठ जाओ। राजा ने प्रणाम किया, गुरू जी ने कहा—आओ राजा मधुर सैण जी राजा ने कहा—आप नगर में पदार्पण करो, गुरू जी ने कहा—हमारे लिये तो यही नगर है, राजा ने फिर कहा आप नगर में चलो यहां निर्जन स्थान पर बैठने से क्या लाभ है? गुरू जी ने कहा—साधुओं के लिये निर्जन बन ही विशाल नगर होता है, राजा ने कहा—यदि आप नगर में निवास करो तो आप के भंडारे का ध्यान रहेगा,तब गुरू जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया—

॥ राग बिलावल महला १ ॥

एक भंडारा नाम का जिन सभ किछ दीना ॥
भूख नंग सभ छीन के आपणा कर लीना ॥
ऐसा नाम न छोडिऐ सदा संग हमारे ॥
लेखा कबी न पूछई मनं मीत पिआरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
भोजन उतम हम कीआ संतन प्रसादि ॥
जल सीतलु हिरदै पीआ रिदै महि सांति ॥ २ ॥
वसत्र ब्रह्म पिआरिआ काइआं के संग ॥
लख चउरासी एक है तू हैं निरसंग ॥ ३ ॥
नानक कहै गजिंद्र सुण सभ झूठ पसारा ॥

दिसट मान सभ बिनस जाइ रहे एकंकारा ॥ ४ ॥

तब राजा गुरू जी के चर्णों पर गिर कर कहने लगा जो आग्या हो वही करूं। गुरू जी ने कहा हम ने राजा सुधर सैन को निषकंटक राज्य दिया है जो उसे मानेगा उसका भला होगा। जो न मानेगा उसकी इच्छा हम ने जो करना था कर दिया है राजा ने कहा हमें आप की आग्या स्वीकार हैं। हम उसे अपना राजा मानेंगे। राजा को गुरू जी ने कहा-हे राजन ! यह राज्य आदिक सभी यहां रहने वाले हैं। जिनों ने संत जनों के बचन प्रमाण माने हैं। उन के साथ कीर्ति जाती है। राजा ने कहा हम ने तो आप की आग्या पालन करनी है। राज्य को हम कुछ नहीं जानते।

यह सुन कर गुरू जी अत्यंत प्रसन्न हुवे। फिर गुरू जी ने कहा हे राजन ! अब हम लोग आगे जायेंगे। राजा ने हाथ जोड़ कर कहा-कि अब जैसे आग्या हो हम राजा सुधर सैन को मिलें। गुरू जी ने कहा-जैसे हमारा मान करते हो वैसे ही सुधर सैन का मान करना। राजा ने कहा हमें स्वीकार है। फिर राजा ने कुछ दिन इसी नगर में निवास करने की प्रार्थना की। तब बाले ने कहा हे गुरू देव इस राजा की इच्छा भी पूरण करो। तब गुरू जी उन्नीस महीने वहां रहे। अब गुरू जी ने एक दिन आगे को प्रस्थान कर दिया ॥ ३३ ॥



॥ साखी और चली ॥

अब हम चलते २ राजा कवल सैन के राज्य में जा पहुंचे जहां २ रास्ते में विश्राम हो तहां २ गुरू जी कई कई दिन समाधी में रहें। इस प्रकार सात मास और तेरह दिन व्यतीत होने पर एक नगर जो चार कोस से नज़र आ रहा था वहां पहुँचे। तब मर्दाने ने कहा महाराज ! आप किसी नगर में भी जायेंगे या इसी प्रकार जंगलों में ही भटकना है। गुरू जी ने हंसकर कहा क्या भूख रही है? मर्दाना ने कहा-यदि भूख लगेगी तो क्या हमारे आगे किसी ने भोजन धर जाना है। गुरू जी ने कहा वहां

देखो एक नगर नज़र आ रहा है, मर्दाना जो कुछ तुमारी इच्छा होगी वही खाने को प्राप्त होगा, मर्दाने ने कहा–एक दिन इसी प्रकार प्राण निकल जायेंगे, गुरू जी ने कहा कि यदि प्राण निकल जायेंगे तो हम फिर दोवारा जीवित कर देंगे, भय नहीं करो, भाई मर्दाने ने कहा हां जी सच कहते हो। आप को तो कोई लालच नहीं विदेह हो, यह हम ही जानते हैं कि आप के साथ हमारे लिये क्या कुछ व्यतीत हो रही है, गुरू जी ने कहा मर्दाना! ईश्वर के रंग देखता चला जा, इसी प्रकार गुरू नानक जी वातों बातों में आगे ले गये, जव नगर निकट आया तो गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना। जाओ नगर में से अपनी भूख प्यास मिटा लो, मर्दाने ने कहा हे गुरू देव! मेरे पास तो एक अधेलाभी नहीं,खाऊं क्या! गुरू जी ने कहा हे मर्दाना हम ने सारा नगर तेरे अर्पण किया है, जहां इच्छा हो जाओ और खाओ पीओ तथा आनंद लो, कोई इनकार नहीं करेगा, यदि कोई चोर चोर कह कर पड़के तो हमारा नाम लेना, वह तुमें छोड़ देगा, मर्दाना ने सोचा कि गुरू जी के प्रत्येक नगर में मित्र हैं तभी तो इतना हौसला है, अव मर्दाना नगर में गया, देखता है कि सारी पृथवी स्वर्ण की है, मर्दाना अचंभे में आ गया, इस कौतुक को देख कर ही भूख स्वयं दूर हो गई, मर्दाने ने एक पुरुष को पूछा कि क्या इस नगर का नाम स्वर्ण पुर है? उस से यह भी पूछा कि राजा का क्या नाम है, उस ने कहा हे मर्दाना! इस नगर के राजा का नाम कवल नैन है, इस के अधीन वहुत राजा हैं। मर्दाने ने कहा यहां की प्रथा और अपना वनानें की कृपा करो, उस ने कहा मेरा नाम धर्म सिंह है, और मर्यादा यह हैं कि जिसे जिस वस्तु की इच्छा हो वह खा सकता है, यहां सभी काम धर्म के अनुसार होते हैं,यह सुनकर मर्दाना वहुत प्रसन्न हुवा कहने लगा हे धर्म सिंह में वहुत भूखा हूं। धर्म सिंह ने कहा यहां किसी वस्तु की मनाही नहीं है प्रत्येक दुकान से जिस वस्तु की इच्छा हो उठा सकते हो, तव मर्दाने ने कहा यह तो मैं करने का नहीं, यदि कोई उठा दे तो ले सकता हूँ। उस ने कहा क्या तेरे साथ दो और हैं। अर्थात् हम

हैं, उस ने कहा—उन को भी ले आओ। मर्दाने ने कहा वह बहुत संतोषी हैं, आने के नहीं।

तब वह आदमी मर्दाने को एक दुकान पर ले गया और कहा बताओ क्या कुछ खाओगे। मर्दाने ने कहा जो कुछ तुमारी इच्छा है ले दो। उस पुरुष ने दुकानदार को कहा कि इसे अढ़ाई सेर मिठाई लुची वगैरा तोल दो, दुकानदार तोलने लगा तो तराज़ू के वट्टे स्वर्ण के मर्दाने ने देखे। तथा तुला भी स्वर्ण का बना देखा। मर्दाने ने मन भर कर भेट पूजा की। फिर पूछा भाई जी! यह लोग स्वर्ण का व्यवहार करते हैं। और वस्तु का मूल्य लेते नहीं। यह सब कारण क्या है? काम कैसे चलता है। उस ने कहा यह राजा की आग्या है। और अन्न तो कुदरती पैदा होता है। सिरफ बनाने पर मेहनत होती है। अन्न आदिक बाहर से लाकर बनाओ। तथा खाओ और खिलाओ। और जो किसी से काम करवाना हो वह भी करवा सकते हो, मूल्य और मज़दूरी कुछ भी नहीं है। राजा की आग्या है। धर्म की नगरी है। मर्दाना यह बातें सुन कर प्रसन्न हुवा।

मर्दाने के मन में उसी नगर में रहने की इच्छा उत्पन्न हुई। अंत में गुरू जी के निकट आया, गुरू जी ने नगर की बातें कहने की आग्या दी। मर्दाने ने स्वर्ण व्यवहार आदिक सभी आद्योपांत बात सुनाई। यह भी कहा कि यहां कूआं नहीं पानी वर्षा का आम जमा होता है। यह नगर की बातें हैं।

मर्दाने ने कहा मुझे एक पुरुष मिल गया। मैंने उस से सब बातें सुनी हैं। जो आप को सुना दी हैं। तथा अढ़ाई सेर मिठाई आदिक भी खिला दी है। कीमत वगैरा कुछ भी नहीं है, दुकानदार ने तो आप को भी कहा है कि आओ और पेट भर जाओ। मर्दाने ने कहा यह राजा तो सुधर सैन से भी बड़ा है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना सुधर सैन को हम ने और ईश्वर ने बड़ा किया है। मर्दाने ने कहा हे महाराज! में कुछ कह नहीं सकता आप तो पवन आहार करने वाले हैं। परतु अब तो काम सुगम है कुछ

खान पान कर लेना उत्तम है। यदि कहो तो मैं स्वयं जाकर आप के लिये ले आऊं। गुरू जी ने कहा मर्दाना! ईश्वर के रंग देखता चल, और चुप चाप बैठ जाओ। मर्दाना बैठ गया। सात दिन व्यतीत हो गये, मर्दाना प्रत्येक दिन जाता और पेट भर कर आ जाता था।

एक दिन दुकानदार ने कहा भाई! तुम ने कहा था कि मेरे साथ दो पुरुष और हैं। वे कहां हैं, हम ने तो देखे ही नहीं मर्दाने ने कहा वे दोनों साधु नगर के बाहर वन में बैठे हैं, वह किसी के द्वार पर नहीं जाते, अत्यंत संतोषी हैं। धर्म सिंह ने कहा—यदि उन के लिये कुछ ले जाया जाय तो खायेंगे या नहीं। मर्दाने ने कहा—कि वे तो पवन आहार करते हैं। इच्छा हो तो खा भी लेते हैं। यदि न हो तो इनकार भी कर देते हैं। यदि पवित्र खान पान हो तो खाते हैं। धर्म सिंह ने कहा यहां तुम ने अपवित्रता कहां देखी है। मर्दाने ने कहा मैं ने तो अपवित्रता नहीं देखी। उस ने कहा फिर तुम ने ऐसे क्यों कहा—मर्दाने ने कहा अच्छा आप उनके लिये ले चलो।

तब धर्म सिंह ने पांच सेर वस्तु स्वयं उठाई और अढ़ाई सेर मर्दाने को खिला दी। उस ने कहा मर्दाना तुम चलो मैं तुमारे पीछे आता हूँ।

मर्दाना गुरू जी को कहने लगा हे महाराज यहां तो अजीब तमाशा देखने में आता है। यहां काम कैसे चलता है। गुरू जी ने कहा यह धर्म नगरी है। यहां पाप नहीं। यहां सत्य और संतोष वर्तमान है। यहां तुर्कों का वास नहीं। यहां तुर्क को कोई भी नहीं जानता। धर्म का वर्ताव जो कहा जाता है वह यहां ही है। तब मर्दाने ने कहा हे महाराज! इसी नगर में निवास करना उत्तम है। गुरू जी ने कहा भाई! अपनी इच्छा नहीं होती ईश्वरेच्छा ही होती है। जहां उस की इच्छा है वहीं निवास होगा। मर्दाने ने कहा हे गुरू देव! यहां स्त्री पुरुष मैथुन क्रिया करते हैं अथवा नहीं करते? गुरू जी ने कहा—यहां दृष्टी भोग होता है। इसी लिये यहां धर्म का वर्ताव है। जहां मैथुन है। वहां से धर्म पद्धिती मिट जाती है। मर्दाने ने कहा यह तो आप ने अचंभे की बात सुनाई है, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना!

ईश्वर की माया विचित्र होती है। उस में परेशान होने की कोई बात नहीं। वह परमात्मा बेअंत है। उसकी लीला अपार है, और स्वयं भी अपार है। मर्दाने ने कहा गुरू जी! इस राज्य की सीमा कहां तक है? गुरू जी ने कहा बहुत दूर तक है जहां से चले थे वहां तक है। वह जो ऊंचा पहाड़ है, उस से दूर तक सारी धरती स्वर्ण की है। वह पहाड़ भी स्वर्ण के हैं इस राजा के राज्य का विस्तार सत हज़ार योजन है। इतना बड़ा राज्य कलयुग में और कोई भी नहीं है इस के पीछे गुरू जी की समाधी लग गई।

फिर धर्म सिंह ने आकर कहा—कि गुरू जी की क्या आग्या है, तथा इन की उत्थान अवस्था किस शब्द के उच्चारण से होती है, बताने से जब कर्तार कर्तार की ध्वनी की गई तब गुरू जी की उत्स्थान अवस्था हुई। तब धर्म सिंह ने कहा आप के लिय गोबिंद प्रसाद लाया हूँ। गुरू जी ने कहा हे सज्जन! आप का नाम क्या है। उस ने कहा श्री मन! मेरा नाम धर्म सिंह है और यहां किसी की जाति पूछने की अवश्यकता नहीं। क्यों कि यहां का प्रत्येक रहने वाला एक ही वरण का है, और सभ से बड़ा एक गोबिंद है, तब गुरू जी ने कहा—यहां का राजा कौन है, धरम सिंह ने कहा यहां के राजा का नाम कवल सैन है, फिर गुरू जी ने कहा—वह तो बड़ा है, उस ने कहा उस के शिर पर छत्र तो परमात्मा ने दिया हुवा है, राजा होते हुवे भी वह किसी से प्रणाम करवाना नहीं चाहता। वैसे तो सत्रह राजे इस के नीचे है परंतु यह किसी को अपने अधीन नहीं मानता, सभी परमात्मा के पुत्र जान कर समान व्यवाहार करता है। गुरू जी ने मन में सोचा कि हम ने तो सुधर सेन को इस के ऊपर किया है, अब देखना हैं कि परमात्मा को क्या स्वीकार है। गुरू जी को यह विचार हुवा। इतने में धर्म सिंह ने कहा आप भोजन कर लें। गुरू जी ने कहा हम भोजन करने को तैयार नहीं। धर्म सिंह ने कहा—आप ने क्या दोष देखा है जो भोजन नहीं करते। गुरू जी ने कहा भोजन में तो कोई दोष नहीं। परंतु राजा में दोष है। उस ने कहा आप ने राजा को क्या दोष लगाते हैं? राजा तो धर्मात्मा है,

अपितु यदि कोई दोष आप ने देखा है तो हमें बताने की कृपा करो, गुरू जी ने कहा–जिस में दोष होता है वही जानता है दूसरा नहीं जान सकता, गुरू जी ने कहा पुरुष सर्व सच्ची है। उस ने कहा कि यह निवारण कैसे हो, गुरू जी ने कहा कि तुम राजा को खबर दोगे ? और राजा अब हम से पूछेगा। तब हम भोजन खायेंगे। गुरू जी ने राजा को दोष लगाया धर्म सिंह को हैरानी हुई।

तब धर्म सिंह ने कहा हे राजन ! आप के नगर में तीन साधु आये हुवे हैं। उन में से एक तो नगर में आ कर खान पान कर लेता है। परंतु दो नहीं आते। मैं उन के लिये भोजन लेकर गया। परंतु वह खाते ही नहीं। हम ने कहा हे संतो ! धर्म पुरी का पवित्र आहार आप क्यों नहीं खाते ? तथा दोष लगाते हो। उन में एक महंत है। उस ने कहा है कि राजा में दोष है। जब मैंने पूछा तो उस महंत ने कहा–जिस में दोष होता है, वही जानता और वही मानता है। मैं हैरान हूं राजा ने कहा हे धर्म सिंह तुम ही हमारा दोष विचारो। उनों ने कौन सा दोष लगाया है, धर्म सिंह ने कहा आप ही चल कर उन से पूछो।

अब राजा घोड़े पर सुवार होकर चला। राजा ने मन में सोचा कि मेरे यहां भोजन की तो कमी नहीं, यदि मैं लेकर जाऊं और उनों ने स्वीकार न किया तो भी ठीक नहीं। अब मुझे खाली हाथ ही जाना योग्य है। यह कह कर राजा और धर्म सिंह वहां आये जहां श्री गुरू नानक देव और वाला विराज मान थे। मर्दाना रबाब बजा रहा था, गुरू जी और मैं (वाला) ईश्वरीय मस्ती में बैठे हुवे थे। राजा घोड़े से उतरा उन तीनों में से राजा के आने की किसी को भी खबर न हुई। धर्म सिंह से राजा ने पूछा इन का संबोधन क्या है, धर्म सिंह ने कहा यह पूरण संत हैं। राजे ने कहा मैं कैसे जानूं। धर्म सिंह ने कहा आप इन को कहो, सत्य करतार सत्य करतार। जब राजा ने करतार करतार का शब्द कहा तब श्री नानक देव की उत्थान अवस्था हुई गुरू जी ने भी सत्य करतार की ध्वनि की।

बैठ कर कहा हे महंत जी आप ने हमारा भोजन त्याग कर हमें दोष लगाया है, आप दोष बताओ । तथा उस दोष को दूर भी करो। गुरू जी ने कहा हे राजन तुम को यह दोष लगा है कि तुम कहते हो सभी गोबिंद के किये हैं। ऐसे एक हम भी उसी के किये हैं। यदि तुमे यह निश्चय है तो दूसरे से ईन को मनवाना चाहते हो। राजा ने कहा हम किसी से ईन नहीं मनवाते। ये लोग जो ईन मानते हैं स्वयं मानते हैं। हमारी ओर से कभी कोई आग्रह नहीं है। गुरू जी ने कहा सुन राजा! हम ने तुम सब के ऊपर सुधर सेन को किया है। अन्य राजा उस को प्रजा किये हैं। आप के मन में जो कुछ हो कहो तब कवल नैन ने कहा यहां तो धर्म कुशल है। आप की आज्ञा शिरोधार्य है परंतु आप हमारा दोष तो दूर करो गुरू जी ने कहा हे राजन! आपका दोष दूर करने के लिये हम हज़ारों कोस की दूरी से आ रहे हैं। राजन आप हमें नहीं जानते परंतु हम तो आप को जानते हैं। सुनो यदि राजा सुधर सेन को बड़ा मानोगे तो तुमारा दोष दूर हो जायगा और तुमारा कल्याण होगा। राजा ने कहा मुझे स्वीकार है तथा सुधर सेन की आज्ञा पालन करूंगा यह मैं सत्य कहता हूं।

राजा ने फिर कहा अब एक और शंका है आप ने कहा है कि हम तुम को जानते हैं तुम नहीं जानते इस में क्या रहस्य है। आप यह बताओ कि मुझे आप कब से जानते हो ? गुरू जी ने कहा जब राजा जनक त्रेता में था तब तुम उस के निकट सनान कराने वाले थे। राजा जनक तुम पर अत्यंत ही प्रसन्न था एक दिन राजा जनक ने कहा अरे मथरा तुम शीतल जल ला कर पिलाओ परंतु जहां का जल मैं कहूँ वहां से लाना। आप ने कहा जैसे आज्ञा हो वैसे ही करूं। जनक ने कहा हिमालय से जल लाओ तुम जल लेने गये उस समय तुमारे मन में आया कि काश! हम राजा होते तो हमारा भी हुकम इसी प्रकार चलता तब तुम ने राजा को जल ला कर दिया। राजा बहुत प्रसन्न हुवा राजा ने कहा–मथरा कुछ मांगो। तुम ने कहा मैं कुछ नहीं मांगता। राजा जनक सर्वज्ञ था उस ने कहा तुम मांग

चुके हो। अब क्यों इनकार करते हो। जो तुम ने मांगा है वह हम ने दे दिया है। फिर तुम ने कहा-मैनें तो कुछ नहीं मांगा, जनक कहा सुनो-जब तुम जल लेने गये थे तो मन में कहा था कि यदि हम राजा होते तो हमारा भी हुकम चलता, बस हम ने तो तुम को राज्य दे दिया है, और कहा कि तुम हम से अधिक राज्य के स्वामी बनोगे।

हे राजा ! कवल सैन तब से हमारी तुमारी पहिचान है, ऐसे गुरू जी ने उस राजा को कहा, राजा ने कहा उस समय आप का क्या नाम था, गुरू जी ने कहा उस समय तेरा नाम सदा नंद था और हमारा नाम निरंकारी था, तब राजा ने कहा कि-तुम वही निरंकारी हो ? और अब आप का नाम क्या है ? गुरू जी ने कहा अब हमारा नाम नानक निरंकारी है, यह सुन कर राजा ने गुरू जी की परिक्रमा करके अपना शिर गुरू जी के चर्णों पर रख दिया,और कहा हे गुरू देव आप धन्य हो,धन्य हो,मैं आप के चर्णों का सेवक हूं। आप ने मुझ पर अनु ग्रह किया है जो यहां पधार कर दर्शण दिये हैं। आप ने मुझे कृत कृत्य किया, मेरी सभी कामनायें पूर्ण हो गई हैं, यह कह कर फिर चर्णों पर गिर गया। गुरू जी ने उठाया, राजा ने कहा हे महाराज अब मेरे मंदिर को पवित्र करो गुरू जी ने कहा हे राजन ! तुम को मंदिर शोभा देते हैं। और हम उद्यान में ही प्रसन्न हैं, उस ने कहा-यह राज्य आप की ही देन है, आप अब राज्य करो तथा हम आप की सेवा करेंगे, गुरू जी ने कहा हे राजन ! जैसे तुम राज्य में गलतान हो, वैसे हमारा एक मर्दाना नाम का मिरासी है। वह अपनी राग की तान में मस्त है, इस मर्दाने को यह भी सुध नहीं कि कौन यहां आया तथा क्या कुछ हुवा हैं। राजा ने कहा-अब आप मेरा दोष दूर करो। और मंदिर में चलो। अब गुरू जी ने उस के गृह में आना स्वीकार कर लिया।

तब गुरू जी बाले और मर्दाने को साथ लेकर राजा के मंदिर में गये, गुरू जी ने सारी नगरी धर्मात्मा देखी राजा कवल नैन ने **गुरू जी को** अपने घर में पंद्रह मास तक रखा, जब गुरू जी वहां से प्रस्थान

तब राजा ने कहा–हे महाराज ! यह राज्य अब आप कृपा करके अपने कर कमलों से ही किसी के सुपुर्द कर दें तो उत्तम है। तथा मैं तो आप के साथ ही चलूंगा। गुरू जी ने कहा हे राजन ! तुम अपने गृह में रहकर भी राज योग कर सकते हो, फिर गुरू नानक देव जी यात्रा के लिये नगर से बाहर निकले तब राजा ने गुरू जी की तीन परिक्रमा लेकर चरणों पर अपना शिर रख दिया। तथा प्रार्थना की। हे प्रभो ! मैं आप से भिक्षा चाहता हूँ। कि मुझे सदैव आप का ही चिंतन रहे। गुरू जी ने कहा हे राजन ! आप का राज्य अरि-मुक्त रहे। तथा परमात्मा में अटल-अचल विश्वास सदैव बना रहे।

गुरू जी वहां से सुमेरु गिरी की ओर अग्रसर हुवे। उस समय मर्दाने ने कहा–हे गुरु देव ! मुसलमान लोग कहते हैं कि मक्का शरीफ के दर्शणों से बहुत ही लाभ होता है। आप ने अनेक स्थानों को देखा तथा दिखाया है। यदि आप की इच्छा हो तो हमें मक्का शरीफ के भी दरशण करा दो। गुरू जी ने कहा मक्का तो पश्चिम दिशा में है। बाले ने कहा–हे महाराज ! मर्दाने की इच्छा भी पूरी करो। गुरू जी ने कहा चलो पहिले मर्दाने की इच्छा ही पूरी करेंगे। इस नश्वर शरीर का कोई विश्वास नहीं है। जो किया जाय वही अच्छा है।

--o--

॥ साखी और चली ॥

जब गुरू नानक देव जी भाई लालो से विदा हुवे थे। तब एक मास कशमीर में निवास किया था, फिर बंगाल देश में रहे थे असरा पुर में दो सप्ताह रहे। तथा कौडे राक्षस के पास सात दिन रहे, फिर बिसंभर पुर डेढ़ मास में रहे। दो वर्ष सात मास सालस राय के रहे, फिर निराहार बीस दिन चलते रहे। बिसहर देस में एक महीना राजा सुधर सैन के यहां रहे। उन्नीस मास मधुर बैन के यहां निवास किया। देव गंधार की ओर जाते २ सतरह दिवस रहे, देव लूत के पास नौं महीने ठहरे, और तीन महीने परस

राम के नगर में निवास किया। एक महीना बन मानसों की वस्ती में निवास किया, सात महीने तेरहा दिन सवरन पुर में गुज़ारे। राजा कवल सैन के यहां गुरू जी पंद्रह मास रहे, छः वर्ष सात महीने तथा साथ दिनों के व्यतीत होने पर गुरू जी ने मर्दाने से पूछा—हे मर्दाना! अब क्या देखना चाहते हो। इस समय गुरू जी की आयु उनतालीस वर्ष के लग भग हो गई थी। सुंदर दाहड़ी तथा मुख पर ईश्वरीय प्रकाश था। गुरू जी के कहने पर मर्दाने ने मक्का शरीफ़ के दर्शणों की इच्छा प्रकट की। गुरू जी ने कहा—वहां तो हिंदुओं को जाने नहीं देते, और दूर भी बहुत है। मर्दाने ने कहा—आप के लिये निकट तथा दूरी का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, गुरू जी ने कहा मक्का यहां से अढ़ाई सहस्र कोस पर है। मर्दाने ने कहा आप के लिये यह कोई वड़ी बात नहीं है। बाकी जाति के दृष्टी कोण से आप को कोई रोक नहीं सकता। गुरू जी ने कहा—हे मर्दाना तेरा कहना हम सदैव स्वीकार करतें हैं। चलो पहिले तुम को मक्का शरीफ़ में ही ले चलते हैं। पीछे किसी और यात्रा को जायेंगे।

—o—

॥ साखी मक्के मदीने की ॥

नसीहत नामा श्री नानक जी का शाह शरफ और काज़ी रुकन दीन के साथ हुवा।

॥ राग तिलंग ॥

गुज़श्त राह सलावत ॥
अवतार पैग़ंबरां हम विलकुल सफ़ात ॥ १ ॥ रहाउ ॥
एको एक खुदाइ है हैवान नवात ॥
वेचून वेचगून है तिस जनम मरन न जाति ॥ १ ॥
होइ खउफ़ खदाइ दा मुखहु अलाए ताक ॥
लाइला इंल्लिला गोविंद नानक अलफ़ अला ॥ १ ॥

घर रसालों में गावंना ॥

संसार के कल्याणार्थ उदासी वेष धार कर श्री नानक जी ने विदेश यात्रा की। तथा प्रत्येक स्थान पर अपने स्थान नियत किये-

एक दिन आप दक्षिण में थे। तब हाजी लोक मक्के को जा रहे देखे, मर्दाने ने कहा हे गुरू जी यह मक्के को जा रहे हैं तथा सुना है कि मक्का खुदा का अपना घर है। मक्के का दर्शण अल्लाह का दीदार है। यदि आग्या हो तो मैं भी हज्ज के लिये यात्रा करूं। गुरू जी ने कहा-भाई! मक्का मदीना इसी शरीर के अंदर है। उस समय गुरू जी ने एक श्लोक उच्चारण किया।

॥ श्लोक ॥

मुकाम मक्का मन मदीना सिर मुसल्ला मस्तक मसीत ॥
नक कबर बाज़ू वा राना इमाम ॥
कलमा माला कुरान ज़बान ॥
तमाम अंग सी हरफ़ काइदा अलफ़ बे पछान ॥
रूह अजाइस कम्म बकादान ॥
नैन नबी करन काबा हथ हज़रत पैर रसूल ॥
नानक ऐसा अमल जो करे सो दरगह पवै कबूल ॥ १ ॥

यह शब्द सुन कर मर्दाना कुछ अनमना सा होकर चुप रहा गुरू जी ने कहा-यदि पुरुष अपना मन शुद्ध कर ले तो सभी कुछ इसके भीतर ही है, परंतु यह संसार के अंदर भूला हुवा हैं। जैसे मृग की नाभी में कस्तूरी है। परंतु वह बाहर मारा मारा फिरता है। परंतु हे मर्दाना संतों को यात्रा अवश्य करनी योग्य है। हम मक्का मदीना देखेंगे। हम ने काज़ी रुकन दीन से कुछ धर्म चर्चा भी करनी है।

एक दिन गुरू जी मक्के की यात्रा को चल दिये। पहिली विश्राम जगह पर चार हाजी और एक साधू शाह शरफ़ गुरू जी को मिले। शाह शरफ़ गुरू जी को संत वेष में देखकर हैरान हुवा। उस ने हाजीयों से कहा,

तुम यहां ठहरो। मैं कुछ उन से बात करना चाहता हूं। यदि उस ने उत्तर ठीक दिया तो कामल जानूंगा, और उत्तर ठीक न हुवा तो मैं इस के वस्त्रादिक भी उतार लूंगा। यह सोच कर गुरू जी के निकट आया, कहने लगा तुम कौन हो, गुरू जी ने कहा—सुण अहिले दरवेश अवारा। फ़कीरी तक्सीर है। फ़कीरों से पूछना किस लिये। क्योंकि फ़कीर तो संसार से ना उमीद है। शाह शरफ़ सुन कर हैरान होकर चुप रहा। मन में कहा—यह फ़कीरी में कामल है।

॥ प्रश्न शाह शरफ़ का ॥

अव्वल फ़कीरी अव्वल शुमारा मैं पुरस मईं सुखनरा जुवाव बिदिहंद अवले फ़कीरी चीसत। आखर फ़कीरी चीसत। खाना फकीरी चीसत। कुलीद फ़कीरी चीसत। मकबरे फ़कीरी चीसत। गंज फ़कीरी चीसत। रेशम फ़कीरी चीसत। खिरका फ़कीरी चीसत। कफ़नी फ़कीगे चीसत। फौहड़ी फ़कीरी चीसत। जामा फ़कीरी चीसत। वसाल फ़कीरी चीसत। सेली फ़कीरी चीसत। किश्ती फकीरी चीसत। मुता काइ फ़कीरी चीसत। हर हक सुवालरा जवाव विदिहंद आं कामल फकीरी असत। वा इल्ला ना कामले फ़कीरी असत। कि जवाव रा फकीरी न दिहंद ॥१॥

॥ उत्तर गुरू नानक जी का ॥

अवल फकीरी फनाह असत। आखर फकीरी वका असत। खाना फकीरी मुसलम असत। कुलीद फकीरी खामुशी असत। कदील फकीरी अज दीव वंदगी असत। मकबरे फकीरी हलीमी असत। गंज फकीरी पाइ वोसी असत। तरीक़ फ़कीरी विदारी अस्त। सो जन फ़कीरी अकल अस्त।
रेशम फ़कीरी दीदार अस्त॥ लुकमा फ़कीरी सबूरी असत॥
खिरका फ़कीरी रासती असत॥ कफ़नी फ़कीरी ज़िंदा मुर्दा असत॥
धूआं फ़कीरी मानिंद पसु खुरद हकाक असत॥

फहोड़ी फ़क़ीरी खाक रोबी असत ॥ जामा फ़क़ीरी कुशाद असत ॥
हर इक आदि आरामरा हासल कुनद । सेली-फ़क़ीरी बरदा पेश-
मुरशदा असत । किश्ती फकीरी रोइ गरदानी अजजहान
असतम । वसला फकीरी जबान सैफ साहिब करामात असत
दर मिहरव कहिरपुर मामूर असत । मुत काए फकीरी
मन बस करना गोशानशीनी असत । अगर कशे बदी
तरीक अमल कुनद आं कामल फकीर असत ।
वाइ जाना कामल फकीरी असत । फकीरी रचिदांद
फकीरी रागु मकरदा असत ।
फिर शाह शरफ ने पूछा-सुवाल कजा मानी । जुवाब दामनी ।
फिर शाह ने कहा-चिहश्त मनी जवाब ।
फिर गुरू जी ने कहा-बगो नानक एक धनी । एक धनी ।
शाह ने फिर पूछा-सवाल शुमारामे अहिले जवाब बगो दरवेश । बिद हंदकी कुल शुमारि मजब असत ।

॥ उत्तर नानक देव जी ॥

जो मनुआं मूंडे तब वली कहाए । बिन मन मूंडे जुगत न पाए । मुंड काट गुर आगै धरै । मन मत त्याग गुर मंत लै धरे । मन मुंडाए होइ सब रेना । सो बैरागी परखै गुर बैना । मन मुंडाए की एह गत भाई । को विरला गुरमुख मन मुंडाई । सुआद सनेह ममता सभी तजीअं । तउ नानक इस बिधि कलहि तहिरीअं ॥ ३ ॥

फिर शाह ने कहा-सुण रामे पुरस अहिल जवाब बगो दरवेशा । खिरका शुमा चिमा जवाब असत ॥ उत्तर नानक देव जी ॥ पीर मत मुरीद रहिनं । कफनी टोप मन सबद गहिनूं । बहुता दरिआउ कीए बरेती सहिज घर बैठा तां सिखिआ देती । हरष सोक कीना आसारं । पहिर कफनी दुष्ट बिदारं । सुन्न घर लै वस्ती बसाई । भउ कसनी टोपी की जुगत पाई । कुटंब छोडि हुआ अकेला । पहिर कफनी नानक भइआ सुहेला ॥ ४ ॥

तब फिर शाह शरफ ने पूछा- ॥ प्रश्न ॥ मैं तुरा पुरसम जवाच वगो वहि दरवेश। कपीन खुमाचि मज़व असत। उत्तर गुरू नानक। गुर सवद दीखिआ मन साहिब गहिनं। पंज इंद्रिआं द्रिढ़ अटल रहिनं। दृष्टि बंद भरमा ठहिरानं। दसवे दुआर ताला चढ़ामं। अठसठ हट ताड़ करनं। विनंदे मति गुर हरि चोटं। इहि बिध नानक पहिर विलं गोटं ॥ ५ ॥ फिर शाह शरफ ने पूछा-प्रश्न। तुमारे पुर जम जवाव वगो अहिल दरवेश पापोश पापोश तुराचि मजहब असत बिद हंद। उत्तर श्री नानक देव। सरब ग्यान महि निसरीतं। पावक पवन जात मन कीतं धरम तरवर की रहत रहिनं। काटन मोदना मन महि महानं। दरिआऊ सैलारी तब करीआढी। भगति कर लीऊं साखी। इहि महा करि रहो पिन हनं। जत पापोश ब्रह्म होइ रहनं। बिन ब्रह्म कीने पापोश तिआगै। कहु नानक उह तिड़ा लागै ॥६॥ फकर नहीं अमरका साथी। फकर कहावै पहिरै पैजार। सो उह की जानै फकीरी की सार। फकर कहावै पकड़े कासा। टुक पकड़ की वधे आसा। फकर कहावै पकड़े हंडावै। ओह फकीरी गृस्त माहि समावै। फकर कहावै कमर तलवार। फकीर नहीं ओह मन सवदार। फकर होइ सुख आसन चढ़ै। तां कऊ असमान तुट नहीं पडै। फकर कहावै सिर दसतारु। ओह फकर हर हरफ मैं खुमार ॥ फकर कहावै चढ़े तुरंग। सर गरदान माइआ के संग। फकर कहावै करे सुआल। महां जंजाली सदा जंजाल। फकर का मुजाहर पाणी पौण। दल दस्तार मता आवा गौण। इतनिआं फकीरां थीं गिरही भला। नानक खैर कमावै सफली फला।

यह सुनकर शाह शरफ ने प्रश्न किया। हे नानक देव ! जो फकीरी वस्त्रु पहिरते हैं। तथा साधु वेष धारकर स्वयं वड़े वनते हैं, इस प्रकार तो फकीरी हासल न हुई, तथा न ही गृहस्ती रहे। वह तो कुमार्गी हो गया, अब एक और प्रश्न हमारे मन में है कि जो वस्त्रु साधु को पहिरने उचित हैं वे सब आप कृपा करके कहो।

गुरू जी ने कहा पहिले साधुता मन में होनी चाहिये, फिर वह भले ही

गृहस्थी हो चाहे उदासी हो। परंतु जो फकीरों के से वस्त्र पहिर कर काम गृहस्तीयों जैसे करे वह संत नहीं है। मुंड मुंडवाना अथवा जटायें धारण करनी लंगोटी कफनी से तो कोई साधू नहीं हो सकता, साधना करे सोई साधू है। हे शाह साहिब ! प्रत्येक वस्त्र-पहिरने वाले को कहता हूँ। कि तू पहिले वैसा बन फिर तुझे वस्त्र पहिनने का अधिकार है,नहीं तो मत पहिन, अमल नहीं तो संत नहीं। जैसे कोई बालक वयो-वृद्ध पुरुषों से वस्त्र पहिर लें तो उसे शोभा नहीं देते। तथा जब उस आयु को प्राप्त करे तब वे वस्त्र उसे शोभा देते हैं। उसी प्रकार प्रत्येक पहिरावा इस बात की मांग करता है। कि उस पहिरने वाले में वही गुण होने उचित हैं। जैसे वह कपड़े पहिर रहा है।

फकीर की टोपी कहती है कि पहिले फकीर बन पीछे तूं मुझे शिर पर धारण कर, इसी प्रकार कफनी कहने लगी। अगर तूं मुझे पहिरना चाहता है। तो पहिले अपने आप को मरा हुवा जान। क्योंकि कफनी तो मरे हुवे को पहिराई जाती है। पहिले जो जीते जी अपने को मरा जाने तो वही फकीर है। कफनी यही कहती है जैसे मरे के मन में कोई कामना नहीं रहती, उसी प्रकार साधू को कामना रहित होना उचित है। यदि ऐसा नहीं कर सकता तो तूं गृहस्थी ही बना रह।

अब फहुड़ी कहती है कि यदि तुम ने मुझे हाथ में रखना है। तो पहिले मेरे गुण हासल कर फहुड़ी के समान हो। गुदड़ी को खाक आदिक लगती है। परंतु उस से उस की शान नहीं घटती। और फहुड़ी सभी कूड़ा कर्कट साफ कर देती है। तू अगर कूड़ा कर्कट अर्थात विषयादिक की कूड़ा कर्कट साफ करने को तैयार है। तो मुझे हाथ में रख। नहीं तो मुझे हाथ मत लगा। इसी प्रकार अन्य साधु चिन्ह ऊंची से ऊंची बात का उपदेश करते हैं। भाव यह है कि पहिरावे से कोई साधु नहीं बन सकता, उस में लक्षण होने परमावश्यक हैं

जब गृहस्त को त्याग दिया। तब फिर उसी गृहस्त पर जा कर पेट

के लिये घर घर जा कर हाथ न फैला । धैर्य कर । एकांत निवास कर । परमात्मा में मन लगा । फिर या तो प्राण गये, अथवा ईश्वर का मिलाप हो गया । एक बार संसार त्याग दिया तो फिर संसार से क्या संबंध है । जेकर उत्तम साधना नहीं कर सकता, तब तो गृहस्थ में रहना ही ठीक है । ऐसा न हो, कि-न खुदा ही मिला न वसाले सनम । न इधर के रहे न उधर के रहे । जिस ने साधु बन कर भी परमात्मा को नहीं प्राप्त किया, वह साधु नहीं । अपितु वह एक स्वांगी है । जैसे कोई भांड राजा की स्वांग करता है, तो जो उस भांड को जानते हैं । अथवा जो जान जाते हैं, वे उसे राजा न मान कर भांड ही कहेंगे । भाव यह है कि झूठी फकीरी उपहास्य रूप है । परंतु मनुष्य के हाथ की कोई भी बात नहीं । क्योंकि-

जिसहि देह तिसहि मौला ।

श्लोकः-

गल्लां वात न जोगिआं पैरी जोग न पंथ ॥
तिथै अकल न अपड़ै जिथै पिरिआ दी संध ॥

यह सुन कर शाह शरफ ने फिर कहा-हे नानक ! धन्य हो धन्य हो, और धन्य तेरी साधुता तथा धन्य आप के परमेश्वर हैं । साधना इसे ही कहते हैं जैसे आप के भीतर देखी गई है, और गुरू पदवी भी आप के लिये ही बनी है । जुहद में फरीद का जैसे नाम है, तथा पीरी मोन दीन चिश्ती का अधिकार है, तथा पात शाही रसातल पनाह की मानी जाती । तथा त्याग उमर खिताब का हिस्सा है, तथा त्याग कबीर जी जैसा है । योग में गोरख नाथ उत्तम हैं, तथा परि त्याग भरतरी तथा गोपीचंद का है, तप जनक का उत्तम है, तथा सन्यास में देवदत्त प्रथम है, ब्रहमचय लछमण पर है । शक्ति श्री हनुमान पर है, युद्ध रावण पर है, वियोग का अनुभव भगवान राम पर है । हठ ध्रुव पर ही माना जाता है, सत सीता जी का ही अधिकार है, गृहस्थ में बाबा आदम सर्वोपरि माने जाते हैं

जब इतनी प्रशंसा की । तो फिर शाह शरफ वैराग्य से भर गया, **तो**

फिर शब्द उच्चारण किया-

॥ राग धनासरी महला १ ॥ चकड़ी ॥

नित पुछहु पंडित जोतशी । पीआ कबहुँ मिलावा होइसी । मिल दरद विछोड़ा खोइसी । तप रहीअखु माए जीऊ बले । मैं कंत न देखिआ नैन भरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित काग उडावहु बनरहो । निसतारे गिणती न सवों । जिव लवै बबीहा तिवै लवों । मैं पिया बिन पल न बिहावए । जिउं जल बिनु मीन तड़फावे । जिउं विछड़ी कुजी कुरलावें । शेख शरफ़ न थीउ उतावला । इक चोट न थीसन चावला । किआ दरशण भूला बावला ॥ ४ ॥ ॥ उत्तर श्री नानक देव निरंकारी जी का ॥

राग धनासरी ॥ चकड़ी ॥

कर सहिज सीगार बनाइऐ । कर करणी काजल पाइऐ । मन मारण मांग भराइऐ । इउं कंत मिलावा होइसी । पुछहु पंडितु सिआणा जोइसी । सर दरद विछोड़ा खोइसी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहु मिलिआं तपति बुझाइऐ । देख दरशण नैन अघाइऐ । सहु महली सदु बुलाइऐ । जा भाणा तां गलि लाइऐ ॥ २ ॥ किउं कांग उडावउं बनरहों । किउं तारे गिणती दुख सहों । पी बूंद पपीहा चुप रहों । जो विछड़िआ होवे गम दहों । कहै नानक तूं सुन बावला । शाह शरफ़ न थी उतावला । किउं दबा देवहु चावला । काहे भूला फिरै उतावला ॥ ४ ॥

जब श्री नानक देव ने इस प्रकार प्रश्नोतर कहे ! तब शाह को संतोष हुवा । और गुरू जी के चरणों पर गिर पड़ा । तथा आग्या लेकर वहां से चलता बना ।

अब शाह शरफ हाजीओं के समाज में गया । तब उनों ने पूछा-कहो शाह जी वह नवागत साधु कैसा है ? अभी यह बात होने ही वाली थी । तो उसी समय श्री नानक देव भी उन हाजीओं के समाज में आ गये, हाजी

सोचने लगे कि यह संत हिंदु है अथवा मुसलमान है ? एक ने कहा-आप हिंदु हैं या मोमन ? गुरू जी ने कहा-हम परमेश्वर के साधु हैं, हाजी कहने लगे यह मार्ग हिंदु के लिये नहीं, हिंदु तो दुवारका तक रहते हैं, तथा आगे मुसलम देश है। अब देआर का नगर भी आ गया । कुछ काल यहां विश्राम करके आगे चले तो हाजी लोगों ने कहा-आप तो हिंदु साधु हैं अब आगे कहां जा रहे हो ? आगे जाओगे तो हिंदु होने के नाते मारे जाओगे। यदि कोई मुसलमान हिंदु को आगे ले जाए तो वह भी बे इज़्ज़त होता है। गुरू जी ने कहा जब वह स्थान आयेगा, तब हम अपनी रक्षा स्वयं कर लेंगे। आप चिंता न करो। अब उन हाजीओं ने कहा भाई ! तू हमारे साथ न चल। यह सुन कर गुरू जी वहीं बैठ गये। तथा मर्दाने को कहने लगे हे मर्दाना ! इन लोगों को जाने दो। यदि तुमारी प्रारब्ध में हज्ज होगा और हम ने वहां जाना होगा तो फिर कौन रोक सकता है, हे मर्दाना ! यदि मेहर मुहवत और खिदमत करते जाया जाय। तब असली हज्ज का पुण्य प्राप्त होता है। और जहां मज़ाख रंज तथा दुवेष करते जाया जाय तो हाजी कहलाना ठीक नहीं है।

उन हाजीओं ने पूछा हे संत जी ! हाजी कैसे वनता है और मेहर कैसे करें। और वे अमल भी बताओ जिस से सच्चा हज्ज होता है । तव श्री गुरू नानक ने हज्ज नामा कहा-

हाजरा कउ मेहर है। ग़ैर हाजरा को कहिर है। ईमान दोसत है। वेईमान काफर है। गुमान लानत है। पस गैवत का मूंह काला। दिआनत दार सुरख रोइ है । वेदिआनत सिआह गोइ है। अकिरत घन ज़रद रोइ है। दरोग़ दोज़क है। सच वहिसत है। हिरसी फराऊन है। वे हिर्सी औलीआ है। इलम हलीमी है। तवज्जा वुलंदी है । फक्कर सवूरी है। न सवूरी मकरूह है। ज़ोर जुलम है। वेज़ोर पाक है । दुआ दौलत है। वद दुआ कहिर हैं। इनसाफ साफ है। चोरी लालच है।

करामात कुदरत है। राह पीरां है। बेराह बेपीरां है। दरद वंद दरवेश है। बेदरद कसाई है। रोज़ी वच्च रहीम है। देग़ तेग़ मरदां है। अदल पात शाहां है। इतनीं बातें जो भाल कर जाने और जनावै तऊ नानक दानशमंद कहावै ॥ १ ॥

जब इतना हाज्ज नामा श्री गुरू नानक देव जी ने कहा–तब सभी हाजी अचंभे में आ गये। उनों ने कहा हे नानक जी! हम तो खुदाईयो से डरते हैं। क्योंकि वे इज्जती हैं खोज करने वाले नहीं हैं, हम ने तो मुसलमानी आसान जानी थी। परंतु इस पर चलना अत्यंत मुशकिल है। फिर बाबा जी ने बैठ कर कहा–हे मर्दाना! अब इनको जाने दो। इतने में हाजी चले गये, तब मर्दाने को आग्या हुई। हे मर्दाना! शब्द का अलाप कर। जिस समय तेरा गीत समाप्त होगा। तब तुम मक्का शरीफ में पहुंच जाओगे। यह सुन कर मर्दाना आलाप करने लगा। शब्द सुन कर बन के पशु शेर गीदड़ आदिक इकठे हो गये। अब मर्दाना भय भीत हो गया। और कहने लगा अब तक बन में क्यों बैठे रहे? हमें अभी कोई बन का पशु मार कर खा जायेगा तो हम क्या करेंगे। गुरू जी ने कहा–यदि तुमें कोई खायेगा तो हम संसार की रच्छा कैसे कर सकेंगे। हम तो तुमारी सदैव रच्छा करते आ रहे हैं। परंतु तुमें हम पर विश्वास नहीं हुवा। तब मर्दाने ने प्रार्थना में कहा–हे गुरू जी! हमें आप पर पूर्ण विश्वास है। यदि विश्वास न होता तो आप के साथ ही क्यों चलते। इतनी कह कर मर्दाना फिर गीत गाने लगा। जब गाते गाते तृतीय प्रहर हो गया। तब मर्दाने ने शब्द का भोग डाला। और अरदास की। गुरू जी ने फरमाया था कि शब्द के भोग पड़ने पड़ने पर मक्का शरीफ में पहुंच जायेंगे। तब गुरू जी ने कहा–भाई मर्दाना! उठ कर देख। वह मक्का नज़र आ रहा है। जब मर्दाने ने पश्चिम की ओर देखा तो मक्के के मीनार और बुरज नज़र आने लगे। मक्का शरीफ के मीनार तथा मकानात को देख कर मर्दाने ने कहा हे गुरु देव! हम मक्के में पहुंच गये मालूम होते हैं। प्रसन्न होते हुवे मर्दाने ने

कहा-हे महाराज ! जहां इस से कुछ क्षण प्रथम हम बैठे थे। वहां से मक्का लग भग एक वर्ष यात्रा की दूरी पर था, परंतु आप की कृपा शक्ति से हम कुछ ही घड़ियों में यहां आ गये हैं । गुरू नानक ने कहा-हम ने मक्का शरीफ के प्रधान काज़ी रुकनदीन के साथ कुछ प्रश्नोतर करने हैं। और कुछ शिक्षा मक्के के बादशाह कारूं हमीद को देनी हैं। जिस से वह खुदा प्रस्त (ईश्वर का भक्त) बन सके। सुना है कि वह अत्यंत नीच है। उस का वंदी जिवित नहीं रह सकता।

अब गुरू जी ने अपने वस्त्र नील वर्ण के कर लिये । एक हाथ में आसा तथा दूसरे में कासा ले लिया और तसबीह (वह माला जो मुसलमान फकीर पहिरते हैं) ले ली। भाव यह है कि गुरू जी ने अपना वेष एक हाजी मुसलमान जैसा कर लिया, तथा हाजी समाज के साथ जा मिले, अब हाजी लोग हज्ज की तथा अन्य मुसलिम धर्म संबंधी मर्यादा की स्तुति करने लगे। और रब्बी तारीफ करने लगे। इतने में रात्री काल हो गया। लोग विश्राम करने लगे।

उसी मसीत में हाजी वृंद ने विश्राम किया। परंतु हमारे गुरू देव श्री नानक देव मक्के की ओर पांव करके सो रहे। जब एक प्रहर रात्री शेष रही तो मसजिद का झाड़ू देने वाला-मुल्लां जीवण सफाई करने को आया, उस ने प्रथम दीपक जलाया। उस ने सोये पड़े सभी हाजियों को देखा। उस की दृष्टी गुरू नानक पर पड़ी जिनों ने मक्का की ओर पांव कर रखे थे, झाड़ू बरदार को बहुत क्रोध चढ़ आया। उस ने सोचा कि यह मक्का शरीफ की ओर पांव करने वाला कौन है ? उस ने लात प्रहार करके गुरू जी को कड़क कर कहा, अरे खुदा के जीव ! तू मुसलमान है या कोई काफर हिंदु है तुमें इतना भी ग्यान नहीं कि परमात्मा की ओर पांव करके सो रहा है, बाबा नानक देव ने कहा-हे जीव यदि हम भूल गये हैं तो आप हमारा पांव किसी और दिशा को कर दो। अब उस झाड़ू बरदार ने गुरू जी की लात पकड़ कर दूसरी ओर कर दी। परंतु तमाशा यह हुआ कि मक्का भी

उसी दिशा की ओर फिर गया। जिधर गुरू जी के पैर किये थे, मूरख जीव किसी महा पुरुष को शीघ्र नहीं पहिचान सकते झाड़ू बरदार तथा गुरू जी के मध्य जो बात हुई थी उस से कुछ हाजी यात्री भी जाग उठे मक्का फिराने के तमाशे को अचंभित होकर वे लोग देखने लगे उस झाड़ू बरदार ने अब गुरू जी को मारने की नीयत की और आगे बढ़ा फिर गुरू जी की लात अपमान से दूसरी तरफ़ कर दी। मतलब यह था कि जिधर २ गुरू जी के चर्ण होते थे, मक्का शरीफ उधर उधर को फिर जाता था।

अब उन लोगों की आंखें खुलीं, उस झाड़ू बरदार ने अब शोर मचाना प्रारंभ किया। कहने लगा, लोगो अब कयामत (प्रलय काल) का दिन निकट ही है, यह जो सोने वाला (नानक देव की और संकेत करके) नवागत हैं। यह कोई औलिया (महा पुरुष) हैं, अतः! यह बहु मूल्य व्यक्ति हैं। संसार में यह वली अर्थात अवतारी जीव है, अब नानक देव जी उठ कर हाथ मुंह धोने लगे,तथा मक्के की ओर मुख करके-राग बसंत का एक शब्द उच्चारण किया-

॥ राग बसंत-असटपदी ॥

नौ सत चौदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥
चारे दीवे चहु हाथि दीए ऐका ऐका वारी ॥ १ ॥
मिहरबान मधुसूदन माधो ऐसी सकति तुमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धमु करे सिकदारी ॥
धरती देग मिलै इकवेरा भागु तेरा भंडारी ॥ २ ॥
नासा बूरु होवै फिरि मंगे नारदु करे खुआरी ॥
लबु अंधेरा बंदी खाना औगुण पैरि लुहारी ॥ ३ ॥
पूंजी मार पवैनित मुदगर पाप करे कोटवारी ॥
भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुमारी ॥ ४ ॥
आदि पुरुष कउ अलहु कहीऐ सेखा आई वारी ॥
देवल देवतिआं करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥ ५ ॥

कूजा बांग निवाज मुसल्ला नील रूप बन वारी ॥
घर घर मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ ६ ॥
जेतू मीर महीपति साहिबु कुदरति कौण हमारी ॥
चारे कुंट सलामु कर हिगे घर घर सिफति तुमारी ॥ ७ ॥
तीरथ सिम्रिति पुनि दान किछु लाहा मिले दिहाड़ी ॥
नानक नाम मिले वडिआई मेका घड़ी समाली ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

जब यह अष्टपदी गुरू जी ने कही–तब वहां के जो प्रधान थे। उनों ने पूछा–कि यह हिंदी भाषा की कविता जो इस ने गाई है। हमें इस का अर्थ समझ में नहीं पड़ा। तब गुरू जी ने कहा–यह परमात्मा की स्तुति का गीत है। इसे चार पुस्तकें जानती हैं। और एक मक्का मदीना तीरथ है। जहां महादेव का लिंग है। सभी ओर ब्रहमा विश्नु और महादेव बिराजमान हैं। महादेव को बाबा आदम भी कहा जाता है। तथा पारवती को अम्मां हव्वा भी कहते हैं। वह हिंदू मुसलमानों का बजुर्ग है। आठ सठ तीर्थ तभी पवित्र हो सकते हैं। यदि चारों दिशाओं में ईश्वरीय शक्ति का पूजन हो, तथा हज्ज का दर्शण करें। इसी प्रकार दूसरे कहते हैं कि जब तक सुमेर कुमेर की प्रदक्षिणा नहीं होती तब तक पवित्रता नहीं है। मुसलमान हिंदू के तीर्थ की निंदा करते हैं और हिंदू मुसलमान के तीर्थ की निंदा करते हैं। दोनों ही परमात्मा के स्थान को बुरा कहते हैं। अब मैं (नानक) सरोद का अर्थ कहता हूँ–प्रथम वह परमात्मा ने अपनी शक्ति से नव खंड की रचना की और सात सितारे रचे। भलाई बुराई के साक्षी यही आसमान के देवता हैं। तथा चौदह तबक हैं। सात ऊपर हैं और सात ही नीचे हैं। १ बाद, २ आब, ३ खाक, ४ पवन यह चारों तत्व हैं। इनकी स्तुति चारों पुसतकों में है। यह चारों युगों के सरदार माने जाते हैं। ब्रहमा के चारों हाथों में हैं। ब्रहमा को जबराईल कहते हैं। तीन जातियें इनसाफ के शरीर से प्रकट की हैं। १ देवता २ राक्षस ३ आदमी। इन तीनों को तीनों **लोक दे दिये** ऊपर के चारों दीपक चारों युगों में उजाला करते हैं। **आठ**

हैं, ब्रहमा प्रकाश करता है। यह समस्त शक्ति उस मधु सूदन भगवान की है। हिंदू मुसलमान अहंकार करके तथा परस्पर निंदा से मरते हैं। दोनों एक पिता के पुत्र अपने अग्यान से परस्पर शिर फुटावल कर मरते हैं। तथा दोनों ही नर्क यात्रा करते हैं। कुछ मगरबी हैं। वे ब्राह्मण कहलाते हैं। और जो जनूनी हैं। वह क्षत्री कहलाते हैं। तथा कुछ वैश्य तथा शूद्र कहे जाते हैं यह ऊंच नीच का भेद परस्पर का डाला हुवा है। तथा न समझी तथा अग्यान से डाल रखा है। कोई शेख बना कोई सैय्यद तथा अन्य अनेकों भेद इस जीव ने स्वयं पैदा किये। तथा स्वयं उन से नफ़रत की, इन लोगों ने अपने२ फिरके के नवीन से नवीन स्थान बनाये, तथा एक दुसरे से बहुत दूर होते चले गये, एक ने एक नाम से ईश्वर का घर बनाया, तो दूसरे फिरके ने ईश्वर का दूसरा घर अपनी इच्छा का बनवा दिया। फिर वे एक दूसरे द्वारा बनाया हुवा ईश्वर का घर गिराने पर तैय्यार हो गये। तथा संसार के भीतर द्वेष की आग लग गई। अब परम पिता परमात्मा ने सभी मुक्त जीव एकत्र किये। और उन में से एक नानक को संसार में भेजा, ता कि द्वेषाग्नि को शांत किया जाय नानक को आग्या हुई जाओ अंधेरे संसार में सत्य का सूर्य चढ़ाओ। तथा गुम राहों को सुपथ पर चलाओ। जो सत्य मार्ग पर चलेगा। वही पार होगा। मनुष्य की बनाई हुई जाति उसके दरबार में कोई विशेषता नहीं रखती। एक ईश्वर के सिवाय किसी दूसरे की पूजा कुफर है, अर्थात असत्य की पूजा है, एक ईश्वर का पुजारी पवित्र है।

हे मीआं जीवण यहां तुमारी हकूमत है। ताकत है जो चाहो कर सकते हो, परंतु इतनां स्मर्ण रहे कि प्रत्येक घर में उस परमात्मा का निवास है, और उसी की शक्ति प्रत्येक स्थान पर आपना प्रभुत्व स्थापना किये है, इस स्थान पर तुमारा आधिपत्य एक भ्रांति है। तथा स्वप्न तुल्य है। यह भाषा भी तुमारी है, वह भी स्वप्न समान है, हिंदु जनता तुम से भय भीत रहती है, परमात्मा की आग्या है, धर्म ही मुझे प्यारा है। तेग तेग सदैव धर्म

की ही चलेगी, संसार में सभी वस्तु बनती है। परंतु भाग्य के विना उस का मिलना नहीं होता। हिरस अर्थात कामना इस का स्वभाव बढ़ना ही है, जो इसे बढ़ने से रोकता है। वही शूर है काम क्रोधादिक इस जीव के अत्यंत शत्रु हैं, जो इस का नाश करते हैं हे जीवण जी! बुराई का परिणाम बुरा है। तथा भलाई का परिणाम भला है। उस प्रभु के दर्बार में किसी भी लालच अथवा किसी सपारश के लिये कोई स्थान नहीं है, तुम उस आदि पुरुष को अल्लाह कहते हो। तथा हिंदुओं के माने हुवे देवी देवता आदिक उन के ऊपर आप लोगों ने मनुष्य शक्ति के प्रभाव से कर लगा रखा है। यह कीर्ति तुमारी इसी कलियुग में ही प्रचलित हुई है। पूजा-बांग मुसल्ला और जो नील रूप है। यह बनहारी जी का है। वही आप के घर घर में रमा हुवा है। इस समय इस प्रदेश की चारों दिशायें आप से झुकती है। क्यों कि तुमारे हाथ में शक्ति उसी परमात्मा की देन है। तुम इस समय के राजा हो, तथा जो हिंदु हैं वे आप लोगों की प्रजा के समान हैं। मैं नानक चारों कूंटों की यात्रा करके आरहा हूं। मैं तो चाहता हूँ कि वह परमात्मा मुझ से एक क्षणभर भी दूर न हो।

जीवन ने प्रभावित होकर कहा–हे नानक! तुम ने तो चारों पुसतकों को पढ़ा है। हम तो केवल एक ही को देखा है। तव गुरू जी ने कहा हे जीवण! फिर भी उस अपार का पार किसी से भी पाया नहीं गया। पृथिवी और आकाश सारा संसार बावा आदम का ही शरीर है। यह बिलकुल सत्य है कि सारा ब्रहमांड धरतो आसमान चांद सूर्य आदिक सभी उसी विराट पुरष का अंश है। उस आलम कवीर से सभी आलम शरीर उत्पन्न हुवे हैं। तमाम संसारिक वस्तु उसी के गुण गा रहे हैं। हिंदू मुसलमान उसी के हैं, मैं उसी की आग्या से यहां आया हूँ। आप लोग सभी ईश्वर के बनाये मानों। वैर विरोध मन से दूर करो। हराम हलाल का कटु अनुभव यह सिखाता है कि मन मरजो सदैव बुरी है। सत्य पुस्तकें कुछ और शिक्षा देती हैं तथा संसारी जीव कुछ और ही कर्तव्य करते **हैं**, ऐ इनसान **तुझे**

अपनी संभाल स्वयं करनी चाहीये। तथा संसार का भ्रमण करके देख। कि यहां क्या२ तमाशे हो रहे हैं। प्रत्येक जीव चराचर की रक्षा कर। हे मुल्लां जीवण ! हम तो संसार की इस अवस्था को देख कर हैरान रह गये हैं, जो कुछ पीछे आये हुए महा पुरुषों ने शिक्षा दी है। उस को हम ने जान बूझ कर भुला दिया है। तथा मन मर्यादा पर कमर बांधे चले जा रहे हैं। यदि हम उस परमात्मा का स्मर्ण ही नहीं करेंगे तो फिर वह अगोचर ईश्वर हमें किस प्रकार मिल सकेगा ? हम लोग उस अल्लाह के होते हुवे शैतान की शिक्षा पर अमल करते हैं। तो बताओ हमारा कल्याण किस प्रकार होगा ! हिंदू हो अथवा मुसलमान सभी अपने२ कर्म के अनुसार सुख दुःख तथा चौरासी लाख योनी को प्राप्त करेंगे। मुझे परमात्मा की आग्या हुई है। कि मैं संसारी जीवों को सन्मार्ग दिखाऊं। तथा एक परमात्मा की पूजा सिखाऊं। इस से पूर्व एक लाख अस्सी सहस्र पैगंबर तथा अवतार आये और अपना पवित्र उपदेश कर गये। फिर संसारी समय पा कर भूल गये हैं। और सच्चा मार्ग त्याग दिया है। चार पुस्तकों की माजूगी में भी पाप प्रधान हो रहा है। अब मुझे उसी महान शक्ति की आग्या हुई है। अतः मैं प्रभु आग्या पालन के लिये तथा अपना कर्तव्य पालन के लिये भ्रमण कर रहा हूं यदि मैं ऐसा न करूंगा तो महा प्रलय होने की संभावना है। अनेक वे भी यहां आए जो दीपक जलाते जलाते स्वयं जल कर अंधकार में मिल गये। और संसारी विषयों के जाल में स्वयं फँस गये। दूसरों को शांत करते२ स्वयं अग्नि में गिर गये। और भस्म सात हो गये। हज़रत मुहंमद जी ने अपने मज़हब के बहत्तर फिरके बांधे। और दश नाम सन्यासी तथा अनेक नाथ अनाथ रावल आये संसार में अनेकों पंथ चला कर चले गये। तथा अफरा तफरी के निशानात कायम हो गये। करना कुछ था हो कुछ और ही गया।

हे मुल्लां जीवण ! हमें झूठ को नेस्तो नाबूद करन का हुकम है। इसी हुकम की तामील कर वानें का संकल्प है। परमात्मा के सनमुख एक ही

मार्ग है। रोटी कपड़े तथा स्वार्थ के लिये अनेक मतों की दुकानें खुली हुई हैं। कहीं हिंदु की बहु संख्या से हिंदु मर्यादा हकूमत कर रही हैं। तो कहीं मुसलिम बहु संख्या से मुसलिम पद्धिती अपनाई जा रही है। होगा वही जो परमात्मा को स्वीकार होगा। न हिंदु की चलेगी और न मुसलमान की चलेगी यदि चलेगी तो उसी सर्व शक्तिमान की ही चलेगी। यह सत्य है। जो जैसा करेगा तैसा भरेगा। कोई किसी को छुडाने वाला नहीं है।

जीवनें मुल्लां को यह सुन कर कुछ तमक लगी। कहने लगा-देखो लोगो यह हिंदु नसीहत हमें करता है। पहिले तो इस ने मक्का फेर दिया है। और अब हमें पूर्वी किसम की शिक्षा दे रहा है। मुल्लां ने कहा-हे नानक! जो मक्का मदीना में तुझे कुफर नज़र आ रहा है। यह सभ का सभ तुमारे देश से आने वालों की करतूत का नतीजा है। इधर की ज़मीन पाक और पवित्र है। और हम लोग जो यहां निवास कहते है सभी पाक दामन हैं।

इतने में काजी रुकन दीन आ गया। और हज्ज की निमाज़ पढ़ने का समय हो गया। गुरू नानक और काजी रुकन दीन का मेल हुवा, तथा नीचे लिखे अनुसार वार्तालाप हुवा-

गुरू नानक-काज़ी साहिब! हम लोक आप के दर्शणों के लिये हज़ारों कोस दूर से आ रहे हैं। हमारा सामणा अन्य मज़ाहब के विद्वानों से हुवा है। हमारा दावा है। कि लिखने पढ़ने से कभी कल्याण नहीं होता, जब तक इनसान नेक अमल न करे। यही उस परवरदिगार का हुकम है, यह ज़माना अंतिम है। इस ज़माने में सिवाय ईश्वर की बंदगी के और कोई चारा नही है। बंदगी और नेक अमल यह दोनो चप्पू इनसान की नौकाको पार लगाने वाले हैं। हम ने आप के साथ एक दो बातें परमार्थ की करनी थी सो ईश्वर ने समय दे दिया है। मक्का मदीना गंगा जमना किसी भी स्थान पर नेकी और बंदगी काम आयेगी। यह निश्चय किया हुवा मेरा मत है। यदि किसी पवित्र स्थान पर यह इनसान बुराई करे तो

उसे बुराई का ही फल होगा। मुझे पूछा गया है कि तुम कौन हो। मैं हैरान हूँ कि मैं उत्तर क्या दूं। बाबा मैं इनसान हूँ तथा उस परमात्मा की आग्या से आया हूँ। तथा उसी का होता हुवा उसी का रूप हूँ। हिंदु मुसलमान तो यहां के बखेड़ों का नाम है। मैं पाक ज़ात होता हुवा, अपने निकट नापाकज़ी को क्यों आने दूं स्वतंत्र तथा लामहिदूद होता हूं। पराधीन और सीमा वद्ध क्यों बननें लगूं अर्बों का स्वामी लाख पति क्यों बनें। फिर मैं सर्व देशी ईश्वर को माननें वाला। उस परमात्मा को एक ही स्थान पर कैद क्यों मानूं। मैं चाहता हूँ कि हिंदु मुसलमान जो भी बंदगी करेगा। तथा जो उस के हुकम से कल्याण है। मनुष्य को उचित है। कि उस परमात्मा को सर्व व्यापक जानें। उस के लिये कोई विशेष सदनन कल्पना करे। तथा पीर पैगंबर अवतार देवता सभी अपने २ समय के हाकम हैं। उन की निंदा भी उचित नहीं। परंतु उस परमेश्वर की ज़ात सर्वोपरि है। पैसा आना दुवन्नी चुवन्नी। सभी कुछ न कुछ कार्य साधने में सामर्थ्य हैं। परंतु जिस के पास रुपया है। उसे छोटे सिकों की आवश्यकता नहीं। क्यों कि सभी साधनों को सिद्ध करने वाला रुपया जब प्राप्त हैं। तो उसी से सब काम हो सकते हैं। जो उस परमात्मा पर विश्वास नहीं करते। वहीं दौजख नर्क में जायेंगे। भले ही वह ब्राहमण हों चाहे सय्यद हों।

सच्ची बातें कड़वी होती हैं, मुल्लां जीवन को शिक्षा भली न लगी। तथा वह श्री गुरू जी का प्रभाव पड़ते देख कर ऊंची २ आवाज़ से तथा तमाक के साथ सूरे पढ़ने लग पड़ा।

॥ सुवाल मुल्लां जीवन सूरा ॥

हमद सनाई रब नौं दोइम नबी रसूल। सोइम चारों यार
होण पड़ कलमा कबूल। लिखिआ धुर दरगाह देह इको पाक
अलाइ। ऊपरि कलमा नबी दा पढ़िआं होइ पाक औराहि।
दूसरा फ़ील फरेसता कुद फूकसी करवाइ। तिस रोज़ महसर
डेहड़े पौसी गुल कहाइ। उडसी दुनिआं एत भांति जिऊं पैवें

दी कपाहि । पत सनि जिमि असमान दुइ रूह खास निवडे ताहि । काजी होसी आप रब मुफती नबी रसूल । पुछसन खोहल किताव नों नेक बदां सभ मूल । सभ छड पुछ सनि उमति जिन्हां किए सवाल अजाव । हजरत का फुरमाइआ लिखिआ विच किताव । तिस रोज़ महाशर जेहड़े होसनि सोइ खराव । जो दिती बांग न जागदे सुते पए नापाक । मुतड़ी थीए रब दे दर ते मिली तलाक । वे निमाज़ां ते सग भले जो कहिंदे राती जाग । ओइ करन अलह दी वंदगी जी वडे तिनाड़े भाग । हड पतीली काफरां पर औरत नाल मुहाव । ओइ वेला वखत न जाणदे नां किछ उमर किताब । दोशक सड़दे पाईए तन ते सहिन अज़ाव । अजराईल फरेशता आकर करे खराव । सुर शराव हमाम है बैजा भंग गुणाइ । जीवन शामत नफस दी पासन करे सजाइ ॥ जवाव गुरू नानक देव सूरे किया ॥ हमद सनाई रव्व नों वाइद ला शरीक । अवतारां पैग़ंवरां इक सकिआ न कर तहकीक । लख चौरासीह आलमा काए हैवान नवात । वाइद ला शरीक है नित मुखहु अलाहि जाय । वाइद ला शरीक है इक कादर पाक अलाहि । कुदरति लख रसूल हैन सच दरगाह पान न राह । कल्ला इक खुदाइ हैं कुदरत कई रसूल । जीवन नीअत रास कर दरगहि पवहि कबूल । लिखिआ धुर दरगाह दे एको पाक खुदाइ । दोइमु होइआ न होइगा जो हीया थीआ फनाहि । मुफ़ती कोइ न रव्व दा जो खोल्हे पास किताव । यार न कोइ अलह दा जो करे सुवाल जवाव । वाइद ला शरीक है काज़ी मुफ़ती आप । आपे खेल किताव नों आपे करे हिसाव । आपे वखश मिलाइंदा देइ सजाई आप । इको इक खुदाइ है जिस दा माइ न बाप । चांदी धोवे सुनिआर जिउं खोटे खरे मिलाइ । सिका

रलाइकै खोटे कढे जलाइ। हांडी चाढ़ जलाइसी आप सुनिआरा रब्ब। खोटे थीवसन खाकड़ी काइम खरे कर्तब्ब। जरबा लगसन खोटिआं पर खोटे किते न कम्म। साहिब ऐवें परखसी जिवें सराफां दम्म। खरे खजाने पौसनी खोटे दिचन डाल। खोटे मिलसन खाक नाल खासी जाइ खाल। नानक आखी जीवणा मुख ते सच अलाइ। रोज महशर जिहड़े पौसी गुल कहाइ। होसी किआमत दुनी पर अंत न ओड़क ताइ। तद काजी मुफ़ती को नहीं काजी आप अलाहि। गैर हिसाब न देखिआ रब्बानी दरगाहि। तलबां पहुसत आकीआं कीते जिनां गुनाहि ओइ पौसन दोजक हाविए गल संगल कोइ सिआहि। नेकां अमलां वालड़े देखसन पाक अलाहि। बद अमली जो करनगे होसी अंत फनाहि। अमली सोझी उत दिहि मिलि करसन बैठ सलाह। होर न होसी पास को इक होसी अलाह गुआहि। अमर रयाती भिशत विच पासन सच्च अलाइ। छुजसन सेई नानका मुरशद जिन्हां पमाहि। मुसलमान कहावन मुशकल जो होइ तां मुसलमान कहावै। अव्वल औल दीन कर मिठा मुसलमाना माल मुसावै। होइ मुसलम दीन मुहाणै मरण जीवन का भरम चुकावै। रब की रजाइ मन्नै सिर उपर करता मन्ने आप गवावै। होइ मुसलिम दीन मुहाणे मरण जीवण का भरम चुकावै। नानक सर्व जीआ मिह कंमत होवै तां मुसलमान कहावै।

॥ आइत ॥

मिहर मसीत सिदक मुसल्ला हक हलाल कुराणि। सरम सुणति सील रोजा होहु मुसलमाण। करणी काहबा सचु पीर कलमा करम निवाज। तसबी सातिस भावसी नानक रखौ लाज। मुसलमान मुसावै आप। सिदक सबूरी कलमा पाक। खड़ी न छोडै पड़ी न चाइ। सो मुसलमाण भिसत को जाइ।

॥ सूरा ॥

हक पराइआ नानका उस सूअर उस गाइ । गुर पीर हामा ता भरे जा मुरदार ना खाइ । गली भिसत ना जाईए छुटै सचु कमाइ । मारण पाहि हराम महि होइ हलाल न जाइ । नानक गली कुड़ीई कूड़ो पलै पाइ । जिना सचि पछानिआ पौसन भिसती जाइ । हक हलाली खावणा सचु तिनाड़े भाइ । जोर न कीसै किसी पर उत्तम मधम न कोई । हिंदू मुसलमान नों दुहां नसीहत होई । दइआ कपाह संतोख सूतु जत गंढी सत वट । एह जनेउ जीअ का हई तां पांडे घतु । ना इह तुटै न मलु लागै न इह जलै न जाइ । धन्न सु मानस नानका जो गलि चलै पाइ । चउकड़ मुलि अणाइआ बहि चौके पाइआ । सिखा कनीं चढ़ाइआ गुर ब्राह्मण थीआ । ओहु मुआ ओहु झड़ी पइआ वेतगा गइआ । लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़िआ लख गालि । लख ठगीआ पहिनामीआ रात दिनसु जीअ नाल । तगु कपाहहु कतीऐ बामणु वटै आइ । कुहि बकरा रिंनि खाइआ सभ को आखे पाइ । होइ पुराणा सुटीऐ भी फिर पाइऐ होरु । नानक तगु न तुटई जो तगु होवै जोरु । नाइ मनिऐ पति उपजै सालाही सचु सूत । दरगहि अंदरहि पाइऐ तगु न तूटस पूत । तगु न इंद्री तगु न नारी । भलके थुक पवे नित दाहड़ी । तगु न पैरी तगु न हथी । तगु न जिहवा तगु न अखी । वेतगा आपे वतै । वटि धागे अवरा घतै । लै भाड़ि करे वीआहु । कढि कागल दसे राहु । सुणि वेखहु लोका विडाणु । मन अंधा नाउ सुजाणु । जे मोहा का घरु मुहै घरु मुहि पितरी देह । अगै वसत सिंञाणीऐ पितरी चोरि करेइ । वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ । नानक अगै सो मिलै जि खटे घालै देइ ।

॥ भाव ॥

तगु न हिंदु पाइआ तगु न मुसलमान । दोवें भूले राह ते गालब भया शैतान । हिंदु संगल सत दा तिस का भौ नहीं कोई । भावै चौक बिच भावै बाहिर होइ । हिंदु बद्धा सूत सिऊ तिन कउ छुटन असान । तिकल संगल शरे दा छुटे मुसलमान । कंधी जीऊ दरया इदि दीन किनारे दोइ । आपो आपणे दीन बिच बधे दिस्सन सोइ । हिंदु बंधन जो कटे कोइ न सके तोड़ । बंधन कटे तुरक जे मारन पिंड अधोड़ । बंधन चंगा सूत दा तुटे पाया होर । जे बंधन तुटे तुरक दा तां काफर होइ नकोर । करमी बंधे जे मरन मर फिरि आवहि जाहि । खुले बंधन जे मरन फिरि जनम मरण न ताहि । सुन्नत हिंदु तुरक दी काने सुनीऐ दोइ । सुन्नत बाझों जीवणां हिंदु तुरक न कोइ । आलत कटीऐ तुरक दी हिंदु गोश छिदाइ । जबर लगासणि आपनी निआरा रहिआ खुदाइ । हिंदु मुसलमान दोइ दर गहि लहनि न जाइ । फैल फकर जहान विच हिंदु तुरक कहाइ । कलजुग विच मन सूख हैन हिंदु मुसलमान । तीजा दीन चलाइआ मुसकल थीआ असान ।

॥ सुवाल रुकन दीन काज़ी ॥

आखे काजी रुकन दीन सुण नानक दरवेश । ऐथों कलमें पाक जो सो अलह दे दरवेश । अवल नाइ खुदाइ दा दोयम नबी रसूल । नानक कलमा याद कर दरगह पवे कबूल । लिखिआ धुर दरगाह दा हिरस नाफ न कोइ ॥ कहै मुहम्द उमती कलमा पाक बुगोइ । साहिब का फुरमाइआ लिखिआ विच किताब । दोजक जलदे ना पवन जो पढ़दे कलमां पाक । त्रीहे रोजे जो रखण पंजे वकत निमाज । भिसत तिनां को रोजड़ी लत्थे सभ

अजाव । आतश दोजक हाविए काफर नित्त जलन । मुसलमान मुसलमी जे खाकू संग मिलंन । काइम होइ किआमती वत न आवन जान । रुकनल रूह नि आसती जे सावत रखे ईमान ।

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव जी ॥

सुन हो काजी रुकन दीन आखी नानक शाह । जिनां ईमान सलामती से दरगह पाइन राह । अव्वल नाइ खुदाइ दा केते नबी रसूल । रुकनल नीअति रास कर दरगह पवें कबूल । लिखिआ दर खुदाइ दे हिकस बाझ न कोइ । दूजी कुदरति साजि कै रंग दिखाइ सोइ । इक्दर दात लखि लखहु लख असंख । नानक कीमति ना पवै साहिब अगम बिअंत । आदम हवा सिरजिआ कुदरति बंदे दोइ । दूही हथ उपजी मेदनी जीअ जंत अलोइ । केते नूर मुहम्मदी डिठे नबी रसूल ॥ नानक कुदरति देख कर खुदी गई सभ भूल । अला वाली दरगाह दा अंत ना पारा वार । कई असंखां तबक कर बिअंत बेशुमार ॥ इको दर दरगाह इक इको पाक खुदाइ। दूजी कुदरत साज के होआ बेपर वाहि । इको आशक आप होर माशूक ना कोइ । कुदरति कई मशूक है दावा करदे सोइ । साहिब कदी नां देखिआ सभ कुदरति नों लपटाइ । कुदरति अंत न पावनो फिर फिर धके खाइ । केते लख पैकंबरां मर फिर होवै खाक । खाकु ते फिर ऊपजहि कई असंखा लाख । जितु दर लख मुहम्मद लख ब्रहमा बिशन महेश । लख लख राम वढीरी अहि लख राहीं लख वेस ॥ लख लख ओथे जती है सती अहु ते सनिआस । लख लख ओथै गोरखा लख लख नाथां नाथ । लख लख ओथै आसनां गुर चेले रहिरास ॥ लख लख देवी देवते लख दानों लख निवास । लख पीर पैकंबर अउलीए लख काजी मुलां सेख । किसै सांत न आईआ बिन सतगुर के उपदेश । साधिक सिद्ध अगणत है केते लख अपार । एतड़िआं अपवित्र हैं बिन सतिगुर के सबद वीचार । सिर नाथा दे एक नाथ सतिनाम करतार । नानक ताकी **कीमत** ना पवै **बेअंत**

बेसुमार । लख लख जोगी जुगत कर लखां संत महंत । लख धरती आकाश हैन पुरीआ लख अनंत । लख लख कूरम मछि कछि लख लख भए बराह । लख लख उथै नर सिंघ बावन लख अलाह । राम क्रिशन अगणति हैं बोधि कलंकी लख । आवण जावण हुकम विच करते आंख फरक । केतड़िआ अवतार लख वीते अंत न पार । केती होईआ उमती किछु अंत न पारावार । लख पीर पैकंबर अउलीए गउस कुतब लख पीर । तरसण खड़े दीदार नूं दिसन खड़े जहीर । नानक सचा पातशाह सिर शाहां पातशाह । काइम दाइम कुदरति कादर बेपरवाह । ब्रहमे आइन आखदे बेद पड़हि मुख चार ॥ बिसन किसन कई बपड़े हुकमी धरहि अवतार । सिव पुरान दर खड़े देवी देव असंख । अपुठे होवहि झुर मरहि सच सदा बखसंद चार कतेबां सोधीआं सोधे चारों बेद । सोधी नउ खंड प्रिथवी बहु बिध होए भेद । साहिब हिको राह वख हिंदू मुसलमान । दावे उते लड़ मरे रहिआ खुदाइ अमान । नानक दावा छडिआ जग विच वरतै खैर । ना काहूँ सो दोसती ना काहू सो बैर । ना आखै रुकनदीन सचे सुणो जवाब । साहिब का फुरमाइआ लिखिआ विच किताब । आतश दोज़क हावीए पाइआ तिनां नसीब । भिसति हलाली खावणा कीता जिनां पलीत । मुसलमान मुसलमी जो जुसे विच मरंनि । काइम होइ किआमति फेर न जनम धरंनि । नानक आखे रुकनदीन कलमा सच पछान । इको रूह अमानती जो साबत रखे ईमान । मुसलमान खुदाइ के हिंदू आखन राम । दुहां दावा पकड़िआ गालब भइआ शैतान । हिंदू मूरति निरमली मुसलमानी पार । अमल उपर निबड़े सहे निमाणी खाक । आपे साज निवाजदा आपे करे फनाहि । काइमा दाइम कुदरति सचे बेपरवाहि । नानक साहिब एक है होर शैतानी राह । सवा लख पैकंबरा आए दुनीआ माहि । आपो आपणी नौबती सभो चलाए राह । ऐथे ओथे एक है दूजा नाही कोइ । दूजा आप जनाइकै गए सबहि होइ । नीचा अंदरि नीच जात नीचीहू अति नीच । जिथे नीच समालीअनि उथै नदर तेरी बखसीस । बाद पीर अंबीरदर खाक सिवाद

जान । दाई दाइआ रोज सब खेले सगल जहान । नेकी बदी बखानीऐ मलकल मौत हजूर । अमली आपो आपणी के नेड़े को दूर । जिना हुकम पछानिआ चले मसकत घाल । नानक ते मुख उजलै केती छुटी नाल ॥५॥

॥ सुवाल रुकन दीन सूरा ॥

आखे रुकनल नानका रहे रसूल खुदाइ । जो कोइ करे बुरिआइआं सोईलहे सजाइ । इको इक वरताइदा होर किन नो पुछो जाइ । हुकम पछाणै खसम दा आया सो परवान । नानक ताको ताक है इको रूह अमान । वेड़ी जिऔं दरयादी रहणे मुहाणे पीर । बन्नण पंड जगातीए बहुत मुरीद बतीर । पुछन खोलि जगातिए मंगन माल जगात । देनी आई तिनां को जिनी कमाए पाप । बन्नण पुल दरयावदे पातशाह पातशाहि । लंघै अगणती मेदनी पुछ न सके अगाहि । लंघे सबाही उमती लख असंखां पूर । अमल आपो अपणी को नेड़े को दूर । जिनी नाम धिआइआ सो जग विच पातशाह अमली आपो आपणी लेखे मिलै सजाई । कटिक गए घर आपणे पातशाह गए दरबार । चोर मिले विच वंदीए रईयत गई घर बारि बाजारी बाजार विच उना आइ लाए बाजार । करन किसै बस दातीए किसा खानी जाइ । नच्चन भंड अताइआं ताके संग बणाइ । वाचन पंडत पोथीआं गीता भगवत गाइ । मुल्लां पढ़न रसालड़े करन सरोद हि हाइ । आपो आपणी कार वार लगी सभे जाइ । पूरे गुरमुखि भौजलों लाइ त्तरणी घति लंघाइ । सुणाइ कन्नी पुरस लात वालों निकी कराइ । खंडे कोलों तिखड़ी अग लोहे जिऊं तपाइ । भले वही नदी पूरंत दो उथे लेत गिराइ । सरप अठूएं विच फिर जो कटि कटि पापीआं खाइ । पीड़ सड़े लई वेड़ीऐ सद लैणा मुरीद वैठाइ चोर उचक्के लालची हराम खोर वदाहि ठग घट थारे राह जनि लाइ तवारी खाहि । वे उसताद वे मुरशदां इनां मिलदी बहुत सजाइ ।लूण हरामी किरत घण ओना लगे कहाइ ॥ कूटणीआं अते लोलीआं इनां रूहां वडी सजाइ । करके जोर गरीब पर माइआ लैण छपाइ । रख पराई

अमानती जद मंगे मुकर पाइ। खस लैन पराई जिमी नूं दे वडी सचा कहाइ॥ करके लेखा कूड़ दा लैंदे दरब भुलाइ। इना कौमां जामन को नहीं तार उते देन चढ़ाइ। कट उतारे पुरसलात बहु कूके करहि कहाइ। कट के फेर सवारीअनि राह वत उते ही पाइ। केते ही असंख जुगां विच भौजल लहन सजाइ। बीते असंखां चौकड़ी फिर सटिअन धरती पाइ। लख चौरासी जोन विच भंबल भुसे खाइ। वडे भागां नाल ही आदम देही पाइ। मानस देही पाइके सिर साहिब करे न याद। अंदरो कपटी भऊ सुख निऊंदा जिवें कमान। तोपची निवें बंदूकलै लैंदा मिरगे मार। कटे घुंड हरमडी निव बेमुख करन संघार। अंदर होवस सच जे भावें होस कि नाहि। ओह दरगाह अंदर सुर खरू अमृत फल चुणि खाइ। को विरला मागर सच दे कोटी मधे होइ। सैंईं हजारीं नाल हां लखी न पाईऐ सोइ। जिऊं पारस अंदर पत्थरां जिऊं पार जात बन आहि। जिऊं गौआं अंदर काम धेनु तिऊं साधु मानुख माहि। कोई लख न हंघई साधू चलत अपार। जोइ सिआनै इकतू तउ ओहभी साध बिचार। नातर सभा दगे बाज़ बैठे जाल विछाइ। पाया मूलों विछाइ के फिर माया लैन फहाइ। सभ बैठे जाल विछाइ के को फासे ऐथे आइ। इक मुरग अवेहे आंवदे लै जांदे जाल उडाइ। बच कच आपने वास्ते सिर लैंदे पाप अफार। बजर पाप न उतरनि रसातुल खड़न पतार। कौडी तुल हलाल दी नहीं दमड़ा कोट हराम। कौडी अखुट भंडार है। कोट दरभ न कतहु काम। जैसी चिणग अनार दी वण खंड सकल जलाइ। रंचक सिमरण प्रभु को कोटि पाप जल जाइ। पापी बहु परकार के उत्तम मधम जान। हतिआ षट परकार है मन महि लेहु पछाण। गौ ब्राहमन मारीऐ गोतरि हति कराइ। रिण हतिआ कन्या हत्या विसवास घात अधकाइ। कोटि छिनवें पाप सम हत्या एक कहाइ। षट हतिआ के तुल्ल है गुर ते सिख फिर जाइ। विसास घात इक कोट सम हते माई अर बाप। और हतिआ सभ उतर इस हतिआ नहीं जात। कोट पाप के तुल्ल है अकृत घन नर जोइ। महां पातकी जाणीए जो रवे पराई नार। ए सभे पाप इकत्तर

कर जेते वरतन लोइ । अदिसटि वीचारे देखके सभ पाप चड़े सिर सोइ । साइयां निंदक ना मरे जीवै वरस अपार । सभ पापी दा फेड़िआ निंदक के सिर भार । पढ़न कुरान पुरान वहु भेद न पावैं कोइ । चार कतेबां बेद चार पढ़ गुण चले रोइ । मुल्लां बांग नमाज कर अहिनिसि करहि पुकार । खलकत कूक सुणाइदे लहे न आपन सार । पढ़िआ न पावे भेदं किहु बुझिआ सोई पाइ । जिन बुझिआ तिन सूझिआ साचा इकु खुदाइ । मोटी पगड़ी वनके लम्मा शमला खोल्ह । लुकमा खावन रिशवती कहन दरोगी वोल । छड्डन राह किताब दा पढ़न राह शैतान । दुनीआं दोज़क जल मरण किआमत होइ हराम । लख चौरासी उमती सिरजी आप अलाह । गूना गुन उपाइके कीतीअसु फेर सलाह । इको पाक खुदाइ हैं सिर शाहां पाति शाह । विनां वजीरे राज है अगंम विअंत अथाह । दूजी क़ुदरति साज के कीती आदम रूप । कान हैवाने नवात है त्रै सिर तीनों के भूप । खासे वंदे कुदरती सिरजे खुद कतीर । सिफत करन किताब पढ़ सभ उपर सिरदार । इकदू आदम लख कर लखों लख असंख । इक जुसा रूह इक राह शतान विअंत । सभनी राहीं इक रव कुदरत कई रसूल । इको इक खुदाइ नूं मने पवैं कबूल । वंदे इक खुदाइ दे हिंदू मुसलमान । दावा राम रसूल कर लड़दे वेईमान । जोरां कुफ़र हराम है किसे न करहु रंजूल । जेती दुनीआं वंदगी दरगह पवे कबूल । खासा जुसा आदमी चुणिआं सभनां माहि । देवे खबर खुदाइ दी वेद कतेव सुनाइ । दावा छडो मोमनो दरगह पवो कबूल । चार कतेवां हिंदूआं चारे करे रसूल । इको नूर खुदाइ है इको आदम रूह । जान वूझ दावा करहि पवहि कुफर के खूह । इको पाक खुदाइ है इको तसवी हाथ । मणके इकसे रंग कुफर दिखाया लाख । जीवतिआं मारहि जीअ कउ तिह पर छुरी हराम । मार मुरदिआं पाक हलाक है कुठी रवा कलाम । जिस नों कोई मारसी सो भी मारन हार । किआमती लेखा निवड़े छुटै किवै न यार । इकस आदमी वाहरी सभे शई हलाल । रव्व रजाई जे मरहि तिन पर कही कलाम । जितनी उम्मत रव दी अरवानासर माहि । कान हैवान

नबात त्रै चौथा इनस कहाइ। सभना इको रूह हैं पंज तन पाक खुदाइ। बाझ अलाह दी बंदगी पहिरे खाइ गुनाहि । काइम दाइम कुदरती इक उपाइ अलाइ। चौपड़ बाजी खलक दी फिर फिर आवै जाइ।

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल आखै नानक सच्च कतेब कुरान। त्रै कतेब मनसूख है चाथा मन्न फुरकान। हुकम न चलै त्रैहां दा मंन्नन मुसलमान। एका एकी होइ रहै साबत रख ईमान।

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

नानक आखै रुकन दीन पढ़के देख किताब। चार कितेबा चार जुग सभ मजहब विच आप। चार कितेबां चहु जुगी कैंहदे आद जुगाद । त्रै रचीआं तुहि रुकन दीन तिसते लगहि अज़ाब। मन्न अलहदे कौल नों मन्न कतेबां चार। अरबा नासर मन्न तू जो चार अलाह दे यार । चार कौल खुदाइ दे चारों मजहब एक। चौहां विच खुदाइ है एका एकी वेख । ब्राहमण च्त्री वैश शूदर चारों वरण पछान। आपो आपणी तौबती चल जाइ नीसान। चारे जागे चहु जुगी चौहां चलाए राह चारे वेख जहान विच रख ईमान खुदाइ। खुदी न किसै मेटीआ करदे खिचोताए। आड़ा गोड़ी नित करहि हिंदु मुसलमान। कादर किने न देखिआ कुदरति गरब गुमान। दावे उते लड़ मरहि पढ़न कुरान पुरान। केते लख पैगंबरां उम्मत लख अलोइ। कलमा इक खुदाइ है दूजी दरोग बगोइ। वाहद ला शरीक है। उह पाको पाक खुदाइ। नाहि नमूना जिसदा बेचगून कहाइ । किसे नाल ना बोलदा दूआ न होइ। नानक आखै रुकन दीन अलहयार न कोइ । चारों यार खुदाइ दे अरबानासर भाल । बादी आबी आतशी खाक निसाणी नाल। पंजवां रूह मिलाइके होइ पंज तन पाक। चहुं ते बाहर जो रहै तिनां कउ नापाक। इकना मशरक थापिआ इकनां मनिआं गरूब। इक जनूब मनाइदे रही शमाल दरूद त्रैये कुंडां भालीए त्रैये सोधे भेद। तौरेत

अंजील जंबूर त्रै पढ़ सुण डिठे वेद । जिस गुण देह न पाइसी जिस कउ भइआ नसीब । नानक कलजुग तारने परगट भइआ रसीद । वेद अथरवण बाहरे जो को करम करे । तिस पर ग़ज़ब शैतान दा रब्ब न ढोई देइ । ना हिसे गोती तरपणों रोज़ा नाहि निमाज। अमलां बाहजों मोमनों दोजक दुनी अजाब । दोज़क दुनीआं कारने अहिनिसि फिरहि रंजूल । करम निमाज़ां बहु करै पवै न काइ कबूल । दुखी दुनी सहेड़ीऐ जा इत लगहि दुख । नानक सचे नाम त्रिन किसे न लथी भुख । दूजी दुनीआं कुफर है अंदर रखहि छपाइ । सच इसलाम खुदाइ है कूकर वांग अलाइ । कूकर ढोल वजाइके रबाब मिरदंगां नाल। नच नच नाम पुकारदे दे दे पूरहि ताल। कूकन जल्ली पाइके हिंदू मुसलमान । रब्ब न सुनदा इक गल्ल झख झख मुए अजान । काफरां झूठी वंदगी बुरिआई करम निमाज़ । सचे मारहि झूठ पर काजी करहि अकाज । दीन गुवाया दुनी सियो दुनी न चाली साथ । दुनियां दोजक जल मुई भई असंख नपाक । शरा शरीअत सोधके हराम हलाल पछान । करो अदालत सच की राह शरीअत मान । पाईऐराह सरीअते करके अमल विचार।पहुंचे हक हकीकते मारफती मनमार। मन मुआ आलम मूआ चाहि अचाहि मर जाइ । हुकम पछाणे रब्ब दा सचै महिल समाइ । सच पुराणा ना थीऐ नाम न मैला होई । सचो ओरे सभ को सभ थक रही खलोइ।सुणीऐ काज़ी रुकनदीन पढ़के वेख कुरान।इको राह आह अमानती जे सावत रखे ईमान । एथै ओथै दोहीं जग थापे दोइ जहान । एथै देहि ओथै लै गल्लां होर शैतान । जेहा बीजै सो लुणै जो खटै सो खाइ । अमली आपो आपणी लेखै मिलै सजाइ । मिटी मुसलमान की पेड़े भई कुंभार । घड़ि भांडे इटा कीआं जलदी करे पुकार । जल जल रोवै बपुड़ी झड़ झड़ पवहि अंगार । नानक जिन करते कारन कीआ सो जाणै करतार । अव्वल दुशमण नफस है दूजा है शैतान । तीजा दुशमण दुनी है करदी गरव गुमान । चौथा दुशमण खाब है जपण न देंदी नाम पंजवां दुशमण कोड़मा जिस सेती गलतान । छेवां दुशमन ताम है जिस

बाझों हैरान। नानक एते वैरी हुंदे सो किंओं कर रहे ईमान। साबत रखन रूह नों तऊ साबत ईमान। बाझों सचे नाम दे फकड़ सभ जहान। पंज हवास खवीस हन साबत करन न दीन। रूह न कायम लै उडन अमलां बाझों हीन। साहिब का फरमाइआ लिखिआ विच किताब। बिना इबादत बंदगी होर अमल शैतान। नानक नाउं खुदाइ दा दिल हछै मुखि लेइ। अवर दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेइ। खाकी बुत बणाइआ खाके मिलसी जाइ जीवन खाकी होइ नहे फिर खाक न तिसे खाइ।के लैआयों मोमनों फिर तूं के लै जाइ। थोरै जीवन कारने बुरे न अमल कमाइ। नानक दुनीआं भसु रंग भसुहू भसु खेहि। भसो भस कमाईऐ भी भस भरीऐ देहि। जां रूह विचों कढीऐ भसु भरिआ जाइ। अगै लेखै मंगीऐ होर दसूणी पाइ॥८॥

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

आखे रुकनल नानका लिखिआ विच कुरान। आइआ मुहंमद मुसतफा खासा मुसलमान। जुस्सा धरि उस पाक दा साया उस नू मूल। माया जुसीं सभनी थाईं बाझों पाक रसूल। नूरी जुसा नबी दा मखी बहे न मूल।कायम रहसी किआमती माहि नबी रसूल। दुनिआं अंदर आया दौर क्रियामत माहिं। कलमा पाक सुनाइआ उमतीं भिस्त कराहिं।

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक रुकनदीन नूरी इक खुदाइ। होर नां कोई होइआ जग विच तुल अलाइ। खाकी जुसा आदमी साए बिना न कोइ। जिनां साया रब्ब दा रहे निमाणे होइ। कायम नाउं किआमती जुसा रलसी खाक। नानक आइआ दुनी विच मुखो अलाइआ ताक। कलमा इको रब्ब है दूजा रिहा न कोइ। सिफती कई मुहमदी चले सभे रोई। काइम देइ न रखीआ जग विच किसे न मूल। पढ़ना गुढ़ना रहि गिआ घेरे दुनी नपाक। रूह विच दोजक जल मुआ जलत पुकारे खाक। जीवत रह्वे आतशे दोजक

धरिआं नाउं। दोजक दुनिआं बंदगी जिउं अगनी झलूठे काउं। राखन जुसा पाक वहु अंदरों मैल न जाइ। बाझ निताड़े किरवती बाझ इबादत नाहि। चार कतेबी इक है चारों कौल खुदाइ। चारों कदम सबद दे काजी दिल विच लाइ। अव्वल दुनी मुसलमी दूजी खराइत जान। तीजी नीयत रास कर हरम हलाल पछान। चौथा होइ महिमान रहु जनम मरन भौ डार। होत सवाब मुसलमी जलदी उमत तार। चार वरण चार मजहवा इको नर खुदाइ॥ दूजा होया न होयगा नानक सच अलाइ। नानक आखे रुकनदीन सचा सुनहु जवाब। चारों कूंट सलाम कर तां तुहि होइ सवाव। खालक आदम सिरजिआ आलम वडा कवीर। काइम दाइम कुदरती सिर पीरां दे पीर। तिस विच आलम बहुत है आवे जाइ अनंत। आलम वडा सलामती कोइ न जाणै अंत। आफ़ताव महिताव दुई इह आदत के नेत। एनां वाझ न सुझई नानक कहे बिबेक। चरख फिरे असमान विच रैन दिवस के माहि। सभो फिरतिआं उम्मती लख चौरासी आहि। सयदे करे खुदाइ नूं आलम वडा कवीर। निउंदा चारे कूंट को जानण पीर फ़कीर। काइम कुरसी अरश है कुतव सतारा एक। तूं भी कायम रुकनदीन जे सभ महि जाणहि एक। वेख तौरेत अंजील नूं जंबूरे फ़ुरकान। एहो चार कतेब हन पढ़ के वेद कुरान। झूठी रसम कतेब दी करहु न कोई कबूल। ऐसी कहनी जो रहै सांईं पाक रसूल। खावन कसम कुरान दी कारन दुनी हराम। आतश अंदर साड़ीयन आखे नवी कलाम।

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन ॥

सुनहु नानक पीर जी आखे रुकन दीन। आया मुहम्मद मुस्तफा सावत करन यकीन। सावत कीतो सु दीननों पढ़ कर कलमा पाक। काफर सावत न थीए विच आतश जलन नपाक। हूरां परीआं भिसत ए होइ न उह महसूर। पौसन दोजक हावीए सुणसी नवी न धरूम। मुसलमानी पाक है पढ़न कतेव कुरान। करन नमाजा रोजड़े दोजक तिनां हराम ॥२१॥

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

आखी नानक रुक्न दीन सच्चे सुनहु जुवाब । कई मुहम्मद मुसतफा मोइ विच अज़ाब । साबत दीन न कर सकिआ मर मर होइ खाक।खाकू फेर जलाइआं घड़ घड़ भांडे पाक। इकना दुध समाइऐ इकना विच पेशाब। गूनां गून निआमतीं कई इलामत साज । मिटी मुसलमान दी विच आतश लए अजाब । कलमा रिहा किनारड़े जल बल होए खाक । आतश बाझ सुधारे केते नबी रसूल । जलदे दोजक हावीए तोबानपवे कबूल । किथे निमाजां रोजड़े किथे सुभिस्तां हूर । किथे से पढ़न कुरानड़े जल बल होए धूर । अगे न मुसलम नबी काफर नाहि दिसन्न । जलदे दिस्सन दोज के खाकु विच मिलन्न । खुदी तकब्बरी कर मुए साबत भया न दीन । दुनीयां दोजक जल मरन से क्यों कर करे यकीन । लिखिआ दर दरगाह दे इकस बाझ न कोइ । केते लख मुहम्मदी लहिन न ऊना सोइ । रोंदी डिठी एमना वाइ मुहम्मद वाइ । बाझ मुहम्मद मुस्तफा रोवे हाइ हाइ । आई अंदर खाब दे डिठी अन दरगह नूर । दिस्सन आइओ मुस्तफां रोइ रोइ भई मनूर। कीता सुफेर अवाजड़ा हाइ मुहम्मद हाइ । मैनुं देह जुवाब कोइ रोवे करे कहाइ । केते लख मुहमंद अगो उठे पुकार । केहड़ा पुछदीए मुस्तफा फिरहि असंख अपार । ओड़क अंत पाई है केते जबराईल।सभो अंदर हुकम दे केते मेकाईल । कई असंख फरेशते मलकुल मौत बेअंत । तरसन सच्च आलाइते राखस जिन्न असंख । डिठोसु एह मुशाहदा होइ रही हैरान । एथे कोई ना जानदा दुनीआं फ़ानी जहान । रूहां विरसन दिसनी दोज़क दिसे न कोइ । जीवदिआं दी साहिबी मोइआं खबर न होइ । मोए खाकू संग मिले अरवा नासर माहि । सो भी फेर जमाइओन गूना गून रखाहि । कूड़ा दावा रहि गिआ बाद मेरे संसार । हिंदू मुसलमान दुई जल बल होइ छार । दूजा आखन शक है ना को होआ न होइ। इको पाक खुदाइ है रवि रिहा सभ लोइ । नहीं मुहंमद मुस्तफा नाहीं को औतार । नहीं पीर पैकंबर

औलीये गौस कुतव सलार। जीवदिआं सभ दिस्सनी मोइआं दिसे स कोइ। नानक बाज़ी कूड़ दी आखर कूड़ी होइ। इह सभ जुसे खाक दे धरती अते असमान। चौदह तवक ना रहिसनी आखर फानी जान। बादी आबी आतशी चौथी खाकी नाल। मर मर फिर फिर उपजनी जी जंत वस काल। एह सभ वंदे हुकम दे हुकमी आवन जान। हुकम ना बुझन नानका खप खप मरन अजान।

॥ सुवाल काज़ी रुकनदीन सूरा ॥

आखी रुकनल नानका लिखिआ विच कुरान। चौदह तवक जहान विच ज़िमी अते असमान। तिस विच नूर मुहम्मदी रोशन वले चराग़। जिती उम्मत नवी दी तिनां दोज़क आंच न लाग। रहे कुरावो बाहरे तिनां नवी भरे सफात। उह पाकां विच न लिखीअन रहे सदा नापाक ॥ १३ ॥

॥ ज़ुवाब गुरू नानक देव ॥

नानक आखी रुकनदीन सचा सुनहु सुवाल। असमानां असमान लख पातालां पाताल। केते नूर मुहंमदी रौशन वले चराग। जो लोड़दे दुनीआं दावड़े विच सड़दे दोज़क आग।गूना गून कुनारवे गूना गून रसूल।गूना गूनी उम्मती वहि बहि करन मलूल। नूर मुहंमद केतड़े पीर मुहंमद लख। लख मुहंमद मुस्तफ़ा विच होत अख फरख। नावां थाव न गिन सकां डिठे नवी रसूल। मज़हव कई असंख लख गिणे न जाही मूल।मक्के डिठे कई लख लख मदीने नाल। हाजी कई असंख लख गूना गून संभाल। वेद विआस असंख लख करदे वेद वीचार। इकसे इकसे तवक विच कई असंख औतार। लख असंखां तवक विच केतड़िआं अवतार। पीर पैकंबर केतड़े गौस तुवक सालार। फिरन तवक असमान विच चशमी देख पसार। उथै पैगंवर कई लख कई लख असंख औतार। फिरदे रैंहदे रोज भी हुकम अलाह दे नाल। असंख औतार पैगंबरां फिरदे हेठ पाताल। रुकनल काजी केतड़े मोन दीन मादार। हजरत पीरां केतड़े पीरां दे सरदार। शाह शहीदां केतड़े सरवर

अंत न पार। उमर खताब अबू बकर शेर अली अपार। डिठे लख असमान में चारे यार असंख। नानक अंत न जापनी अलख पार बिअंत। कई असंख अमाम हैं शाह शहाब अनेक। सबनां के सिर इक रब अलख अपार अलेख। नारद सारद केतड़ें विश्वा मित्र वसिष्ट। कई मछंदर गोरखा कई असंख सरिष्ट। चरपट भरथर केतड़े ईशर गोपी चंद। दत्तात्रेय असंख हैं केते रामा नंद। सिध चौरासी मंडलीआं फिरदीआं लख अपार। इह सभे सनमुख हैं बाझहु लख अपार। बेद कतेबां केतड़े बहि बहि करन बिचार। गूना गून नसीहतां गूना गून कतार। गूना गून पैकंबरां गूना गून कुरान। गूना गून रसालड़े गूना गून कलाम। कलजुग नानक निरमला पंथ चलाया आइ। बेद कतेबां बहिरा इको जात खुदाइ। टिबे टोए दुनी तों कीते ढाइ मैदान। कीता है मन सूख सभ सच्च रत्त चौगान ॥१४॥

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

आखी रुकनल नानका तुद विच वड करामात। कीते ने मन सूख सभ बाझों अलाह पाक। जिती परदे दुनी दे डिठे नी सभ उपाइ। कोइ न किसे जाणसी बाझों पाक अलाइ। बिनां खलीफ़े मुरशदे कोई न पवै कबूल बिना अमाम पैकंबरों बाझों यार रसूल। उमती थांइं न पावनी बिना रसूल खुदाइ। लिखिआ विच कुरान दे जबराईल गुवाहि।

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव जी ॥

आखी नानक रुकन दीन इको पाक खुदाइ। दूजी कुदरत कूड़ है अलह आप गुआहि। जिचर कूड़ न बुझिआ सिर पर मुरशद थाप। महिरम होइ कलाम दा खुदी उठावहु ताप। करो पनाह खुदाइ दी उम्मत दी छड आस। अमली आपो आपणी नेकी हो किसास। अमली आपो आपणी सिर सिर होइ हिसाब आपे नबी रसूल है आपे है इस हाब। सभ वडिआईयां रब्ब हथ देकर फेर खस लेइ। दुनीआं कारण उम्मती बहि बहि मेल करेइ। दुनीआं दरोगी वाह में खातर ते कर दूर। मत्था रख जमीन

पर खातर रख हजूर। एका एकी होइ रहु दूजा संग निवारि । दूजा संग कुसंग है फ़ानी एह संसार। दुनी वलेवे कारणे हारण अपना दीन । छोड तकब्बर खुदी को पकड़े पाक जमीन। पंद नसीहत हाजीआं नानक कहे फकीर । जो राह शैतानी गुमचिए तिनां गलीं जंजीर । आवहि जाहि भवाईअहि दोज़क लहैं सजाइ। लिखिआ विच किताब दे आखिआ पाक खुदाइ। नौं सै नदी नड़िनवें मिलन समुंदर जाइ। सत समुंदर अवेहिआ नदीआं अंत न पाइ । पौंदे विच खड़ाड़दे बूंद जिवें तपताइ। वलन तले तिना दीआं हडीआं जो बेअदलां पातशाह। काज़ी मुफ़ती कार कुन फौजदार कुटवाल। उमरे ते दीवान वज़ीर अमीर नाल। बखशीए बूता थीए नाले फतेदार। दारोगे मुसतोफिआ करदे कूड़ वपार। जोड़न बहुत जमाइती होइ जमाइ दार। खान लुट के करदे जोर वापार। वाटां पाड़े चोधरी महिर मुकदम कूड़। चौंकीदार पिआदिआं जल बल होइ धूड़। कुटनीआं हरामीआं जो घरीं विगानी जान। वेसवा अते गसतीआं अहिनिसि करहि हराम। चोरां यारां चोगलां खावन ला इतबार। लून हरामी विसवास घात दरगह होइ खुवार।चड़न पराई वेलड़ी कती सेज वछाइ। सर पर दोजक पावसन लहसन बहुत सजाइ। राह दार जगातीआं लेखा लिखन आहि। दुइ दुई जोरां वालीआं पर घर हंडन आइ। सर पर ओना वंजना टोला इतण आहि। चमै दे दुइ छावड़े पथर का कर सेर। चंगा कर वहालीए मुहि पराए ढेर । करन हराम हराम खोर तिनां हड जलाइ। खावन कावन मास तिह खस माल विगाना खाइ। जलदे दोजक हाविए जो देन गुवाही कूड़। घुट लंघाइन दुखतरां जलदे डिठे पूर। सुनहु काजी रुकनदीन पंथ नसीहत लेइ। छडहु राह सितान दा सच हकीकत एह। वाफ़ अलाह दी वंदगी छडहु अमल विकार। दरगहि गइआ जाणिअहि एह नानक असार। करहु मुशकत जुहद दी सीस उठावहु भारु। नख सिख पवै पसीनड़ा सेई करहु अहारु। दसवां हिस्सा वंड के राह खुदाइ देहु। पावहि राज वहिशतदा राह हकीकत एहु। पाणी पखा पीसणा धोवहु कदम पखार।

करहु वडाई दम दी लज्जत सभ विसार । सभे लज्जत रोग हैन देही नूं पीड़ेन । ईख जिवें रस निकले बहुत सजाई देन । जवां दी खाई रोटड़ी लोन न नाल रलाइ । ठंडा पाणी पी के सचा रब धिश्राइ । छडो सभे निश्रामतीं किश्रामत नूं कर याद । जुसा उडसी रूइं जिउं पलिश्रा मिठा सुवाद । खाधा पीता निकले जिउं तिल घाणी तेल । रस कस खाने बहु घणे संग कुसंगे बेल । श्रोड़ निबाहे कोइ न जीवदिश्रां मर मार । दुनीश्रां खोटी रासड़ी मनहु चितहु विसार । सुखां नूं ढूंडेदिश्रां दुखड़े हड्ड पए । डुखे डुख विहांवदा सुखड़े नस गए ॥ १६ ॥

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल श्राखे नानका लिखिश्रा विच कुरान । वालह निकी पुरसलात खन्निहु त्रिखी जान । उथै टिकै न भए हणा ठहिर न सकनि पैर । मुशकल तिनां लंघणा जिनी कमाए वैर । साइर लोहु पूंइंदा श्रगनि जलै भड़काइ । कंधी दिस न श्रावई धाही पवै कहाइ । श्रोथे बेली मुहंमद मुसतफा उमत पार लंघाइ । काफर पार न जाइनी तपण ते बिललाइ । जिना कलाम न जाणीऐ खड़ पुकारन हाइ । तिनां बेली न होवै मुसतफा लए न फेरि छुडाइ । भरे सफात जा तिनां दी दरगाह दे हजूर । बेईमान कसूमती नित कमावन कूर ॥ १७ ॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

नानक श्राखै रुकन दीन मुख ते समझ श्रलाइ । जिथै साइर श्रातसी नेड़े बहुत सलाइ । कई मुहंमद मुसतफा खड़े लंघावन पूर । गूना ऊमती कई सच कई कूर । पूछन विना जगातिए जिनां कीते बहुत श्रज़ाव । कई मुहाणे मुसतफा सकहिं न देहि जुवाब । नेकी बदी वीचारीए मल कल मौत हजूर । कट उसारे पुर सलात जल थल होवन धूर । मूंह ते कलमा श्राखके दूई दरोग मिटाइ । श्रगे मुहंमद मुस्तफा सके न तिनां ठडाइ । साइर दे मर जींवदे वेड़ीश्रां दे मलाह । जलन उनां दी उमती विच साइर श्रगन श्रथाह ।

वे पीरां वे मुरशदां ढोई कोइ न देह। राहे विच फरेशते माल जगाती लेइ। वदीआं तुल्ल न नेकीआं मीजां करन हिसाव॥ वाकी जिनां देवनी होवन सेइ खराव। ओहु फिर खाकू नाल मिलाइन जमन होइ कपाहि। चुण चुण कढीअन खूटीआं मिले सजाइ। वेलने वेल विलाइऐ फिर पिंजन पीड़ा खाइ। कतन कत कताइऐ तंदू खैंच कढाइ। फिर अगनी खुंव चढ़ाईऐ मुंगली दव्व कुटाइ। कतरण कैंची कटीऐ सूई जोड़ सिवाइ। पहिर होइ कजाईऐ फिर तिस मैलू खाई। होइ पुराणा सुटीऐ अढन मुल विकाइ। करन सलाम मसालची आतश नाल जलाइ। जल वल होवै खाकड़ी तपै तैं विल लाइ। सदो मुहम्मद मुस्तफा लए कपासि छुडाइ। इक कपाह दी जून विच एतो मिले सजाइ। पेंड़े पाइ पीड़ाईऐ कढीऐ धाणी तेल। वट्टी वट्ट कपाह दी दीवे अंदर मेल। इका मिटी त्रिहां दी इऊं जलदे मुसलमान। जल वल रोवन वपुड़े फिर कोइ न पुछन आन। इस जोनों जो कडिआ तिल होइ जम्मिआं सोइ। तेली पीड़ीऐ घाणीऐ दे दे दव्वां रोइ। दीवे पाइ जालाईऐ जंल वल माटी होइ। सदो मुहंमद मुस्तफा तिसे सुणाइ रोइ। तिल दी जोनों कडिआ फिर जंमिआ होइ कमाद। टोटे भन्न पिराईऐ लैंदा वहुत अजाव। इख जिवें रस कढीऐ पवै कराहे माहि। दे दे पाउ पाउ पकाईऐ सक्कर खंड कराइ। खाधिआं होवे कुवति फेर न छोंहदा कोइ। सदो मुहंमद मुसतफा तिसे सुनाइ रोइ। केती जोन अवेहीआ गिणती गिणी न जाइ। फिर चौरासी भौंदिआं वहुती लहै सजाइ। मर मर जम्मन फेर फिरि जूनी भवहि असंख। सुख दुख बहुत कमांवदे गणत न गणे विअंत। सुणे न राम रसूल को रूहां दी फरिआद। दुनीआं अंदर आइके उमर गवाई वाद। कूरी मजलस वैठ के कीतो सु कूड़ वापार। जा पिर उठी चलिआ लद अथरवण भार। वन्न चलाया अजराईल साथी संग न कोइ। लए सजाईं अगलीआं किसे सुणाए रोइ। मिलन सजाईं वहुतीआं मल्ल कुल मौत हजूर। लेखा मंगण चित्र गुप्त जो छिप कमाए धूर। नासा लोइन मुकरे तोवह करन पुकार। देवन कन्न उगाहीआं अन्ना रूह वकार।

आलत जिहवा मुकरे चख चख साद बिकार। हथां पैरां चाकरी हुकम कमावन कार। पंज हवास बखील संग तोबा करन पुकार। असीं बंदे हुकम दे हुकम कमावन कार। रूह करन बद फैल बहु रख पनाह रसूल। लगी मिलन सजाइ जब गए स सभे भूल। राम रसूल न दिसनी लैवन रूह छुडाइ। सच जो साथी सभस दा मूल न पल्ले पाइ। सच सरंदा पातशाह आदि जुगादी सोइ। हैसी होसी सच है अवर ना दूजा कोइ। दूजी कार बिकार है पूरी किसे न पाइ। नानक आखे रुकन दीन सचा इक खुदाइ। मोयां जीवदिआं संग सदा सांई सचा सोई। सचे बाहर जो रहै सो अंती चले रोई। दरगह जात न ज़ोर है अबे तबे नहीं होइ। सचो सच निआउ है करता करे सो होइ। नानक मुरशद सच है देवे सच मिलाइ। सचे मुरशद बहिरा भंभला भूसे खाइ। मरदे मुसलमान होइ रखन कबर बनाइ। सै बरसां होइ खाकड़ी खाकू में मिल जाइ। फिर पौंदी वस कुमहार दे भांडे घड़े बनाइ। इटां घड़े बनाइके आवे देन चढ़ाइ। खावन अग नित भठ दी जल बल करन कहाइ। जल बल रोवन बपुरे लोकां किआ परवाहि। मंरे विचारा हिंदड़ू विच अगनी देण जलाइ। जल बल होवे भसमड़ी पौणा पवे उडाइ। पढ़ के देख कुरान विच सानू वडी कि सजाइ। होइ काफर दोजकी जो बहुते खांदा ताइ। पहिला आतश सिऊं जले फिर तिनां जलाए कौन। खाक समाणी खाक सिउं पौण समाणी पौण। आब समाणा आब सिऊं अरबानासर पाक। किआमत वेर उठाइए रहे निमाणी खाक। जित कीती खाहिशा फिर ले उठिआ नाल। कीता आपणा भोगना फिर पाया वस जंजाल। खेले लख चौरासीआं धर धर रूप अनेक। रंग तमाशे खेल के अंत एक का एक। मिट्टी विच बैठाइए खासे मुसलमान जोगी ते सनिआसीआं षट दरशन हिंदु वान। पहिले खाकू संग मेलन फिर गंदे होए खंबीर। धरती दे विच पीड़ीआ होवन बहुत जहीर। इक दू रूओ लाख होन धर धर कोड़े रूप। मर मर खाकू संग मिलन कर कर रंग करूप। सै वरिआं विच खाक होण सहि सहि वड़े

कजाव । फिर पौंदे वस कुलाल दे भांडे घड़े शताव । भांडे इटां वहुत विधि जलन पजांवीं साल । जल जल करदे हाय हाय कोई न पुछे हाल । यारु मुहमदी जेतड़े फ़ातिश्रा देण दुश्राइ । जलदे विच पजाविश्रां कोइ न कढे श्राइ । दुनीश्रां दीश्रां वडिश्राइश्रां रहीयां दुनीयां माहि । वहि वहि यार मुहंमदी तर तर लुकने काइ । जीवदिश्रां भोजन वहिशत विच फिर मुइश्रां लैन न सार । जलदे विच खजावीश्रां जल बल होइ श्रंगार । भांडे इटां पकाइ के कढे फेर कुलाल । गूना गूनी भांडड़े पकन काले लाल । फिर उतरन जाइ बजार विच पवै कसीरा मुल्ल । श्रमली श्रापो श्रापनीं पए सै गईए रुल्ल । इकना पवन निश्रामतीं इकनां पवे पिशाब । श्रमली श्रापो श्रापनी लहण श्रजाव सवाव । सुनहु काजी रुकनल दीन नानक कहै जुवाव । साहिव दा फुरमाइश्रा लिखिश्रा विच किताव ।

॥ सुवा काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

आखे काजी रुकनदीन सुनहु नानक पीर । अरवा नासर कैत भित उपजी कर तदबीर । क्यों कर उपजिश्रां निश्रामतां एह भी देह वताइ । इक तां जानन फरक कुछ इक बुझे आप खुदाइ । होर न कोई जाण है गैवी सिर खुश्राइ । पुछे पंडत जोतशी काजी ते उलमाइ । खातर निशा न को करे कर थके वहु तदबीर । विना फ़कीर सादके कोइ न कटे जंजीर ।

॥ जवाब श्री गुरु नानक देव ॥

सुणहु काजी रुकनदीन कहिंदे अदल फकीर । सुणिऐ सच सन्देसड़ा जो बुझ न सकन पीर । मुल्लां बुझ ना सकनी पड़हि कुरान कतेव । पंडत भेद न पावनि पढ़ सुण चारों वेद । वेद कतेवों वाहरा कहिन फकीर सुणाइ । एह हकीकत गैव दी जाणै आप खुदाइ । रखी पोशीदा गोशड़े कोइ न पावै भेद । पए विरोलण पाणीऐ कथ सुण वेद कतेव । उतपति प्रलय खलक दी नानक कहे फकीर । सुणो हकीकत सच दी करके वहुत तदबीर । खाणी चार उपाईश्रां चारों वाणी नाल । सेतज श्रंडज उतभुजां चौथी जेरज नाल ।

पाणी उपजिआ सेतजों सभ जीआं का जीउ । सेतज ते अंडज भई अंडिओ धरती कीउ । भए पदाइश धरतीओं आंडे भए गलीज । तांते उपजे अन्न बहु अन्नह जेरज कीन । उपजी चारों खाण तब लख चुरासी फेर । गून गून पैदाइशी जीआ जोनी फेर । सभना दे सिर ताज़ कर साजिआ आदम आप । सभे सई पछाणदा जाणे पाक न पाक । जाणे जीआं जात सभ लिखे बेद कतेब । इक आदम ते लख भए बहु बिधि कीते भेद । जात जिनसी बहुत बिध बहु बिधि रखे नाव । बहु बिधि बेद कतेबड़े गए असंख भाव । दानों देवां नागरक राछस भूत पिशाच । शिव शक्ती कई असंख क खलक जपे तिह जाप । एह सभ खाके ते भये फिर खाकू नाहि समात खाकसु बीरज खलक दा उपजै ते खप जाहि । दाणा एक गडाइऐ खाव नाल मिलाइ । होइ न पैदा खाक विच नाव नशान ना काइ । इक ते दाएं लख होइ आब खाक द जीअ । ऐसी कुदरत रब्ब दी अज़गैब पदाइश कीअ । खलक खपावन कारणे फिरके रचे अनेक । दावा करके लड़ मरहि भूले अबेक बिबेक । साहिब दावे बाहरा सभना दे सिर पीर । दावें अंदरि जो रहे होइ अंत ज़हीर दावा छडो मोमनो मिलहु सु खाकू नाल । काइम होवै जुस्सड़ा छुटन काल जंजाल । जींवदिआं खाकू संग मिले फिर खाक न तिसै खाइ।काइम तिसदा जुसड़ा मरे नआवै जाइ।बाहजों काइम जुसड़े होइ न मुसलमान । फिर फिर अगन जलावई पइआ वस्स शैतान । काइम जुसा न चल होइ जे काइम धात । सके अग्न जलाइ तिस नित नित वधदी जात । सोइना काइम धात विच सके न अगन जलाइ । धरती विच दबाइऐ फिर खाक न सके खाइ । धात सोइने बाहरी जावे धरती खाइ । जल बल होवन खाकड़ी फिर खाकू संग मिल जाइ । मर मर जम्मन मुनाफ़कां कुफ़र जिनां दे चित । जोनहु जोन भवाइनी मर मर जंमन नित । सुनहु काज़ी रुकन दीन पढ़के देख किताव । बुझे विना विवेकड़े लग्गन वहुत अजाब ।

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन ॥

रुकनल आखे नानका देवहु सच निशान। गौ सूअर दी हद्द है हिंदू मुसलमान। हिंदू गौ न खावणी तुरक न खावन सूर। दोहां दावा पकड़िआ सचु लिखिआ कि कूड़। इह क्यों रहे आप विच होई चोर जहान। रुकनल आखे नानका मुशकल करहु असान॥ २२ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव जी ॥

नानक आखे रुकन दीन लिखिआ विच किताब। गौ सूअर नों मारिआं लग्गन बहुत अजाब। गौ चोदवां रतन है काम धेनु तिह नाम। पूजन सभ अवतार तिह करके मात समान। शीर जिनां दा पीवीऐ तिस मारिआं बहुत गुनाह। नानक आखे रुकन दीन वहु भुखिआं होइ पनाह। सूर वैराहों उपजिआ तिस पूजन कर अवतार। सब पैकंबरां छडिआ कर हराम अहार। त्रुटिआं रोमा गौ दिआं दुध सिउ मिलिआ जु खाइ। जा रसातल वास लैन जोन सरप की पाइ। पुणे विनां दुध गौ दा खाधिआं गिआ पताल। जो गौ सूअर मास खान तिनां वडे जंजाल। जो जीआं मार गवाइन तिन से मास हलाल। जो मुए फेर जीवन नहीं फिर मंगण मास संभाल। गौ सूअर हराम कर दोनों दिए उठाइ। इकना दुध हलाल है मास नापाक कराइ। महिरम राह दुहां दा दरगह सिझे सोइ। काफ़र जलदे कुफर विच जिनां पछाते दोइ।

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल आखे नानका सचा देह जवाव। दरगह तिना कौन हाल जो पीवें भंग शराव। जीवन पिआले वद अमल खावन नाल कवाव। भंगी अफीमी पोस्ती छकन उलम नपाक। खान मजूनां कतलीआं नाल अफीम मिलाइ। करदे इशक हराम परनारी कंठ लगाइ। मुहन वगाने माल नूं ताइफ़े भंड नचाइ। दमड़ा लैना हराम दा देन हरामे जाइ। जूए खेलन कुमार वाज करदे दमड़े ढेर। पंजे एव जुआरीऐ चित दा [illegible]।

जैसा वहिण समुद्र दा गिआन न आवे वत। रुकनल आखे नानका इह फिरै कित वत। सुझन नाहीं अजराईल देंदा बहुत सजाइ। देह खबर दरगह दी सची मुखहु अलाइ। हाल तिनां की होइगा जो पीवन अमल विकार। सच सुनेहा सोफीआं हह भी करो बीचार। तां हौं मन्नीं नानका कल विच अवल फ़कीर। करके अमल बिकार जो कर सची तदबीर। सिफ़त सुणिउं सोफीआं जो पीअन पिआले सच। रहिन खुमार रात दिन मनहु तिआगन कच। आखे रुकनल नानका सच गवाई देहि। अमली रदन सोफीआ सोफी अमल रदेइ। झगड़ा निबड़े दोहां दा इक कड़ा कर लखाइ। लिखिआ विच कतेब जो सोई मुखहु अलाइ।

॥ ज़ुवाब गुरू नानक देव ॥

नानक आखे रुकन दीन लिखिआ विच किताब। दरगह अंदर मारीअन जो पींदे भंग शराब। चरस अफीमी पोस्ती चिलमां छिक्न पिशाब। खान मजूनां कतलीआं सीखीं लाइ कबाब। पींदे भंग त्रकाइके जहूरी नाल रलाइ। दुनीआं मानण मसतीयां दरगहि लैण सजाइ। जिउं तिल घाणी पीड़ीअन दुहां जहानां माहि। रमण पराईयां औरतां तपत थम्म गल जाइ। सिक्का घाल सहंस मन मुंहीं तिनां दी पाइ। जो अमल बिकारी संग करे तिनां मिले सजाइ। दुहीं जहानी जरद रोइ रहिंदे सदा खुआर। सोफी खासे मजलसी तिने सचु खुआर। चोर हरामी कुमार बाज इनां पीड़न घाणी पाइ। मुखहु पुकारण हाय हाय अगों सुणीएं नाहीं काइ। बाहजों रोटी पाणीए होर न खाने खान। करन अलाह दी बंदगी साबत रख ईमान। पीन विकारी अमल नूं दरगह लहन न ढोइ। मुख तिनां दे किरबती वात न पुछै कोइ। नानक आखे रुकन दीन सचा इह ज़ुवाब। जो दरगह अंदर वरतदा लिखिआ विच किताब। बाहज अलाह दी बंदगी गल्लां होर शैतान।

॥ सुवाल काज़ी रुक्न दीन सूरा ॥

रुक्नल आखे नानका सच सुनाहु बात । किथों आवन आदमी कान हैवान न बात । फिर फिर मिलदे नाल रूह किथे जाइ समाइ । गैबी खबर खुदाइ दी देवण फ़क्कर सुणाइ । कर तदबीरां लिखिआ वेद कतेब बनाइ । गैबी खबर खुदाइ दी कोइ न मुखों अलाइ । घत जंजीरां मारदे काज़ी ते उलमाइ । जेको सच अलाइदा तिस आतश देन जलाइ । हिंदू मुसलमान दुइ सच न कहिण सुनाइ । दोवें दोज़क पोसनी लैसन बहुत सजाइ । दोजक भिसत किताब विच पढ़ कर खलक सुनाइ । मोया फेर न आइआ जो खबरां देवै आइ । पीर पैकंबर औलीए तिना सिर की हाल बिहाइ । दबे पए ज़मीन विच कई लखां जुग बिताइ । फेर की सूरत तिनां दी डिठी किसे न मूल । ईसा मूसा इबराहीम होर केते नबी रसूल । फेर न डिठिआं सूरतां रहे न तिनां दे नाव । रहे न उमरे पातशाहि जिनां वसाइ गांव । खाकू सेती मिल कई वज़ीर पातशाहि । रैयत अंत न पाईऐ अगम बेअंत अथाहि । इक पास रहि पातशाह दे इक वज़ीर सिर होइ । इतनीआं उम्मतीं पैकंवरां अंत नाही कोइ । खतरा मनहु उतरे बिना फकीर अलाहि । खबर सुनाए अजगैब दी संसा मनहु चुकाइ ।

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

नानक आखे रुक्न दीन सच्च सुनावहु वात । मर कर मिलदे खाक नाल फिर होइ जम्मदे घाह । गूनी गूणी बूटीआं सुरखी सवज सिआह । नीलीआं पीलीआं चिटीआं होर गुलाबी वन्न । भार अठारह बनासपत बहु मेवे बहु अंन्न । खान हैवाना आदमी पाइ परिंदे लख । होवन तोहफे बूटीओं मरि फिर जम्मन वत्त । आवा गौण न मिटई ज्यों वहिंदे दरीआइ । इतनी खबर अज गैब दी देन फकीर सुणाइ । इह सुन याद खलक दी बहुत वधाइन लैर । दाना पाणी खाइके रखन डिंगे पैर । खाक दे सभ पूतले खसमे दे हथ कल । मरणा चित न आवहि चसे मरे के पल । जीआ खावन

जीआ को जीआं जी अहार। आपो अपणे खेल कर इह तक ब्योहार। सुणीऐ काज़ी रुकन दीन नानक कहे फ़कीर। इको राह मुरीद दा इको सिर पर पीर। इक पैकंबर दुनी विच फिरका भी इक होइ। ऐथे दीन अगिणत हैन पार लंघाए कोइ। राज जिनां दा दुनी विच सिका तिनां दा होइ। जबरां लगन अनेक बिधि हुकम ना मानै कोइ। इको राह दरगाह इक इको छत्र अटल्ल। इका जरब जहान विच नानक राज अचल्ल। मशरक अते मगरबों और जनूब शुमाल। दरशण देखन आउगी उमती अंत न भाल। सतर जामे दुनी विच रखे बकाई फेर। मज़हब न जाणे देसणी रखसन उम्मत घेर। नानक दरसन कली विच होर न दरसन भाल। जुग जुग दरसन निउतनां नानक शाह कताल। चादर पाई दरगह ते नानक शाह फकीर। तले बहे घराणा इस दा सो कदे न होइ जहीर। जे हे आवे चल के बहे चादर हेठ। कली काल बेताल दी तिसहि न लागै फेट। ध्यो मैदा खंड शकरां माखिओं माझे दुध। खीर खंड मिठिआईयां रब सभ कुछ दिता मुझ। करसन भोग बिलास बहु गूना गून प्रसादि। जो शरन पए गुर देव दी सो भोगन आदि जुगादि। झगड़ चुकावन कारने आए दुनी फ़कीर। हिंदु मुसलमान दुइ डिठे खरे जहीर। हिंदु जात अठूहिआं तुरकश काले नाग। हिंदु दगे कमांवदे तुरकां ज़ोर जराब। हिंदु न भावे हिंदुआं जे को वडा कहाइ। तुरक सलाहे तुरक नों कर वडा दीन सलाहि। हिंदू कहिन हिंदुआं तुरकां रद करेन। दोवें अखीं मीटके सगले धर्म रदेन। तुरक रदे राह हिंदुआं अपना दीन सलाह। हिंदु मुसलमान दुइ कर मन सूख उठाइ। अंधे कारण दोजकी दोजक पौनी जाहि। काणिआं दा छड संग तूं अंधिआं नाल न जाइ। दोहीं चशमी देख तूं तां सच लहे महल। नानक कल विच निरमली गुर सिखी परवान। अगणत लंघे उमती सच नाम परवान। सचो चा है सभ खड़ी दरगह लहन न ढोइ। रोटी कपड़े कारने कूड़ कमांवण लोइ। खावन पहिरन रब्ब दा करमी पलै पाइ। आस विगानी जो करै से दरगह लैन सजाइ। फिट तिनां दा

जीविआ जो पर की आस करेन। रोटी कपड़े कारने मुखहु कूड़ बोलेन। सुन हो काजी रुकन दीन सचा एह जुवाब। साहिब दा फुरमाइआ लिखिआ विच किताब। ऐथे देख सजाण लै अगे चाइ पछाण। विच फकीरी खलक दी हिंदु मुसलमान। निकली ज़र सरकार ते आइ सुनिआरे हथ। किसे बनाए छलड़े किसे बनाई नथ। किसे तनाउड़े वालीआं कंगण घड़े सवार। सोना इकसै जात दा जेवर बहु परकार। मानस इकसे जात दे दीन भिन भिन होइ। कोइ कराए सुन्नती जत रखाए कोइ। दोहां बधे मोरड़े फैवारा शैतान। दावा राम रसूल कर लड़दे बेईमान। दावा छडो मोमनों बाद मिटावहु कूड़। हिंदू मुसलमान जेकर देवो मनसूख। पकड़हु राह खुदाइ दा दरगह पवहु कबूल। लिखिआ विच किताब दे झगड़ा राम रसूल। विच वित्र गल्लां कूड़ीआं सुनहु बेद कतेब। पड़दे पाए भरम दे बहु बिध कीने बेद। बारां बुरज असमान विच नाल सितारे सत। इह थिर महूरता होर सताई निखत। भदरां पंज कि योगनी चसे पत विचार। एह रबानी लोह है लिखे खुद करतार। जिओ सूरज बारां बुरज विच तिओं इको इक खुदाइ। दूसर होया न होइगा मन विच देख नगाइ। चंगा मंदा लेख सभ नौं ग्रहि विच होइ। नौं ग्रहि बारह बुरज विच इको सचा सोइ। गल्लां होर शैतान दी वरतन को संसार। बाद विखादी झगड़े जनमें ते संघार। सिर सिर लेख अलेख दा उत्तम मधम जान। करमी आपो आपनी मसतक भए निशान। फिरन चक्कर सिर उपरे रैन दिनस के माहि। काफ़र सभ संसार दे हुकमे विच हवाइ। कला रखी असमान विच चारे तत पताल। ज्यों ज्यों कला फिराईऐ त्यों त्यों फिर संसार। उलटा खेल खसम दा सिर उपर तल पाइ। सिर तल हाहे जम्मदे निहचल क्यों कर जाइ। सिर तलवाए कम्भ विच बाहर भीतर होइ। उपर हयाती पाइनी नानक सच बगोइ। मथा धरके जिमी पर खातर रख हजूर। मिलिआ रहे खुदाइ नाल होइ न कबहू दूर॥ २६॥

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

रुकनल आखे नानका दरगह दी खबर सुणाइ। केहा रंग महल दा जिथे रहे खुदाइ। केहे बुरज महल दे छजे ते चौकाठ। कहीआं डिठिआं बैठकां किस नाल कीते रास। केहा गारा चूनड़ा कौन बनावन हार। सूरत कौन महल दी क्यों कर होइ दीदार। दर ते लिखिआ के कुझ एह भी देइ बताइ। केहड़ा पार खुदाइ दा जिस नो ठाक न पाइ। पहुंचे केहड़ी बंदगी करके कौण नमाज़। साच सच बताइ तूं सचा केहड़ा साच। केहड़ी सुन्नत पाईऐ जाइ दीदार खुदाइ। कौण रसूल पहुँचाइंदा दरगह सकी जाइ। सभ निशानीआं देह खान अव्वल फकीर। पीरां अंदर पीर तूं मीरां अंदर मीर।

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

नानक आखे रुकन दीन दरगह दी सुध लेइ। रंग अजाइब महिल दा हीरे लाल जड़ेइ। मोती ते याकूतीआ मणी जमुरदां नाल। लख आफ़ताब महिताब लख रोशन बलन मशाल। रंग महल हैं कुदरती जिस विच तखत सुबहान। बैठा सचा पातशाह सुलताना सुलतान। बारां बुरज महल दे नौं दरवाजे नाल। पंज खवास हैं पाहरू चौकी देण संभाल। बुरज सवारे जरी के मीना कारी रास। बणे चौकाठां छजरे चौकी देन संभाल। बुरज सुवारे जरी के मीना कारी रास। बणे चौकाठां छजरे बावन चंदन काठ। पत्थर पारस लाईऐ पारस जात संग बार। काम धेन लख लछमीआं होइ गोली करन अरदास। लेपन मेद कसतूरीआं चोए बहु परकार। रंग अजाइब बैठकां गोर मुशक अपार। नौं दरवाज़े कोट दे दसवां नूर महल। होज हयाती पर भरे तिस विच कौल अचल। गिरद महल दे कोट है बावन किंगरे तिस। किंगरे किंगरे तोपची फड़न न देंदे किस। सत्त समुंदर खाईयां नदिआं अंत न पार। कई रखवाले सूरमे पिआदे ते असवार। इक महल दुइ बारीआं शिव शक्ती

सुलतान। खिरकी खोहल दीदार देन बहुत वधाइन मान । गैबी वज्जन नौबतां संख नगारे भेर। सरनाईयां ते मुरलीआं नाल अलांदे फेर । वागां बुरगू सिंडीआं सांरगीआं रबाब। वज्जन छैनें कैंसीआं तेरे रागां साज़। गावहि छत्तीस रागनी संग षस्ट अलापहि राग । संग अलापहि नायका वारो वारी जाग। पहिले भैरो गावहि पंच रागनी संग। भैरव ते बिलावली नाल बंगाली चंग। पुन्या की असलेखी शाह पांचों नार संग बीचार । माल कौंस फुनि गावहे पंज संग लेबार। गौंड करी आलाप हे देव गंधारी नाल। सोरठ गंधारी कहे धनासरी संग भाल। गावै फुन हिंडोल राग पांच रागनी साथ। तेलंगी देवकरी कहु बसंती सिंधूर । सरस अहीरी भारजा गावहि राग चंदूर। गावहि दीपक राग पुन पांच रागनी साथ। काछेली पट मंजरी टोडी गाव अलाप। कामोदी अर गूजरी संग दीपक के लाइ । गावन उची सुर लीए बैठा सुने खुदाइ। पंचम गावहि सिरी राग पंच रागनी कोल। वैरारी करनाटकी गौड़ी सुनाइ बोल। पंचम गावै सिंधवी सिरी राग की नार। वारी आपो आपणी सभो राग उचार। मेघ राग संग पंच हैं गावै गुन बीचार। तीस रागनी गावहे खट ही राग। जो जागे सेई सुणे जागन तिस के भाग। रागां विच कई राग हैं काढ़े सुघड़ बनाइ । तीस रागनी षट राग सद सरबदा आइ। गावहि ताल मिलाइ के समें समें कर राग। साज़ खाज सभ संग वजहि होवहि नाद अनाद । ऊपर खासै महल पर देवै बांग खुदाइ। सुते बांग न सुन सकन रिहा खुदाइ जगाइ। सुती पई निभाग बस सुने न बांगां कोइ। जो जागे सेई सुने सांई संदी सोइ। राह खुदाइ भीहावला वालहु दसवें भाइ। हाथी जाइ न सकनी होंमे रखे अड़ाइ। सूरत रंग महिल दी मठपर रखहु लाइ। दर दे उपर लिखिआ इको पाक खुदाइ। कुदरत कई रसूल हैं यारां अंत न पाइ। जिस दी यारी धुर चढ़े पहुता जाणहु सोइ। आवण जाण फुरमान लए कई इज़ारे राइ । केते लख मुरीद कर हौंमे अंदर पाइ । रहीआं ऊरे उम्मतां नाले नबी रसूल। निगुरे राह न पावहि मणी गिआने मूल । सची सरीअत वंदगी

सच्ची सुन्नत एहि । सचा दीदार खुदाइ दा सच निमाज़ करेइ । सच्च बराबर नां यार को जो देवै खुदाइ मिलाइ । हिंदु मुसलमान दा दावा देइ उठाइ । नानक लेखे इक पल होर गल्लां शैतान । अमलां उपर निबड़े साबत रख ईमान ॥ २८ ॥

जब इतनी नसीहत सूरा कलाम की काज़ी रुकनदीन के साथ हुई । तब अन्य देशांतरों के हाजी लोग जिनों ने तत्व न जाना था वे कहने लगे । (सूरा)

हाजी आखन नानका सुन तू सच जवाब । हिंदू जलदे विच आतशी सहिंदे बहुत अजाब । वडा दोजक आतशी नेड़े जाइ न कोइ । हिंदू जलदे तिस विच दोजक पहुते सोइ । उम्मत पाक मुहंमदी मिले सु खाकू साथ । किआमत फेर उठाइसी काजी मुहंमद आप । नेकी बदी कसीस जो औरत पुरश न होइ । क्यामत होइ हिसाब सभ मुसलमान जो सोइ । जिस का जुस्सा तिस कउ दूजा मिले होर । रोज किआमत डेहड़े पौसन वडे शोर । इसराईल परेसता जद फुकेसी करनाइ । उठसन सभे उम्मती जो खाकू संग समाइ । आप मुहंमद मुसतफा मीजां करे हिसाब । नेकी बदी बिचार के देसी अजाब सवाब । कलमां जिनां पछानिआं सहिन न वडे ताइ । लिखिआ विच कुरान दे कहे रसूल खुदाइ ॥ २९ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव जी ॥

नानक आखे काजीआं सुणीए सचा सुवाल । हिंदू जलदे इक वार तुरक वडे जंजाल । मिटी मुसलमान दी जंमे होइ नबात । जलन नबाती हमेश विच आतश सहिन किसास । जल बल कोले होइके फिर मिलिआ खाकू नाल । किथे मुहंमद मुसतफा मीजा करो संभाल । क्यामत चशमी देखीए अंदर इसे जहान । हिंदू मुसलमान दुई अंदर आंच जलान । मुहंमद मुहंमद क्या करो मुहंमद घर घर होइ । इक मुहंमद मुसतफा कई मुहंमद लोइ । पड़दा कूड़ी डालके रखया सच छिपाइ । ओड़क सच सलामती देसी

कूड़ उडाइ। इको सच पछाण के इको जाणो सोइ। आमद रफ़त न रहि सके रख न सके कोइ। भावे आप खुदाइ जब तब इस करे अनेक। फेर अनेकों इक करे है नानक कहे विवेक। जिस दे मारग नसीब क्यामत तिस दे भाइ। इसराफील जब फूकसी करनाइ। उठे जुस्सा तिस दा जिस दे सगर नसीब। इक दो जुसे असंख होण नानक कहै रसीद। आपे इक खुदाइ है कई मुहंमद लोइ। वारी आपो आपणी उठी चले रोइ। कूड़ा झगड़ा हाजीओ मन ते रखहु न मूल। इको पाक खुदाइ है होर केते राम रसूल। ओड़क डिठा हाजीआं रहे सभे मुरझाइ। हुजत हाजत शरा दी सकन न मुखहुं अलाइ। शरा शरीयत सोध के सच शरीयत कीन। पकड़हु राह तरीक ते करके सावत दीन। पावहु राह हकीकते हक हलाल गुआहि। राह पछाणहु मारफत आपे आप अलाहि। नानक आखे हाजीआं चार कतेब गुआहि। भिश्तां भिश्तां क्या कहो दोजक दिओ दिखाइ। जलदे दिस्सन दोवड़े कूक पुकारन हाइ। मुसलमान हेमचां करे नवाती जोइ। अंदरों बाहरों आतशी भेद न पावै कोइ। नानक आखे हाजीआं जलदी दिस न दोइ। भिश्तां दिसन जलदीआं हावीए दोजक नाल। हिंदु मुसलमान दा कोइ न पुछे हाल। दुनीआं दोजक आतशी सभ घते दीन जलाए। पेट न पावन रोटीआं विसर जाए खुदाए। जेते फिरके दुनी विच खाणे नाल खवंद। इको फिरका रब दा तिस विच वहुते वंद। आबी खाकी आतशी चौथा बादी नाल। चारों जलदे दिसनी किस नूं आखण हाल। जलसन रूह निमानड़े वड आतस के संग। दिसन दोजक भिस्त विच जलदे बलदे नंग ॥ ३० ॥

॥ सुवाल हाजी सूरा ॥

हाजी आखण नानका कहे मजीद कलाम। रखे रूह अमानती खालक विच असमान। जुसे रखे खाक विच रोज क्यामत सद। क्यामत फेर उडाईअन पुछीऐ नेक अर वद। मुसलमान मुसलमी पुछे रसूल खुदाइ।

काफरां कोइ न पुछसी राह शैतानी पाइ। जलसन दोजक हावीऐ कोई न सुणै पुकार। अजराईल फरेशता करसी अंत खुआर॥ ३१॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव ॥

नानक-आखे हाजीओ सुनहु हकीकत पाक। अरबानासर मिल कर नाउं धराया खाक। अरबानासर चार मिल पंजवां पोल अकास। तिस ते भया अवाजड़ा नाउं धराया सास। गूना गूनी रंगड़े जीअ जंत अपार। सभना अगन जलाइसी किआमत राह असार। दोजक भिश्त वखाणीऐ दोवें इसहि जहान। इक चढ़ झुलदे पालकी इक पैर पिआदे जान। इकना गलीं जंजीरीआं बंदे करन सलाम। मिलन सजाईं बाद विच सुणै न कोइ कलाम। राम रसूलां बहु करे तोबा कर फरयाद। जामन कोइ न बुरे दा मारन देइ अजाब। चोर उचक्के लालची हिंदु मुसलमान। कीतिआं बहुत गुनाह दे सभ को कहै शैतान। हिंदु मुसलमान दा रहिआ से दावा दूर। पकड़िआ राह गुनाह दे करके खड़ा हजूर। करदे हाकम बहु हुकम मारहु गरदन जाइ। चोरी यारी जो करे देहो तिनीं सजाइ। सचिआं कोइ न पुछई जोर ते सच नाल। जिनां कूड़ कमाइआ तिनां वडे जंजाल। जिनां पंडां पाप दीआं सीस उठाए भार। दिसन विच जहान दे होए सोई खुवार। अगे दी किसे डिठिआ एथे ही होय नबेड़। अखीं दिसे सो कहीऐ पढ़ मुल्लां बहुत नबेड़। नानक झगड़ चुकाइआ अंदर इसे जहान। दस हिसे इस दुनी विच सत्तर किआमत जान। सुतिआं मोइआं जो दिसे सोई कीचै बात। मोइआं सुधा सुन्न है जैसी दिसे खाक। खाकहु उपजहि हिंदूआं काफ़र ते मुलहद। ईसाईयां मूसाईआं बहुत जे हुँदा रद। रूमी जंगी इरमनी हबश ते किलमाक। ईरानी तूरानीआं सभना इका खाक। फिरके लख चौरासीआं गिणी न जाहि जात। खाकू ही ते उपजते फिर होंदे आखर खाक। फिरके लख चौरासीआं सभ खाकू दे जीअ। जीअ बैरी दे होन तद कुदरत करते जीअ। जेते खाकी रूह हैन जल वल होंदे खाक।

सदो मुहंमद मुसतफा रूहां भरे सफात। कीते आप खुदाइ जे हिंदू मुसलमान। सड़दे विच पुजाविआं वेखे सभ जहान। क्यामत भई रूहानीआं जींवदिआं क्या परवाहि। जींवदिआं नहीं मारदे करदे करन कहाइ। राम रसूल न देखनीं रूहां लैन छुडाइ। एह विचारा किआमती किआ अगे भए फनाहि। दिसे राही मुसतफा लए सु खवरी आइ। चारे यार न दिसनी उमती लैन छुडाइ। कहां सु राजा राम है सू कारन गुआल। कहां तिनां दी उमती जल वल थीए खाल। कहां मुहंमद मुसतफा कहां से चारों यार। चौदह कहां खान वादड़े इमाम साहव सलार। कहां सौ शेख मसाइकां गौंस कुतव वड पीर। रिहा न जुसा तिनां दा सूई अंत जहीर। नाउं निशानो रहि गई आखर होइ वाद। आखर नाउं भी जाइसी किस नूं रहसी याद। आखर रलना खाक नाल जल वल होस सुहाइ। नानक बाजी कूड़ दी होसी अंत फनाह। वारी आपो आपणी मीर मलक सुलतान। पीर पैकंवर औलिये गए बजाइ निशान॥ ३२॥

॥ सुवाल हाज़ीआं सूरा ॥

आखन हाजी नानका लिखिआ विच कुरान। फेर तवल्लद न थीए जो होए मुसलमान। काइम होइ किआमती सावत रख ईमान। रहिसन रूह अमानती वत न आवन जान। काफर जलदे आतशी वहुते लहिन अजाव। कूकन पए मसान विच आतश लए हिसाव। वाझ मुहंमद मुसतफा कोइ न लए छुडाइ। जिनां कलमां आखिआ वड़दा भिशती जाइ। हूरां परीआं भिशत विच होवन तिनां नसीव। राह शैतानी कुफर दा कीता जिना पलीत॥ ३३॥

॥ जुवाव गुरू नानक देव ॥

नानक आखे हाजीआं लिखिआ विच किताव। जो होई अरचानासरों लहदी सभ अजाव। ना को मुसलमान है काइम क्यों कर होइ। काइम रहिन पैकंवरां लख सवाईए सोइ। सवा लख पैकंवरां किथे तिनां मुकाम।

उम्मत अंत न पाईऐ जल बल थीए मसान। केतड़िआं अवतार लख जल बल थीए खाक। सने औतारां पैकंबरां विच जम्मे होइ नबात। बलन नबाती हेमजा जल बल होइ अंगिआर।किथे मुहंमद मुसतफा उम्मत अंत न पार। खाकू सेती मिल गए लैण न अपनी सार। जिसी दिसे धरतड़ी सभा भई मसाण। पहिलां दोज़क शिकम है रहिन न देइ इमान। लालच दुनी लपेटिआ काइम होर न कोइ। काइम इक खुदाइ है अवर न दूजा होइ। रहिंदे रूह इमानती लख चौरासी माहि। लख चौरासी मेदनी घटे न वधे उताहि। एहा काइम दुनी विच होर काइम न कोइ। जिनां नाम धराइआ रहे न काइम सोइ। बचा जुसा जो खुले फिरे चौरासी अंग। मुल्लां ब्राह्मण न बूझहि बुझन फकर निहंग॥ ३४॥

॥ सुवाल हाज़ीआं सूरा ॥

हाजी आखन नानका सची खबर सुणाइ। किथहुँ आन रूहानीआं फिर किथे जाइ समाइ। मूरत सूरत न किछू किसु बणाए खेल। किस जगाइआ नूर नों किस मिलाइआ तेल। जे एह करैं तसल्लड़ी तां तूं अवल फ़कीर। मीरां अंदर मीर तूं पीरां अंदर पीर। रूहां दी की जात है रूहां दा क्या रंग। असां कुझ न सुझई कोई बूझै फकर मलंग॥ ३५॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव ॥

नानक आखे हाजीआं सचे सुणहु नीशान। दाणे पाणी रूह हैन तिस थीं नुतफे जाण। औरत खसम मिलाप ते सी नुतफे दोइ। दोइ दी मिल जिंदड़ी इक दिखाई होइ। लख चौरासी रूह मिल तिनां बनाइआ रूप। जुसे होइ रूह दे मिल चौरासी सूत। तैसा ही इक आदमी होर असंखां जात। गंदे पाणी ते भए गूना गून सफात। जिना शईं ते उपजिआ फिर तेही जाइ सजाइ। आवा गौण खलक दा रहे कबहू ताइ। लख चौरासी ऊपजी मर मिलहि सु खाकू नाल। होइ खबीर जो बिखरन सुक सड़ होइ खाल। होरी ते होर होर किह आपे रूप बनाइ। जैसे स्वांगी स्वांग कर

अचरज खेल दिखाइ। रूहां जात न पात है हिंदु मुसलमान। जेही मजलस आवहे तेहे धरेसी नाम। मिसर पंडत अंधुले काजी मुल्लां कोर। होरे कह समझाईऐ अगों समझन होर। जे सौ पंद सुणाइऐ भिजहि न चित कठोर। तिनां नाल न लुझीऐ जो शबदे दे चोर। पंद किताबां न मनहि नहिं फकरां दी गल्ल। खुदी तकब्बर कर मुए वत न दिस्सन कल्ल ॥३६॥

॥ सुवाल इमाम करीम दीन सूरा ॥

कहे इमाम करीम दीन सुन हो नानक शाह। जिनां उमैद न रब्ब दी तिनां कौण पनाह। पूजन संग मुनाफकां दिल जिनां दे संग। विच जलदे आतश हाविए चूना होइ पंग। पाइन दुख मसान विच जल बल होइ सुआह। जलदे पए पुकारनी कोई न सुणदा आह। वाझहु नबी रसूल दे पान न कब ही थाह। जल बल थीवण कोइलड़े ज्यों अगन झलूठे काइ। कोइ न पुछे बातड़ी कोइ लए छुडाइ। भिसती वास न पाइनी वाझ रसूल खुदाइ। कुफ़र किताबां वाचदे काफ़र वड हिंदवान। आखन विच किताबां नूं मोए फिरन आन। मोए फिर न आवनी कहे मजीद सलाम। मर मर मिलके खाक सिऊं क्यामत थीए किआम। जेहड़ी सूरत भज्जदी फेर न होवे रास। काइम थीए किआमती कहै करीम सदात। रहे अमानत खाकड़ी रोज किआमत हद्द। मूए फेर न ऊपजहि हिंदु किताबां रद्द। रद तौरेत अंजील के तीजा रद जंबूर। एह त्रेये मन सूख हैन थीआ फुरकान मनजूर। इस ज़माने पातशाह कलाम मजीद कुरान। रहे कुरानों बाहरे थीसन अंत शैतान। जिस ज़माने अमल होइ कोइ करेह न मूल। ओह दरगह ढोई ना लहे भरे न सफात रसूल ॥ ३७ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव सूरा ॥

सुणहु सय्यद करम दीन मन्नों चारों किताब। आखें कौल खुदाइ दे जिनां विच हिसाब। मूए फेर न आवनी रहिन अमानत नाव। नावां मौत न होवई लख आवेह लख जाइ। राम क्रिश्न होए असंख लख मुहम्मद

नाव। ओह फेर न आया वत रहे मरातब थाव। खान खवीन न जावणी मीर वज़ीर पातशाह। जुसे रहिंदे थिर किसे रहिन रातब जाहि। जितने रूह अमानती तिनां मरातब नाल। उत्तम मधम लिख मिले हिंदु तुरक चंडाल। इक आवन इक जाहि उठ आवा गौन संसार। अलाहि आइ न जावई सचे इह असार। जैसे बरग नबात दे तरुट धरती पान। ओहो जहीआं सूरतां होर हेठों निकली आन। अजब तमाशा रब्ब दा खाली रहे न संग। आवा गौन खलक दा रहिंदा रहे निशंग। नानक सच्च अलावहे सुनहु करीम सदात। जिनां उमैंद ना रब्ब दी से रहिण सदा नापाक। ओइ कबरां विच पीड़िअन जलदे करन कहाइ। अजराईल फरेशता देंदा बहुत सजाइ। कबरां तिनां जलाइनी जो होए मुसलमान। जिनां ईमान न रखया दोज़क दुनी हरास। मिटी मुसलमान दी भई मुनाफक संग। आतश सेती दब्बया चूना होइ न पंग। कत्थ सुपारी चून त्रै चौथे मिलनजि पान। होवन लाल गुलाल बहु साहिब जादे खान। होवन नुतफे संग थीं उतजन सिध अर पीर। एह मरातब आइआ दद्धे पथरी बीर। हिंदु मुसलमान दे साजे जुसे दोइ। होवन रूप करूपड़े ढोई लहिन न सोइ। पहिले आतश जो दधा जल बल होया सुआह। फेर न आतश देह दहे अलाह आप गुवाह। मिलन जो खाकू संग सो सहिंदे बहुत कसाव। खड़दे विच पजाविआं ताऊ सहे छिअ मास॥ ३८॥

॥ सुवाल इमाम करीम दीन सूरा॥

कहे करीम दीन नानका रूहा दा की तोल। केतक हलके रूह हन केतकु भारा वोल। केतक कद वरीक है मोटा केतकु होइ। केही सूरत रूह दी रंग किनेहा होइ। कौन हकीम वनाइंदा जुसा गून गून। एह हकीकत जो कहै सोई वडा अखून। रहिंदे केहड़ी जाहि हैन एही करो बिआन। रूहां इक कि वहुत हन मुशकल करहु असान॥ ३९॥

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

नानक आखण राह एह सुणिअहु करीम सदात ॥ बादे दा की तोल है आवे दी की जात । धरती दा की नाप हैं आतश का की तोल । केतक दूर अकाश है केतक आखां फोल । बादी सूरत रूह दी तिस दा रूप न रेख । आतश नूर खुदाइ दा कुछ अंत ना पाए भेख । रखन चराग महल विच चानण सभ ही जाइ । फिर रखण अंदर टिंड दे लए सभ जोत छपाइ । आबी खाकू दुइ मिल जुसे होइ अलोइ । हिकमत लख हकीम मिल साहिब तुल्ल न कोइ । वडा हकीम खुदाइ है रचे चौरासीह अंग । इकसे इकसे अंग विच गूना गूनी रंग । भया पलाड़ अकाश ते करहि अवाजा रूह । काइम कुदरत रब दी मिल रूह पुकारे रूह । लख चुरासी तुखम हैं तुखमां अंत न कोइ । इकसे इकसे तुखम विच भई चौरासी लोइ । आवण अगणती रूहड़े जावन अंत न कोइ । इकट्ठ रूहों लख होइ लखों लख अलोइ । की पैमाना रूह दा केतक कहा विथार । पसरिआ जिमी असमान विच रहिआ सु चानण धार । इको रूह न किसे दा लख चौरासी वंद । फिर लख चौरासी इक होइ लेखे बहु विधि छंद । आपे मारे करे आप कुदरत चलित दिखाइ । परदे डोर भरम दे दितिओ सु सभ रुलाइ । नर नारी दुइ सिरज कर खाणी वाणी उपाइ । जो दिन जाती बुझसी आपे आप खुदाइ ॥ ४० ॥

॥ सुवाल करीम दीन सादत सूरा ॥

कहे इमाम करीम दीन सुणहु नानक शाह । किथहु आलस उपजदा किथे जाइ समाइ । एह हकीकत जो कहे सोई रसूल खुदाइ । एका एकी होइ रहै दूजी रहै न जाइ । दूजा आखण शक्क है जंमे ते मर जाइ । सो क्यों मन्नीऐ नानका जो काइम रहे खुदाइ ॥ ४१ ॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक हिंदगी सुणहु करीम सदात । उपजे आलम खाक ते फिर खाकों होइ नबात । होर नबातों निआमतां देवे गूना गून । खाक्रो

होवन आदमी नुतफे होइ मजमून । नुतफिओं मास उपजहि मासहु जुसे पाक । रहिआ सु गंदा होइआ धरिआ नाउ नपाक । निआमतां ते विष्टा भया मिलिआ जो आदम संग । खाहदा कावां कूकरां अवर अगणती रंग । विष्टा ते कई उपजही जीअ जंत अपार । मिटी मुसलमान की फिर फिर धरे औतार । लिखिआ विच किताब दे बोले नानक शाह । जिनि पछावां रब दा फिर रब ही माहि समाइ । सिर पुशीदा रखिआ अरबानासर माहि । जो जाहर करै जहान विच भिस्त न दोजक ताहि । रूह नों रूह खावणी फिर रूहां ते रूह होइ । आवा गौण जहान दा वरज न सके कोइ । दख पैदाइश रब दी घट वध किसे न आख । दूजा हूआ न होसीआ वरते ताको ताक । लख मुहंमद मुसतफा राम क्रिशन लख होइ । इक आवन इक जाहि उठि गिणती गिने न कोइ । लख औतार पैकंबरां उम्मत अंत न पार । मर मर मिलदे खाक सों फिर फिर होइ अवतार । लख किताबां लिख गए गए सि खाकू ढेर । लख लिखारी उपजहि ओइ फिर लिख राखन ढेर । काजी मुल्लां हाजीआं मिसर पांधे लख । ब्रह्मे विशन महेश लख मर जी लिखन वत । लिखन बेद वीचार कर उकत सिआनप नाल । मर फिर जम्मन बपुड़े फिर लैंदे बेद संभाल । बेदहु फेर कतेब करे वैर विरोध कराइ । लख लख दानों देवते कातर होहि मराहि । शिव शक्ति दुइ साजीआं उत्तम मधम लोइ । मरदे वैर विरोध कर मर फिर माटी होइ ॥ ४२ ॥

॥ सुवाल करीम दीन सूरा ॥

कहे इमाम करीम दीन पुछे सच सुवाल । हक बिगाना जो रखन तिनां होसी कौन हवाल । मोए खाकू सो मिले वत न आदम होइ । लैना देना दुनी दा फैसल क्यों कर होइ । करन गरीबां उपरे जालम बहुते जोर । कूकन खड़े यतीम वहुत सुने न कोई शोर । अदल न हाकम करसनी लुट लैसन घर वार । एह हकीकत सोध कर देह सच वीचार । गैर मुकाम खुदाइ दे जिथे लैन हिसाव । लैणा देणा दुनी दा करन सुवाल जुवाव । क्यों कर

लैणा लई दा किस विध देना देन । कहे इमाम क़रीम दीन फ़ैसला क्यों कर लेन ॥ ४३ ॥

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

सुणहु इमाम करीम दीन नानक कहे फकीर । हक वगाना जो रखण सो होसन बहुत ज़हीर । ओइ पड़सन जोन चौपाइआं नक तिनां दे लोर । लैना देना ना छुटे लद लद लैसन वोर । देंदे बहुत सजाइ के लैणगे सभे हिसाब । जिन जुलम कमाया दुनी विच तिनां कयामत एह अजाब बांदर रिछ औतार घर कलंदर देण सजाइ । घर घर फिरसन नचदे कीता पासन आइ । दर दर होसन मंगते जो खान बिगाना माल । नानक कहे करीम दीन बुरा तिनां दा हाल । फिट अवेहा खाइआ देणा पवे जो फेर । देणा लैणा नां छुटे सहेसजाईं ढेर । हाथी घोड़े ऊठ खर भैंसे बोल औतार । जिनां दे सिर बहुत जुलम से फिर लैसन मार । हो परंदे जानवार फासन फाही आइ । लहणे दार न छड ही लैसन मास विकाइ । जैसा कोई बीजीए लुणे सु तैसा सोइ । किआमत के दिवस ही सभे निखेड़ी होइ । खाहश फेर लिआवही दुनीआं अंदर फेर । लैणा देणा नेक वद होसी सोभ नवेड़ । खाहश अंदर जो मरै फिर लै उठे नाल । देणा लैणा नां छुटे लई अगे सभ संभाल । जैसी खेल चौरास दी तैसा इह संसार । पका फेर न आवई पिआ जु अंदर वार । पहुता जाइ खुदाइ नों फेर न जम्में सोइ । काइम मिट्टी तिस दी कंचन वन्नी होइ ॥ ४४ ॥

॥ सुवाल ईमाम करीम दीन सूरा ॥

सुणहु नानक हिंदीआं कही करीमा एव । हिंदी चार फरेशते ब्रहमा विसन महेश । चौथी शक्ति फरेश्ता कहे भवानी जाहि । चारों खलक खालक दे हिंदु करन सनाहि । तुधे ही कुछ बुझिआ दुह फिरकिआं राहि । एव हकीकत सच दी सभा देइ बुझाइ । लिखिआ विच कुरान दे इको पाक अलाहि । दूजा नूर मुहम्मदी भया रसूल खुदाइ । विनां रसूल खुदाइ दे

तीजा होया न कोइ। होइ जो मुसलमान को रहे नसीहत सोइ ॥४५॥

॥ जुवाब गुरू नानक देव ॥

सुणहु सैद करीम दीन जानहु सच सनाइ । नूरी चार फरेश्ते चार कतेब गुआहि। अवल नूर खुदाइ दा जाका अंत न वार। नूरों बलिआ चराग़ इक शकती दा औतार। शकतों तीन फरेशते ब्रहमा बिशन महादेव। आबी बादी आतशी सच हकीकत एव। तीनों आप पछानिआ हम सर अवर न कोइ। आपे आप खुदाइ कहिं भरम भुलाणे सोइ। तीनों किआ गुमान बहु हम ही कहें खुदाइ। आतश मिसल चराग दी इक थीं लख लगाहि। आतश ही ते ऊपजे ए तीनों ही देव। लिखिआ तीनकिताब विच ब्रहमा बिशन महादेव। होया अवाजा गैब दा सुणिआं तीनों देव। हम ते खालक खलक दे होर अवाजां देत। तीनों इकठे होइ कर गए शकत के दुआर। जा खड़ोते दर सचे लागे कहन जुहार। पुछन तीन फरेशते हम पर भी है होर। होया अवाजां गैब दा होर केते अंत न ओर। कवन पुरी के देव तुम कहां बसे किस लोइ। सुणकर एस अवाज नों रहे समाधी होइ। होया हुकम खुदाइ दा कुदरत भई हजूर। नूर मिलिआ जाइ नूर नों होइ रहे भर पूर। देखन रंग महल्ल नो पुर है अंडिआं नाल। आग्या होई शक्ति नो अंडा तिहां दिखाल। देखन अंडा फोर कर विच तवक वसहि कई लोइ। ब्रहमे बिशन महेश लख गिणती अंत न कोइ। राम किशन परस राम लछ मछ कछ अवतार। नर सिंघ वावन बोध लख कई वेराह न पार। केते लख मुहमदा अंत न लोआ लोइ। इकते ही ब्रहमंड दा अंत न पाए कोइ। वलन चराग विअंत लख विसमे होइ विअंत। वडा नूर सालाहिऐ जिस थीं भए अनंत। नूरों वलिआ चराग इक इक चरागों लख। आफताब महिताब लख उतपति आखि फरक। एक पलक के अंदरे उतपति खपत अपार। लौ वाली दरगह दा केता करो शुमार। कहो मुहमदी इक तुम दरगह कई अपार। उपजहि नूर खुदाइ ते खपत न लागे वार। सभ खाकू ते उपजहि काहन हैवान नवात।

नानक आखे राह सच सुणहु करीम सदान । मोमन होवे मोम दिल मर फिर होवे खाक। खाकों होइ नवात फिर बहुत निआमत पाक। कान हैवानों आदमी तांते नुतफे साफ । नुतफे होवन आदमी अवर हैवानी जात। कान हैवानों आदमी मर फिर आदम होन। पान मरातव किआमती जेही कहीअहि मोम। होइ मुनाफक संग दिल मर फिर होवन खाक। खाकों परवत पथरों पथर ते फिर धात। चूना होवे पथरों दहिआ आतश संग ॥ चूने पाणी मेलिआं होवै मोमन पंग। पथर बाहजो दहिआ दिन दिन वड़ता जाइ। रहै सहंसर जुग लख पथर नाम कहाइ। मिट्टी मुसलमान दी लहै मरातव देइ। होवन पथर खाक ते मरे मुनाफक देहि। मोमो होर निआमतां तारे सुण तू नाम। गंधम मोठ मिरंज मुंग न खुद मसूर खाहि। मिसरी खंड निबात गुड़ मेवे गूना गून। रोगन कपड़े तेल तुल दुध नवातों मोम। आतश बिन न मोम होइ रहे जो धरती माह। सुणहु करीम सैयदा आखी नानक शाह ॥ ४६ ॥

॥ सुवाल करीम दीन सदात ॥

कहे इमाम करीम दीन पैकंबर दी जद्ध। अगे इक खुदाइ है एथे क्यों दुइ हद्ध। हिंदू मुसलमान है दुह विच केहड़े रद्ध। रखो सच सलामती कूड़ मुलामत छड। रदहु जिस नूं रद्धना वत्त न लीजै नाम। कूड़ी दुनीआं कारने मरी न होइ हराम। जेहड़ी सच्ची गल है दुह विच कढहु गोइ। हिंदु मुसलमान दे दुह विच चंगा कोइ ॥ ४७ ॥

॥ जुवाब गुरू नानक देव ॥

नानक कहे करीम दीन इक साहिब दुइ हद्ध । हिंदु मुसलमान दोइ इह फिरके तूं रद्ध। दाइम सच सलामती झूठ न रहसी मूल। जो करन इबादत रब दी पर दरगह पवै कबूल। अगे नाउ न जात है अमलां उपर नवेड़। अमलां बाहजों मोमनों पौसन दोजक झेड़ ॥४८॥

॥ सुवाल्ल करीम दीन सूरा ॥

कहे इमाम करीम दीन सुणहु नानक शाह । विच किताबां लिखिआ आखया आप अलाह । विच ज़मीन आखरी खातम नबी रसूल।पिछले सद मन सुख हन तिनां न मनहु मूल । सभही होसी इक रंग दूजा रंग न कोइ । हिंदु थावहु वी भला मुसलमान जि होइ । हिंदु रहिन न पाइनी लए जो आतश भुख । नाउं निशानी न रही रहिआ हड न मास । सभो जलाए आतशी उठ गिआ होइ निरास । रोज़ कयामत जेहड़े जली न उठे खाक । आतश अंदर सड़ मूए हिंदु वडे नपाक ॥ ४६ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव सूरा ॥

सुणहु सयद करीम दीन आखी नानक शाह । विच किताबां लिखिआ आहा आप अलाहि । करमा उपर निबड़े होर न कोई जाहि । हिंदु मुसलमान दुइ एह मन सूखी जान । दीन गवाइन दुनी पर होवन बेईमान । आपे ही छंड जाहिंगे तोबह करके दीन । हिंदु धर्म न रखसन होसन अंत विदीन । जो वाली है जगत दा लहै दुआं दी सार । दुनी गुलाम खुदाइ दी रहे कदमां नाल । पीर फकीर खुदाइ दे सूरत रब संभाल । फकर खुदाइ वंद एक है दूजा होर न कोइ । एह नसीहत शामली हिंदु मुसलमान । पिछले सभ मनसूख हैं रहे तिनां दा नाउं । अमल तिनां दाना चले जिउं वस अवरां गाव । मने राम रसूल के मनहि क्रिशन करीम । दुनीआं कारन उम्मती करसन कुफर रहीम । लालच दुनी हराम है लैन खुदाइ मान । अगों कोइ न निंददा कहिन रसूल खुदाइ । कौडी मुल्ल न पाइंदे राम रसूलां दोइ । घर घर फिरदे वेचदे अगे लए न कोइ । अजव ज़माना आइआ रब्ब न मने कोइ । कौडी उपर वेचदे अगों लए न कोइ । घतन नाम खुदाइ दा भुखिआं रोटी देह । मनहि न हिंदु तुरक दोइ करी निशानी एह । हीरे जैसी वसत है कौडी मुल न पाइ । कौडी मुल न पांवदे राम रसूल खुदाइ । नहीं खुदाइ रसूल को राम क्रिशन अवतार । चाली कलां

भवाइ के दिती ओस सभ भरमाइ। देवलो देव न रहसनी नहीं वेद पुरान कुरान। मुल्लां मसीती रहिन नहीं हिंदू मुसलमान। जात सफात न रहसनी सभ होसन एक समान। निहचल इक खुदाइ है होर फानी सभ जहान। उडसन हरफ़ किताब दे सच न कहसी कोइ। हिंदू मुसलमान दे मज़हब न रहिसन दोइ। वेद कतेब पुरान मत और कहावन कतेव। हटो हट वकासनी होसन अंत नखेह। घर घर नाम विकासनी किंग मरदंग वजाइ। अगे कौडी न लहै इवें अबिरथा जाइ। सुणहु इमाम करीम दीन सची रब कलाम। दोज़क दुनीआं कारने रोटी नूं हैरान॥ ५० ॥

॥ सुवाल ईमाम करीम दीन सूरा ॥

कहे इमाम करीम दीन सचा देहु सुनेह। जिस विन काइम होइ तन सोई अमल करेह। काइम होइ कयामती जुसे खाक न खाइ। खुले न जुसा तिस दा फेर न आवै जाइ। कौण इबादत रब्ब दी जित कायम होवे रूह। फेर न फिर चौरासीए बहुती होइ न भ्रूह। केही सूरत रब दी किस विध लाइए ध्यान। किस विधि चिल्ले साधीअन सचा देहु बयान। खातम इस ज़मान दा तूं नानक शाह फ़कीर। मीरां अंदर मीर तूं पीरां अंदर पीर। मुरशद हिंदु तुरक दा दुहां दिखाई राहि। सच हकीकत सोध के देहो हक्क सुनाइ॥ ५१ ॥

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

नानक आखे राह सच सुणहु इमाम करीम। जींवदिआं तूं होइ रहु दुनीआं विच लतीम। राहों इश्क खुदाइ दे मन अंदर सुन लाइ। इक्क हक्कानी इश्क है हक्को हक्क कमाइ। गोशा नशीनी होइ रहु धरती सीस कटाइ। करह इबादत रब्ब दी चिल्ले बैठो जाइ। दूजा इश्क सच बंदगी बुरे भले सभ त्याग। एका एकी होइ रहु जां जागन तैंडे भाग। जीता इश्क ज़हीर है खाण पीण सभ जाइ। बैठो आसन मार कर जागे ध्यान लगाइ। माहिर इको घर रख भिन्न भिन्न रहिन न दोइ। आवा गौण न

होइ फिर जो तिन साधै कोइ । चौथा इश्क मिजाज़ है ज्यों दीवे जलहि पतंग । गुझी आतश इश्क दी इश्क मुसाका संग।चारों इश्क महबूब दे रख जिसनों आणे रास । जोगी भोगी आतशां पूरन होवे आस । बाझों लग्गे इश्क दे कोई पवे कबूल । इश्क लगाइऐ रब्ब जे जाहिर थीए रसूल । जेहा इश्क कमाइऐ तेहा आवे रास । लगा रहे रोज सब पूरन होवे हि आस । हाजी काजी सद सभ पुछन कर तकरार जिस दे वल्ल खुदाइ से कदी न आवै हार । हाजी काजी हार कर निव निव करन सलाम। कुझ न चल्ले कूड़ दा उपर सच कलाम । हुज्जत खुज्जत शरे दी आइ न सके नेड़ । जिते फिरके दुनी दे नानक कीते जेर । सभ मज़हब मन सूख कर सचा अमल चलाइ । सत नाम करतार दा चहुँ कूंटी तलब बजाइ । इको तुबका तखत इक इका मुहर चलाइ । इको ही पात शाह जग कूड़ न रहिसी कोइ । रहिन नाही मैकानड़े गोरां मढ़ी फनाइ । कलि विच नानक निर्मला सचा इक खुदाइ ॥ ५२ ॥

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

पास बैठा सी पीर बहावुदीन सिर पीरां दे पीर । सुण गल्लां खुदाइ दिआं होइ रिहा दिल गीर । रुकनल कहे मखदूम जी सुण नानक दी तदबीर । कीतो सु मनसूख सभ अवतार पैगंबर पीर । राम रहीम न मन्नई विशन करी सिआं दोइ । मन्ने न चारों यार रख नाव दे चौदह सोइ । इको नवी रसूल हैं चार इस हावां एकाइको ही खट वाटड़े चौदह बलन चराग।दूजा आखन शक्त है आखिआं चढ़न अजाव । पुछहु का तदबीर कर किस नो करे कबूल । थके न सीहतां देंदिआं गईआं सु सभे भूल ॥ ५३ ॥

॥ जुवाव श्री गुरू नानक देव ॥

नानक आखे मखदूम जी सचा शब्द पछाण । आप ही तुम दुइ कहो आपे इक वखाण । जे दूजा आखण शक है तुसां क्यों जाते दोइ । हिंदु कहे नपाक है दोजक जाए सोइ । नाम न लैंदे राम क्रिशन कहो

फिरऊन। कहिंदे अलह रसूल है होर न पूजहु मूल। तुरक न जपदे राम नूं हिंदु न जपहि रसूल। फिरका हिंदु तुरक दा इस विध मन्नहु न मूल। आखे नानक सच सुण मखमूद बहावदि शाह। कीते हौ मनसूख सभ सची रख पनाह। राम रसूलां केतड़े क्रिशन करीम अलोइ। अवतारां पैगंबरां पीरां अंत न कोइ। यार इसहाब खान वादड़े वेद कतेब वीचार। कई मधाने वाशक्रा शेशां अंत न पार। मर मर जंमन केतड़े ब्रह्मा विशन महां देव। इको सच खुदाइ है होर दरोगी भेव। गौ सूर दोइ इक कर इक पछाने सोइ। हिंदु मुसलमान दे मजहब उठावो दोइ। दावा हिंदु तुरक दा मन ते रखउ न मूल। सच नसीहत याद कर दरगह पवे कबूल। साहिब खुद फुरमाया लिखिआ विच किताब। मर जंमन मनसूख हन मन्नयां चढ़न अजाब। कुदरत कई असंख है इक कादर न्यारा आप। कादर कुदरत बाहरा सभ जपदी तिसदे जाप। कुदरत बंदे रब दे हुकमी आवहि जाहि। बरग जिवें नबात दे त्रुट त्रुट फेर जमाइ। ओहो जहियां सूरतां ओहो जेहे नाम। कूड़ पसारा खलक दा उजड़ वसाए गांव। ओहो फेर न आवनी सभ जपइ जिनां दे नाइ। भरमे भूला आदमी मर जंमे आवहि जाहि। जैसे मोती ओस दी वैसा आलम जाण। मोया कंम न आवई दब गोरीं सड़हि मसाण। मिटी गोर मसाण दी फ़िर आवे हथ कुंभार। भांडे इटां बहु विधी घड़ घड़ धरह सवार। फिर गावन अगनी अगणिती जल बल करन पुकार। हिंदु मुसलमान दुइ फिर लहे न तिनां सार॥ ५४॥

॥ सुवाल पीर बहाबुदीन गौस सूरा॥

आखी गौस बहावदीन सुनहु नानक शाह। कौन नमूना रूह दा रहिंदा केहड़ी जाइ। रूहे दी की जात है कौण सफात कहाइ। आया किस मुकाम से मुइआ किथे जाइ समाइ। जो शक उतारे दिल दा सोई अव्वल फकीर। सचे राह चलंदिआं कदे न होन जहीर। हौ जोइंदा सच दा डिठे शक उठाइ। पीर कहे सुण नानका मन दा शक चुकाइ॥ ५५॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

सुनहु पीर बहावदीन आखी नानक शाह। नाहि नमूना रूह दा रहे न किस ही जाइ। जात सफातों बाहरा रंग रूप नहीं होइ। करे अवाजा गैब दा नदरी पवै न सोइ। आया गैब मुकाम ते फिर गैबी जाइ समाइ। लख चौरासी जुसड़े पहिरे खुसी रजाइ। इकसे इकसे जुसड़े कई असंखां रूह। होइ इकठे आप विच करन अवाजां रूह। रूह खुदा ना भेद कर इका जात सफात। पंजे मिलन नसीहतां साज दिखाई जात। सफात कहाइ के पाईं पड़े जंजीर। जुसा पकड़िआ जुसिआं खप खप होइ जहीर। रूह बनाया आप कूं कूड़ी दुनीआं लग। जात सफात खुदाइ दी नाउं धराया ठग। ठग ठगे मिल ठग नों दूजा नाउं रखाइ। दूजी कुदरत कूड़ है सचा इक खुदाइ। आप भुलाया दुनी लग हमा तुमा धर नाइ। जद रूह जुदा होइ तन ते नाउं नाउं कुछ नाहि। सभा कुदरत रब दी अरबानासर माहि। अरबानासरों बाहरा इको आप अलाहि। करे रियाजत बंदगी जाणै अपणा आप। जिनां आप पछाणिआं तिनां पुन्न न पाप। आखे नानक हिंदगी सुणहु वहावुदीन पीर। पावहु राह खुदाइ दा कदे न होइ ज़हीर ॥५६॥

॥ सुवाल मखदूम बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर वहावु दीन सुणहु नानक पीर। आदम हवा सिरजिआ कहु सची तंदबीर। खाक निमाणी अंधली क्यों कर भई खंबीर। शरत होई खाक ते करे अवाज़ कवीर। सहंस अठारह आलमां गूनां गून सरीर। एह हकीकत गैंव दी रहे सुआल फकीर ॥ ५७ ॥

॥ जुवाब गुरू नानक देव ॥

सुनहु मखदूम वहावु दीन नानक कहे फकीर। अरवा नासर मेल कर खलक किया खंवीर। दाणाभया खंवीर ते सुण साची तदवीर। इकत दानें लख होइ गूना गून सरीर। अन्नों भया खंवीर फिर नुतफे भये बहुरंग। इक दाणे कीमत ना पवै रंगा रंगी अन्न। सहसर अठारह आलमा नुतफे ही

ते कीन सभ दे उपर आदमी जाणै नदी बदीन। अरवानासर होइ फिर जो नर थीए खाक। खाकी आबी नपाक होइ बद्धा नारी ताक। जां होण अलाहदे आप ते करहि न फेर अवाज़।तारां ढ़िलियां जे थीवन फिर शब्द नकरे रबाब। कला बनाई ग़ैब दी गैबी होइ सु पाइ। इके नां जाणै कुतब दी गौंस इके जाणै आप खुदाइ। नख मखदूम बहाव दीन एह अलाह दी खेल। आप आप विछोड़ दा फिर आप कराइ मेल ॥ ५८ ॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन जुसे केते रूह। क्यों कर थीआ अवाजड़ा मिल रूप पुकार न रूह। किथों उपजिआ दानसी किथे जाइ समाइ। बोलण हारा कोण सी इह गैबी सिरर कराइ। आबी सी कि खाकी सी वादी सी के नार। चौहां विचों कोण सी देहो सच बिचार। जो सूरत वन्ह दिखांइंदा करदा बहुत पसार। होंदा जबे ना पैद रूह किछ दिसे न असर असार कुछ सी कुछ नाहि सी इस दा देह बिआन। देह हकीकत सच दी कीजै परगट जहान ॥ ५६ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव ॥

सुनहु पीर बहावु दीन पंज खासीअत रूह। पंज जो पंज पंचवीं सब मिल पुकारन हूह। पंज मिल उपजीआं दानसी फिर पंजां माहि समाइ। बोलन हारा जगत गुर सूरत वाद हवाइ। गैबी पंज फरेशते मिल कर करन अवाज। मढ़िआ पखावज चम्म दा एह रब्ब वनाया साज। आपे इको रवि रहिआ जीअ जंत सभ मांहि। होर सरीक न दूसरा इको इक अलांहि। चारों यार मुसलमी रहे अलाह दे नाल। भुल्ले दुनीआं खुदी लग नाल खराब सुवाल। खाकी आबी आतशी बादी चार कुतब्ब। एहा यार खुदाइ दे आप पैकंबर रब्ब। काइम चारों तरफ दे कीते चार कतब। चारों थम्मे अरस दे रख के मूल न कद। कायम करसी अरस है कायम इक खुदाइ। पंजे काइम हैं सदा होर न काइम जाइ। जो आइआ सो

॥ सुवाल पीर बहाबुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावदीन नानक सच अलाइ। खतरा रहिंदा रात दिन कर मसला सच सुणाइ। कौण नबूद जहान विच हयल काइम कौण। जे एह हकीकत दस देहि हौं सुण रावें तौण। एह हकीकत सच दी देहो सभ बुझाइ। कादर मूल न दसनी सभ कुदरत भरम भुलाइ। काइम कौण इवादती होवे जुसा पौण। हमरी दात सदा सच खबर सुणाए जौण ॥६५॥

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

सुणहु पीर बहावदीन आखी नानक शाह। रखिआ सिरफ तुशीदड़ा सुनी सच सुनाइ। जुसे नाबुद जहान विच हयल काइम रूह। रूह छडे जब जुसिआं मिटे अवाजा रूह। देइ नबूद जहान विच हयल काइम दोइ। जो चरन इबादत बंदगी सच खबर बतावन सोइ। जुसे बाहज न रूह बाझ न जुसा होइ। नानक लेखे मंगीए रोंदे डिठे दोइ। मिलन सजाईं जुसिआं रूह पुकारन आइ। नेकी बदी बिचार के मिले अजाइ सजाइ। आपे रूह कहाइंदा आपे जुसा होइ। इक तमाशा देख के नानक दिता रोइ। रोइ न कोई आइआ हस न चलिआ कोइ। अगा पिछा सोध के नानक रहिआ खलोइ॥ ६६ ॥

॥ सुवाल पीर बहाबुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुनहु नानक शाह ॥ इक खुदाइ रसूल है क्यों दुनीआं वहुते राह। आलम कुझ न होवई वाणी की बलाइ। राह सचावा छड के वहु होइ गुम राहि। मुसलमाना छडिआ खाणा हक हलाल। हिंदु खाण दरोग कहि तिनां होसी की हवाल। दोवें भुल्ले राह ते सच न जानहि मूल। माल विगाना खस खान कसमां राम रसूल। दरगह इनां की हाल होइ सभ दे खबर वताइ। पीर कहे सुण नानफा खतरा मनहु चुकाइ ॥६७॥

॥ जुवाव श्री गुरू नानक देव ॥

सुनहु पीर वहावुदीन आखी नानक शाह। लोभे कारन पीर जी

दुनीआं बहुते राह । कारन कपड़े ताम ते बहुत होई गुम राह । खाम कसीसां एह भांत ज्यों सिर थीआ कपाहि । चुण आंदी वण वाड़ीओं चुख चुख लई खुदाइ । कूके कपाहि न मानड़ी खुस दी करे कहाइ । पहिलां भांवे भाड़ीऐ मंजे उते घत्त । कूके एह कपाहड़ी दुनी न आवां वत्त । फिर फिर मुहि दिती वेलने खावै सकती भीड़ । कीते कारन मारीऐ किस अगे कूके पीड़ । फिर खड़ सौंपी पेजिआं घतन नाड़ी बंद । चुख चुख होइ पिंजदड़ी कारण कत्तन पंद । फिर सौंपी चूड़े वालीआं कतन बांह उलार । कूके एह कपाहड़ी हों कत्त आई संसार । फिर सौंपी जोलाहिआं ताणी तण दे ठोक । छिक छिक देण मरोड़ीआं अंधा गरबे लोक । फिर सौंपी तिनां दरजीआं ज्यों ज्यों खसम कहन । पहिन कपड़ मन भांवदा जित पैधे सोइ वन्न । ना कोइ हस्से हड़ि हड़िआइ नाको करहु सोग । इह सिर थीआ कपाह दे इहनां जंतां सिर की होग ॥ ९८ ॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुनहु नानक शाह । जुस्सा क्यों कर सिरजिआ सच देह सुनाइ । कौन मुकदम पिंड दा किस वसाए लोक । खावै कौण निआमतां किस नूं भोगां जोग । करदा कौण अवाजड़ा सुनणे हारा कौण । जुसा रखदा कौण है सुपने जांदा कौण । इह हकीकत जो दसे सोई अवल फकीर । पीरां अंदर पीर है मीरां अंदर मीर ॥ ९९ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव सूरा ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु वहावुदीन शाह । जुस्सा साजिआ निआमती सचे सुणहु सुनाइ । रूह मुकदम पिंड दा करम वसाए लोग । खाये अन गिणत निआमती रूहां भोगी जोग । करदी वाद अवाजड़ा सुनने हारा रूह । जुसे रखती अगन है रूह फिरे पर जूह । रूह छडे पर जुसड़ा फिर होवन रूह अपार । फिर लगे खावन जुसड़ा कर डारहि तिस छार । मूए की गिणती नहीं जीवता देख पर तख । जेते दाणे अन्न दे

जीअ जंतू लख। गैबी सिरर खुदाइ दा बुझ न सके कोइ। पीर पैकंबर औलीपे थक थक रहे खलोइ। रूह न आंवदा दिसही जांदा लखे न कोइ। इह इशारत जो बुजै पीरां दे सिर होइ ॥ ७० ॥

॥ सुवाल पीर बहाबुदीन सूरा॥

आखे पीर वहावदीन सुणहु नानक शाह। चारे राह अमानती रहिंदे कौण पनाह। चारों राह खुदाइ दे मैनुं इह भी खोल दिखाइ। लिखिआ विच किताब दे कहिआ रसूल खुदाइ। बाहजों राह सरीयते कदे पाक न होइ। वाहजों सुन्नत आदमी दरगह लहे न ढोइ। मुसलमान असाडड़ी वात न पुछसी कोइ। बाझ रसूल मुहमदे दूजा होर न कोइ। दोइम राह तरीकदे सोइम हकीकत राह। मारफता आखीऐ चारों राह खुदाइ। जुसा चार खसीयतां किओं थीआ नापाक। कौण मिलिआ संग दार दे होवन पंजतन पाक ॥ ७१ ॥

॥ जुवाब गुरू नानक देव ॥

सुण हो पीर वहावदीन आखी नानक शाह। चारों राह खुदाइ दे सुण कर मन में लाइ। अवल राह शरीयते गुसल खराइत नाइ। रोजां नमाजां वंदगी अवल रिआजत सार। करके अमल बिकार सभ राह तरीकते धार। जाणे हक हकीकते बुझे हकीम खुदाइ। आपे आप अलाह है होर दूजा कोई नाहि। जींवदिआं दे मर रहे मारफती मन मार। मिलिआ रहे खुदाइ नाल तों ही उतरे पार। मुशकल मुसलमानड़ी जिउ त्रिखी तलवार। भुले राह शरीयते देसन सजाईं मार। वहु मारन कखीं साड़ भुले मुसलमान। कलमे होए नो साड़िआ करके वेईमान। भिसत न पहुता बपुड़ा राड़िआ जो कखां माहि। खाहदा कावां कुत्तिआं मिलिआ नपाकां जाहि। पीर जी ऐवें जाणीआं ओह भिस्ती ठौर न पाइ। जिस दा कलमा आखीऐ ओह

मिले भलाक। भन्न भांडा कुटदा फिर लहे अढ़ूणे दंम। जे भांडा भजै खाक दा फिर आवै कितै न कंम। कलमें वोलिआं उमती चले रसातल जाहि। अगे अगंम अथाह है पार न काहू पाहि। विच जमीने दवीअन चले रसातल जान। आगे हाथ न लभई कई पाताल तलाहि। फिर होवन सारसि आतसी जलहि रसातल माहि। जीवन बहुते बरख लख फिर आतस विच जलाहि॥ फिर होवहि गयद माहीआं बुलन जोक संसार। इक वीह लख जोन है जो वेश भए अवतार। खाए जनावर आदमी बहुत निआमत नाल। फिर होवन ओदूं नुतफे जीआ जंत संभाल। दिचै वसत जलाइ कै जल बल होवै खाक। मण दी सेर न निकली होई मिटी पाक। गईआ रूह असमान नों आव हयाती नाल। रही जो खाक निमानड़ी अरवानासर भाल। रही जो मुष्टी खाक दी होई फेर नवात। खान जनावर आदमी फिर होवन नुतफे पाक। नुतफे होइ जीअ जंत लख चौरासी लोइ। इके तां जाणे आप रब इके खाकी बंदा कोइ। जेहे अमल कमाईनी फिर किआमत पावै दोइ। साहिब ज़रबों बाहरा रवि रहिआ विच लोइ। रिश्ता आप खुदाइ है मणके सगली लोइ। जिवें फिराए तिओं फिरन विरला जाणे कोइ। सची सुनती रब दी सोइ लै आया नाल। जे रखै सोइ अमानती जो खासा बंदा घाल। फिर गया दरगह विच अगे रख निशान। होर दरगह ढोई न लहिन जो राणे शैतान। अवल सुनत सोइ है सिर पर रखे जोइ। पावै मरातब सयदी वड़ा रिखीसर होइ। रखे मोए हलाल खाए निकट हराम न जाइ। सभ जहान दी की चली तिस ते डरे खुदाइ। मुख सुचा इंद्री जती खुपते मनो न जाइ। ऐसी रहिणी जो रहे तिस को काल न खाइ। जो मुख से आखे सो थीवे होवै सैफ जहान। पहिले रखिआ एह गुण चेला सभ जहान। किसे कटाइआ लांड को किसे छिदाए कान। सावत सूरत रब दी भन्नण वेईमान। बुरे दोहां दे पंथ रे बुरा दोहां दा मेल। जे को सच अलाहिंदा घत मारन तिह जेल। सची सूरत रब दी कोइ न पावै भेद। हिंदु मुसलमान दुइ पड़ लड़दे बेद कतेव। वेद कतेवहुं बाहरा ला

शरीक अलाहि। कई असंखां कुदरती साजी खुद करतार। आपे मार जिवाइंदा आपे करे शुमार। इको सिका तखता इक ज़रब भी इका होइ। जाजे खुद खुदाइ है पावै सचा सोइ। कख छिपाइन अग नूं छपे न अगन कदाइ। आखर ज़ाहिर सच है ज्यों कख जलन संग भाइ।

आदि सच जुगादि सच हैभी सच ॥ नानक होसी भी सच ॥

जो मर के फिर फिर जम्मिआं सोइ कच निकच। मर मर जंमन कचड़े हिंदु मुसलमान। काइम तीजा राह है मुसकल थीआ असान। नेकी बदी दुइ रद्ध कर आओ अलाह दे पास। जो मंने ओहदे हुकम नों सोई बंदा खास। चार कतेबां सोध के देखहु दिले लगाइ। रब नां विच कतेब दे रहे इलाहद जाइ। रहे अलाहदा सभ ते विच सभनां दे जान। जैसी सूरत ध्याईए तैसी लईए मान। सुणहु मारफत पीर जी मिलत मज़हब छाड। सोधहु जुसा आपना क्या रब बनाए साज़। काइम चारों रूह है चारों जुसे साथ। पंजवीं कुदरत रब दी मिल होए पंज तन पाक। अवल बादी रूह है नाम फरिशता जान। आतश रूह है जिन कहाए नाम। आबी तीजा रूह है मानहु सूरत देउ। खाकी चौथा रूह है भया खवीस अभेउ। पंजवां रूह खुदाइ है मिल चहु रंगे होइ। कुल बरकती रब दी चारों काइम होय। दुइ नेक दुइ बद हैं वैगी मीत कहाइ। दहिसत नाल खुदाइ दी की चलदे सिद्धे राहि। जेकर इबादत बंदगी सूरत जाण खुदाइ। काइम चार फरेसते चलन तिसहि रजाइ। जो महरूम खुदाइ ते करन इबादत नाहि। फिरदे सर गरदान उह रोज सब न टिकाइ। नेक खसीयत पाक हैं वाद फरिश्ते माहि। वाद पैवंद खुदाइ नाल खास यार कहाइ। आतश कुवत वाद दी विन वाद न आतश होइ। आबी कुवत नार दी विन नार आबी होइ। खाकी कुवत आब दी विन आब न होवे खाक। जिचर पंज न मिलनी होइ न पंज तन पाक। वादी होइ गलीज जब आवै बहु बद बोइ। होवे नार गलीज जब किसे कम्म न होइ। आब गलाजत जे करे गंदी होइ जो आइ। बोइ बोइ खलकत सभ करे हथ न कोइ लाइ। खाक गलाजत जो बोवे नेड़े

छुहे न कोइ । चारों मित्त गलीज होइ नेड़े ढुके न लोइ । विना वरकत रब दी चारों किसे न काम । आखे नानक सुण पीर जी सारी रब कलाम ॥७२॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर वहावुदीन सुणीऐ सच सुआल । गुस्से अंदर जो मरन फिर तिनां कौन हवाल । कौण मरा तब तिनां दा पौसन केहड़ी जाइ । दोजक जाइ कि भिश्त जाह एह भी सच दसाइ । गुस्सा करके जो मरे वडी मरातव पाइ । लिखिआ चार किताव विच से मिले शहीदा जाहि । काइम रहे किआमती मरे न जम्मे सोइ । रण विच मरे शहीद होहि तिस इह मरतव होहि ॥ ७३ ॥

॥ जुवाव श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सूरा सुणहु बहावुद पीर ॥ गुस्सा करके जो मरन से होसन वहुत जहीर । लिखिआ चार किताब विच गुस्सा करै हराम । दुनीआं कारन लड़ मरैं से मूआ किसे न काम । ओह होहि जंबूरे गयदनां जहर लपेटै मार । रण विच गुस्सा कर मोए लैनसि भए अवतार । गुस्सा आतश कर मूए ज्यों जले पतंग दीवान । चशमी देखहु पीर की पाछे करे कलाम । शक्ती मरनां दोजकी सभ आखन मूआ हराम । सिव का मरना भिश्त है सभ को करे सलाम । जीवन पूजे सभ को मूआ भिश्त जाइ । नानक आखै पीर जी सि वडा मरातव पाइ । शकत मरा तव कुछ नहीं अंत दोजक है जाइ । ज्यों परवाने जल मरन विच रोशन दीप जलाइ । जालम करदे जुलम सिर करन गरीवां जोर । इउ पौसन दोजक हावीए ज्यों लहे सजाई चोर । खामन मास गरीव दा आखन थीआ हलाल । फिर लैसन मास उधेड़के ज्यों दिता लैन संभाल । मरना है दुशमनी कदे न छोडे कोइ । जैसा कोई वीजई फिर लुनसी तैसा सोइ । मजहव उते लड़ मरें ज़ो होवे भरमे हान । गुस्सा एह हलाल है रहे किआमत नाम । एह नसीहत पीर जी सुण करके जोर हराम । लिखिआ विच किताव दे आखी रब्ब

कलाम ॥ ७४ ॥

॥ सुवाल पीर बहावदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुण नानक शाह फकीर । अवल इक खुदाइ सी दूजा होर न वीर । क्यों कर आदम साजिआ क्यों कर थीआ खंबीर । यक जा चार फरेशते होइ किस तदबीर । चारों विच शरीफ कोण कौन कतीफ कहाइ । एह हकीकत जो दसे सोई रसूल खुदाइ । अवल बुत निवाजिआ क्यों कीता फिर मनसूख । एह हकीकत जो दसे अलाह दा माशूक ॥७५॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सच सुणहो बहावद पीर । अवल खुद खुदाइ सी फिर दूजी कर तदबीर । कर तदबीर मनहि चार मलाह इन कीन। बादी आबी आतशी चौथी मिल ज़नीन । पंजवां बुरज बनाइ कर सूरत कर असमान । छेवां आप अलाह दा रिहा पुशीद असान । कीता हुकम खुदाइ तक तीनों मलक बुराइ । बादी नारी आब नों होया हुकम खुदाइ । अणहु खाक पताल दी सूरत वहु बनाइ । साजिआ बुत मलाइकां ज्यों होइ रब रजाइ । फिर होया हुकम खुदाइ दा बुत आगे करहु निमाज । बादी आबी मानमाअत तव सिजदे करने लाग । नारी हुकम न मन्निआं तिह रखिआ नाउं शैतान । लानत संदा तौक गल पाइ कढिआ बेईमान । दिता भिश्तों गिड़ाइ के ढोई मिले न ताहि । बिना मिलाहिक आतशी क्यों कर चल्लन राहि । क्यों कर उपजे अलमां कान हैवान निवात । आतश बाझों पीर जी होइ न जात सफात । सय्यद हजार आलमां आतश बिनां होइ । लख चौरासी मेदनी बिन आतश जम्मे न कोइ । आखण सभ फरेशते सुणीऐ चार खुदाइ । जो हुकम न मन्ने रब्ब दा से भिश्तों मिले गिड़ाइ । बेटा नाउं सदाइ के हुकम न मन्नें बाप । होइ फरूनी जरद रुह दोजक पिआ नपाक । करके साफ गुनाह सभ फिर आतश लई मिलाइ । अरवा नासर मेलकर फिर जुमे रचे खुदाइ । मिलिआ शैतान जहान नाल आतश गुसा

नाम। शहवत मनी गिरानगी खुदी तकब्बरी जान। गुरसना त्रिशना हैरानगी नंग भुख बहु मार। फिरना सर गरदान होइ मौके लड़े खुआर। जेते राह शैतान दे सभ आतश ही ते होइ। आतश बाहर जो रहे नर खुदाइ सोइ। होआ जुस्सा दरुसत जब अरवा नासर मेल। पंजवां पोल असमान दा रब ठीक बनाया खेल। सूरत नकनाराइणी साजी आप खुदाइ। नरमादा दुइ आदमी सूर्त अजब बणाइ। आदम ते हवा भई बामि राम ते कीन। हाबील कबील ते ईरतूर तवलद कीन। मरद चारे औरतां चारे जोड़े होइ। अदला बदला औरतां नर मादा कर दोइ। चौहां ते चारे मजहब कीने खुद करतार। सभ पैदाइश चवां थीं कुछ ताका अंत न पार। आलम वडा कबीर है आदम हवा जान काइम सदा सदीव हैं कदी न आवन जान। इनही सो सभ ऊपजे फिर इन हि माहि समाइ। आदम हवा न मरन होर सगली आवे जाइ। हवा सुरत जिमीं दी आदम है असमान।इनही ते सभ ऊपजै लख चौरासी जान।हावीब बुत पुजाइआ कावील कबर पुजाइ। दोहां छपाया खुदाइ नूं सभ दिती नो भरमाइ।दूजे बुत सवाव नहि पूजे होइ अवाज। ज्यों गुडिआं खेलड़ी कछु नाहीं सवाव। रिहा खुदाइ पुशोद आप लखि न सके कोइ दावा भड़ोआं गोर कर लड़ मरदे दिसन दोइ। गोरां मढ़ीआं गढ़ाह के होइ रहे निआरा कोइ। होइ वली खुदाइ दा जिस ऐसी करनी होइ। हावील कबील ईरतुर चारों सक्के वीर। अगनी लहे ररवाइ बाईस चारों नीर। चारों औरत चार मरद सभ आदम के फरजंद। खत्री ब्राहमण वैशशूदर चारों संग पैवंद। चार मुसल्ले चार मजहब चारों भाई वंद। आदम नबी रसूल होइ चार कतेवां संग। ब्राहमण छत्री वैश शूदर चौहां चलाए राह। आपो आपणे मजहब विच चार ही पातशाह। चारों मुफती चार मजहब वहिन नवी दे पास। दे नवाइत भुलिआं ज्यों साहिब आखिआ आप। चार कतेवां चार जुग चारों मजहब नाल। चार मुसल्ले चार कूंट जुग जुग करहि संभाल। चार खसीअत चार वेद पांचों नाल इमाम। पंजम भइआ पैकंवरों आदम हजरत जान। बाद

मलाइक खात बुत आखीं जिंदा पीर। आतश नूर खुदाइ ते जाणहु कर तद्बीर। पंजम आप खुदाइ है अंदर बाहर होइ। एह हकीकत पीर जी विरला जानै कोइ। आबी खाकी बादि नार चारों रुकन पछान। चारों इमाम चार मजहबां चार कतेबां जान। जुग जुग एहो चाल है पंज तन पाक रसूल। आपो आपनी मजहब विच सभ कोई भइआ कबूल। जो अमर औताक हिंदुआं चले विच जहान। एह भी चारे मजहब कर करम मुतीआ आन। किसे न रद्दहु पीर जी सभना इक अपाहि। दूजा होया न होइगा जो होआ थीआ फनाहि। अव्वल आखर इक है विच विच फानी जान। आवन जान अगणत ही जीआ जुगत पछाण॥ ७६॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन कहु नानक बीचार। खाधिआं कौण निआमतीं उपजहि अमल विकार। कौण निआमत खाधिआं होवन नेक अमल। एह हकीकत गोइ कर करो तमामी हल॥ ७७॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक रासत पंध गुणीऐ मन चित धार। निआमत जो बद खाक दी खायां होइ विकार। निआमत जो नेक खाक दी तिस थीं नेक अमल। निआमत खावै जोहदी लए खुदाइ महल। खाणा माल हराम दा निआमत गूना गून। खाधे पीते हराम हैं ध्रिग हवेही जून। गुसा होवै जित खादिआं शहिवत मनी हराम। खुदी तकबर शैतानगी करे इबलीस काम। देइ अज़ाव गरीव नो खाइ तिनां दा मास। मुरगी मारो पीर जी दगा करे गरीव घात। होर विचारे रहु जानवरां पार परंदे लख। मारन पाइ हराम होह सोहहि जलादां भख। जवरां मार न सकनी फीलां शेर पलंग। थीए हराम वहु जालमां मारन जो अगों डंग। डाहडिआं कोइ न मारदे करन जो अगों जोर। जो गरीव निमानड़े तिनां लैंदे पिंड अधेड़। लिखिआ चार किताव विच सभ पर जोर हराम। सोई कलमे पाक जो मंने

रब्ब कलाम । सतियुग अंदर पीर जी फरेशतिआं दे अवतार । खाणा तिस दा वादसी कछु होर न करन अहार । करन अलाह दी वंदगी होर व्योहार न कोइ । महिल न माड़ी वैठकां कानें छप्पर होइ । जेते अंदर पीर जी देवां दे अवतार । खाणा उनां दा आव ही कछु होर न करन अहार । दुवापर अंदर पीर जी जिनां दे अवतार । खाणा ओनां नारशी मच्छी मास आहार । कलजुग अंदर पीर जी खवीसां दे अवतार । खाणा कीता किरतवी भख अभख अहार । खाक दे पुतले फिर खाक माहि समाहि । पीर जी ऐवें जाणिऐ फिर मर जमन फिराहि । बंदगी बाहजहुं पीर जी पाणी ताम हराम । खाण सजाईं बहुत बिध गुसा शहिवत काम । कलजुग अंदर पीर जी विना अजाब न ताम । जीवण खाइ हराम है मुइआं न आवे काम । कलजुग दुनी हराम है मुइआं न आवे काम । जीवण दीन गुवाइऐ मुइआं नाल न जाइ । किश्ती डुबी अजाव दी कढ्ढ न सके कोइ । राम रसूल सिध पीर जी थकही रहे खलोइ । भारी किश्ती अजाव दी मुहाणिआं पास न जोर । डुबी इवादत बंदगी विच लाहो घुमर घोर । अमलीं आपो आपणी सभ को लहै सजाइ । इक अमलां दीआं नेकीआं वंदिआं हैन जुपाइ । जेहा वीजे सो लुणे हथो हत्थ नवेड़ । कलजुग करनी सार है होसी झगड़ा फेर । अदल न करसन पातशाह मीर वजीर उमराइ । काजी मुफती मौलवी मुल्लां शेख उलमाइ । सभनां उपस सदर है देंदे हक गुवाइ । ध्रिग अवोहा खावणा जित खाधिआं मिले खजाइ ॥ ७८ ॥

॥ सुवाल पीर बहावदीन सूरा ॥

आखे पीर वहावुदीन सुण नानक सिरदार । क्यों कर मिलीए रब्ब नूं क्यों कर होइ दीदार । केहड़ी सूरत रब्ब दी रहिंदा केहड़ी जाइ । खांदा की निआमतां पहिरे की कवाइ । करके केहड़ी बंदगी मिले गरीव निवाज जां रब मिले तां करज होइ पूरा होवै काज ॥ ७६ ॥

॥ जुवाब गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सुण पीर बहावुदीन शाह । कहु मसकीनी बंदगी तां मिलीऐ बेपरवाह । नूरी सूरत रब्ब दी रहिंदा सभनीं जाइ । खांदा राग निआमतां पींदा शब्द अघाइ । करके मेहनत बंदगी मिले गरीब निवाज । जां रब मिले तां करम होइ सवरन सभे काज ॥ ८० ॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सचा सुणहु सुवाल । मुसलमाना छडिआ खाणां चज हलाल । हिंदू खाण दरोग कहि तिनां होसी कौण हवाल । ओ पासन किस सजाइ नूं जासण केहड़ी जाइ । होसी की हवाल तिनां पासन की सजाइ । कलमा असहद आख के खास खान बगाना माल । हिंदू दगा कमाइ खाइ की होइ तिनां हवाल । आखन मुसलमान इउं असां रसूल पनाइ । नेकी बदी न को पुछु अनपुछे भिस्ती जाइ । जिनी कलमां आखिआ से दोजक लहिन सजाइ । हिंदु राम राम आख के माल बिगाना खाइ । डिठा किस खुदाइ है किछ आगे इक ही नाहि ।

॥ जुवाब गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु वहावदीन पीर । खाणा खाण हराम जो सो होसन अंत ज़हीर । ओ धरसन जुसा नवात दा सिर सहिन वडे अज़ाव । कट कट लहीअन हैजमा सुने न कोई दाद । सुणे न राम रसूल को सुणे न कोइ अवतार । उम्मत छुडाइन कैत भित आप जल बल होइ छार । उन अपनी मैल न धोतीआ होर क्यों कर होवन पाक । नानक कहे सुण पीर जी सभि उम्मत रहे नपाक । मुख राम रसूलां आख के मुस माल वगाना खाइ । वात तिनाड़े किरतवी दोजक लैन सजाइ ॥ ८२ ॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर वहावुदीन सुण हो नानक पीर । क्यों कर करदा नुकल रूह कहु सचा तदवार । किथहु दी इह खाक है फिर मरदा किथे जाइ ।

खाक विछुन्नी खाक ते फिर क्योंकर मिलदी आइ। रूह विछुन्ना जुस्सिओं
पहिरे जुस्से और। इक ठौर नूं छड के क्यों फिरदा अवरीं ठौर। एह हकी
जो दसे सोह पास फकीर। सिर पीरां दे पीर उह सिर मीरां मीर ॥८३॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु बहावुदीन पीर। स्वाश अंदर जो
फिर चलदा नक्ल सरीर। जुस्सा मशरफ उपजिआ फिरदा मगरब जा
बाद उजाए खाक नों फिर मिले उथाउं आंइ। भांडा भन्ना खाक दा वत्त
आवे रास। फिर भांडा होर बणाइ के रूह करदा ता में वास। जि
काइम नाहि रूह टिकै न इकतै ठौर। इक पलक दे अंतरे कर आवे
दिस दौड़। रूह पवन दी जात फिर न आवै हत्थ। दिसटी मुसटी बा
रहिंदा लख अलख। भन्नन घड़न समरथ है भाणे हुंदा रब। आपे
अवल ते आपे करे सबब। आपे बन्ने आपनों आपे देवे खोल। आपे
खामोश होइ आपे बोलन बोल ॥ ८४ ॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुण नानक करतार। जिती थीए पैकंबरां
थीए अवतार। बादशाह उमराउ बहु काजी मुफती शेख। मुल्लां
मौलाणिआं पढ़न किताव अनेक। पीर फकीरां औलीआं गौस
सालार। हुकम लै आए रब दा नेक अमल वीचार। एथे आए दुनी
घेरे नफस शैतान। घेरे घच कर कोड़मे कारन कपड़े तान। विनां द
न आवनी लख हजारां दाम करके जवर जहान ते जामल लुट लुट खा
रख पनाह रसूल दी तुरक करेंदे जोर। हिंदु राय भुलाइ के धूह लैंदे
करोड़। दरगह कीं हैवाल होइ सिर हिंदु मुसलमान। की सिर होए पैक
जो उम्मत दे जमान ॥ ८५ ॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु बहावुदीन पीर। अवतार पैकं

जितने विच दरगह बहुत जहीर। उम्मत करे अजाब खहु पैकंबर सिर भार। वहु हिंदु पाप कमांवदे सद पुछीअन अवतार। काजी वगैरा होर जो विच जेलीं बहुत हैवान। मिलन सजाई तिनां कु जो होंदे बेईमान। बधे पायां कारने सो हुण तक छुटहि नाहि। अमल जिनां बहु जुलम सिर पर चढ़िआ गुनाहि। गउर गरीबां नां करन लैं रिशवत हक्क गवाइ। दरगह अंदर डिठा मैं पांदे बहुत सजाइ॥ ८६॥

॥ सुवाल पीर बहावुदीन सूरा ॥

आखे पीर बहावुदीन सुणहु नानक शाह। हिंदु तुरक दुइ हदीं सिर पर इक्क अलाह। हिंदु आखण असां विच तुरक कहिण असां माहि। दुइ फिरकिआं विच किस वल सचे देइ सुनाहि। ह दु रद्ध न तुरकों रद्धहि हिंदू आहि। दोहुं विच सचा कौण है सची कहि समझाइ। तुरक कहिण रब तुरक है हिंदु कहिण हिंदु आहि। रौला हिंदु तुरक दा इलहाद कर दिखलाहि। ज्यों पाणी दुध मिलाप है त्यों हिंदु मुसलमान। रोगन हत्थ न आवहि रिड़कन हार शैतान बहुतीआ बणीआं नसीहतां बहुते धरे कतेव। अज हैरानी मनै विच इक रब दुइ भेद। तिनां अंदर बहुत हैन फिर के अंत न पार। पीर कहै सुण नानका कर दोहे तार पतार॥८७॥

॥ जुवाब श्री नानक देव ॥

नानक आखे पंद सच सुणहु बहाबुद पीर। रद्धहु हिंदु तुरक दुइ जो होइ वहुत जहीर। हिंदु मुसलमान इक साई दी दो हद्ध। दोनों कर मन सूख तूं जो अलाह कीते रद्ध। रद्ध जहूदा काफरां मुनाफकां ते मुल हद। रूसी जंगी इरमनी हवशी ते इलमाक। कशमीरी कशमीरीआं हीरा तुरत लाक। कुफर फिरंगी दोजकी यूनानी वद खाइ। दहिमीए गुम राह बहु जां जानन नाहि अलाहि। फिटा दुध न कम्म किस रोगन हत्थ न आहि। जे सो वारिआं रिड़कीए सड़ सुक्क मुढों जाइ। नानक आखे सुण पीर जी बाझ सच गुम राह।

जब इतना सुवाल जुवाब पीर वहावुदीन के साथ हुवा तब एक बगदाद का पीर जलाल दीन पौत्र हजरत मुहमद दीन का मन में कुछ जोश लाकर कहने लगा ॥ ८८ ॥

॥ सुवाल पीर जलाल दीन बगदादी सूरा ॥

आखे पीर जलाल दीन सुण नानक हिंदू फकीर । हिंदू सूरत दोजकी विच आतश होइ जहीर । जे आवहि राह इमाम दे तां भिश्ती पावहि ठाहि । पीरां अंदर पीर कुतब गौस मरातब पाइ । वलीआं अंदर वली होइ शेखां अंदर शेख । विच सलारां सलार होइ जां एह वटाए भेश । हिंदू भिश्त न को गइआ सभ घत्ते अगन जलाइ । नाउ निशानी नां रही पिआ किथाऊं जाइ । उस पिछे दरूद न फातिआ ना को करदा याद । एहो मरातब हिंदूआं उमर गवाई बाद ॥ ८९ ॥

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव सूरा ॥

सुणहु पीर जलाल दीन आखी नानक शाह । हिंदू मुसलमान दुइ डिठे मैं गुम राह । जुस्सा मुसलमान दा रखिआ वहिश्ती जाइ । आखर होया खाकड़ी गई सू खाकू खाइ । कुदरत जिमी नवात होइ कुछ आई कुलालो हत्थ । भांडे इट्टां साजके जलन पजांवी घत्त । तोबा पुकारे खाकड़ी सुणे न को फरयाद । मुसलमान मुहम्मदी फिर कदे नां करदे याद । दोवें दिस्सन जलदीआं विच भिश्तां इक न जाइ । वारस राम रसूल दोइ सकन न उमत छुडाइ । रहे मरातब दुनी विच अगे दी सुध नाहि । डाहडी वनी रूह सिर फिरे चौरासी माहि । जिनां तकिया रब्ब दा से रत्ते सच नाइ । काइम थीए जहान विच फिर मरे न आवहि जाइ । विना रिआजत बंदगी काइम थीए संसार । काइम न रहे पैकंबरां काइम न चारों यार । काइम न थीए औतार जग रामा क्रिश्न मुरार । काइम न पीर फकीर होइ सिध सादक सालार । काइम जुसे न थीए रहे कि काइम नाउ । नावां अंत न पाइआ लख आवहि लख जाइ । काइम जुसा जो रखे काइम रहीए ।

विनां इबादत बंदगी रिहा न काइम कोइ । मुशकल मुसलमानड़ी हिंदू हरकत माहि । दोवें काइम नां थीए दावा कर मर जाइ । नानक दावा छडिआ दुइ ते निआरा होइ । इथे मिलन वडिआईयां दरगह पावै ढोइ ॥ ६० ॥

॥ सुवाल पीर जलालदीन सूरा ॥

आखे सैल जलाल दीन बगदादे दा पीर । पोता हज़रन पीर दा पुछे कर तदबीर । हफताद दो मिलदा छिरके मुसलमान । इलाहता इक दू इक है सची कहिन सलाम । कलमा पढ़न रसूल दा सुणहु नानक पीर । रोज़ कयामत देहड़े थीसन नाहि ज़हीर । हिंदु मुसलमान दोइ कीते नी मनसूख । दर ते बाहर जो थीसी सुखन अलाहि न चूक । कलपिआ पीर जलाल दीन कलपे मुल्लां शेख । हाजी पीर मशाइकां तुरक मलंग दरवेश । सालक सादक काजीआं गौस कुतब वड पीर । सभे इकठे होइ कर आवें कावे माहिं । इके दिखाए अजमतां नहीं तां देहु सजाइ ॥६१॥

जवाब पीर बहावदीन सूरा नाल हाजीआं पीरां दे

आखे पीर बहावदीन सुणहु जलाल दीन पीर । गुरु नानक पासहु पुछणा वहुती है तकसीर । ज़ाहर अज़मत इस दी मका दितो सु फेर । कीते सु राह मनसूख सभ आंदे हैसु ज़ेर । मन्निआं हैसु खुदाइ इक दूजा होर न कोइ । दूजा मुहंमद पीर है सचा राहि दिखाए जोइ । हिंदु देख न भुल तूं मुसलमान भी नाहि । दोवें रदे सी मज़हबां घते सी दोजक माहि । वडा फकीरी मुरातवा मारफती सच राहि । मारफती जो बाहरे सभे हैं गुमराहि । दुनीआं कारण मजहव थीए अंत अपार । सचा फकर रव दा कौण लंघाए पार । तुसीं महिरम नहीं पीर जी नानक वडा फकीर । रब जिनां दे हुकम विच से सभनां दे पीर ॥ ६२ ॥

॥ जुवाव श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु जलाल सदात । वडा बोल न बोलीऐ

साहिब हथ करामात । साहिब भावे सो करे फकर साहिब दे तान । साहिब नितारिणआं ताण है साहिब निमाणिआं माण । आकासां आकास लख लख पतालां पाताल । सभनां दे सिर इक रब सभ दी करे संभाल । जीआं जंत वस करे रब दे जो वसदे लोआ लोइ । थकां हों ओड़क भाल हुण चुप कर रिहा खलोइ ॥ ६३ ॥

॥ सुवाल पीर जलाल दीन सूरा ॥

आखे पीर जलाल दीन सुण नानक शाह कताल । चौदह तवक किताब तिस ते परे जवाल । डिठे बाझों नानका खातर जमां न कोइ । कहिणा सुणना बाद है जो दिसे सच सोइ । मजलस अंदर बैठिआं होए अंदर धिआन । अखीं अगों छिप गए मजलस भई हैरान ॥ ६४ ॥

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव अकाश बाणी ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु जलाल सदात । इके असां को नाल दे हिकतां चलहु आप । दिता बेटा पीर नाल जुल जलाली नाम । वाउ चढ़े असमान विच तिसदा सुणहु विआन । इक पलक दे फुरकने डिठे अगणित असमान । कई पैकंवर कर पीर होइ रिहा हैरान । फेर गए पाताल नों डिठे कई पताल । अवतारां पैकंबरां गणत अगणत न भाल । जिथे बाबा जाव हे तिथे ही गुण होइ । कारन दरशन देखने आवै सगली लोइ । कारां भेटां सिरनिआं नजर निआजां लख । गूना गूनी निआमतां मेवे लख अलख । इक जमीन दे अंदरे बाबा पहुंचा जाइ । अगे कड़ाह तिआर सी गावन सबद अलाइ । बाबा सुणिआं संगतीं सभ दरशन लगी आइ । रखिआ अगे कड़ाह नूं पैरीं सीस निवाइ । लई कड़ाही बावे चडके माई विच कच कौल । फिर दिती कड़ाही पीर नूं बैठा सी जो कोल । इक पलक दे अंदर फिर मके पहुते आइ । बेटा पीर जलाल दीन मुख ते वचन अलाइ । इस आखर जमाने विच नानक वडा फकीर । मीरां दे सिर मीर है पीरां दे सिर पीर । आखि ओस मुहों कलाम जो सोइ दितिओ सु दिखलाइ ।

तुसी जाणहु होर कुछ असां बुझिआ खुद खुदाइ। आकासी पाताल लख पातालां पाताल। डिठे कितने पलक विच हौं भी जुलकर नाल। हेठों कई पतांल ते मिल कड़ाही आइ। सारी मजलस अंदरे दितो सु कड़ाह दिखलाइ। सभे गए हैरान होइ नानक वडा फकीर। इके खुद खुदाइ है कहिन सभे तदबीर। सभे कदमी ढेह पए मन विच बहु डर खाइ। अजी काई निशानी रखीऐ मका भिश्त कराइ। बाबे कउंस उतारी पाउं ते रखी निशानी एह। जो करन जिआरत कौंस दी ओह फेर न जनम धरेह।

मक्के की साखी खतम हुई
॥ आगे साखी मदीने की चली ॥

एक वरस श्री गुरू नानक देव जी मक्के में रहे। तमाम हाजीओं को झुकाकर आप मदीने को गए। जो हाजी लोक मक्के की ज़िआरत को मार्ग में गुरू जी को मिले थे, वे जब मक्का में पहुँचे। तब श्री गुरू देव जी को मक्के में उपदेश करते देख कर हैरान हो गए। मक्के के हाजीओं ने कहा कि गुरू नानक एक वरस से यहां मक्का में ही तशरीफ़ रखते हैं। उन हाजीओं ने कहा कि हमें इस बात की हैरानी है। कि मार्ग में नानक देव हमारे साथ थे। यह इतनी जलदी यहां किस प्रकार पहुँच गए। मक्के के हाजी कहने लगे भाई! यह नानक खुदा का ही रूप है। इस ने तो उपदेश देकर तमाम उलमा अपने वस में कर लिये हैं। अब तमाम हाजी मदीने की ओर चल पड़े

उन हाजीआं ने यह निश्चय किया कि मदीने में चार महान विद्वान मौलवी हैं। उन से नानक की गोष्टी हो तो यकीनन नानक की पराजय होगी। तथा हम इसे इसलाम की शरण ले लेंगे यह विचार कर गुरू नानक जी के साथ ही तमाम हाजी मदीने को चल दिये।

मक्के से सभी बाबा जी के साथ थे परंतु गुरू जी अंतर ध्यान हो गए

तथा एक पल भर में मर्दाने के साथ गुरू नानक मदीने पहुंच गए। समय रोम का बादशाह सुलतान हमीद कारू था। वह बहुत ही ज़ा था गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! चलो पहिले बादशाह को ही मिलें त उस का कुछ कल्याण हो सके।

इस से पहिले भी एक कारू नाम का बादशाह हो चुका है उ चालीस गंज इकठे किये थे। यह भी कारू की भांति था। इस ने पैंता गंज जोड़ रखे थे गुरुदेव उस के दरबार की डियोढ़ी में जा पहुंचे दर से ज्ञात हुवा कि यह बादशाह महान कंजूस तथा ज़ालम है। इस के एक कहावत सुणी जाती है कि इस ने किसी के पास भी एक रुपया नहीं छोड़ा। जब वज़ीरों ने कहा कि हे बादशाह अब जनता के किसी पुरुष के पास रुपया नहीं तब इस बादशाह ने कब्रों में मुरदों के मुख रुपये निकलवा कर अपने खज़ाने में डाल लिये थे।

उस समय अर्ब देश के अंदर यह प्रथा थी कि जो कोई मर जाए उस के मुख में एक रुपया डाल कर उसे दबाया जाता था, इस बादशा मुरदों के मुख में भी रुपये नहीं रहने दिये।

यह सुण कर गुरू जी ने कहा, हे मर्दाना! यह बादशाह घोर में पड़ेगा तथा ऐसे बादशाह को धिक्कार है इतनी कह कर गुरू जी ने हे दरबान! आप जा कर बादशाह को कहो कि दो साधु डियोढ़ी में हैं तथा आप से मिलना चाहते हैं।

दर्बान की बात सुण कर बादशाह बाहर आया। आगे गुरू जी ठीकरी इकठी कर के उन को गिण रहे थे। बादशाह ने आते ही प्रश्न कि यह आप क्या कर रहे हो? गुरू जी ने कहा हे बादशाह यह ठीक हम लोग अपने साथ परलोक में ले जाएंगे। बादशाह ने कहा हे फ जी! क्या कभी ठीकरीयें भी मरने के पीछे साथ जा सकती हैं गुरू ज कहा हे बादशाह! यदि तुमारे पैंतालीस कोषों के रुपये जा सकते हैं क्या हमारी यह ठीकरीयें नहीं जा सकतीं। हे बादशाह! इतना स्मर्ण

कि जो कुछ यहां दान किया जाता हैं वही साथ जाता हैं। जोड़ने से तथा जुलम का कमाया धन इसी जगह रह जायगा। जरा विचार कर देखो पहिले कारूं जैसे एक पैसा भी अपने साथ नहीं ले जा सके शायद तू ले जायगा। यह विचारने की बात हैं, हां! यदि तू राहे खुदा में दान करेगा तो वह तेरे काम आयगा तथा परलोक में तेरा साथी बनेगा नहीं तो मरते समय तुझे यह तेरा एकत्र किया हुवा धन महान दुख देगा तथा फिर पछताने से कुछ भी नहीं बनेगा तथा तेरे धन के अधिकारी और लोग ही बन जायेंगे।

जो आदमी कंजूसी से तथा जुलम से तेरे समान जीवन व्यतीत करता है। उस का नाश हो जाता है जैस तेरे से पूर्व पापीओं का नाश हुवा हैं, किंचित उसे स्मर्ण कर।

बादशाह की आंखें खुल गईं। कहने लगा। हे फकीर। सांईं। मुझे संसारी कामनां ने जकड़ रखा है। अब मुझे कुछ २ आप की कृपा से ग्यान हुवा हैं। अब मैं तोबा करता हूं। परंतु आप कुछ ऐसा उपदेश करें। जिस से मेरा मन बुरी वासनाओं से पाक हो सके। तथा उस खुदा के नाम को हासल कर सके। तब गुरू जी ने उस बादशाह को पवित्र उपदेश से कृतार्थ किया।

उपदेश श्री गुरू नानक देव जी महाराज का जो मदीना के बादशाह को कृपा करके किया।

कीचै नेक नामी जो देवे खुदा। जो दीसे जमीं पर वह होसी फ़ना। दाइम त्रा दौलत कसे वेशुमार। न रहिंगे करोड़ी न रहेंगे हज़ार। दमड़ी तिसी का जो खरचे और खाइ। देवे दिलावे रिझावे खुदाइ। होता न राखै अकेला न खाइ। तहकीक दिल दानी वही भिशत जाइ। कीजै तवज़्जा न कीजे गुमान। ना रहेगी दुनीआं न रहेगा दीवान। हाथी व घोड़े व लशकर हज़ार। होवहिं गरक पल में न लागे गी वार। दुनीआं का दीवाना कहे

मुलक मेरा। आई मौत सिर पर न तेरा न मेरा। केती चली देख वाजे वजाइ। रहेगा वही एक साचा खुदाइ। आया अकेला अकेला चलाया। चलते वक्त कोई काम न आया। लेखा मंगीजै क्या देगा जुवाव। तोवह पुकारे जां पाए अज़ाव। खलक पर किया जोड़ दमड़ा कमाया। खाया हंडाया अजांई गुवाया। आखर पछोताना करे हाइ हाइ। दरगह गया वहुत पावै सजाइ। लानत है तैं कू वा तैंडी कमाई। दगेबाजी करके दुनीआं लूट खाई। पीए पिआले वा खाए कबाव। देखो रे कारूं जो होते खराव। जिस का तू बंदा तिसी का सवारिआ। दुनीआं के लालच तैं साहिब वसारिआ। नां कीतीआ इवादत ना रखिआ ईमान। कीती हकूमत पुकारे जहान। अंदर महल के बैठों तू जाय। हरमा से खेले खुशवोई हवाय। पूछे न बूझे कि बाहर क्या होइ। हरामी गरीबों को मारे विगोइ। वसदी उजाड़ें ता फिर न वसाइ। कूकहि पुकारहि को दाद न पाइ। करोड़ी लख जोड़ी करे बेशुमार। कई किसान बपुड़े मरीवहि हजार। हाकम कहावें अदालत न होइ। दुनीआं का दिवाना फिरे मसत लोइ। लुटे मुलख सारा पहिरे खरच खाइ। दोजक की आतश मारेगी जलाइ। न कीचे हिरस देख दुनीआं के दीवाने। हमेशा न रहेगी तू ऐसी न जाने। उठाते सफा तिस को लागै न बार। तब किस की है दुनीआं किस के घर बार। न कीचै हिरस वहुत दुनीआं के यार। चंद रोज चलनहि किछ पकड़हु करार। शरमिंदा न होवहि किछु नेकी कमाहि। लानत का जामा तू पहिरे न जाइ। गफ़लत करोगे तो खावोगे मार। वेटी वा वेटा को लएगा ना सार। तोवा करो वहुत कीजै न ज़ोर। दोज़क की आतश जलावेगी गोर। मसाइक पैगंवर केते शाह खान। न दीसहिं जिमी पर तिनहु के निशान। उडते कबूतर जनावर की छाउं। केते खाक हुवे न पूछे को नाउं। चाली गंज जोड़े न रखिओ ईमान। आखर वकत कारूं हुवा परेशान। नदानी इह दुनीआं व फानी मुकाम। तूं खुद चशम वीनी इह चलदा जहान। हर वकत वंदे तू खिदमत संभार। मसती व गफ़लत में वाजी न हार। तोवह न कीतीआ

करदिआं गुनाह। नानक इस आलम से तेरी पनाह ॥ १ ॥

जब श्री गुरू नानक देव जी ने यह उपदेश दिया, तो सुलतान हमीद कारू हैरान हो गया। और मन के किवाड़ खुल गये तथा रोने लगा। और कहने लगा। कि हाय! हमारा क्या हाल होगा। हे अल्लाह! हम लोग आज तक गफ़लत की नींद में सो रहे थे। तथा हमें परलोक का कोई भी भय नहीं था। क्योंकि हम अग्यानी थे, हे गुरू नानक! आप के इस पवित्र उपदेश ने हमारी आंखें खोल दी हैं। तथा हम भय भीत हो रहे हैं, अब आप हमें कुछ आग्या करें।

गुरू जी ने मुसकरा कर फरमाया। हे बादशाह! बातों से कोई कार्य नहीं होता। जब तक उसे कार्य रूप में न किया जाय। जब तक परमात्मा के स्मर्ण तथा संसार में भले काम न किये जायें। तब तक इस इनसान का कोई काम भी पूर्ण नहीं होता। तथा वह संसार का स्वामी उस पर कभी भी कृपा नहीं करता। संसार की मित्रता किसी काम नहीं आती। उस ईश्वर के साथ किया हुवा प्रेम ही काम आता है। जब तक यह इनसान पिआले में गरक है। तथा जब तक इसे दुनीआं की कामनां सताती रहती है। तब तक यह गुमराह ही रहता है। और जो गुमराह है उस के लिये दोज़ख की आग बुला रही है। और वह जरूर ही उस में जलेगा।

यह सुन कर बादशाह ने कहा–हे पीर नानक! उस पाक जात से मुहबत करने का क्या ढंग है। तब गुरू जी ने एक शब्द उच्चारण किया।

॥ राग तिलंग महला पहिला ॥

दोसती यारो दोसती सिर पर जाणै ॥
हुकम पछाणै शाह का चले खसम के भाणै ॥१॥रहाउ॥
दोसती तां पर जाणीऐ जा रच मच लावे ॥
धुंड न कडे खसम सों सरम सभ चुकावे ॥ १ ॥
दोसती तां पर जाणीऐ जां गुर न पखाले ॥
सोइ निमाणी झड़ पवे खसम दे दुवारे ॥ २ ॥

जोर न लगे दोसती कली मुल्न विकावै ॥
दगे स्यों लाल न रीझइ जे लख जतन कमावैं ॥ ३ ॥
भठ पई दोसती कली दी गई देखदिआं हू ॥
नानक सोई दोसती जो तोड़ निवाहू ॥ ४ ॥

यह शब्द सुन कर बादशाह गुरू नानक देव जी के पवित्र चर्णों पर गिर पड़ा और कहने लगा अब आप जैसे हुक्म करेंगे वही मेरी ओर से किया जायगा। गुरू नानक देव जी ने कहा, हे बादशाह तुमारी जेल में जितने भी कैदी हैं पहिले उन सभ को मुक्त कर दो। इस से तेरा कल्याण होगा तथा आज से गरीबों पर जुलम करना त्याग दो इस से ईश्वर तुझे प्रेम करेगा। सुलतान ने गुरू जी की आज्ञा मनवचन तथा कर्म से मानी। और ईश्वर पूजन में लग गया लंगर जारी कर दिये। प्रत्येक स्थान पर दान होने लगा। खजाने जो एकत्र किये थे सभ का दरवाजा खोला गया तमाम अरब देश में गुरू जी की कृपा से आनंद छा गया। गुरू जी ने कहा हे सुलतान! जो ईश्वर का हो जाता हैं उस की मदद ईश्वर करता है। गुरू जी ने कहा, हे सुलतान! अब ईश्वर तेरे पर सदैव प्रसन्न रहेगा तथा तुमारी क्रिपा देख कर हम लोग भी तुझे आशीर्वाद देंगे जिस से सोने पर सुहागा के तुल्य चमक उत्पन्न होगी अर्थात तुझे बहिश्त में वह सुख प्राप्त होंगे जो सुख परमात्मा के प्यारों को प्राप्त होते हैं।

इस के पश्चात हाजी लोक भी मदीने आ पहुँचे आगे उनों ने देखा तो श्री गुरू नानक देव जी आसन पर विराजमान हैं तथा रबाबी मर्दाना रबाब बजा रहा है वे सब देख कर हैरान हो गए तथा पूछने लगे कि—यह फकीर तथा पीर नानक यहां कब से आया है? तब उन लोगों ने कहा कि यह फकीर तो काफी दिनों से यहां विराज रहा है। अंत में उन हाजीओं ने मदीने के मुल्लांओं को बुला कर श्री गुरू जी से प्रश्नोत्तर करवाना चाहा। बाबे नानक देव जी ने उत्तरों में सभ को हैरान कर दिया। जो भी प्रश्न मुल्लाओं तथा उलमाओं की ओर से होता था उस का उत्तर गुरू जी ऐसा

देते थे कि बस सभ के मुख बंद हो जाते थे। अंत में उन लोगों ने यह जान लिया और मान लिया कि नानक एक पहुंचा हुवा फकीर ही नहीं। अपितु यह स्वयं अल्लाह की पवित्र ज्योति है जो नर तन धार कर संसार के कल्याण के लिये इस भूमि पर प्रकट हुई है।

इस के पश्चात कुछ गुम राह मौलवियों ने श्री गुरू जी को परास्त करने के लिये कमर बांधी। और यह निश्चय किया कि इस काफ़र को अपने दीन मुहम्मदी में लाने के लिये कुछ ज़ोर अजमाई करनी उचित है। तथा इसे शास्त्रार्थ में नीचा दिखा कर इसलाम की गोद में लिया जाय। एक ने कहा–भाई गुरू नानक साधारण मनुष्य नहीं जो तुमारे हाथ आ जाय यदि तुम ने इसे अपने हाथ में लिया। तो याद रखो यह फरिश्ता है। फौरन गुम हो जाने की ताकत रखता है। तथा इस फकीर में शक्ति है। इस ने मक्का शरीफ को फेर दिया है। हमारे विचार में तो यह फकीर तमाम आलम को खतम करने की ताकत रखता है। यह तो इस ज़माने का कोई सिद्ध पुरुष है। मक्का शरीफ में बड़े २ आलमों के साथ इस साधु का शास्त्रार्थ एक वर्ष पर्यंत होता रहा है। तथा पूरा वर्ष इस ने न कुछ खाया है न ही कुछ पिया है। तमाम हाजी लोग इसे घेर कर बैठे रहे हैं। इसे खान पान की तो इच्छा ही नहीं है। इस के अलावा इस के प्रश्नों का उतर देना अत्यंत कठिन है। तथा यह सभी के प्रश्नों का उतर सही सही देता है। यदि कोई इस नानक फकीर को जीतने की खाहश करता है तो वही हार जाता है।

अब तो यह विचार है कि मदीना शरीफ का जब हज्ज होगा उस दिन यह नानक फकीर भी वहां अवश्य आयेगा। तथा उस दिन बड़े २ उलमा तथा राजा लोग भी वहां उपासथित होंगे तथा इस नानक फकीर के साथ खयालात का मुकाबला होगा।

इस के पश्चात जब हज्ज का दिन आया। तब तमाम हाजी जो मशहूर उलमा थे। वे इकठे हुवे। तथा गुरू जी के साथ मुकाबला

हुवा ।

॥ सुवाल चार इमाम सूरे ॥

आखो इमाम कमाल जी नाले सैद जमाल । गौस आलम कुतब दीन चारों रुकन कमाल । पुछदे हां चार नसीहतां तिस दा देह बयान । बेटे आदम सफी दे हिंदु मुसलमान । दोहां अंदर शक है दुहिं विच सचा कौन । एह हकीकत जो हल्ल करे असीं होवहिं आदम तौन ॥ १ ॥ दूजा पुछे जमाल दीन कहु तू नानक शाह । हजरत आदम ते थीए सावत दोवें राह । हिंदु मुसलमान हुई कुफ़र ते इसलाम । दोवें हुकम जहान विच दोवें जान अलाम अगे पैकंवर खलक विच अगे हैं औतार । तीजा केहड़ा मजहब है । तिस दा कहु विचार । जो आखहि तीजा पाक है पाक है परवरदगार । आदम सूरत होइ कर न करे करार । पिछे ज़माने जो थीए काफ़रां दे अवतार । हुन थीए हन मन सूख सभ अमल मुहमद यार । जे ता कीआ बयान तुहि असां थीं अगे आइ । जादू करके हिंदुआं दितोइ मका फिराइ । शरतां हिंदु तुरक दीआं फिर नौसर करहि बयान । तैं कीते जो मनसूख दोइ हिंदु मुसलमान । हिंदु रहिन न पासनी जो रब्ब रसूल खुदाइ । नौवत मुसलमान दी वज्जी है हुन आइ । असीं पुछदे हां तकरार करो तसल्ली एह । असीं भी छडदे नाहिं तुहि विन सचे सुणे सुनेह ॥ २ ॥ तीजा पुछे गौस दीन करके बहुत करार । अगे रसूल खुदाइ हैं अगे चारों यार । तुहि कुछ जाता होर है ओह भी एह विचार । अगे हिंदु जहान विच हुण आया मुसलमान । दोहां विच जो रद थिया तिस को कहु शैतान । दिता भिश्तों डाल कर थीआ नाम अलीस लिखिआ विच कुरान दे आखिआ नबी हदीस ॥ ३ ॥ चौथा बोल कुतुब दीन देह सचा वीचार । समना उपर कलाम रब सभ मुल्लां करहि विचार । कन्नी पवे चुतेल जिस होवै गुनाहां पाक । काइम होवे किआमती फेर न मिले तलाक । पंज निमाजां पंज वकत रोज़े त्रीह पछान । चार इमाम चार मज़हब जानहि

मुसलमान। तैं क्यों सभे रद किये की करके तदबीर । इनां दी तसल्लड़ी नहीं देंदे ने ताज़ीक। बिन कीते तसल्लड़ी छुटें किसे न जाइ। पंजवीं कौन किताब हैं असां भी पढ़ समझाइ । चार इमाम चार मजहब चार देख इमाम। अवल करहु तसल्लड़ी पिछों करहु कलाम।

॥ ज़ुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक शाह सच सुनो चार इमाम। सैद कमाल जमाल दी कुदरती गौस लजान। अवल इक खुदाइ सी दूजी कुदरती कीन । तीजे फक्कर खुदाइ हैं सच पीर जिनां यकीन।. हिंदु मुसलमान दुइ केहड़ी विच किताब। दुहां दीवा पकड़िआ मरदे झगड़ गवार। ठहिकन चूलां बांस ज्यों आतश पैदा होइ। आतश गुसे शैतान है जल बल मरदे दोइ। लिखिआ किस किताब विच दावा राम रसूल। सोधहु चार किताब विच सोध हदीस समूल। इक खुदाइ कुदरती दूसरी मिल्ल दिसे दोइ आइ। पैंदे दुह थीं की होए है देहो सच बताइ। दुह थीं उपजिआं जानवी होए चार कतेब। चार कौल खुदाइ दे चौहां इको भेद। हुजत राह शैतान दा कीता जिनां कबूल। सची दरगह ढोई न लहन भरे सफात रसूल। दावा छडो इमाम जी आया तमक मिटाइ। नेड़े मूल न आवई दोजक संदी भाइ। दुहीं सिरीं इक रब्ब है होर न दूजा जान। हिंदु मुसलमान दुइ सूरत जान शैतान। तीजा मज़हब पाक है जो दावा करे न भूल। लिखिआ विच किताब दे किहा खुदाइ रसूल। गुस्सा करके जल मरन दुनी वलेवे काम। दुहां मज़हबां तों गए भरे न मुरशद हाम ॥

॥ सवाल बाबा नानक शाह ॥

आखे नानक शाह सच सुणहु चार इमाम। राज तुसाडा दुनी पर करहु अदाल बयान। काज़ी मुफती तुसाडड़े मीर मलक पातशाह। हुकम तुसाडा दुनी पर आपन चलाए राह। अवल चार इमाम सन हाबील कबील जान। ईरज तरज चार भाईयां चारों पाक इमाम । पिछे होर जो थीए

पैकंबर गिणती गणी न जाइ। इक पैकंबर चार यार सन धुरदी चलदी आइ। अवल पैकंबर खुदाइ सी नाले चारों यार। वादी आबी आतशी खाकी चार विचार। फिर साजिओसु आदम शफी नूं होया पोशीदा आप। ना ओ जम्मिआ किस जाइआ न कोई माई न बाप। कीतीआं कौन अदालतां सच सुणावहु मोहि। जो लिखिआ चार किताब विच सभ बोल सुणावहु तोहि॥

जवाब गौस दीन इमाम मूरा

आखे इमाम गौस दीन पढ़ अहिमद दी किताव। करे गुनाह कबीर जो तिस नो वडे अज़ाब। जो हालत करे खुदाइ दी हानत करे रसूल। फिर ईमान ते मन्ने न कुरान रसूल। दूजा कबीर गुना होर तिसदी सुण तदबीर। धी भैण सकी माऊं सों करे गुनाह असीर। तिन शबीर करके मारीए कखीं अगनि गलाइ। धूहीए सारे शहर विच टंगीं रस्सा पाइ। फिर सुटीऐ जाइ उजाड़ विच कौवे कूकर खाइ। कर कबीरी गुनाह जो तिस दीजै इह सजाइ। इह कबीर गुनाह हैन किवें न बचना होइ। काफ़र होइ मुसलमान दोहां विचों कोइ॥ ४॥

॥ जवाब इमाम दूजा सूरा॥

सुनहु नानक शाह आखे कुतुबुल दीन। आदम सड़िआ अज़ाव है जो होवे वडा वदीन। इमाम मलक आखिआ लिखिआ विच किताव। पहिले गरदन मारिऐ संग सारी देह अजाव। वंद वंद पिछों कीजिए चहुं कुंटी देइ टंगाइ। होर तजीर न इस नूं विन मारे न जाए गुनाहि॥५॥

॥ जवाब इमाम तीजा सूरा ॥

आखे इमाम जलाल दीन पढ़ शाफ़ी किताव। आदम सूरत रव दी इहलायक नहीं अजाव। साड़न मारन अजाव है रहे वंद मुदामी एह। खाणा देवे लेण विन लावण नाल ना देइ। विच मारे वंद दे इह सव ते वडा अजाव। लिखिआ विच किताव दे होइ गुनाह थीं पाक॥ ६॥

॥ जवाब इमाम चौथा सूरा ॥

कहे इमाम कमाल दी पढ़ आज़म दी किताब । साहिब आदम सिरजिआ दितो सू वडा खिताब । कीतोहु अपणे तुल्ल फिर दितो सु तखत सुबहान । सिजदा कीता मलाइकां विच निवियां नाहिं शैतान । रन्न हुं दुखतर साज के नाल कीतो सू तिस जनाहि । जोड़े जम्मे चार तब इक दूजे दीआ विआहि । ओसदा जोड़ा उस नूं अदल बदला कीन । अवल आदल इउं किया तिस पर करे यकीन । इक थीं इक इह किया मसला नां मनज़ूर । धी भैण सकी हराम है होर कही हलाल रसूल । नां मारीऐ नां साड़ीऐ नाहि कीजे बंदी माहि । करके रूहि सिआह तिस सभ मुलकां विच फिराहि । देइ सजाइ तां जानीऐ हद अपनी विचों निकाल । करन गुनाहि कबीर जो तिना कीजै एह हवाल ॥ ७ ॥

॥ सुवाल फकीर नानक शाह सूरा ॥

पुछे नानक हिंदगी सुणहु चार इमाम । आजम दा फुरमाया करहि न मुसलमान । आदम मारिआ आज़ाब है जिओं ढाए मसीत अज़ाब । साहिब दा फुरमाया लिखिया विच किताब । ढाहे मसीत फिर उसरे गारा इटां लाइ । आदम मारिआ ना जी सके भांवें कोइ नं जवाइ । एह अजाब अजीब है सिरों न उतरे मूल । लिखिआ विच कुरान दे कहिआ खुदाइ रसूल । इसम आजम बाझ किताब होर जो कीते तीन इमाम। मारन आदम शफ़ी नूं पढ़ के राह शैतान । पातशाह नूं फुरमाया साहिब खालक आप । लिखिआ चार किताब विच सुणहु कलमा ताक । पैकंबर कलमा आखया इकै इक खुदाइ । सभनां अंदर इक है घट वध कही न जाइ । लख चौरासी जीआं विच रब हिक्से दा मुकाम । मुखालिफ चार नसीहतां कीतीआं हैन शैतान । हौमे पाई सभस विच इक दूजे मन्ने न कोइ । नानक आखे इमाम जी इस विधि विगड़ी लोइ । पातशाह नूं फुरमाया सच्चे आप खुदाइ । लेवन खबर गरीब दी सेख फरीद वणाइ । गोशा नशीनी फकर जो बंदगी

करन खुदाइ। अंधे लंगे ज़ईफ़ जो पैरीं सके नां जाइ। जो भुखे मरदे ताम बिन मिहनत करदे आइ। मेहनत कम ना चलिआ फिर चोरी कार कमाइ। इक दिन चोरिआं पगड़िआ घत बंदी मिले सजाइ। हाकम इयों न पुछिआ किस क[illegible] हराम। गुनाह जिमें पातशाह जिस दिया न लंगर लाइ। अण हुंदे कराए सभ कम भले बुरे जग माइ। अण हुंदा कराए बद फैलीआं पर घर करहि न जाइ। जे अंदर सब कुछ होवे हराम माल ज़र ताम इतनी दौलत घर रखे फिर घर पुर करे हराम। लायक ओह सजाइ दे जिऊं भावे देइ सजाइ। आजम इओं फरमाइया तिस उपर अमल कराइ। जो भुखा होवे ताम दा तिस पेट भरे पातशाह। जो भुखा होइ जनाह दा तिसे देवे औरत विआह। जो भुखा होभे माल दा तिस देइ वणज कराइ। जे खाणे नूं पातशाह दे अर मेहनत लए कराइ। जिस लायक होवे कार दे तिस कारे लये लगाइ। जे ऐसी होइ जहान विच सभ लगे हलाले जाइ। खबर लवे जहान दी पातशाह कहाए नाम। सूबे नाइब आपने सब मुलकी नकल तमाम। सभ खावहि लुट जहान नूं पी दारू खाइ कबाब। भुखे मरण गरीब जे सभ सिर पातशाह अजाब करन किरसानी किरसान जो ओह लैवन अन्न जमाइ। करके अन्न त्रिभावली त्रै हिसे करन बनाइ। दुइ खांवद इक हाकमें जो इस विध अमल होइ। कर इतबार खुदाइ पर भुखा मरै न कोइ लालच करके हाकमां लुट लैंदे घर किसान। त्रै हिस्से लई हाकमां भुखे मर दे सभ नस जान। होइ उजाड़ा मुलक विच बीजे अन्न न कोइ। अन्नों वाहजों आदमी मर जावन रहिन सोइ। बाकी रहे किरसाण जो उठ धाने कित लाग। उजड़ी पै गई मुलक वच लोक गये सभ भाग। बदनीयत कर हाकमां लुट लीता सभ जहान। चशमीं वेख अमाम दी इयों कियामत पहुँची आन। थीआ फनाह जहान विच सिर पातशाह अजाब। खाये खेत्री वाड़ जे तां पुछे कौण जवाब। लै इजारे आंवदे सूबे मुलका माहि। वखशी ते चुता तीए और दीवान कहाइ। काजी मुफ़ती मौलवी सिर सदर तिनां सरदार।

लैंदे खिदमत दम देइ लुट खावन संसार हक न कोई पहुंचिआं कूक रही कुरलाइ । जे लागे जाइ नजीक को अगे देन पिआदे मार । एह निआओ वरतिआ अमल तसाडे माहि । डुबे नांउ पताल देइ भि जिमें तुसां गुनाह । जिती जहान विच पातशाह सभ उमत रसूल कहाइ । मिल गिल सब अजाब तिस फिर लगहि पैकंबर आइ । नायब तुसी रसूल दे कहिओ चार इमाम । करहु मुनादी जहान विच को करे न ऐसा काम । सभ अजाब जहान दे सिर तुसाडे होइ । करन गुनाह जो उमती तिना हटकन हार न कोइ ॥

॥ सवाल चार इमाम सूरे ॥

सुणहो नानक हिंदगी आखण चार इमाम । खतम मुहम्मद मुसतफा आया विच जहान । अग्गे जो होइ पैकंबरां इक लख असी हजार । कीते सभ मनसूख हैन नबी मुहमद यार । इस थीं अगे ना होर को अलक माशूक । अगे जोइ पैकंबरां कीते सभ मनसूख । आखर इस ज़माने दे खादम नवी रसूल । नाल चारों यार मुसलमीं जो करदे मसाल मसूल । उमर खिताव अबूबकर उसमान अली सादात । वारस चारों तखत दे जो नबी बहाए आप । वारी आपो आपणी कमल कीतिआं ने पाक । रोज़ कयामत हद तक रहसी नवी रसूल । ज़ाहिर सभ से कुंट विच कीता सभ कबूल । अगे होर अमल न चलसी पैकंबर उते कोइ । जे करसी ज़ोरा आइ के मार लईसी सोइ । सभ आसी इकते राह विच होसी मुसलमान । इस ज़माने दा पातशाह नवी रसूल सुलतान । चलिआ अमल मुहमदी इस दे परे न होर । खातम सभ पैकंवरां जिता सु वडा जोर । तू भी आया नानका साहिब वड करामात । जितनिआं हाजीआं काजीआं गौस कुतब सादात । जोगी जंगम सेवड़े ब्राहमण ते सन्यास । खट दरशन पैकंवरां छत्ती पाखंड उदास । साधी हई जमीन सड़ छडिओ न आसा पास । फेरिओ मका आइके करके वड करामात । हुण आया पातशाह रूम विच मिलिओ पातशाह हो जाहि । जालम कारूं हमीद नूं घतिओ सिधे राहि । जिन छोडी न दमड़ी गोर

विच मुरदे छड ढंढोल । कहु रुपैये मुंह पट कर सभे गोर कारूं हलायक जोड़िश्रा खजाना वाली गंज । इस पैंताली जोड़िश्रा रखिश्रा खजाना संज । जो लगा करन खदाइतां छड दिती श्रोस वंदीवान । करके खादम श्रापणा होया मोम समान । श्रांदा ही श्रापना मजहव विच जो श्राहा मुसलमान । मक्का रूम जित्त के हुण वड़िश्रा मदीने श्राइ । इक असाडी निशा कर इके कुछ करामात दिखाइ । जिथों तीकर उमती सभ होईयां कठीयां श्रान । कर देणी संग सार सभ मिल कर मुसलमान । दावा कर पैकंवरो श्राया है श्ररब सतान । श्ररब छडस नाहीं जींवदा कुछ लाइ लै श्रपणा तान ।

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

श्राखे नानक शाह सच्च सुण हो चार इमाम । मक्का है महा देव का ब्राहमण सन सुलतान । उपजिश्रा ब्राहमण जद विचों होइ कर मुसलमान । वाणी वणाइ श्रापनी रखि श्रोसु नाम फुरकान । वाणी ब्रहमे देव की मिली सभ संसार । चारों बाव कतेव दे चवां चारे राह । दावां रख खुदाइयां गौश्रां जिबे कराइ । कीते ब्राहमण भ्रिष्ट सभ दितिश्रोसु बांग श्रलाइ । कलमा इक खुदाइ कहि मुहमद रसूल सुनाइ । फेरिश्रा सु हुकम विच सभ होवैं मुसलमान । वहुँतिश्रां हुक्म न मन्निश्रा जो श्राहे माया वान । जो मरदे मुख श्रजाल नाल सो मिलै पकंबर जाइ । देख के हदिया दीनता श्राप सेती लए मिलाइ । मिलिश्रा कौमां लुट नूं ऐवें मिली न कोउ । कुम्फ निवाई जोर कर शाह मरदां खड़क वजाइ । तां भी जीत न सकिश्रा सि हिंदु हिंदुस्तान । जे हुकम न होवे रव दा कीतीश्रां जोर हराम । फिर वीड़ा चाया मोम दीन सय्यद शाह मदार । श्राए शाह खुरासान दे होइ चिहल तिनां दीदार । हसे हड़ हड़ा चिहलतन कहे कहां चले मसतान । जिस दे दावा दार हो अगे भी हिंदोस्तान । असी सहाव पैकंवरी श्राए नाल इमाम । असी मारे हिंदु कोइ विच शाह मारिश्रा हिंदोस्तान । शाह अली वडा इमाम

सी रूमी सिर सुलतान। वारा कड न सकिओ रहिआ खेत नदान। जे रहिंदा नहीं जावनहु तां सुन्नत लेहु बनाइ। जादा वाले जबर हैन बिन जाइद न आगे जाइ। शाह मरदां आया जोर कर सिंधों गिआ न पार लिख गिआ तलाक नूं अंदर परबत बार तब धर के हिंदु भेस को चले मोमन मदार। आए हिंदोस्तान विच तब लागे करन विचार। इक रिहा अजमेर विच इक रिहा मकन पुर जाइ। करके नाटक चेटक हिंदु लए विलाइ। रहे हिंदुस्तान विच फकर अलह दे होइ। जोरी हिंदु न जितिआ कर जोरां रहे खलोइ। अगै जोइ अजय पाल वसदा सी अजमेर। नाटक चेटक कर मोदनी कीता जेरी जेर। नाटक चेटक कर मोदनी बैठा पीर कहाइ। राजा परजा हिंद दा सभो निविआ आइ। हिंदुओं होया न तुरक कोई ईए रहे ईमान। अमल हिंदुआं का हट गिआ वध गए मुसलमांन। इक अध हिंदु भी रलाइ के लै आवन आपने राह। उठे रैयत होइ के मन अंदर दगा कमाइ। कदम तुरकां दा आ जदों पइआ हिंदोस्तान। हिंदु घटन दिनों दिन वधण मुसलमान। यक वजूदी तुरक सभ करके बहुत करामात। दाढ़ी मुच्छ मुनाइ के मन्नी आण सदात। दरशन लाइओ सु दिगंवरी खत दरशन मिलिआ आय।तुरकी दावा छड के बैठा बिभूत चढ़ाइ। अगे हिंदु धर्म सी तुरक न दीसै कोइ। पैर पिआ जद तुरक दा कलजुग वरतिआ लोइ। राज तुरक का आआ उठ गिआ हिंदु राज। सभ मन्नी ताव्या तुरक की हिंदु होइ मुहताज। हिंदु होइ मनसूख सभ जब आए मुसलमान। होइ फिर पातशाह जग अगे रख निशान। मशरक दिता मगर वीआं करके बहुत खरूज। अगे रख कुरान नूं करन मुकामां कूक। देहर देवी देवते दिते सभ गिड़ाइ। अपना अमल चलाया गोरी पीर समाइ। गंग बनारस हिंदुआं मक्के मदीने मुसलमान। राह चले दोइ जगत विच नच्चन विच शैतान। धुमां धाम बहु करन लाइ न वडे जोर। साहिब जोर न भावांह जे चाहे भेजे होर। बैठा तखत पैकंवरी शेर अली सरदार। भाई कहीए रसूल दा साथ जवाई यार। अली कीता सफर जद तां रहे

हसन हुसैन । दावा करके तखत दा लगे यजीदी लैन । हसन हुसैन मार के यजीद होया पातशाह । मरवा होया वजीर पास जो खासा यार कहाइ । सयदा कीता खारूज फिर मारिआ यजीदी दी आइ । तब दोइ विधी होइया उमती दोइ विध चले राह । इक सुनी इक राफ जी फिर के दुइ वद राह । होइयां दोइ विध उमती यजीदी हुसैनी होइ । होवन लगा झगड़ा तब रिहा मजहब अलोइ । मुसलमानां आप विच लगी होवन मार रही मकूफ सुहंमदी कौन लए फिर सार।भेजे खुदाइ जहान विच इक जपावन नाम होरी ते होर होइ गई तां बिसर गिआ फरमान । तब हिंदु मुसलमान दुइ कीते रब मनसूख । लै फरमान खुदाइ दा नानक किया खरूद । आखे नानक शाह सच सुणहु चार इमाम । देखे हुण करामात होर सुन दे से जो कान । कान उंगलीआं पाइ तब नानक दिती बांग । जितनी उमत जमां सी सुन होइ सुण कर चांग । बधे जुस्से समस दे हल्ले जुल्ले न कोइ । कारखाने छत्तीस जग विच होइ गए बंद सोइ । काजी हाजी मौलवी मुल्लां शेर उलमाइ । अखी वेखन तुर तुर मुखहुं न सकन अलाइ । बावे किहा इमाम जी कर संग सारी मोहि । बहुती उमत देख कर गरब किया जो तोहि । करके कुदरत रब दी छडे बंदी वान । गल विच पल्लू पायके सभ कदमी ढठी आन । चारों करी अरदास तब सुणीऐ नानक शाह । ज्यों कर असां छुडाया होर उमती भी छुडवाइ । श्री नानक डिठा नजर भर होइ वंद खलास । बंद छुडाइ सतिगुर रब अगे कर अरदास । हारिआ सभनां उमती जित्ती मदीने माहि । हारे चारे इमाम सभ जितिआ नानक शाहि ।

॥ सुवाल चार इमाम सूरे ॥

सुणहु नानक हिंदगी आवण चार इमाम। धरती विच समाइअन खासे मुसलमान । हिंदु की लग धरत नाल जो आतश विच जलाइ । होइ यहूदां काफ़रां दोजक एल सजाइ । अवल दोजक आतशी जो जुस्से घत्ते साड़ । रूह विछुनां जुस्सिओं मुखहु पुकारे धाड़ ॥ २८ ॥ आतश विच पुकारदा

सुने न कोइ दाद। कौन छुडावे तिस नूं जो आतश सड़िआ याद । इस आखर ज़माने विच आदम सड़ि अजाब। खुदाइ रसूल फ़रमाया लिखिआ विच किताब। रूह न जुदा जुस्सिओं अरबा नासर एक । हिकस हिकस राग अंग कहे इमाम बिबेक। पिछले जुग मन सूख हैन अमल तिनां दा नाहि। कलजुग अमल है खाक दा सभ खाके विच समाइ। खाक बहिश्त मुकाम हैं दोजक दी नहीं जाइ । कहे इमाम सुन नानका हिंदु छडन हार गुरमाहि ।

॥ जवाब श्री गुरू नानक देव ॥

आखे नानक हिंदगी सुनो चार इमाम। मुइआ दुख न रूह नूं मिटी सुन्न मसान। इक दबियन इक साड़िअन इक दिचन नदी रुढ़ाइ । इक पै रहे मैदान विच गए कौवे कूकर खाइ। रूहे दुख न पोहिआ खाक मिली संग खाक। मुइआ जुस्सा पलीत हो मिल खाके होवे पाक । दबन साड़न रुढ़ावना पाया रहे धर माहि। जुगां जुगां दे धर्म हैं आपो अपनी वाहि। दबिआं न मुसलमान होइ साड़यान काफ़र होइ। जेही ज़माने चाल है तेही वरते लोइ। जोगी सन्यासीआं षट दरसन हिंदवान । धरती विच बिठायां होइ न मुसलमान। धरती विच बिठांवना कलजुग दाग परवान । वेदां अंदर लिखिआ जन नानक कहे बखान । जो ऊरे दीआं हुज्जतां पेश न जावे कोइ। सोई वरते जगत विच ज्यों ज्यों खसम रजाइ।

॥ सुवाल काज़ी रुकन दीन सूरा ॥

आखे काजी रुकन दीन सुणो नानक शाह । त्रीहे हरफ़ कुरान दे साजे आप अलाह। मायने इक इक हरफ़ दे कहीए कर तदबीर । जिस मुरातब को पहुंचिआ के साधू के पीर। अलफ़ बे फरमाइहि मायने करके बयान। तुसीं भी आखहु शाह जी सची रब्ब कलाम। सिफ़त तमामी सभा खोल सुनाइ। आखे काजी रुकन दीन करीऐ वरा खुदाइ। हिंदु मुसलमान दुई इस दे हन गुमराह। वाझों झगड़े होर नाहि ढूंडे सच न राहि ।

जिहड़ी गल खुदाइ दी कहे न कोई मूल । कारन लालच दुनी दे झगड़े राम रसूल । राह सचावा दस्सीए जे वस आवे जीउ । हुज्जत हाजत वरज कर रहे निमाणा थीउ ।

॥ जुवाब श्री गुरू नानक देव ॥

सुणों काजी रुकन दीन आखे नानक पंध । सोइ सिआणी लग विच तिस विच बहुते बंध । त्रीहे हरफ़ कुरान दे त्रीह सुपारे कीन । तिस विच कुफ़ नसीहतां सुण कर करे यकीन । करे पुकार किताब बहु खातर जमान होइ । जो रहि शतानी गुम थीए पहुंचिआ जान न कोइ ।

॥ सिहरफी कही गुरू नानक देव ने ॥

अलफ़ अलह को याद कर गफ़लत मनहु विसार । सास पलटह नाम बिण ध्रिग जीवन संसार । वे बदायत दूर कर कदम शरीयत राख । निव चलहु अगे सभ सदे मंदा किसे न आख ॥ २ ॥ ते तोबा कर बदी ते मत तू एवे जाहि । तन बिन सै मुख गड़ीऐ तब तूं कहा कराहि ॥ ३ ॥ से सनाही बहुत कर खाली सास न कढ । इटो हट वकाया मुल्ल न लहसी अढ ॥ ४ ॥ जीम जमायत जमां कर चलन दा कर वंध । वाहजों सांईं आपने फिरसी अंधो अंध ॥ ५ ॥ हे हलीमी पकड़ तू दिल थीं हिरस निकार । धावत वरजहु रुकन दीन हरदम खालक सार ॥ ६ ॥ खे खाम तेऊ भये जिन विसरिआ करतार । दुनीआं लालच लग मरहि मूंह उठावहु भार ॥ ७ ॥ दाल दिआनत करे मन अठे पहिर न सोइ । एक पहिर घर जागनां सांईं सच वगोइ ॥ ८ ॥ जाल जिकर कर आजज़ी खातर नाहिं डोलहि । तिल न लगे रवाल तन भोले मने चुकाहि ॥ ९ ॥ रे रहित ईमान की तेऊ देखहि जाइ । पूजह वरजन रुकन दीन सांईं सो दिल लाइ ॥ १० ॥ जे जारी कर मनैं माहि सांईं बेपरवाह । जो किछु चाहे जो करहि तिस का क्या वसाह ॥ ११ ॥ सीन सोध मन आपना सभ किछु तिसहि माहि । तन भांडा मन वस्त कर हुकमी वंद समाहि ॥ १२ ॥ शीन

शहादत पाई अहि पीआ सों लिव लाइ। हुकम तिहै तन ज़ायसी कीचै तलब खुदाइ ॥ १३ ॥ स्वाद सलामत गुजश्त को आखो मुख ते नित्त । कासे बंदे रब दे सिर मित्रां दे मित ॥ १४ ॥ जवाद जलालत गुम कर रही आदत सों मेल।उठी बंदे नजर कर बीने नाहींखेल॥१५॥तोए तलबकर रास्ती देइसए रसाल । जिनां डिठिआं दुख जाइ तन तूटे माया जाल ॥ १६ ॥ ज़ोए ज़ालम सोई भये चेतन नाहीं नाम । सांईं तेरे नाम बिन क्यों आवे आराम ॥ १७ ॥ ऐन असूल कमाइए जेको पारावास । बिन अमलां नाहीं पाइऐ मरीये पछोतास ॥ १८ ॥ ग़ैन ग़नीमत रुकन दीन जिनी सिंआता आप । इस पिंजरे विच खेल है नां तिस माय न बाप ॥१६॥ फे फकर तेऊ भये जो चलहि मुरशद भाइ । आपे कीआ तहकीक तब रंगा रंग मिलाइ ॥ २० ॥ काफ कलमा इक याद कर अवर न आखहि बात । नफस हवाई रुकन दीन तिस सों होइ न मात ॥ २१ ॥ काफ करार न आवहि जित मन उपजै चाव । पारस कंचन थीए जिन भेटिआ हरि राव ॥२२॥ लाम लानत वरसर तिनां जो तरक खुदा करेन । थोड़ा बहुता खटिआ हथो हथ गवेन ॥ २३ ॥ मीम मुरशद मन्न तूं मन्न कतेबां चार । मन्न तूं इक खुदाइ नूं खासा जित दरबार ॥२४॥ नून नहीं ओ गुंम है जिन कीते अमल कबूल । माया बंधन गल पड़हि जित खाली वंजहि भूल ॥ २५ ॥ वा वाउ जो आवै रुकन दीन जिस फाटे हथ नाल । उमर बिहाई बावरे पड़िओं कित जंजाल ॥२६॥ हे हैवत तिस दिनां दी जिस दिन अदल करेइ । बाब हमारे रुकन दीन केहा हुकम करेइ ॥ २७ ॥ लाम लायक तेऊ भये जिनां रहिमत नदर धरेइ । जे सौ लोचन किआ थीऐ जे आपन संग मिलेइ ॥ २८ ॥ अलफ अलह तुहि नाल है चेतहि क्यों न अनजान । गुर सेवा ते हुटसी औसर अंत निदान ॥ २६ ॥ ये यारी कर रब सों जिस दा अबचल राज । इक अकेला नानका किसै न होइ मुहताज ॥ ३० ॥

॥ सिहरफी खतम ॥

॥ मक्के मदाने दी साखी समाप्त हुई ॥

मक्के मदीने में सत्य का प्रचार करके गुरू जी ने परम ख्याति प्राप्त की। तमाम हाजी और काजी मुलाने गुरू जी के पवित्र उपदेश से परम प्रसन्न हुवे। और सीस झुका कर गुरू जी के पवित्र चर्णों में प्रणाम करके कृत कृत्य हो गये।

॥ साखी गुरू जी और नानकी जी की ॥

एक दिन जगत पिता गुरू नानक देव जी ने कहा-हे बाला ! आज हमें बहिन नानकी जी ने याद किया हैं। तब वाले ने उत्तर दिया। हां महाराज ! याद किया होगा। इस में क्या विशेषता है ? गुरू जी ने कहा हे बाला ! हमें बहिन जी के निकट जाना चाहीये। मैंने (बाला ने) कहा हे गुरु देव ! इस स्थान से बहिन नानकी का नगर कितनी दूर हैं ? गुरू जी ने कहा-हे भाई बाला! यहां से सताईस शत कोस की दूरी पर बहिन जी का नगर है। मैंने अर्थात बाला ने कहा-कि हे गुरू जी वहां हम लोग कितनी देर में पहुँच सकते हैं ? तब गुरू जी ने कहा-कि जितने समय में परमात्मा पहुँचा देगा उतनी देर में पहुँच जायेंगे।

दिन का तीसरा प्रहर था। जब गुरू जी मैं और मरदाना मदीने से चले। गुरू जी ने आग्या दी कि अपनी २ आंखें बंद कर लो। जब एक क्षण आपनी आंखें बंद करके खोलीं। तो हम तीनों सुलतान पुर में बहिन नानकी जी के द्वार पर आ पहुँचे थे। उसी समय तुलसां गोली हमें देखते ही घर में भाग कर पहुंची। तथा उस ने नानकी जी को कहा-बहू जी ! आप को वधाई हो। क्योंकि आप के भाई नानक देव आ रहे हैं।

जब नानकी जी ने गुरू नानक देव जी को देखा तो पुलकत अवस्था में विन्हल होकर गुरू जी के चरणों पर गिरने लगी थी। तब तुरंत गुरू जी ने उसे सतकार पूर्वक उठा लिया। नानकी जी ने कहा-हे भ्राता जी ! मैंने आज दोपहर के पश्चात आप को याद किया था। आप इस समय किधर से आ रहे हो ? कृपया कहने का कष्ट करो। आप को बिछुड़े आज

पौने सात वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। यह सुन कर मर्दाने ने कहा–कि गुरू जी और हम सताईस शतकोस की दूरी से आ रहे हैं यह गुरू जी की शक्ति है। कि इतने दूर देश से क्षण भर में यहां ले आये हैं मर्दाने ने नानकी जी को सभी विस्तृत समाचार सुनाया। तब गुरू जी ने कहा–बहिन जी आप ने हमें याद किया तब हम आप के पास उपस्थित हो गये। तथा आप का विचार सफल हुवा है। तथा अब हमें आग्या दे दो। तुलसां ने कहा हे महाराज! आप अभी २ आ रहे हैं। तथा अभी जाने को तैयार हो रहे हैं। श्री जय राम जी को तो आ लेने दो। इतनी जलदी के क्या अर्थ हैं?

गुरू जी ने कहा–बहिन जी! हमें शीघ्र ही जाना होगा, आप हमारी ओर से श्री जय राम जी का सतकार करना, जब नानकी जी ने गुरू जी के यह शब्द सुने तो नेत्रों से प्रेमाश्रु बह निकले। तथा साहिब जादे श्री चंद्र जी को गुरू जी के आगे ला कर खड़ा कर दिया। जिस का भाव यह था, कि आप का यह प्यारा कुमार आप को सदैव स्मर्ण करता है, तथा रहस्य यह था कि गुरू जी को पुत्र का मोह कुछ काल ठहरने के लिये बाध्य करेगा, नानकी जी यह नहीं जानती थी कि गुरू जी इस मोह माया से कहीं ऊपर हैं। उन के लिये समस्त संसार सुत के तुल्य है। गुरू जी कहने लगे बहिन जी! मुझे तो केवल आप की प्रेम शक्ति खींच लाई है, यह संसारिक बंधन मुझे बांधने में असमर्थ हैं। इन का प्रयोग करने से सफलता नहीं मिलेगी, दूसरे हम ने आवश्यक कार्य के लिये जाना है।

तब नानकी जी ने कहा–आप मेरे पास कुछ दिन के लिये ठहरने की कृपा करो गुरू जी ने कहा बहिन जी! मैं आप के पास बहुत दिन रहूंगा। परंतु इस समय तो जाने की आग्या दे दो। इसी में ही आप का कल्यान निहत है,नानकी जीने कहा अच्छा कुछ जलपान तो कर लो,गुरूजी ने कहा कि आप मर्दाने को कुछ खिला पिला दो तब नानकी जी ने भीतर से दूध और पकवान ला कर आगे रख दिये,गुरूजीने कहा–हे मर्दाना! तुम इन का

भोग लगाओ। तब मर्दाने ने कहा हे महाराज ! आप भी अंगीकार करो, तब गुरू जी ने कहा–हे बाला ! इस वस्तु के तीन भाग करो, मैंनें (बाले ने) तीन भाग किये। तब एक भाग गुरू जी ने और एक मर्दाने ने तथा एक भाग मैंनें खाया, इस के पश्चात गुरू जी ने कुछ उपदेश नानकी जी को दिया। तथा फिर तैयार हो गये। नानकी ने कहा हे भ्राता ! अब फिर कब दर्शण होंगे। गुरू जी ने कहा–बहिन जी ! जब आप मुझे याद करोगी तभी उपस्थित हो जाऊंगा नानकी जी कुछ २ उदास हो गई।

तब बाले ने (मैंने) कहा–हे महाराज ! एक मेरी प्रार्थना है, गुरु जी ने कहा हे बाला–कहो। मैंनें कहा कि नानकी जी दुखित हो रही हैं, कृपया आज की रात्री इन के यहां ही विश्राम करो, जिस से इन को प्रसन्नता प्राप्त हो, मेरी प्रार्थना गुरू जी ने स्वीकार कर ली। तथा रात्री वहीं विश्राम किया। इतने में जय राम जी भी आ गये। तथा अधिक प्रसन्नता हुई। प्रातः काल उठ कर गुरु जी ने और हम ने तथा मर्दाना ने स्नान आदिक नित्य कर्म किया। फिर जय राम तथा नानकी जी से विदा मांगी, तथा सत्य करतार सत्य करतार की पवित्र ध्वनी करते हुवे जगत ज्योति गुरू नानक देव तथा हम दोनों वहां से चले, नानकी जी ने कहा–भाई जी आप ने हमें सदैव याद रखना।

॥ साखी उत्तर देश की ॥

गुरू जी ने पूर्व वत फिर हमारी आंखें बंद करवा दी। तथा क्षण भर में बवंजा सौ कोस की दूरी पर ले जाकर कहा–हे भाई मर्दाना बताओ हम कहां आ गये हैं। और अब किधर जाने का संकल्प है। हम ने कहा–हे गुरु देव ! आप की लीला आप ही जान सकते हो। तथा जिधर आप की इच्छा हो उधर ही चलो, गुरू जी ने कहा हमारा विचार तो सुमेर पर्वत पर जाने का है। वहां सिद्ध मंडली है। उन को देखने की इच्छा है। बस उसी प्रकार एक क्षण भर में हम लोग सुमेर पर आ गये क्या देखते हैं कि वहां

की पृथिवी स्वर्ण की है। तथा चारों ओर स्वर्ण ही स्वर्ण नज़र आता है। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! क्या देख रहे हो। मर्दाने ने कहा–हे गुरू जी यह धरती तो अपूर्व है। यहां तो स्वर्ण ही स्वर्ण है। तथा पर्वत में से एक अज़ीब रस निकल रहा है। परंतु नर नारी कोई नज़र नहीं आता। और यह रस और स्वर्ण वृथा ही जा रहा है। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! कोई भी वस्तु संसार की वृथा नहीं होती। यह सब कुछ उस परमात्मा ने अपने भक्तों के लिये बनाया है। यह अमृत रस है, तथा जो संसार में स्वर्ण है वह मिथ्या है, जिस पर संसारी लोग मूर्छित हो रहे हैं। मर्दाने ने कहा–हे गुरू जी ! यदि आप की आग्या हो तो मैं यह रस थोड़ा सा पान कर लूं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! तू इस रस को पचाने की शक्ति रखता है ? मर्दाने ने कहा–हे महाराज ! हम आप के साथ चिर काल से हैं। क्या आप इस रस को पचाने की सामर्थ्य भी प्रदान नहीं करोगे।

गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! तुम यहां इसे पीने के लिये ही आये हो, इच्छा हो तो पी लो जब मर्दाने ने उस रस को पान कीया तो वह मस्त हो गया। तब गुरू जी ने कहा–हे बाला ! इस मर्दाने को क्या हो गया है ? मैंने कहा हे गुरु देव ! आप की बातें आप ही जानते हैं। हम अल्पज्ञ जीव कुछ भी नहीं जान सकते। तब गुरू जी ने मर्दाने के शिर पर हाथ धर कर उसे चेतना प्रदान की।

॥ साखी हिमालय की ॥

अब गुरू जी मर्दाने और बाले के सहित हिमालय पर्वत पर गये। तब मर्दाने ने पूछा हे गुरु देव ! यह कौन सा स्थान है ! तथा यहां क्या चमक रहा है ? गुरू जी ने कहा–यह हिमालय पर्वत है। और यह खूनी बरफ़ चमक रहा है, जो कोई इस पर पांव धरता है, तो वह इस बरफ के प्रभाव से गल जाता है, इस से आगे हेम पर्वत है। अब गुरू जी हमें साथ लेकर सिर धार गिरि पर गये। हम ने कहा हे महाराज इस पहाड़ का नाम

सिर धार कैसे पड़ा है ? गुरु जी ने कहा हे मरदाना इस पर्वत पर कोई भी चल कर नहीं आ सकता, जो पवन पर सुवारी कर सकता हो । वही यहां आ सकता है, कबीर तथा रविदास जैसा कोई महान भक्त ही यहां पर आ सकता हैं। तब मर्दाने ने कहा हम ने सुना हैं, कि पांच पांडव बरफ में गले थे, गुरू जी ने कहा-पांडव यहां तक नहीं पहुंचे, वे तो पीछे ही किसी बरफ में गल गये थे, एक युधिष्टर बचा था वह भी स्वर्ग को प्रस्थान कर गया था। यहां तक तो वह भी नहीं आ सका । अभी यह बातें हो रहीं थीं। कि तहां गुरू गोरख नाथ आ गये। उनों ने आते ही कहा-

श्री गुरू गोरख का कथन ॥

कवन रूप कवन जात तुमारी। कहो कहां लौ चले अगारी। ना आगे धरती रहोगे कहां। सीतल जल हिम वरखे तहां। आगे दिन न रात पीछे फिर भागो। निकल जाओ काहे दुख झागो। झिल मिल झलके है झलकारा। ईहां सोई ठहरे जो पूरण सारा। सुण नानक गोरख तुम कहे। फिर जाहे पीछे कहा दुख लहे।

॥ गुरू नानक जी का उत्तर ॥ राग आसा ॥

रूप हमारा अचरज कहीऐ अचरज हमारी जाती। अचरज नगर ते चले अगारी जहां दिन नहीं अर राती । पीछे आगै द्रिष्ट हमारी धरन अकाश पसारा। दया हमारी सीत हिमंचल तिन सो संग हमारा। कहि नानक सुन गोरख जोगी तैं पूरा गुरू नहीं पाया। जुगत न जाती अवध वधाई विरथा जन्म गवाया।

यह सुन कर गोरख नाथ चला गया, फ़िर एक ऐसे स्थान पर पहुंचे। जहां सूरज कहीं नजर नहीं आता था। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! यहां तों सूर्य भी नजर नहीं आता। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! हम लोग सूर्य लोक से बहुत ऊपर आ गये हैं। अतः यहां सूर्य की पहुँच ही नहीं। क्योंकि हम लोग सूर्य लोक से दो हज़ार योजन ऊपर हैं। तथा हम जिस धरती पर रहते हैं वहां से सूर्य पचीस सहस्र कोस के अंतर पर है और हम

सहस्त्र योजन पर आ गये हैं। फिर मर्दाने ने कहा हे महाराज मेरे मन में अनेकों प्रश्न हैं। परंतु पूछने से कुछ लज्जा होती है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना-शिश्य का धर्म है कि अपनी तमाम शंकायें अवश्य पूछे। तथा गुरू का धर्म है कि उन का उतर देकर शिश्य को संपन्न करे। नहीं तो वह गुरू नहीं, अपितु एक ठग्ग हैं। ऐसे गुरू का त्याग कर देना उचित है। तथा गुरू के बगैर उतम गति प्राप्त नहीं होती। कहा है-गुरु कीजिये जान तथा पानी पीजिये छान। गुरू संसार सागर से पार करने की शक्ति का स्वामी होता है। गुरू को भी चाहीये कि पहिले शिश्य की परीक्षा ले फिर उसे अपना शिश्य बनाये। हे मर्दाना ! जो पूछना हो पूछो मर्दाना गुरू जी की बातें सुन कर हसने लगा। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! तुम को किस का भय है। मर्दाने ने कहा हे गुरू जी ! भाई बाला बुरा मनाता है, गुरू जी ने कहा हे बाला तुम क्यों बुरा मनाते हो ? मैं ने कहा महाराज मैं ने कब बुरा माना है। हे गुरू जी ! मैं कुछ पूछना चाहता हूँ वह यह है कि आप और हम दोनों अर्थात बाला और मर्दाना। यह हम तीनों ही परम प्यारे हैं। परंतु यह जो मर्दाना है। यह मुसलमान कैसे हो गया ? गुरू जी ने कहा ! हे बाला ! यह मर्दाना भी तुमारी भांति हमारा पुराना प्रेमी है। त्रेता युग में यह मर्दाना हिंदु मिरासी था। तथा राजा जनक का दरबारी गवैया था। एक दिन मर्दाना राजा जनक के दरबार में सुरापान करके उपस्थित हुवा था। राजा जनक जान गया कि इस ने मद्यपान कर रखा है। तब राजा जनक ने कहा-हे गायक ! तुम तो कोई मलेच्छ हो। बस इसी लिये इस कलयुग में यह मर्दाना मुसलमान के घर में उत्पन्न हुवा है। क्योंकि राजा जनक एक महा पुरुष था। महा पुरुषों के शब्द सदैव सत्य होते हैं। यह सुन कर बाले ने गुरू चर्णों पर नमस्कार की।

फिर गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! तुम भी कुछ पूछ सकते हो। तब मर्दाने ने कहा-हे महाराज ! यह जो चंद्रमा है वह नज़र क्यों नहीं आता ? गुरू जी ने कहा हे मर्दाना जितना धरती से सूर्य ऊंचा है। उतना ही

सूरज से चांद ऊंचा है। मर्दाने ने कहा हे महाराज तारे कितनी दूर हैं गुरू जी ने कहा–मर्दाना ! तारों की कोई निश्चित मर्यादा नहीं है कोई नीचे कोई ऊपर हैं। फिर मर्दाने कहा कि ध्रुव तारा कहां पर है ? गुरू जी ने कहा ध्रुव सब से ऊंचा है। मर्दाने ने कहा कि मै उस को देखना चाहता हूँ गुरु जी ने कहा हे मर्दाना उतावला न हो। हम तुमें सब के दर्शन करायेंगे ।

॥ साखी आगे के पहाड़ों की ॥

अब गुरू जी बाला और मर्दाने के साथ आगे गए। तथा ऐसे स्थान पर गये जहां चांद भी नज़र नहीं आता था। मर्दाने के पूछने पर गुरु जी ने कहा–कि हां हम चंद्र लोक से उपर आ गये हैं, आगे देखते जाओ क्या कुछ कौतुक होता है।

उधर गोरख नाथ अपनी सिद्ध मंडली में बैठा था उस ने अपने सिद्धों को कहाहे मित्रो ! देखो एक नानक नाम का पुरुष जो शरीर का मल मूत्र वाला हैं। वह यहां मात लोक से आ रहा है। उस को कोई सिद्ध जाए और जीत कर आये जैसे वह नानक यहां तक न आ सके। तब मछंदर नाथ ने कहा–मैं जाऊंगा। और देखूंगा कि नानक कौन है।

मछंदर नाथ सिद्ध गुरू नानक के निकट आया। तथा बड़े हंकार के साथ कहने लगा। अरे बाले तुम किस की ताकत से यहां तक आये हो ? गुरू जी ने कहा–हे मछंदर ! तुम को जिस वस्तु की आवश्यकता है वह हम परमात्मा से तुम को दिला सकते हैं। इतना सुन कर मछंदर को क्रोध चढ़ गया। और नेत्र लाल करके बोला–

कै हाथ सिर का कपाट। कै अंगल मुख का ताक। कै हाथ लीलाट पाट। कै अंगुल कलेजा। कै अंगुल ही अला। कै अंगुल तिली। कै अंगुल फिफरा। कै अंगुल वजर की कोठरी। कै अंगुल का ही अला। कै अंगुल तिली। कै अंगुल इजवरी कोठड़ी। कै हडीआं केते कोठ ड़िआं।

केते हाड कै हज़ार दिन रात के सास। केती देही की रोमावल कैसे संध। कहै ईसर मछंदर देह नानक इस देही का मतंत।

॥ श्री नानक देव जी का कथन ॥

सवा हाथ सिर का कपाट। चार अंगुल मुख ताक। हाथ लिलाट पाट। छब्बी अंगुल दिल। तेरां अंगुल कलेजा। पंज अंगुल ही अला। चार अंगुल तिली। सात अंगुल फिफरा। बारां अंगुल बजर की कोठड़ी नौं अंगुल इजबरी की कोठड़ी अठ सठ हाड नील करोड़ी देह की रोमावली-चवी हज़ार दिन रात का स्वास। नौ सौ नाड़ी सौलां सौ सांध। कहि नानक सुन ईसर मछंदर लेह इस देही-का मतंत ॥ २ ॥

मछंदर नाथ ने गुरू जी को नमस्कार किया और चला गया ॥

मछंदर नाथ ने जाकर गोरख नाथ जी को कहा-सुनो नाथ जी! वह तो तत्व रूप है। उस का शरीर मल मूत्र का नहीं है। तब भरतरी नाथ ने कहा-अच्छा अब मैं जाता हूँ। तब भरतरी नाथ ने आकर आदेश शब्द का उच्चारण किया। गुरू जी ने उत्तर में कहामेंकि भाई आदेश एक ओंकार को है। आओ भरतरी जी कहो क्या हाल चाल है। तब भरतरी नाथ ने वाले से कहा-हे वाला! कहो तुम कौन हो? और कहां से आ रहे हो? तथा कौन होते हो? गुरू जी ने उत्तर दिया-कि हम निरंकार के होते हैं। और बेगम पुरी से चले आ रहे हैं। मेरा नाम नानक निरंकारी है।

॥ भरतरी नाथ का कथन ॥

कवन घाट जित कर इशनान। बोलन वचन ते रहे निरबान। कवल जल जित हरि रसु पीवै। कवन सु रस जित अस्थिर थीवै। ऐसा ग्यान देहा अब मोरै। कवन संग तोर कवन संग जोरै ॥ १ ॥

॥ गुरू जी का कथन ॥

उत्तर अब घटि सरवरु नहावै। पर्काह न बोलै हरि गुण गावै। जल

अकासी सुन्न समावै। सतिकर झोल महा रस पीवै । नाम रसायण पी अस्थिर थीवै। ऐसा ग्यान सुनो अब मोरै भर पुर एकंकार की ठोरै ॥२॥

भरथरी का कथन ॥

कवन तत जित तत बिलोवै। कवन सु सर जित मलि मलि धोवै। कैसे राचै कैसे होवै। कवन सो करै कवन सो खोवै॥ ३ ॥

गुरू नानक देव जी का कथन ॥

सचि मनि कारण तत बिलोवै। सुभर सरोवर जित मलि मलि धोवै। जैसे राचै तैसे होवै। करत करै सोई फुनि होवै॥ ४ ॥

भरथरी का कथन ॥

कवन वरत नेम जित विनसै काम। कवन शब्द ना संताव जाम। कवन शांति क्रोध जलावै। कवन उपदेश परम पद पावै॥ ५ ॥

गुरू नानक देव जी का कथन ॥

सति वरत नेम का काम सतावै। सतिगुर का शब्द क्रोध जलावै। गगन निवास समाधि लगावै। पारस परम परम पद पावै॥ ६ ॥

॥ भरथरी का कथन ॥

कवन सति जो अगनि बुझावै। कवन काल भिबूत चढ़ावै । कवन दोष सहिज घर आवै। कवन जतन कर नाद वजावै ।

॥ गुरू नानक देव जी का कथन ॥

गुर हिव सीतल अगनि बुझावै। सेवा सुरति विभूत चढ़ावै । गुर दरशन देख सहज घर आवै। निरमल वाणी नाद वजावै॥ ८ ॥

॥ भरथरी का कथन ॥

कहां ग्यान रस पीवै सार। कवन तीरथ मजन वीचार । कवन नाथ पूजे पूजारा। कवन जोति जोती धारा॥ ६ ॥

॥ गुरू नानक देव जी का कथन ॥

अंतर ग्यान महा रस सारा । तीरथ मज्जन गुर वीचारा । अंतर पूजा थान मुरारा । प्रभ जोती जोत मिलावण हारा ॥ १० ॥

भरथरी का कथन ॥ कौण सुरस और रसीआ भाउ ॥ कवण सु तखत निवासी गाउ । कौण सु कार करे कराइ । कवण सु अलख न लखिआ जाइ ॥ ११ ॥ गुरू जी का उत्तर ॥ रस रसिआ मन एकै भाइ । तखत निवासी निरंजन राइ । कार कमौनी खसम रजाय । अब गति नाथ न लैया जाय ॥ १२ ॥ भरथरी का कथन ॥ कहि उपजै कहि कहिऐ दूर ॥ किन मटि जोति रही भर पूर । किस नेड़े किस दूर बतावै । किस गुण गावै किस हि सुणावै ॥ १३ ॥ गुरू गानक जी का कथन ॥ जलते उपजै जल ले दूर । जल महि जोति रही भर पूर । किस नेड़े किस आखै दूर । हरि गुण गावै देख हजूर ॥ १४ ॥ भरथरी का कथन ॥ कौण अंतर कौण बाहर होइ । कौण कारणि चलै सभ रोइ । कहि भरथरी नानक देहु बीचार । बोलत कौन करै अधार ॥ १५ ॥ गुरू जी का कथन ॥ अंतर बाहिर एकै सोइ ॥ एकं कार कहे सो होइ । सुन भरथरी नानक कहे बीचार । बोलत रहे पवन अधार ॥ १६ ॥

जब गुरू जी ने इस प्रकार समाधान किया तो भरथरी निरुतर हो गया । वाले ने कहा–हे गुरू अंगद देव जी महाराज ! यह तमाम प्रश्नोतर मेरी उपस्थिति में ही हुवे थे ।

गुरू अंगद देव वाले की वात सुन कर दिव्य मस्ती में झूमने लगे । सात दिन तक इसी अवस्था में रहे । अर्थात विदेह ही रहे । यदि कोई बुलाये तो भी आप मौन ही रहते थे । खान पान भी त्याग रखा था । सारे नगर में यह मशहूर हो गया कि गुरू अंगद देव जी का देहा वसान हो गया है । जब आठवां दिन चढ़ा, तब गुरू अंगद देव जी ने सुरत संभाली, और वाले को आर्शीवाद दिया । आर्शीवाद लेते ही वाला परमा नंद

में विमोर हो गया। सात प्रहर के पश्चात वाला होश में आया। और जन्म साखी लिखने लगा। फिर गुरू अंगद जी ने कहा–हे बाला ! अब आगे की कथा सुनाओ। बाला गुरू नानक जी की आगे की कथा इस प्रकार सुनाने लगा–

॥ सिलका पर्वत की साखी ॥

गुरू नानक देव जी महाराज आगे सिलका पहाड़ पर पहुंचे, तो चंद्रमा भी दूर रह गया। अर्थात चंद्रमा नज़र नहीं आता था। गुरू जी ने कहा हे बाला ! नीचे की ओर देखो। जब बाले ने नीचे की ओर देखा तब चंद्र लोक नीचे देखा। गुरू जी कहने लगे हे बाला–हम बावन सहस्र कोस दूर आ गये हैं। बाले ने कहा--हे महाराज क्या इस से आगे भी कोई स्थान है ? तब गुरू जी ने उतर दिया–हां बाला ! इस से आगे अभी बहुत से स्थान हैं। मर्दाने ने कहा हे गुरु देव ! इस से आगे और कौन स्थान है ? गुरू जी ने फ़रमाया–हे मर्दाना ! इस से आगे सुमेरु पहाड़ है। उस पर सिद्ध मंडली निवास करती है। तिस से आगे दत्तात्रेय सन्यासी का आश्रम है। उस के आगे कुमेर है, उस के अधिकार में समस्त माया है, तथा नवनिधि है। उस से आगे महा देव भंडारी का निवास है, उस के ऊपर कैलाश है। वहां ध्रुव भक्त का मंडल है। तथा उस से ऊपर निरंकार का सिंहासन है। उस पर सर्व शक्तिमान कर्ता पुरुष विराज रहा है।

तब मर्दाने ने पूछा–हे महाराज यहां से सुमेर कितना ऊंचा है ? गुरू जी ने कहा–यहां से तिहत्तर हज़ार योजन की ऊंचाई पर सुमेर है। मर्दाने ने कहा–जहां से हम आये हैं। वहां से सुमेर कितनी ऊंचाई पर है ? गुरू जी कहने लगे–हे मर्दाना ! जिस धरती से हम चले आ रहे हैं वहां से सुमेर सवा लाख योजन ऊंचा है। अभी यह बातें हो ही रही थीं। तब वहां गोरख नाथ जी आ पहुंचे। उस ने आते ही कहा–अरे तुम लोग किधर चले आ रहे हो ? आगे जाना तुमारा काम नहीं है, यह सुन कर गुरु जी

ने श्लोक उच्चारण किया।

गुरू नानक उवाच ॥ माई हमारी मनसा होती तिस का मूंड मुंडाया ॥ दुरमति हमारी दादी कहीये तिस का कान छिदाया । ताकी राख लई निरमल छाणी सेइ विभूति चढ़ाया । कहे नानक सुन भंगर नाथा तैं पूरा जोग न पाया । जुगत न जाणी औध वधाई बिरथा जन्म गुवाया । कन्न पड़ाय मुंद्रा पाइयां जोग की जुगत न जानी । लाय विभूत बैठा होय जोगी सगली सुध बौरानी । डंडा वरुआ हथ फहोरी सेली अंग बनाई । कहे नानक सुन भंगर नाथा तैं झूठी अवध वधाई ।

यह सुन कर भंगर नाथ भी निरुत्तर हो गया ॥ तब गुरु जी ने कहा-भाई बाला ! अब क्या इच्छा है मैंने उत्तर दिया । जैसे आप की इच्छा । फिर गुरू जी ने मर्दाने से पूछा-मर्दाना ! क्या चाहते हो । हम ने तुमारा कहना भी मानना है ।

फिर गुरू जी कूनां परबत की ओर चले ।

॥ कूना परबत की साखी ॥

अब गुरू नानक देव जी महाराज आपनी अपार शक्ति के बल से वाला मर्दाना के संग कूना पहाड़ पर जा पहुँचे मर्दाने ने पूछा हे महाराज यह कौन सा स्थान है ? गुरु जी ने कहा हे मर्दाना ! इसे कूना पर्वत कहते हैं मर्दाने ने कहा कि सिलका पर्बत कितना पीछे रह गया है ? गुरू जी ने कहा कि सिलका यहां से सैंतालीस सहस योजन रहा है तब मर्दाने ने पूछा हे गुरू देव हमारी सारी यात्रा कितनी हुई है ! गुरू जी ने फरमाया कि हमारी सारी यात्रा निआनवें सहस योजन हुई है । मर्दाने ने कहा कि अभी सुमेर कितनी दूरी पर हैं ! अभी यह वार्ता हो ही रही थी । इतने में कनीफा सिद्ध वहां आ गया । गुरू जी हसने लगे मर्दाने ने कहा-हे महाराज ! आप किस कारण हंस रहे हो, गुरू जी ने कहा ! हे मर्दाना ! यह जो सिद्ध देख रहे हो । इस का नाम कनीफा है । और गोरख

नाथ का शिश्य है, और गोरख हमारी परीक्षा के लिये भेज रहा है। मर्दाने ने कहा कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं इस सिद्ध को दंड देकर साफ़ कर दूं, गुरू जी ने कहा हे मर्दाने ! इस स्थान पर लड़ने की आग्या नहीं हैं। यहां तो केवल शब्द की ही लड़ाई है। इतने में वह सिद्ध बोला कि हे मर्दाना ! तुम यहां कैसे आ गये हो। गुरू जी ने कहा सुन भाई ! हम निरंकार के दर्शणों को यहां आ रहे हैं। तब कनीफा कहने लगा—हे मर्दाना ! क्या इस से पूर्व भी तुम ने निरंकार का दर्शण किया है ? अथवा अभी पहिली वार ही है। गुरू जी कहने लगे, हे कनीफा हम ने इस से पहिले भी दीदार किया है, और अब भी करेंगे यह सुन कर सिद्ध कहने लगा—तुमारा नाम क्या है ! और कौन होते हो ? अपना परिचय दो। तब गुरू जी महाराज ने नीचे लिखा श्लोक उच्चारण किया—

राग आसा महला १ ॥

नाउं हमारा अचरज कहिये हम होते अचरज रवानी। सिफत हमारी सब मूरत माहि जोत सगल महि तानी। सुनहु कनीफे रावल जोगी। सतजुग तरेते दुवापर कलजुग निरमल सदा अरोगी ॥ रहाउ ॥ जात हमारी जत कत देखउ नाना बरन हमारा। उपजन बिनसन खेल हमारा शिव शक्ति व्योहारा। हरष सोग की काया बाधी पाप पुन दुइ साखी। कला हमारी जल थल पसरी जोति सपूरण साखी ॥ ३ ॥ एकंकार हमारा साहिब जिस हम साज निवाजे। कहै नानक सुणहु कनीफा सुरत सबद मिल राजै ॥ ४ ॥

फिर कनीफा सिद्ध कहने लगा—हे नानक ! तुम ने गुरू कोई भी धारन नहीं किया। इस लिये उठो और गुरू गोरख जी को अपना गुरू बना लो, कान छेदन करवा कर मुंद्रा धारन कर लो। यह सुन कर गुरू जी ने एक श्लोक और उचारण किया। ॥ श्लोक ॥

एको चीरा जाने सो जोगी। कल माया ते रहे अरोगी। सुन्न मंडल की भिखिआ खाई। सत संतोष की खिंथा पाई। बिन खप्पर पानी पीया।

बिन धरती बिन कूआ। बिन सिङी नाद शब्द बाजै। बिन बादर गगना गाजै। बिजली चमकारा लाया। तब नानक जोग पाया।

यह सुन कर कनीफा भी निरुतर हो कर गया। फिर मर्दाना कहने लगा-हे महाराज अब आगे चलो। तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! उतावला होना उचित नहीं इन सिद्धों का तमाशा देखते चलो। इतने में एक और सिद्ध जिस का नाम हनीफा सिद्ध था। आ गया, आते ही कहने लगा। हे बाले! आदेस। तब गुरू जी ने कहा आदेस एक ओंकार को। आओ हनीफा सिद्ध जी! तब हनीफा कहने लगा कि तुम हमारा नाम कैसे जानते हो गुरू जी बोले-हे हनीफा सुनो, तुम राजा कंकरन के पुत्र हो। जब तुमारा पिता मरा था। तब तुम सत्रह वर्ष के थे। और तुमारा नगर सीलता पुर था। तू राजा बन कर एक दिन शिकार करने चला। जब तुम ने शिकार मारा। तब तुम को कुछ ग्लानी हुई। उस समय गोरख नाथ तुम को मिले। तुम ने उन से कहा कि मैं आप की मंडली को भंडारा करवाना चाहता हूँ। गोरख ने कहा कि हम तुमारा भंडारा स्वीकार नहीं करते। क्योंकि तू मलीन है, तो तुम ने अपने अन्न के मलीन होने का कारण पूछा-गोरख ने उत्तर दिया कि तुमारे मन में दया नहीं है। तुझे इस दया हीनता का फल मिलेगा। तथा तेरी काया दुख पायेगी, तब तुम ने कहा हे नाथ जी! जिस प्रकार मुझे शरीरक कष्ट न हो वह उपाय बताओ। गोरख नाथ ने कहा-यदि तुम योग करो, तो तुमारा कल्याण होगा। तुम ने योग के साधन पूछे। तो गोरख ने कहा-कि तुम कान छिदवा लो। और मुंद्रां धारण करो। इस प्रकार योग प्राप्त होगा। तब तुम ने गोरख का कथन माना। गोरख ने तुमारे कान छेद डाले तथा मुंद्रां पहिना दी। और शिर मुंड दिया, अर्थात तुम गोरख के शिश्य हो गये।

यह सुन अर हनीफा बोला। हे नानक वह कौन सा स्थान है जहां गोरख जी ने हमें योग दिया है? गुरु जी ने कहा-एक पत्र हीन रुंड

पीपल का वृक्ष है। वहां गोरख ने तुझे अपना चेला किया था। यह सुन कर हनीफा बोला–

हनीफा सिद्ध का कथन ॥ अखेर–विरत बाहर रहै को नाहि। अहेड़ा कहीये कौन की जाइ। कौन संगले चढ़े शिकार। कौन मिरग पकड़ लिआवे घाट। कौन कर राखे उन को वाट। एह अहेड़ा किस के साथ। हनीफा पूछे नानक पास। गुरू जी का कथन ॥ अखेर विरत वाहर आयो धाय। अहेड़ा पायो घर की गाय। संत संग लय चढ़िओ शिकार। त्रिश्ना चपल कऊ लेवे मार। मिरग पकड़ घर आणे हाट। चुख चुख लै गये बाट और घाट। एह अहेड़ा कीनो दान। नानक के घर केवल नाम। सुण हनीफा इह वीचार। गोरख नाथा हमरे दुवार ॥ २ ॥

गुरू जी महाराज के यह पवित्र एवम सर्वोच शब्द सुन कर हनीफा सिद्ध चर्णों पर नमस्कार करके वहां से चला गया।

अब गोरख नाथ ने गोपी चंद को आग्या दी। कि अब तुम जाओ। और अच्छी प्रकार देख कर आओ। तथा उस को यहां लेकर शीघ्र ही आ जाओ, गोरख की आग्या से गोपी चंद गुरू जी के निकट आया। और कहने लगा हे नानक आदेश। उत्तर में गुरू जी ने कहा उस निरंकार को आदेश यह सुन कर गोपी चंद कहने लगा–गोपी चंद का कथन ॥ कौन नाम कौन वरण तुमारा। कौन रूप कौन विसथारा। कौन मनोरथ ईहां आये। चलो तपा तुम नाथ बुलाये। कन्न पड़ाय मुंद्रां पहिनावों। गुरू गोरथ को चरण लगांवों। गुरू जी का उत्तर ॥ नाम एकंकार करतारा। जात वरण ते रहै निआरा। रूप देह कीना विसथारा। अलख न लखिए सगल मझारा। पारब्रहम के दरशन आये। अमर अजूनी लिये बुलाये। कन्न पड़ाइ न मुंद्रां पांऊं। सभ सिद्धन करो चरन लगांऊं। एकंकार गुरू सिर मेरे। कहि नानक सुन गोपी चंदा। द्रिष्टमान कीते सभ चेरे ॥ २ ॥ गोपी चंद का कथन ॥ कवन गिआनी कवन धिआनी। कवन तीरथ मंज्जन इशनानी। कवन सि निरमल कवन सु मैला। कवन सु वसत जित लागै

गैला। कवन सु उपरि कवन सु तलै। कवन जुगन जित दीपक बलै। गोपी चंद कहे सुन नानक तपै। कवन सो जाप जित रसना जपै ॥ ३ ॥ गुरू जी का उत्तर ॥ ग्यानी सोई जो गुरमुख होवै। ध्यानी सोई जो सुरत न खोवै। तीरथ मजन गुर दरशण पाया। चरनी लागै आप गुवाया। निरमल बाणी जिस मैल न राई। गुर पूरे बिनु मैल न जाई। गुर उपदेश लै कार सिधाया। धुर पहुंचे कोई ठाक न पाया। ऊपर ही हुकम हुकम ही तलै। हुकम पछाणै तां दीपक जलै। कहे नानक सुण गोपी चंद। माया तत होवै आनंद। मोह माया के बंधन कपै। इह बिध जाप जित रसना जपै ॥ १ ॥

जब गुरू जी के यह शब्द गोपी चंद ने सुने तो कहने लगा हे नानक! चलो तुम सिद्ध मंडली के दरशन करो। गुरू जी ने कहा हे गोपी चंद तुम चलो, हम आते हैं। गोपी चंद प्रसन्न हो कर चला गया। उस ने गोरख नाथ को जा कर कहा-हे गुरू देव! गुरू नानक देव तो तत रूप हैं, मैं ने उन के साथ वार्तालाप किया है। वे तो महा पुरुष हैं। इतनी कह कर गोपी चंद चुप कर गया। उस समय भरथरी बहुत ही कुपित हुवा। और कहने लगा कि हे गुरू देव मैं अब फिर दोबारा जाऊंता, गोरख नाथ ने कहा हे भरथरी तुम फिर जाओ। और उस को उपदेश देकर यहां ले आओ। भरथरी गुरू जी के पास आया। और कहने लगा-आदेश। गुरू जी ने कहा-आदेश निरंकार को। और कहा आओ भरथरी नाथ, तुम तो एक वार इस से पहिले भी फिर गये हो। भरथरी ने कहा हे नानक! तुम चलो, हम तुम को गुरू गोरख नाथ जी के निकट ले चलें। गुरू जी ने कहा हे भरथरी! हम वहां जाकर क्या करेंगे ॥ भरथरी का कथन ॥ कन्न छिदाओ मुंद्रां पहिरो खिंथा अंग हंडाओ। आग्या भंग न करहो कबहूँ इयों जोग जुगत गति पाओ। सुण वाले एह जोग कमावो। तब अनहद धुन वाजा वजावो ॥ १ ॥ गुरू जी का उत्तर ॥ गुर का शब्द मने महि मुंदरां खिंथा खिमां हंडावो। जो किछ कहै भला कर मानहु सहजि जोग

नित पावो ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तत मह जोगं। अमृत नाम रिरंजन पाया ग्यान कांया रस भोग ॥२॥ भरथरी का कथन ॥ एक हाथ में पात्र देऊं एक हाथ में डंडा । कलप विभूत चढ़ावों तुम को एक बतावों पंथा ॥ ३ ॥

गुरू जी का उत्तर ॥ पात्र विचार ज्ञान मत डंडा वर्तमान विभूतं । हरि कीरत रहिरास हमारी गुरमुख पंथ अतीतं ॥ ४ ॥ भरथरी का कथन ॥ आपने नगर में बैसहु आसन चीनउ बाद विबादं । सिङी देउ मुख बैन बजावहु सुणीऐ नाद अनादं । गुरू जी का कथन ॥ शिव नगरी में आसन बैसो कलप तिआगो बादं । सिङि सुरति सदा धुनि सोहै अहि निस पूरे नंद ॥६॥ भरथरी का कथन ॥ सगली सृष्टि दिखांऊं ऐसी जोग जोगादं । लिव लागी कब टूट न जावै परा पूरन पद पादं । गुरू जी का उत्तर ॥ सगली संमिआ जोत निराली नाना बरन अनेकं । कहु नानक सुन भरथरी जोगी पार ब्रह्म लिव एकं ॥ ८ ॥

फिर भरथरी थे कहा—चल नानक कुछ दूर तक मुझे छोड़ आओ । फिर गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया—

राग आसा महला ॥ १ ॥ खाली सो करतार न जाना । आपना आप कछू न पछाना ॥ १ ॥ सुन सिद्धा तूं भरथरी जोगी । गोरख भेट न होया अरोगी ॥ रहाउ ॥ राज छोड़ कर जोगी हुआ । ममता मोह न अजहुं मूआ ॥ २ ॥ ममता उपजी अवध वधाई । जोग जुगत की मिति नहिं पाई ॥ ३ ॥ नानक बोले तत विचार । मूंड मुंडाय न पायो पार ॥ ४ ॥ भरथरी नाथ ने फिर कहा ॥ एह पियाला नानक पीयो । अमृत रसना होई थीयो ॥ १ ॥ इस मद पीते करीये भोग । सुख सहजि आनंद अरोग ॥ रहाउ ॥ मेरी तेरी चिंत न रहती । लिव लागी हिरदे सच सेती ॥ २ ॥ मुख पियासी सो नहीं विआपे । विनस जाइ सभ तीनों तापे । भरथरी बोले सुन नानक बेदी । इस मद पीते बलाय सब छेदी ॥ ४ ॥ गुरू जी का कथन ॥ राग आसा महला १ ॥ गुड़ कर ग्यान ध्यान कर धावे

गैला। कवन सु उपरि कवन सु तलै। कवन जुगन जित दीपक बलै। गोपी चंद कहे सुन नानक तपै। कवन सो जाप जित रसना जपै ॥ ३ ॥ गुरू जी का उत्तर ॥ ग्यानी सोई जो गुरमुख होवै। ध्यानी सोई जो सुरत न खोवै। तीरथ मजन गुर दरशण पाया। चरनी लागै आप गुवाया। निरमल वाणी जिस मैल न राई। गुर पूरे बिनु मैल न जाई। गुर उपदेश लै कार सिधाया। धुर पहुंचे कोई ठाक न पाया। ऊपर ही हुकम हुकम ही तलै। हुकम पछाणै तां दीपक जलै। कहे नानक सुण गोपी चंद। माया तत होवै आनंद। मोह माया के बंधन कपै। इह बिध जाप जित रसना जपै ॥ १ ॥

जब गुरू जी के यह शब्द गोपी चंद ने सुने तो कहने लगा हे नानक! चलो तुम सिद्ध मंडली के दरशन करो। गुरू जी ने कहा हे गोपी चंद तुम चलो, हम आते हैं। गोपी चंद प्रसन्न हो कर चला गया। उस ने गोरख नाथ को जा कर कहा–हे गुरू देव! गुरू नानक देव तो तत रूप हैं, मैं ने उन के साथ वार्तालाप किया है। वे तो महा पुरुष हैं। इतनी कह कर गोपी चंद चुप कर गया। उस समय भरथरी बहुत ही कुपित हुवा। और कहने लगा कि हे गुरू देव मैं अब फिर दोबारा जाऊंगा, गोरख नाथ ने कहा हे भरथरी तुम फिर जाओ। और उस को उपदेश देकर यहां ले आओ। भरथरी गुरू जी के पास आया। और कहने लगा–आदेश। गुरू जी ने कहा–आदेश निरंकार को। और कहा आओ भरथरी नाथ, तुम तो एक वार इस से पहिले भी फिर गये हो। भरथरी ने कहा हे नानक! तुम चलो, हम तुम को गुरू गोरख नाथ जी के निकट ले चलें। गुरू जी ने कहा हे भरथरी! हम वहां जाकर क्या करेंगे ॥ भरथरी का कथन ॥ कन्न छिदाओ मुंद्रां पहिरो खिंथा अंग हंडाओ। आग्या भंग न करहो कबहूँ इयों जोग जुगत गति पाओ। सुण वाले एह जोग कमावो। तब अनहद धुन वाजा वजावो ॥ १ ॥ गुरू जी का उत्तर ॥ गुर का शब्द मने महि मुंदरां खिंथा खिमां हंडावो। जो किछ कहै भला कर मानहु सहजि जोग

नित पावो ॥ १ ॥ बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तत मह जोगां अमृत नाम रिरंजन पाया ग्यान काया रस भोग ॥२॥ भरथरी का कथन ॥ एक हाथ में पात्र देऊं एक हाथ में डंडा। कलप विभूत चढ़ावों तुम को एक बतावों पंथा ॥ ३ ॥

गुरू जी का उत्तर ॥ पात्र विचार ज्ञान मत डंडा वर्तमान विभूतं। हरि कीरत रहिरास हमारी गुरमुख पंथ अतीतं ॥ ४ ॥ भरथरी का कथन ॥ आपने नगर में बैसहु आसन चीनउ बाद बिवादं। सिंडी देउ मुख बैन वजावहु सुणीऐ नाद अनादं। गुरू जी का कथन ॥ शिव नगरी में आसन बैसो कलप तिआगो बादं। सिङि सुरति सदा धुनि सोहै अहि निस पूरे नंद ॥६॥ भरथरी का कथन ॥ सगली सृष्टि दिखांऊं ऐसी जोग जोगादं। गुरू जी का उत्तर ॥ लिव लागी कब टूट न जावै परा पूरन पद पादं। कहु नानक सुन भरथरी सगली संमिआ जोत निराली नाना बरन अनेकं। जोगी पार ब्रह्म लिव एकं ॥ ८ ॥

फिर भरथरी थे कहा—चल नानक कुछ दूर तक मुझे छोड़ आओ।

फिर गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया—

राग आसा महला ॥ १ ॥ खाली सो करतार न जाना। आपना आप कछू न पछाना ॥ १ ॥ सुन सिद्धा तूं भरथरी जोगी। गोरख भेट न होया अरोगी ॥ रहाउ ॥ राज छोड़ कर जोगी हुआ। ममता मोह न अजहुं मूआ ॥ २ ॥ ममता उपजी अवध वधाई। जोग जुगत की मिति नहिं पाई ॥ ३ ॥ नानक बोले तत विचार। मूंड मुंडाय न पायो पार ॥ ४ ॥ भरथरी नाथ ने फिर कहा ॥ एह पियाला नानक पीयो। अमृत रसना होई थीयो ॥ १ ॥ इस मद पीते करीये भोग। सुख, सहजि आनंद अरोग ॥ रहाउ ॥ मेरी तेरी चिंत न रहती। लिव लागी हिरदे सच सेती ॥ २ ॥ मुख पियासी सो नहीं विआपे। विनस जाइ सभ तीनों तापे ॥ भरथरी बोले सुन नानक बेदी। इस मद पीते बलाय सब छेदी ॥ ४ ॥ गुरू जी का कथन ॥ राग आसा महला १ ॥ गुड़ कर ग्यान ध्यान कर धावे

कर करणी कस पाईऐ। भाठी भाउ प्रेम का पचा इस बिध अमिओ चुआईऐ। अनहद मतवाला राम रस पीवै सहिज रंग रचि रहिआ। अनहद बाणी प्रेम लिव लागी शब्द अनाहद गहिआ। गुर की साखी अमृत बाणी पीवत ही परवाण आईआ। हरि दरसन का कांखी होवै मुकती बैकुंठे करे किआ। २। सचा आप पियाला सूचा तिसहि पिआवे जा को नदर करे। अमृत का वापारी होवे क्या मद होंछे भाव धरे॥ ३॥ सिफती राता सद बैरागी जूऐ जन्म न हारै। केहे नानक सुण भरथरी जोगी खीवा अमृत धारै॥४॥ यह सुन कर भरथरी दूसरी बार निरुतर होकर गया, इस के पश्चात भूतवे सिद्ध आयो। उस ने आते ही कहा हे बाले आदेश यह सुन कर सतगुर नानक देव जी कहने लगे। आदेश एकंकार को। तब भूतवे सिद्ध बोला। भूतवे सिद्ध का कथन॥ आशा महा दुखं। निराशा महा सुखं। आश निराशा भूतवे सुख वसंती पिंगला॥ १॥ गुरू नानक देव जी का कथन॥ आसा सुख हमरी कहीऐ निरासा दुख अपरं। बिन आसा गुर देवन मिलबो नहीं मिलबो करतारं॥२॥ भूतवे का कथन॥ चल रे बाला तेनूं गुरू गोरख के पाउं लगावों। जन्म मरन तों रहित करावों॥ ३॥ गुरू जी का उतर॥ गुरू तुमारा गोरख देखिआ जिन बहुती अवध वधाई। सिध जती और नाथ पुकारहि हमरी गत नहिं काई। नानक बोलै सुण भूतवे अंत देह गिर जाई॥ ४॥

यह सुन कर भूतवा भी चला गया, फिर लहुरीपा सिद्ध आया उस ने आते ही कहा–आदेश रे वाले आदेश, गुरू जी ने उत्तर में कहा आदेश आदि पुरष परमेश्वर को। फिर लहुरीपा ने नीचे लिखा शब्द कहा–

लहुरीपा उवाच॥ हाटी वाटी कहां त्यागी क्यों त्यागयो वणज वापारा। काहे को उदयानी हुवे क्यों त्यागयो मात पसारा। कहै लहुरीपा गोरख पूता सुण नानक हमरी वाता। जिहि कारण तू भरमत भटकत सो है अगम अगाधा॥ १॥ गुरू जी उवाच॥ हाटी वाटी सहिज कमाई सहिजे वणज वपारा। सहिजे ही उदयानी हुवे सहिजे मात पसारा। नानक

औधुत कहता पुता सुण लहुरीपा धाता। क्रिपा कीनी आप निरंजन तां मिलिआ अगम अगाधा ॥ २ ॥

निरुनर होकर लहुरीपा भी वापस गया, तो गोरख नाथ ने पूछा–अरे लहुरीपा बता क्या कुछ देख सुन कर आये हो ? उस ने कहा हे महाराज वह तो अटकता ही नहीं। निकट ही बैठे हुवे भरथरी ने कहा–वह तो पूजा करने के योग्य है, गोरख ने कहा यह मुझे ग्यान है परंतु इन सिद्धों का अभिमान दूर करना चाहता हूं। फिर चरपट नाथ गुरू जी के निकट आकर कहने लगा–आदेश बाले आदेश गुरू जी ने कहा हे चरपट एकंकार को आदेश ॥ चरपट नाथ का कथन ॥ कहां तुमारा आसन कहां तुमारा भोजन। कवन सूत को कपड़े पहिरे चलते कितने योजन। खाट तुलाई कहा बिछाई कहा करो बिसरामा। चरपट बोले सुन तू नानक ऐसा कथहु ग्यान ॥ गुरू जी का उतर ॥ आसन बैसन कायां भीतर नाम हमारा भोजन।खिमा सूत के कपड़े पहिरे चलहु अढ़ाई योजन । काट तलाई दसवें दुआरे तहां करहिं विसरामा। नानक कहे सुण चरपट नाथा ऐसा कथो ग्याना ॥२॥

अब चरपट ने भी आकर गुरू गोरख नाथ को कहा–हे महाराज ! नानक तो पूरण योगी है। गोरख ने कहा–क्यों झंगर नाथ ! तब झंगर ने कहा कि हे महाराज अब में जाता हूँ। उस ने भी आकर आदेश बुलाया। हाथ पहोड़ी मुख में वातां कौण रे वाले कौण तू भी अपना नाम वता। गुरू नानक जी का कथन ॥ सुण रे भोंदु हमारा नाउं। एकंकार किया बनाउं। तूं भी भूला गोरख भूला। औध वधाई मन में फूला। एकंकार हमारा नाउं। अपने गुरु के वलि वलि जाउं ॥२॥ झंगर नाथ का कथन ॥ विनु चिकनाई क्यों दीपक जलै। बिन दुधै क्यों वालक पलै। विना धनुप क्यों तीर चलावै। विना चरण क्यों नगर सिधावै। झंगर पूछे सुण रे वाले। विन कुंजी क्यों खूले ताले ॥ गुरू जी का कथन ॥ उलट कौल दीपक को जाले। लिव लागी तो वालक पाले। सुरत वांधी ते तीर चलाया। गुर वचनी ले नगर सिधाया। वोले नानक सुन झंगर वाले। क्रिपा कीनी तां

खूले ताले ॥ ३ ॥

यह सुन कर झंगर नाथ भी लजित हो कर चला गया। तब मर्दाने ने कहा—हे महाराज ! आप की शक्ती अपार हैं आप के आगे तो कोई भी नहीं ठहर सकता।

तब गुरू नानक देव जी महाराज ने कहा हे भाई मरदाना ! हमें उस ईश्वर ने इतना बड़ा गुरू मिलाया है। जो करतार का ही रूप है हे मर्दाना ! अनेक महापुरुष हो चुके हैं। उन को इस देह के साथ अकाल पुरुष का दरशन नहीं हुवा। तब मर्दाने ने कहा—हे गुरू देव आप में और निरंकार ईश्वर में कोई भी भेद नहीं है। गुरू जी ने कहा—हे मर्दाने परमात्मा को सभी जीव समान रूप से प्रिय हैं। मर्दाने कहा अब आप चलने की कृपा करो। तब गुरू जी मीनां परवत पर गये।

॥ साखी और चली ॥

पूर्व प्रकार गुरू जी आपने साथीयों के साथ क्षणभर में मीना परवत पर आ गये। मर्दाने ने पूछा हे गुरू जी ! अब हम कहां आ गये हैं। गुरू जी ने कहा इस स्थान का नाम मीना गिरि है। मर्दाने के पूछने पर गुरू जी ने कहा कि हम पहिले स्थान से सोलह सहस्र योजन ऊपर आ गये हैं। मर्दाने ने पूछा—कि यहां से सुमेर कितनी दूरी पर हैं ? गुरू जी ने उत्तर दिया। यहां से सुमेर एक सहस्र योजन दूर है। मर्दाने ने कहा हे महाराज जिस गुरू का आप ने जिकर किया हैं। उन का नाम जानना चाहता हूँ। गुरू जी ने कहा—उस का नाम बाबा जिंदा कहते हैं। जल और पवन उसी की आग्या में चल रहे हैं। अग्नि और मृत्तिका भी उसी की आग्या मानते चले आ रहे हैं उसी को बाबा कहना उचित है अन्य को नहीं। मर्दाने ने शंका की। कहा—हम भी तो आप के साथ ही यात्रा कर रहे हैं। वह बाबा आप को कहां और कब मिला है ? गुरू जी ने कहा हे मर्दाना जब सुलतान पुर में हम ने डुबकी लगाई थी। उस समय तीन

दिन उसी के ही रहे थे, इस बात को भाई वाला जानता है, हे मर्दाना वह ऐसा गुरू है कि उस की सत्ता समस्त संसार में आश्रय रूप हो कर विराज रही है, उस को जिंदा कहा जाता हैं, वह काल के वश में नहीं है, तब मर्दाने ने कहा–हे कृपा नाथ ! उस का रंग कैसा है ? और उस का आसन कहां है ? गुरू जी ने कहा–हे मर्दानां उस का रंग लाल हैं परंतु संसार की कोई भी लाली उस के सदृश्य नहीं है, और उस के रोम स्वर्ण वर्ण हैं। परंतु स्वर्ण भी उस के तुल्य नहीं है, और वह जिव्हा से बोलता भी नहीं है, उसके रोम रोम से गहिर गंभीर शब्द की ध्वनी हो रही है, तब मर्दाने ने कहा–आप धन्य हो आप के वगैर हमारी शंकायें कोई भी दूर नहीं कर सकता, मर्दाने ने कहा–हे महाराज ! अब आप सुमेर पर चलने की कृपा करो, गुरू जी ने कहा–अभी तो सिद्ध समाज में विचार ही हो रहा है, कुछ काल मौन रहो।

उधर सिद्ध मंडली में गोरख ने पूछा कि हे सिद्धो ! क्या आप किसी में कोई शक्ति नहीं है, तब संगर नाथ ने कहा हे महाराज ! यदि आप की आग्या हो तो मैं जाने को उद्यत हूं। और उस नानक की क्या ताकत है, गोरख ने कहा अच्छा जाओ, अभिमानी संगर नाथ गुरू जी के निकट आ कर वहुत मान से कहने लगा, अरे संसारी ! आदेश, गुरू नानक देव खामोश रहे, परंतु अधरों में मुसकराने लगे, तव संगर नाथ ने कहा–अरे संसारी जीव ! बोलता क्यों नहीं, तव गुरू नानक देव जी ने कहा–

गुरू जी का कथन ॥ संसारी तव गोरख कहीये जिन तुम को अकल न दीनी। हाथ फहोरी कन्नीं मुंद्रां सुरत वुधि सव छीनी। मुंडाया गोतर लजाया भी तैं जोग न पाया। कहै नानक सुण संगर नाथा ज्यों पाणी विच डड्डू। रन्न वलल्ली पुतर जाया फिरदा मूरख अड्डू।

फिर संघर नाथ ने लज्जावान होकर उतर दिया–

संघर नाथ का कथन ॥ कवन जुगति करि कामु गवाया। कवन जुगति करि त्यागी माया। कवन जुगति करि क्रोध कोउ जाता। कवन जुगति करि

भये अवीता। कवन जुगति लोभ परि हरै। कवन जुगत काल सिर टरै। कवन जुगति कर मोह न ब्यापै। कवन जुगत अहंकार न जापै। सुण नानक कहे संघर अवधूता। देहो ग्यान तां होहु सपूता। गुरू जी का कथन॥ सचि जाणिआं तां कामु गवाया। शब्द सुरति स्यों त्यागी माया। शांति आई तां क्रोध को जीता। त्रै गुण मेटे भये अतीता। सत संगति मिलि लोभ पर हरै। सिमरन करा काल सिर टरै। एको जान्यां मोह न ब्यापै। सुन संघर कहे नानक अवधूता। तू तां देख्या पीहण हारी का पूता॥ ३॥

संघर नाथ का कथन॥ कवन जुगति ठहरो संसारा। कवन जुगति पहुंचे दरबारा। कवन जुगत कर ठाक न पायो। कवन जुगत कर मिले मिलायो। संघर पूछे सुण नानक बंदे। तुम अंतर बाहर गंदम गंदे॥ ४॥ श्री गुरू जी का उतर॥ मान त्याग ठहरो संसारा। गुरु किरपा पहुंचो दरबारा। हरि किरपा कर मिले मिलायो। गुर किरपा साजन ढिग आयो। हरि किरपा दर ठाक न पाई। तौ सत संगति गये मिलाई। कहि नानक सुण संघर अंधे। अंतर बाहर गंदम गंदे।

यह उत्तर सुन कर संघर नाथ भी लज्जित हो कर चला गया, तब मर्दाने ने कहा हे गुरु देव यहां अजीब कौतक देखा है, जो यह पर्बत रंग रंग की लहरें देता है, मालूम होता है कि मोती अथवा हीरे इस में हैं, अथवा स्वर्ण है, यह भी पता हैं नहीं कि यहां चांदी है, मुझे ऐसा लगता है कि यह पहाड़ जवाहरात का है। कुछ भी पता नहीं चलता कि यह क्या कौतुक है, गुरू जी कहने लगे–कि इसी लिये इसे मीना पर्बत कहते हैं; इस पहाड़ पर प्राकृत मीना कारी हो रही है, तब मर्दाने ने कहा–अब आप सुमेर पर चलो, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! तू उतावला ना हो

उधर सिद्ध मंडली में गोरख नाथ ने फिर कहा हे मंगल नाथ! अब तुम भी वहां जाओ, मंगल ने कहा–आप मुझे देखने के लिये भेज रहे हो, अथवा खोजने की इच्छा से कह रहे हो? गोरख ने कहा जैसे तुमारी इच्छा हो वैसे ही करना, मंगल नाथ ने कहा हे महाराज नानक देव तो

पूरण योगीश्वर है, एक बार दो बार अपितु अनेक बार परीक्षा ली गई है, अब यदि कहो तो उन को बुला सकता हूँ। तब गोरख नाथ ने कहा- हे मंगल नाथ उनको इस प्रकार यहां लाओ, जैसे कोई सेवक हो कर आता हैं, मंगल ने कहा- कि सेवक वह होता है तो अपने से निकृष्ट होता हैं, और जो अपने से उत्तम होता है। वह सेवक रूप से नहीं आ सकता, और अपने से उतम होता है, उस की इच्छा स्वतंत्र होती है । यदि उस की इच्छा सेवक भाव में आ जाय तो सेवक रूप भी धारन कर लेता है। यदि उस की इच्छा झुकने की न हो तो उसे कोई मजबूर नहीं कर सकता। यदि आप मुझे भेजना हो तो मैं आप की आग्या से जाने को तैयार हूँ। खोरख ने कहा-तुम और भरथरी आदिक तो कुछ बातें भी करते हो । परंतु यह घुग्गु नाथ तो बोलता भी नहीं। यदि तुमारी इच्छा हो तो जाओ ।

तब मंगल नाथ गुरु नानक देव जी के निकट आया और सेवकों की भांति हाथ जोड़ कर कहने लगा। हे नानक देव ! आदेश, हे महाराज ! आप ने हम योगीयों पर कृपा करके जो दरशण दिया है। सो हम आप के कृतग्य हैं। इस प्रकार कह कर मंगल नाथ गुरु जी के चर्ण स्पर्श करने को था, गुरू जी अंतरयामी थे। वे मंगल के भाव को जान गये । तथा उस के हाथ पकड़ लिये, और अपने हाथ उस के चर्णों को लगाये, और कहा हे भाई ! आदेश उस एकंकार को आदेश। आओ मंगल नाथ पूरण योगी, मंगल नाथ ने कहा हे महाराज ! इधर आने का जो आप ने संकलप किया है, क्या मैं उस के भाव को जान सकता हूं? गुरु जी ने कहा-हम तो आप के दरशणों की इच्छा रख कर इधर आ गये हैं, मंगल ने कहा-यह तो हमारे भाग्य उदय हुवे हैं। जो आप ने कृपा की है । अब आप मेरे साथ चलो और सिद्ध समाज को दरशण दो। गुरू जो ने कहा हे मंगल नाथ ! आप चलो, और हम आप के पीछे कुछ ठहर कर आयेंगे, मंगल नाथ ने कहा-जैसे आप की आग्या। यदि चाहो तो यहां भुगती लाई जाय, फिर गुरू जी ने फरमाया-

हम को भुगती तुमारा भाउ। सुप्रसन्न कीआ तब आतम राउ। शांत भई तव दरशण पाया। देखत ही आतम अघाया। सुण मंगल नाथ इक वात हमारी। हमारा तुमारा एक अधारी।

जब मंगल नाथ गुरू जी को प्रसन्न करके गया। तो मर्दाने ने कहा हे गुरू देव! यह तो अजीब किसम का सिद्ध देखा है। गुरू जी ने कहा हे मरदाना सभी एक जैसे नहीं होते। पूरन पुरष कोटिन में कोई एक आधा ही होता है। और भेखी बहुत पाये जाते हैं। तब मरदाने ने प्रार्थना की-कि अब आप आगे चलो-

गुरू जी ने कहा-हे मरदाना! एक शंभू नाथ हैं। वह अपने आप को बहुत मानता है, जब वह भी फिर कर जायगा। तब हम आगे चलेंगे। मरदाने ने कहा हे गुरू जी! वह जो शंभू नाथ है, वह मंगल नाथ से बड़ा है अथवा छोटे दरजे पर है? गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! मंगल नाथ की गनणां सिद्धों में नहीं है। परंतु वेष सिद्धों जैसा ही है। वह तो सतगुरु है। मर्दाने ने कहा हे महाराज! यदि मंगल नाथ सतगुरु हैं तो फिर यह गोरख नाथ का शिश्य कैसे बन गया। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! यह ईश्वरीय दात है। जिसे वह बक्श दे। मर्दाने ने कहा हे महाराज! आप ही इस महान रहस्य को जान सकते हैं।

इतने में शंभूनाथ भी आ गया, उसने एक ही मुंद्रा और एक ही फरुआ और एक ही वैरागन उस के पास थी। उस ने आते ही कहा हे नानक वाले आदेश।

शंभू नाथ का कथन ॥ मुंद्रां पहिरो फरुआ लेवो हाथ माहि वैरागी। गोरख नाथ के चेले होवो विघन न कोई लागी। शंभू कहे सुण नानक वाले। दरशण देखो खां खुले ताले॥ १ ॥ रहाउ॥ काया असथिर धरनी न पड़ती जब लग धरन अकाशा। सोलां कलां संपूरण न होवहि उलट कमल परकासा। सुन्न शहर का मारग पावहु अचरज रूप दिखाईऐ। सत संताप माह रहो आगम नौं निधि सिधि पाईऐ। शंभू नाथ

कहे सुण नानक तेरा जन्म सकारथ । जो तुम गुरू गोरख को भाखो तां पावहु परम पदारथ ॥ ४ ॥ गुरू जी का कथन ॥ मुंद्रा हमारी मता मसूरत सो हम मनहु विसारी । फ़रुआ हाथ न लेवे कबहु नाउं परे भेखारी ॥ १ ॥ बिधन हमारे सगले भागे हिरदे सच्च चितारी । सुनहु शंभु नाथ जोगी । एक निरंजन पाया फिर तो सदा अरोगी ॥ रहाउ ॥ कायां मेरी जुग जुग अस्थिर सच्च मंडल में वासा । हमरी कायां कबे न पड़ती बिनसे धरन अकासा ॥ २ ॥ सुन्न शहर में अस्थिर कीआ असचरज रूप हमारा । सत संतोष हमारी कीती नौं निधि खड़ी दुवारा ॥ ३ ॥ कहे नानक सुन शंभू नाथा पूरण गुरू हमारा । गोरख जैसे चेले केते मागें खड़े दुवारा ॥ ४ ॥ शंभू नाथ उवाच । गोरख तुमरी द्रष्टी न आवें तूं तो वडो हंकारी ॥ कौन बूंद ते उपजिआ नानक कौण कहे महतारो ॥ १ ॥ कौण लागा है भूत तुझ को तूं तां औरा बौरा । सुध बुध तुमरी सग बौरानी मुखते बोले कौरा ॥१॥रहाउ॥ सिद्ध साध को माने नाहीं नाथ जती सभ निंदे । तुम कर कहु वडाई पाई उपजे माटी गंदे ॥ २ ॥ सिद्ध पीर सभ उस के कीये आपे बणत वणाई ॥ उस को निंदहि कवन तूं कहीऐ क्या है रिध सिध पाई ॥३॥ शंभू नाथ कहै सुण नानक तुम को गुरू न मिलिआ । आवत जावत भरमत थाका गरभै जूनी गलिआ ॥ ४ ॥ गुरू जी का कथन ॥ गोरख को हम बंदा जाणै नदर हमारी पूरी ॥ महा देव की बूंद ते उपजिआ वैठा होय हजूरी ॥१॥रहाउ॥ देन मुनीशर तपे रिखीशर सभ उस ही के वंदे ॥ एका माटी जोत सभ एका निर्मल कहु भावें गंदे ॥ २ ॥ साध पीर सभ भाई हमरे जो प्रभु सो मन माने । सिद्ध जती सभ वौरे देखे उन को कोइ न जाने । कहे नानक सुण शंभू नाथ हम गुर पूरा मिलिआ । तूं जो निंदा हमारी करता भंगर नाथ तूं भी गलिआ ॥ ४ ॥

यह सुन कर शंभू नाथ चला गया । उस के गुरू गोरख नाथ ने पूछा—कि सुनाओ क्या कुछ कर के आ रहे हो ? शंभु नाथ ने कहा— हे महाराज ! नानक तो औरिआं बौरीआं बातें करता है, **गोरख** ने —

मंगल नाथ और तुमारी बातों में बहुत अंतर है। शंभु नाथ ने कहा हे गुरू जी मंगल नाथ उस नानक का पक्ष लेता है। मैं तो अपने भेख की हानि सुन भी नहीं सकता। मंगल ने कहा हे शंभु नाथ। तुमारे कथन से नानक देव की शान में कोई न्यूनता नहीं आ सकती। तब शंभु नाथ ने कहा हे मंगल नाथ ! तुम भी जाकर नानक के चेले बनजाओ, तब मंगल नाथ ने कहा-हे भाइ ! साधु के आगे साधु ही झुकता है। अहंकारी तो किसी को भी मानने को तैयार नहीं होता। परंतु साधु को अहंकार शोभा नहीं देता। इन की समस्त बातें सुन कर गोरख नाथ जी मौन हो गये तब गोपी चंद कहने लगा-हे भ्राताओं ! तुम ने तो अपने घर में ही झगड़ा बुला लिया है। नानक जैसे है वैसा ही है। तुम उस के शरीक नहीं तथा तुम उस के संझीदार भी नहीं हो। फिर झगड़े की क्या आवश्यकता है ? क्या संसार में तुम लोग ही पहुंचे हुवे सिद्ध हो, क्या दूसरा हो ही नहीं सकता ? साधु का धर्म है कि सभ को अपने से उतम माने यह सुन कर शंभु नाथ तो जल बल गया। परंतु गोरख जी मौन ही रहे, गोरख जी कहने लगे हे मंगल नाथ तुम जो कुछ कहते हो वह सत्य ही है। साधु को किसी की निंदा करनी उचित नहीं। जिस पर प्रभु की कृपा होती है। वही उतम वन जाता है। यह कोई मोल खरीदने की वस्तु नहीं है। उधर तो इस प्रकार बातें हो रही थीं। तथा इधर मर्दाना गुरू जी को कहने लगा। हे गुरु देव ! अब तो हमें सुमेर के दरशण कराओ। पूर्व प्रकार से गुरू जी ने साथीओ के नेत्र एक पल के लिये बंद करवाये तो मीना परवत से सुमेर के शिखर पर पहुँच गये।

॥ साखी सुमेर की ॥

सत गुरू श्री नानक देव जी अपने साथीओं के सहित गोरख नाथ आदि सिद्धों की मंडली में जा पहुंचे। तथा गुरू जी का देख कर गोरख नाथ जी ने कहा आदेश नानक देव ! तब गुरू जी ने कहा आदेश एकंकार

को। फिर गोरख और नानक देव में ग्यान चर्चा प्रारंभ हुई। नौं नाथ चौरासी सिद्ध तथा अनेक जती तपस्वी सुनने लगे, गोरख नाथ ने कहा हे नानक देव ! आज हमारे अहो भाग्य हैं, जो आप के पवित्र दरशणों का सौभाग्य प्राप्त हुवा है। गुरू जी ने कहा हे भाई गोरख हम लोग भी आप के दर्शणों से कृत्त कृत्य हो गये हैं।

उस समय कुछ सिद्धों ने कहा—हे नानक देव ! यदि आप योग साधन कर लें तो आप का पूरण कल्याण हो जाय, इस लिये आप को गुरू धारण करना उचित है। गुरू जी ने कहा हे सिद्ध मंडली ! हम ने गुरू धारण कर रखा है। सिद्धों के पूछने पर गुरू जी कहने लगे—हमारा गुरू सत्य हैं। तब सिद्ध कहने लगे, उस सत्य का खुलासा कह कर सुनाओ तब गुरूजी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया—

गुरू नानक देव जी का कथन ॥ आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ हे सिद्धो ! वह करतार तीनों काल सत्य है। और सिफतों का भंडार है, यह सुन कर गोरख नाथ जी बोले—हे नानक देव ! और भी तो सत्य हैं, गुरू जी ने उत्तर दिया हे गोरख ! और सत्य कैसे हैं। जो जन्मे मरे और काम क्रोधादिक तथा वासनाओं से जकड़े हों वे सत्य नहीं हो सकते, जो चेतन करता पुरुष है वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल है, आनंद स्वरूप और सर्व शक्ति मान है, उस को माया अपने वश नहीं करती। माया उस की दासी है, हे गोरख नाथ ! जिस पर उसकी कृपा हो उस को माया लिप्त नहीं हो सकती। यह सुण कर गोरख नाथ चुप हो गया। तथा फिर कहने लगा—हे भंगर जी आप अमृत का प्याला भरो, प्याला भर कर भंगर नाथ ने कहा—हे नानक देव ! इस को पान करो, इस के पान करने से लिव लग जाती है, गुरू जी ने कहा—वह कैसे, तब भंगर नाथ कहने लगा—

भंगर नाथ का कथन ॥ भाठी साजो लाहन माडों कसि को समावो। निरमल धार नली होइ चलती तब यह अमृत पावो ॥ १ ॥ सुण हो नानक

वाले तव तूं जोगी होवै। द्रिष्टी खोल बंधन सभ काटे सगली दुरमती खोवैं। होवहु मतवाले मद के माते मगन होय लिव लागी। सुरति बंधना चलित न कबहुं दरवार खड़ा वैरागी ॥ २ ॥ ऐसी सहज फिरत बारे दुख सुख दोष निवारे। जहां देखे तां एक स्वामी हिरदै अंदर धारे ॥ ३ ॥ लाहा पूजी साथ निबाहो खाली खेप न जावो। भंगर नाथ कहै सुण नानक बाले तुम दरशण पावो ।४। गुरू जी का कथन। राग रामकली १ ॥ पहिला महला॥ ग्यान ध्यान की लाहन मांडी करनी की कसि पाई। भौ भाई प्रेम समाण। ब्रहम की अगिन जलाई। सिद्धों हम मद माते नाहीं। जो मतवाले मद के माते किन मत वालिओं माहीं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरति भली भौ बासन कीना अंतर धार चुआई ॥ दया सुराही सहजि पिउएला गुरमति पीवहु भाई ॥ २ ॥ गुरमुख फिरै मतवाले एह रंग महि खेलै। नहि देखा तांह एक सरूपी मारग पाया चेलै ॥ ३ ॥ नित हि खेप हमारी सिद्धो आठ पहिर लिव लागी। नानक दास तहां मतवारां जहां एकंकार वैरागी ॥ ४ ॥ सिधों का कथन ॥ रामकली ॥ धान जोरन की करे न आसा पर त्रिय अंग न लावै पासा। नाद विंद लै घट महि जोरै। तिस की सेवा पारवती करै। वल परवत सत सरूप। परम तत महि रेख न रूप ॥ १ ॥ सो निग्रही जो निग्रह करै जप तप संयम भिखिआ करै। पुन्न दान का कर सरीर। सो निग्रही गंगा का नीर। वोले ईशर सति सरूप। परम तत महि रेख न रूप। सो उदासी जो पाले उदास। अरध उरध करे निरंकार वास। चंद सूरज मूरत की पाए गंढि। तीरथ परसै नाऊं सा सठ। वोले गोपी चंद सत सूरूप। परम तत महि रेख न रूप ॥ ४ ॥ सो वैरागी जो उलटे ब्रहम। सुन मंडल महि रोपे थम्म। अहि निमि अंतर रहे ध्यान। सो वैरागी सत समान। वोलैं भरथरी सत सरूप। परम तत महि रेख न रूप। गुरू नानक देव जी का कथन ॥ राग रामकली महला १ ॥ कों मरैं मंदा को जीवे जुगात। कन्न पड़ाय क्या खाजैं भुगात। आसत नानत एको नाउ। कौण सु अखर जित रहै हिआउ। छिअ अवतारं वरतहि पूत। [illegible]

नां अवधूत । धूप छाओं जे सम कर सहै । तां नानक आखै गुर को लहै । निरंकार जे रहै समाइ । काहे भिखिआ मंगण जाइ । बोले नानक सत सरूप । परम तंत महि रेख न रूप । चरपट नाथ का कथन ॥ काम त्याग लो क्रोध त्याग लो लोभ त्याग लो मोहं । अहंकार त्याग लो ममता त्याग लो चरपट बचन मुखि सोहं । गुरू नानक जी का कथन ॥ न काम त्याग लो ना क्रोध त्याग लो न त्याग लो लोभं । न त्याग लो हंकारा । गुरु प्रसादि सभ भोग करनं नानक बचन अपारा ॥ ३ ॥ चरपट का कथन ॥ शिव शक्ति पकड़ि गवाइलो मन को परबोध लो । दरशन पाय लो विभूत चढ़ाय लो गुर दरशन लाग लो । चरपट मसाल बो । सुण नानक तपा जी संसार समुंदर पार पाइबो ॥३॥ गुरू नानक जी का कथन ॥ शिव न पकड़ लो शक्ति न गवाइलो मन को प्रबोध लो । दरशन पाइलो तौ वड भाग आप लो । नानक बचन संभाल लो सुन चरपट नाथ संसार ते पार पाइबो ॥४॥ हम एकंकार गुरू करबो पंच पचीस हम आगै कार करबो । पंजे तत पंजी प्राकरत तीनो गुण चार अंतह करण नौं इंद्रै सभ हम बंधपो । चौदां इकी हमारे अगे खरे हैं पचास पभंतर पारबो नानक तपा वड भागबो ।

गुरू नानक देव जी का और कथन ॥

हे घुघु नाथ ! तुम क्यों चुप हो यह कह कर-

बिन बोले क्या करे बिचारा । घुघु नाथ न बोलन हारा । सेवक पूजा रहित न पाईऐ । घुघु नाथ बुलाया चाहीऐ ॥ दरशन आछा मरन न जापै । क्या जानो कैसा प्रतापै । नानक सुण घुघु नाथ अरदास हमारी एक वेर बोलहु तां कारी ॥१॥ घुघु नाथ का कथन ॥ जती न साधवो सिध न नाथवो बोलवो पकड़ाइवो सिंडी न वजाइवो । नाउ धराइवो । नाद अनाद धर्म सुनाइवो । सब एकंकार खेलवो । शिव शक्ति मेलन खेलवो । ध्यान न ध्यायवो । घुघु कहै सुण नानक साधवो । संत परमेश्र तुम लादवो ।

इस प्रकार कहा तो घुघु श्री गुरू जीके चरणों की ओर भागा, तब गुरू जी ने यह शब्द उच्चारण किये-

एस जाणिआं तां तुम पछाणिआं दूसर अवर न कोई। नानक दास समझिआ है आगे घुघु नाथ मैं ओही।

तब गुरू जी ने और घुघु नाथ दोनों ने चर्ण बंदनाकी। फिर चंबा नाथ नहीं बोला–तब मर्दाने ने कहा–हे महाराज! इस को बुलाने की कृपा करो। तब गुरु जी ने कहा–हे चंबा नाथ बोलो–बोलते क्यों नँहीं।

गुरू नानक देव जी का कथन॥ कौन तुमारा मता मसूरति रहो कौन गृह माहीं। देखी तुमगी मूरति आछी बिन बोले समझ न काही। सिद्ध नाथ सब बोले जती वी बोलन हारे। नानक कहे सुण चंबा नाथ तैं क्या बोल बिसारे॥ १॥ चंबा नाथ कहने लगा। बोलन हार बोलबो॥ अटकन हार अटक बो। झजकन हार झचक बो। गावन हार गाय बो। सुणनिहार सुण बो। चंबा न कहाय बो। एक ध्याय बो। एकंकार महि ध्यान बो। गुरू जी का कथन॥ जननी सो धन्न बो। करनी जे पुनि बो। रहनी सो धन्न बो। चलनी मो धन्न बो। गुरू सो धन्न बो॥ २॥ उपदेस धन बो। जेते लखण सो धन बो॥ ३॥ चंबा नाथ का कथन॥ चंबा नाथ को। गोरख न शाम को। दहसिर न राम बसिष्ट न व्यास को। सुख देव न पारम को। सभ आपे खेलता। दूजा न मेलता। प्रणवत चंबा सुण नानक वाला। एक एक सुख पावता दूजा जंजाला॥ ४॥

फिर चंबा नाथ और गुरू नानक जी बहुत सी बंदना की, दोनों परस्पर प्रसन्न हुवे। फिर घुघु नाथ और चंबा नाथ तथा मंगल नाथ और गोपी चंद यह सिद्ध प्रसन्न हुवे, सभी ने कहा कि हमें आज अलेख के दर्शण हुवे हैं गुरू जी ने कहा हे मंगल नाथ! हम आप के दर्शण को आये हैं, गोपी चंद ने कहा हे नानक देव! हमें तो आज निरंकार के ही दरशण हुवे हैं। गुरू जी ने भी उन सभ की तारीफ की। परमात्मा में और उसके भक्तों में कोई भेद नहीं होता, इस लिये आप सभी धन्य हो।

इस के पश्चात जो अहंकारी सिद्ध थे वे अपनी२ सिद्धी का प्रदर्शण करने लगे, तथा अपने२ चिन्ह उड़ाने लगे गुरू जी मौन साधे देख रहे थे,

कौन भोग अहार। देह नानक इस शब्द का विचार। गुरु जी का उत्तर ॥ हिरदै वसै मनुआ नाभ वसै पवना। पवन हेठ घट नाद वजावै ॥ पंजां का गुरू तत अगन भोग आहार। लेहु रे खिंदड़े देही का बीचार ॥ ६ ॥

खिंदड़े का कथन। कित मुख आए हो कित मुख जायगो। कैसे नाड़ी कैसे संध। काया सोखी करै पवना कौन मड़ी कौन दुआर। देह नानक शब्द का विचार ॥ ७ ॥ गुरू नानक देव जी का कथन ॥ उतर मुख आये दखण मुख जाहिगो। नौं सौं नाड़ी सोलां सौ संध। निज सोखी करे पवन असंभ। मड़ी चिंत दुवार। लेहु खिंदड़ शब्द का विचार ॥ ८ ॥ खिंदड़ का कथन। कित परचे लागे बंद। कित परचै परै न कंद। कित परचै ससि सूरज फूटै। कित परचै माया मोह टूटै ॥ ६ ॥ गुरू नानक जी का कथन। मन परचे तां लागै बंध। पौण परचै पड़े न कंध। ज्ञान परचै तां ससीअर फूटै। सत गुरु परचै माया मोह छूटै ।१०। खिंदड़ का कथन। आदेस किस को आदेस। आदेस का बाग तेस। मन कवन उपदेस। ज्ञान गुरु का कथीअले पूता। कित मुख पाइये मेर ।११। गुरु नानक देव जी का कथन। आदेस तां पूरे को आदेस। पूरे सतिगुर का अनूपम उपदेस। मन का निरंतर वसै। ज्ञान का गुरु संतोष। सतिगुर की चरणी लगीऐ पूता। तौ इस बिधि पाइये मोख ॥ १२ ॥

यह सुन कर ऊरम धूरम सिद्ध वहां आया, जिस को क्रोध बहुत ही चढ़ा हुवा था, और आते ही कहने लगा।

धूरम का कथन ॥ अगन जलावों जल में डोवों चमक सार कसाई। ऐसे दोस लगावों तुम को धरती वीच गडावों। एक तमाका मारों ऐसा अंबर साथ भुलाइ। ऐसा देखो ज़ोर हमारा सगले पाउं लगाई। जो तू हमरा कहा न मानै अवहि करों तुम छाई। जेहा ज़ोर धरे हम अपना तुझ को मालम नाहीं ॥११॥ गुरु नानक जी का कथन। पहिरा अगन हिवै घर बाधा भोजन सार कराइ। सगले दूख पाणी करि पीवां धरती हाक चलाई। एता तान होवें मन अंतर करीं भि आंख कराई। एवड वधा मावा नाहीं

सभसै नथ चलाई। एता ताण होव मन अंतर करी भी आख कराई। जेवड साहिब ते वड दाती देदे करै रजाई। नानक नदर करै जिस ऊपर सच नाम वडिआई। फिर ऊरम नाथ कहने लगा–

ऊरम बोले तत विरोले सुणहु नानक मोदी। क्यों कर वस्त प्रापत होवै किन पाये तुम गोदी। आख वखानै भेद न जाणै गुर बिनु सूझ न जाणै गुर बिनु सूझ न होई। सिद्ध मिलै बिनु बुध न उपजै जन्म अकारथ खोई। ऊरम कहै सुण नानक मूढ़े सतगुर सिर पर थापो। गुरू गोरख की चरणी लागहु तीन लोक महि जापो ॥ १ ॥ गुरू नानक जी का कथन ॥ मोदी कहीये एकंकारी तीन लोक को पालै। लख चुरासी जोन सथाई जीव जंत को नाले। तिस की क्रिपा वस्त प्रापत गुरु ते पाई। गुर प्रसादि ब्रहम पछाणिआ मैल न रहीआ काई। निरमल बुध सुध मम हाजर परम पदारथ पाया। रितु जननी की बिंद पिता मिल करते बाद बनाया। नानक कहै सुण ऊरम मूढ़े तैं बिरथा जन्म गवाया। झंगर नाथ का कथन ॥ कवन महितारी कवन पिता। गुरू कवन कवन होता। कवन उपदेस कवन भेस जंगम को भोगी। भोगी के रोगी हरखी के सोगी। प्रणवत झंगर सुन रे बाला। कवन प्रकाश मिटहि जंजाला। गुरू नानक जी का कथन ॥ खिमा महितारी संतोष पिता। सतिगुर करतार का होता। बेगम पुर देस सगले भेस। जंगम न जोगी हरखो न सोगी। भोगी न रोगी। प्रणवत नानक झंगर बाले। ओंकार प्रगासिआ तां मिट गये जंजाले। श्री गोरख नाथ जी का कथन। मुंद्रा पहिरो झोली लेवहु मस्तक धूर लगावो। सदा अजीत कायां रहसी खिथा अंग हंडावो। हाथ फहोड़ी डंडा राखहु तो सिद्ध परतीता। मेल मिलावहु सिख जमाती इउं सगला जग जीता ॥१॥

आदेस कहो सभ सिद्धां को आदेस ॥ रहाउ ॥ भगती लेहु भंडारा भोगहु मुख ते नाद वजावो। नाथां नाउं होयके वैठे जुग जुग रिध सिध लगावो। सगल सिद्ध तुम आग्या कारी जोग संजोगी पावो। एक माउ को पूता होवै जोग जुगति जुगति के चेले। संसारी के भंडारी होवो दीवान

तुमारे सगले। तुम सिर ऊपर न कोई होइ रहे पर धाना। हुकम तुमारा सभ ते ऊचा इउं चल है फरमाना। खंड खंड महि आसन बैठे लोइ लोइ चले भंडारा। लख चुरासी बचन मैं बांधों रसना एक उचारा। कर कर देखो अपना आपे समझो रिदे बिचारी। प्रणवत गोरख सुणहु नानक ऐसी कार तुमारी।

यह सुन कर गुरु नानक देव जी महाराज ने। जपुजी साहिब की पौड़ियें उच्चारण कि।

गुरू नानक देव जी का कथन ॥ मुंद्रां संतोख सरमु पत झोली ध्यान की करहि बिभूत। खिंथा काल कुआरी काया जुगति डंडा परतीत। आई पंथी सगल जमाती मन जीतै जग जीतु। आदेस तिसै आदेस। आदि अनील अनादि अनाहति जुग जुग एको वेसु ॥ १ ॥ भुगत ग्यान दया भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद। आपि नाथ नाथी सभ जाकी रिध सिध अवरा सादि। संजोग विजोग दोए कार चलावहि लेखे आवहि भाग। आदेस तिसै आदेस। आदि अनील अनादि अनाहति जुग जुग एको वेसु॥२॥एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु। इक संसारी इक भंडारी इक लाये दी बाणु। जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाण। ओहु वेखै उना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु। आदेस तिसै आदेस। आदि अनील अनादि अनाहति जुग जुग एको वेसु।३।आसण लोइ लोइ भंडार। जो किछु पाया सु एका वार। करि करि वेखै सिरजण हारु। नानक सचे की साची कार। आदेस तिसै आदेसु। आदि अनील अनादि अनाहति जुग जुग एको वेसु ॥ ४ ॥

गुरू नानक देव जी के इस परम पवित्र उपदेश से उन तमाम सिधों को परम तृप्ति हुई। तब गोरख नाथ जी कहने लगे। हे नानक! तुम लोग इधर किस प्रकार आए हो। अपने आने का कारण बताओ। तुमरी तमाम अभिलाषा हम पूरण करेंगे। तब गुरू जी ने कहा। गुरू नानक देव जी का कथन ॥ एक मनोरथ कीआ पूरा। जद हम को मिलिआ सतगुर सूरा। अवर मनोरथ रहिओ न कोई। सिध बुधि भरमें सभ लोई।

सुण गोरख तुम दीखिआ देऊं। प्रणवत नानक सच समेंऊं।

यह शब्द सुण कर गोरख नाथ मौन हो गया। तब मंगल नाथ ने कहा– क्यों गुरू गोरख जी आप ने नानक देव को कुछ उपदेश किया ? गोरख ने उत्तर दिया हम अभी नानक को देख रहे हैं। अब हमें मालूम हुवा है कि नानक देव पूरण पुरुष है। तब मंगल नाथ ने कहा–जैसा आप ने नानक को देखा है। वैसा ही आप कथन करो। गोरख ने कहा हे नानक ! जैसा आप उपदेश करते हो। वही सत्य है। हम साधु हैं। सत्य को सत्य ही कहेंगे।

उस समय मर्दाने ने हाथ बांध कर कहा–हे गुरु देव ! क्या अभी आगे जाने का विचार है, अथवा नहीं। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! अभी आगे वहुत से स्थान हैं। तब मर्दाने ने कहा–तब आप आगे भी चलो। गुरू जी ने कहा हां ! अभी चलते हैं, तब मर्दाने ने कहा हे गुरू जी मैं नौं नाथ चुरासी सिद्धादिकों के नाम सुनने की इच्छा रखता हूं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! शीघ्रता न करो। हम तुमारी तमाम इच्छायें पूरण करेंगे, और सभ के नाम बतायेंगे, तब गुरू जी आगे की ओर चले।

॥ साखी प्राणका सिद्ध से ॥

फिर प्राणका नाथ ने अपने आसन से उठ कर यूं कहा–

प्राणका का कथन ॥ कतंच भुगता कतंच जुगना कतंच रहिवो अरोगी। कतंच लच्छन कतंच अव छन पाइवो जोगी। सुणहु नानक प्राण नाथ पूछै देहु जवाव नानक तपा ॥ १ ॥ गुरू नानक देव जी का कथन ॥ नाम भुगता सति जुगता द्रिड़त रहिवो अरोगी। पीआ लच्छन उपदेश लच्छन प्रेम पायवो जोगी। सुणहु प्रान तपा धन्न सतिगुर सु भगता। प्रणवैं नानक तपा लेहु जुवाव सिद्धा ॥ २ ॥ प्राणका का कथन ॥ धन्न हो तपा प्रणवै प्राणपत धन सतगुर सिद्ध गता ॥३॥

इस प्रकार कह कर प्राण का गुरू जी के चर्ण स्पर्ण करने को **आया**

गुरू जी ने उसे शीघ्र ही गले लगा लिया। और परस्पर अभिबादन हुवा। और प्रसन्नता हुई। उस ने कहा-आज हमें निरंजन आदि पुरुष का दर्शण हुवा हैं। हे नानक देव ! जो मंद मति तुम में और परमात्मा में भेद मानता है। सो सच्चे अर्थों में योगी नहीं है। मैं तो आप को परम पुरुष ही जानता और मानता हूँ। आप के ऊपर उस विश्वेश्वर की परम कृपा है। यह कह कर प्राण नाथ अपने आसन पर जा बैठा। मंगल नाथ ने आकर कहा-हे प्राण नाथ ! आप ने नानक देव को कैसे देखा है। तब प्राण ने कहा-हे मंगल जी ! आप ने जैसे कहा था। हम ने नानक को वैसे ही देखा है। अर्थात सच्चिदा नंद ईश्वर और नानक एक ही रूप हैं। हमारे अहो भाग्य जो नानक के प्रिय दर्शणों का सौभाग्य प्राप्त हो गया है। मैंने अपने भाव बता दिये हैं तुमारे भाव तो तुम ही जान सकते हो।

तब मंगल नाथ ने कहा-मेरा भी दृढ़ विश्वास हो गया हैं। कि नानक और निरंकार एक ही हैं। प्राण ने कहा हे मंगल नाथ। आप भी धन्य हो। आप जैसी उतम बुद्धि प्रत्येक की नहीं। यह भी आप के सौभाग्य हैं।

इधर मर्दाने को गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! जिन पर ईश्वर कृपा होती है। वह सत्य के आगे नत मस्तक हो जाते है। और अंडबंड नहीं कहते। यह सचा नाथ हैं। मर्दाने ने कहा-हे महाराज ! अब आप हमें सच्चे नाथों के नाम वतानेकी कृपाकरो। आपने फरमाया था कि हम बतायेंगे।

गुरू नानक देव जी प्रसन्न हो कर कहने लगे हे मर्दाना ! अब तुम ध्यान पूर्वक सुनो-

१ गोरख नाथ २ मछंदर नाथ ३ चरपट नाथ ४ मंगल नाथ ५ घुघु नाथ ६ गोपी नाथ ७ प्रान नाथ ८ सुरत नाथ ६ चंबा नाथ। हे मर्दाना ! यह नौं नाथ कहे जाते हैं, वैसे तो और कहने को अनेकों नाथ कहे जाते हैं, फिर मर्दाने ने कहा-हे महाराज वह जो पट यति कहे जाते हैं वे कौन से हैं ? गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! प्रथम तो गोरख यति है। दूसरे दत

यति है तीसरे हनुवंत यति है चौथे भैरव यति है, पांचवें लछमण यति कहा जाता है, तथा छठे भीषम जी को यति कहा जाता है, यह षट यति संसार में प्रख्यात हैं। नाथों की भांति और भी अनेक यति कहे जाते हैं, परंतु यह षट यति सत्य हैं।

मर्दाने ने कहा हे गुरु देव.! अब मैं चुरासी सिद्धों के नाम भी सुनने की इच्छा रखता हूँ। गुरू जी प्रसन्न होकर चुरासी सिद्धों के नाम कथन करने लगे।

१ भंगर, २ संगर, ३ लंगर, ४ झंगर, ५ ऊरम, ६ धूरम, ७ हनीफा, ८ लहुरीपा, ९ सागर, १० मंघर, ११ राजी रत्न, १२ पूरन नासका, १३ बिथालका, १४ जालका, १५ खिदड़ा, १६ निरता, १७ शुरता, १८ केवल करन, १९ सिमता, २० गगन गल, २१ अमर निध, २२ चतुर वैन, २३ राउ ऐन, २४ मेल कर्म, २५ औगढ़, २६ परबत, २७ ईसर, २८ भरथरी, २९ भूतवे, ३० करनसं, ३१ शंभु, ३२ फलक निध, ३३ अछर दैन, ३४ पिपलका, ३५ सोरमा, ३६ गिर बोध, ३७ सालका, ३८ केसर करन, ३९ गैलसा, ४० अग्निधार, ४१ मुक्तिसर, ४२ चलन नाचतो, ४३ सुर ऐन, ४४ सिध सैन, ४५ गिर वर, ४६ जोत लग्नी, ४७ जोत मग्नि, ४८ विमल जोत, ४९ सीतल जल, ५० अघर घर, ५१ तुलस जोर, ५२ प्रत पान, ५३ अकार निर, ५४ भोल सार, ५५ राम कुआर; ५६ क्रिशन कुआर, ५७ बिशन पति, ५८ संकर जोग, ५९ ब्रहम जोग, ६० मीर हुसैन, ६१ नीर जंबील, ६२ कलंदर नैन, ६३ नलिंद्र नैन, ६४ सुरसती, ६५ गुवरधन, ६६ लाशी, ६७ अकल नाशी, ६८ कलकसगी, ६९ एक संग, ७० केवल करमी, ७१ कर्म नासी, ७२ कुल विवासी, ७३ मूल मंत्री, ७४ जोग वंती, ७५ जोग हरे, ७६ ईसर पुंगी, ७७ आप रूपी, ७८ कले रूप, ७९ रहीम जोगी, ८० खलास मुगली, ८१ किदार जोगी, ८२ संभालका, ८३ जोगी वचित्र, ८४ सारद। यह चौरासी सिद्ध कहे जाते हैं।

तब मर्दाने ने कहा हे महाराज नाथों और सिद्धों को तो आप ने

जीत लिया है परंतु अभी योगी शेष हैं आप ने कहा है कि षट यति हैं, जिनों ने गृहस्थ स्वपन में भी नहीं भोगा, हे महाराज ! मैं ने तो अनेक ऐसे भी सुने हैं जिनों ने स्त्री का मुख तक नहीं देखा । तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ध्यान से सुन । यह षट यति बिलकुल सचे हैं, परंतु दूसरों का वीर्य क्षीण होता रहता है, इस लिये उन की गणनां यति समाज में नहीं हो सकती, तब मर्दाने ने कहा–हे गुरु देव ! जब वे मैथुन नहीं करते तब वीर्य पात का तो प्रश्न नहीं उपजता, तब गुरू जी ने श्लोक उचारण किया ।

श्लोक ॥ नवें सत दसवें यारवें इउं जाल जाला । प्रणवे नानक सुणहु मरदाना पिंड गृहस्ती ताला ॥१॥

तब गुरू नानक जी ने कहा हे मरदाना ! नवमद्वार में बिंदु जाती है। उसे ही यति कहा जाता है जो सभी द्वारों के होश्यार हैं मैथुन नहीं किया तो मुख के रास्ते निकल गई । उसे यति नहीं कैहते । यदि सभी द्वारों को रोके तो उसे यति कहते हैं । हे मर्दाना ! मैं तुझे षट यति कहे हैं । तब मर्दाने ने पूछा हे गुरू देव ! अन्य द्वारों से किस प्रकार जाती है ? गुरू जी ने कहा– मुख से अप शब्द बोलते हैं । तब मुखद्वार से जाती । यदि कोई मनोहर सूरत देखते हैं तो आंख मार्ग से जाती है । यदि कर्ण के मार्ग से कोई विषय भोग की बात सुनी तो श्रोत्र मार्ग से जाती हैं । यदि घ्राण मार्ग से कोई विषय वासना रूपी सुगंधी भीतर गई तो वह घ्राण मार्ग द्वारा जाती है । और यदि कोई मनहर मूर्ति जाग्रत अवस्था में देखी । तब मूत्रेंद्रिय द्वारा स्वप्न में निकल जाती है । हे मर्दाना हम ने जो षट यति कहे हैं । उन की किसी मार्ग द्वारा भी बिंदु नहीं जाती । यह विशुद्ध यति हैं ।

तव मर्दाने ने कहा–हे महाराज अब आगे चलना ही चाहीये । तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! शीघ्रता मत करो । तव गोरख नाथादिक ने कहा हे नानक देव ! अदिक देशाटन से क्या लाभ है ? आप यदि इसी स्थान पर निवास करें तो अच्छा है । तव गुरू जी ने एक शब्द उच्चारण किया । जिसे गोरखादिक ने अत्यंत ध्यान पूर्वक सुना–

राग आसा महला १ ॥

एक जंजाल हमारा कहीए साधु सूरत को परसणि । लाख चौरासी हमते छूटी एक सतिगुर के दरसनि । सुन सिधो भाई मेरे । सति गुर मिल तां होइ निबेरे ॥ १ ॥रहाउ॥ आसण बैसण हम तै छूटै छूटै करम निजारा । सगले बंधन पग ते काटे पाये मोख दुवारा ॥ २ ॥ एकंकार पर नदरि हमारी दूजा चित न धारो । दस अवतार अवर सभ देवते वार वार कर डारो ।प्रेम प्रीत के भोजन मेरे सहिज रंग महि खेलो । प्रणवे नानक सुणहु सिद्धों नाथ शिव शक्ति इव मेलो ।

तव मंगल नाथ ने गुरू जी की वहुत स्तुति की । फिर मैं (वाला) और मर्दाना गुरू जी के साथ सुमेर से अंतर ध्यान हुवे ।

॥ ब्यार परवत की साखी ॥

फिर हम ब्यार पर्वत पर जा जहुंचे जहां दत्ता त्रेय जो प्रख्यात सन्यासी है, वह वहां लंबा पड़ा देखा । तव मर्दाने ने कहा—हे महाराज ! हम अव कितनी दूरी पर पहुँचे हैं ? गुरू जी ने कहा—अव हम सुमेर से साढ़े सात सहस्र योजन पर आ गये हैं । मर्दाने ने कहा यहां पर भी कोई प्रख्यात पुरुष है । तव गुरू जी ने कहा यहां एक सन्यासी रहता है । जिसे वहुत से साधु पूज्य मानते हैं । उस का नाम दत्ता त्रेय है । वह जो ऊंचे परवत हैं उन पर उसका स्थान है । हम उसे भी ज़रूर मिलेंगे फिर गुरू जी दत्ता त्रेय के आश्रम में वहुंचे । दत्ता त्रेय अवधूत को सोये हुवे पाया । मर्दाने ने कहा । अव इस से वात चीत करनी उचित है । तव गुरू जी ने कहा—हे मर्दाना तेरा कथन मानेंगे ।

श्री गुरू नानक देव जी का कथन ॥ होंदी देह वोले क्यों नाहीं । समझ देख अपने मन माहीं । जव लग देही तव लग आशा । क्यों न होय पूरन सन्यासा । खोल द्रिष्टि चित राखो ठाय । एक नारायण सभ घट माहि । विणवै नानक दत्तात्रेउ । मूरत सभै निरंजन देउ ॥१॥ दत्तात्रेउ का

कथन ॥ कोई नाही पर जोन घट ही माही । बोलन का जो होय सुभाए । कायां हमारी मैल न लागी । बोल बचन सों रहै त्यागी । हल चल कदी न व्यापे सोइ । पूरण कृपा चिति वसिआ सोइ । रोम रोम नारायण जपता । काह कौ रसना कौ बकता । दता कहे सुण नानक तपा । आप छोड होइ रहो अजपा ॥२॥

यह सुन कर श्री गुरू नानक देव जी महाराज कहने लगे ।

श्री गुरू जी का कथन ॥ अजपा कहीऐ सोई जप दीसै । क्यों न जपीऐ पूरन जगदीसै । जप करते अजपा हो जावे । तब काया निरमल होइ जावै । बिनसै कायां तब एक न ध्याया । जब लग कायां तब लग ध्यानी । नानक बोले सची बानी । सुण दतात्रेय भगवान प्रानी । श्री दतात्रेय का कथन ॥ जाप जपे द्रिष्ट न आवै । देखि अद्रिष्ट प्रभि जाप भुलावै । कायां थाकी रसना थाकी । आप नारायण होया साखी । ना किछु जपना ना किछु तपना । दत कहै सभ एको थपना । दत कहै सुन नानक तपा । काहू तूं जाप काहूं ना जापा । श्री गुरू नानक देव जी का कथन ॥ जपता जाप एकंकारा । सभ मूरति ते रहित न्यारा । नानक बोले सत्र की बाणी । सुण स्वामी तूं सच समाणी । श्री दतात्रेउ जी का कथन ॥ सुण तपा निरंकार तैं देखया है । स्वामी पूछै चिन्ह बताओ । झूठ न बोलो परतख दिखाओ । विन देखे क्या साखी होवहु । झूठ बोल के जनम न खोवहु । गुरू जी का कथन ॥ झूठ न बोलों तत विरोलों हाजर चिन्ह दिखावऊं । जोगी और सन्यासी भरमै तिन को धुर पहुंचा वहुँ । वेद शास्त्र कर देवता भूले तिन को नहीं ठाहिरा वहुं । एक निरंजन मूरति आछी ताको परसपरस गुण गावउं । श्री दत्ता त्रेय का कथन ॥ स्वामी बोले तत विरोलै क्यों झूठी बातें करता । मुख से वचन उचारो ओही जो तुमरे में शकता । ओही बातां कहीये मुख ते जाऊ निरंजन भावै इन वचनों किछ पाइये नाहीं काहे सत गवावै ॥ ८ ॥ श्री गुरू नानक जी का कथन ॥ सत हमारा कदी न जावै हम बोले झूठ न राई एक निरंजन संग हमारे अठे पहिर रहाई । रोम रोम

ओही बोलै दूजा अवर न कोई। ऐसे दरशन कारण स्वामी भरम रहो सभ लोई। सो दरशन हम गुरू दिखाया मीन न रहिया मेखा। दस अवतार किसी नाही देखिआ सो हुण प्रतख दीखिआ। श्री दत्ता त्रेय जी का कथन॥ बातैं पर परतीत न आवै जो परतख दीखै। ऐसी बात न सुनियें आगै षट दर्शण को भेखै। तू तो बात सुनावें अचरज आतम नाहि पतीजै। स्वामी कहे सुन नानक तपा झूठ सुणे क्यों कोई रीझै॥ १०॥ गुरू नानक देव जी का कथन॥ रीझोगे जब नैनी देखो तुमरा चित कठोरै। जटा वधाई देही गाली जैसे पाहन कोरै॥ कंबल खुंब चढ़ावै भावें उजल होय न जावे। नारी दस छेअ करे सिंगारा कंतन कबहु रावै। दत्ता त्रेय जी का कथन। चल हो तपा निरंजन कैसा जो तुम कहत हो देखिआ। शासत वेद पुरान पुकार हि जिहि बिधि कबहु न लेखिआ। अचरज बात सुनाई तुम हूं हम तो भरमत भटका। हल चल उपजी ठहर न पावें चित हमारा अटका॥१२॥ श्री गुरू नानक जी का कथन॥ मूरति लाल सबज़ है कायां जैसे रोम सवरना। हीरा मोती चरन दिखाईयै चंद सूरज दो नैना। दांत जड़ाऊं बने जवाहर भवां सुल शकर झलकै। नक दीसत खंडे की धारा जैसे दामन चमकै। चल कर वेखो तुमें दिखाऊं तब तूं माने स्वामी। निरंजन के नानक सदा हजूरी आठो पहर सलामी॥ १३॥ श्री दता त्रैय जी का कथन॥ देखी शकत तुमारी नानक जो बोलें सो साची। अब परतीत भई है हम को हिरदे अंतर नाची। धन्न सो गुरू तुमारा कहीए जिन तुम को देख दिखाया। ऐसा आगे और न साधु जो नानक तपा बनाया॥ १४॥ श्री गुरू नानक देव जी का कथन॥ षट दरशण सभ पंथहु देखो भेख तुमारा ऊचा। जात वरण सब सेवक तुमरे संग न कोई पहुंचा। रिध सिध सभ पीछे डाली एकै किया अधारा। नानक कहे सुण दता स्वामी सचा भेष तुमारा।

इसके पश्चात गुरू जी और दतात्रेय जी ने परस्पर अभिवादन किया, तब वाला (मैं) और मर्दाना मुसकराने लगे, मर्दाने ने कहा–हे बाला!

हमारे गुरू जी के आगे कोई भी ठहर नहीं सका। बाले ने कहा हे मर्दाना हमारे गुरू जी सभ से ऊपर हैं। और इन की अपार महिमा हैं। और हमारे गुरू जी धन्य हैं।

जब गुरू अंगद देव जी ने पूर्वोक्त प्रसंग सुना तो आनंद में लीन हो गये, साढ़े तीन प्रहर विदेह ही रहे। जब नेत्र खुले। तब कहने लगे अब आगे सुनाओ।

॥ काग भुशुंडि की साखी ॥

अब गुरू जी काग भुशुंडि के आश्रम में गये । जहां अनेकों रिषि पत्तीयों के रूप में काग भुशुंडी जी से कथा सुन रहे थे। जब कथा समाप्त हुई, तो समस्त रिषि अपने२ आश्रमों को गये । तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना तुम इस समय कुछ कीर्तन का समय बांधो। काग भुशुंडी ने जब कीर्तन की आवाज़ सुनी तब कहने लगा, यह कीरतन कौन कर रहा हैं ? तथा मर्दाने को देख कर उस ने प्रश्न किया कि तुम किस का कीर्तन करते हो, तब मर्दाने ने उतर दिया कि यह सभी कीर्तन गुरू नानक देव जी के कहे हुवे हैं। तब भुशुंडि ने कहा–क्या वही नानक है, जिस ने कलियुगी जीवों के उद्धार हेतु अवतार धारण किया हैं, तब मर्दाने ने कहा–हे रिषि वर ! यही गुरू नानक देव जी महाराज हैं जो आप के सन्मुख विराज रहे हैं। यह सुन कर भुशुंडि ने बहुत ही प्रसन्न हो कर गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया। तब गुरू जी प्रसन्न हुवे । और कहा हे रिषिवर ! आप उतम श्रोताओं में से हो। क्योंकि आप शब्द के महत्व को जानते हो। तब काग भुशुंडि ने कहा–हे नानक देव ! जो मनुष्य शब्द के तात पर्य को जान जाते हैं वही अमिय रस पान करते हैं। जो संगीत की तान का ग्यान रखते हैं, वह छिलका खाने वाले हैं। तब बाले ने कहा आप परम हंस हो, और महा पुरुष हो। तथा परमेश्वर के प्रेमी हो। आप ने यह काग देह क्यों अपना रखी है। काग भुशुंडि ने कहा हे संत वर ! मैं ने इसी देह की

कृपा से प्रभु दर्शण पाया है तथा इसी लिये मुझे यह देह परम प्रिय है, जब प्रलय होती है तब मैं यही देह धारण करता हूं। यह शक्ति भी मैं ने इसी देह से प्राप्त की है। तथा मेरी मृत्यु मेरी ही इच्छा पर है। मैं जब चाहूँ तभी मरूंगा। यह भी इसी देह की कृपा का फल है। बाले ने कहा कि यह तो इस देह की महिमा आप ने वर्णन की है। मैं पूछता हूँ कि इस देह का कारण क्या है? काग ने कहा–सुनो मैं पूर्व जन्म में ब्राह्मण था, मुझे गुरू ने निगुण उपासना बताई। जब मैं ने सगुण उपासना पूछी तो गुरू ने मुझे कहा तू तो काग की भांति कांय कांय करता है। मैं ने गुरू के चर्णों पर मस्तक रख कर कहा–हे गुरु देव ! आप सत्य वक्ता हैं आप का कथन सत्य होगा। मैं चाहता हूँ कि मेरा शरीर भले ही कव्वे का हो जाय। परंतु ईश्वर नाम से जो प्रेम है वह सदैव बना रहे। तब गुरू जी ने मुझे वर दिया कि–तुम को ईश्वर भक्ति सदैव प्रसन्न रखेगी। और मृत्यु तेरे अपने अधीन होगी। जब तुमारी इच्छा होगी तभी मरोगे। फिर मैं ने काग देह प्राप्त की। और राम नाम महा मंत्र को जपना मेरा कृत्य चला आ रहा हैं। राम नाम महा मंत्र का रस पान करता चला आ रहा हूँ। मेरे जीवन में अनेक बार महा प्रलय हो चुकी हैं। यदि जल की प्रलय होती है तब जल हो जाता हूँ। अग्नि से अग्नि बनता हूँ। जैसे प्रलय होती है। वैसा बनता हूँ। मुझे स्वासों का संयम प्राप्त है।

यह सुन कर गुरू नानक देव ने कहा–कि रोम रिषी और आप को चिरंजीव पन मिला हुवा है। तुम को राम नाम का स्मर्ण प्राप्त है। इस लिये जन्म मरण से छूट चुके हो और आप का कथन बिलकुल सत्य है।

इस के पश्चात् गुरू जी हम दोनों को साथ लेकर आगे चले। फिर अलला चीन परवत पर गये। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! यह अलला चीन परवत हैं। इस पर अलला नाम पच्छी बहुत होता है। और यहां पर प्रल्हाद भक्त का राज्य है। मर्दाने ने कहा–कि क्या प्रल्हाद भक्त का हमें

पर गिर पड़ा और कहने लगा–हे गुरू देव ! मैं भूल गया हूँ। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना जो पूरण पुरुष होते हैं। वह सभी संशय दूर कर देते हैं। फिर प्रहलाद ने कहाकि गुरू नानक पूरण हैं,और जहां पूरण पुरुष जाते हैं उस धरती के भाग्य महान हो जाते हैं। तथा वे महा पुरुष अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते, तब सभी लोग बहुत ही प्रसन्न हुवे।

॥ एक और पहाड़ की साखी ॥

बाले ने कहा वहां से हम गुरू जी के साथ ही अंतर ध्यान होकर एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहां महान जंगल और पहाड़ था। मर्दाने ने पूछा हे गुरू वर ! हम कितनी दूरी पर हैं। तब गुरू जी ने फरमाया। हे मर्दाना ! हम लोग पृथवी से सत्रह लच्छ योजन की दूरी पर आ गये हैं। मर्दाने ने फिर कहा कि अब आगे भी चलने का विचार है। तब गुरू जी ने कहा। हां ! आगे भी चलेंगे। इस से आगे ध्रुव का मंडल। तब मर्दाने ने कहा–हे गुरू जी ! तो अब चलना उचित है। फिर हम अंतर ध्यान हो गये। तथा कैलाश पर जा पहुंचे। मर्दाने ने देखा तो तारे दृष्टी नहीं आते थे। जब मर्दाने ने नीचे देखा तो सभी तारे नीचे देखे। मर्दाने ने चंद सूर्य भी नीचे देख कर कहा हे गुरू वर ! चंद्र सूर्य भी नीचे रह गये हैं। परंतु यहां रोशनी कैसी है ? तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह जो प्रकाश तुम देख रहे हो। यह प्रकाश ध्रुव का है। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! वह ध्रुव किस जगह है। तब गुरू जी ने एक पर्बत की चोटी की ओर उंगली का संकेत कर के कहा ! वह देखो वह ध्रुव का स्थान है। मर्दाने ने कहा–तब तो ध्रुव का दर्शण करना उचित है। तब गुरू जी हमें साथ लेकर ध्रुव के स्थान को चलो।

॥ साखी ध्रुव मंडल की ॥

॥ भाई वाला जी की रसना से ॥

जब हम ध्रुव मंडल में पहुंचे तब ध्रुव जी अपने मंडल में सैर कर

रहे थे। हमें देख कर अचंभे में आ गया। ध्रुव भक्त की पुरी ठीक सचखंड के साहमणे ही थी, और वैकुंठ के निकट ही थी। जब ध्रुव ने गुरु नानक देव जी को देखा तो आ कर प्रणाम किया। और कहा—आज हमारे अहो भाग्य हैं जो आप के दर्शणों का सौभाग्य प्राप्त हुवा है। गुरू जी ने कहा हे भक्त वर शुद्ध सात्विक भाव जो विश्नु में और मुझ में है। वही आप में भी है। क्यों कि आप श्री विश्नु जी के निकट वर्ती हो। तब ध्रुव ने कहा हे महाराज यह स्थान अत्यंत अगम्य है यहां तुमीं आ सकते हो प्रत्येक पुरुष यहां नहीं आ सकता। इस लिये आप ही धन्य हो। यह कह कर नमस्कार किया। गुरू जी ने कहा—हे भगत जी! सतनाम की कृपा से पवन सवार हो कर यहां सुगम ही आ गये हैं। परमात्मा की सहायता है।

फिर गुरू जी महाराज ने मर्दाने को वहां छोड़ दिया, और मुझे (बाले) साथ लेकर अखंड परबत पर गये। पहिले गुरू जी ने प्रहलाद को विश्नु का रूप दिखाया। फिर अपना दिखाया, तब ध्रुव भगत ने कहा हे नानक देव! आप धन्य हो। आप ने कलयुगी जीवों के उद्धार के लिये अवतार धारण किया है, आप की महिमा अनंत अपार है। आप के पवित्र शब्दों का कीर्तन करके कलियुग के जीव सदगति को प्राप्त करेंगे आप धन्य हो।

तब गुरू जी ने कहा हम विश्नु जी के धाम को जायेंगे कलयुग संबंधी वार्ता करके फिर संसार की ओर जाने का विचार है। तब ध्रुव ने कहा हे नानक देव! तुझ में और पारब्रहम में कोई भी भेद नहीं है। मैं पहिले आप को और विश्नु जी को दो रूप जानता था। परंतु मेरे हृदय पटल खुल गये हैं। तथा दोनों को एक ही रूप जानने और मानने लगा हूं। आप धन्य हो। आप षोड़प कला पूरण भगवान हो, आप पर उस प्रमात्मा की अपार कृपा हुई है, आप का गुण गायण करके संसार का उद्धार होगा, हे नानक देव! जहां आप की इच्छा हो वहां जाने में सामर्थ्य हो। तब गुरू जी ध्रुव भगत से विदाई लेकर आगे चले।

॥ सच खंड की साखी ॥

फिर गुरू जी उस स्थान पर पहुँचे जहां महान प्रकाश है, और प्रकाश रूपी सिंहासन पर निरंकार स्वयं बिराज रहे हैं, और देवी देवता अवतार अपने२ हाथ बांधे हुवे आग्या की प्रतीक्षा में खड़े हैं, वह प्रकाश लाखों ही चंद्रमाओं के प्रकाशों से परम सुख दायक शीतल प्रकाश है, तब गुरू जी ने वहां स्तुति की। विश्नु जी की उपस्थिति में वह स्थान परम रम्य हो रहा था, तब भगवान ने प्रेम से कहा आओ नानकदेव! तुम तो सदैव मुझमें मिले हुवे हो, तुम में और मुझ में कोई भी अंतर नहीं हैं। तुम को सत्य नाम के उपदेशार्थ संसार में भेजा है। तब गुरू जी ने कहा-हे सर्वज्ञ! जहां आप की आग्या थी वहां सत्य नाम का प्रकाश मैंनें किया है। और जहां जो आग्या होगी वहां मैं पूरण करूंगा। यह कह कर गुरू जी ने शब्द कहा-

॥ शब्द श्री गुरू नानक देव जी ॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जित बहि सरब संभाले। वाजे नाद अनेक असंखा केते बावण हारे। केते राग परी स्यो कहीयन केते गावन हारे। गावहि तुह नो पौण पाणी बैसंतर गावे राजा धर्मद्वारे। गावहि चित गुप्त लिख जाणहि लिख लिख धर्म विचारे। गावहि ईसर ब्रहमा देवी सोहण सदा सवारे। गावहि इंद इंद्रासण बैठे देवतिआं दरु नाले। गावहि सिद्ध समाधी अंदर गावन साध विचारे। गावहि जती सती संतोषी गावहि वीर करारे। गावन तुद नो पंडित पढ़न रिषीसर जुग २ वेदां नाले। गावहि मोहणीआ मन मोहन सुरगां मछ पिआले। गावनि रतन उपाये तेरे अठ सठ तीरथ नाले। गावहि जोध महावल सूरा गावहि खाणी चारे। गावहि खंड मंडल वरभंडा कर कर रखे धारे। सोई तुद नों गावहि जो तुदु भावनि रते तेरे भगत रसाले होर केते गावन से मै चित न आवन नानक किहा विचारे।सोई सोई सदा सच साहिव साचा साची नाई। हैभी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई। रंगी रंगी भाती कर कर जिन सी माया जिनि उपाई।

कर कर वेखै कीता आपणा जिव तिस की वडिआई। जो तिसु भावै सोई करसी हुकम न करणा जाइ। सो पातिसाहु साहा पाति साहिब नानक रहणु रजाई ॥ २७ ॥

यह शब्द सुण कर निरंकार बहुत ही प्रसन्न हो कर बोले हे नानक! हम ने चार वेद इस से पूर्व ब्रह्मा को दिये हैं। उन की समझ साधारण जीवें को नहीं आती। कलयुग के जीव अल्प बुद्धि हैं। वे वेदों को विचारने में असमर्थ हैं। अब तुम मातृ लोक में जा कर पांचवें वेद का प्रकाश करो, जो सुगम भाषा में होगा। उस से जीवों का कल्याण होगा। तब गुरू जी ने हाथ जोड़ कर कहा हे सर्वशक्तियुत स्वामिन आप की कृपा से सभी कार्य पूर्ण होंगे। फिर भगवान की आग्या लेकर गुरू जी सत्य खंड से बाहर आये।

फिर गुरू जी ध्रुव के स्थान की ओर गये। वहां हम लोगों का फिर मिलाप हुवा। तब मर्दाने ने आ कर गुरू जी के चर्ण कमलों पर नमस्कार की। फिर ध्रुव को मिले। ध्रुव ने पूछा हे नानक देव! कहो आप ने निरंकार का दर्शण कैसे प्राप्त किया! तव गुरू जी ने उपरोक्त दर्शणों की कथा विस्तार पूर्वक कही। और महान स्तुति की। फिर गुरू जी ध्रुव से विदा लेकर चले। मर्दाने ने कहा-हे गुरू जी! हम लोग पृथवी से कितने अंतर पर हैं? तव गुरू जीने कहा-इस समय पृथवी से चालीस लाख योजन ऊंचे हैं। और ध्रुव का स्थान उनतालीस लाख योजन उंचाई पर है। और निरंकार का आसन ध्रुव से एक लाख योजन की दूरी पर है। तव मर्दाने ने पूछा-हे महाराज उस के आगे क्या है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना उस करतार की अपार महिमा है। इस लिये कुछ कहा नहीं जाता। हमें जो उस ने अपने दरशण दिये हैं। यह उस की अपार कृपा है। उस की महिमा परे से परे है। कोई पार नहीं पा सकता इसी लिये उसे अनंत अपार कहा जाता है। अपनी महिमा आप ही जान सकता है। यह मूरख

संसार अवतारों को ही परमेश्वर मान कर रह गया है। अनेकों पुरियें उस मालक ने सृज रखी हैं। तब मैं (बाला) और मर्दाने ने कहा—हे गुरु देव हम भी पुरयों के दर्शण करना चाहते हैं। तब गुरू जी ने कहा—तुम लोक नेत्र वंद करो। जब हम ने नेत्र बंद किये तो अनेकों दिव्य से दिव्य पुरियों के दरशण हुवे। जहां जहां हम लोग पहुँचे वहां पर अनेक समुंद्र पर्वत बन और सृष्टियें एक से एक बड़ कर देखी। अनेकों रवि चंद्रादिक तारा गण प्रकाश करते देखे। जब हम ने अपने नेत्र खोले तो हम गुरू जी के साहमणे ही बैठे हुवे थे। फिर हम ने गुरू जी के चर्णों में प्रणाम किया। और कहा हे सतगुर देव ! आप धन्य हो। जो कुछ भी हम ने देखना था वह आप की कृपा से देख लिया है, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! जिस पर वह ईश्वर कोप करता है, तब उस की बुद्धि मलीन हो जाती है। बुद्धि मलीन होने के लच्छण सुणो, जिस की बुद्धि नाश होती है। वह मूढ़ पुरुष अपने आप को ईश्वर जानने लगता है, तथा कलियुग में अपने को ब्रह्म मानने वाले हिरणाच्छ दैत्य के जैसे अनेकों पैदा हो जायेंगे, और जिस पर परमात्मा की कृपा होती है, वह अपने आप को उस परमात्मा का दास मानता हुवा, उसी के ध्यान में निमग्न रहता है। संसार में क्रोधी पुरुष बहुत हैं, कामी और अहंकारी भी अनेक हैं, हे वाला—तथा मर्दाना ! जिस के पास कुछ द्रव्य हो जाता है। और चार भुजा उस की सहायक वन जाती हैं। तो वह पुरुष अपने को वड़ा मानता है,और ईश्वर को भूल कर मन मानी करता है। वह यह नहीं जानता कि यह सव कुछ उसी की देन है, जब चाहे वह सर्व शक्तिमान छीन भी सकता है। माया ने जीव की वुद्धि फेर रखी है। मर्दाने ने कहा ! हे गुरू देव ! जो कुछ भी आप की पवित्र रसना से निकलता है वह पूर्णतया सत्य है। इस में कोई भी संदेह नहीं है, तब मर्दाने ने कहा—अब हम कौन से पहाड़ पर हैं, फिर गुरू जी ने फरमाया कि इस समय हम कलका नाम के पर्वत पर हैं, फिर गुरू जी के साथ हम लोक तिह वंदर सूरत बंदर

चपटा बंदर और नकठा बंदर वहां से मछली बंदर और लाहड़ी बंदर के रास्ते नीचे की ओर चलते गये।

॥ साखी सीला परबत की ॥

इस के पश्चात हम लोग गुरू जी के साथ सीला पर्वत पर आ गये, मर्दाने ने पूछा यह पर्वत धरती से कितना ऊंचा है? तब गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना हम लोग ११ लाख योजन पर आ गये हैं, मैं ने पूछा हे गुरु देव! जहां पर निरंकार का सिंहासन है उस पहाड़ का नाम क्या है? गुरू जी ने कहा हे बाला उस परवत का नाम निर्विकार है। मर्दाने ने कहा हे गुरु देव! क्या इस सीला परवत पर भी कोई महा पुरुष है अथवा नहीं, गुरू जी ने फरमाया कि इस स्थान पर कोई भी महा पुरुष नहीं है। तव मर्दाने ने कहा हमें भूख लग रही है। गुरू जी ने संकेत करके कहा कि वह जो साहमणे पहाड़ नज़र आता है उस पर फल पके हुवे हैं वहां जाकर खा लो। और कुछ तोड़ कर भी ले आने। मर्दाना वहां जा पहुंचा और फल खाने लगा, स्वादु फल थे। मर्दाना वहुत ज्यादा खा गया। पेट भर गया तो कुछ फल गुरू जी के आगे आ कर धरे। गुरू जी ने मुझे (बाले को) कहा खाओ। हम ने कहा कि आप भी खाओ, गुरू जी ने मर्दाने को कहा कि और ले लो। मर्दाने ने कहा-मेरा तो पेट भरा हुवा है, फिर कहा-हे गुरू देव! यह अमृत फल व्यर्थ ही जाते होंगे। क्यों कि यहां कोई खाने वाला नहीं गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना यदि भोगने वाला न हो तो वहां भोग उपलब्ध नहीं होते। मर्दाने ने कहा हे गुरू जी यहां हमें तो कोई जीव नज़र नहीं आता, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! एक गुप्त सृष्टी ईश्वर ने रच रखी है, यह फल उसी गुप्त सृष्टी के लिये लगा रखे हैं, उन गुप्त महा पुरुषों में और निरंकार में अभेदता मानी जाती है, तव मर्दाने ने कहा हे महाराज! यदि हम यहां ही निवास करें तो क्या हरज है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना तुम फलों के स्वाद पर अनुराग रखते हो। मर्दाने ने कहा,

हे गुरू जी वहां जाकर भी निवास करना है, और यहां भी निवास ही करना है। इस लिये यहां ही ठहरना श्रेयस्कर है, परंतु गुरू जी की आग्या से हम सब लौटने को तैयार हुवे।

॥ अहार गिरि की साखी ॥

वहां से गुरू जी के साथ ही हम अहार पर्वत पर आ गये। पूछने पर गुरू जी ने बताया इस स्थान का नाम अहार पर्वत है और पृथवी से नौं लाख योजन पर है तब मर्दाने ने कहा हे महाराज आप कैहते थे कि यहां पर साधु हैं वह कहां हैं ? तब गुरू जी ने कहा कि वह साधु यहां ही हैं। तब एक साधु कुटिया से बाहर आया। उस साधु ने कहा आप कौन हो ? गुरु जी ने कहा–मेरा नाम निरंकार है। तब साधु ने कहा–क्यों तेरा नाम नानक निरंकारी है ? तब उस को गुरु जी ने कहा–कि तुम हमें किस प्रकार जानते हो ? उस साधु ने कहा कि मेरे गुरु ने मुझे बताया हुवा है। गुरु जी ने कहा–तेरा और तेरे गुरु का क्या परिचय है। उसने कहा मेरे गुरु का नाम शील सैन है। और मेरा नाम कल्याण है। मुझे गुरु ने एक दिन कहा था, कि नानक निरंकारी ने अवतार लिया है। त्रेता में यही राम था उस के पास हम रहते थे। गुरु जी ने कहा हम आप के गुरु जी को देखना चाहते हैं तव वह साधु अपने गुरु के निकट जा कर कहने लगा–महाराज ! तीन साधु वाहर ठहरे हैं। वे आप से मिलना चाहते हैं। उस ने कहा– हे कल्यान ! उस से पूछो कि तुम मुझे कब से जानते हो ! गुरु जी ने कहा-त्रेता में तुम मेरे निकट रहते थे। मैं तुम को जानता हूँ। कल्यान के गुरु ने सुन कर कहा–हे कल्यान उस से पूछो के त्रेता में तुम कौन थे ! गुरू जी ने कल्याण को उतर में कहा कि मेरा नाम त्रेता में राजा राम था, फिर गुरू जी ने कुछ विस्तार से भी कहा–फिर कल्याण ने अपने गुरू की आग्या से आकर कहा–कि आप को मेरे गुरू देव बुला रहे हैं, भीतर चल कर दरशण दो। गुरू जी हमें सांथ लेकर साधु के पास गये,

जा कर गुरू जी ने सत्य कर्तार की ध्वनी की, शील सैन ने हमारा स्वागत किया। हम वहीं बैठ गये, तब शील सैन ने कहा–

शील सैन का कथन ॥ कौण गुरू कौण मंत्र। कौण विद्या कौण जंत्र। कौण कला ले यहां आये। कौण नाम तुम किने मंगाये। शील सैण पूछै सुण रे भाई। बोलै बचन देहु समुझाई ॥१॥ गुरू नानक देव का कथन ॥ गुरू कर्तार मंत्र द्रिढ़ाई। विद्या दीनी आप सहाई। सच्च कला ले यहां आये। अमर अजोनी पकड़ मंगाये। बोले नानक सील सैण भाई। राम त्रेते तुम समझाई ॥२॥ शील सैण का कथन ॥ राजा राम त्रेते युग हूवा। कलियुग में नानक गुरू थीआ। बीते युग जीता है औरा। तब तू रहता का की ठौरा। दस नाम तू अपणा जोहू। शील सैण पूजे तब तोहू ॥३॥ श्री गुरू नानक देव जी का कथन ॥ सतियुग अंदर नाम हमारा। मिहरबान रखिआ करतारा। त्रेते राम चंद्र अवि होता द्वापुर हरी चंद कहाता। कलयुग नानक कहत सील सैण कहु तोहू। अपना नाम वताया मोहू। अगले जुगां दी खवर तुमें नाहीं। नहीं तां सभ तुम को देत वताईं।

यह सुन कर शील सैन ने गुरू जी की प्रदच्छिणा की, और गुरू चर्णों पर दंड वत प्रणाम किया, धन्य हो राजा राम परदुःख निवारण हारे भवजल से तारण हारे हो, फिर कल्याण को शील सैण ने भोजन तैयार करने की आग्या दी। भोजन तैयारी के पश्चात कल्याण ने कहा–हे महाराज! भोजन तैयार है, गुरू जी ने वाले और मर्दाने को भोजन पाने की आग्या दी, शील सैन ने गुरू जी के आगे प्रार्थना की, कि आप भी पधारीये। तव गुरू जी ने आगे लिखा शब्द उच्चारण किया–

श्री गुरू जी का कथन ॥ शील संयम की भुगत हम खाई वहुत भूख नाहिं लागै। हम माते हैं राम रसायण आठ पहिर धुन राते।

यह सुण कर शील सैण ने कहा–हे नानक! तुम को तो प्रभु की ही भूख रहती है। परंतु हमारा कल्यान कैसे होगा? तव हम तीनों ने प्रसाद पाया। तव शील सैण वहुत प्रसन्न हो गया। शील सैण ने कहा–आज

प्रत्यक्ष राम को देखा है गुरू जी पांच रोज वहीं रहे।

कवि का कथन ॥ उहां से बणें गुरू अंतर धारी । शील परबत से करी उतारी। पूछे बाला अपने गुरू कऊ। कितने योजन आये तहां सो।

तब बाले ने पूछा शील परबत से शीला पर्वत कितना ऊंचा है ? गुरू जी ने कहा-एक लक्ष योजन ऊंचाई पर है। फिर हम घिरण परबत पर आ गये। गुरु जी ने कहा-इस का नाम घिरण पर्वत है मर्दाने ने कहा-हे गुरु वर ! क्या यहां भी कोई महा पुरुष है ? गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना यहां भी एक महापुरुष है। मर्दाने ने उस के दर्शण की लालसा भी प्रकट की ।

उस परबत पर एक तालाब था। गुरू जी वहां स्नान करने गये । तो वह रिषि वहां ही आ गया। आते ही कहने लगा-

रिषि का कथन ॥ इश्नान मधे कते गतं। स्वांग भगत गुणी गुणावे। कुमेर सुमेर परबत मीनस पर्बत रंगते।

रिपि ने कहा हे भाई ! इस तालाब में तू स्नान किस लिये करता है ? तू यहां इस प्रकार बैठ गया है जैसे कुमेर रिषीश्वर सुमेर परबत पर बैठा है। और कभी हलचल को प्राप्त नहीं हुवा। तब गुरू जी ने उतर में इस प्रकार कहा-

गुरू जी का उतर ॥ इस्नान एकं कारं। सुआग सति गुरु भंडारं । कुमेर चित ठहिरं। मीन नानक गोबिंद जल तरंगं ॥ २ ॥

उस रिपीश्वर ने पूछा-अरे साधु तुम ने जा कुछ कहा है वह हमारी समझ में नहीं आया । गुरु जी ने अपने शब्दों का परमार्थिक अर्थ इस प्रकार कहा-

स्नान एकंकार के दरशण का किआ। सुआग सतिगुरुओं के भंडार से लिया। कुमेर जैसा चित ठहिराया है। गोबिंद नाम का जल और नानक मीन तरंग करता है। यदि वह भूल जाय तो प्राण कंठगत हो जाते हैं ।

यह सुण कर रिषी ने कहा–कि क्या कलियुग में नानक निरंकारी तुम हो ? क्या त्रेता युग में राजा राम चंद्र तुम ही थे, गुरू जी ने कहा–हां, मैं ही नानक हूं। और त्रेता में मैं ही राम राजा था, हे रिषि तुम अपना नाम तो वताओ। उस ने कहा–मेरा नाम सुख चैन रिषी है, तव गुरू जी ने मुसकरा कर कहा–हे रिषी ! तुम वही हो जो राजा जनक की शैया विछाने की सेवा में थे। यह सुण कर वे रिषी गुरू जी के चर्णों पर गिर गया, और कहने लगा कि हमारे अहो भाग्य हैं, जो आप के दर्शण हुवे हैं, फिर गुरू जी वहां से विदा हुवे।

अव उल्का पहाड़ पर आ पहुंचे, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! इस परवत का नाम उल्का है, इस के आगे घुराट वंदर आयेगा, फिर मछली वंदर आना है, उस के आगे भारत खंड में पहुंच जायेंगे, हे मर्दाना एक ऐसा खंड है जिस का नाम अभंजनी खंड है। वहां रात्री में सभी पुरुष स्त्रियें वन जाती हैं, जब मैं और मर्दाने ने नेत्र खोले तो हम अभंजनी खंड में आ गये थे, वहां का राजा और अनेक नर नारी गुरू जी के दरशणों को आये, राजा ने गुरू जी को भोजन का निमंत्रण दिया। तव गुरू जी ने मुझे आग्या दी कि हे वाला ! तू शेर वन जा। मैं तुरत मृग राज वना गुरूजीने राजा से कहा–आप ने पहिले मेरे शिष के लिये आहार देना होगा, और वह आहार तुमारे पुत्र का करेगा। उस राजा ने पचास राणीयें विवाही थीं। परंतु एक ही पुत्र हुवा था, राजा ने गुरू जी की आग्या शिरोधार्य करके अपने पुत्र को शेर के आगे डाल दिया, गुरू जी ने कहा–हे राजन ! तुमारे मन में ग्लानी है। उस राजा ने कहा–हे महाराज ! ग्लानी तो आप जैसे महात्माओं के दरशण से दूर हो गई है, परंतु मन में एक विचार अवश्य है कि महात्मा पुरुष तो सभ को सुख देते हैं, परंतु मेरी प्रारब्ध में दुःख क्यों लिखा गया। वस यही विचार मुझे सत्य मार्ग से तथा धैर्य से दूर लेता जा रहा है। इतनी सुन कर गुरू जी प्रसन्न हो कर राज पुत्र को गले लगा कर अपना सेवक नियत कर लिया। तथा वहां एक **धर्म** शाला

वनवाई। तथा जनता को एकंकार का महा मंत्र सिखाया। फिर गुरू जी उस से आगे की ओर रवाना हुवे।

॥ केसी खंड ॥

अब गुरू जी केसी खंड में पहुँचे। केसी खंड का राजा और प्रजा सतगुर नानक देव जी के चर्णों का स्पर्श करने को आ गये, राणी ने प्रार्थना की-हे गुरू जी! मेरे घर में संतान नहीं। आप कृपा करो, और मेरा स्वामी मेरे वश में रहे। गुरू जी ने कहा-महात्माओं की सेवा करो। मीठा बोलो, नम्रता ग्रहण करो, सुख दुःख को ईश्वरीय इच्छा मान कर सहन करो। फिर गुरू जी ने दो लौंग और एक इलायची प्रसाद रूप प्रदान की। और वर दिया हे रानी! तेरे गृह में दो पुत्र और एक पुत्री होगी। सदैव परमात्मा का स्मर्ण करना उतम है। गुरु जी को राजा ने कुछ काल वहीं विश्राम के लिये प्रार्थना की। गुरु जी ने राजा को सत्य उपदेश से कृत कृत्य किया। फिर आगे की ओर रवाना हुवे।

कुरू खंड में गुरू जी ॥ वहां से गुरू जी कुरू खंड में जा पहुंचे। वहां यह रीति थी कि जब कोई बालक जन्म लेता था। तो लोग रोने लग जाते थे। और यदि कोई मर जाय तो बहुत खुशी मनाते थे। और हंसते थे। गुरू जी ने कहा-कि यह लोग अग्यानी हैं। क्यों कि जिसे परमात्मा बुला लेता है। तो यह खुशी होते हैं। तथा यदि किसी को भेजता है। तो यह लोग शोक करते हैं। यह अग्यान है। और ग्यान यह है कि जो कुछ भी हो जाय वह उस की इच्छा जान कर धैर्य में रहे। हम ने उन को पूछा कि यह तुमारी क्या रीति है। उनों ने उतर दिया कि जब जीव जन्म लेता है। तो वह परमातमा से विछुड़ता है। इस लिये हम बुरा मानते हैं। और जब मरता तो वह परमातमा से मिल जाता है। इस लिये हम प्रसन्न होते हैं। मर्दाने ने कहा-हे भाई! यह तो ईश्वर इच्छा है। तथा जीव का जन्म और मरण तो कर्मानुसार होता है। इस में तुमारी रीति केवल मानी

ही है। यह जीव का जो आना गमन है। यह कर्म के अनुसार है। जो जो ईश्वर के साथ जा मिलते हैं वे कभी भी योनिओं में नहीं भटकते। तब लोगों को ग्यान हुवा। उनों ने गुरू जी से प्रार्थना की कि आप हमें अपनी सेवा में लें। तो हमारा कल्याण होगा। गुरू जी ने कहा-हे सजनों! परमात्मा ने आपनी अपार कृपा से संसारी जीवों को अनेक प्रकार के सुख साधन प्रदान किये हैं। उसे स्मर्ण करना। तथा उस के अन्य जीवों पर दया करनी मुख्य धर्म है। उस के कृतज्ञ रहो। उस परमात्मा से विमुख होना महान पाप है। परमेश्वर तों भुल्लयां व्यापन सभै रोग। यह शरीर कर्मों का एक वृक्ष है। शुभ कर्म करने से जीव का कल्यान होता हैं। फिर गुरू जी ने महान पवित्र उपदेश किया। जिसे सुण कर राजा और प्रजा दोनों ही कृत कृत्य हुवे।

फिर गुरू जी आगे चले, गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! कलियुग के जीवों की आयु सौ बरस होती है। चालीस वर्ष की आयु के पश्चात पुरुष वृद्ध हो जाता है, तुम लोगों की आयु हजारों वर्षों की है। इस में क्या रहस्य है? उनों ने कहा-हम सदैव सत्य बोलते हैं, प्राणों का संयम करते हैं, तभी कलियुग का प्रभाव हम पर लागू नहीं होता। हम लोग सदैव सतसंग करते हैं। गुरू जी ने कहा-मित्रो! सत्य नाम का यप करना परम कल्याण कारक है, इस से तुमारे सभी कार्य संपन्न होंगे। और परलोक भी सुधरेगा। धर्म की आय से निर्वाह करना तथा बांट कर खाना, एवम जो व्यापारादिक में लाभ हो, उस का दशवांश दान में लगाना कड़ाह प्रसाद बांटना यह उत्तम कर्म हैं। इन से लोक परलोक सुधरेगा। सभ से उत्तम ईश्वर की अनन्य भक्ति विद्वानों ने मानी है। यह उपदेश देकर गुरू जी आगे चले।

॥ गुरू जी इलाव्रत खंड को ॥

अब हम लोग गुरू जी के साथ इलाव्रत खंड में पहुंचे उस स्थान पर

कई क्रोड़ सिंह विश्राम कर रहे थे। तब हम लोग डर गये गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना। तू रबाब वजा और कीरतन की ध्वनी कर । यह सभी शेर तुमारे चर्णों पर नमस्कार करेंगे। जब मर्दाने ने रबाब बजाई तो तमाम शेर आ गये, गुरू जी ने उन से पूछा भाई ! आप कौन हो ? उनों ने कहा-हम तामस योनि के पापी हैं, आप के दर्शण से मन को शांति होती है। हमारा निर्वाह जंगली पशु पच्ची खा कर होता है, अब हमें कुछ भी नहीं मिलता। आप हमारा जैसे भी हो कल्याण करो, गुरू जी ने कहा-अब तुम मनुष्य बनोगे, और हमारी सिखी प्राप्त करोगे। तब नाम जपना तुम को हम राज्य करवावेंगे। जब तक तुमारा आपस में प्रेम रहेगा तब तक राजा रहोगे। जहां तुमारा परस्पर मन मुटाव होगा । तब राज्य जाता रहेगा, फिर तुम आपस में लड़ मर कर नर्कों में जाओगे। इस के पश्चात गुरू जी नगर की ओर चले।

गुरू जी को देख कर उस नगर के नर नारी दरशनों को आये। और विस्मित होकर पूछने लगे-आप उन सिंहों से कैसे बचे हो ? मैं ने (बाले ने) कहा-हे मित्रो ! गुरू जी ने उन जंगली खून खार शेरों को अपना लीना है, दो सौ बरस तक सभी उतम गति को प्राप्त होंगे अब यह किसी को दुखी नहीं करेंगे, यह सुन कर नगर का राजा और प्रजा दोनों ही गुरू जी के चर्णों पर गिर पड़े। और कहने लगे हे महाराज ! हम लोगों का भी भला करो। तव गुरू जी ने कहा-भाई ! आप लोग सत्य भाषण करो दान करो सत्य नाम जपो, शब्द पढ़ो किसी के साथ वैर विरोध न करो, देह को अनित्य जानो। तव तुमारा भी कल्याण होगा। इस उपदेश को सुण कर सभी ने गुरू चर्णों का जल पान किया।

॥ अन्य खंडों की यात्रा की साखी ॥

वहां से गुरू जी भद्रा खंड को गये, पीछे हिरन खंड में पधारे। फिर केत खंड की यात्रा की फिर गुरू जी हर वर्ष खंड को चल पड़े। फिर कुसम

दीप को गये, फिर पुश्पक दीप को गये, इन तमाम स्थानों पर अनेकों नर नारीयों को परम पवित्र उपदेश देकर और उन का कल्याण कर के गुरू जी महाराज ! राम सरोवर में जा पहुंचे।

॥ साखी राम सरोवर की ॥

फिर गुरू जी महाराज राम सरोवर में गये, क्या देखा कि समुंद्र अपनी महान लहरें ले रहा है, मर्दाने ने कहा हे महाराज यह खंडरात क्या हैं। और इस स्थान का नाम क्या है, गुरू जी ने कहा-यह रामेश्वर का स्थान है। यहां त्रेता में राजा राम चंद्र ने पुल बांधा था। यहां भी एक साधु निवास करता है, उस का दर्शण करो, वहां एक ठाकुर मंदिर था। गुरू जी उस मंदिर के आगे जा बैठें। तब साधु को पता चला कि बाहर तीन अतिथी बैठे हैं, तब हरि दास साधु अपने साथ कुछ साधु लेकर आया, उस समय गुरू जी फलाहार कर रहे थे। उस साधु ने कहा-यह स्थान श्री राम तीर्थ है। आप चौका लगाये बगैर फलोहार कैसे कर लिया ? इस लिये मैं पूछता हूं। कि बगैर दरशणों के तुम ने यह क्यों किया-इस लिये मैं आप का परिचय चाहता हूँ। गुरू जी ने कहा-हम निरंकार के हैं, उस निरंकार ने हमारे बंधन काट दिये हैं, उस ने कहा-आप ने निरंकार देखा है ? तब गुरू जी ने कहा-क्या आप ने निरंकार का दीदार किया है, हे संत जी ! हमारा गुरू ही निरंकार है। यह कह कर आगे लिखा शब्द उच्चारण किया-

राग आसा महला १ ॥ गुर सेवै से ठाकुर जानै । दुःख मिटे गुरु शब्द पछानै ॥ १ ॥ राम जपहु मेरी सखी सखैनी । सतिगुर सेव वेखो प्रभु नैनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पित संसार । बंधन सुत कन्या और नार ॥ २ ॥ बंधन कर्म धरम हो कीआ । बंधन पुत्र कलित मन थीआ ॥ ३ ॥ बंधन कृषी करहि किरसाण । हो मैं डंन सहै राजा मंगे दान ॥ ४ ॥ बंधन सौधा अनंत अचारी । त्रिपत नहीं माया मोह पसारी ॥ ५ ॥ बंधन शाह

संचहि धनि जाय। बिनु गुरु भगति न पवई थाय ॥ ६ ॥ बंधन बेद बाद अहंकार। बंधनि बिनसै मोह बिकार ॥ ७ ॥ नानक राम नाम सरणाई। सतिगुर राखै बंध न पाई ॥ ८ ॥

गुरू जी ने कहा-हम ने राम नाम की शरण ली है। उसी ने हमारे सभी बंधन काटे हैं। तब साधु हरिदास ने गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार की। और कहा तुम पर उस परमात्मा की पूरण कृपा है। तुम यहीं विश्राम करो। जिस से हमारा भी कल्याण हो। तब गुरू जी रामेश्वर ठाकुर मंदिर में जा कर खड़े हो गये। उस साधु ने कहा हम तो एक राम नाम ही जानते हैं। आप कोई ऐसा नाम बतायें जिस से हम लोग मुक्त हो सकें। तब गुरू जी ने सहंस्र नामा उच्चारण किया।

राग मारू महला १ ॥ पौड़ी ॥ अच्युत परमेश्वर नामा। दीन दयाल दमोदर रामा। आदि जुगादि जुगो जुग सोई। अविनाशी अलख विधाता है ॥ १ ॥ आदि जुगादि जुगी जग सोई। जिन सिरजी तिनहि पुनि होई। छती जुग गबारे वरते। तिस कीमत कौन करंता है ॥ २ ॥ छती जुग गबारे वरते। पारब्रहम अविनासी करते। कुदरत कादर हाज़र नाज़र निहचल आय न जाता है ॥ ३ ॥ सचा तख़त दुलीचा साचा। जो उपजे सो काचो काचा। आवण जावण चौपड़ खेल कर देखे चोज विधाता है ॥ ४ ॥ गगनि उतपति ते पवन उपंना। पवन उतपत्त जल बिंब ते तिरंना। जल बिंद ते त्रिभुवन साजे घटि घटि जोत समाता है ॥ ५ ॥ करणा मय अविनाशी सोई। सरब जीआं घट जोति समोई। सरब घटा प्रति पालक संथा है हरि पूरन उदर भरंता है ॥ ६ ॥ अगम अगाध अतोल बिअंता। ऊंचे ते ऊंचा भगवंता। अंत नहीं कुछ पारा वारा बेशुमार अपंत है ॥७॥ लाल गुलाल रंग अति गूहड़ा। दीपक धूप पुरुष अति पूरा अचरज रूप हुँ धूप अनूपां कोट ब्रहमंड खंड का दाता है ॥ ८ ॥ आदि जुगादि जगत सुख दाई। जुगह जुगंतर पैज रचाई। एकंकार एक ही एका आपे आप उपाता है ॥ ९ ॥ गहिर गंभीर दयाल अनंदे। हरि मेहर करे हरि बख

संदे। अनद रूप अनहद धुनि कारा जन नानक जस गवंता है॥ १० ॥ आदि निरंजन प्रभ निरंकारा। निरा हार निरवैर निआरा। अकाल मूरत अजूनी सैभंवरन चिहन चिहन न पछाता है ॥११॥ असचरज रूप विसमन विसमादा। भगति वछल हरि आदि जुगादा। आदि जुगादी हैं भी होसी पारब्रहम विअंत वेअंता है॥ १२ ॥ दीना नाथ दरद दुख भंजन। पतित उधारन पाप निखंजन। मोख परायण मुकति मुकतीसर तेरे नाम अनेक अनंता है ॥१३॥ सहंसर नाम सर मूल वंदेजा। आदि जुगादि ग्यान कथ लेजा। सहंसर नामि सति हरि जपीऐ गुर पूरे ते जाता है॥ १४ ॥ आदि जुगादि निहचल धरमा। निहचल सच सहंसर नामा। सहंसर नाम गुरमुख परगासे सुण सुण जस बिगसंता है॥ १५ ॥ गहिर गंभीर गहीर गुलाला ॥ मोहन माथे कृष्ण दयाला। राम चंद बनिओं बनवारी अनहद वैन वजंता है॥ १६ ॥ मोहन सुंदर कृष्ण मुरारी। राधे पति राजा बनवारी। राजा राम कृष्ण हरि कहीऐ पारब्रहम हरि भंता है ॥ १७ ॥ निरभौ निरवैर नारायण। अंत कारण प्रभु पंजायण। अगम अकाल पुरुष सच सचो तखत वहंता है॥१८॥अगम अगाध वेअंत अतोला। ग्यान पदारथ रतन अमोला। अगम अथाह वेअंत स्वामी भगत वछल वरतंता ॥ १९ ॥ अपर अपार अगाह अत गूढ़ा। अगम अथाह गुर सबदी रूड़ा। आदि जुगादि जुगो जुग सोई नानक जन विनवंता है॥ २० ॥ ऊद सूच सद ऊचो थाना। पारब्रहम साचा दीवाना। संत उधारण मुकत सधारण करि करि चोज खिलंता है ॥ २१ ॥ सच सालाही गहिर गंभीरा। अनद विनोदी गुरसुखि मन धीरा। आदि अनंत अपरंपर पूरा सच सची मणी सुहंता है॥ २२ ॥ जुग चारे है साची वाणी॥ गुर सेवहु जा अंतर यामी। विन साचे जम किंकर मारे वहु जोनी भ्रम गलंता है॥ २३ ॥ सचे तखत वहे अविनासी। निहचल साचा आय न जासी। तेरो रूप न जाणे कोई तूं करि करि चोज दिखंता है ॥२४॥ आनंद विनोदी चोजी रंगा। थाप उथापे करे सु होयगा। उसारे ढाहि ढाहि उसारे ऊणे सभर भरंता है॥ २५ ॥ उतपति परलो हुकमे

होवै। हुकमे साजे हुकमे खोवै। हुकमे साजे हुकम निवाजहि मंत्र न किसे पुछंता है ॥२६॥ पुरखोतम हरि पुरुष अगंमा। वरन चिहन कछू जात न जन्मा। अद्रिष्ट अगोचर अलख न लखियै घट २ सो वरतंता ॥ २७॥ अनाथां नाथ सर्ब प्रति पाले। नित नित जीआं सार संभाले। वडा अथाह रजाई राजा भाणा हरि भगवंता है ॥२८॥ अगम अपार बेअंत बे ऐबा। आदि जुगादि अनील अनादा। अनहदि रुण भुणकार अनाहद धुन ओंकार वजंता है ॥ २६ ॥ सिफत सलाहण जो तिस भावै। ढाढी मंगन गुणदर जाव नानक ढाडी आप पहिनाया दर सचे पतवंता है ॥३०॥ लाल गुलाल दयाल मुरारा। अपर अपारं पाय न पारा। बेशुमार बे अंत बिअंता अगम अथाह अतंता है ॥३१॥ राम कृष्ण गोबिंद परायण। मुकंद मनोहर लछमी नारायण। गोबिंद सदा सिर सरब प्रहारी आपे आप उपंता है ॥३२॥ हरि हरि श्री ठाकुर नर सिंघा। अकाल मूरति अजूनी सैं भंगा। मोहन माधो कृष्ण मुरारी निरभौ भौ निरभंता है ॥ ३४ ॥ अचुत पारब्रहम परमेशर स्वामी। मध सूदन दामोदर स्वामी। रिखी केश गोवर्धन धारी मुरली मनोहर वजंता है ॥३५॥ कान्ह कृष्ण हरिनारायण। भगत वछल हरि बिरद रखायण। संत उधारण हरि हरि तेरा अंत न कोई पाता है ॥ ३६ ॥ अछल अभेद छेद अलेखा। वरन चिहन कछू रूपि न रेखा। आदि जुगादि है भी होसी गुरु का शब्द पछाता है ॥ ३७ ॥ आदि निरंजन गहिर गंभीरा। सच ठकराई साचे मीरा। अनहद रुण भुणकार सदा धुनि निरभौ के घर वासा है दामोदर हरि दाना बीनां। गहिर गंभीर गहिर सुजाना। पारब्रहम परमेश्वर स्वामी लेपन न कोई लाता ॥ ३६ ॥ ओं नमो आदं सुन्न अपारा। ओं कार कर किया पसारा। सुन्न कलामहि लाय ताड़ी सुने सुन समाता है ॥ ४ ॥ अकथ कथा गुर शब्द विचारी। गुर मुख पाया मोख दुआरी। नानक सच कहे सव साचा सचो सच वुलंता है ॥ ४१ ॥ आपे जती सती सतवंता। अचरज रूप घट घट वरतंता। भौ भंजन अति भारा गौहर सर्ब घटा का दाता है ॥ ४२ ॥ निरहारी निरवैर निरारा। रूढ़ो गूढ़ो गुणा

अपारा । गहिर गभीरा गुरमुख धीरा निर्मल आप न जाता है । अन
नाथ सर्ब प्रतिपालक । कोटि ब्रहमंड का ठाकुर नायक । द्रोपती की ल
निवाज उधारन जै जै कार करंता है ॥ ४४ ॥ प्रहिलाद की जिन
रखाये । हरनाखस छे दिओ संत छडाये । संत भगत हरि हरि जस गा
हरि अपना बिरद रखंता है ॥ ४५ ॥ भगत वछल हरि हरि नारायए
दहि सिर छेद कियो रमायण । असुर संघारन मुकति साधारण असुंभर
अस थंथा है । अजामल वेसवा तर तारे । बाल मीक तारे बटमारे । भ
वछल कृपाल कृपा निधि कारण करण विधाता है ॥ ४७ ॥ हरि हरि
धारे को माधव । मुरली मनोहर माधो आदव । संत जना का आग्या
आदि अंत सुख दाता है ॥ ४८ ॥ अगाध बोध बनयो बनवाली । स
सागर धरकत ताली । निहचल धाय सहंसर नामा गुरु के शब्द त
है ॥ ४६ ॥ लाल गुलाल रसाल अति जाहिर । सुंदर सुगढ़ सुजाना
हरि । निहचल तखत सदा थिर जाका सचे तखत बसंता है ॥ ५०
असुर संधारन मुक्त मुक्ती सर । तखत निवासी सचा सचीस
एकंकार अवर नहीं दूजा नानक चरण पराता है ॥ ५१
आदि जुगादी होंदा आया । अंत पार न किन हूँ पाय
परे ते परे परोला परला किनहि पार न जाता है । परमा नंद अ
लालन । हरि प्रभि व्यंत व्यंत दुख दालन । हर नारायण गरव प्रहारी अ
रंग प्रभु राता है ॥५३॥ आदि पुरष कारण करतारा । मुकत दान मुकतं
सारा । प्रेम परायण रूप नारायण पूरण पुरष त्रिधाता है ॥ ५४ ॥ अ
कला प्रभु अलख अलेखं । दीन दयाल कृपाल कृपा निधि वखसे अ
मिलाता है ॥५५॥ अभिगत अगोचर सिरी धर सैना । सुंदर स्वामी कुं
है वैना । मोहन माधो कृष्ण मुरारी पेख २ विगसंता है ॥ ५६ ॥ नर
नारायण गरव निवारण । संत भगत हरि सिमर उधारण । दामोदर
भंजन स्वामी अंतरजामी जाता है ॥५७॥ प्रीत प्रीत कर त्रिभवन रूप
रूप नारायण डीठ अडीठम । प्रीतम परान मनह हितकारी सर्व जीआं पात

है ॥५८॥ निह केवल निह कंटकु सूरा। पारब्रहम परमेश्र पूरा थापि उथापे ढाहि उसारे त्रिण ते मेर करंता है ॥५६॥ अजरावर जिस जरा न मरना। साचा तखत साचा जिस परणा। सुणि सुणि आखहि पड़ि पड़ि बूझहि विसमे विसम विसमाता है। आपे बखश मिलाये मेल। अनद बिनोदी चोजा खेल। सहंसर नामा तेरे गणे न जाई नानक हरि रंग राता है ॥६१॥ जख किनर जोधे इकु जांके। अंत न पावे पढ़ि पढ़ि थाके। सूरबीर अर वडे वडेरे अंत न कोई पाता है ॥६२॥ अगम अथाह अपार निराला। अपरपरंपर सुर सरि दयाला। हरी चंद हर क्रिष्णा मनोहर सगल ब्रहम पसराता है ॥६३॥ हरि हरि स्वामी हरि जी हरीआ। बहे दुलीचे स्याम सुंदरीआ। सर्ब जोत जाका परगासा परगट कर दिखलाता है॥ ६४॥ परम तत निरलेप अलेखा। अलख पुरुष सर्ब सिरलेखा। लिखिआ लेख अभूल न भूल तू काहे मन बिललाता है। सहंसर नाम को गनै न तेरे। अंत पाइन वडे वडे वडेरे। तेरी सिफत कौन सालाहे सचु कुदरति कादर जाता है। सहंसर नाम सत जिहि पढ़िआ। उची पौड़ी गगनंतर चढ़िआ। पंच बान ले जम को मारे सच महिल घर जाता है॥ ६७॥ सहंसर नाम सच सची हिंमत सहंसर नाम सच अगम गत। सहंसर नाम पढ़ि मुकता होवै सचे सच समाता है। सहंसर नाम पढ़ि जात न जरमा। सहंसर नाम पढ़ि अलख अलेखै अंभै अंभ मिलाता है। सहंसर नाम पढ़ि सुख बिसरामा। सहंसर नाम पढ़ि निहचल धामा। सहंसर नाम पढ़ि सचे राता सचे महिल घर जाता है। सहंसर नाम पढ़ि सुन समाधो। सहंसर नाम पढ़ करम लिखाधो। सहंसर नाम पढ़ पूरण आसा विरथा मूल न जाता है। सहंसर नाम पढ़ लोचा पूरी। सहंसर नाम पढ़ कदे न झूरी। सहंसर नाम पढ़ सूख समाना धर्म धीरज ठहिराता है। सहंसर नाम पढ़ पूरन आसा। मसतक लेख लिखिआ धुर साचा। नानक सहंसर नाम हरि पढ़िआ धुर मसतक लेख लिखाता है। आदि अंत धुर साची वाणी। सच उपाई सच समाणी। सच अचरज अकथ किया कहीऐ नानक सिफती राता है।

जिस समय गुरू जी ने सहंसर नामा सुनाया तब वह साधु अपने साथीओं के सहित गुरू जी के चर्णों में आ गिरा। और प्रार्थना करने लगा कि आप कुछ दिन यहीं निवास करो, गुरू जी पंद्रह दिन वहीं रहे। फिर आगे चले।

॥ यात्रा की साखी ॥

गुरूजी किसी नगर में तो जाते ही नहीं थे,कभी नदी कभी दरया कभी परवत लांघते जाने लगे। जब मर्दाने को भूख सताती थी तब वह मौन ही रहता था, एक दिन मर्दाने को भूखा देख कर गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना इस बस्ती में जाओ। वहां उपल खत्री से मेल होगा। वह सभ को भोजन खलाते होंगे, तुझे जो देखेगा। वह तेरे कदमों में आयेगा और छतीस प्रकार के भोजन तेरे आगे धरेगा, जात पात नहीं पूछेंगे प्रत्येक पुरुष तुमारी स्तुति करेगा और सर्वस्व अर्पण करेगा और कहेंगे कि हमारे अहोभाग्य हैं जो आप के दर्शण हुवे हैं।

गुरू जी ने मर्दाने को प्रसन्न होकर रवाना किया जब मर्दाना नगर में आया, तो जैसे गुरू जी ने कहा था वैसे ही हुवा। तमाम लोग मर्दाने के निकट आकर स्तुति करने लगे। वहां से मर्दाना भोजन और वस्त्र बहुत से ले आया। गुरू जी बहुत हंस कर कहने लगे हे मर्दाना! यह क्या कुछ ले आये हो? मर्दाने ने कहा यह भोजन वस्त्रादिक जो कुछ भी है सो आप के सनमुख रख दिया है। अब जैसे आप की आग्या। गुरू जी ने कहा-यह तो हमारे किसी काम की वस्तु नहीं है। मर्दाने ने कहा-अब क्या करूं, गुरू जी ने कहा-इसे फैंक दो, तब मर्दाने ने सभी चीज बाहर फैंक दी।

मर्दाने ने कहा-हे महाराज! जो भगत लोक आप के दास को कुछ दें। तथा आप की सेवा में अरपण प्रेम से करें। उन में से आप को भी कुछ प्राप्त होता है अथवा नहीं! यह मेरी शंका है। आप इसे दूर करो। क्योंकि आप तो कुछ लेते ही नहीं। फिर आप किस प्रकार से तृप्त रहते

हो। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना तू रबाब बजा। मर्दाना रबाब बजाने लगा, तब गुरू जी ने राग गौड़ी गुवारेरी में शब्द उचारण किया–

शब्द ॥ माता प्रीति करे पुत खाय। मीनें प्रीति भई जल नाय। सतिगुर प्रीति गुर सिख मुख पाय। ते हरिजन मेलहु हम प्यारे। जिन मिलिआ दुख जाय हमारे ॥ रहाउ ॥ ज्योमिल बछरे गौ प्रीति लगावै। कामनि प्रीति जा पिरु घर आवै। हरिजन प्रीति जा हरि जस गावै ॥ २ ॥ सारंग प्रीति वसै जल धारा। नरपत प्रीति माया देख पसारा। हरि जन प्रीति जपै निरंकारा। नर प्राणी प्रीति माया धन खाटे। गुरु सिख प्रीति गुरु मिले गलाटे। जन नानक प्रीति साधपग चाटे।

यह सुन कर मर्दाने ने कहा हे महाराज ! आप सत्य कहते हो। फिर गुरू जी आगे चले।

॥ साखी ठगों के साथ ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज वहां से चलते चलते ठगों के देश में जा पहुँचे। रास्ते में शेख सज्जन नाम का ठग रहता था। उस ने मार्ग में ही अपने मकान बनाये थे। एक ठाकुर मंदिर और मसजिद भी बनवाई थी। यदि कोई हिंदु आ जाय तो वह ठाकुर मंदिर देता था। और यदि कोई मुसलमान अतिथि आ जाय तो उसे रहने को मसजिद दे देता था। जब रात्री का ममय हो, तो मुसाफिर को फांसी दे देता था। और उस की लाश किसी कूए में डाल देता था। जब दिन चढ़ जाये तो वह अपना स्वरूप पूरण निमाज़ीयों जैसा बना कर अल्लाह २ करने लग जाता था।

हम (बाला) लोग गुरू जी के साथ देशाटन करते करते वहां चले गये। उस ने हम लोगों का बहुत ही सनमान किया। तथा अपने संगी डाकुओं को कहा–मालूम होता है। इन के पास बहुत सा धन है। जो इनों ने छुपा रखा है। तभी इन के मुख पर नूर है। क्यों कि दौलत की चमक मुख पर स्वयं आ जाती है।

जब रात हुई तो उस ने गुरू जी से कहा–आप भीतर चलो और विश्राम करो। गुरू जी ने उसे कहा–हे मित्र तुमारा नाम क्या है ? उस ने कहा मेरा नाम सजन है। गुरू जी ने कहा–एक की खिदमत करनी अच्छी होती है। हम तो एक परमात्मा की ही सेवा करने वाले हैं। अब हम खुदा की बंदगी का शब्द कह कर पीछे सोनें का प्रबंध करेंगे। गुरू जी ने मर्दाने को कहा–रबाब बजाओ। गुरू जी ने राग सूही में एक शब्द उच्चारण किया।

॥ राग सूही ॥ उजलू कैय चिलकणा घोटम कालड़ी मसु। धोतिआं जूठ न उतरै जे सौ धोवां तिसु ॥ १ ॥ सजण सोई नाल मैं चल्त दिया नालि चलंनि। जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोठे मंडप माड़ीया पासहु चितवी आहा। ढठिआ कम न आवनी विचहू सखणी आहा। बग्गा बग्गे कपड़े तीरथ मंझी वसंनि। धुटि धुटि जीआ खावणे बग्गे न कही अंनि ॥ ३ ॥ सिम्मल रुखु सरीरु मैं जन देखि भुलंनि। सो फल कम्म न आवनी ते गुण मैं तन हंनि ॥ ४ ॥ अंधुलै भारु उठाया डूगर वारह हुत। अखी लोड़ी न लहा हौ चढ़ि लधा कितु ॥ ५ ॥ चाकरीआं चंगिआइआं अवर सिआणप कितु। नानक नामु समालि तू बधा छुटहि जितु ॥ ६ ॥

इस शब्द को सुन कर उस ठग का तो काया कल्प हो गया। वह भाग कर आया और गुरू जी के चर्णों से लिपट गया, और कहने लगा हे महाराज मुझे वह बातें बताने की कृपा करो, जिस से गुनाह दूर हो जायें। गुरू जी ने कहा–जो तुम ने नर हत्यायें की हैं, यदि तू हमारे सनमुख सत्य२ कह दे तो तब हम कुछ तुमारे कल्याण का मार्ग निकालेंगे। उस ने कहा हे महाराज ! मैंने बहुत सी हत्यायें की हैं, गुरू जी ने कहा ! उन की जो वस्तु तुम छीनी हुई है वह सारी हमारे सामणे लाओ। शेख सज्जन ने गुरू आग्या मान कर सारी डकैती का सामान गुरू जी के आगे ला कर रख दिया। गुरू जी ने फरमाया यह सारी संपदा खुदा के नाम पर लुटा

दो, उस ने सारी वस्तु लुटा दी। गुरू जी के पवित्र उपदेश ने उस ठग का भी कल्याण कर दिया।

॥ साखी पानी पत करनाल की ॥

सतगुरू श्री नानक देव जी अनेकों स्थानों में सत्य नाम का प्रचार करते२ और अनेकों जिग्यासुओं को भव सागर से पार करते२ पानीपत में आ गये। उस जगा शेष शरफ़ था, तथा उसका चेला शेख टटीहरी था, वह अपने पीर के लिये जल लेने जा रहा था। उस ने श्री गुरू जी के पवित्र दरशण किये, उस ने आकर कहा, सलाम ओ दरवेश ! गुरू जी ने कहा– उस अलेख को सलाम हो, उस ने हैरान होकर सोचा कि आज तक सलाम किसी ने भी वापस नहीं किया था। अब इन की खबर अपने पीर को करूंगा।

उस ने अपने पीर शेख शरफ़ को सारी बारता सुनाई, पीर ने कहा– बेटा ! मैं उस का दरशण करना चाहता हूं। जिस ने अलेख को सलाम कहा है, टटीहरी अपने पीर को लेकर गुरू जी के निकट आया तब शेख शरफ़ ने गुरू जी को इस प्रकार संबोधित किया।

॥ प्रश्न उतर पीर और गुरू जी ॥

पीर.........कुजा आमद। गुरू जी.........ईजा आमद।

पीर.........असमान मनी। गुरू जी.........सूमान भदहु।

फिर पीर ने गुरू जी को बाणी की पुरसीद पूछा। अगर तुरा सुवाल में पुरसम अक़्लि जवाव बगो। दरवेश कुलाह सुमाचि मज़हब अस्त।

गुरू जी ने उतर दिया–

मनुआं मूंडे तां मूंड मुंडावै। बिन मन मूंडे जुगत ना पावै। मूंड काट गुर आगै धरै। मन मत त्याग गुर की मत तरै। मूंड मुंडाइ होय सब की रेना। सो बैरागी परखे बैना। मूंड मुंडाय की एह गति भाई। कोई विरला गुरमुख मूंड मुंडाई। सुआद सहने ममता सभ तजीअं। एह

जुगत नानक कुलाह पहरीआं ॥ १ ॥ यह सुन कर शेख नें फिर पूछा—

अगर तुरा सुवाल में पुरसम अहिल जुवाव बगों । दरवेश फिरका सुमाची मजहब अस्त ॥

उत्तर गुरू जी का ॥ पीर मति मुरीद होई रहनं ॥ कफनी टोपी मन शब्द गहनं । बहता दरया ले करे बरती । सहिज बैसि तहा सुख मन चेती । हरख सोग का करो हंकारं । पहिर कफनी दुबिधा बिदारं । सुन्न गढ़ लै बसदी रिहाई । तब कफनी की जुगति पाई । कुतंब छोड़ भया अकेला । नानक पहिर कफनी भया सहेला ॥ २ ॥

शेख का कथन ॥ अगर तुरा सुवाल में परशन अहिल जुवाब बगो दरवेश कुपीन शुमाचि मजहब अस्त ॥

जुवाब गुरू जी का ॥ पीर मत मुरीद होइ रहनं । गुर सबदी खिमा मनि सहिज गहनं । द्रिष्टी बांधो दुरमति हरीअं । दसी दुवारे ले तहां चढ़ीअं । अठसठि हाट ताड़ करनं । पहिर लंगोटी जरा ना मरणं । पहिर लंगोटी भया अकेला । उलट लंब का पवै ओह जेला । विलंद मत गुर की रही छोटी । एह जुगत नानक पहिरबे लंगोटी ॥ ३ ॥

शेख का प्रश्न ॥ अगर तुरा सुवाल में पुरसन अहिल जुवाव वगो दरवेश पाउ पोश तरक सुमाचि मजहब अस्त ॥

उतर श्री गुरू नानक देव । सर्व ग्यान अहि निसि रीतं । पावन पवन जल मनि कीतं । धरन तर वर की रहित रहिनं । काटन खोदन मन महि सहंन । दरया मेला रीत आछी । भाउ भाउ ओह करे साखी । एह मथनि कर कार वो पहनं । तऊ पाऊ पोश ब्रहम हो रहनं । विना ब्रहम चीने पाऊ पोश त्यागे । कहे नानक ओह तिल घाट ना लागे ।४।१।

शेख का प्रश्न ॥ अगर तुरा सुवाल में पुरसम अहिल जुवाव वगो दरवेश सफाय तुरा दरवेशं मन मता चिला संसे ।

गुरू जी ने शब्द उचारन किया ॥ गुरू जी ने मर्दाने को आग्या दी । कि हे मर्दाना ! रबाबा को वजाओ । शब्द कहेंगे । मर्दाना रबाब

बजाने लगा।

देवगंधारी महला १ ॥

जीवन मरे जागति पुन सोवै जानति आप मुसावै ॥ सफन सफाइ होय मिलै खास को तौ दरवेश कहावै ॥१॥ तेरा जन को है ऐसा दिल दरवेश। शादी गमी तमक नहीं गुस्सा खुदी हिरस नहीं एस। कंचन खाक बराबर देखे हक हलाल पछानै। आई तलब साहिब की मानै अवर तलब नहीं जानै। जोगी जंगम सिध कहावे लोहू बिंद जमावै। पांचों इंद्री दृढ़ करि राखै तौ दरवेश कहावै। गगनि मंडल महि आसन बैठा अनहद शब्द वजावै। कहु नानक साध की महिमा बेद पुरान न पावै।

गुरू जी के इस महा वाक्य को सुन कर शेख़ शर्फ़ धन्य धन्य कह कर गुरू जी के चर्णों पर गिर पड़ा। और कहने लगा कि हमारे अहोभाग्य जो आप जैसे पहुंचे हुवे संतों का दीदार हुवा है। यह कह कर उस सात प्रदच्छिणा लेकर प्रणाम किया फिर हम लोग वहां से दिल्ली की ओर रवाना हो गए।

॥ साखी दिल्ली पति की ॥

जब सतगुरु नानक देव हमें साथ लेकर दिल्ली में आये तब दिल्ली नरेश बरहम बेग था। हम लोग एक महावत के पास जा कर बैठ गये। उस महावत ने गुरू जी की और हमारी बहुत सी सेवा की। उस महावत का एक हाथी मर गया था। महावत का सारा परिवार उस के दुख से दुखी हो रहा और रो रहा था। गुरू जी ने उस के रोने का कारण पूछा, उतर मिला कि हाथी मर गया है। गुरू जी ने कहा, मरने वाला हाथी किस का था ? उनों ने कहा, वह राजा जी का था। गुरू जी ने कहा, यदि हाथी पातशाह का है तो तुम क्यों रो रहे हो ? महावत ने कहा, इस के रोजीने से हमारा परिवार पल रहा था। गुरू जी के हृदय में दया का संचार

उमड आया। कहने लगे सत्य नाम श्री वाहिगुरू यह पवित्र शब्द पढ़ कर हाथी जो मरा हुवा है, उस के मुख पर हाथ फेरो। बस फेरने की देर थी, हाथी जीवित हो गया, उनको अत्यंत प्रसन्नता हुई।

हाथी जीवित करने का समाचार बादशाह तक पहुँचा, तब बादशाह गुरू जी के पास आया, उसने कहा-हे महाराज! यह हाथी आप ने जीवित किया है? गुरू जी ने कहा हे बादशाह मारने और जिवाने वाला तो आप खुदा है। "दुआये फकीरां और रहिमे खुदा" इतनी कह कर बाबा जी ने आगे लिखा शब्द उचारण किया।

शब्द

मारे मार जिवाले सोई॥ नानक एकस बिन अवर न कोई॥

इतने में वह हाथी फिर मर गया। अब बादशाह ने कहा-इसे जीवित करो, महाराज ने कहा-हे राजन! जिस समय लोहा अगिन में लाल हो जाता है, तब उस पर किंचित हाथ नहीं लगाया जाता। और जब लोहा ठंडा हो तो समस्त दिन हाथ पर रखो तो कोई आपति नहीं उस तरह परमात्मा के मारे की परमात्मा का भजन प्रभाव जीवित करता है। परंतु फकीर की मार को खुदा भी वापस नहीं करता, बादशाह ने इस उच भाव को भली प्रकार जान कर के अति प्रसन्नता से गुरू जी के चर्णों को अपने मस्तक पर लगाया, और बहुत ही तारीफ़ की, तब गुरू जी ने नीचे लिखा एक श्लोक उचारण किया।

श्लोक॥

नानक भुख खुदाय दी विआ वे परवाही॥ असां तलब दीदार दी विआ तलब ना काही॥

फिर बादशाह ने गुरू जी को नमस्कार किया, और अपने घर को गया, इधर गुरू जी भी पर्यटन को चले।

॥ यहां प्रथम उदासी उतर खंड दी समाप्त॥

॥ साखी सिद्धों से ॥

गुरू जी अनेकों नगरों के नर नारीयों को पवित्र उपदेश करते और हमें अपने साथ लेकर चले जारहे थे। अचानक मार्ग में गोरख नाथ अपने वीस सिद्धों के साथ आ मिला, परस्पर शिष्टाचार के पश्चात अनेक प्रश्नोतर हुवे, उतर सुन कर गोरख नाथ और उस के सिद्ध सार्थी अति प्रसन्न हुवे, सभी ने गुरू जी की महान स्तुति की।

गुरू जी ने मुझे (बाले को) कहा–हे बाला ! हमारी बहिन नानकी हमें स्मर्ण कर रही है, हमारा विचार है, कि सुलतान पुर चलें, बस फिर हम सब सुलतान पुर में पहुंच गये, तुलसां गोली ने नानकी जी को जाकर कहा–बहु जी ! आप के भाई जी आ रहे हैं, फिर गुरू नानक देव जी अपनी बहिन बीबी नानकी देवी से मिले, दोनों ओर बहुत ही प्रसन्नता हुई। नानकी जी ने कहा हे भ्राता जी ! मैंने आज ही आप को याद किया था, गुरूजी ने कहा–इसी लिये हम आप के पास आ गये हैं, नानकी जी ने कहा–हमारे अहो भाग्य हैं, जो आप के दर्शण हो रहे हैं, फिर गुरू जी कुछ समय नानकी जी के पास रहे, श्री चंद्र जी से मिल कर बहिन जी से गुरू जी ने विदा मांगी और वहां से रवाना हुवे।

॥ एक लड़के की साखी ॥

गुरू जी जाते जाते एको चनों के खेत्र में गये, वहां एक लड़का चनों की होलां बना रहा था, मर्दाने ने कहा–हे गुरू जी ! हमें भी होलां मिलें तो मनेछा पूरण हो, गुरू जी मुसकरा दिये। उस लड़के ने गुरू जी के चर्णों में प्रणाम किया, और कुछ होलां भेंट कीं। गुरू जी ने वे सब मर्दाने को दे दीं। वह लड़का अपने मन में विचार कर गुरू जी के लिये कुछ भेंट घर से लेने को चला, तब गुरू जी ने उसे रोक कर पूछा–बेटा ! कहां जा रहे हो, उस ने जो मन की इच्छा थी, वह सत्य सत्य बता दी। तब गुरू जी ने एक श्लोक उचारण किया।

श्लोक ॥

सथर तेरा लेफ निहाली भाव तेरा पकवान। नानक सिफती तिपतिया आउ बैठ सुलतान। गुरू जी ने कहा–हे वेटा! हम तो प्रेम भाव के भूखे हैं पकवानों के भूखे नहीं हैं। उस प्रकार का पवित्र उपदेश करके तथा उस लड़के का लोक परलोक सुधार कर गुरू जी आगे की ओर रवाना हुवे।

॥ साखी गोबिंद लोगों की ॥

एक दिन गोबिंद लोग गुरू जी के निकट आकर कहने लगे हे महाराज हम कुछ ईश्वर संबंधी भजन कीर्तन सुनना चाहते हैं। गुरू जी उन की बात सुन कर अति प्रसन्न हुवे। और उन की स्तुति की। गुरू जी को वे लोग अति प्रिय लगे। गुरू जी ने कहा–हे सज्जनों! जो कुछ तुमारे मन में आवे वह पूछो। हम उतर देंगे, तव उन लोगों ने निम्न लिखित प्रश्न किये–

(१) उस परमेश्वर का रंग कैसा है?

(२)उस करता का आदि अंत किस से हुवा है?

(३) परमेश्वर स्वयं क्या वस्तु है?

गुरू जी ने उतर दिया, हे भगत जनों! परमात्मा की माया बेअंत है। उस का अंत कोई नहीं पा सकता। वह ईश्वर शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष है। जो पितरों का दिन और रात्री है, अनंत वरस गुजरने पर ब्रहमा का एक दिन व्यतीत होता है, ब्रहमा के अनंत वर्षों के पश्चात विश्नु जी का एक दिन व्यतीत होता है। विश्नु जी की समस्त आयु का शिव का एक दिन होता है। इस प्रकार के शत वर्ष शिव की आयु है, इस लिये माया का कोई अंत नहीं पा सकता। परमेश्वर की एक पलक सृष्टी है, और पलक का वंद होना महा प्रलय काल है। जिस की माया का कोई अंत नहीं है। तो उस माया के स्वामी के लिये कौन कुछ कह सुन सकता है, फिर गुरू जी ने राग गुजरी में एक शब्द उच्चारण किया।

राग गुजरी महला १ ॥ नाभि कवल ते ब्रहमा उपजे वेद पड़हि मुख कंठ सवार । ताका अंत न जाई लखणा आवत जात रहे गुवार। प्रीतम कउ विसरे मेरे प्राण अधार । जाकी भगत करहि जन पूरे मुन जन सेवहि गुर वीचार ॥ रहाउ ॥ रवि ससि दीपक जां के त्रिभुवन एका एकी जोत मुरार। गुरुमुखि होय सु अहिनिसि निरमल मनमुख रैन अंधार । साध समाध करहि नित झगरा दुही लोचन किआ हेरै । अंतर जोत सबद धुनि जागै सतिगुर झगर निबेरै ॥ ३ ॥ सुरनर नाथ बिअंत अजोनी साचै महल अपारा । नानक सहिज मिलै जग जीवन नदरि करहि निसतारा ॥ ४ ॥

इस पवित्र उपदेश से समस्त लोक अति प्रसन्न हो कर अपने २ स्थान को रवाना हुवे । इसी प्रकार श्री गुरू नानक देव जी ने अनंत लोगों के संशयभ्रम नाश किये । तथा अनेकों का कल्याण किया । बड़े २ नास्तिक जो ईश्वर की सत्ता से विमुख थे । और नर्क गामी बनते चले आ रहे थे । उन को सत्तमार्ग का उपदेश देकर उन को स्वर्ग सदन के अधिकारी किया । और अनेकों के भव बंधन काट कर मुक्त कर दिया ।

सत्य तो यह है कि सतगुरु श्री नानक देव जी महाराज कलियुगी जीवों के हित के लिये ही इस संसार में अवतार धारण करके आये । और नर्कों का मारग रोक लिया । गुरू जी ने नाम के अधार पर लाखों बेड़े पार किये हैं ।

उदासी दूसरी २ ॥

जिस समय गुरू नानक देव जी महाराज दूसरी उदासी धारण करके चले उस समय संवत १५६६ विक्रम था । तथा गुरू जी की आयु उस समय एक मास कम चालीस वर्ष की थी, महाराज का पवित्र दाहड़ा ठीक स्याह वर्ण का था ।

जाने के समय मर्दाने ने पूछा हे गुरू देव ! अब किधर जानें का विचार है । गुरू जी ने कहा—हे मर्दाना ! अब कुछ तीर्थों पर जाने का

विचार है। गुरू जी ने पवन आहार का व्रत लिया। एक वस्त्र अंबुवे वर्ण का और एक वस्त्र श्वेत और एक जूते का जोड़ा गले में कफनी और शीश पर टोपी धारण की। तथा कलंदरी माला और माथे पर तिलक लगाया। और उदासी का भेष किया। रास्ते में शेष वजीद मिला। वह जाति का सैय्यद था, वह एक वृक्ष के नीचे उतर पड़ा। उस के आदमी सेवा करने लगे। मर्दाने ने कहा–हे गुरू जी! ईश्वर एक हैं अथवा दो? गुरू जी ने कहा– हे मर्दाना ईश्वर तो एक ही है। तो मर्दाने ने कहा– वह जो सुखपाल पर सुवार होकर के आया है। यह किस की संतान है? मैं हैरान हूं कि वह तो सुवार होकर आया है। और सेवा करने वाले पैदल भार उठा कर आये हैं, परंतु सुवार तो थका हुवा है। और वेचारे उस को मुठी चावी कर रहे हैं। जो पैदल ही आये थे, यह सुन कर गुरू जी महाराज ने नीचे का श्लोक उचारण किया–

॥ श्लोक ॥

पूरव जन्म के तप किये पाले सहे अडंग। तब के थाके नानक अब ही मुंडाए अंग।

तब तिस का परमार्थ कहा है। गुरू जी कहने लगे–हे मर्दाना! तप करने से राज्य की प्राप्ति मानी है। और राज्य का परिणाम नर्क है, जो जीव जन्म लेता है। वह पूर्व काल के संचित कर्म जो अब प्रारब्ध हैं उन के फल दुख सुख साथ ही लाता है। सो तू कर्तार के रंग देखता जा, मर्दाने ने गुरू जी के चणों में साष्टांग प्रणाम किया। अब गुरू जी वहां से बनारस (काशी) में जा विराजे।

एक पंडित जिस का नाम चतुर दास था, वह गुरू जी के वेष को देख कर आप के निकट आया। और नमस्कार करके बैठ गया, और कहने लगा–हे भक्तवर! तुमारे पास न तो शालग्राम की मूर्ति है, और न ही तुलसी की माला है। और गोपी चंदन का तिलक भी नहीं है। फिर अपने को संत कहते हो। भेष साधुओं जैसा बना रखा है। क्या इसी का

नाम भक्ति है।

गुरू जी ने चतुर दास को उतर देने की जगह पर मर्दाने को कहा हे मर्दाना ! रबाब बजाओ, मर्दाना रबाब बजाने लगा-तब गुरू जी ने नीचे लिखा हुवा शब्द उचारण किया।

राग बसंत महला १ ॥

सालग राम बिप पूज मनावहो सुक्रत तुलसी माला। राम नाम जप बेड़ा बांधहु दया करो दयाला ॥१॥ काहे कलरा सिंचहु जनम गवावहु। काची ढहगि दिवाल काहे गच लावहु ॥ रहाउ ॥

पंडित ने कहा-हे महाराज ! आप ने यह तो सत्य ही कहा है, परंतु जिस से परमात्मा मिले। वह कौन सी रीति है ? तब गुरू जी ने पौड़ी का उचारण किया। ॥ पौड़ी ॥

काम क्रोध दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई। जिऊ गोडहु त्यो तुम सुख पावहु किरत न मेटिआ जाई।

फिर पंडित ने पूछा-हे भक्त जी ! धरती को नम दिये बिना ही किस प्रकार होवे, और माली किस विधि अपना कर जानै। फिर गुरू जी ने तीसरी पौड़ी कही।

करि हरि हट माल टिंड परोवहु तिस भीतर मन जोवहु। अमृत सिंचहु भरो कयारे तो माली के होवहु ॥ ३ ॥

तव चतुर दास ने कहा-आपतो परम हंस हो,और हम मति मलीन है, वगले की भांति है, तव गुरू जी ने चौथी पौड़ी उचारण की-

वगले ते फुन हंसला होवे जे तू करहि दयाला। प्रणवति नानक दासनि दासा दया करहु दयाला ॥ ४ ॥ तव फिर पंडित ने कहा-आप उस ईश्वर के पूर्ण भक्त हो, हमारी प्रार्थना है कि आप इस नगरी को पवित्र करो। और कुछ इस का भी गुण ग्रहण करो। गुरू जी ने पूछा-इस का गुण क्या है ? पंडित ने कहा काशी विद्या का केंद्र है। यही इस का उच्च गुण है, विद्या से रिधि सिद्धि की प्राप्ति होती है। तथा संसार में विद्वान

का मान होता है, तब गुरू जी ने मर्दाने को रबाब बजाने की आग्या दी, और स्वयं शब्द कहा–

राग बसंत महला १ ॥

राजा बालक नगरी काची दुष्टा नाल पियारो। दुइ माई दोइ बापा पड़ी अहि पंडित करो बिचारो। स्वामी पंडिता तुम देहु मती इन बिधपावहु प्रान पति ॥ रहाउ ॥ भीतरि अगनि बनासपति मौली सागर पंडै पासिआ। चंद सूरज दुइ घट ही भीतरि ऐसा ग्यान न पाया। राम रवंत जाणीऐ इक माई भोग करेइ। ताँ के लखण जाणी अहि खिमा धन संग्र हेइ। कहिआ सुणहि न खाया मानहि तिना ही सेती वासा प्रणवत नानक दासनि दासा खिन तोला खिन मासा ॥ ४ ॥

फिर पंडित चतुर दास ने कहा हे भक्तवर! यह जो हम लोग दुनीया को पढ़ाते हैं। उस विद्या से कुछ परमार्थ भी सुधरता है। अथवा नहीं। गुरू जी ने कहा–हे पंडित जी! स्वयं क्या पढ़े हो। और क्या कुछ लोगों को पढ़ाते हो? वह बताओ, पंडित ने कहा–अक्षर बोध से वेद शास्त्रादिक का ग्यान सिखाना हमारा काम है। तब गुरू जी ने उस पंडित को रामकली ओंकार महला पहिला १ सुनाया–

ओंकार ब्रहमा उतपति। ओंकार किया जिनि चिति। ओंकार सैल जुग भये। ओंकार वेद निरमये। ओंकार शब्द उधरे। ओंकार गुरमुख तरे। ओनम अखर सुणहु विचार। ओनम अखर त्रिभुवन सार ॥१॥ सुण पांडे क्या लिखहु जंजाला। लिख राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥१॥रहाउ॥

तब गुरू जी ने ओंकार की उनंजा पौड़ीयें उचारण कीं तब पंडित चतर दास गुरू जी के चर्णों पर गिर पड़ा। और गुरू जी का सेवक बन कर नाम जपने लगा।

॥ साखी नानक मते की ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज हमें साथ लेकर नानक मते जा

पहुंचे, वहां आप ने एक बट वृत्त के नीचे डेरा डाला। वह बोहड़ का द्रखत सूखा हुवा था। गुरू जी के आगमण से वह वृत्त सरसबज़ हो गया। तब सिद्धों ने देख कर कहा–कि यह कोई महां पुरुष है, तब सिद्धों ने गुरू जी से पूछा–आप किस के शिश्य हो, और किस से दीत्तित हुवे हो। गुरू जी ने उन के उतर में शब्द उचारण किया।

राग सूही महला १ ॥ कौण तराजी कवण तुला तेरा कवण सराफ बुलावा। कौण गुरू के पही दीखिआ लेवा कै पहि मुल करावा। मेरे लाल जीओ अंत न जाना। तूं जलि थल महिअलि भरपुरी लीना तू आपे सरब समाना। मन ताराजी चित तुला तेरी सेव सराफ कमावा। घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिध चित रहावा। आपे कंडा तोल ताराजी आपे तोलन हारा। आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधला नीच जात परदेसी खिन आवै तिल जावै। ताकी संगति नानक रहदा क्यों कर मूड़ा पावै।

तव सिद्धों ने कहा–हे बाला ! तुम योगी बनो। और भेष बदलो, तब गुरू जी ने शब्द उचारण किया।

राग सूही ललित में महला १ ॥ जोग न खिंथा जोग न डंडे जोग न भसम चढ़ाईऐ। जोग न मुंडी मुंड मुंडाइऐ जोग न सिङी वाईऐ। अंजन माहि निरंजन रहीऐ जोग जुगत इव पाइऐ। गली जोग न होई। एक दिस्ट करि समसर जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥ रहाउ ॥ जोग न बाहर मढ़ी मसाणी जोग न ताड़ी लाईऐ। जोग न देस देसांतर भविएं जोग न तीरथ नहाईऐ। अंजन माहि निरंजन रईये जोग जुगत इव पाईऐ। सतिगुर भेटे ते संसा चूकै धावत वरज रहाईऐ। निझर झरै सहजि धुन लागै घर ही परचाईऐ। अंजन माहि निरंजन रहीऐ जोग जुगत इव पाईऐ। नानक जींवदिआं मर रहिए ऐसा जोग कमाइऐ। वाजे बाझ सिङी वाझे निरभौ पद पाईऐ। अंजन माहि निरंजन रहीये जोग जुगत इव पाईऐ।

यह सुन कर सिद्ध आदेश आदेश कह कर कहने लगे। यह कोई

महान पुरष है। जिस के विश्राम करने से सूखा हुवा वट वृक्ष हरित हो गया है। तब सभी सिद्धों ने दंडवत प्रणाम करके तथा अनेक प्रकार से स्तुति करके रवाना हुवे ।

॥ वणजारे की साखी ॥

अब श्री गुरु नानक देव जी महाराज ! वणजारों की वस्ती की ओर गये। और वहां जा कर अपना आसन बिछा कर बैठ गये। एक वणजारे के घर में पुत्र उत्पन्न हुवा, तब बहुत से लोग उसे वधाई देने आते थे । और वह वणजारा प्रत्येक याचक को कुछ न कुछ दान देता था, परंतु उस वणजारे ने श्री गुरू जी तथा बाले मर्दाने को कुछ भी अर्पण न किया । तब मर्दाने ने कहा ! मुझे यदि गुरू जी आग्या दें तो मैं भी इस वणजारे से कुछ याचना करके ले आऊं। मर्दाने की बात सुन कर सर्वग्य गुरू जी हसने लगे और कहा हे मर्दाना ! इस के घर में पुत्र के रूप में करजाई पैदा हुवा है। यह चार प्रहर रह कर चला जायगा। अब जैसे तुमारी इच्छा है करो। इतना स्मर्ण रखना—कि यदि तुम उस के द्वार पर याचना के लिये जाओ—तो मौन ही धारण करना। कोई भी अशीर्वाद नहीं देना होगा।

मर्दाने ने वैसे ही किया—अर्थात चुप चाप खड़ा रहा, परंतु किसी ने भी मर्दाने की बात तक नहीं पूछी अंततो गत्वा—मर्दाना वैसे ही लौट आया। आ कर श्री गुरू जी को कहने लगा—हे गुरू वर ! मुझे तो किसी ने मुख से बुलाया तक भी नहीं । गुरू जी कहने लगे, हे मर्दाना ! तुम रबाब बजाओ। जब मर्दाने ने रबाब बजाना आरंभ किया, तब गुरू जी ने शब्द उच्चारण किया—

॥ राग श्री महला १ घर १ ॥

पहिले पहरे रैण के वणजारिआ मित्रा हुकम पया गरभास। उरध तप अंतरि करै वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि। खसम सेती अरदास वखाने उरध ध्यान लिव लागा। न मरजादु आया कलि भीतर बाहुड़

जासी नागा। जैसी कलम वुड़ी है मस्तक तैसी जीअड़े पासि। कहु नानक प्राणी पहिले पहिरै हुकम पाया गरभासि। दूजै पहरे रैण के वणजारिआ मित्रा विसर गया ध्यान। हथो हथ नचाइऐ वणजारिआ मित्रा ज्यो जसुधा घर कान। हथो हथ नचाइऐ प्राणी मात कहे सुत मेरा। चेत अचेत मूढ़ मन मेरे अंत नहीं कछु तेरा। जिन रच रचया तिसहि न जाणै मन अंतर धर ग्यान। कहु नानक प्राणी दूजै पहिरै विसरि गया ध्यान ॥ २ ॥ तीजे पहिरै रैण के वणजारिआ मित्रा धन जोबन स्यो चित्त। हरि का नाम न चेतई वणजारिआ मित्रा बद्धा छुटे जित। हरि का नाम न चेतै प्राणी बिकल भया संग माया। धन स्यो रता जोबन मता अहिला जन्म गवाया। धर्म सेती वापार न कीतो कर्म न कीतो मित्र। कहु नानक तीजे पहिरै प्राणी धन जोबन स्यो चित ॥ ३ ॥ चौथे पहिरै रैण के वणजारिआ मित्रा लावी आया खेत। जा जम पकड़ चलाया वणजारिआ मित्रा किसे न मिलया भेत। भेत चेत हरि किसे न मिलिआ जम पकड़ चलाया। झूठा रुदन होया दोआलै खिन महि भया पराया। साई वस्त परापत होई जिस स्यो लाया हेत। कहु नानक प्राणी चौथे पहिरै लावी लुणिआ खेत ॥४॥

जब दूसरा दिन चढ़ा तब वह लड़का स्वर्ग वास कर गया। कल जहां वधाईयें और मुबारकें मिल रही थीं, वहां आज अनेक प्रकार से रुदन हो रहा है, यह देख कर मर्दाने ने गुरू जी के चर्णों में प्रार्थना की कि हे सर्वग्य गुरू देव! यह क्या हो रहा है, आप कृपया इस के लिये कुछ उचारण करो, तब गुरू जी ने मर्दाने की प्रार्थना स्वीकार करते हुवे आगे लिखा शब्द उचारण किया–

॥ श्लोक ॥

जिस मुख मिले मुबारखां लख लख मिले असीस। सो मोहि फेर पढ़ाइअन तन मन सहे कसीस ॥ इक मुए इक दबियन इक दिचन नदी वहाइ। गइ मुबारख नानका है है पहुती आइ।

अब गुरू जी बाला और मर्दाना को संग लेकर आगे की यात्रा को चल दिये।

॥ दो सिखों की साखी ॥

फिर बाले ने कहना आरंभ किया—सतगुर श्री गुरू नानक देव जी हम दोनों को साथ लेकर आगे चले। अब चौमासा आरंभ हो गया था। तब एक नगर के निकट पहुँचे। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! इस स्थान पर चौमासा विश्राम करना चाहीये। गुरू जी ने नगर से एक कोस बाहर अपना आसन लगाया, वहां एक बाग था, जिस का स्वामी एक चत्री था। वह चत्री गुरू जी के दर्शणों को आया। तथा नमस्कार करके बैठ गया, कुछ काल बैठ कर चला गया, इसी प्रकार वह चत्री प्रति दिन गुरू जी के निकट आता और फिर कुछ समय के पश्चात चला जाता था, एक दिन उस चत्री के पड़ोसी ने पूछा कि आप प्रति दिन किधर जाते हैं ? उस ने कहा—कि एक संत जी आये हुवे हैं मैं उन के दर्शणों को जाता हूँ। उस पड़ोसी ने कहा कि मुझे भी अपने साथ ले चलो। तब उस चत्री ने कहा—यदि आप को भी श्रद्धा है तो आप भी चले चलो।

दूसरे दिन वह दर्शणों का प्रेमी जब चलने लगा तो वह पड़ोसी दोकान दार भी उस के साथ हो लिया। रास्ते में एक रंडी का घर था। वह पड़ोसी तो उस रंडी के घर चला गया। और वह चत्री श्री गुरू जी के निकट आ गया। उस प्रेमी ने निश्चय किया था कि संत जी के दर्शणों के सिवाय और कुछ भी जिग्यासा नहीं करनी। इस प्रकार वह दोनों दोकानों से इकठे चलते थे। चत्री तो गुरू जी के निकट आ जाता था। और दूसरा रंडी के घर में चला जाता था। इसी प्रकार बहुत दिन व्यतीत हो गए।

एक दिन उस कुकरमी के मन में विचार हुई कि मैं तो नित्य प्रति कुकर्म करने जाता हूँ। और मेरा साथी उस महात्मा के दर्शण करने जाता है। इस साथी के साथ कुछ बात करनी उचित है। उस कुकर्मी ने एक दिन उस श्रद्धालु से कहा—हे मित्र मैं तो प्रति दिन कुकर्म करने जाता हूं। और तुम दरशण करने जाते हो। आज मैं चाहता हूँ। **कि या तुम दरशण**

करके पहिले आ जाओ इसी स्थान पर मेरा इंतजार करो। और यदि मैं पहिले आ गया। तो मैं भी इसी स्थान पर तुमारी प्रतीक्षा करूंगा। दोनों ने स्वीकार किया। और अपने अपने निर्दिष्ट स्थान की ओर गये। रंडी के घर जाने वाला जब रंडी के घर में गया,तब वह रंडी घर में नहीं थी, वह निराश सा हो कर लौट आया। और नियत किये हुवे स्थान पर आ कर बैठ गया। और अपने साथी की इंतजार करने लगा। उस ने भूमी को नख से कुरेदा तो एक मट्टी का पुरवा निकला। जिस में एक तो स्वर्ण की मोहर थी और बाकी का पुरवा कोयलों से भरा हुवा देखा। उधर वह श्रद्धालु जब गुर दरशणों के पश्चात घर की ओर लौट रहा था। तब उस के पांव में एक कंटक चुभा। जिस से उस को पीड़ा हुई। तथा रुधिर बहने लगा। उस ने अपने पैर पर एक वस्त्र फाड़ कर बांध लिया तथा, शनैः २ चल कर वह भी अपने नियत स्थान की ओर आया। पहिले ने पूछा कि आप को क्या हुवा है। उस ने कंटक चुभने का समाचार कहा-

उस कुकर्मी ने मुसकरा कर कहा-हे मित्र ! देखो मुझे तो एक मोहर प्राप्त हुई है। और तुझे पैर में कांटा चुभ गया है, मैं तो पापी हूँ। परंतु मोहर पाई है, और तुम सतसंग के लिये जाते हो। परंतु पैर भी ज़खमी करवा बैठे हो। यह क्या कारण है ?

अब वे दोनों इस का उतर लेने को गुरू जी के निकट आये तथा जो कुछ सत्य था। वह गुरू जी के समक्ष दोनों ने कहा। गुरू जी मुसकरा कर मौन हो गये, अब उन दोनों ने आग्रह किया। हे महाराज ! हम अपने प्रश्न का उत्तर चाहते हैं, अब आप कृपा करो। तब गुरू जी ने उस कुकर्मी को कहा-हे भाई ! तुम ने पूव जन्म में एक मोहर दान की थी, जिस के फल से तुमें मोहरों का भरा हुवा पुरवा मिलना था। अब तुम कुकर्म करने लग गये, जिस से सभी मोहरें कोयला बन गई हैं। तथा यह जो प्रेमी हमारे दर्शणों को आता है, इस के भाग्य में शूली पर चढ़ना लिखा था। जो सतसंग के प्रभाव से शूली का शूल हो गया है। जब गुरू जी के श्री

मुख से उनों ने यह बचन सुने तो दोनों ही अचंभे में आ गये, तथा गुरू जी के चर्णों पर गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगे। गुरू जी ने उन दोनों ही सिखों पर अपनी कृपा दृष्टी का संचार किया, तथा पवित्र नाम का उपदेश दिया। दोनों ही गुरू जी की सेवा तन मन से करने लगे। फिर गुरू जी ने एक शब्द उच्चारण किया–

॥ राग मारू महला १ ॥

करणी कागद मन मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए। ज्यों ज्यों किरत चलावै त्यों चलहि तो गुण नाही अंत हरै ॥ रहाउ ॥ जाली रैण जाल दिन होया जेती घड़ी फाही तेती। रस रस चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुनी ॥१॥ काया अहिरन मन विच लोहा पंच अगनि तित लाग रही। कोयले पाप परहि तिस ऊपर मन जलिआ सन्नी चिंत भई। भया मनूर कंचन फिर होवै जे गुर मिले किनेहा। एक नाम अमृत तिस देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥ ४ ॥

इस के पश्चात चुमासा व्यतीत होने पर गुरू नानक देव जी हम दोनों को साथ लेकर तथा उन दोनों सेवकों को परमोतम उपदेश से कृतार्थ करके उस स्थान से फिर आगे की ओर रवाना हो गये।

॥ साखी श्री गंगा जी की ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज अनेक स्थानों में भ्रमण करते २ तथा कलियुग के अन्य जीवों का उद्धार करते करते एक दिन हरिद्वार तीर्थ पर आ गये। गंगा नदी में नर नारी स्नान करते देखे तथा अनेकों पुरुष सूरज की ओर अपना मुख करके जल छोड़ते देखे। उन लोकों की ओर देख कर गुरू जी ने सत्य मार्ग का उपदेश देनें का सुंदर अवसर देख कर अपने वस्त्र उतारे और गंगा नदी में स्नान करने लगे। स्नान के पश्चात अपनी कर अंजली में जल लेकर पश्चिम की ओर मुख करके पानी देने लगे। गुरू जी के इस कृत्य को देख कर कुछ लोग अचंभित हुवे। तथा पूछने

॥ गुरू जी की तीर्थ यात्रा ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज हम लोगों को साथ लेकर एक ऐसे तीर्थ पर गये जहां बड़ा भारी मेला हो रहा था, गुरू जी ने अपने दिव्य नेत्रों से समस्त मेले को देखा। परंतु वहां एक भी परमेश्वर का भक्त न पा कर वहां से आगे रवाना हुवे, क्योंकि महा पुरषों का मिलाप तो महा पुरषों से होता है, जैसे बाज़ पत्ती बाज़ों के साथ और कबूतर कबूतरों के साथ ही व्योम विचरण करते हैं।

इस के पश्चात गुरू जी कुरू त्तेत्र में जा पधारे, वहां पर ग्रहण काल के समय अनेकों साधु तथा सद गृहस्थ उपस्थित थे, वहां पटने नगर के राजा का पुत्र दुशमणों से भयभीत हो कर आया था। वह आता हुवा मार्ग में से एक हरण का शिकार करके साथ ले आया था, उसके पास और संपदा नहीं थी। तथा दुखी था, उस ने श्री गुरू नानक देव जी को देख साष्टांग प्रणाम किया, और वही हरण जो उस ने मारा था। वह गुरू जी की भेंट किया, उस समय गुरू जी ने कहा—हे बाला! हम लोग यहां सूर्य ग्रहण को पूजन करने नहीं आये, तुम इस हरण को चुल्ला जला कर हांडी बनाओ। मैं ने (बाले ने) गुरू आग्या से हांडी चढ़ा दी। जब अन्य लोगों और विशेष करके सन्यासीओं ने देखा तो लठ लेकर लड़ने मरने को आ गये, और कहने लगे—तुम कौन हो। जो आज सूर्य ग्रहण के दिन कुरुत्तेत्र की पवित्र भूमी पर यह क्या कर रहे हो? हमें बताओ कि इस हांडी में क्या तैयार कर रहे हो। गुरू जी ने कहा—हांडी में मांस बनाया जा रहा है। सन्यासी बोले तुम तो हिंदू नज़र आते हो फिर सूर्य ग्रहण का आज दिन हैं। और तुम खाने के लिये मांस बना रहे हो, गुरू जी ने उतर दिया कि तुम साधु नज़र आ रहे हो। किंचित ग्यान से बात करो, प्रथम तो तुम को क्रोध चंडाल हो रहा है। सुनो और ध्यान लगा कर सुनो। बाले ने कहा—हे साधुओ! बैठ कर बात करनी उचित है, उस समय श्री गुरू जी ने नीचे

लिखा श्लोक उचारण किया—

मलार की वार श्लोक महला १ ॥

पहिला मासहुं निंमिआं मासै अंदर वास । जीअ उपाइ मास मुहि मिलिआ हड चम तन मास । मासहु बाहर कडिआ मंमा मास ग्रास । मुहि मासे का जीभ मासै की मासै अंदर सास । वडा होया विआहया घर लै आया मास । मासहु मास ऊपजै मासहु सभै साक । सतिगुर मिलिऐ हुकम बुझिऐ ताको आवै रास । आप छुटे नहीं छुटिऐ नानक वचण विणास ॥१॥ मास मास कर मूरख झगड़े ग्यान ध्यान नहीं जाणे । कौण मास कौण साग कहावे किस में पाप समाणे । गैंडा मार होम जग कीये देवतियां की वाणे । मास छोड़ घैस नक पकड़हि राती माणस खाणे । फड़ कर लोकां ने दिखलावैं ग्यान ध्यान नहीं सूझै नानक अंधे स्यो क्या कहीये कहै न कहिआ बूझै । अंधा सोइ जि अंध कमावै तिस रिदै सिलोचन नाही । मात पिता की रकत निपिने मच्छी मास न खाही । इसतरी पुरुषै जा निसि मेला ओथे मंद कमाही । मासहुं निंमे मासहुं जम्मे हम मासै के भांडे । ग्यान ध्यान किछ सूझै नाही चतर कहावै पांडे । बाहर का मास मंदा स्वामी घर का मास चंगेरा । जीअ जंत सब मासहु होए जीअ लइआ वासेरा । अभख भखहि भख तज छोड़े अंध गुरू जिन केरा । मास पुराणी मास कतेबी चहु जुग मास कमाणा । जजि काज वीआहु सुहावै ओथे मास समाणा । इसत्री पुरुष निपजै मासहु पातशाह सुलताना । जे उह दिसहि नरक जांदे तां उन का दान न लैना । देंदा नर्क सुरग लैंदे देखहु इह इह धिगाणा । आप न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा । पांडे तू जानहि ही नाही किथहु मास उपन्ना । तोइअहु अन्न कमाद कुपाहा तोइअहु त्रिभुवन गन्ना । तो आखै हउ बहुविध हच्छा तोइऐ बहुत विकारा । एते रस छोड़ होवै सन्यासी नानक कहै विचारा ॥१॥

यह शब्द सुण कर उन तमाम सन्यासीओं की तृप्ती हो गई । और कोई भी उतर नहीं आया । तब सभी नर नारी श्री गुरू जी के चर्णों पर

गिर गये। पटने का राजा और उस की माता अत्यंत नम्रता से गुरू जी के चर्णों पर लग गये, तब गुरू जी ने उन को वर दिया और कहा कि तुम नाम जपो तब तुमारा भला होगा। और छिना हुवा राज्य तुमे फिर से प्राप्त होगा। इतने में ग्रहण हट गया, तब सब साधुओं को उसी राज कुमार के हाथ में से निकलवा कर परोसा किया गया। अचंभा यह था, कि हांडी में से जब बाहर निकालो तो वह उत्तम खीर (तस्मै) हो गई, यह देख कर सभी नर नारीयों की श्रद्धा अपार गुरू चर्णों में हो गई, और धन्यवाद के गगण भेदी जयकारे लगाये गय। इस प्रकार कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमी पर जहां हज़ारों वर्ष पूर्व श्री कृष्ण भगवान ने गीता का गीत गाया था, वहां कलयुगी जीवों के कल्याणार्थ श्री गुरू नानक देव जी ने पवित्र उपदेश किया, धन्य श्री गुरू नानक देव जी महाराज।

॥ मथुरा पुरी की साखी ॥

एक दिन दीन दुनी के दाता श्री गुरू नानक देव जी महाराज कहने लगे-हे बाला! चलो तुम को उस नगरी की ओर ले चलें जहां श्री कृष्ण भगवान ने द्वापर युग में अवतार धारण किया था, उस नगरी का पवित्र नाम मथुरा पुरी है। इसी पुरी में यमुना नदी बहती है, जहां गोवर्धन पर्वत पर श्री कृष्ण वासुदेव ने गैया चराईं थीं। और अनेक कौतुक करके कंस को मार कर भूभार उतारा था, उपदेश करते करते श्री गुरू जी मथुरा पुरी में आ गये।

मैं ने गोवर्धन परबत को देख कर गुरू जी से प्रार्थना की हे महाराज! यह पर्वत यहां कैसे आ गया? गुरू जी ने फरमाया-हे बाला जब राजा राम चंद्र जी ने लंका पर चढ़ाई करने के लिये समुंद्र पर पुल बांधा था तब सभी कपियों को आग्या हुई कि जहां पर पर्वत हो वहां से जा कर ले आओ, जब हनुमान जी यहां इस पर्वत को लेने आये तो इस पर्वत ने कहा-हे भ्राता! मुझे कहां ले जाना चाहते हो? तब हनुमान ने कहा तुमें श्री राम

चंद्र के चर्णों में ले जाऊंगा। और तुमें भगवान के दर्शण होंगे, यह कह कर गोवर्धन को उठा लिया, जब इस मथुरा पुरी के निकट हनुमान आया तो राम भगवान ने आग्या दी कि अब पहाड़ों की आवश्यकता नहीं हैं। जहां जहां जो कोई पर्वत ला रहा है उसी जगा छोड़ कर शूरवीर जलदी हमारे पास आ जायें हनुमान जी ने प्रभु आग्या सुनी तो पर्वत को यहीं धर कर स्वयं बैठ गया। यहां से प्रार्थना कर भेजी, हे प्रभो! मैं ने इस गोवर्धन से प्रण किया था कि आप के दर्शण करवाऊंगा, अब क्या करूं। मेरा प्रण नाश होता है, तब राम भगवान ने कहा-हे महा वीर! तुम गोवर्धन को यमुना तीर पर छोड़ आओ। हम द्वापर युग में इस पर्वत पर अनेक लीला करेंगे। तब तुमारा प्रण पूर्ण होगा, इस के पश्चात हे बाला! द्वापर में श्री कृष्ण भगवान ने इस पर्वत पर अनेक लीला कीं थीं।

इस के पश्चात गुरू जी ने यमुना घाट पर स्नान किया, और सभी स्थान तथा मंदिर देखे, लोभी लंपट और बुरे लोक भी देखे, जो पवित्र तीर्थ पर भी अपने कुकर्मों को करके नर्क की तैयारी कर रहे थे, परमेस्वर का प्यारा एक भी नहीं मिला। वैरागी और दूसरे साधु गृहस्थी होकर दुशकर्म में रत देखे। कार्तिक पुरवी का मेला देख कर श्री गुरू जी ने अपने मुखारविंद से एक पवित्र शब्द उचारण किया-

॥ शब्द ॥

सोई चंद चढ़हि से तारे सोई दिनीअर तप्त रहे। साधरती सो पौण झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे। जीवण तलब निवार। होवहि परवाणा करहि धिङाना कल लखण विचार॥ रहाउ॥ कितै देस न आइआ सुणीऐ तीरथ पास न बैठा। दाता दान करहि ते नाहि महिल उसार न बैठा॥२॥ जे को सत करै सो छीजै तप घर तप न होई। जे को नाउ लए बदनावी कलके लखण एई॥ ३॥ जिस सिकदारी तिसै खुआरी चाकर के हे डरना। जा सिकदौर पवै जंजीरी तां चाकर हथहु मरना॥ ४॥ आख गुणा कली आईऐ। तिहु जुग केरा रहिआ तपावस जे गुण देह तपाईऐ॥ ५॥ कल

कल वाली सरा नबेड़ी काजी क्रिशना होया। बाणी ब्रहमा बेद अथरवण करनी कीरत लहिआ॥ ६॥ पति बिनु पजा सति बिण संजमु जत बिण काहे जनेऊ। नावहु धोवहु तिलक चढ़ावहु सति बिण सोच न होऊ॥ ७॥ कल परवाण कतेब कुराण। पोथी पंडित रहे पुराण। नानक नाउ भया रहिमाण। कर करता तू एको जाण॥ ८॥ नानक नाम वडिआई एदू ऊपर कर्म नही। जे घर होंदे मंगण जाइए फिर उलामा मिलै तही॥ ६॥

॥ आगे वारतिक॥

जब श्री गुरू जी महाराज ने ऊपर लिखा शब्द उचारण किया तो सभी लोग गुरू जी के चर्णों पर गिर गये। तो गुरू जी ने कहा, हे भाई परमात्मा के नाम जपने से ही मोक्ष मिल सकता है। तथा नाम स्मर्ण से सुख और बड़ाई प्राप्त होती हैं, नाम स्मर्ण के समान और कोई भी महान कर्म नहीं है। परमेश्वर महात्माओं के मन में निवास करता है। इस लिये सतसंग करो, और प्रभू नाम स्मर्ण करो, बांट कर खाना तथा संतों की सेवा यही कल्याण का मार्ग है, फिर गुरू जी ने एक और शब्द उचारण किया—

॥ शब्द॥

सुणि सुणि बूझै मानै नाउ। ता कै सद बलिहारै जाउ। आप भुलाए ठौर न ठाउ। तू समझावै मेल मिलाउ। नाम मिलै चलै मै नालि। विन नावै वाधी जमकाल॥ रहाउ॥ खेती वणज नांवै की ओट। पाप पुन्न बीज की पोट। काम क्रोध सीतल साच प्रीत। जल पुरायण रस कमल परीस। सबदि रते मीठे रस ईख। हुकम संजोगी गड़ दस द्वार। पंच वसहि मिल जोति अपार। आप तुलै आपे वणजार। नानक नाम सुवारणहार॥ ४॥ १॥

वारतक॥

अर्थात जो परमेश्वर का नाम जपते हैं तथा उसी के आश्रित रहते हैं। और उसी से प्रीति करते हैं, उन महा पुरुषों के सभी कार्य सुधरे रहते हैं, जब गुरू जी वहां से चले तब एक पंडित से कुछ बातें हुईं। वह पंडित

काशी का विद्वान था, उस ने कहा-हे संतवर ! इस काशी पुरी का महात्म्य तो वेदों के अंदर भी पाया जाता है, जो पुरुष चाहे कितना भी पापी हो। परंतु यहां शरीर त्याग करने से मुक्त हो जाता है । क्यों कि मरते समय जो तारक लोग होते हैं वह राम नाम का पवित्र मंत्र सुना देते हैं। तव गुरू जी ने कहा-हे पंडित जी ! परमात्मा का नाम ऐसा है, जिस को स्वयं परमात्मा ने वरनण किया है। उसे जो कोई सुने अथवा सुनावे, उसे तुरंत ही मोक्ष देता है।

गुरू जी कहने लगे-हे पंडित जी भक्त कबीर इसी काशी को त्याग कर मगहर धरती पर जाकर बसने लगे थे तथा वहां परमात्मा के नाम से तथा सत्संग के प्रभाव से मुक्त हो गये थे, इस लिये ईश्वर नाम ही तारने वाला है उसी के आश्रित अनंत जीव कल्याण को प्राप्त कर गये हैं। काशी में मरने से मुक्ति नहीं मिलती। मुक्ति देने की शक्ति उसी परमात्मा में है। तव पंडित जी ने कहा-ईश्वर के नाम तो अनेक हैं। आप वताओ कि वह कौन सा नाम है,जो मुक्त करता है? गुरू जी ने फरमाया-हे पंडित जी नदी के तट पर अनेकों वेड़े (नाव) होते हैं। मुसाफर किसी पर वैठ जाए। वह उसे पार ले जायगा। इसी प्रकार परमात्मा के सभी नाम भव सागर से पार ले जाने की शक्ति रखते हैं। फिर जो गुरुमुख से परमात्मा का नाम सुना है। उस में तो अपार शक्ति होती है। इस प्रकार गुरू जी का उपदेश सुन कर सभी पंडित बहुत ही प्रसन्न हुए। और सभी शंकायें दूर हो गई तथा श्री गुरू नानक देव जी महाराज केअनन्य भक्त हो गए।

॥ साखी-गुरू जी गया तीर्थ पर गये ॥

भ्रमण करते २ हम लोग गुरू जी के साथ गया तीर्थ पर पहुंचे। मैंने (वाला) गुरू जी से पूछा हे गुरू देव ! इस गया तीर्थ का वनना सुनने की मेरी इच्छा है। गुरू जी ने कहा-हे वाला गया शिर नाम का दैत्य हुआ है; उस ने परमात्मा का तप वहुत काल तक किया। उस की भक्ति चर्म

सीमा तक पहुंच गई थी। तब विश्नु जी ने प्रसन्न होकर कहा—हे दैत्य हम तुम पर बहुत ही प्रसन्न हैं बर मांगो! दैत्य ने कहा कि यदि आप कुछ देना चाहते हो तो मैं यह मांगता हूँ। कि इस संसार का कोई भी जीव नर्क में न जाए। विश्नु ने कहा— कि हम यही वर दे दें। तो मर्यादा भंग होती है, यदि किसी को पाप का फल न मिलेगा। तब ईश्वरीय नियम समाप्त हो जायगा। तब गया शिर दैत्य ने कहा हे महाराज। आप सभ जीवों के पाप पुन्य मुझे दे दो। तब विश्नु जी बोले—हे दैत्य तुम इसी स्थान पर शयन करो। तब जो प्राणी इस जगह आपना शरीर त्यागन करेगा। वह मेरे धाम को जायगा। और जो पुरुष यहां पिंड दान श्राद्ध आदिक शास्त्रानुसार करेगा। उस के पितरों का उद्धार हो जायगा। और उसे भी सुख होगा।

जब यह कथा गुरू जी ने सुनाई। तब बाले ने कहा—हे गुरू देव! आप धन्य हो, फिर गया के पंडितों ने गुरू जी से प्रार्थना की, कि आप भी अपने पितरों के श्राद्ध-पिंडादिक यहां कराओ, गुरू जी ने उतर दिया—हम ने अपने पितरों का कल्याण पहिले ही कर छोड़ा है। इस के अतिरिक्त हम ने तो अपने तमाम सिख सेवकों का और उन के पितरों का भी उद्धार कर दिया हुआ है, हम ने तो ऐसी क्रिया कर्मादिक किया है, कि ग्यान ज्योति से समस्त अंधेरा मिटा छोड़ा है, फिर गुरू जी ने एक पवित्र शब्द उचारण किया—

॥ शब्द ॥

दीवा मेरा एक नाम दुख विच पाया तेल। उन चानन ओह सोखिआ चूका जम सो मेल ॥१॥ लोका मत को फकड़ पाय। लख मड़िआ कर एकने एक रतीले भाय ॥१॥रहाउ॥ पिंड पतल मेरी केसो किरिआ सच नाम करतार। ऐथै ओथै आगे पाछै एह मेरा आधार ॥२॥ गंग बनारस सिफत तुमारी नावै आतम राउ। साचा नावन तां थीए जा अहिनिस लागै भाउ ॥३॥ इक लोकी होर छम छरी बाहमण वट पिंड खाइ। नानक पिंड

बखसीस का कवहु निखुटस नाहि ॥४॥१॥

॥ वारतक ॥

जब गुरू जी महाराज ने इस प्रकार अपने पवित्र उपदेश की ज्योति जगाई। तब तमाम पंडित गुरू जी के चर्णों पर झुक गये। गुरू जी ने कहा–आप सभी परमात्मा का जप करो, तथा उसी की अनन्य भक्ति से मोक्ष प्राप्त करोगे। कामनाओं के त्याग से और अभ्यास परायणता से कल्याण होता है। परमात्मा के नाम स्मर्ण से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं,यह सुन कर तमाम लोग गुरू जी के सिख बन गये। तथा गुरू चर्णों में झुक गये।

॥ साखी जगन्नाथ की यात्रा ॥

इस के पश्चात गुरू जी यात्रा करते २ जगन नाथ पुरी जा पहुँचे। जब गुरू जी मंदिर के भीतर जाने लगे तब वहां के पुजारियों और पंडितों ने गुरु जी को आगे से रोक लिया। तब गुरू जी ने कहा–हे बाला चलो हम बाहर ही बैठ जाते हैं। जगन नाथ आप हमें बुलायेगा। यह कह कर गुरु जी बाला और मर्दाना बाहर ही एक चबूतरे पर बैठ गये। जब जगन नाथ को भोग लगाने का समय आया। तब ठाकुर जी को भोग नहीं लगता था, तब पुजारीयों ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की–कि हे ठाकुरो! आज हम से कौन सी अवज्ञा हुई है? जो आप भोग स्वीकार नहीं करते। जब उनों ने बहुत गिड़ गिड़ाना प्रारंभ किया। तब जगन नाथ जी ने उतर में आकाश वाणी द्वारा कहा–कि तुम ने हमारे परम प्यारे श्री नानक देव निरंकारी को रोका है। बस यह बहुत ही भारी अवग्या की है, अब तुम निरंकारी जी को मेरे सन्मुख सन्मान से ले कर आओ तब तुमारा भोग स्वीकार किया जायगा।

जब जगन नाथ जी का यह फरमान हुआ, तभ सभी पंडित श्री गुरू जी के पास आ कर गल में दोपटे डाल कर चर्णों पर गिर पड़े। एवम त्राहिमां त्राहिमां शब्द कहने लगे। तथा प्रार्थना की कि आप ठाकुर जी

की आग्या मान कर तथा हमारे ऊपर अनुकंपा करके भीतर चलो। तुमारे जाने से ही ठाकुर जी भोग लगायेंगे। गुरू जी ने कहा-आप ने तो हमें भीतर जाने नहीं दिया। हम ने ठाकुर जी को अपने मन में बिठा लिया है। तथा हम नहीं जायेंगे। अब तमाम पुजारी तथा पंडित एवम अन्य प्रतीष्ठित पुरुषों के साथ आकर गुरू जी से अनुनय विनय करने लगे। और कहा-आप हमारी भूल को क्षमा करें, तब गुरू जी जो महान संत स्वभाव के थे। उठ कर अंदर गये। तथा गुरू जी ने प्रसाद को हाथ लगा कर कहा-जो मेरा सिख यहां पर आये उसे किसी प्रकार का प्रतिबंध न हो।

इस के पश्चात भोग लगाया गया, जब आरती हुई तो सभी लोग खड़े हो गये, परंतु गुरू जी वहीं बैठे रहे। तब पंडितों ने कहा-हे गुरु देव! आप आरती के समय खड़े नहीं हुए। गुरू जी ने उतर दिया-हम परमेश्वर की आरती मन से करते हैं, और आप मनुष्य की आरती दिखावे से करते हो, तब उन पंडितों ने कहा-हे गुरु देव! आप आरती करो या न करो, आप पर भगवान बोधा अवतार सदैव ही प्रसन्न हैं। जो कुछ भी आप करोगे सत्य ही करोगे। फिर गुरू नानक देव जी महाराज ने एक पवित्र शब्द कहा-

शब्द राग धनाश्री ॥ गगन में थालु रवि चंद दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती। धूपु मल आन लो पवनु चवरो करे सगल बन राय फूलंत जोती। कैसी आरती होय भव खंडना तेरी आरती अनहता शब्द वाजंत भेरी॥ रहाउ॥ सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही। सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही।२। सभ महि जोति जोति है सोइ। तिस दै चानण सभ माहि चानणु होइ। गुर साखी जोति परगट होइ जो तिस भावै सो आरति होइ॥ ३॥ हरि चरन कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा। किरपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरे नाइ वासा॥ ४॥

॥ वारतक ॥

यह पवित्र आरती सुन कर सभी गुरू जी के चर्णों में प्रणाम करने लगे। फिर गुरू जी वहां से बाहर आ गये। तथा वहां एक सुंदर बावली बनवाई ॥ इस बावली का परम सुंदर मीठा जल आज तक चला आ रहा है। फिर गुरू जी ने कहा-कि यहां जो भी हमारा सेवक आये। उसे हर प्रकार से खान पान आदिक से सम्मानित किया जाये। फिर गुरू जी ने एक शब्द कहा-

॥ शब्द ॥

रुत्त आइले सरस बसंत माहि। रंग राते रवहि से तेरै चाइ। किस पूज चढ़ावहु लगहु पाइ। तेरे दासन दासा कहउ राइ। जग जीवन जुगत न मिले आइ। तेरी मूरत एका बहुत रूप। किस पूज चढ़ावहु देउ धूप। तेरा अंत न पाया कहा पाइ। तेरे दासन दासा कहउ राइ। तेरे सठ संवत सभ तीरथा। तेरा सच नाम पर मेसरा। तेरी गति अवगति नहि जानिएं। अन जानत नाम वखानिए। नानक विचारा क्या कहै। सब लोक सलाहे एक सै। सिर नानक लोकां पाव है। बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है।

वारतक ॥

यह पवित्र शब्द सुन कर सभी श्रोता अत्यंत प्रसंन होकर गुरू जी के अनुयाई हो गये, फिर गुरू नानक देव जी श्री जगन नाथ जी के दरशण करके वहां से चल दिये।

॥ साखी अयोध्या पुरी की ॥

अब गुरू जी अयोध्या नगरी में आये। गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! यह महाराजा रामचंद्र जी की नगरी है, यहां त्रेता युग में राम अवतार हुए थे। फिर गुरू जी सरयू नदी के तट पर जा बैठे। बाले ने प्रश्न किया-हे गुरु देव! राम जी तो अयोध्या नगरी को अपने साथ ही ले गये थे, फिर यह नगरी यहां कैसे आ गई?

गुरू जी ने कहा–हे बाला ! मर्यादा पुरुषोतम श्री राम चंद्र जी मकानों को साथ नहीं ले गये थे। अपितु यहां के जो धर्मात्मा नर नारी थे, वही राम भगवान के साथ साकेत लोक को गये थे, यदि तुम लोग भी परमात्मा का स्मर्ण करो और गुरू गोविंद की शरण गहो । तो तुम भी बैकुंठ को प्राप्त कर सकते हो, फिर कुछ लोगों ने प्रश्न किया हे महाराज गुरू कितने प्रकार के हैं, गुरू जी ने कहा–हे भाई ! गुरू तीन प्रकार के होते हैं, पहिला गुरू तो पंडित होता है परंतु यह पंडित लोग दूसरों को उपदेश करते हैं स्वयं उस पर आचर्ण नहीं करते। उन से मिलने पर पुन्य ज़रूर है, परंतु सद्गति नहीं होती। और अवधूत गुरू है, उन के विद्या रूपी हाथ पांव नहीं होते। वे अपना उद्धार किसी संत की कृपा से कर लेते हैं। परंतु दूसरों को पार नहीं कर सकते। और जो महापुरुष हैं वह जहां अपना कल्याण करते हैं, तहां दूसरों को भी सत्य नाम का उपदेश देकर संसार से पार करने को सामर्थ्य रखते हैं। अर्थात प्रथम नंबर के दूसरों का कल्याण करते हैं, और द्वितीय नंबर के अपना ही कल्याण करते हैं, परंतु अंतिम जो हैं वे अपना और दूसरों का कल्याण कर देते हैं, यह पवित्र उपदेश सुन कर सभी गुरू जी के चर्णों में पड़ गये, तथा प्रार्थी हुए, हे गुरू देव ! आप हमारा कल्याण करें। आप महा पुरुष हैं, तब गुरू जी प्रसन्न होकर बोले। हे भाई ! आप सभी पहिले इस संसार को अनित्य मानों। तथा अतिथी की सेवा करो, तथा मन से प्रभु स्मर्ण करो । जो कुछ मिले वह बांट कर खाओ, धर्म की और मर्यादा की कमाई करो। इस प्रकार उपदेश देकर गुरू जी महाराज बाला और मर्दाना दोनों को साथ लेकर चल दिये।

॥ साखी प्रयाग राज की ॥

अब सतगुरु श्री नानक देव जी प्रयाग राज (इलाह बाद) पौंहचे । गुरू जी के निकट बड़े २ विद्वान धर्म चर्चा के लिये आये। तब गुरू जी

ने उस वाहिगुरु के दरबार में प्रार्थना की। हे जगत पिता ! कोई तो संस्कृत का पंडित है, तथा कोई वेद पुराणों को पढ़ने पढ़ाने वाला है । तथा कोई गुप्ती लेकर अनेक प्रकार के यप करने में दक्ष है । कोई त्रिकुटी आदिक का अभ्यास करने वाला है, परंतु मैं तो आप के नाम स्मर्ण के विना कुछ भी नहीं जानता। मुझे तो सदैव आप के नाम का ही सहारा है। मैं नहीं कह सकता कि मेरी क्या गति होगी ? मैं मूरख हूँ अग्यानी हूँ। परंतु तेरा नाम तनमन से जपता हूँ। मेरा मन संकल्प विकल्पों से वंधाहुआ है। परंतु तेरी शरण हूं। तेरी कृपा से मेरी लज्जा अवश्य रहेगी । यह मुझे पूर्ण विश्वास है। यह प्राणी घटी यंत्र की न्याईं चलता है। और जीवन के दिन पूरे करता है। परंतु नाम स्मर्ण नहीं करता। कर्म चक्र में भटकना इस का काम प्रारंभ से चला आया है। जब से यह जीव माता के गर्भ में आया। तभी से इस के शिर पर मृत्यु चक्र काट रही है। परंतु यह अग्य जीव अपने जीवन के तथ्य सोचता सोचता एक दिन काल का ग्रास हो जाता है। अपने नेत्रों से अन्य लोगों को मरते देखता भी अपनी मौत से वे-खबर है। नाम स्मर्ण नहीं करता। यह समझता है कि यह मेरे माता पिता भाई पुत्र नारी आदिक मेरी सहायता करेंगे। परंतु यह सभी विचार मिथ्या हैं। जिन को प्रभु कृपा से नाम दान प्राप्त होता है, वही नाम इस प्राणी का सहायक वनता है। दूसरा कोई नहीं वनता नाम स्मर्ण से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार का सद उपदेश सुन कर सभी पंडित तथा अन्य लोग कृत कृत्य हो गये, और गुरू जी के चर्णों में प्रणाम करके गुरू जी के अनुयाई हो गये, तथा कहने लगे आप कृपया हमारा कल्याण करो, गुरू जी ने कहा वस मेरा तो यही कैहना है कि आप उस परमेश्वर की अनन्य भक्ति करो। तन मन से नाम स्मर्ण करो, बस इसी में ही कल्याण है। अभिमान त्यागो। अतिथी का सतकार करो वांट कर खाओ, पापों से डरो, इसी में कल्याण है, इस उपदेश से सभी लोग गद गद प्रसंन हुवे, अव गुरू जी

वहां से चल दिये, तथा अनेकों तीर्थों में सद उपदेश देते हुवे पंच बटी अगस्ताश्रम में पधारे। संत जनों को दर्शण और प्रभु चर्चा यही लक्ष रहा, अब गुरू जी कारू देश की ओर चले।

॥ साखी त्रिया राज की ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज भ्रमण करते करते कारू देश में जा पौंहचे, जब वहां तीन चार दिन हो गये, तब भाई मर्दाना ने कहा हे महाराज आप तो पवन के आहार से ही संतुष्ट रह सकते हो। परंतु मुझे तो भूख ने अति दुःख दे रखा है। आप कुछ मेरी भूख की समस्या को ठीक करो, यह नगर बहुत ही सुंदर नज़र आ रहा है। यदि आप की आग्या हो तो मैं नगर में जाकर कुछ पेट पूर्ण करने का प्रयत्न करूं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! इस नगर में जाना अच्छा नहीं है। मर्दाने ने कहा हे गुरू देव ! जब कोई वस्ती आती है तभी आप यही कहते हैं कि इस में न जाओ। आप को तो निर्जन स्थान ही अच्छा लगता है, गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! जैसे तुमारी इच्छा वही करो, तब भूखा मर्दाना एक मुहल्ले में चला गया।

आगे चार स्त्रियें मिलीं जो आपस में हास्य विनोद कर रहीं थीं। मर्दाने को देख कर एक ने कहा इस को मैं ले जाऊंगी, दूसरी ने कहा—मैं इस को ले जाऊंगी। इस प्रकार वे बातें करती थीं, एक ने मर्दाने को आवाज़ दी तब भूखे मर्दाने ने समझा कि यह कुछ मुझे देना चाहती है, जब मर्दाना उस के निकट गया, तब उस औरत ने मर्दाने के कंठ में एक धागा बांध दिया। बस उसी समय मर्दाना एक बकरा बन गया, तब उस औरत ने मर्दाने को जो बकरा बना हुआ था, उसे लाकर अपने मकान पर एक चोखट के साथ बांध दिया। तथा वह स्वयं जल भरने को चली गई। मर्दाना दुखी हो कर गुरू जी को याद करने लगा, और नेत्रों से आंसू बहाने लगा।

इधर गुरू जी ने कहा–हे बाला ! मर्दाने को गये एक प्रहर के लगभग हो चुका है। अभि तक लौट कर नहीं आया। हे बाला ! हमें भाई मर्दाना खाबा सुनाया करता था यह नगरी जादू टोने करने वालों की है। क्या जाने मर्दाना भी किसी जादू द्वारा बकरा बना दिया हो। इतनी कह कर दयालु गुरु देव उठ कर चलने को तैय्यार हो गये। तथा कहने लगे हे बाला ! चलो मर्दाने की देख भाल करें। तब बाले ने कहा– हे महाराज ! हम मर्दाने को कहां खोजेंगे ? तब गुरु जी ने मुस्करा कर कहा–हे बाला ! हमारे मर्दाने को किसी ने बकरा बना कर बांध रखा है मैनें कहा हे महाराज जो आप की आग्या नहीं मानेंगा वह बकरा ही बनेगा। गुरू जी की आग्या से बाला गुरू जी के साथ उस नगर में मर्दाने को भाल को चले।

गुरू जी और बाला जब नगरी में गये। तो वहा अरोतें इन को भी मिलीं। गुरू जी ने उन से पूछा–कि यहां एक हमारा आदमी आया था। क्या तुमें उस का कोई पता है ? वे नट खट औरतें कहनें लगीं हम ने तो किसी मनुष्य को नहीं देखा। इतनी कह कर एक औरत भाई वाले के कंठ में एक धागा बांधने लगी। वह उसी समय कुती वन गई। और एक ज़नानी गुरू के निकट आ कर धागा बांधने लगी–तो वह खोती (गधी) बन गई। उस समय श्री सर्व शक्तिमान गुरु देव ने एक श्लोक उच्चारण किया–

श्लोक (शब्द) कल्लर कीयां वणजारीयां झूठे मुशक मंगेन। अमलां वाहजों नानका क्यों कर कंत मिलेन ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

जब यह श्लोक उच्चारण किया। तो वह औरत जिस ने मर्दाने को वकरा बना कर बांध रखा था,उस के शिर पर जो जल का घट था,वह शिर के साथ ही चिपट गया। फिर उस की एक सहेली गुरु जी के कंठ में धागा बांधने आई तो वह ततच्चण बकरी बन गई। तब गुरु जी ने कहा बाला–यह जो साहमणे घर है वहां जा कर मर्दाना जो बकरा बना हुआ है उस

के गले में एक धागा है उसे तोड़ दो। गुरु जी की आग्या पाकर मैं घर के भीतर गया तथा मर्दाना जो बकरा बना हुआ था। उस के कंठ का धागा तोड़ डाला। फलता बकरे से फिर मर्दाना बन गया। जब गुरु जी के निकट आया, तब गुरु जी ने कहा-सुना भाई क्या हाल है? मर्दाने ने कहा-वाह गुरु देव! आप धन्य हो, जो हमें इन बलाओं में लिये फिरते हो गुरुजी ने कहा हे मर्दाना! हम ने तो रोका था,मगर तुम स्वयं ही आकर फंस गये तो हम क्या करें।

इस के पश्चात उन स्त्रियों के पति घर में आये, तो क्या देखते हैं कि वहां औरतों के स्थान पर कुतियें और बकरीयें हैं, तथा एक के शिर से जल-घट चिमटा हुआ है। वहां एक औरत जिस का नाम दरगाह नूर शाह था वह सब की सर्दार जादूगर थी। उसे यह सूचना मिली कि एक हमारी साथन के शिर से जल-घट चिमट गया है, तो उस ने आग्या दी कि मेरी सभी कार्य कर्तायें वहां जा कर उस के शिर से जल-घट को पृथक करें। नूर शाह की आग्या से सभी जादूगरनियें वहां आईं। कोई तो मृग छाला पर सुआर हो कर आई। तो कोई आकाश मार्ग से आई तो कोई ढोल बजाती आई। सभी ने अनेक यंत्र मंत्र किये। परंतु उस के शिर से जल घट नहीं उतरा। तथा वे जो कुतियें और बकरीयें बनी हुईं थीं। वे भी औरतें नहीं बनीं, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना! तुम परमात्मा को स्मण करके अपनी रबाब बजाओ, उस आज्ञा को मान कर मर्दाना रबाब बजाने लगा। और गुरू जी महाराज ने एक पवित्र शब्द उचारण किया।

॥ राग वडहंस महला १ ॥

गुणवंती सहु राविआ निरगुण कूके काइ। जे गुणवंती थी रहे तां भी सहु रावण जाइ ॥१॥ मेरा कंत रीसालू की धर अवरा रावै जीउ ॥१॥रहाउ॥ करणी कामन जे थीऐ जे मन धागा होइ। माणक मुल न पाइऐ लीजै चित पराेइ। राह दसाईना जुलां आखां अंवड़ी आस। तै सहि नाल अकूअणा

क्यों थीवै घर वास । नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ । तै सहि लगी जे रहै भी सहु रावैं सोइ ॥४॥१॥

॥ वारतक ॥

इधर तो गुरू जी शब्द उच्चारण कर रहे थे, और उधर वे सभी जादूगरनियें अपनी असफल चेष्टा कर रही थीं । जब कोई यंत्र मंत्रादिक सफल न हुए तब उन सब की सर्दार नूर शाह को खबर हुई । तब वह भी आई और अनेक अडंबर अपने साथ लाई, उस ने भी बहुत ज़ोर लगाया । परंतु सफल न हो सकी, तब गुरू जी ने एक और शब्द कहा-

राग सूही महला १ ॥

मंञ कुचजी अमावण डोसड़े हउ किउ सहु रावण जाउ जीउ । इक दू इक चड़ंदियां कौण जाणे मेरा नाउ जीउ । जिनी सखी सहु राविआ से अंबी छाड़वी एह जीउ । से गुण मंञ न आवणी हउ कै जीउ दोसु धरेउ जीउ । क्या गुण तेरे विथरा हउ क्या किआ घिना तेरा नाउ जीउ । इकत टोल न अंबड़ा हउ सद कुरबाने तेरे जाउ जीउ । सुइना रुपा रंगला मोती ते माणिक जीउ । से वस्तु सभु दितिआं मैं तिन सिउ लाया चित जिउ । मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रास जीउ । हउ एनी टोली भुलीआस तिस कंत न बैठी पास जीउ । अंबर कूंजां कुरलीआं बग बैठे आइ जीउ । साधन चली साहुरै क्या मुहि देसी अगै जाइ जीउ । सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ी आस जीउ । तै सहि नालो मुतीअस दुःखां कुधरि आस जीउ । तुद गुण मै सभ औगणा इक नानक की अरदास जीउ । सभ राती सोहागणी मैं दोहागण काई रात जीउ ॥१॥

॥ वारतक ॥

जब अनेक यंत्र मंत्रादिक करके नूर शाह भी पराजित हो गई तथा उस औरत के शिर से जल घट नहीं उतरा और न ही वे कुती बकरी गधी आदिक औरतें बनीं । तब उस नूर शाह ने बहुत दूर दूर से कमाल की कारीगर जादूगरनियें बुलवा लीं । वे सभी मिल के ढोलक बजाने तथा

अपने मंत्रों का उचारण करने लगीं, तब श्री गुरू नानक देव जी ने आगे लिखा एक और पवित्र शब्द कहा-

आसा महला १ ॥

ताल मदीरे घट के घाट । दोलक दुनीयां वाजहि वाज । नारद नाचै कल का भाउ । जती सती कहि राखहि पाउ ॥ १ ॥ नानक नाम विटहु कुरवान । अंधी दुनीआं साहिब जाण ॥१॥रहाउ॥ गुरू पासहु फिर चेला खाइ । तामि प्रीत वसै घर आइ । जे सौ वरिआ जीवण खान । खसम पछानै सो दिन परवान ॥२॥ दरसन देखिऐ दया न होइ । लए दिते बिन रहै न कोइ । राजा निआउं करे हथ धोइ । कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥३॥ मानस मूरत नानक नाम । करनी कुता दर फुरमान । गुर प्रसादि जाणै महिमान । तां किछ दरगह पावै मान ॥४॥१॥

इस के पश्चात गुरू जी ने एक और शब्द उचारण किया

॥ शब्द ॥

गली असी चंगेरीआ आचारी बुरी आह । मनहुं कुसुधां कालीआं बाहर चिट वी आह । रीसा करहि तिनाड़ीयां जो सेवहि दर खड़ी आह । नाल खसमै रतीआ माणहि सुख रली आह । होंदे तान निताणिआं रहहि निमाणड़ी आह । नानक जनम सकारथा जे तिन के संग मिलाहि ॥ १ ॥

वारतक ॥

अब नूर शाह ने विचार किया । कि इस साधू को माया जाल में बांधना उचित है । यदि इसे माया ने काबू कर लिया तो यह स्वतः हमारे आधीन हो जायगा । नूर शाह की आग्या से अनेकों जादु गरनीयें हीरे मोती आदिक जुवाहरात लेकर आ गई । तथा गुरू जी के आगे भेंट रख दीं । उस माया को देख कर गुरू जी ने निम्न लिखा शब्द कहा-

राग तिलंग महला १ ॥ इआनड़ीए मानड़ा काइ करेइ । आपनड़े घरि हरि रंगों की न माणेहि । सहु नेड़ै धन कमलीए वाहर क्या ढूंडेह । भै किआ देह सलाईआ नैणी भाव का करि सींगारो । तां सुहागणि जाणीऐ

लागी जा सहु धरे पिआरो ॥ १ ॥ इआणीं वाली क्या करै जां धन कंत न भावै। करण पलाह करै बहुतेरे साधन महिल न पावै। विण करमा किछु पाइऐ नाही जे बहुतेरा धावै। लब लोभ अहंकार की माती माया माहि समाणी। इनी वाती सहु पाइऐ नाही भई कामणी इआणी॥ २ ॥ जाइ पुछहु सुहागणी वा है किनी वाती सहु पाईऐ। जो किछ करै सो भला कर मननीऐ हिकमति हुकम चुकाईऐ। जाकै प्रेम पदारथ पाइये तउ चरणी चित लाईऐ। सहु कहै सुकीजै तनु मनु दीजै ऐसा परमल लाईऐ। एव करहि सोहागणी भैणे इनी वातीं सहु पाइऐ ॥ ३ ॥ आप गवाईऐ तां सहु पाईऐ और कैसी चतुराई। सहु नदरि करि देखै सो दिन लेखै कामणिनौं निधिपाई। आपणे कंत पिआरी सा सुहागणि नानक सा सभराई। ऐसे रंग राती सहजि की माती अहिनिस भाइ समाणी। सुंदर साइ सरूप बिचखण कहीऐ सा सिआणी॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

जब यह शब्द उनों ने सुने तो उन के पति जो कुती बकरी गधी बनीं हुई थीं। वे सभी गुरू जी के चणों में आ कर गिर गये, और धन्य२ कहने लगे। तब गुरू जी ने कहा–हे भाई ! यह जो माया आप लोगों ने हमारी भेंट की है, इस से एक धर्मशाला निर्माण करो, अभिमान त्यागो अतिथी सेवा सदैव करो। मन से मैल धो डालो, प्रभु नाम स्मर्ण किया करो। जब गुरू जी ने यह उपदेश दिया तो वे तमाम पुरुष भाई वाले के चणों में प्रार्थना करने लगे। कि आप गुरु देव से हमें क्षमा दिलवा दो। वाले ने कहा हे मित्रो ! गुरू जी अत्यंत दयालु हैं, आप उन से क्षमा याचना करो। आप पर अवश्य ही कृपा करेंगे। जब वे तमाम गुरू जी से प्रार्थी हुए। तब गुरू जी ने कहा–हे वाला ! जाओ उस के शिर से जल घट उतार दो। और उसी जल के छींटे सब पर डारो तब सभी पूर्व वत ठीक हो जायेंगी ! मैं ने गुरू जीकी आज्ञा का पालन करके जल घट उतारा और पानीके छींटे दिये, तब वे सभी नर नारीयें गुरू जी के सेवक बन गये, गुरू जी ने ईश्वर नाम

का उपदेश दिया, वहां एक धर्मशाला बनवाई गई। नूर शाह को गुरू जी ने कहा–देखो जो कोई हमारा सिख यहां आये, तो उसे दुःख नहीं देना होगा, नूर शाह ने कहा–हे महाराज ! यदि आप का कोई कुत्ता भी यहां आयेगा तो उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा तथा उस की भी पूजा की जायगी, फिर गुरू जी उस प्रदेश से चलने को तैयार हो गये।

॥ साखी जिमिंदार भूमीएं की ॥

ढाका प्रदेश में एक भूमीयां नाम का डाकू रहता था, वह दिन को डकैती करता और रात्री को चोरी चकारी करता था, उस का अपने नगर में बहुत अधिक दबा था। उस से सभी डरते थे, एक दिन उस ने नगर निवासीयों को बुला कर कहा कि जो कोई साधू अतिथी इस नगर में आ जाय। उसे ठहिरने का स्थान नहीं देना। यदि कोई बहुत ही आग्रह करे तो उसे मेरे घर में भेज देना। फिर उस डकैत ने अपने घर में एक धर्म शाला बनवाई। और लंगर भी लगवाया।

एक दिन बाला और मर्दाना के साथ गुरू नानक देव जी भी उस के नगर में चले गये। नगर निवासीयों ने गुरू जी को उसी डाकू के घर में भेज दिया डाकू ने जब गुरू जी महाराज का दरशण किया तो उस ने गुरू जीको कहा भोजन करो सतगुरु जीने कहा–हे भाई!पहिले आप यह बतलाओ कि आप के घर में जो भोजन बनता है, वह कमाई किधर से आती है ?

यह सुन कर उस के हृदय में गुरू जी की संगति से सत्य का संचार हो गया। उस ने हाथ जोड़ कर कहा हे महाराज ! यदि आप सत्य पूछते हो तो मेरी कमाई डकैत चोरी से होती है। तब गुरू जी कहा– हे भाई ! हम लोग चोर डकैत का अन्न नहीं खाते। भूमीआं कुछ निराश सा होकर कहने लगा–हे संत जी ! यदि आप भोजन न पाओगे तो मेरा कल्याण कैसे होगा गुरू जी ने कहा–तुम यदि नेक कमाई करो तो हम तुमारा अन्न खा सकते हैं। भूमीयें ने कहा हे महाराज ! आप और जो कुछ भी आग्या दें

उसे पालन करने को तैय्यार हूँ। मगर डकैती चोरी को मैं नहीं छोड़ सकता, गुरू जी ने कहा हे भले लोक! वह ईश्वर सब का पालन करने वाला है। उस पर विश्वास करो, और धर्म की कमाई करो। फिर गुरू जी ने आगे लिखी तुक कही।

ए सच सबनां का खसम है जिस बखसै तिस देह ॥

गुरू जी ने कहा-अच्छा यदि तू हमारे तीन बचन माने तो हम तुमारा अन्न स्वीकार करेंगे, उस ने कहा-और जो भी कहो मैं मानूंगा। तब गुरू जी ने कहा-१ सत्य बोलना, २ जिस का निमक खाना उस का बुरा नहीं करना, ३ गरीब मार नहीं करनी। बस यह तीन प्रतिज्ञा करो, उस ने कहा-कि यह तीनों बातें मुझे स्वीकार हैं। तब गुरू जी ने सत्य बारे में एक पौड़ी कही-

॥ पौड़ी ॥

सचा साहिब एक तू जिन सचो सच वरताइआ। जिस तू देहि तिस मिलै सच तां तिनी सच कमाइआ। सतिगुर मिलीऐ सच पाइआ जिन के हिरदे सच वसाइआ। मूरख सच न जाननी मनमुखि जन्म गुवाइआ। विच दुनीआं काहे आइआ।

॥ वारतक ॥

गुरू जी ने फरमाया हे भूमीआं यह सत्य तभी कहा जा सकेगा जब तूं कुछ नियम धारन करे तो, यह सुन कर भूमीयें ने कहा वे नियम (रैहतें) कौन से हैं उन को मैं सुनना चाहता हूँ। तब गुरू जी ने शब्द उचारण किया, जो राग आसा में गाया जाता है।

॥ राग आसा महला १ ॥ सच तां पर जाणीऐ जां रिदे सचा होइ। कूड़ की मल उतरै तन करै इछा धोइ। सच तां पर जाणीऐ जां सच धरे पिआर। नाउ सुण मन रहसीऐ तां पाए मोख दुवार। सच तां पर जाणीऐ जां सिख सची लोइ। दया जाणै जीअ की किछु कै वहि र है करै निवास। सच सबनां होइ दारू पाप कढे धोइ। नानक बखाणै वेनती जिन सच

पलै होइ ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

गुरू नानक देव जी महाराज के पवित्र उपदेश ने उस डकैत पर बहुत ही प्रभाव किया। उस ने कहा महाराज ! जो आप की आज्ञा है, मैं उसे अवश्य पूर्ण करूंगा। गुरू जी ने कहा हे भाई ! यदि तूं सचे हृदय से कहता है। तो तुमारे पूर्व के तमाम पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। और परमात्मा के दरबार में तुमारे लिये हम प्राथना भी करेंगे। तब तुमें उस के दरबार से मोक्ष का मेवा आवश्य ही प्राप्त होगा। फिर अंतर्यामी गुरू जी ने उस के हृदय को शुद्ध देख कर उस के घर में भोजन पाया फिर भूमीयें ने गुरू जी की अनन्य भक्ति से सेवा की तथा फिर गुरूजी वहां से चल दिये।

एक दिन भूमीयें ने सोचा कि मैं किसी राजा को लूट कर दौलत लाऊं। कुछ तो स्वयं खाऊं। और कुछ साधुओं को दूं। यह विचार कर उस ने स्नान किया सुंदर सुंदर वस्त्र भूषण भी पहिन लिये। और आधी रात के समय एक राजा के द्वार पर गया। चौकी दार ने देख कर पूछा भाई ! तू कौन है ? उस समय उसे अपने बचन याद आ गये। जो गुरू जी के सन्मुख किये थे। उस ने सोचा चाहे मैं मारा ही जाऊं। परंतु सत्य को नहीं त्यागूंगा। उस ने कहा-हे भाई ! मैं चोर हूं तब चौकीदार हैरान होकर कहने लगा-नहीं नहीं आप तो कोई अपने ही आदमी हो। क्यों कि चोर कभी इस प्रकार नहीं कहा करते। उमीद है कि तुम कोई राजा के अपने ही हो। एक तो तुमारी पोशाक कह रही है कि तुम कोई बड़े आदमी हो, फिर दूसरे तुम हमें मज़ाक से कह रहे हो कि मैं चार हूं। इस लिये अंदर जा सकते हो। हम तुमें रोक नहीं सकते। अब वह भूमीयां राजा के कोप के निकट जा पहुंचा। तथा हीरे मोती जुवाहरात की एक बड़ी खासी गठड़ी वांध ली। फिर उस ने एक जाले में स्वर्ण की एक पलेट देखी। जब उसे उठाने लगा तव उस पलेट में जो निमक था, उस को अपनी ज़ुबान से लगा देखा तो वह निमक था, तव उसे याद आया कि मुझे तो गुरू जी

ने कहा था, कि जिस का निमक खाना उस का बुरा नहीं करना। इस लिये भूमीआं सभी कुछ वहां छोड़ कर वापस आपने घर को आ गया।

प्रातः शोर होने लगा कि राजा का कोष लूटा गया है, जब राजा ने जाकर देखा तो एक गठड़ी बंधी पड़ी है। और किसी वस्तु का नुकसान नहीं हुवा। अब राजा को अचंभा हुआ कि चोर आया परंतु किसी वस्तु का नुकसान नहीं हुआ। यह क्या बात है, फिर राजा ने चौकीदारों को बुला कर पूछा कि यह क्या बात है, तुम बताओ क्या हमारे महिलों में कोई आया था। तब चौकीदार ने कहा–हे महाराजा धिराज रात के समय एक बहुत बड़ा अमीर आदमी आया था, जब हम ने पूछा कि तुम कौन हो, तो उस ने कहा मैं चोर हूँ। हम ने उस की चाल ढाल और पोशाक देख कर कोई आप का अपना आदमी जान कर उसे भीतर जाने से नहीं रोका। उस के अतिरिक्त और तो हम ने कोई भी नहीं देखा, यह सुन कर राजा ने कहा–अच्छा तुम उस की भाल करो, चौकीदार वा पोलीस ने उस की बहुत ही भाल की परंतु कहीं भी उस चोर का पता नहीं चला। फिर राजा ने हुकम दिया, कि नगर में ढंडोरा फेरो कि जो आदमी मेरे घर में आकर गठड़ी बांधकर तथा बगैर कुछ लिये चला गया है, वह यदि मेरे साहमणे आ जाय तो मैं उसे अपनी सारी रयासत दे दूंगा। यह ढंडोरा तीन दिन तक पिटता रहा परंतु चोर का कहीं खुराग नहीं मिला, फिर राजा ने कहा अच्छा जो कोई निकम्मा आदमी मिले उसे पकड़ कर खूब पीटो। बस फिर क्या था अनेकों गरीबों को पुलीस मार पीट करने लगी। यह खबर तमाम नगर में फैल गई, अब उस भूमीयें को अपना प्रण याद आ गया–कि गरीब मार नहीं करनी। भूमीयें ने सोचा कि मेरे ही कारण गरीबों को पीटा जा रहा है अब मैं स्वयं राजा के सन्मुख जा कर कहूँगा कि इन गरीबों को मत मारो। चोर तो तुमारा मैं हूँ। यह सोच कर भूमीयां राजा के दरबार में हाज़र हो गया, तथा कहने लगा कि मैं आप का चोर हूं। गरीबों को मारना बंद करो, अब राजा ने उस से पूछा कि तुम ने मेरे

कोष से कुछ भी हासल न किया। तब उस ने कहा कि हे राजन ! मुझे पहुँचे हुवे सचे गुरू मिल गये थे, मैं ने जो उन की आग्या थी उसी का पालन किया है। यह कह कर भूमींयें ने समस्त बीती बात सुना दी। राजा के मन में गुरू नानक देव के दरशणों की तीव्र इच्छा हो आई। राजा ने कहा— उस तेरे गुरू की क्या निशानी है। भूमींयें ने कहा हे राजन ! मेरे गुरुदेव रमते संत हैं उन का मिलना पूर्ण भाग्य से ही हो सकता है। फिर उस ने सतगुरू जी के मिलाप का सभी वृत्तांत विस्तृत रूप से सुना दिया। अब राजा ने कहा हे भाई तुम मेरे तमाम वज़ीरों के शिरताज बनो। और मुझे अपना सिख बना लो। भूमींयें ने कहा—हे राजन ! अभी तो मैं स्वयं शिश्य के रूप में हूँ। आप को शिश्य किस प्रकार कर सकता हूँ। हां तुम गुरू नानक देव जी के नाम पर एक धर्मशाला बनवाओ तथा नेक कमाई करो। न्याय करो, बांट कर खाओ, दीन दुखीयों की सेवा करो तथा उस परमेश्वर का नाम स्मर्ण करो और सभी में उस को व्यापक जानो। इस से गुरू नानक देव तुम को स्वयं दरशण देंगे। क्योंकि मेरे गुरू देव घट घट की जानने वाले हैं, जो उनको स्मर्ण करता है, तो वे उस को अवश्य दर्शण देते हैं।

तब राजा ने भूमींयें को अपना प्रधान मंत्री नियत किया तथा, जो कुछ उस ने कहा था उसी पर अचारण आरंभ कर दिया। राजा अपनी रानी के सहित नित्य प्रति कीर्तन में मग्न रहने लगा। तथा ईश्वर भक्ति की गंगा बहने लगी।

एक दिन राजा ने तमाम साधू संगत को हाथ जोड़ कर कहा—हे प्यारी संगत आप सभी श्री गुरू नानक देव जी के दर्बार में मेरी ओर से सचे हृदय के साथ प्रार्थना करें। कि वह सतगुरु जी अपनी अपार अनुकंपा से एक पुत्र बख्शें। मेरा सदन संतान दीपक के बगैर अंधेरा हैं। जब सभ ने मिल कर अरदास की तो पीछे कड़ाह प्रसाद बांटा गया। तथा गुरु नानक देव महाराज की जय ध्वनी के पश्चात सभी लोग अपने २ घरों को गये।

ठीक दश मास के पश्चात उस राजा के गृह में कन्या हुई। राजा ने

विचार किया कि सत संग में तो पुत्र की अरदास की थी, मैं इस कन्या को पुत्र ही मानूंगा। उसी के अनुसार कन्या जनम में पुत्र जन्म के तुल्य ही समा रोह किया गया। और कन्या का लालन पालन भी पुत्र समान ही होनें लगा।

अब वह समय आ गया, जब कन्या युवा हो गई थी रानी ने कहा- कि इस कन्या के लिये किसी सुयोग्य वर की भाल करनी चाहीये। राजा ने उतर दिया कि अमुक राजे की कन्या है। मैं इस अपने पुत्र को उसी के साथ विवाहूँगा। रानी ने कहा-हे स्वामिन ! आप यह क्या कहते हैं। आज तक कन्या का विवाह कन्या से नहीं हुआ। आप का यह विचार सदोष है, राजा ने कहा हे प्रिये ! तुम को यह कन्या दृष्टी गोचर हो रही है परंतु मुझे तो यह पुत्र नज़र आ रहा है। यह सुन कर रानी मौन हो गई।

एक दिन राजा ने अपने कुल पुरोहित को बुलाकर कहा हे पंडित जी ! आप मेरे पुत्र के लिये कोई योग्य कन्या की भाल करो। पुरोहित ने कहा-हे राजन ! मुझ से यह पाप नहीं हो सकता। कि मैं लड़की के लिये लड़की की भाल में जाऊं। हे राजन ! तुम जहां अपनी लड़की को नर्क गामिनी करते हो वहां किसी दूसरे की कन्या को भी नष्ट करने पर उतरे हुए हो, राजा ने कहा हे पुरोहित जी ! तुम को यदि कन्या नज़र आ रही है। परंतु मुझे तो यह पुत्र दृष्टी गोचर हो रहा है; तब पुरोहित ने अपने मन में विचार किया कि पाप पुन्य अथवा कोई निंदा होगी तो राजा की होगी, मुझे क्या आवश्यकता है कि मैं राजा का कोप भाजन बनूं। राजा को पुरोहित ने कहा-जैसे आप की आग्या हो मैं वैसे ही करने को तैयार हूँ।

तब राजा ने उसी राजा को जिस के घर पुत्री थी। उसे एक पत्र लिखा जिस में अपने पुत्र (कन्या) के लिये उस की कन्या का रिश्ता मांगा था। वह पत्र पुरोहित को देकर और अच्छा महूरत देख कर विदा किया। जब पुरोहित उस राजा के नगर में पौंहचा, और दरबार में उपस्थित हुआ तो राजा को अत्यंत प्रसन्नता हुई। तब उस राजा ने अपने पुरोहित

कर तथा लग्न सुधा कर साहे पत्रिका लिखवाई और ब्राह्मण के हाथ भेज दी ।

साहे पत्रिका प्राप्त करके इधर का राजा अपने पुत्र के विवाह का सामान तैय्यार करने लगा । अंत तो गत्वा-बरात सजने लगी लड़के (लड़की) को स्नान आदिक करवा कर दूल्हे की भांति सजाया गया, तब बराती लोगों में इस रहस्य का भंडा फूटा तो वे सभी साथ जाने से पीछे हट गये, बरातीयों ने सोचा कि इस प्रकार तो हम सब का अपमान ही होगा । क्यों कि यह बात छुपी नहीं रह सकती, सभी ने इनकार कर दिया । राजा ने न जाने का कारण पूछा तब उन लोगों ने कहा- हे राजन ! लड़की का विवाह लड़की से कभी नहीं हुआ । तुम तो यह असंभव बात को कर रहे हो, राजा ने कहा तुम को मेरा पुत्र लड़की नज़र आ रहा, परंतु मेरे लिये तो वह पुत्र है । तुम नहीं चलते तो तुमारी इच्छा मैं अकेला ही जा कर अपना पुत्र विवाह लाऊंगा । जब राजा चलने लगा, तब कुछ बराती भी यह तमाशा देखने के लिये साथ हो लिये ।

बरात जा रहीं थी राजा की लड़की जो दुल्हा सी बनी हुई थी । उसने एक हरण देखा, तब पिता की आज्ञा लेकर उस ने हरण के पीछे घोड़ा छोड़ दिया । वह हरण उसे एक महान भयानक बन में ले गया । तथा बन में वह हरण छुप गया । इस ने हरण को चार दिवारी में जाते देखा था । तब अपना घोड़ा भी उस के अंदर दाखल कर दिया । अंदर जा कर देखा तो एक संत बैठा है और संत के इर्द गिर्द ही लोग बैठे हैं कीर्तन हो रहा है तथा कड़ाह प्रसाद बांटा जा रहा है इस ने नमस्कार किया, तब संत ने कहा-हे गुरू के शिश्य तुम आगे आ जाओ परमात्मा तुमारा भला करेगा, इतना कहने की देर थी, बस उस राज कन्या के शरीर में सभी अंग पुरुषों जैसे हो गये । तथा स्त्री चिन्ह तमाम लोप हो गये, अर्थात वह राज कन्या राज कुमार हो गई ।

तब राजा भी पीछा करते २ उस चार दिवारी के निकट आ गया ।

जब अपना घोड़ा बाहर देखा तो राजा भी भीतर गया। वहां उसे गुरू जी के दरशण हुवे। और संगत कीर्तन करती देखी। तब राज कुमार ने कहा हे पिता जी ! यह सतगुर संसार के स्वामी श्री गुरू नानक देव जी महाराज हैं तब राजा ने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। गुरू जी ने कहा हे राजन ! तेरी मनो कामना पूर्ण हो। इतने में राजा ने देखा कि न तो वहा चार दिवारी है और न ही कोई श्रोता है और न ही गुरू जी हैं। सभी दृश्य लोप हो गया। राजा हैरान हो कर कहने लगा—हे भगवान ! यह मैंने क्या स्वप्न देखा है।

अभी यह विचार हो ही रहे थे। जब सारी बरात वहां आ गई, राजा तो गुरू नानक जी के ध्यान में मस्त था। और कहा कि हे सतगुर आप ने मुझे क्षण भर में ही निहाल किया है। आप धन्य हो।

जब सभी साथी आ गये तब भी राजा ने अपनी पुत्री का पुत्र हो जाना किसी पर प्रकट नहीं किया। अब बरात बड़ी सज धज के साथ उस कन्या वाले राजा के नगर में पौंहची। ईश्वर की सृष्टि में सभी नर नारी एक जैसे स्वभाव के नहीं होते। किसी ने रानी को जाकर कह दिया कि तुमारा संबंधी तो अपनी लड़की को लड़का बना कर आ गया है और तुम को धोखा देना चाहता है इस लिये अपना बचाव स्वयं कर लो। रानी ने अत्यंत चिंतातुर हो कर राजा से कहा हे स्वामिन मैं अपनी कन्या किसी कन्या को नहीं दे सकती। फिर तमाम बात बता दी। राजा ने कहा, हे रानी ! यह बात सत्य नहीं मालूम होती। मैं अच्छी प्रकार परीक्षा ले कर ही कन्या दूंगा। आप चिंता न करें। तब राजा ने एक नैन को इस बात की परीक्षा लेने भेजा। और कहा कि यदि तुम ने सत्य कहा—तो तुमें इनाम दिया जायगा। तथा झूठ बोलने पर तुम को फांसी पर लटका दिया जायगा। नैन जाकर कहने लगी हे महाराज यहां एक मर्यादा है कि लड़का पहिले एक रात्री हमारे घर में रहेगा। फिर उस के पीछे विवाह की मर्यादा पूर्ण की जाती है। राजा ने कहा जैसे तुमारी मर्यादा है वैसे करो। हमें

कोई इतराज़ नहीं है। नैन के साथ लड़के को भेज दिया गया । तब बरातीयों ने सोचा कि अब सारा पोल खुलने को है । अब हमारी हंसी और अपमान होने को है। अब यहां से चलना ही अच्छा है।

उधर नैन ने जाकर उस दुल्हा को बहुत ही बारीक वस्त्र पहिरा कर फिर उस के ऊपर पानी मंत्र कर डाल दिया जिस से उस के अंग प्रत्यंग नजर आने लगे। चतुर नैन ने अपनी पूर्ण तसली कर ली । तथा रानी को आकर कहने लगी हे रानी तेरे अपूर्व भाग्य हैं जो गंधर्वों जैसी शकल वाला शाहज़ादा तुमारा दामाद बनने लगा है। तुम किसी चुगल खोर की बातों पर विश्वास न करो। रानी ने यह सुन कर उस सैरिंद्री (नैन) को बहुत सा धन पुरस्कार रूप दिया, तत पश्चात बहुत ही सन्मान तथा समारोह से विवाह की मर्यादा पूर्ण हुई।

॥ लेखक ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज के दरबार में किसी भी बात की कमी नहीं है। जो सचे हृदय से गुरु देव की शरण होकर जो कुछ भी मनोरथ प्रकट करता है, उसे किसी प्रकार की भी त्रुटी नहीं रहती। श्री गुरू नानक देव जी महाराज इस कलियुग से पार करने वाले तथा धर्म स्थापन करने वाले पूरण साक्षात अवतार हैं, धन्य गुरू जी।

राजा की सभी कामनायें पूर्ण हुईं। तथा अपनी पुत्र वधुकी डोली लेकर अपने नगर में आया। अत्यंत खुशी मनाई गई। सतिगुर नानक देव जी की अपार क्रिपा से राज कुमारी का राज कुमार होगया। यह है अपार श्रद्धा का फल।

जो श्रद्धालु भक्त गुरू जी पर पूर्ण विश्वास तथा श्रद्धा प्रेम करता है, उस को किसी प्रकार की त्रुटी नहीं रहती प्रेम ही संसार में सर्वोपरि वस्तु है। श्रद्धालु के लिये संगत गुरू है, और गुरू ही संगत का रूप है। सचे दिल से और सचे प्रेम से इस असार संसार से सतिगुर नानक देव अपने प्यारे शिश्य को पार कर देते हैं, ऊपर की कथा सुना कर भाई बाला आनंद

में मगन हो गया, तथा नेत्रों से प्रेम के आंसू बहने लगे, तथा गुरू अंगद देव भी सतिगुर नानक देव के ध्यान में निमग्न हो गये। कुछ समय सन्नाटा रहा, बोलो गुरू नानक देव की जय।

॥ साखी कलियुग की ॥

तब बाले ने श्री गुरू अंगद देव जी महाराज के सन्मुख गुरू श्री नानक देव जी महाराज की अदभुत यात्रा का विवर्ण कहना फिर प्रारंभ किया।

एक समय सतिगुरू श्री नानक देव जी यात्रा करते२ सेतुबंध रामेश्वर की प्रख्यात भूमी पर जा पहुँचे। उस समय अत्यंत भयानक आंधी आई। जिस का वर्ण पीत और श्याम था उस आंधी की लपेट में आकर अनेक वृक्ष सम्मूल नष्ट होने लगे। चारों ओर से बालू उड़२ कर एक दृश्य उपस्थित करने लगा। पशु पक्षी सभी भयभीत होने लगे, किसी भी प्राणी से चलना असंभव हो रहा था, तब भाई मर्दाना पृथिवी पर अधोमुख होकर लेट गया, तथा भय से थर हर कांपने लगा। जगत गुरू श्री नानक देव जी ने कहा- हे मर्दाना डरो नहीं। डरने से कोई भय दूर नहीं होता। तथा उस वाहिगुरू का स्मर्ण करो। सभी दुखों में उसी का ही सहारा है, कुछ समय के पश्चात अंधेरी तो हट गई। अपितु दक्षिण दिशा से एक पर्वताकार भयानक दैत्य आता हुआ दिखाई दिया, उस का महान शरीर आकाश से पाताल तक फैल रहा था, उस की भयानक मूर्ती से चारों दिशायें कांप रहीं थीं, वह भयानक राक्षस विकराल मूर्ती और भीम काय इधर ही आने लगा, जिधर मर्दाना लंबा पड़ा हुआ था। भयभीत होकर मर्दाने ने कहा-हे गुरु देव! उस आंधी से तो प्राण बच रहे हैं परंतु महाकाय दैत्य से बचने की कोई संभावना नहीं है यह तो अभी२ हमारी जीवन नैय्या को डुबाने ही वाला है। गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! यह कलियुग है जो पहिले आंधी बना और अब यह दैत्य बन कर आया है। मर्दाना! तू अपने मन को प्रभु में

लगा कर मुख से ईश्वर स्मर्ण करता जा। बस यह तेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

इस के पश्चात कलिजुग ने अपना रूप भयानक अग्नि का कर लिया चारों दिशाओं में अग्नि २ ही नजर आने लगी। अब तो मर्दाने के होश गुम हो गये। तथा अपने को वस्त्र में छिपा कर अधो मुख लेट गया। तथा कहने लगा हे गुरू जी ! मुझे बचाओ, गुरू जी ने मुस्करा कर कहा हे मर्दाना ! आंधी और भयानक दैत्य की भांति यह अग्नि भी तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। बस वाहिगुरु नाम जपता चल, इस के पश्चात कलियुग ने भयानक वर्षा का रूप धर लिया काली घटाओं ने आकाश का कोना २ घेर लिया। तथा वर्षा प्रलय काल की वर्षा के समान होनें लगी, आसमान से कड़ २ शब्द करती हुई भयानक बिद्युत चमकने लगी। तथा पानी के साथ ईंट पत्थर की बर्षा आरंभ हो गई। परंतु पत्थर कंकर इन लोगों से दूर २ ही गिरते थे। जैसे कोई भयभीत करने की इच्छा से निकट होकर नहीं मारता। अब मर्दाना महान दुःखी होकर कैहने लगा। हे गुरु देव ! आप ने हमें इस गहनबन में लाकर ही समाप्त करने की ठान रखी हैं। बताओ अब हमारे प्राण कैसे बचेंगे ? गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! तू जरा रबाब बजा और हम एक शब्द उचारण करेंगे–

राग गौड़ी महला १ ॥ डर घर घरि डर डरि डर जाइ। सो डर केहा जित डर डर पाइ। तुध बिन दूजी नाही जाइ। जो कुछ वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ डरीऐ जे डर होवै होर। डर डर डरना मन का सोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना जीउ मरै न डुबै तरै। जिन किछ कीआ सो किछ करै। हुकमै आवै हुकमै जाइ। आगै पाछै हुकम रजाइ ॥ २ ॥ हंस हेत आसा असमान। तिस विच भूख बहुत निसान। भउ खाना पीणा आधार। विण खाधे मर होहि गवार। जिस का कोइ कोइ कोइ कोइ। सभ को तेरा तू सभना का सोइ। जा के जीअ जंत धन माल। नानक आखख ब्रहम ईचार ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

अर्थात गुरमुखों का दर घर में है, और जो ईश्वर से विमुख हैं तथा प्राणियों को जो दुःख देते हैं, उनी को यम द्वार का भय होता है। तथा गुरमुख कहते हैं। कि उसके विना और उतपति करता तथा विनाश करता कोई और नहीं है, उस परमेश्वर की आग्या में ही जीव आता जाता है। और जो नर जीवों को मार कर खा जाते हैं। उन की भूख और अधिक बढ़ जाती है। जैसे आग में ईंदन डालने से अग्नि और अधिक हो जाती है, जिन को ईश्वर का भय है वही नर त्रिपत हैं। किसी को तो किसी का सहारा है, परंतु संत जनों को एक परमेश्वर का ही सहारा है। जिस ने चार प्रकार की सृष्टी का सृजन किया है, वहीं अपने भक्तों का रक्षक है। नानक देव कहते हैं हे प्राणी ! यदि तुझे ईश्वर का भय होगा। तव तू किसी जीव को दुःखी नहीं कर सकेगा, और नाम जपने से तेरा कल्याण होगा, हे मर्दाना ! तू वाहिगुरू नाम जप जो सभी दुखों से वचाने वाला है।

उधर यह तमाम वातें कलियुग ने सुनी और मनुश्य शरीर धारण किया। तथा गुरू जी के निकट आ गया उस के मुंह में मांस और हाथ में अग्नि थी। उस का सारा ही शरीर कांच का था। उस समय गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! उठो और रवाव वजाओ। मर्दाने ने रवाव वजाया, तथा गुरू जी ने राग मारू में शब्द उच्चारण किया–

राग मारू महला १ ॥ डरपै धरति अकास नखत्रा सिर ऊपरि अमर करारा। पौण पाणी वैसंतर डरपै डरपै इंद्र विचारा ॥ १ ॥ एका निरभउ वात सुणी। सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिल गाइ गुणी ॥१॥ रहाउ ॥ देह धार और देवा डरपै। सिध साधिक उर मुइआ। लख चौरासीह मरि मरि जनमै फिर जोनी जोइआ ॥ २ ॥ राजस सातक तामस डरपै केते रूप उपाइआ। छल वपरी एह कौला डरपै अति डरपै धरम राइआ ॥ ३ ॥ सगल समग्री डरै विआपी विन डर करने हारा। कहु नानक

भगतन का संगी भगति सोहहि दरबारा ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

इस शब्द के पश्चात श्री गुरू नानक देव जी ने कलियुग से पूछा हे भाई ! तू कौन है ? उतर में कलियुग ने एक हाथ अपनी जिन्हा पकड़ी तथा एक हाथ में अपनी इंद्री पकड़ कर और सारा शरीर नग्न करके गुरू जी महाराज के चर्णों में नमस्कार किया। तथा कहा हे महाराज मैं आप की महिमा नहीं जानता था, मैं केवल दरशणार्थ आया हूँ। मुझे उस परमेश्वर के दरबार से कुछ अधिकार मिले हैं। तथा आप ने भी मुझ पर कृपा दृष्टि रखनी। इस मेरे शासन काल में नर नारीओं के यही लक्षण होंगे। जिस प्रकार आप मुझे देख रहे हो। दैवी संपदा सभी संसार त्याग कर खान पान और भोग बिलास में संसार लग जायगा, माता पिता गुरू आदिकों की मर्यादा को दुनीयां भंग कर देंगी, हे गुरु देव ! मैं ने जो छल आप से किये हैं, वे सभी अनजान अवस्था में किये हैं, उन के लिये मैं क्षमा का प्रार्थी हूँ। आशा है आप मुझे क्षमा करोगे, आप महान हो। तथा आप पूर्ण संत हो आप कृपया यह बताओ कि आगे आप किधर जाने का विचार रखते हो ? गुरू जी ने कहा–हे कलियुग ! हम तो उस परमेश्वर को ही देखने की इच्छा से इधर उधर घूम रहे हैं, कलियुग ने कहा–हे महाराज ! क्या आप से भी कोई प्रिथक ईश्वर है, आप ही तो साक्षात परमेश्वर हो। और कौन परमेश्वर हो सकता है ? गुरू जी ने कहा–हे कलियुग ! तेरा तो संसार में शासन तथा प्रभाव है। फिर यह छल कपट करने के लिये इधर आने का क्या प्रयोजन है। कलियुग ने कहा–हे महाराज ! मैं ने अग्यान वश आप की परीक्षा लेने को तथा आप के दर्शणों को इधर आ गया हूँ। तब गुरू जी ने कलियुग से कहा–अच्छा तूं पहिले अपने लक्षण कहो फिर यह बताओ कि तुमारी जो सेना है वह कैसी है ? कलियुग ने कहा–हे गुरु वर ! मेरी सेना का महान सेना पति झूठ है तथा राजा मोह है, तथा छोटा सेना पति हिंसा है, फिर काम क्रोध लोभ मोह अहंकार यह मेरी सेना के महान

योधा हैं, जो प्रत्येक प्राणी पर विजय प्राप्त करने में सिद्ध हस्त हैं। यह अजेय हैं, तथा हस्ती सुवार रथ सुवार यह मत्सर निंदा आदिक हैं, तथा त्रिश्ना हय सुवार महारथी हैं। तथा आलस्य द्यूत मद्य पानादिक दुराचार यह भी महान योधा रथों की सुवारी करते हैं। आशा चोरी आदिक यह मेरे पद चर योधा हैं। हे महाराज ! मैं कहां तक कहूँ। यह मेरी दुर्जय सेना किसी से भी नहीं हारती, सब को जीतना इस के बायें हाथ का कार्य हैं। मेरे दंभ रूपी योधा ने तो बड़े २ दिग्गज भी परास्त किये हैं। मेरे शासन काल के गुरू और उपदेशक पाखंडी दुराचारी होंगे। तथा लोगों के घरों में उदर मूर्ती के लिये उपदेश देनें जायेंगे। वेद शस्त्रों तथा सद ग्रंथों को त्याग कर और उन की निंदा करके अपनी ही पूजा करवानें में सिद्ध हस्त होंगे। जो काजी लोग होंगे वह न्याय करते समय रिश्वत लेकर झूठे प्रमाण कह कर अन्याय करेंगे। हाथ में तसबीह और मन में महान पाप अपराध का निवास होगा, बड़े २ साधु अनेक प्रकार के वेष धार कर संसार को मन मोहनियें बातें कथायें सुना कर खूब लूटेंगे। ब्राहमण क्षत्री आदिक सभी वर्ण अपने २ धर्म को त्याग कर पतित होने में ही अपनी शान समझेंगे गेरुए वस्त्र पहिन कर साधु लोग उदर शिश्न के मोह में मारे मारे फिरेंगे । दिखावा बहुत होगा। परंतु मर्यादा तथा धर्म नीति की मट्टी पलीद होगी । त्यागी साधुओं के बैंकों में हिसाब चलेंगे। और उन के बाल बच्चे उन के आगे पीछे चलते नज़र आयेंगे। ब्रह्मचारियों के गृह में दो दो तीन तीन स्त्रियें होंगी, हे महाराज ! मैं तो आप के समक्ष अधिक कहते भी लज्जा अनुभव करता हूं। गुरु जी ने कलियुग की बातें सुन कर कहा-हे कलियुग, अंतिम परमात्मा के दर्बार में क्या उतर दोगे, क्यों कि उत्तर दायत्व (जिम्मेवारी) तुम पर है, यह कह कर गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

॥ श्री मुख वाक्य ॥

जिन सिकदारी तिनहि खवारी चाकर केहा डरना । जा सिकदारां पवहि जंजीरी त चाकर हथहु मरना ॥ १ ॥ तूं जगत में सिकदार है और

हम तो उस के भृत्य हैं तुमें जब उतर देना पड़ेगा । उस समय परमात्मा ने तेरा हिसाब लेने पर हमारी डयूटी लगानी है, तथा हम ने ही तुम से पूछना है। बताओ उस समय यह तुमारी अकड़ फूं क्या करेगी। तब कलयुग ने भय भीत होकर कहा हे सत्पुरषो ! मैं ने आप की शरण इसी लिये स्वीकार की है आप तो परमात्मा रूपी महाराजाधिराज के प्रधान मंत्री हो, जिस समय आप मेरा हिसाब लोगे उस समय आप ने मुझ पर कृपा करनी। बस यही एक बिनती हैं, गुरू जी ने कहा-अच्छा जब वह समय आयगा तो हम कुछ न कुछ तुम पर कृपा करेंगे। कलियुग ने कहा-इस में तो संदेह नहीं, परंतु मुझे कैसे विश्वास हो। यदि आप कुछ भेंट मुझ से ग्रहण करें तब मुझे विश्वास होगा कि आप मेरे पर कृपा दृष्टी करोगे। अन्यथा नहीं, उतर में गुरू जी ने कहा हम ने तो सुखों को छोड़ कर दुख प्राप्त किया है, इस लिये हम किसी भी भेंट को स्वीकार नहीं कर सकते। तब कलियुग ने कहा-हे देवों के देव तब मेरी तसल्ली किस प्रकार हो ? गुरू जी ने कहा अच्छा यह बताओ तुमारे पास क्या क्या वस्तु है। जो मुझे देने के लिये तैय्यार हो कलियुग ने कहा हे प्रभो ! मेरे पास हीरे मोती माणक स्वर्ण चांदी सुंदर प्रसाद तथा परम सुंदर रमणियें और उदय अस्त तक का राज्य है, इस के अतिरिक्त अष्ट सिद्धि नवनिद्धि यह सब कुछ मेरे आधीन है। यह सभी वस्तु मैं आप के चणों में अर्पण करने को उपस्थित हूँ। जिस वस्तु पर आप संकेत करें वही आपकी हो सकती है, केवल आज्ञा की ही आवश्यकता है। तव गुरू जी ने कहा-हम इन वस्तुओं में किसी को भी नहीं स्वीकार करते, यह कह कर एक पवित्र शब्द उचारण किया-

श्री राग महला १ ॥ मोती त मंदर उसरहि रतनी त होहि जड़ाऊं। कसतूर कुंगू अगर चंदन लीप आवै चाऊ। मत देख भूला वीसरै तेरा चित न आवै नाउ ॥ १ ॥ हरि बिन जीउ जलु बलु जाउ। मैं अपना गुर पूछि देखया अवर नाहि थाउ ॥ रहाउ ॥ धरती त हीरे लाल जड़ती पलंग लाल जड़ाउ। मोहणी मुख मणी सोहै करै रंग पसाउ । मत देख भूला

वीसरै तेरा चित न आवै नाउ। सिद्ध होवां सिद्धि लाई रिद्धि आखा आउ। गुपत परगट होइ बैसा लोक राखे भाउ। मत देख भूला वीसरै तेरा चित न आवै नाउ। सुलतान होवा मेल लसकर तखत राखा पाउ। हुकम हासल करी बैठा नानका सभ वाउ। मत देख भूला वीसरै तेरा चित न आवै नाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

ऊपर का शब्द सुन कर कलियुग ने कहा–हे गुरू जी मैं तो आप का शिश्य होने को आया हू। यदि कहो तो आप के लिये एक मोतीयों का मंदिर वनवा दूं। और उस में हीरे जड़वा दूं। उस मंदिर में कस्तूरी आदिक लेपन हो जाय। यदि आप ने निवास करना हो तो एक वहुमूल्य चारपाई जिस में लाल जड़े हों वह भी आप की आग्या से वन सकती है।

गुरू जी ने कहा–हे कलियुग मैं अनित्य सुंदरता को नहीं चाहता। मैं तो नित्य पदारथ जो पारब्रहम परमेश्वर है उसी को चाहता हूं। अनित्य वस्तु स्थिर नहीं होती। और जो स्थिर नहीं है वही दुःख का कारण है। और राज्य आदिक भी अनित्य है, फिर इस में अभिमान तथा मत्सरता उत्पन्न हो जाती है। जो पुरुष की अधोगति का कारण है, हे कलियुग ! यदि तेरी अत्यंत श्रद्धा है तो मैं तुम से दशम अवतार धारण करके सभी कुछ राज्य रिद्धि सिद्धि आदिक लूंगा। अर्थात श्री गुरू गोविंद सिंह जी के रूप में तुमारी भेंट सहर्ष स्वीकार कर लूंगा।

तव गुरू जी ने कहा हे कलियुग ! तुम ने अपनी संपदा और हिभूती तो वता दी हैं। इस से अतिरिक्त और भी जो कुछ तुमारे पास हो वह भी वताओ। मैं उसे सुनना चाहता हूँ। तव कलियुग ने कहा हे कृपा नाथ गुरू देव ! मेरे राज्य में भूख प्यास निद्रा आलस्य त्रिशना मस्ती पाप दुराचार चोरी यारी और निंदा आदिक से कोई होगा जो वच सकेगा। गुणी पुरुषों का अपमाण होगा, सत्य वक्ता को लोग मूर्ख कहेंगे, और जो वहुत वोलेगा वह अगर मूरख भी होगा तो भी वह गुणी कहलायेगा। वही राजाओं के

निकट स्थान प्राप्त करेगा। पापी पुरुषों के संतान अधिक होगी। और कृपण के घर में धन अधिक होगा, तथा ब्राहमण लोग व्यापार करने लगेंगे। तथा ज़मीदारा करेंगे, शूद्रों का मान होगा, तत्व ज्ञानी वेंद वक्ता भूखे मरेंगे। राजा लोग सदैव धन हीन रहेंगे। और प्रजा को लूटना उन का कर्तव्य हो जायगा, अनेक प्रकार के टैकस लगा कर प्रजा का रक्त शोषण किया जायगा। पति अपनी स्वरूपा नारी को त्याग कर कुरूपा कुलटा से प्रेम करेगा। तथा पत्नी अपने पति को त्याग कर पर पुरुष के साथ प्रेम संबंध जोड़ेगी। पुत्र कहेंगे हमारा पिता मूरख है, तथा भाई बहिन के झगड़े राज्य दरबार में चलेंगे, क्षणिक धन सुख तथा स्त्री सुख के लिये खून की नदीयें बहा दी जायेंगी, पाखंडी भगवे पहिन कर लाखों रुपये एकत्र करेंगे, और सद गृहस्थ रोटी कपड़े को तरसेंगे। भूख लगने पर नारीयें अपना सतित्व बेचने के लिये उद्यत हो जायेंगी। औषधियें निरस हो जायेंगी। तथा नीचों की पूजा होगी अतः एव विद्यावान ब्राहमणों का अपमान होगा, हे गुरु वर मेरे शासन काल में यह बातें होंगी, यह ईश्वरीय आग्या है, परंतु हे गुरु देव ! मैं चाहता हूँ कि कुछ आप की सेवा कर के आप से आशीर्वाद प्राप्त करूं। गुरू जी ने प्रसन्न हो कर कहा हे कलियुग हमें तो कोई इच्छा नहीं, तथा हम तुमें आशीर्वाद देते हैं कि तमाम युगों में तेरा प्रभाव बहुत ही अधिक होगा, परंतु जो प्रभु कीरती का गायन करेगा; उस की भी महिमां बहुत होगी। हे कलियुग जो प्राणी सतयुग में एक लाख वर्ष तपस्या करे तथा त्रेता में दश सहस्र वर्ष और द्वापर में एक हज़ार वर्ष तपस्या करने पर जो फल प्राप्त होता था वह तेरे युग में अत्यल्प काल में ही प्रभु भगती द्वारा वही गति कलियुगी जीव प्राप्त कर लेगा, जो तू हमें भेंट करना चाहता हैं वह भेंट हम तेरी दशम अवतार में स्वीकार करेंगे, जैसा कि हम ने पहिले भी कहा है। तब हाथ जोड़ कर कलियुग ने कहा—हे महाराज ! मैं आप का दर्शण करके कृत कृत्य हो गया हूँ। और आज से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं आप के जो शिश्य (सिख) होंगे

उन के निकट नहीं जाऊंगा। और नहीं उन पर मेरा कोई प्रभाव ही पड़ेगा, तथा जो दंभी पाखंडी होंगे उन पर ही मेरा असर होगा। गुरू जी ने कहा हे कलियुग ! जो तुम ने यह प्रण किया है कि मैं सिखों के निकट नहीं जाऊंगा, हमें यह प्रण रूपी तेरी भेंट प्रसन्नता उत्पन्न करती है, परमात्मा तेरी यह भावना अटल्ल रखे। और हमारे शिश्यों से तू सदैव दूर ही रहे, जिस से वे (सिख) तेरे दूषित कुकृत्यों से बचे रहें। कलयुग ने फिर कहा हे गुरू जी जो आप के सेवक होंगे उन पर मेरा प्रभाव बिलकुल नहीं होगा। यह मेरा प्रण सत्य है। और जो कुछ भी आप मुझे आग्या दें वही होगा, गुरू जी ने कहा–बस जहां हमारा कीरतन गायन पाठ आदिक होता हो वहां तुम ने नहीं जाना होगा, वाहर ही ठहरना होगा। बस यही हमारी आग्या है। कलियुग ने कहा–हे महाराज जहां आप की अथवा ईश्वर की महिमा गाई जाती हो वहां बैठ कर कुछ परलोक सुधार लूं तथा कड़ाह प्रसाद अपने मुख में डाल कर शरीर पवित्र कर लूं। गुरू जी ने कलियुग की अपार श्रद्धा देख उसे अपना सिख वना लिया। तव कलियुग ने गुरू जी की अपार स्तुति की। और कहा हे महाराज मैं आप के जो सचे सिख होंगे उन के पास नहीं जाऊंगा। परंतु जो पाखंडी होंगे उन पर मेरा प्रभाव अवश्य होगा। इतनी कह कर कलयुग गुरू जी के चणों में नमसकार करके चला गया। तथा गुरू जी वहां से भ्रमणार्थ आगे गये।

॥ तिलंग देस की साखी ॥

संसार को उपदेश का अमृत पिलाते२ गुरू जी महाराज तिलंग देश में आ गये, तथा आसन लगा दिया, एक क्षत्री गुरू जी के निकट आकर कहने लगा हे महाराज ! आप जो कुछ आग्या करो सो हाज़र किया जाय, गुरू जी ने कहा हे भक्त वर ! जो कुछ परमात्मा भेज देगा, हमें वही स्वीकार है। उस ने अपने साथीयों को कहा–कि आगे जितने अतिथि आते रहे हैं सभी कुछ न कुछ मांगते हैं, परंतु यह संत परम संतोषी देखे हैं। जो किसी

वस्तु की इच्छा नहीं रखते। नौकरों को कहा इन के लिये छतीस प्रकार के भोजन सतकार सहित लेकर आओ। यह तो प्रमात्मा रूप नजर आते हैं।

आज्ञा पाकर नौकरों ने अनेक प्रकार के भोजन लाकर गुरू जी के आगे रखे, तब गुरू जी ने उस च्त्री से पूछा कि यह जो आप के साथ आये हैं यह कौन हैं। उस च्त्री ने कहा हे महाराज ! यह मेरे संबंधी हैं तब गुरू जी ने गौड़ी राग में एक शब्द कहा–

राग गउड़ी महला १ ॥

माता मति पिता संतोख। सति भाई कर एह बसोख। कहिणा है कछु कहा न जाय। तो कुदरति कीमत नहिं पाय ॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ सुसुर भणे। करणी कामणि कर मनि लये। साहा संजोग विआह विजोग। सचि संतत कहो नानक जोग ॥२॥

॥ वारतक ॥

यह शब्द सुन कर वह च्त्री गुरू चर्णों में पड़ गया, और कहने लगा आप मेरा उद्धार करो। तथा यह रूखा सूखा गरीब का भोजन स्वीकार करो, तब गुरू जी ने उस का भोजन कुछ अपने श्री मुख में डाला। तथा कुछ प्रसाद रूप उस च्त्री को भी खुलाया। जब गुरू जी के कर कमलों का दिया उस ने प्रसाद खाया तो उस की बुद्धि इक दम उज्वल हो गई। तथा उस के घट के पट च्रण में ही उठ गये। और परमानंद में मग्न हो गया। तब मर्दाने ने कहा–हे महाराज आप ने इस पर बहुत ही शीघ्र कृपा कर दी है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह दौलत चंडी का रूप होती है। यह भला काम नहीं करने देती। जिस पर परमात्मा की कृपा होती है वह इस को वांट कर खाता है, एक तो किसी को कुछ देना और फिर उस पर नम्रता को अपनाना अर्थात जो भी दान करना वह जिस को देना। उस से नम्रता पूर्वक स्वीकार करने की भीष मांगनी यह उत्तम तथा निर्मल मन वालों का काम है। तथा जो इस प्रकार करता है, उस पर ईश्वर की अपार

कृपा समझो। क्योंकि अनेक लोग दान करते समय अभिमान करते हैं। और मन में अहंकार समाया होता है, इस लिये उन की बुद्धि निर्मल नहीं होती। तथा उन का दान भी तामस दान होता है।

इस के पश्चात उस के कुटंबीओं को गुरू जी ने कहा कि हम ने इस के साथ चार प्रहर बातें करनी हैं तथा तुम बाहर बैठ जाओ, जब चार प्रहर हो गये तब गुरू जी ने उसके रिश्तादारों को कहा-हे सजनों अब इस की मृत्यु होने वाली है तुम उस का सामान करो, इतनी सुन कर सभी रोने लगे। फिर प्रहर के पीछे वह स्वर्ग सिधार गया, तब उस के संबंधियों ने उस का बिबाण बना कर तथा सभी तैयारी करके उस की अरथी को शमशान भूमी में ले गये। और उसका संसकार कर दिया। तब स्नान आदिक करके उस के संबंधी गुरू जी को कहने लगे हे महाराज! यह आप के दर्शणों को आया था, और इस की मृत्यु हो गई है। आप ईश्वर के प्यारे हैं। आप इस की सदगती के लिये परमात्मा से प्रार्थना करें। गुरू जी ने उन के शब्द सुन कर मर्दाने को कहा हे मर्दाना रबाव बजाओ तथा हम एक शब्द कहेंगे। तब मर्दान रबाब बजाया। और गुरू जी ने शब्द अपने श्री मुख से कहा-

राग वड हंस महला १ ॥ घर ५ ॥ अलाहणीआं ॥

धन्न सिरंदा सचा पातशाह जिन जग धंधे लाया। मोहलत पुन्नी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाया। जानी घति चलाया लिखया आया रुंने वीर सबाए। काया हंस थीआ वेछोड़ा जा दिन पुने मेरी माए। जेहा लिखिआ तेहा पाया जेहा पुरबि कमाया। धन्न सिरंदा सचा पातिशाह जिन जग धंधे लाया ॥ १ ॥ साहिब सिमरहु मेरे भाई हो सभना एह पयाना। एथे धंदा कूड़ा चार दिहा आगे सर पर जानां। आगे सरि परि जाणा जिउ मिहमाणा काहे गरब कीजै। जितु सेविऐ दरगह सुख पाईऐ नामु तिसै का लीजै। आगै हुकम न चले मूले सिर सिर किआ विहाणा। साहिब सिमरहु मेरे भाई हो सभना एहु पइआणा ॥ २ ॥ जो तिसु भावे

संग्रथ सोथीए हीलड़ा एह संसारो । जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सचड़ा सिरजन हारो । साचा सिरजन हारो अलख अपारो ताका अंत न पाया । आया तिन का सफल भया है इक मनि जिनी धिआइआ । ढाहे ढाहि उसारे आपे हुक्म सवारण हारो । जो तिस भावै संग्रिथ सो थीऐ हीलड़ा एह संसारो ॥ ३ ॥ नानक रुन्नां बाबा जाणीऐ जा रोवै लाइ पिआरो । वालेवे कारण बाबा रोईऐ रोवण सगल बिकारो । रोवण सगल बिकारो गाफल हंमारो माया कारण रोवै । चंगा मंदा किछ सूझै नाहीं एह तन एवे खोवै । ऐथे आया सब को जासी कूड़ करे अहंकारो । नानक रुन्ना बाबा जाणीऐ जा रोवै लाय पिआरो ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

यह अलाहणीयें उस के प्रथाइ हुईं । तब सभी आकर पांओं पड़ गये, गुरू जी ने फरमाया कि जहां यह शब्द पढ़ा जायगा, तब बारां कोस तक के प्राणी मुक्त हो जाएंगे, यह शब्द सुण कर उस के सभी भाई बंधु आकर चर्णों में लग गये । और कहने लगे हे गुरू जी ! आप हमारा बी उद्धार करें । तब गुरू जी ने उन लोगों को भी सिखी की दीक्षा दी । और कहा-धर्म की वृती करनी । सत्य बोलना, फिर ईश्वर नाम का दान दिया । और कहा धार्मिक काम करो तथा जो अतिथी हो उसकी सेवा करनी ॥६१॥

॥ दो गावों की साखी ॥

एक समय श्री गुरू नानक देव चलते२ एक गांव में जा पहुंचे, वहां के लोगों ने श्री गुरू जी महाराज को किसी स्थान पर भी विश्राम नहीं करने दिया । तथा अनेक प्रकार के मजाख किये । किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहना प्रारंभ कर दिया, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह ग्राम सदैव फलता फूलता रहे इस के पश्चात गुरू जी किसी दूसरे ग्राम में जा पहुँचे । उस ग्राम के रहने वाले गुरू जी के निकट आये और बहुत प्रकार से सेवा की । और गुरू जी के लिये श्रद्धा से भोजन भी लाये जो गुरू जी

ने भाई मर्दाने को दे दिया। और कुछ वहां के लोगों में प्रसाद रूप से बांट दिया। दूसरे दिन गुरू जी वहां से आगे को चल दिये। तथा श्री मुख से कहा-कि यह नगर यहां से उजड़ जायगा। तब मर्दाने ने कहा हे गुरु देव आप के दरबार में महान अन्याय देखा जाता है। जिस नगरी के लोगों ने आप को क्षण भर बैठने भी नहीं दिया। उन को तो आप ने आबाद रहने का वर दे दिया। तथा जहां के रहने वालों ने आप की तन मन से सेवा की है, उन के लिये आप ने कहा-कि तुम बर्बाद हो जाओ, यह महान आश्चर्य है, तब गुरू जी ने फरमाया। हे मर्दाना यह किंचित सोचने की बात है, कि जिस नगर में इस नगर का पुरुष जायगा, तब अपने सदोष देश से अनेकों को सन्मार्ग में डालेगा। तथा उन गावों का पुरुष जहां जायगा वहां के रहने वालों को भी भ्रष्ट करेगा। तब मर्दाने ने कहा- हे महाराज! आप की बातें आप ही जान सकते हो, जिसे चाहो पार करो। तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

राग मल्हार महला ३ ॥

खाणा पीणा हसणा सौणा विसरि गया है मरणा। खसम विसार खुआरी कीनी ध्रिग जीवन नहि रहणा। प्राणी एको नाम ध्यावहु। अपनी पत सेती घर जावहु ॥१॥रहाउ॥ तुझ को सेवहि तुझ क्या देवहि मांगहि लेवहि रहे नही। तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदर जीउ तूं ही ॥२॥ गुरमुख ध्यावहि से अमृत पीवहि सेई सूचे होई। अहिनिसि नाम जपहु रे प्राणी मैले हछे होई ॥३॥ जेही रुत काया सुख तेहा तोहे जेही देही। नानक रुत सुहाई साई बिन नावै रुत केही ॥४॥

॥ वारतक ॥

यह शब्द सुन कर मर्दाने ने कहा-वाह वाह तेरी कुदरत यह कह कर नमस्कार किया। फिर श्री गुरू नानक देव जी उन सब को परम पवित्र उपदेश देकर वहां से रवाना हुए।



॥ साखी आसा देश की ॥

अनेक देशों का भ्रमण करते करते गुरू नानक देव जी महाराज आसा देश में जा पहुँचे। उस देश के बन में शेख फरीद हुआ था, जब नानक देव उस के पास गये तब शेख फरीद ने कहा–अलह अलह दरवेश। उतर में गुरू जी ने कहा–अलाह फरीद जोहद हमेश सुआओ शेख फरीद जुहदी आया तब हाथ से हाथ को मिला कर बैठ गये। तब शेख जी ने गुरू जी का स्वरूप देख कर पूछा–

अके तां लोक मुकदमी अके तां अलाह लोड़। दुइ बेड़ी ना लत धर मत वंञे वखर बोड़।

तब गुरू जी ने उतर दिया– ॥ श्लोक ॥

दोहीं बेड़ीं लत धर दोहीं आखर चाढ़। कोई बेड़ी डुबदी कोई लग्गे पार ॥१॥ ना पाणी नां बेड़ीयां ना डुबे ना जाइ। नानक वखर सच धन सहिजे रिहा समाइ ॥२॥

॥ उतर शेख फ़रीद ॥ श्लोक ॥

फरीदा तन रिहा मन फटिआ ताकत रही ना काइ। उठी प्रीति तबीब की ओह कारी दारू लाइ ॥४॥ तब गुरू जी ने उतर दिया। सजण सच परख मुख अलावण थोथरा। नानक मन मझाहू लख तुद हू दूरिन सु पिरी ॥ ५ ॥ तव शेख फरीद राग सूही में बोला ॥ बेड़ा बंधन न सकियों बंधन की वेला। भर सरवर जब ऊछलै तब तरन दुहेला। हथ न लाइ कसु वड़े जल जासी ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इस आपीनै पतली सह केरे वोला। दुधा थनी न आवहि फिर होइ न मेला। कहै फरीद सहेलिओ सह अलाए सी। हंस चलसी डुमणा अहितन ढेरी थीसी ॥ १ ॥

गुरू जी का उत्तर राग सूही ॥

जप तप का बंध बेडुला जितु लंघै वहेला। ना सरवर न उछलै ऐसा पंथ सुहेला ॥१॥ तेरा एको नाम मजीठड़ा रता मेरा चोला। सद रंग

ढोला ॥ रहाउ ॥ सजण चले पिआरिआ क्यों मेला होई । आग्रा गोण निवारसी सच देवै सोई॥२॥ होमैं मार निवारसी सीता है चोला । गुर वचनी सहु पाइआ सहके अमृत बोला ॥ ३ ॥ नानक कहै सहेलीओ सहु खरा पिआरा ॥ हम सहि केरीआ दासीआं साचा खसम हमारा ॥४॥

॥ फिर शेख फरीद बोला राग आसा ॥

दिलहु मुहवत जिन सेई सचिआ । जिन मनहोर मुख होर सि कांढे कचिआ । रते इशक खुदाइ रंग दीदार के । विसरिआ जिन नाउ से भुइ भार थीए ॥१॥रहाउ॥ आप लीए लड़ लाइ दर दरवेस से । तिन धन्न जनेदी माउ आए सफल से ॥२॥ परवरदगार अपार अगम वेअंतु तूं । जिनी पछाता सच चुम्मां पैर मूं ॥ ३ ॥ तेरी पनह खुदाइ तूं बखसंदगी । सेख फरीदै खैर दीजै बंदगी ॥४॥

गुरू जी का कथन राग सूही महला-१ ॥

सुच जी जा तू ता मैं सभ को तूं साहिब मेरी रास जीउ । तुद अंदर हउ सुख वसां तूं अंदर सावास जीउ । भाणै तखत वडिआइआ भाणै भीख उदास जीउ ॥ भाणै थल सिर सर वहै कवल फुलै अकास जिउ । भाणै भौजल लंघीऐ भाणै भंझ वरी आस जीउ । भाणै सोसहु रंगला सिफत रना गुणतास जीउ । भाणै सहु भीहावला हौ आवण जाण मुई आस जीउ । तूं सहु अगम अतोलवा हौ कहि कहि ढहि पैआस जीउ । क्यो मागउ क्या कहि सुणी मैं दरशन भुख पिआस जीउ । गुर वचनी सहु पाइआ सच नानक की अरदास जीउ ॥१॥

॥ वारतक ॥

फिर श्री गुरू नानक देव जी और शेख फरीद जी तमाम रात इकठे ही जंगल में रहे । तब एक पुरुष आया और दोनों को इकठे देख कर अपने घर को गया । और एक कटोरा दूध का भर कर लाया, उस कटोरे में चार मोहरां भी डाल कर ले आया । पिछली रात्री के समय फरीद जी ने अपणा भाग पा लिया । तथा गुरू जी का हिस्सा रख छोड़ा

॥ शेख फरीद का कथन ॥

पहिले पहिरे फूलड़ा फलु भी पछा राति । जो जागंनि लहंन से साई कन्नों दाति ।

॥ उतर गुरू नानक देव जी ॥ श्लोक ॥

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि । इकि जगंदे ना लहिन इकना सुतिआ देह उठालि ।

॥ वारतक ॥

तब श्री गुरू नानक देव जी ने कहा—हे शेख फरीद तुम कटोरे में हाथ डाल कर देख कि इस बर्तन में क्या है । फरीद ने बर्तन में हाथ डाल कर देखा तो उस में चार अशरफीयें थीं । और वह मनुष्य जो दे गया था, वह तो चला गया था । तब गुरू जी ने एक शब्द कहा—

राग तुखारी महला १ ॥

पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीये रैण अंधिआरी राम । वरह राख मईए आवै वारी राम । वारी आवै कौण जगावै सूती जम रस चूसए । रैण अंधेरी क्या पति तेरी चोर पड़े घर भूसए । राखन हारा अगम अपारा सुण बेनंती मेरीआ । नानक मूरख करहि न चेते क्या सूझै रैण अंधेरीआ ॥१॥ दूजा पहिर भया जाग अचेती राम । वखर राख मैये खाजै खेती राम । राखहु खेती हरि गुर सेती जागत चोर न लागे । जममग न जावहु न दुख पावहु जम का डर भौ भागे । रवि ससि दीपक गुर मति द्वारै मन सचामुख ध्यावहे । नानक मूरख अजहु न चेते क्यों दूजे सुख पावहे । तीजा पहिर भया नींद विआपी राम । माया सुत दारा दूख संतापी राम । माया सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासे । नाम ध्यावे तां सुख पावै गुर मत काल न ग्रासे । जंमण मरण काल नहिं छोड़े विनु नावें संतापी । नानक तीजे त्रिबधि लोका माया मोह विआपी ॥३॥ चौथा पहिर भया दौत विहागै राम । तिन घरि रखिअड़ा जो अनदिन जागै राम । गुर पूछ जागै नाम लागैं तिन रैंण सहेलीया । गुर सबद कमावहि जनम न आवहि तिना हरि

प्रभ वेलिया। कर कंप चरण सरीर कंपे नैण अंधले तनभसम से। नानक दुखीया जुग चारे बिन नाम हरि के मन बसे। खूली गंठड़ी आउ लिखिआ आया राम। रस कस सुख ठाके बंध चलाया राम। बंध चलाया जा प्रभु भाया न दीसै न सुणीऐ। आपणा वारी सब सै आवै पकी खेती लुणीऐ। घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीया। नानक सुरि नर सबद मिलाये तिन प्रभु कारण कीया ॥ ५ ॥

॥ वारतक ॥

फिर बाबा फरीद और गुरू जी वहां से चले गये। फिर वही खुदा का बंदा वहां आया। तब उस ने अपना तबलबाज वहीं पड़ा देखा, परंतु अब वह तबल बाज स्वर्ण का बना हुआ था, और उस में ऊपर तक मोहरें भरी पड़ी है तब वह अपने मन में पश्चाताप करने लगा। तथा कहने लगा, हे मन! वे तो पौंहचे हुए साधू थे, यदि मैं शुद्ध मन से उन के निकट आता तो धर्म को पा लेता। मैं तो संसार के लिये आया था; अपितु उतर में मैंनें संसार ही प्राप्त किया है, यह कह कर तबल बाज उठा कर अपने घर को आ गया।

पश्चात श्री गुरू नानक देव तथा फरीद जी आसा को गये, समय आशा देश का राजा शाम सुंदर था। उस का उनीं दिनों स्वर्गव हुआ था। उस की सिर की खोपड़ी जलती नहीं थी, अनेक यत्न क पश्चात पंडितों से पूछा, तब विद्वानों ने कहा-कि इस ने एक बार बोला था, उसी के फल रूप यह कष्ट भोग रहा है, उस समय आशा के रहने वाले सत्य वादी हुआ करते थे, सभी लोक मिथ्या भाषण की सुन कर शोक करने लगे, फिर उन पंडितों ने कहा, कि इसका कल्याण होगा, जब किसी संत के चर्ण छुएंगे तब, तब मंत्रीयों ने केवल एक दरवाजा खुला रख कर तमाम दरवाजे बंद कर लिये।

इधर गुरू जी अथवा फरीद जी उधर आ गये। गुरू जी ने कह शेख जी! आगे आप चर्ण पाओ, तब फरीद जी ने कहा-हे गुरु

मेरी क्या शक्ति है ? तब गुरू जी ने अपने पवित्र चर्ण आगे किया । तब राजा की खोपड़ी उसी समय टूट गई, यह कौतक देख कर आसा देश के तमाम नर नारी गुरू जी के चर्णों में गिर गये, तब श्री गुरू जी ने एक शव्द उचारण किया–

॥ राग मारू ॥ मात पिता मिलि पिंड कमाया । तिन करते एह खेल रचाया । लिख दाति जोति वडियाई । मिलि माया सुरत गुवाई ॥१॥ मूरख मन काहे कर सेहि माणा । उठ चजणा खसमैं भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि सादि सहिज सुख होई । घर छडणै रहे न कोई । किछ खाजै किछ धर जाईऐ । जे बहुड़ दुनीआ आईऐ ॥ २ ॥ सजु काया पटु हंडाए । फ़ुरमाइस बहुत चलाए । कर सेज सुखाली होवैं । हथी पौदी काहे रोवैं ॥३॥ घरि घुम्मण बाणी भाई । पाप पथर तरनु न जाई । भौ बेड़ा जीउ चढ़ाऊ । कहु नानक देवै काहू ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

फिर उस देश के लोग अनेक भांति के पकवान रोटी आदिक ले ले कर आने लगे, और फरीद जी को देने लगे जब वह रोटी वगैरा देते थे, तब फरीद जी कैहते थे, हे भाई ! मैंने भोजन खा लिया है, और कुछ बांध भी लिया है, तब लोगों ने कहा–हे खुदा के बंदे ! मालूम होता है कि तू किसे झूठे देश का वासी है, और झूठ बोल रहा है, तेरे पेट पर तो लकड़ी की रोटी है, यह रहस्य खुलने पर फरीद जी अचंभित हो गये । और सोचने लगे, कि इस देश के राजा ने एक बार झूठ बोला तो उस की यह दुर्गति हुई हैं,और मैंनें तो अनेक वार झूठ बोला है,मेरी गति क्या होगी,यह विचार कर फरीद उदास हो गए, तब गुरू जी ने कहा हे फरीद जी ! आप में खुदा सत्य है, तभ शेख जी ने विदा मांगी, तव गुरू जी ने कहा एक प्रण करो । तव फरीद ने कहा–महाराज भला हो, तब विदाई के समय गुरु जी के कंठ में भुजा डाल कर फरीद जी प्रेम से मिले । फिर गुरू जी ने एक शव्द कहा–

श्री राग महला १ ॥

आवहु भैणे गलि मिलहु मेरी अंक सहेलड़ीआह। मिल कै करह कहाणिआ समरथ कंत की आह । सचे साहिब सब गुणा अवगुण सभ असाह। करता सभ को तेरै जोर एक शब्द वीचारीऐ जा तू कीआ होर ॥रहाउ॥ जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी। सहिज संतोख सीगारीआ मिठा बोलणी । पिर रिसालू तां मिलै जा गुर का शबद सुणी ॥२॥ केतीआं तेरीआं कुदरती केवड तेरी दाति। केते तेरे जीअ जंत सिफत करहि दिन राति। केते तेरे रूप रंग केते अजाति। सचु मिले सचु ऊपजै सच महि साच समाइ। सुरति होवै मति ऊगवै गुर वचनी भौ खाइ। नानक सचा पातशाह आपे लए मिलाइ।

॥ वारतक ॥

यह सुन कर शेख फरीद जी वहां से रवाना हुए तथा गुरू जी ने उस देश में अपने विचारों का धार्मिक प्रचार करके अनेकों भूले भटकों को सन्मार्ग पर चलाया। तब तमाम नर नारी गुरू जी की शरण प्राप्त करके अपना कल्याण करने में सफल हुए।

॥ साखी बाढी भगत की ॥

श्री गुरू नानक देव जी महाराज ! एक बार देशाटन करते २ बाडी भक्त के घर में गये, बाडी भगत ने गुरू जी का अत्यंत आदर सतकार किया। जब गुरू जी उस के घर से जाने लगे तब उसके बर्तन फोड़ गये तथा उस की कुटीया भी गिरा गये और पलंगभी तोड़ कर गये। जब गुरू जी उस के घर से जाने लगे, तब भक्त कहीं बाहर गया हुआ था। मैं ने (बाला) और मर्दाने ने कहा हे महाराज ! इस अनाथ ने हमारी तथा आप की इतनी सेवा की, और हम उस के घर में रहे, परंतु आप ने तो उस की झुग्गी-बर्तन-चारपाई सभी कुछ नाश कर दिया। इस से हमें अपार अचंभा हो रहा है। गुरू जी ने उतर दिया, कि हमें ऐसे परम भक्त की साधारन

न ़ि अच्छे नहीं लगे । जैसे भगवान श्री कृष्ण के भक्त
; मैहल बनवाने के लिये उस की साधारण कुटी गिरा दी थी ।
, हम ने भी इसे अच्छी अवस्था में लाना है। इतनी कह कर
धाम गुरू नानक देव जी आगे चले ।
: वह वाढी भक्त अपनी झुग्गी के स्थान पर आया तो वहां अपार
ाद बने हुए देखे। देखा कि अपार धन राशी है। पहिले तो वह
। परंतु पीछे जब उसे ग्यान प्राप्त हुआ तो जान गया कि भगवान
त माया हैं। उसी प्रकार जो उस के प्यारे भक्त हैं वह भी अपार
स्वामी होते हैं, यह सभी कृपा कालू जी के चंद बाबा नानक देव
;, हरन भरन जा का नेत्र फोर। तिस का मंत्र न जाने होर।
। वाडी भक्त अपने घर में गया तो उने स्वर्ण सरजन के बर्तन
अनेक वहु मूल्य वस्तु देखी जो वस्तु बड़े २ राजाओं को भी
ीं, सभी ऐश्वर्य देख कर श्री गुरू जी की उसी प्रकार स्तुति करने
ास प्रकार सुदामा भक्त अपनी अपार विभूती देख भगवान कृष्णा
ुवाद गायन करने लगा ।
ला जी ने कहा–हे गुरू अंगद देव जी कृपालो ! जो भी पुरुष श्री
ाक देव जी महाराज की अनन्य भक्ति करता है वह भी भक्त बाढी
समस्त ऐश्वर्य अनायास ही प्राप्त कर सकता है, ऐसी मेरी दृढ़
है, इस में संदेह नहीं है।
डी भक्त की इस तरह काया कल्प हुई अवस्था देख कर उस नगर
ारीयों ने गुरू जी की शर्ण ग्रहण की तथा कहा हे महाराज ! आप
मारे नगर में कुछ काल निवास करके हमें भी भव सागर से पार
न को प्रेम श्रद्धा देख कुछ दिन गुरू जी उन के नगर में रहे। तथा

उन का कल्याण किया।

गुरू जी के उपदेश नुसार प्रति दिन कीर्तन होने लगा एक सात वर्ष का लड़का प्रति दिन कीर्तन सुनने आता था, जब कीर्तन समाप्त होता तब वह लड़का आपने घर को आता। एक दिन गुरू जी ने कहा–हे मित्रों! अब कल जब यह लड़का यहां आए तो इसे पकड़ कर हमारे सन्मुख करना। जब दूसरे दिन वह लड़का आया, तो उस को पकड़ कर गुरू जी के समक्ष लाया गया, गुरू जी ने कहा–हे बालक! अभी तो तुमारी खेलने तथा खान पान की आयु है, तू प्रातः काल नींद को त्याग कर यहां किस लिये आता है? उस ने कहा हे महाराज! मुझे इस संत संग में तथा आप के दर्शणों से साक्षात ईश्वर का दर्शण होता है, मुझे खेल कूद से तथा निद्रा से कहीं ज्यादा आनंद की प्राप्ति होती है, एक दिन मेरी माता ने मुझे कहा हे पुत्र! तुम अग्नी प्रज्वलित करो। और मैं आटा आदिक तैय्यार करती हू। हे महाराज! मैनें चूल्हे में लकड़ी जलाई पहिले तो छोटी लकड़ी जलीं, और पीछे वड़ी जलने लगी हे गुरु देव! तब मेरे मन में यह विचार उत्पन हुआ कि स्यात मैं इन लकड़ीयों की भांति छोटी उमर में ही काल के मुख में चला जाऊं। तथा मुझे वजुर्ग होनें का समय ही न मिले, इस लिये मैं अल्प आयु में ही सतसंग में लगना अच्छा जानता हूँ। उस छोटे से बालक की बात सुन सभी सुनने वाले हैरान हो गये, तथा गुरू जी महाराज ने एक अत्यंत पवित्र शब्द उच्चारण किया–

श्री राग महला १ ॥ घड़ी मुहत का पाहुणा काज सुवारन हार। माया काज विआपया समझे नहीं गवार। उठ चलिया पछताया परया वस जंदार ॥ १ ॥ अधैं तूं बैठा कंधी पाहि। जे होवी पूरब लिखिआ तां गुरु का शब्द कमाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरी नाही नहि डडरी पकी वढण हार। लै लै दात पहुतिआ लावे कर तैयार। जा होया हुकम किरसान दा तां लुणी मिलिया खेतार। पहिला पहिर धंधैं गया दूजे भर सोया। तीजे झाख झखाया चौथे भोर भया। कद ही चित न आइओ जिन जीउ पिंड दिया

॥ ३ ॥ साध संगत को वारया जिओ किया कुर्बान। जिस ते सोझी मन पई लिखिआ पुरुष सुजाण। नानक डिठा सद नाल हरि अंतर्यामी जाण ॥४॥

॥ वारतक ॥

जब लड़के ने शब्द सुने तो श्री गुरू जी के पवित्र चर्णों पर नमस्कार किया, तब बाबा जी समस्त संगत पर उस लड़के साथ अपनी अपार कृपा दृष्टी से देखा, गुरू जी ने तब फरमाया कि हे संगत प्यारी ! तुम सभी उस अकाल पुरुष की अनन्य भक्ति में लग जाओ। उसे सब व्यापक जानों। तथा यह शरीर नाशवान मानो, ईश्वर की आग्या से इस जीव को यम दूत पकड़ कर ले जाते हैं। इस प्रकार उपदेश करके गुरू जी आगे की ओर रवाना हुए।

॥ साखी बिसीयर देश की ॥

एक समय भ्रमण करते २ गुरू नानक देव जी महाराज बिसियर देश में जा पौंहचे, वहां नगर निवासी अपने नगर में किसी को आने नहीं देते थे, तब गुरू जी ने नगर के बाहर ही अपना आसन लगा लिया, एक धर्मातमा जिस का नाम झंडा था। उस ने तीन अतिथि आये देखे, तब उस ने अपनी धर्म पत्नी को कहा-कि यदि कुछ घर में हो तो अतिथि सेवा के लिये मुझे दो, तब स्त्री ने कहा कि घर में जो कुछ हो वह आप ले जाओ, झंडे ने घर में देखा तो कुछ भी नहीं मिला, परंतु झंडे की आदत थी कि वह अतिथि सतकार के लिये सदैव उद्यत रहता था, यदि घर में कुछ न हो तो गांव से मांग कर भी साधू अभ्यागत की सेवा करनी उस दा कर्तव्य था, अब झंडा नगर में मांगने गया। तो लोगों ने उसे दंभी जाना, तथा कहने लगे कि यह कारीगरी से संतों का नाम लेकर अपनी उदर पूर्ती करता है, अब हम इसे कुछ भी देने को तैय्यार नहीं हैं।

उस समय उस नगर के राजा की ओर से पहिलवानों की कुश्ती होनी थी, वहां राजा का पहिलवान जो बहुत बली था, तथा किसी से भी नहीं

हारा था। उस के साथ यदि कोई भिड़ जाय तो उसे पारितोष दिया जाना था, शर्त यह थी कि जो उस पहिलवान को गिरा दे उसे १००) एक सौ रुपया मिलेगा, और गिरने वाले को ५०) पचास रुपये राज्य कोष की ओर से दिये जाने थे, भंडे ने उस समय को गणीमत जाना, तथा मन में विचारा कि मैं यदि गिर गया तो जो पचास रुपये मिलेंगे, उस से तीनों अभ्यागतों को भोजन आदिक दे सकूंगा। बस यह विचार कर राजा के पहिलवान से उस ने दस्त मिलाया। और कुश्ती के लिये तैयार हो गया। पहिलवान ने कहा हे भाई! तुम तो मुझे पहिलवान नज़र नहीं आते फिर लड़ कैसे सकोगे। भंडे ने असली बात उसे बता दी। कि मैं संतों की सेवा करनी चाहता हूं तथा, कि जो कुछ भी मुझे प्राप्त होगा, उस से साधुओं की सेवा करूंगा, उस ने जब यह सुना, तो यह जाना कि यह तो परमेश्वर का कोई भक्त है, यह सुण कर पहिलवान का मन द्रवित हो गया, अब उस पहिलवान ने लंगोट कस कर कहा—हे भाई भंडा! आओ मेरे साथ कुश्ती करो, तब भंडा भी तैयार हो गया, जब दोनों घुलने लगे। तब वह पहिलवान उस भंडे से गिर गया, तब राजा ने ईनाम भंडे को दिया, तमाम नगर में यह चरचा होने लगी, कि भंडे ने नामी पहिलवान को पटक दिया, तब भंडे ने उन रुपयों से गुरु महाराज की सेवा दिल खोल कर की। तब गुरु जी ने अंतर्यामी होते हुए सभी कार्य भली प्रकार जान कर पहिलवान को भवसागर से पार कर दिया।

अब भंडे को सतगुर नाम की खुमारी चढ़ गई; फिर वह उदासीनों की भांति इधर उधर फिरने लगा। फिर गुरू जी भंडे के सभी पाप दूर करके उसे मुक्त फल दिया, पहिलवान का नाम मसकीन था, तब गुरू जी ने अपने मुख से श्लोक उचारण किया—

॥ श्लोक ॥

सुखी वसै मसकीनीआ आप निवार तले। वडे वडे अहंकारीआ नानक गरब गले।

फिर झंडे ने गुरू जी के चर्ण कमलों पर नमस्कार किया।

॥ साखी सैदो घेउ से ॥

श्री गुरू नानक देव जी एक देश में पहुंचे, वहां सैदो घेउ गुरू जी की सेवा करने लगा, गुरू जी प्रति पिछली रात्री के समय नदी पर स्नान करने जाते। तथा एकांत में बैठ कर निरंकार परमात्मा की भक्ति में लीन हो जाते थे आप तो ज्योति से ज्योति मिलाते थे। परंतु सैदो ने यह जाना कि गुरू जी ख्वाजा खिजर की भक्ति करके यह महानता प्राप्त करते हैं। अर्थात गुरू जी खिजर की उपासना करते हैं, यदि मैं भी दरया किनारे ख्वाजा खिजर की भक्ति करूं तो गुरू नानक जैसी मुझ में शक्ति उत्पन हो सकती है। यह सोच कर उस ने भी नदी किनारे आना शुरू कर दिया, एक दिन सैदो घेउ जा रहा था कि इसे एक पुरुष मिला। उस नवागत के हाथ में एक मछली थी, उस ने पूछा भाई तेरा नाम क्या है? इस ने कहा मेरा नाम सैदो घेउ है। मैं प्रति दिन इसी समय दरया किनारे भक्ति करने जाता हूँ। इच्छा है कि खिजर मुझ में शक्ति प्रदान करे। अब मैं आप से पूछना चाहता हूं कि तुम कौन हो, वह नवागत बोला—मेरा नाम ख्वाजा खिजर है मैं प्रति दिन इसी समय सतगुरू श्री नानक देव जी महाराज के दरशण करने जाता हूँ। तथा उनकी सेवा करता हूं। क्योंकि गुरू नानक देव जी तो परमात्मा का साक्षात रूप हैं। ईश्वर में और गुरू नानक देव में कोई भी भेद नहीं है, निरंकार ने संसार का कल्याण करने के लिये श्री सतगुर नानक देव जी को भेजा है। जो ऐसा नहीं जानता, वह नर पापी है। इस प्रकार कह कर ख्वाजा खिजर वहां से रवाना हुआ। सैदो घेउ हैरान होकर कहने लगा—कि हम ने यह जाना था कि गुरू जी ने ख्वाजा खिजर से शक्ति ली है, यह तो हमारी सरा सर भूल थी। खिजर तो स्वयं गुरू जी की सेवा पूजन करने जाता है।

एक दिन फिर इसे खिजर मिला। उस ने कहा हे सैदो मैं तो जल

रूप हां, और गुरु जी पवन रूप हैं, मैं अनेकों बार उन से पैदा हुआ हूँ। और अनेकों बार उन के भीतर लीन हो गया हूं। जब खिजर से यह बातें सुनी तो सैदो घेऊ गुरूजी के चर्णों में आकर गिरपड़ा, और त्राहि मां त्राहिमां शब्द कहने लगा, गुरू जी ने कहा-हे भाई ! तुम इस समय कहां से आ रहे हो, तब उस ने ख्वाजा खिजर की तमाम गाथा कह सुनाई, तमाम कहानी सुन कर गुरु जी ने एक शब्द कहा-

॥ गौड़ी बैरागन महला १ ॥

रैण गवाई सोयके दिन गवाया खाइ। हीरे जैसा जन्म है कौडी वदले जाइ ॥१॥ नाम न जानिआ राम का मूड़े फिर पाछे पछोताइ रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनता धन धरनी धरे अनतन चाहिआ जाइ। अनत को चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥२॥ आपण लीआ जे मिलै तां सब को भागठ होइ। करमां उपर निवड़े जे लोचै सभ कोइ ॥ ३ ॥ नानक करना जिन किया सोई सार करेइ । हुकम न जापी खसम का किसे वडाई देइ ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वारतक अर्थ ॥

गुरू जी कैहते हैं हे भाई यह जो जगत है सो रात्री को सो जाता है और दिन खा पी कर गवा देता है, उस प्राणी का एक २ श्वास हीरे मोती जैसा है, वह विषयों में नाश होता है, तथा उस परमत्मा का नाम स्मर्ण नहीं करते, और अंत समय इन को पश्चाताप होता, है तथा अनित्य धन को धरती में गाड़ देते हैं, उस के लिये अनेकों पाप करते हैं, तथा जो परमात्मा रूपी नित्य धन है। उसे कोई भी प्राप्त नहीं करता झूठे और नाशवान धन की हर एक इच्छा करता है। अच्छी वस्तु ईश्वर कृपा के विना कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती। बाले ने कहा हे गुरु अंगद देव जी फिर महाराज ने फरमाया कि जिस परमात्मा ने संसार उत्पन किया है उस ने सद उपदेष्टा होकर संसारी जीवों को परमात्मा के नाम जपने का सन्मार्ग प्रदान किया है, जिस से जीवों का कल्याण हो।

यह सुण कर सैंदो घेउ ने कहा—हे महाराज! इस मन का कोई विश्वास नहीं है। यह उपदेश में से कुछ शब्द तो स्मर्ण रखता है तथा कुछ भूल जाता है। यदि आप के दर्शण प्रति दिन हों तो बेड़ा पार हो जाए। तब गुरू जी ने कहा—भाई हमारे दो स्वरूप हैं। एक सगुण रूप है जो शरीर देख रहे हो। तथा दूसरा निरगुण रूप है वह शब्द है, सगुण रूप सदैव प्राप्त नहीं होता, क्यों कि शरीर सदा नहीं है, तथा शब्द का सदैव दरशण होता रहता है। और होता रहेगा, यह सुण कर सैंदे घेउ ने गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया। औइ प्रार्थना की कि मैं अग्यानी जानता था कि आप को जो शक्ति प्राप्त है वह ख्वाजा की प्रदान की हुई है परंतु अब तो मुझे ग्यान हो गया है कि आप साक्षात ईश्वर रूप हो। तथा सभी प्रपंच आप से ही ओत प्रोत है। आप जिस को जगा दो वही जागता है। तथा आप से विमुख निंद्रा और आलस्य का शिकार हो जाता है। यह सुण कर गुरू जी ने एक परम पवित्र श्लोक उचारण किया—

श्लोक महला १ ॥

अठी पहिरी अठ खंड नावां खंड सरीर। तिस विच नौ निध नाम एक भालहि गुणी गहीर। करम वंती सालाहिआ नानक कर गुरु पीर। चौथे पहर सुवाहि के सुरतिआ उपजै चाउ। तिनां दरिआवां सिउ दोस्ती मनमुख सचा नाउ। ओथै अमृत वंडीऐ करमी होय पसाउ। कंचन काया कसीए वन्नी चढ़े चढ़ाउ। जे होवै नदर सराफ दी ता बहुड़ न पाई ताउ॥ २॥ सती पहरी सत भला बहीऐ पढ़िआ पास। ओथै पाप पुन्न वीचारीऐ कूड़हु घटै रास। ओथे खोटे सटिअही खरे कीचहि साबास। बोलन फादल नानका दुख सुख खसमै पास।

॥ वारतक ॥

जब यह शब्द जनता ने सुना तब सभी नर नारी गुरू जी की शरण को प्राप्त हुए। तब गुरू जी ने उन सब को उपदेश दिया तथा कहा—कि अतिथि की सेवा करो। नेक कमाई करो, सच बोलो धर्म शाला बनवाओ।

प्रेम से रहो। प्रभु नाम का प्रति दिन कीरतन करो, अंदर बाहर शुद्ध रखो, तथा अकाल पुरुष को सब व्यापक जानो, फिर गुरू जी आगे चले।

॥ साखी पंजाब आने की ॥

अब गुरू नानक देव जी अनेकों देशों का भ्रमण करते तथा अनेकों जीवों का कल्याण करके पंजाब की ओर लौटे मार्ग में एक निर्जन भयंकर बन आया। जहां कोई भी बस्ती नहीं थी, दश दिन पर्यंत उसी में रहे। तब मर्दाने को अत्यंत भूख लगी। तब कहने लगा-हे परमात्मा ! हम तो डूम लोग हैं, गांवों में से मांग कर कुछ न कुछ पालन कर ही लेते थे। अब तो भूखे मरने लगे हैं। अल्लाह ने यदि मेहर करदी तो भयानक बन से बाहर निकलेंगे। नहीं तो बस इसी जंगल में फातहा पढ़ा जायगा। यदि कोई दरिंदा जानवर हमें मार कर खा गया तो बस अल्लाह ही मालक है मुझे तो यही नज़र आता है कि भांग के भाड़े जान जाने वाली है, यह सुन कर गुरू जी मुसकरा कर कहने लगे हे भाई मर्दाना ! डरना उचित नहीं है। जब तक हम तेरे साथ हैं तब तक कोई तेरे निकट नहीं आ सकता, ज़रा होशयार हो। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! होशयार यहां कैसे रहा जाय यह भयानक निर्जन बन है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यह उजाड़ नहीं, यह तो बस्ती है। जहां परमातमा का प्रेम पैदा हो उसे उजाड़ कैहना पागलपन है। तथा जहां परमेश्वर का नाम भूल जाय उस स्थान को उजाड़ जानो। फिर गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

राग आसा महला १ ॥

देवतिआ दरसण कै ताई दूख भूख तीरथ कीए। जोगी जती जुगत महि रहते कर कर भगवे वेस भए। तौ कारन साहिबा रंग रते। तेरे नाम अनेका रूप अनेका कहण न जाई तेरे गुण केते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि दरि महिला हसती घोड़े छोंड वलायत देस गए। पीर पैकंबर सालिक सादिक छोटी दुनीआ थाइ पए। साद सहिज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे

चमड़ लीए। दुखीये दरद वंद दर तेरे नाम रते दरवेस भए। खलड़ी खपड़ी लकड़ी चमड़ी सिखा सूत धोती कीनी। तूं साहिब हौं सांगी तेरा नानक भगता जात कैसी।

॥ वारतक ॥

गुरू जी ने कहा हे मर्दाने ! तेरे बगैर बाणी पूर्ण नहीं होती, इस लिये तू रबाब मेल कर बजा। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! मैं रबाब किस प्रकार बजाऊं। मैं तो भूख से व्याकुल हो रहा हूँ। भूखे पेट रबाब नहीं बजाया जाता; गुरू जी ने कहा-अच्छा फिर तू किसी बस्ती में जाकर भूख का इंतजाम कर, मर्दाने ने कहा-हे महाराज ! मुझ में तो कहीं जाने की सामर्थ्य नहीं है, मैं तो मरने लगा हूँ। गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना ! हम तुम को मरने नहीं देते। तुम होशयार हो जाओ। मर्दाने ने कहा- अब होशयार कैसे हुआ जाय अब तो लबों पर श्वास हैं, गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! तू अब इन वृक्षों के फल खा ले, परंतु फल बांधने नहीं होंगे। तब गुरू जी की आग्या से मर्दाना फल खाने लगा। फल अत्यंत स्वादु थे, मर्दाने ने सोचा कि फिर कहीं ऐसे फल प्राप्त हों न हों, कुछ बांध लूं तो क्या हानि है ? जव यात्रा में दूसरा दिन चढ़ा। तब मर्दाने ने वह बांधे हुए फल निकाल कर मुंह में डाले, डालते ही मर्दाना पृथिवी पर गिर पड़ा, तब गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! यह क्या हुआ है, तब मरदाने ने कहा-हे महाराज ! मैनें आप की आग्या न मान कर कुछ फल बांध लिये थे। अब जब मैं उन को खाने लगा तब गिर गया हूँ।

गुरू जी ने कहा हे मर्दाना तुम ने गलती की है। यदि तुम ने खाने ही थे तो हमारी आग्या प्राप्त करके खा लेता भाई यह फल तो विष के हैं हमारी आज्ञा से यह अमृत रूप हो गये थे। फिर गुरू जी ने अपना चर्ण मर्दाने के माथे लगाया। वस ततकाल मर्दाना उठ कर बैठ गया। और गुरू जी की स्तुति मुक्त कंठ से करने लगा। तथा कहने लगा हे महाराज !

हम लोग मिरासी मांग कर खाने वाले हैं। और आप गुणातीत पवनहारी दयालू परिपूरण हो, हमारा और आप का मेल असंभव है अतः एव आप हमें जाने की आग्या दें तो ठीक है। गुरू जी ने मुस्करा कर कहा हे मर्दाना! हमारा तुमारे साथ प्रेम है। तुम यह बताओ कि तुम जाने से किस प्रकार रुक सकते हो। मर्दाने ने कहा हे गुरू देव! आप यदि हमारी भूख का बंदोबस्त कर दो। तो फिर यह दास सदैव आप के चर्णों में ही रह सकता है, गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना तू संसार से सुरखरू हो गया है। तू निहाल है निहाल है। फिर मर्दाने ने चर्णों पर अपना माथा रख दिया, गुरू जी ने उठाकर उसे भूत भविश्य वर्तमान का ग्याता कर दिया, धन्य हैं गुरू नानक देव जी महाराज।

अब गुरु जी उस भयानक वन से बाहर आए, और मर्दाने को कहने लगे हे मरदाना! अब किधर जाने का विचार है! मर्दाने ने कहा हे महाराज जैसे आप की इच्छा हैं वैसे करो। यदि मुझे पूछते हो तो मेरा मन घर की ओर जाने को चाहता है, तवगुरु जी ने मुझ (वाले) से पूछा हे वाला मरदाना क्या कहता है, मैंने कहा–हे महाराज! जैसे आप की इच्छा हो वैसे करो, यदि मुझ से पूछते हो तो मरदाना सत्य कहता है, मैं भी घर की ओर लौटनें के पत्त में हूँ। क्यों कि बालबच्चों को मिलने के लिये मन चाहता है, तथा इस मरदाने की भी यही इच्छा है। घर से आए वहुत समय व्यतीत हो चुका है, मोहमाया उमड़ रही है, मैहता क़ालू जी तथा माता आदिक सभी याद कर रहे होंगे। उन के लिये भी घर को लौटना उचित है, आगे जैसे आप की इच्छा हो वैसे ही हमें स्वीकार है। आप वहिन जी के पास श्री चंद्र जी को छोड़ आये हुए हो, उस के लिये भी कोई स्थान वनाना परमावश्यक है, तव गुरू जी ने कहा–हे वाला! यहां से दो कोस की दूरी पर तलवंडी है। अव गुरू जी बारां वर्ष के पश्चात अपने नगर तलवंडी में पधारे। उस समय संवत १५७० विक्रम था, उस समय गुरू जी की परमायु ४६ छयालीस वर्ष की थी। जव **हम** तीनों **गांव** के वाहर एक

स्थान पर बैठ गये तब मरदाने ने कहा-यदि आप की आग्या हो तो मैं अपने घर जाकर बालबच्चों को मिलूं। और देखूं कि कौन कौन मर गया है, तब गुरू जी ने कहा-हे मरदाना! तूं भोला है, हम तो संसार को तारने आये हैं तू हमारी सेवा में रहे, तो तुमारा आदमी किस प्रकार मर सकता है, जाओ भली प्रकार देख कर आओ। परंतु हमारे घर में हमारे आने की बात नहीं कहनी होगी। बहुत अच्छा कह कर मर्दाना अपने घर गया, घर वालों ने देखा तो सभी मर्दाने को कंठ से लगा कर मिले। वैसे तो मरदाना डूम था, परंतु गुरु महाराज के सहवास ने उसे भी पूज्य कर दिया, जैसे चंदन के निकट वर्ती साधारण वृक्ष भी चंदन के तुल्य हो जाते हैं, जो आता था, वही मर्दाने का सतकार करता था। वह सभी गुरु नानक जी का प्रताप था, वहां से मर्दाना गुरू जी के घर को गया, गुरू जी की माता ने जब मर्दाने को देखा तो भाग कर आई तथा मर्दाने को कंठ से लगा लिया। और नेत्रों में जल भर कर कहने लगी हे मर्दाना! कहीं नानक देव का तुम को पता हो तो बताओ, आज कहां पर हैं? इतनें में और लोग भी आ गये तथा श्री गुरू नानक जी का समाचार सभी पूछने लगे, मर्दाने ने उत्तर दिया कि मैंनें श्री नानक देव को सुलतान पुर में देखा था, आगे मुझे कोई ग्यान न ही है। इतनी कह कर मर्दाना वहां से चलने को तैयार हुआ, मर्दाने को शीघ्र ही लौटते देख कर माता जी को कुछ संदेह हुआ, तब कुछ वस्त्र और मिठाई लेकर माता जी भी मर्दाने के पीछे २ चले, माता जी ने मर्दाने से कहा-हे मर्दाना! तू मुझे मेरे प्यारे पुत्र का दर्शण करा, तब मर्दाना चुप चाप चलता रहा, जब दो कोस पर आये तो गुरू जी ने अपनी पूज्य माता को देखा तो भाग कर माता जी के चर्णों पर शीश धर दिया, माता ने सारे संसार के पिता को अपना प्यारा पुत्र जान कर झट से उठाया और कंठ से लगा लिया, नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगे। और कहने लगी हे पुत्र! मैं तेरे पर बलिहार हूँ। बेटा! तूं तो मेरे बूढ़े नैनों का एक सहारा है, हे पुत्र! तू जिस जिस स्थान पर गया है। मैं

उस स्थान पर बलिहार हूं। हे बेटा ! मैं तेरे दर्शणों से अपने को धन्य मान रही हूं। अब गुरू जी के नेत्रों में भी मातृ स्नेह के आंसु आ गये । फिर प्रसन्न होकर हसने लगे, तथा मर्दाने को आज्ञा हुई कि तुम रबाब बजाओ। फिर गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-जो परम पवित्र तथा कल्याण कारी है।

राग वडहंस महला १

अमली अमल न अंबड़ै मछी नीर न होइ। जो रते सेहि आपणे तिन भावै सभ कोइ ॥१॥ हौ वारी वंञा खनीऐ वंञा तौ साहिब कै नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहिब सफलिओ रुखड़ा अमृत ताका नाउ। जिन पिया से तिपत भये हौ तिन बलिहारै जाउ। मै की नदरी न आवही वसहि हभीया नाल। तिखा तिहाया क्यों लहै जा सरि भीतर पाल ॥ ३ ॥ नानक तेरा वाणीआं तूं साहिब मेरी रास। मन ते धोखा ना लहै जा सिफत करी अरदास ॥४॥

॥ वारतक ॥

फिर माता जी ने वस्त्र और मिठाई आगे रख दी। और कहा-हे बेटा ! यह खा लो, गुरू जी ने कहा-हे माता जी ! मेरा तो पेट भरा हुआ है। माता जी ने कहा-हे बेटा ! तूं बगैर खाऐ कैसे तृप्त है, तब गुरू जी महाराज ने एक शब्द और उचारण किया-

श्री राग महला १ ॥

सभि रस मिठे मन्नीऐ सुणिए सालोणे । खट तुरसी मुख बोलणा मरण नादि किये। छती अमृत भाउ एक जाकउ नदरि करेहि ॥ १ ॥ बाबा होर खाणा खुसी खुआर । जितु खादै तन पीड़ीऐ मन मैं चलै विकार ॥ १ ॥ ॥ रहाउ ॥

फिर माता जी ने कहा हे बेटा ! यह फकीरों का बानां खिलता उतार दो और यह नवीन वस्त्र पहिन लो। तब गुरू जी ने दूसरी पौड़ी उचारण की-

॥ पौड़ी ॥

पहिनण रता मन रता सुपेदी सति दान। नीली सिआही कदा करणी

पैनण पहिर धिआन। कमर बंद संतोष का धन जोबन तेरा नाम। माता होर पैनण खुसी खुआर। जित पैदे तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥

उधर मैहता कालू जी को पता चलातो वह भी पुत्र दर्शण को चला। और घोड़े ऊपर चढ़ कर चला। गुरू जी ने पिता के चर्णों पर अपना शिर रख कर प्रणाम किया, तब कालू पिता ने जगत पिता को अपने कंठ से लगा कर माथा चूमा। और आंखों में प्रेम के आंसू आ गये, कहने लगा हे पुत्र नानक ! तुम घोड़े पर चढ़ कर अपने घर को चलो। गुरू जी ने उतर दिया हे पिता जी ! यह घोड़ा मेरे किसी काम का नहीं है। इस के पश्चात गुरू जी ने तीसरी पौड़ी कही–

पौड़ो तीसरी ॥ घोड़े पाखर सोइने साखत बूझन तेरी वाट । तरकस तीर कमान सांग तेग़ बंध गुण धात। वाजे नेजे पति सिओ परगटि करम तेरा मेरी जाति ॥ ३ ॥ बाबा हो चढ़ना खुसी खुआर । जित चढ़िऐ तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

तव फिर कालू जी ने कहा–हे नानक ! उठ कर घर को चलो, मैनें वड़े सुंदर नवीन मकान वनाये हैं, उस में तुम निवास करो। सभी परिवार तुमारा ही है, उन को मिलो क्यों कि तुम बहुत देर पीछे आये हो, और जव तुमारी इच्छा होगी फिर चले जाना, यह सुण कर गुरु जी ने चौथी पौड़ी उचारण की–

पौड़ी चौथी ॥ घर मंदरि खुसी नाम की नदरि तेरी परवार । हुकम सोई तुद भावसी होर आखन वहुत अपार। नानक सचा पातसाह पुछ न करे वीचार ॥ ४ ॥ वावा होर सवणा खुसी ख़वार । जिन सुतिआ तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार।

॥ वारतक ॥

कालू जी ने कहा–हे वेटा नानक ! यह तो वताओ कि तुमारा मन

किस लिये वैराग्य को प्रिय जानता है, यदि तू चाहे तो मैं तेरा दूसरा विवाह करने को तैयार हूँ। तब गुरू जी ने और शब्द उचारण किया—

राग सूही महला १ ॥

जिन कीआ तिन देखिआ जग धंदड़ै लाया। दान तेरै घटि चानणा मुख चंदु दीपाया। चंदो दीपाइआ दान हरि कै दुख अंधेरा मिट गया। गुण जंञ लाड़े नाल सौहै परख मोहणीऐ लया। वीवाह होया सोभ सेती पंच सबदी गाया। जिन किया तिन वेखिआ जग धंधड़ै लाया ॥ १ ॥ हौ बलिहारी साजनां मीता अवरीता। जिन सेती मन रातिआ चित लीअड़ा दीता। चित लाइ लीता जिनां सेती से सजन क्यों वीसरहि। जिना नजरी आया होइ रलया जीउ सेती गहि मिलैं। सभ गुण अवगुण नाही कोइ होइ नीता नीता। हौ बलिहारी साजना सतिगुर के मीता ॥ २ ॥

फिर गुरू जी ने और शब्द कहा ॥ श्लोक महला १ ॥

सूहीवए निमाणी एसो सहु सदा समालि। नानक जनम सवारहि अपणा कुल भी छुटी नाल। गुणा का होवे वासला कढि वास लहीजै। जे गुण होवे साजना मिल सांझ करीजै। सांझ करीजै गुनह तेरी छोड अवगुणि चलिऐ। पहिरै पटंबर कर अडंबरि आपणा पिड़ मल्लीऐ। जिथे जाइ बहीऐ भला कहीहै झोलि अमृत पीजै। गुणा का होवै वासला कढ वास लहीजे। आप करै किस आखीऐ होर करे नहि कोई। आखण किस पह जाईऐ जे भूलड़ा होई। जे होइ भूला जाइ कहीऐ आप करता किउ भूलै। अण मंगिआ अण पुछिआं दान हरि का इउ मिलै। दान देहु दाता जग विधाता नानका सच सोई। आपि करै किस आखीऐ होर करे न कोई ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

तब गुरू जी ने कहा—हे पिता जी! वह जो विधाता है, वह कभी नहीं भूलता, तथा यह संयोग वियोग उसी की इच्छा अनुसार होते हैं, माता जी कहने लगी हे पुत्र! यह तमाम कहानीआं छोड़ कर घर चलो, क्यों अब

का संयोग फिर कभी हो अथवा न हो, इस लिये समय की नाजुक हालत देख कर हमें इस से लाभ प्राप्त करना उचित है, तब गुरू जी ने एक पवित्र शब्द उचारण किया–

राग मारू महला १ ॥

पिछहु राती सद्धड़ा नाम खसम का लेहु । खेमे छतर सराइचे दिसण रथ पीड़े । जिनी तेरा नाम ध्याया तिन कउ सद मिलहु ॥ १ ॥ बाबा मैं करमहीन कूड़िआर नाम ना पाया तेरा । अंधा भरम भुला मन मेरा ॥रहाउ॥ साद कीते दुख परफड़े पूरब लिखे माइ । सुख थोड़े दुख अगले दुखे दुख विहाइ ॥ २ ॥ विछड़िआ का किआ विछड़े मिलिआ का क्या मेल । साहिब सो सलाहीऐ जिन कर देखया खेल ॥ ३ ॥ संजोगी मेलावड़ा तिन तनि कीते भोग । विजोगी मिलि विछड़ै नानक भी संजोग ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

गुरू जी ने कहा–हे माता जी ! हम फिर कभी आयेंगे, अब हम उदास हो रहे हैं । थोड़े दिनों तक आयेंगे, माता जी ने कहा–एक बार तुम घरचलो । जिस से मन को संतोष हो हे बेटा ! तुमारा जाना सुन कर हमें उदासी हो जाती है, यदि तुम यहां रहो तो हम श्री चंद्र आदिक को भी यहां ही बुला लें । हे पुत्र ! जब तेरा जन्म हुआ था, तो पंडितों ने कहा था हे त्रिपते ! यह तेरा जो पुत्र है यह अपार शक्तिका स्वामी होगा,और तमाम पीर फकीर पैगंवर तथा देवता इस के समत्त झुकेंगे, परंतु हे पुत्र ! मेरे मन को चाव हैं वे अभी पूरण नहीं हुए । हे पुत्र ! वैसे मेरा क्या जोर हैं यदि तू रहना स्वीकार करे तो मुझे सुख होगा । आगे जैसे तेरी इच्छा ।

इतने में गुरू जी के चचा आदिक सभी परिवार वहां आ गया, गुरू जी ने चचा लालू आदिक का यथोचित सतकार किया, लालू बुद्धीमान पुरुष था, उस ने बैठ कर कहा–हे नानक देव ! आप ने हम पर बहुत उपकार किया है, जो हमें दरशण देकर कृतार्थ किया है, तब गुरू जी ने कहा–हे पूज्य चचा जी ! परमात्मा आप पर कृपा करे । आप परिवार में

अधिक बुद्धिमान हैं; मैं अपने मन की बात आप के समक्ष कहने लग
हूँ। इस समय मेरा मन अति ही उदास हो रहा है। कुछ दिन इधर उध
सैर करके फिर तुरत आप सभ का दरशण करेंगे। इस प्रकार गुरू जी स
परिवार को मिले सब का सतकार करके माता जी के चर्णों पर नमस्क
किया। तथा पिता जी को बार बार नमस्कार की और कहा हे पिता जी
हम थोड़े दिनों तक आप के पास आकर रहेंगे। फिर गुरू जी सब को ध
देकर भ्रमणार्थ चले गये।

॥ साखी रावी जाने की ॥

बाले ने कहा—हे गुरू अंगद देव जी महाराज! उस समय गुरू
जहां जाते थे, वहां के सभी जीव भवसागर से पार हो जाते थे। जैसे ए
चंदन का विटप अपने इर्द गिरद के अन्य वृक्षों को भी सुगंधित करते
उसी प्रकार जो भी गुरू जी के निकट जाता था, उस के ही भाग्य उदय
जाते थे, और वह भव जल पार कर जाता था।

चलते २ गुरू जी एक गांव के निकट गये। वहां एक पुरुष रा
स्नान को आता था। एक दिन उस ने देखा कि गुरू नानक देव जी विरा
रहे हैं और भाई मर्दाना रबाब बजा रहा है, गुरू जी के मुख से पवि
शब्द सुन कर वह पुरुष निकट आ कर गुरू जी के चर्णों पर नमस्क
करके बैठ गया। कुछ काल पीछे वह उठ कर अपने घर जाकर अप
पत्नी को कहने लगा, हे प्यारी! आज मैंनें तीन संत देखे हैं, यदि तू
के लिये भोजन तैयार करे, तो मैं उन को दे आऊं। मैंनें प्रण किया है
उन को खिला कर ही आप भोजन पाऊंगा। उसकी पत्नी ने पति की आ
से बहुत शीघ्र भोजन तैयार किया। फिर वह भोजन लेकर गुरू जी
पास गया, तथा भोजन गुरू जी के आगे रख दिया, तथा प्रार्थना की।
महाराज! भोजन पाओ, गुरू जी ने उस का प्रेम देख कर मुझे (बाल
को कहा हे बाला! तू इस भोजन में से चौथा भाग तो मर्दाने को दे दो, अ

वाकी भोजन सभी में बांट दो, मैनें गुरू जी की आग्या का पालन किया । तथा भोजन बांट दिया । तथा भक्त को परमोच उपदेश देकर गुरू जी आगे चले ।

॥ साखी दोदा और कोड़ीआ की ॥

एक दिन गुरू जी ने कहा–हे बाला–मर्दाना ! चलो तुम को रावी नदी की सैर करावें । गुरू जी हमे साथ लेकर रावी के तट पर आ बिराजे, तब मर्दाना रबाब बजाने लगा और शब्द भी पढ़ने लगा, फिर मर्दाने ने कहा–महाराज अब आगे भी चलना चाहिये,तब गुरूजी ने कहा–हे मर्दाना ! उतावला मत हो, यहां एक दोदा जिमीदार रहता हैं। उस की धर्म पत्नी हमें जानती है। इतने में उस दोदे की धर्म पत्नी वहां आ गई। और गुरू जी को बैठे देख कर बहुत ही प्रसन्न हुई, वह नारी अति निर्धन थी, तथा उस के कोई पुत्र भी नहीं था, उस ने अपने घर आकर के अपने पति को कहा–हे ठाकुर ! एक संत रावी के तट पर आये हैं। चलो उन के दरशण करो, अब वे दोनों चले, तथा गुरू जी के लिये दूध ले लिया। गुरू जी के निकट जाकर प्रणाम किया। गुरू जी ने कहा–हे दोदा प्रसन्न हो ? दोदे ने अति निम्रता से कहा हे महाराज ! आप की कृपा हैं । इस के उतर में गुरू जी ने कहा–हे दोदा ! परमात्मा तुमारे अंग संग रहे । उस दिन से दोदे की पत्नी तो नित्य प्रति दरशणों को आने लगी, परंतु दोदा कभी २ आता था, एक दिन दोदे की स्त्री दूध लेकर गुरू जी के दरशणों को आई। पीछे जब दोदा अपने घर पत्नी को न पाकर श्री गुरू जी के चर्णों में आया। गुरु जी ने कहा–हे दोदा ! तू हमें बता तेरे मन में क्या इच्छा है, हमारे स्वामी परमेश्वर के घर में सभी कुछ है। हम तुझे उस परमात्मा से जो चाहो दिला सकते हैं। तथा यदि तू दूध पीना चाहे तो यह नदी दूध की बह रही है जितना चाहो पी सकते हो, तब दोदा नदी का जल पीने लगा। और उसे दूध का ही स्वाद आने लगा । अब दोदे को

विश्वास हो गया कि गुरु जी सभी कामना पूर्ण कर सकते हैं। उस ने गल में पल्ला डार कर गुरू चर्णों में प्रार्थना की। गुरू जी ने कहा—हे दोदा जो कुछ चाहो मांग लो, दोदे ने कहा—हे महाराज ! मैं दूध और पुत्र मांगता हूं गुरू जी ने कहा—हे दोदा कुछ और भी मांगो। उस ने कहा हे महाराज ! मैं दूध और पूत से भरपूर होना चाहता हूँ। गुरू जी ने तीन बार कहा—कुछ और मांगो परंतु उस ने अपार दूध पूत ही मांगा। गुरु जी ने कहा—तथा स्तु। अब गुरू जी वहीं निवास करने लगे । गुरु जी के दरशणों को अनेक भक्त आते थे।

पातशाह की ओर से वहां एक थानेदार जिस का नाम कोड़िआ था, उस ने सोचा कि यह फ़कीर कोई भारी जादूगर है, यह सोच कर उस ने अपने सिपाही को कहा कि तुम मेरी घोड़ी तैयार करो। उस को वहां से उठा कर आऊंगा। नहीं तो उसे बांध कर हवालात में बंद करूंगा । वह थाने-दार इस प्रकार के दुष्ट भाव लेकर घोड़ी पर चढ़ कर आया तो रास्ते में घोड़ी से गिर पड़ा। और उस की टांग टूट गई। अब चारपाई पर पड़ा था। बहुत दिन के पश्चात जब कुछ ठीक हुआ तो एक दिन फिर वह गुरु जी की ओर आया। और मार्ग में वही बात फिर मन में आई। कि या तो नानक देव को वहां से उठाऊंगा। या बांध कर ले आऊंगा । जब यह भाव मन में आये तो वहीं अंधा हो गया। तब लोगों ने कहा—हे भ्राता ! अगर तू शुद्ध भावना से जाये तभी वहां जा सकेगा, अन्यथा नहीं । अब कोड़िया थानेदार कुछ होश में आया। तथा लोगों से गुरु देव की स्तुति सुन कर पैदल चल आया। और गुरु जी के चर्णों में नमस्कार करके बैठ गया। गुरु जी ने कहा—आओ भाई कैसे आये हो तब कोड़िया ने हाथ बांध कर प्रार्थना की। कि हे महाराज ! जो मैंनें भूल की है उसे क्षमा करो, मुझे अहंकार ने अंधा कर दिया था, आप दया के समुद्र हो, तथा मैं आप से दया की भिक्षा मांगने वाला आप के द्वार पर आया हूँ। और यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करके इसी स्थान पर निवास स्वीकार करो तो मैं

कुछ जमीन आप की भेंट करूंगा। तथा आप अपने नाम का यहां ग्राम वसाओ। यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है, गुरू जी ने कहा-हे सज्जन ! यह नव खंड पृथिवी सारी ही असाडी हैं। हम ने भूमी का कुछ टुकड़ा क्या करना है। तब मर्दाने ने कहा-आप श्री चंद्र तथा लछमी दास को इसी स्थान पर बुला कर रखो, तब गुरू जी ने बाले को कहा अच्छा तुम जाओ। तथा दोनों बालकों को यहां ले आओ, आज्ञा पा कर बाला मर्दाना गये। तथा श्री कालू जी को जाकर नमस्कार किया। तथा रावी के किनारे गुरू जी का विश्राम भी बताया। तथा कहा-कि गुरू जी ने आप लोगों को वहां बुला भेजा है। बस कालू जी ने अति प्रसन्नता से चलने की तैयारी कर ली। तथा राय बुलार से छुट्टी लेने को कालू जी गये। तब राय बुलार ने कहा-हम नानक देव की आज्ञा को कभी टाल नहीं सकते। मैं तो श्री गुरू नानक देव को साक्षात अल्लाह ताला ही मानता हूं। फिर कालू जी को छुट्टी दे कर कहा-हे बेदी जी! मेरी ओर से गुरू जी के चर्णों पर हाथ जोड़ कर नमस्कार कहनी। उधर मर्दाना अपने घर में जा कर सब से मिला। और सारी बात सुनाई, तथा कहा कि गुरू जी ने अपने परिवार को रावी के तट पर बुलाया है। अब तुम लोग भी वहीं चल कर रहो मर्दाने के परिवार ने कहा-कि तुम लोग तो एक स्थान पर ठैहरते ही नहीं। हमें वहां छोड़ कर आप लोग कहीं चले गये तो फिर हमारा कौन है? इस लिये हम आप के साथ जाने को तैय्यार नहीं हैं तब मर्दाना जवाब लेकर कालू जी को जा मिला। अब यह लोग गुरू नानक जी को जा कर मिले। गुरू जी ने माता पिता आदिक सभी का यथोचित सतकार किया। तब उन लोगों ने कहा हमारे तो अहोभाग्या हैं जो आप के दरशण हुवे हैं। हम लोग तो अपनी किरसानी छोड़ कर आप के दर्शण को आये हैं तब श्री गुरू जी महाराज ने श्री राग में एक शब्द उचारण किया-और कहा हे पिता जी यह किरसानी ही आप के कल्याण का कारण बनेगी।

श्री राग महला १ ॥ घरु ३ ॥

एह तन धरती बीज करमा करो सलिल अपाउ सारिंग पाणी । मन किरसान हरि रिदे जंमाइले इउं पावस पद निरबाणी ॥१॥ कहे गरबसि मूड़े माया । पित सुतो सगल कालित्र माता तेरे होइ न अंति सिखाया ॥रहाउ॥ बिखे बिकार दुष्ट किरखा करै इन तज आममे होइ धिहाई । जप तप संजम होइ जब राखे कमल बिगसै मधुआसर माई ॥२॥ बीस सप्ताहरो बासरो संग्रहहि तीन खोड़ा तिन काल सारै । दस अठारमै अपरंपरो चीनै करै नानक इव एक तारै ।

॥ इस का परमार्थ ॥

हे पिता जी ! इस शरीर को खेती करो, इस में शुभ कर्मों का बीज डालो । और प्रभु का नाम यप है उसे जल समझो । और मन को किरसान बनाओ, प्रभु ध्यान में अपना मन लगाओ । बस फिर मोक्ष प्राप्त होगा । तथा माया को मिथ्या मान कर इस का त्याग करो, हे पिता जी ! इन कुटुंबियों ने साथ नहीं जाना । विषयों के भोग और काम क्रोध आदिक इन का भी सर्वदा त्याग उत्तम है । जप तप संयम इन को अपनी इस खेती के रक्षक बनाओ । तब तुमारा मन निज आश्रम में स्थित हो जायगा । फिर परमात्मा चिंतन से मुक्ती पाओगे । और जो ईश्वर का नाम सुने सुनाएगा । उस का भी उद्धार होगा । माता ने कहा हे बेटा ! यदि तेरी कृपा होगी तो हमें भी ईश्वर का साक्षातकार हो जायगा, कालू जी ने कहा-हे पुत्र ! यह राग द्वेष ग्यान अनेकों जन्मों से चला आता है, ग्यान संत महापुरुषों के संगते और उन के प्रवचनों से उत्पन होता है, परंतु वह ग्यान अनेकों जन्मों के अग्यान को कैसे कटेगा ? गुरू जी ने कहा-हे पिता जी ! लकड़ी चाहे कितने ही जनमों की पुरानी हो । उसे एक चिनगारी अग्नि की भले ही वह नवीन हो परंतु उसे जलाने की सामर्थ्य रखती है इसी प्रकार लकड़ी की भांति तो अग्यान है, और संतों के प्रवचन ग्यान रूपी अग्नि के सदृश्य है, उस के नाश करने को पर्याप्त है ।

यह बातें वह कोड़िया थानेदार भी सुन रहा था, इन पारमार्थिक वातों ने उस पर बहुत ही असर किया। वह तो गुरू जी के चर्णों का भ्रमर बन गया। कहने लगा हे महाराज! मैं एक दुर्ग बनवाना चाहता हूँ। उस में जो ईंट लगानी है। वह किस के नाम की होनी चाहीये। तब गुरू जी ने कहा–हे मित्र! वह ईंट करतार के नाम की होनी चाहीये। अर्थात उस स्थान का नाम करतार पुर ही होना योग्य है। तब कोड़ीये ने कचा कोट बनवा कर श्री गुरू जी के महल पक्के तैय्यार करवाये। तब वहां सारा परिवार बसाया गया। जब कोड़ीया जाने लगा, तो उस ने प्रार्थना की हे महाराज! ज़मीन की जो पैदावार आये उसे आप धर्म शाला के ही हिसाब में लगायें। फिर कोड़ी गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार करके विदा हुआ।

उधर दोदे की गाय भैंसें अधिक होती जा रही थीं, दिन का दूध श्री गुरू जी के अर्पण होता था। तथा रात्री का दूध अपने घर में रहता था। इतने में आश्विण के श्राद्ध आये तो मेहता कालू जी ने अपने पिता का श्राद्ध किया। जब कालू ब्राह्मणों के पैर धोने लगा। तब गुरू जी नें पूछा हे पिता जी! यह इतना भोजन का सामान किस लिये तैय्यार किया गया है। कालू जी ने कहा–हे नानक देव! आज मेरे पिता जी का श्राद्ध है। गुरू जी ने कहा–हे पिता जी जब तक वासनाएं बंधी हुई हैं तब तक जीव स्वर्ग नर्क आदी भोगता है। जब वासनाओं से मुक्त होता है, तब यह जीव स्वयंमेव मुक्त हो जाता है, जैसे किसी लड़के के हाथ से डोर टूट जाय तो वह लड़का डोर को गांठ देता है। और तब तक गुडी उस के आश्रिय होती है। तथा जब टूट जाती है डोर तो वह कन कौआ भी चला जाता है। सो जो अग्योनी हैं उन के मोह की डोर पितरों को बंधन में रखती है। गुरू जी ने कहा–हे पिता जी आप परमेश्वर का नाम लेकर अपने नेत्र मूंद लो। तब कालू जी ने वैसे ही किया, और देखा कि मैं वैकुंठ लोक में बैठा हूँ। और श्री विश्नु जी चतुर्भुज होकर साहमणे बैठे हैं। और उस के सभी पितर उसी वैकुंठ में कालू जी से मिल रहे हैं। उन पितरों ने कालू जी को

आशीर्वाद देकर कहा हे कालू तू धन्य हैं जिस के घर में श्री नानक देव जी प्रगट हुए हैं, इन्ही की कृपा से हम सभी कल्याण को प्राप्त हुए हैं । इसी अवस्था में कालू जी वैकुंठ में एक वर्ष पर्यंत रहे, अत्यंत सुंदर भोजन और वैकुंठ के भोग कालू जी को प्राप्त होते रहे । फिर कालू जी ने कहा–हे पितृ देव! अब मैं मात लोक में जाना चाहता हूं। आग्या दीजिये । जब मैं अपना यह शरीर त्यागन करूंगा। तब मैं आप के निकट आ जाऊंगा, इतनी कह कर कालू ने जब नेत्र खोले तो अभी कालू जी ब्राहमणों के पैर ही धो रहे हैं तथा गुरू जी सन्मुख बैठे हैं। तब कालू जी ने कहा–हे पुत्र ! जी मैनें एक कौतुक देखा है। अब यदि तुम कहो तो मैं श्राद्ध करूं । नहीं तो नहीं करूंगा, तब गुरू जी ने कहा–हे पिता जी ! संसार की चाल है उसे करना ही होता है। जब संसारी लोक एकत्र होकर किसी रीति को बांधते हैं तो वह रीति करनी ही अच्छी होती है। तथा जब संसारी समाज उस रीति को अनुचित समझ कर बंद कर दें तब वही रीति त्याज्य होती है, ऐसी ही मर्यादा महापुरुषों ने कथन की है, फिर कालू जी ने कहा–हे नानक देव ! मैं एक वर्ष भर वैकुंठ में रहा हूँ। परंतु जब वहां से आया तब क्षण भर ही व्यतीत हुआ था। यह मुझे बहुत ही अचंभा मालूम होता है, गुरू जी ने कहा–हे पिता जी ! उस अकाल पुरुष की माया महान है, उस में हैरान होने को कोई भी स्थान नहीं है। आप परमेश्वर का नाम स्मर्ण करो। यह उपदेश सुन कर और विचित्र कौतुक देख कर कालू जी ने गुरू नानक देव जी को नमस्कार किया। और तब से ईश्वर का रूप जान कर सदैव सतकारक दृष्टी से देखा। अब गुरू जी उन सब को वहां ही छोड़ कर आगे की ओर रवाना हुए धन्य सतिगुर नानक देव जी महाराज।

॥ साखी राम तीर्थ पर ब्राहमण की ॥

भ्रमण करते करते श्री गुरू नानक देव जी महाराज ! पूरणमाशी के दिन राम तीर्थ में पधारे। जब अनेकों लोग स्नान कर रहे थे, और अच्छा

खासा मेला था। एक ब्राहमण स्नान करके एक शालगराम की मूर्ती को लगा कर आगे रख कर बैठा है, और स्वयं भी दादश तिलक लगा रखे हैं; और बार बार दंडवत प्रणाम करके अपनी भक्ती प्रदर्शण कर रहा है। सर्वांतर्यामी गुरू जी भी उस के उस प्रदर्शण को देखने लगे। जब ब्राहमण आंखें बंद करके बैठा तब गुरू जी ने कहा—हे विप्रवर! तुम किस का ध्यान कर रहे हो? तब उस ने कहा—हे संत जी! मैं प्रभु शालगराम का ध्यान करता हूं गुरू जीने कहा—हे मित्र! जो मूर्ती है वह तो आप के आगे पड़ी है। तथा तुम उस का ध्यान नेत्र बंद करके कर रहे हो। उस ने कहा हे संतवर! जब मैं ध्यान स्थित होता हूँ तब मुझे तीनों ही लोक नज़र आते हैं। गुरू जी ने कहा—कि तीनों लोकों में जो कुछ होता है क्या वह सभी तुमें नजर आता है? उस ने हां कह कर फिर नेत्र बंद कर लिये।

गुरू जी ने अपने सेवक को संकेत किया कि तुम इस के आगे से मूर्ति उठा कर कहीं उधर उधर रख दो। वह सेवक उस ब्राहमण के आगे से मूर्ती के सहित सभी सामान पूजा का उठा कर ले गया। जब उस ने नेत्र खोले तो सामान तथा मूर्ती न पाकर लगा रोने, गुरू जी ने कहा हे ब्राहमण देव इस प्रकार क्यों रो रहे हो, तब उस ने कहा हे संत जी! भगवान की प्रतिमा पर्यंक के सहित कोई उठा कर ले गया है। गुरू ने कहा—हे विप्रवर! रोने की क्या आवश्यकता है, अभी २ अपने कहा था कि मुझे तीनों लोक नजर आते हैं। आप तो स्वयं देख सकते हो कि ठाकुर जी कहां पड़े हैं। क्या ठाकुरों का चुराने वाला तीन लोक के भी दूर चला गया है, तब उस ब्राह्मण की होश ठिकाने आ गई। कहने लगा हे संत जी मैं तो आपनी पेट पूजा के लिये झूठ बोलता चला आ रहा हूं। इसी पाखंड के आश्रित मैं अपने कुटुंब की पालन करता हूं अब आप ही कृपा करो। जिस ने मूरती ली है उस से मुझे दिलादें। आप तो सचे संत मालूम होते हो। यह मूरती ही मेरे जीवन का सहारा है, तब गुरू जी ने कहा—हे देवता! झूठ बोलना और ठगना त्याग दो। वह ईश्वर तुमारी पालना

स्वयं करेगा। ब्राहमण देवता! झूठ त्याग दो। उस ने कहा हे संत जी! यदि तुमारी कृपा होगी तो सब कुछ प्राप्त हो जायगा। गुरू जी ने कहा-हे ब्राह्मण! तुझे तो तीन लोक नजर आते हैं। परंतु जहा तेरा आसन है, इस के नीचे अपार धन राशी दबी हुई हैं। तुम को तो वह भी नज़र नहीं आती। उस ने कहा-हे संत जी मैं झूठ बोल कर ही गुजारा करता आ रहा हूँ। मैं क्या जानूं कि कहां पर दौलत है, तब गुरू जी ने कहा-उठ कर अपने आसन की भूमी खोदो। जब उस ब्राहमण ने धरती खोदी तो उसे अपार धन राशी नजर आई। तब उस ब्राहमण ने गुरू जी के चर्णों पर प्रणाम किया, फिर गुरू जी ने एक परम पवित्र शब्द अपनी जिहवा से कथन किया। जिसे सुन कर अनेक नर नारी का भीतर और बाहर पवित्र तथा शांत हो गया-

राग धनाश्री महला १ ॥ घरु ३ ॥

काल नाही जोग नाही सत का ढब। थानिसट जग भ्रिष्ट होए डूबता इव जग ॥१॥ कल महि राम नामा सार। अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगन को संसार ॥१॥रहाउ॥ आंट सेती नाक पकड़हि सूझते तिन लोअ। मगर पाछे कछु न सूझै एह पदम अलोइ ॥२॥ खतरीआं तां धरम छोडिआ मलेछ भाखिआ गही। स्रिसट सब इक वरन होई धरम की गत रही ॥३॥ असट साज साज पुरान सोधहि करहि बेद अभिआस। बिन नाम हरि के मुकत नाही कहैं नानक दास ॥४॥

॥ शब्द का परमार्थ ॥

गुरू जी ने कहा-हे ब्राहमण देवता। तू जो इस पाषाण की मूर्ती की पूजा करता है। इस के वश में तो काल भी नहीं है जो तेरी मरने के समय रक्षा कर सके। और पाषाण प्रतिमा न तो कुछ दे ही सकती है, जिस से उदर भर सके। हे विप्रवर! यह ठग्गी तुझे एक दिन नर्कों में ले जायगी। मुक्ति तो ईश्वर के नाम जपने में है। कलियुग में केवल नाम का ही आधार है। इस लिये तू राम नाम स्मर्ण किया कर। स्मर्ण के विना सभी कुछ

अधूरा है, देवी देव कोई भी इस जीव को मुक्त नहीं कर सकते। स्वर्गों के सुख भी अनित्य हैं। ज्ञानी इन से भी दूर रहते हैं। कपट को त्याग कर प्रभु नाम स्मर्ण कर। हे ब्राह्मण तभी तेरा भला होगा हे ब्राह्मण ! संसार में जितने भी धनी हो गुज़रे हैं, सब ने अन्न खाया जल पीआ तथा वस्त्र पहिरा है। बाकी माया तो धरती में ही दबाई गई है, उस धरती के गर्भ में अतूट धन राशी है। स्वर्ण रौप्य तांबा हीरा पन्ना आदिक पेट भरने में असमर्थ्य हैं। यहां तो अन्न जल वस्त्र की आवश्यकता होती हैं बाकी का धन तो केवल पृथिवी के ही अर्पण करने के लिये होता है। इस तत्व को जानना ही ज्ञान कहलाता है, यह तत्व ज्ञान परमात्मा के प्यारे ही प्राप्त करते हैं। साधारण नर नारी तो इसी चक्र में मारे मारे फिरते हैं, जो उन से कुछ ऊपर होते हैं वे यग्यादिकों से स्वर्गों में जाते हैं। तथा फिर यहां ही आ जाते हैं। आना जाना तभी छूटता है जब इस मृग तृष्णा से छूट जाय, तथा ईश्वर चिंतन में लग जाय।

ब्राहमण ने कहा—हे संतवर ! जो यह सारा संसार है यह तो सभी माया के पीछे ही भागा फिर रहा है। ईश्वर के पीछे तो कोई नहीं जाता। फिर इन की क्या गति होगी ? गुरु जी कहा—ब्राहमण देवता ! कलियुग में ब्राहमण चत्री जो ऊंचे वर्ण के हैं वे तो धर्म से निमुख हो गये हैं, वे तो पुत्रियों को मोल बेचते देखे जाते हैं। कन्याओं का बेचना महान पाप है, फिर ब्राह्मण चत्री मलेच्छों से मिल कर व्यापार करते हैं। और चमड़ा तक बेचते हैं ! जो धर्म के प्रति कूल क्रिया है। और पर स्त्री सेवन तो उन के फैशन में हो रहा है। जो महान पाप है पर निंदा आदिक कुकर्म इस युग में व्यवहार बन चुका है। जहां प्रभु नाम की सुधा धारा प्रवाहित होती है, वहां जाकर घर की अथवा दोकान की चर्चा यह भी महा पाप हैं, जैसे किसी महात्मा ने कहा है, कि—

॥ प्रवचन ॥

पापी भगति न भावही हरि पूजा न सुहाइ। माखी चंदन पर हरै

जह बिगंध तहां जाइ । धर्म कर रहीं साकता साधू मिलै निसंग । मुकत पदारथ पाईऐ नानक परै न भंग ।

॥ वारतक ॥

तब ब्राहमण ने कहा–हे महाराज ! कलियुग में ऐसा ही वर्ताव हो रहा है । परंतु छूटने का उपाय केवल राम नाम स्मर्ण ही है । तब गुरू जी ने कहा–हे ब्राहमण ! परमात्मा के नाम के विना जीव की कभी भी मुक्ती नहीं होती, फिर श्री गुरू नानक देव जी ने एक शब्द उचारण किया–

॥ श्लोक ॥

कीरतन में चितज लावै नीत उपजै मन परतीत पिआरे । सगल पाप का नास होइ मुख ऊजल हरि दुआर ॥१॥ बिन सिमरन जो जीवना बिरथे सास पराल । नानक हरि का सिमरन सार है होर छाड सगल जंजाल ।

॥ वारतक ॥

यह सुन कर वह ब्राह्मण देवता गुरू जी की शरण को प्राप्त हुआ, तथा गुरू जी का शिश्य बन गया, फिर गुरू जी ने उस अपने आदमी से ठाकुरों का पर्यंक मंगवा कर उस को दे दिया, और कहा–हे विप्रवर ! हम ने परमात्मा से तुम को अपार धन दिला दिया है, अब तू प्रसन्न होकर प्रभु स्मर्ण कर, तुझे कभी भी तोट नहीं होगी । फिर गुरू जी करतार पुर आये ।

॥ साखी ब्रहमचारी की ॥

एक दिन गुरू नानक देव जी महाराज करतार पुर में रसोई घर में बैठे थे, एक ब्रहमचारी ने आकर गुरू जी को अभिवादन किया । गुरू जी ने कहा–हे ब्रहमचारी ! आओ बैठो भोजन तैयार है, इच्छा हो तो भोजन पा लो, उस ब्रहमचारी ने कहा–मैं इस पृथिवी की बनी रसोई अंगीकार नहीं करता । मैं एक हाथ भर धरती खोद कर फिर गोबर का चौंका लगा कर तथा लकड़ी धोकर रोटी बनाता हूँ । गुरू जी ने उसे कच्चा अन्न

दिया, जिसे लेकर वह ब्रह्मचारी चला गया। और बाहर जाकर धरती खोदने लगा जहां धरती खोदे उसी स्थान से अस्थियें निकलें, अनेक स्थान खोदे परंतु प्रत्येक स्थान से हडीयें ही निकली आखर हैरान होकर और भूख से दुखी होकर गुरू जी की शरण आया,तथा कहने–लगा हे महाराज ! मैं भूखा हूँ। मुझे आप अपनी रसोई में से भोजन दो। ताकि मैं भूख को मिटा लूं। गुरू जी ने कहा–हे विप्र ! वह समय अब दूर गया है। जाओ तुम अपनी मर्यादा से रसोई बनाओ, अब वह परमात्मा भली करेंगे। फिर गुरू जी ने एक शब्द का उचारण किया–

राग बसंत महला १ ॥

सोने का चौका कंचन कुआर। रुपे कीआ कारा थहु बिसथार। गंगा का उदक करंते की आग। गरड़ा खाना दुधसिओ गाड ॥ १ ॥ रे मन लेखे कबहुँ न पाइ। जामि न भीजहि साचै नाइ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दस अठ लीखे होवे पास। चारे वेद मुखागर पाठ। पुरबी नावै वरना की दात। वरत नेम करै दिन रात॥ २ ॥ काजी मुल्लां होवै सेख। जोगी जंगम भगवे भेस। को गिरही करमा की संध। बिन बूझै सब खड़ी अस वंद ॥ ३ ॥ जे ते जीअ लिखी सिरकार। करगी उपर होवग सार। हुकम करहि मूरख गावार। नानक सचे के भंडार ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

यह शब्द सुन कर उस ब्रह्मचारी ने गुरू जी के चर्णों पर अपना माथा रख करके नमस्कार किया। और दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना की ! हे सतगुरु देव ! आप आपनी अपार कृपा करके मुझे अपना शिश्य बना कर मेरी जीवन नैया को पार करो,। तब श्री गुरू नानक देव जी ने अपने मुख से एक शब्द उचारण किया–

॥ श्लोक महला १ ॥

सच संजम करणी कारा नावण नाम जपे ही। नानक अगे उतम साई जी पापां पंद न देही।

॥ वारतक ॥

गुरू जी ने कहा–हे ब्राहमण ! इस प्रकार का चौका लगाना चाहीये, जिस से मन की मलीनता दूर हो जाय, तब कभी भी तुमें छोह नहीं लगेगी यह सुण कर वह ब्रहमचारी श्री गुरू नानक देव जी का शिश्य बन गया। और परमात्मा का भजन करने लगा। धन्य गुरू नानक देव।

॥ साखी दुनी चंद चत्री से ॥

एक दिन गुरू जी महाराज नगर में गये। वहां एक चत्री तहसील लाहौर का रहता था, वह अति धनी था, वह गुरू जी को बहुत सतकार के साथ अपने घर ले गया। उस दिन उस के घर में बहुत चहल पहल थी, गुरू जी ने पूछा आज आप के घर में कौन सा उत्सव है ? उस ने कहा–आज मेरे पिता ! जी का श्राद्ध है। उस के उपलच्च में मैं एक सौ ब्राह्मण को भोजन खिलाया है, गुरू जी ने कहा-तेरा पिता तो आज तीन दिन का भूखा है। वह तो उस साहमणे वाले वन में बघिआड़ के योनी में होकर बैठा है, उस के लिये वहां भोजन ले जा, डरना नहीं तुम को देख कर उस की मनुष्य बुद्धि हो जायगी। अब दुनी चंद भोजन ले कर वहां गया, देखा कि एक वृच्छ के नीचे व्याकुल हालत में बैठा है। उस ने भोजन उस के आगे रख दिया। और कहने–लगा हे पिता जी मैंनें तो आप निमित एक ब्राह्मण को भोजन दिया। हे पाठक, उस बघियाड़ की बुद्धि गुरू जी के वर से मनुष्य जैसी हो गई। दुनी चंद ने कहा–हे पिता जी ! आप तो बहुत ही उतम करम करने वाले थे, आप को यह व्याघ्र योनी कैसे प्राप्त हुई ? उस ने उतर दिया हे पुत्र ! मुझे कोई सचा गुरू नहीं मिला था। इस लिये मैं इस योनी को प्राप्त हुआ हूँ। जब मेरा अंतिम समय था तो मुझे निकट से मांस की गंध आई तथा मांस के लिये मेरा मन ललचाया। जिस के परिणाम में मांसाहारी शरीर प्राप्त हुआ है। तुझे सचे गुरू की शरण लेनी चाहीये, यह कह कर उस भेड़िये ने

वह भोजन खालिया। फिर दुनी चंद आपने घर को आया तथा पिता की दुर्गति पर उसे अत्यंत भय हुआ।

दुनी चंद ने घर में आकर गुरू जी के चर्ण पकड़ कर कहा हे महा-राज! यह माया नर्क का रूप है। मेरे पास सात लाख रुपया है मैं आप के अर्पण करता हूं। इसे आप जहां चाहें लगायें। यह माया तो मेरा परलोक नाश कर देगी। अथवा जैसे यह मेरे लोक परलोक में सहायक बने वह मार्ग बताओ।

उस को अत्यंत दुखी देख कर गुरू जी के मन में दया का संचार हुआ, कहने लगे-हे दुनी चंद! इस माया को साधू अभ्यागतों और महात्माओं की सेवा में लगा दो हम सत्य कहते हैं कि तभी यह माया तेरे साथ पयान करेगी, तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

राग श्री महला १ ॥

मछली जाल न जाणिआ सर खारा असगाह। अति सिआणी सोहणी क्यों कीतो वेसाह। कीते कारण पाकड़ी काल न टलै सिराहु ॥ १ ॥ भाई रे इओ सिर जाणहु काल। जिओ मछी तिओ मानसा पवै अचिंता जाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ जग बाधो काल को बिन गुर काल अफार। सच रते से उवरे दुविधा छोड़ विकार। हो तिस कै बलिहारने दर सचै सचिआर ॥ २ ॥ सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधक हाथ। गुर राखे से उवरे होर फाथे चोगे साथ। विन नावै चुण सुटीअहि कोई न संगी साथ ॥३॥ सचो सचा आखीऐ सचो सचा थान। जिनी सचा मनिआ तिन मनि सचि धिआन। मनमुख सचे जाणीअहि गुरमुख जिनां ग्यान ॥४॥ सतिगुर अगे अरदास कर साजन देह मिलाइ। साजन मिलिअहि सुख पाया जमदूत मूए विखखाइ। नावै अंदर हो वसा नाउ वसे मन आइ॥५॥वाझ गुरू गुवार है विन सब दे बूझ न पाइ। गुर मती परगास होइ सच रहै लिव लाइ। तिथै काल न संचरै जोती जोत समाइ ॥६॥ तू है साजन तू सुजाण तू आपे मेलन हार। गुर सवदी सालाहीऐ अंत न पारा वार। तिथै काल न अपड़ै

जिथै गुर का सबद अपार ॥ ७ ॥ हुकमी सभै उपजहि हुकमी कार कमाहि। हुकमी कालै वस है हुकमी सच समाहि। नानक जो तिस भावै सो थीयै इनां जंतां वस किछ नाहि ॥ ८ ॥

॥ वारतक ॥

यह शब्द सुन कर दुनी चंद गुरू जी के चरणों में वार २ नमस्कार करने लगा। तब गुरू जी ने उस धनी को एक सूई देकर कहा–हे मित्र! यह सूई तुम अपने पास रखो, हम दूसरे जन्म में तुझ से ले लेंगे। सूई लेकर दुनी चंद घर आकर अपनी धर्म पत्नी को कहने लगा यह सूई गुरू जी ने दी है। और कहा कि हम परलोक में लेंगे। उस की पत्नी ने कहा–हे स्वामी! क्या यह सूई तुमारे साथ परलोक में जायगी? हे स्वामी! यह शरीर तो माता के गरभ में मिलता है। तथा इस धरती पर इसे जलाया बहाया अथवा दबाया जाता है। जब शरीर भी साथ जाने का नहीं, तो फिर यह साधारण सी सूई किस प्रकार साथ जाने की है? इस लिये आप सूई उन को वापस दे दो। आप के पूर्ण भाग्य हैं जो ऐसे परमेश्वर रूप संत आप के पास आये हैं, तुम उनीं का कथन स्वीकार करो, उन की कृपा से भवसागर से तर जाओगे। दुनी चंद ने कहा–हे प्यारी! वे तो कहते हैं कि तू साठ लाख की जो संपदा तेरे पास है। उसे साधू सेवा में दे डारो, तथा उस से भूखों की इमदाद करो। तब यह संपदा तुमारे साथ जायगी।

कुछ विचार के पश्चात वे पत्नी पति गुरू जी की शरण आये तथा कहने लगे। हे गुरू देव! आप हमें इस संसार सागर से पार करो। हम आप की शरण हैं। तब गुरू जी ने शब्द कहा–

॥ श्लोक महला १ ॥

लख मन सोना लख मन रूपा लख साहां सिर साह। लख लखसर लख वाजे नेजे लखीं घोड़ी पातशाह। जिथे साइर लंघणा अगण पाणी असगाह। कंधी दिस न आवहि धाही पवै कहाह। नानक ओथे जाणीऐ साह केही पातिशाह ॥ १ ॥

वह भोजन खालिया। फिर दुनी चंद आपने घर को आया तथा पिता की दुर्गति पर उसे अत्यंत भय हुआ।

दुनी चंद ने घर में आकर गुरू जी के चर्ण पकड़ कर कहा हे महाराज! यह माया नर्क का रूप है। मेरे पास सात लाख रुपया है मैं आप के अर्पण करता हूं। इसे आप जहां चाहें लगायें। यह माया तो मेरा परलोक नाश कर देगी। अथवा जैसे यह मेरे लोक परलोक में सहायक बने वह मार्ग बताओ।

उस को अत्यंत दुखी देख कर गुरू जी के मन में दया का संचार हुआ, कहने लगे–हे दुनी चंद! इस माया को साधू अभ्यागतों और महात्माओं की सेवा में लगा दो हम सत्य कहते हैं कि तभी यह माया तेरे साथ पयान करेगी, तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया–

राग श्री महला १ ॥

मछली जाल न जाणिआ सर खारा असगाह। अति सिआणी सोहणी क्यों कीतो वेसाह। कीते कारण पाकड़ी काल न टलै सिराहु ॥ १ ॥ भाई रे इओ सिर जाणहु काल। जिओ मछी तिओ मानसा पवै अचिंता जाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ जग बाधो काल को बिन गुर काल अफार। सच रते से उवरे दुविधा छोड़ विकार। हौ तिस कै बलिहारने दर सचै सचिआर ॥ २ ॥ सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधक हाथ। गुर राखे से उवरे होर फाथे चोगे साथ। बिन नावै चुण सुटीअहि कोई न संगी साथ ॥३॥ सचो सचा आखीऐ सचो सचा थान। जिनी सचा मनिआ तिन मनि सचि धिआन। मनमुख सचे जाणीअहि गुरमुख जिनां ग्यान ॥४॥ सतिगुर अगे अरदास कर साजन देह मिलाइ। साजन मिलिअहि सुख पाया जमदूत मूए विखखाइ। नावै अंदर हौ वसा नाउ वसे मन आइ॥५॥बाझ गुरू गुबार है बिन सब दे बूझ न पाइ। गुर मती परगास होइ सच रहै लिव लाइ। तिथै काल न संचरै जोती जोत समाइ ॥६॥ तू है साजन तू सुजाण तू आपे मेलन हार। गुर सबदी सालाहीऐ अंत न पारा वार। तिथै काल न अपड़ै

जिथै गुर का सबद अपार ॥ ७ ॥ हुकमी सभै उपजहि हुकमी कार कमाहि। हुकमी कालै वस है हुकमी सच समाहि। नानक जो तिस भावै सो थीयै इनां जंतां वस किछ नाहि ॥ ८ ॥

॥ वारतक ॥

यह शब्द सुन कर दुनी चंद गुरू जी के चरणों में बार २ नमस्कार करने लगा। तब गुरू जी ने उस धनी को एक सूई देकर कहा–हे मित्र! यह सूई तुम अपने पास रखो, हम दूसरे जन्म में तुझ से ले लेंगे। सूई लेकर दुनी चंद घर आकर अपनी धर्म पत्नी को कहने लगा यह सूई गुरू जी ने दी है। और कहा कि हम परलोक में लेंगे। उस की पत्नी ने कहा–हे स्वामी! क्या यह सूई तुमारे साथ परलोक में जायगी? हे स्वामी! यह शरीर तो माता के गरभ में मिलता है। तथा इस धरती पर इसे जलाया बहाया अथवा दबाया जाता है। जब शरीर भी साथ जाने का नहीं, तो फिर यह साधारण सी सूई किस प्रकार साथ जाने की है? इस लिये आप सूई उन को वापस दे दो। आप के पूर्ण भाग्य हैं जो ऐसे परमेश्वर रूप संत आप के पास आये हैं, तुम उनीं का कथन स्वीकार करो, उन की कृपा से भवसागर से तर जाओगे। दुनी चंद ने कहा–हे प्यारी! वे तो कहते हैं कि तू साठ लाख की जो संपदा तेरे पास है। उसे साधू सेवा में दे डारो, तथा उस से भूखों की इमदाद करो। तब यह संपदा तुमारे साथ जायगी।

कुछ विचार के पश्चात वे पत्नी पति गुरू जी की शरण आये तथा कहने लगे। हे गुरू देव! आप हमें इस संसार सागर से पार करो। हम आप की शरण हैं। तब गुरू जी ने शब्द कहा–

॥ श्लोक महला १ ॥

लख मन सोना लख मन रूपा लख साहां सिर साह। लख लखसर लख वाजे नेजे लखीं घोड़ी पातशाह। जिथे साइर लंघणा अगण पाणी असगाह। कंधी दिस न आवहि धाही पवै कहाह। नानक ओथे जाणीऐ साह केही पातिशाह ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

यह सुन कर वे दोनों गुरू जी की महान स्तुति करने लगे। हे कृपा नाथ ? दयालो ! आप ने हम पर इस समय अपार अनुकंपा की है । जैसे आग्या हो हम वैसे ही श्रद्धा पूर्वक करने को उद्यत हैं। गुरू जी ने कहा-हे दुनी चंद ! इस माया को जब एकत्र करना होता है तब अनेक छल बल करने पड़ते हैं। और फिर भी यह दौलत साथ नहीं जाती, यहां ही रह जाती है, तथा जो पाप किये जाते हैं उस का फल भोगना होता है, तथा जो इस से शुभ कर्म किया जाता है वही साथ जाता है । इस जीव के तीन मित्र हैं एक परिवार दूसरा धन तथा तीसरा कर्म । जब तक शरीर में प्राण हैं तब तक धन इस का संगी है। जब प्राण निकल गये । तब धन दूसरे का हो जाता है। तथा परिवार का संग शमशान तक रहता है, जब शरीर जल गया। तब परिवार वाले घर को लौट आते हैं । तीसरा जो कर्म संगी है वह परलोक तक जाता है, जैसा कर्म होगा वैसा ही इसे सुख दुख देगा। इस लिये भला कर्म करो । धन को परमार्थ में लगा दो, फिर परलोक में रक्षा होगी, और यहां यश की प्राप्ति होगी । तब दुनी चंद ने अपनी तमाम संपदा परमार्थ के लिये दान करदी । पति पत्नी गुरू जी के शिश्य होकर ईश्वर स्मर्ण में लग गये।

फिर गुरू जी ने मर्दाने को कहा-हे मर्दाना ! आज बहिन जी हमें स्मर्ण कर रहे हैं चलो सुजान पुर चलें। बस फिर क्या था, गुरू जी सुजान पुर जा पहुँचे। उस समय तुलसां ने जा कर कहा-हे बहु जी ! आप के भाई जी आये हैं। तब नानकी जी भाग कर आई तथा गुरू जी को नेत्रों में जल भर कर मिली, घर में लाकर बहुत सतकार किया। गुरू जी ने कुशल मंगल पूछा। फिर जय राम जी ने आदर सतकार किया। तब नानकी जी ने नेत्रों में जल भर कर कहा-भ्राता जी बहुत देर के पश्चात आप के पवित्र दर्शण हुए हैं। क्या आप ने हमें भुला दिया हैं आप के दर्शण से हम कृत कृत्य हो जाते हैं, जय राम ने कहा-हे गुरू देव ! आप हमारे पास ही रहो,

तथा प्रभु स्मर्ण करो। इतने में श्री चंद्र जी आ गये। तथा प्रणाम करके निकट ही बैठ गये।

गुरू जी ने कहा–हे महाराज ! हमें कुछ भ्रमण की आदत हो गई है, इस लिये किसी भी स्थान में टिक कर बैठना हमारे लिये कठिन है। आप जब भी हमें याद करोगे। तब उसी समय हम आप के पास पहुंच जायेंगे।

फिर गुरू जी ने रात्री वहां व्यतीत की, तथा प्रातःकाल जय राम नानकी जी तथा श्री चंद्र आदि सभी को निकट बैठा कर उपदेश दिया। और अनेक प्रकार से धैर्य देकर वहां से प्रस्थान किया।

तत पश्चात आप कर्तार पुर में आकर माता पिता को मिले। मर्दाने ने एक दिन कहा–हे महाराज ! मेरा मन चाहता है कि मैं एक दो दिन अपने घर वालों को जाकर मिल आऊं। गुरू जी ने हंस कर कहा–हे मर्दाना ! तेरे घर के सब राजी खुशी हैं, हम उन को अभी मरने नहीं देंगे। यदि तुमारे मन में उन का बहुत मोह जाग्रित हुआ है तो जाओ। परंतु अधिक देरी न करनी। मर्दाने ने कहा–हे महाराज ! मेरे पास तो कोई वस्तु नहीं। क्या मैं उन के निकट खाली हाथ जाऊं ? गुरू जी ने कहा–वहां से कंकर लेकर अपने कपड़े में बांध ले, वहां जाकर जब तू कपड़ा खोलेगा, और जो कुछ मन में विचारेगा। बस वही हो जायगा, अब मर्दाने ने रोड़ों की मुठी लेकर वस्त्र में बांध कर घर में आ गया। जब वह कपड़ा खोला तो तमाम कंकर स्वर्ण के हो गये। तब इसे अपार प्रसन्नता हुई। तमाम लोगों ने सुना कि मर्दाना डूम स्वर्ण के कंकर लाया है, जो बहु मूल्य के हैं। कुछ दिन वहां रह कर मर्दाना गुरू जी के निकट आ गया। तथा चर्णों में लग कर प्रणाम किया ॥१०६॥

॥ साखी घर की दासी की ॥

एक दिन गुरू जी विश्राम कर रहे थे, तब दासी ने माता जी से प्रार्थना की कि रसोई तैय्यार है, माता जी ने कहा हे गोली जाओ गुरू जी को

जगा कर ले आओ। दासी ने आकर देखा कि जगत के स्वामी सो रहे हैं। वह प्रेम वश गुरू जी के पद की तलियों को अपनी जिव्हा से चाटने लगी। ततत्त्क्षण उसे दिव्य दृष्टी प्रदान हो गई। उस ने उसी दिव्य दृष्टी द्वारा देखा कि गुरू जी समुंद्र तट पर एक अपने शिश्य सेवक का अटका हुआ जहाज पार कर रहे हैं। गोली भाग कर माता जी के निकट आकर कहने लगी-हे माता जी ! गुरू जी घर में नहीं, जब आप आयेंगे तब बुला लाऊंगी। माता जी ने कहा-पगली ! वह तो घर में सो रहे। गोली ने कहा-नहीं माता जी वे तो समुंद्र के तट पर जाकर एक शिश्य का अटका हुआ जहाज किनारे लगा रहे हैं, जब गुरू जी जागे तो माता जी ने कहा-हे बेटा ! यह गोली मुझे मजाख करती है। गुरू जी ने कहा-वह तो पगली है। पगलों की बात पर कभी विश्वास नहीं करना चाहीये, गुरू जी के कथन से वह गोली पागल हो गई। परंतु गुरू जी की सेवा और दरशणों की कृपा से उस की बुद्धि निर्मल रही।

अब गुरू जी कुछ दिन के पश्चात चलने लगे, तो मूले की पुत्री ने कहा-हे महाराज ! जब आप यहां रहते हो तो हमारा राज्य होता है। इस लिये आप हमें अपने साथ ही ले चलो। गुरू जी ने फरमाया तेरा राज्य सदैव बढ़ता रहेगा, चिंता न कर। गुरू जी ने कहा हम सैद पुर जायेंगे। वहां कुछ दिन ठहर कर तुमारे पास आ जायेंगे। वैसे सदा ही तुमारे पास ही हैं चिंता त्याग दो। फिर सब को धैर्य देकर मुझे (बाला) और मर्दाने को साथ लेकर गुरू जी ने वहां से प्रस्थान किया।

॥ साखी मीर बाबर से ॥

बाले ने कहा हे गुरू अंगद देव जी ! गुरू नानक देव जी के साथ कुछ फकीर लोग रहने लगे। गुरू जी सैद पुर गये। तो वहां पठानों के घर में शादी थी। वहां पठान एकत्र होकर नाच रहे थे, इधर फकीरों को भूखे देख कर गुरू जी ने कुपित होकर एक शब्द कहा-

राग तिलंग महल्ला १ ॥

जैसी मैं आवै खसम की बाणी तैसड़ा करीं ग्यान वे लालो। पाप की जंज लै कावलों धाया जोरी मंगे दान वे लालो । धरम सरम दुई छप खलोय कूड़ फिरै परधान वे लालो। काजीआं बाहमणा की गल थकी आकद पड़ै शैतान वे लालो। मुसलमानोआं पड़हि कतेबां कसट महि करहि खुदाइ वे लालो। जात सनाती होर हिंद वाणीआं एभी लेखै लाइ वे लालो ॥१॥ साहिब के गुण नानक गावै मास पुरी विच आख मसोला । जिन उपाई रंग रवाई बैठा वेखै वखि अकेला। सचड़ा साहिब सच तपावसि सचड़ा न्यांउ करे गो मसोला। काया कपड़ टुक टुक होसीं हिंदुस्तान समालसी बोला। आौन अठतरे जान सतानवै और भी उठसी मरद का चेला । सच की बाणी नानक आखे सच सुणाइसी सच की वेला ॥ २ ॥

॥ वारतक ॥

इस शब्द को सुन कर एक ब्राहमण ने कहा-हे भाईयो! इस संत ने शब्द अत्यंत कुपित होकर कहा है। तब उस ब्राहमण ने सोचा कि मैं इन के चर्ण पकड़ कर इन से क्षमा करवाऊं । उस ने गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार करके कहा हे महाराज! आप इस शब्द को लौटा लो। गुरू जी ने कहा हे विप्र! जो तीर छूट जाय वे लौटता नहीं। तुम यहां से तीन कोस की दूरी पर जा रहो। जो वहां एक टोबा है उस पर अपने परिवार को ले जाओ। यहां रहने से मारे ही जाओगे, तब वह ब्राह्मण अपने परिवार को बाहर ले गया। गुरू जी भी वहां से उठ कर दूर जा बैठे। तब ईश्वरेच्छा से कावल से बाहर चढ़ी उस ने सैद पुर की ईंट से ईंट बजा दी। उस लश्कर का स्वामी बाबर था, हिंदु मुसलमान सभी मौत के घाट उतारे गये। तथा तमाम औरतें बांध ली गई। उस नगर में बहुत ही बुरी हुई। तमाम मकानात ढेरी हो गये, गुरू जी के शब्दों ने वहां प्रलय का काल कर के दिखा दिया। फकीरों को जहां दुःख होता है वहां परमात्मा भयंकर प्रकोप करता है, क्योंकि भगवान को उसके संत सदा प्यारे हैं। गृहस्थी को चाहीये

जो पहुंचा हुआ साधु है भले ही वह किसी जाति का हो। उस की सेवा करे, फिर गुरू जी वहां से उठ कर सैद पुर में आ गये। देखा वहां कतलाम हो गई है। गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! यहां क्या हुआ है, फिर गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! तू रबाब बजा, और हम एक शब्द कहेंगे।

॥ राग आसा महला १ ॥

कहां सु खेल तबेला घोड़े कहां भेरी सहनाई। कहां सु तेग बंद गाड़े रड़ि कहां सु लाल कुवाई। कहां सु आरसीआ मुंह बंके एथे दिसही नाही ॥१॥ ऐ जग तेरा तूं गुसाई। एक घड़ि महि थापि उथापे जर वंड देवै भाई ॥ रहाउ ॥ कहां सु घर दर मंडप महला कहां सु बंक सराई। कहा सु सेज सुखाली कामनी जिस वेख नींद न पाई। कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥ २ ॥ इसु जर कारन घणी विगुती इन जर घणी खुआई। पापा बाझो होवै नाही मोयां साथ न जाई। जिस नूं आप खुवाए करता खुसि लए चंगिआई ॥ ३ ॥ कोटी हू पीर वरजि रहाए जां मीर सुणिआ धाया। थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि२ कुइर रुलाया। कोइ मुगल न होया अंधा किनै न परचा लाया ॥ ४ ॥ मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाईं। ओनी तुपक ताणि चलाई ओनी हसत चढ़ाई। जिन की चीरी दरगह पाटी तिना मरना भाई ॥ ५ ॥ इक हिंदवानी होर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी। इकना पेरण सिरखुर पाटे इकना वास मसाणी। जिन के वंके घरी न आया तिन को रैण विहाणी ॥६॥ आपे करे कराए करता किस नो आख सुणाईऐ। दुख सुख तेरै भाणै होवै किसथै जाइ रुवाईऐ। हुकमी हुकम चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ।

॥ वारतक ॥

फिर श्री गुरू नानक देव जी महाराज ने देखा कि मुगलों ने अनेकों पठान कतल कर दिये हैं। और तमाम ओर वावर की दुहाई मच रही है, तव आप वावर के लशकर में चले गये।

वावर दिन के समय तो वादशाही करता था, और रात्री को पाओं

में बेड़ी डाल कर परमात्मा की उपासना करता था, और पांच वार निमाज गुजारता था। सारे कुरान का पाठ करता फिर भोजन करता था।

गुरू जी बाबर के फौजी कैंप में चक्र लगा रहे थे, गुरू जी ने जब बंदीओं को देखा तो आप के हृदय में दया का संचार हो आया। मर्दाने को आग्या हुई कि रबाव वजाओ जव मर्दाना रबाव बजाने लगा तो गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया–

॥ राग तिलंग महला १ ॥

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुस्तान डराया। आपै दोस न देई करता जम करि मुगल चढ़ाया। एतीमार पई कुरलाने तैं की दरद न आया ॥ १ ॥ तू करता सभना का सोई। जे सकता सकते को मारे तां मन रोस न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकता सीह मारे पैवगै खसमै सा पुरसाई। रतन विगाड़ विगोए कुती मोयां साथ न जाई। आपे जोड़ विछोड़े आपे वेख तेरी वडिआई ॥ २ ॥ जे को नाउ धराए वडा साद करे मन भाणे। खसमे नदरी कीड़ा आवे जेते चुगे दाणे। मर मर जीवे तां किछु पाए नानक नाम वखाणे ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

जब यह शब्द बाबर ने सुने, तो हुकम दिया इस को हाजर करो। सिपाही गुरू जी को साथ लेकर बाबर के साहमणे हाजर हुए, बाबर ने कहा–हे संत! वही शब्द एक वार फिर कहो। तब गुरू जी ने ऊपर का शब्द फिर कहा, इस के पश्चात बाबर ने कहा हे संत! मुझे भांग खाने का शौक है मैं चाहता हूँ कि आप भी इसे इस्तेमाल करें। यह कह कर भांग का स्वर्ण प्याला गुरू जी के आगे किया, गुरू जी ने उत्तर दिया हे बाबर! मैं ने वह भांग पी है। जिस का नशा कभी भी नहीं उतरता। फिर मर्दाने को आज्ञा हुई कि तुम रबाव वजाओ। तथा गुरू जी ने शब्द कहा–

॥ राग तिलंग महला १ ॥

भौ तेरा भांग खलड़ी मेरा चीत। मैं दीवाना भया अतीत। कर कासा

दरसन की भूख । मैं दर मागउ नीता नीत ॥१॥ तउ दरसन की करों समाइ । मैं दर मांगों भीखिआ पाइ ॥ रहाउ ॥ केसर कुसम मिरग मै हरना । सरब सरीरी चढ़ना । चंदन भगतां जोति इनेही सरबे परमल करना ॥२॥ घिअपट भांडा कहे न कोई । ऐसा भगत वरन महि होइ । राम नाम रहे लिव लाइ । तउ दर नानक भीखिआ पाइ ॥४॥

॥ वारतक ॥

जब यह पवित्र शब्द बाबर ने सुना तो बहुत ही प्रसन्न हुआ । और कहने लगा हे संत ! हमारी भांग तो अच्छे कूंडे आदिक में घुटती छनती है । परंतु आप तो साधन हीन संत हो, फिर किस प्रकार अपनी भांग को घोटते और छानते हो ? तब गुरू जी ने शब्द कहा ।

॥ शब्द ॥

भौ की भांग सिफत का कूंडा ज्ञान का कीया डंडा । सच सबद अमृत मद पीआ तब हूआ अमल अखंडा । बाबर कलंदर प्याला पीओ । उतर न जावे कबहू खीओ ।

॥ वारतक ॥

बाबर ने जब यह शब्द सुना-तो समझ लिया कि यह तो कोई पहुँचा हुआ परम संत है । फिर बाबर कहने लगा हे संत ! तुम को जिस वस्तु की आवश्यकता हो मांग लो मैं तुम को जागीर दे सकता हूं । फिर गुरू जी ने मर्दाने को कहा-रबाब वजाओ और स्वयं शब्द कहा-

॥ शब्द ॥

ऐसा दीआ एक खुदाइ । जिस का दीआ सभ कोइ खाइ ॥ १ ॥ इक दाता सभ जगत भिखारी । तिस को छाड अवर कौ मांगै तिन अपनी सगली पति हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साह बादसाह सभ तिस के कीए । तिस के साथ न कोइ रलीए ॥ २ ॥ मानुख की जो लेवे ओट । दीन दुनी है ता कउ तोट ॥ ३ ॥ कहि नानक सुण बाबर मीर तुझ ते मांगे सो अहमक फकीर ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

जब श्री गुरू जी महाराज के यह शब्द सुने तो बाबर जान गया कि यह तो कोई सचा साधु है इससे तो उस खुदा ताला के मेल का हाल पूछना उचित है। फिर गुरू जी को कहने लगा—हे संत जी ! हमारे मुसलमानी धर्म में तो यह लिखा है कि हजरत मुहंमद जी खुदा के दोस्त हैं। उन की सिपारिश से हमें बहिश्त नसीब होगा। मैं पूछता हूँ कि आप के धर्म में क्या कुछ ठीक है। तब गुरू जी ने शब्द उचारण किया—

॥ शब्द श्री नानक देव जी ॥

एको साहिब एक खुदाइ। खालक सचा बेपरवाह। कई मुहंमद खड़े दरबार। पार न पावहि बेशुमार। रसूल रसाल दुनीयां में आया। जब चाहया तब पकड़ मंगाया। इओं सही किया है नानक बंदे। पाक खुदा और सब गंदे।

॥ वारतक ॥

यह सुन कर बाबा चुप हो कर कुछ सोचने लगा। तब गुरू जी ने उन बंदियों की ओर देख कर मन में दया का संचार किया। तब मर्दाने को आज्ञा दी कि तुम रबाब बजाओ और स्वयं शब्द उच्चारण किया—

राग आसा महला १ ॥

जिनि सिर सोहणी पटीआं मांगी पाइ संधूर। से सिर काती मुनीअनि गल विच आवै धूड़। महिलां अंदर होंदिआं हुण बहिण न मिलण हदूर। आदेस बाबा आदेस। आदि पुरुष तेरा अंत न पाया कर कर देखहि वेस। १। रहाउ। जदहु सीआ वीवाहीआ लाड़े सोहन पास। हीडोली चढ़ि आईआ दंद खंड कीते रास। उपरहु पाणी वारीऐ झिले झिमकण पास। २। इक लख लहिण बहिठीआ लख लहिण खड़ीआं। गरी छुहारे खांदीआं मानण सेजड़ीआं। तिन गल सिलकां पाईअन तुटनि मोत सरीआं। ३। धन जोबन दोइ वैरी होए जिनि रखे रंग लाए। दूतां नो फुरमाया लै चले पत गवाइ। जे तिस भावै देइ वडाई जे भावे देइ सजाइ। ४।

अगो दे जे चेतिऐ तां काइत मिलै सजाइ। बाबर वाणी फिर गई कुइर न रोटी खाइ। ५। इकना वखत खुआाईअन इकना पूजा जाइ। चौके विण हिंदुवाणीयां क्यों टिके कढहि नाइ। राम न कबहु चेतिआ हुण कहिण न मिले खुदाई ॥६॥ इक आवहि घर आपणै इक मिल पुछहि सुख। इकना एको लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख। जो तिस भावै सो करे नानक क्या मनुख ॥ ७ ॥

॥ वारतक ॥

इस शब्द के उचारण के अंत में श्री गुरू जी ब्रहम ज्योति में लीन हो गये। तब अकबर ने कहा-कि इस संत को क्या हो गया है। लोगों ने कहा कि यह साधु वजद में आया हुआ है, बाबर ने कहा हे मित्रो-खुदा के आगे दुआ करो जैसे यह संत अपनी सही हालत में फिर आ जाय। तब श्री गुरू जी ने कहा-हे बाबर! अगर तू अपने पर परमात्मा की कृपा चाहता है तो जितने बंदी हैं उन को छोड़ दो। और अपने मुख से कहो कि तुम को क्या चाहीये। तब मीर बाबर ने कहा-कि हे महाराज! मेरी बादशाही पुश्त दर पुश्त चले। तब गुरू जी ने कहा-जाओ तुमारी बादशाही बहुत देर तक चलेगी। तब बाबर ने सभी कैदी छोड़ दिये, तथा उन को सतकार से विदा किया। तब गुरू देव बाबर पर अति प्रसन्न होकर वहां से विदा हुए। फिर कर्तार पुर में एक वर्ष भर तक नवास किया।

॥ साखी एक बाणीयें की ॥

अब श्री गुरू नानक देव जी महाराज कर्तार पुर में ही निवास करने लगे, लंगर प्रारंभ हो गया। प्रत्येक अतिथी की सेवा होने लगी गुरू जी की कीर्ती चारों ओर फल गई। एक दिन एक पुरुष गुरू जी के पास आ कर कहने लगा, हे प्यारे सतगुर! मैं एक अत्यंत ही निर्धन आप की जाति का वेदी हूं। मेरा सिवाय एक लड़की के और कोई नहीं। अब मेरी कन्या

का विवाह है आप मेरी सहायता करें। क्योंकि आप हमारी कुल में एक महा पुरुष हैं और सभी कुछ करने की सामर्थ्य आप में सुनी जाती है। आप मेरा यह महान कार्य सिद्ध करो, गुरूजी दयालू थे कहने लगे, हे भ्राता ! जिस वस्तु की तुम को आवश्यकता है वह हमें बताओ। उस ने सभी चीज लिख कर गुरू जी को दे दी। गुरू जी ने अपने एक शिश्य जिस की जाति अनंद थी और नाम भगीरथ था। उसे आज्ञा दी कि यह सभी वस्तु लाहौर से जा कर ले आओ। इतना ध्यान रहे कि लाहौर में केवल एक ही रात्री रहना अगर दूसरी रात लाहौर में रहोगे तो तुमारा जन्म बिगड़ जायगा।

भगीरथ के मन में भय हो गया। वह भागता हुआ लाहौर जा पहूँचा, वहां एक बणीये की दोकान थी उसे जा कर भगीरथ ने कहा भाई ! यह वस्तु हमें शीघ्र ले दो। क्योंकि मैंने लाहौर में नहीं रहना। कहीं बाहर ही विश्राम करूंगा। उस बणीयें ने कहा हे भाई ! और वस्तु तो सभी मिल जायगी परंतु इतनी जलदी चूड़ा नहीं बन सकता। उस बणीयें ने कहा यदि तू एक रात रहे तो चूड़ा बन सकता है। भगीरथ ने कहा, यदि मैं एक रात और रहूँ तो मेरा जन्म बिगड़ेगा। इस लिये आज ही मैंने लौटना है। बणीयें ने कहा हे भाई ! यदि किसी का स्वामी सखत होता है तो वह नाराज़ होता है परंतु तुम कहते हो मेरा जन्म बिगड़ता है। वह अजीब बात है कलियुग में ऐसा कौन है जिस की आज्ञा न मानने से जन्म ही बिगड़ जाय। तब भगीरथ ने कहा हे मित्र मेरा सतगुर ऐसा ही है। तब बणीयें ने कहा तब तो मैं भी तुमारे साथ चल कर तुमारे गुरू का दर्शण करूंगा। एक चूड़ा रंगा हुआ है यदि तुमारा गुरू सत्य में महापुरुष होगा। तो मैं भी उसे अपना गुरू धारण कर लूंगा। यदि मेरा मन उन को मान लेगा तो फिर मैं मूल्य नहीं लूंगा। और यदि मन न माना तो फिर मैं सभी मूल्य ले लूंगा।

वे दोनों चलते २ कर्तार पुर आ गये। तथा गुरू जी के चणों पर नमस्कार किया। जब बणीयें ने गुरू जी के दरशण किये तो उस के हृदय

के कपाट खुल गये। गुरू जी के दरशणों ने बणीयें को निहाल कर दिया। अब वह वणीयां तीन वर्ष तक गुरू जी की सेवा में ही रहा। बाणी कंठ की और फिर कुछ पुस्तकें लिखवा कर अपने साथ ले गया।

फिर एक वार बणीयें ने सौदागरी की और उस नगर में गया जहां राजा शिव नाभ का राज्य करता था। वह बणीयां दिन को तो माल बेचे और रात्रि को कीर्तन करता था। तथा प्रहर रात्रि रहते स्नान करता और जपुजी का पाठ करता यह उस की दैनिक क्रिया थी। अर्थात उस की दिन चर्या गुरू जी की आज्ञानुसार थी। गुरू जी की आज्ञा है कि जो सिख रेहत वैहत में पूरण है वह सिख इसी जीवन में मुक्त होता है। और जब वह मृत्यु को पाता है तब उस की सदगति होती हैं इस प्रकार वह बणीयां प्रत्येक दृष्टी कोण से गुरू मर्यादा के अनुसार चलता था। मन मत करने वाले लोग सूर्य चढ़े तब स्नान करते और एकादशी पूर्णमाशी मंगल आदिक के व्रत रखते थे। उन के सभी काम दिखावे के होते देख कर यह बणीयां उन से कुछ उदास रहता था, और इन आडंबरों की ओर उस का झुकाव नहीं था, क्योंकि गुरू जी महाराज पाखंडवाद के विरोधी थे, तथा धर्म मर्यादा के कारण संसार में प्रकट हुए थे, अतःएव वे पाखंडी आदमी बणीयें को भ्रष्ट कहने लगे। एक दिन कुछ शरारती पुरुषों ने राजा शिव नाभ को कहा हे राजन ! यह वणीयां हिंदु होकर भी धर्म मर्यादा के उलट चलता है, इस ने कभी भी व्रत आदिक शुभ कर्म नहीं किये। राजा ने बणीयें को अपने दरबार में बुला लिया। तब वणीयें ने राजा का यथोचित सतकार किया। तब राजा ने पूछा हे सेठ ! तू हिंदु होकर व्रत नेम आदिक जो शास्त्र मर्यादा है उसे पूरण क्यों नहीं करता, वणीयें ने उतर दिया हे राजन ! जिस वस्तु की प्राप्ति के लिये व्रत आदिक क्रियायें की जाती हैं। वह वस्तु तो मैं ने प्राप्त कर ली है अब मुझे इन व्रत आदिक नियमों की आवश्यकता नहीं है। राजा ने कहा-वह कौन सी वस्तु है जिस के मिल जाने से व्रत आदिक जो शास्त्र विहित कर्म हैं उन को न करना ठीक है। तब वणीयें ने उतर

दिया कि हे महाराज ! एक महा पुरुष के दरशणों से सभी कामनायें पूर्ण हो गई हैं। राजा ने कहा कि तुम को विश्वास हो गया है ? उस सेठ ने कहा–हे राजन ! उस मेरे सतगुर के दरशणों से ही तमाम विश्वास हाथ जोड़ कर सन्मुख उपस्थित हो जाते हैं। क्योंकि जहां साक्षात ईश्वर ही प्राप्त हो जाय। वहां विश्वास आदिक का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। राजा ने कहा कलियुग में तो एक भी नहीं है, जिस के दरशणों से मुक्ति प्राप्त हो जाय। तब वणियें ने कहा–हे राजन ! यह मत कहो–क्योंकि मेरे सतगुर देव श्री नानक देव प्रत्यक्ष मुक्ति के दाता हैं। तब राजा ने कहा मैं उन की वाणी सुनना चाहता हूँ। अब उस बणीयें ने गुरू जी की पवित्र बाणी सुनाई, तो राजा परम प्रसन्न हो गया। और उसी बणियें के साथ राजा शिव नाभ सिंघ बन गया। तथा गुरू दर्शणों को चल दिया, जब चलने लगा तो बणियें ने कहा–हे राजन ! श्री गुरू जी तो पवन रूप हैं। जहां सचे मन से आवाहन करो वहीं पर प्रकट हो जाते हैं, वह घट घट की जानने वाले हैं। यदि आप श्रद्धा से बुलाओ तो महाराज स्वयं प्रकट हो जाते हैं। तब राजा ने कहा–हे मित्र ! गुरू जी निवास कहां करते हैं और कहां के रहने वाले हैं। वणियें ने कहा कि गुरू जी तलवंडी राय भोय के रहने वाले हैं तथा आज कल आप करतार पुर रावी नदी के किनारे निवास करते हैं। उन का जो भी सचा सिख है वह जहां भी उन का स्मर्ण करे वहां ही दरशण देते हैं। राजा ने कहा कि मेरी इच्छा तो तुमारे साथ जाने की है। वणियें ने कहा हे राजन ! तुम विश्वास करो। तथा मन से गुरू जी को स्मर्ण करो गुरू जी इसी स्थान पर प्रगट होंगे। यह बात मेरे पूर्ण अनुभव की है। हे राजन ! मेरी बात मानो, तुमारी मनो कामना अवश्य ही पूर्ण होगी, इतनी कह कर वह गुरू जी का सेवक वणीयां अपना जहाज भर कर वहां से पश्चिम की ओर चला गया।

वणियें के जाने के पश्चात राजा शिव नाभ गुरू जी के दरशणों का ललायत रहने लगा। हर समय गुरू जी का ही चिंतन स्मर्ण करता रहे।

राजा ने कुछ समय के पश्चात कुछ कुटनीयां तैयार की उन को हुकम दिया, कि जो भी साधु संत यहां आये । उस को पतित करने में कोई कसर न छोड़ो । तथा उस की भली प्रकार परीक्षा ले कर मुझे बताओ । कि वह कैसा साधू है । राजा ने यह विचारा कि यदि कोई उत्तम साधू होगा, तो यह इन के कटाक्षों में नहीं फंसेगा । यदि कोई साधारण कलियुगी साधू होगा तो उस का भी पता चल जायगा । यदि गुरू नानक जी इधर आजायें तो भी हमें पता चल जायगा ।

इधर गुरू जी ने कहा—हे बाला-मर्दाना ! हमारा तो विचार है कि कुछ और भ्रमण करें तथा राजा शिव नाभ को दर्शण दे कर कृतार्थ करें । अब गुरू जी तथा मैं (बाला) और मर्दाना, राजा शिव नाभ के नगर में आये । और एक बाग जो सूखा हुआ था । वहां आसन बिछा कर बैठ गये, गुरू जी के पवित्र चर्ण जब बाग में आये तो उसी समय वह सूखा बाग हरा हो गया । फूल कलियें पैदा हो गई । उस बाग के माली ने जब अपना बाग सर सबज देखा तो अत्यंत प्रसन्न हुआ । फिर उस ने देखा कि एक महापुरुष आसन पर बैठा है । और दो सेवक सेवा कर रहे हैं । उस ने गुरू जी के चर्णों में नमस्कार करके कहा । आज मेरे अहो भाग्य हैं जो आप ने मुझे दरशण दिये हैं, फिर वह माली राजा शिव नाभ को जाकर कहने लगा हे राजन ! एक संत बाग में आया है जिस की कृपा से मुद्दतों का सूखा बाग फिर से हरा हो गया है । मुझे ऐसा मालूम होता है कि संत ईश्वर का ही रूप है । बाग वान की बात सुन कर राजा ने वे कुटनीयें बुला कर कहा—जाओ बाग में जो संत आया है । उस की परीक्षा लेकर मेरे पास आकर परिणाम बताओ ।

राजा की आज्ञा से कुटनीयें बाग में छतीस प्रकार के पकवान लेकर गईं । तथा गुरू जी के आगे धर कर कहने लगीं हे महाराज ! हम आप की चर्ण सेविका हैं । तथा आप इस मिठाई फलादिक को प्रसन्न होकर खायें । फिर वे कुटनीयें अनेक प्रकार के कटाक्ष करने लगीं जिन को देख

कर इंद्रादिक देवता भी मोह को प्राप्त हो जाए । वे कुटनियें नेत्रों के संकेत द्वारा गुरू जी पर अपनी कामेच्छा प्रकट करने लगीं । उस समय गुरू जी ने एक पवित्र शब्द कहा–

॥ शब्द श्री गुरू नानक देव जी का ॥

जग कौआ नाम नहीं चीत । नाम विसार गिरे देख भीत । मनूआ डोलै चीत अनीत । जग सिओ तूटी झूठ प्रीत ॥१॥ काम क्रोध विख वजर भार । नाम बिना कैसे गुन चार । घरि बालू दा धुम्मन घेर । बरससि पानी बुद बुदा हेर । मात बूंद ते धर चक फेर । सरव जोति नावै की चेर ॥२॥ सरव उपाउ गुरू सिर मोर । भगत करो पग लागउ तोर । नाम तरउ चाहो तुझ ओर । नाम दुराइ चले से चोर ॥३॥ पति खोई बिखि चंचल पाइ । साच नाम पति सिउ घर जाइ । जो कुछ कीनो प्रभू रजाइ । भौ मानै निरभौ मेरी माइ ॥४॥ कामन चाहे सुंदर भोग । पाठ फूल मीठे रस रोग । खेलै बिगसै तेतो रोग । प्रभ सरनागत कीनस भोग ॥ ५॥ कापड़ु पहिरसु अधक सीगार । माटी फूली रूप बिकार । आसा मनसा बाधो बार । नाम बिना सूना घर बार ॥६॥ गाछहु पुत्री राज कुमार । नाम भणो सच दोत अपार । पिर सेवहु प्रभ प्रेम पियार । गुर सेवहु प्रभ त्रिखा निवार ॥७॥ मोहन मोह लिया मन मोहि । गुरु कै सबद पछानो तोहि । नानक ठांढे चाहे प्रभू दुआर । तेरे नाम संतोखे किरपा धार ॥८॥

॥ वारतक ॥

उन कुटनीयों ने जब यह अष्टपदी श्रवण की और गुरू जी का पवित्र दर्शण किया । तो उन के हृदय की कामाग्नि शांत हो गई । तथा मन में शांत सागर लैहरें लेने लगा । और उन के हृदय में ब्रह्म ग्यान उत्पन हो गया । तथा खोटी दुर वासना नष्ट हो गई, अब वे सभी राजा शिव नाभ के निकट आकर कहने लगी, हे राजन ! आप हमारे पिता हैं, हमें आप अब उस दृष्टी से न देखो । तथा हमें उसी कामुक हंसी से न बुलाओ । राजा हैरान होकर कहने लगा हे ईश्वर यह क्या सुन देख

रहा हूं। यह तो मेरी प्रसन्नता पर हर समय आसक्त रहा करती थीं, आज इन को क्या हो गया है। जो इस प्रकार शब्द कह रही हैं। फिर राजा ने कहा–आप लोगों को क्या हो गया है ? उन कुटनीयों ने कहा–हे राजन ! आज हम ने बाग के भीतर एक महापुरुष को देखा है। जिस के दरशण मात्र से हमारे भाग्य उदय हो गये हैं। तथा मन में पवित्रता की गंगा बहि निकली है। तमाम त्रिशना मिट गई हैं। तथा हम नर्क से बच रही हैं, परम संतोष हमें अनायास ही मिल गया है। उन की बात सुण कर राजा शिव नाभ उसी समय बाग की ओर भागता चला।

राजा शिव नाभ ने बाग में जाकर देखा तो एक संत जिस के मुख पर अलौकिक ज्योति है बैठा है। फिर राजा परीक्षा के लिये पीठ देकर खड़ा हो गया। तब गुरू जी भी दो दिन खड़े ही रहे। तथा राजा भी गुरू जी के पीछे अच्युत रूप से खड़ा रहा। जब गुरू जी बैठ गये, तब राजा भी बैठ गया। फिर गुरू जी ने कहा–हे राजन ! कहो अच्छे हो, तब राजा ने कहा– हे गुरु देव ! आप की कृपा से सभी कुशल मंगल है। राजा ने उस वणीयें से लिख लिया था, कि गुरु जी बेदी क्षत्री हैं। और करतार पुर निवास करते हैं। तथा जन्म स्थान तलवंडी राय बोलार है। राजा के मन में आई पहिले पता करें कि आया यही गुरु है जिस का जिक्र उस वणीयें ने किया था। अथवा यह कोई दूसरा है फिर राजा ने कहा–हे महाराज ! आप का नाम क्या है ? तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण किया–

राग मारू महला १ ॥

गुसाईं तेरा कौन नाम कैसे जाती। जो तुम भीतर महल बुलावहु पूछहु बात निरंती ॥ १ ॥ रहाउ ॥

फिर राजा ने कहा क्या आप योगी हैं ?

॥ श्री मुखवाक ॥

जोगी जुगति नाम निर माइल जाके मैन न राती। प्रीतम नाथ सदा सद संगे जन्म मरण गति वीती ॥२॥

तब राजा ने कहा क्या आप ब्राह्मण हैं ?

॥ उत्तर ॥

ब्राह्मण ग्यान ध्यान इशनानी हरि गुण पूजे पाती। एको नाम एको नारायण त्रिभुवन एको जोती।

राजा ने कहा क्या आप च्त्री हैं ?

॥ उत्तर ॥

जिहबा डंडी एह घट छाबा तोले नाम अजाची। एको हाट साह सभनां सिर वणजारे बहु भाती ॥४॥

वारतक राजा का कथन ॥

राजा ने कहा हे मराराज ! आप सीधी भाषा में हमें कुछ बताओ। क्योंकि आप का कथन मेरी समझ से बाहर की बात है। क्योंकि महापुरुषों की बातें तो महापुरुष ही जान सकते हैं। मैं आप से पूछना चाहता हूं कि आप कौन सी धरती के निवासी हैं। तब गुरू जी ने शब्द फरमाया-

॥ श्री मुखवाक ॥

ऊपर गगनि गगन पर गोरख तांका अगम रूप निवासी ॥
गुर प्रसादि बाहिर घर एको नानक भया उदासी ॥ ५ ॥

॥ वारतक राजा का कैहना ॥

इस शब्द को सुन कर राजा का मन शांत हो गया। तब राजा शिव नाभ गुरू जी की तीन प्रदच्छिणा करके चर्णों में पड़ गया। फिर राजा ने प्रार्थना की कि आप दयालु तथा ईश्वर स्वरूप हैं आप मुझ दास की कुटीया को पवित्र करने चलो। सब प्रकार आप की कृपा है। गुरू जी ने कहा हे राजन ! एक धर्मशाला का निर्माण करो। तब हम आप के गृह में आयेंगे।

तब राजा ने थोड़े ही दिनों में धर्मशाला बनवा दी। फिर राजा गुरू जी को लेने के लिये बाग में आया। तब क्या देखा कि गुरू जी महाराज वहां नहीं हैं। राजा को तब गुरू जी के वियोग में मूरछा आ गई। तब लोगों ने देखा कि गुरू जी उस नवीन धमशाला में विराजमान हैं। जब

राजा ने सुना तो ततकाल भाग कर धर्मशाला में आया। और गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार करने लगा। राजा की श्रद्धा भक्ति देख कर गुरू जी प्रसन्न हो कर १५७४ विक्रमी में एक चारपाई प्रदान की। राजा को बहुत प्रसन्नता हुई।

उस समय संगल द्वीप में सात राजा राज्य करते थे गुरू जी की कृपा से तमाम संगल द्वीप में राजा शिव नाभ एक ही राजा सर्वोपरि माना गया, और अटल राज करने लगा। उस समय गुरू जी की आयु ४६ उनचास वर्ष की थी। उस समय गुरू जी ने प्राण संगली उचारण की। वागा पटन-विदूर-आदिक नगरों में लंगर प्रथा चलाई, फिर गुरू जी पंजाब देश को लौट कर आये। तथा परिवार ने गुरू जी का दर्शण किया।

एक दिन गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! पाक पटन में शेख फरीद के स्थान पर एक शेख ब्रह्म है वह हमें बहुत याद करता है। और परमात्मा का प्यारा है। चलो उस का दीदार कर आयें। उस दी आयु भी बहुत है, तब गुरू जी पाक पटन की ओर रवाना हुए।

॥ साखी शेख ब्रम्ह की ॥

अब गुरू जी पाक पटन के बाहर तीन कोस पर जा बैठे एक दिन शेख का एक आदमी लकड़ी लेने आया उस ने गुरू जी को बैठे देखा। उस समय गुरू जी ने शब्द उचारण किया तथा मर्दाने ने रबाब बजाई।

राग आसा महला १ ॥

आपे पटी कलम आप उपरी लेख भी तूं। इको कहीऐ नानका दूजा काहे कूं।

उस लकड़ी लेने वाले कामल ने जब यह शब्द सुना तो कहने लगा हे महाराज इस मिरासी को कहो कि इसी शब्द को दोबारा कहे, गुरू जी की आज्ञा से शब्द को दोबारा सुण कर कामल ने याद कर लिया। तथा अपने पीर को आकर कहने लगा हे पीर जी! आज हम को एक खुदा का प्यारा

मिला है, जहां से मैं लकड़ी लाता हूँ। वहां उस ने आसन लगाया हुआ है। उस के साथ रबाबी है, वह बहुत ही सुंदर शब्द गाता है। उस का नाम नानक है, पीर ने कहा क्या तुम ने कोई बैत सीखा है? तो सुनाओ, कामल ने कहा हां एक शब्द मैं ने सीखा है—वह कह रहा था।

आपे पटी कलम आप उपर लेख भी तूं। एको कहीये नानका दूजा काहे कूं।

तब पीर ने कहा—मैं चाहता हूँ कि जिस ने यह शब्द कहा है उस का दीदार भी किया जाय, अरे बेटा! जिस ने यह शब्द कहा है वह परमात्मा का प्यारा है। मुझे उस के पास ले चल, उस के साथ मैं कुछ खुदाई बातें करना चाहता हूँ।

तब पालकी पर सुवार होकर पीर कामल को साथ ले कर वहां आया जहां गुरू जी का आसन था, पीर ने कहा—हे बाबा नानक! सलामोलेकम! उत्तर में गुरू जी ने कहा हे पीर जी उस अलेख को सलाम हैं। गुरू जी ने कहा हे पीर जी आज खुदा की हम पर मेहरबानी है जो आप के दीदार हुए हैं। तब दोनों परस्पर सतकार के पश्चात बैठ गये। फिर दोनों में बात चीत प्रारंभ हुई।

पीर कहने लगा, आप का एक बैंत सुन कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मैंने सोचा कि जिस ने यह बैंत कहा है उस के दर्शण भी करने चाहीये। अब आप इस बैंत का रहस्य बताने की कृपा करो। मैं कृत कृत्य होऊंगा। आप ने फरमाया है कि—

एको कहीये नानका दूजा काहे कूं। इक साहिब ते दुई हदीं। केहड़ा सेवां केहड़ा रहीं।

परंतु हिंदु कैहते हैं वह परमात्मा हम में है और मुसलमान कैहते हैं कि उस का वास हम में है। आप कहो कि खुदा का वास कहां है और कहां नहीं। तब गुरू जी ने कहा, हे पीर जी!

इकी साहिब ते इक हद्द। इको सेवहु दूजे रद्द। दूजा कांहे सिमरिये

जम्मे ते मरि जाइ। एको सिमरहु नानका जलथल रहिआ समाइ।

जब गुरू जी ने यह श्लोक कहा, तब पीर ने पूछा–

पाड़ पटोला धज करी कम्लड़ी पहिरेउ ॥ जिनी वेसी सहु पाईये सेई वेस करेउ ॥ गुरू जी का उत्तर ॥ काइ पड़ोला पाड़नी कम्मलड़ी पहिरेइ ॥ घरहि वैठयां सहु पाईऐ जे नीयत रास करेइ ॥ ३ ॥ घरही मुंद विदेस पिर न भूरे संभाले ॥ मिल दिआं ढिल न लगई जे नीअत रास करेइ ॥४॥ यह उतर सुण कर पीर ने पूछा। नढी कंत न राविया वडी थी मुइ आस। धन कूकेंदी गोर में तै सह न मिलि आस ॥ ५ ॥ गुरू जी का उतर ॥ महल कुचज्जी मर वड़ी काली मनो कुसुध। जे गुण होवनि तां पिर मिलै नानक औगण मुंध ॥ ६ ॥

॥ भावारथ ॥

हे पीर जी ! यदि औरत घर में हो। और मरद परदेस गया हो और औरत मर्द के लिये घर के अंदर ही बैठी रहे, तब औरत पति की और पति औरत का। यदि औरत तो औगणहारी हो, तथा अपने पति पर विश्वास न हो तो वह औरत पति की नहीं वह तो दूसरों की होती है, यदि औरत धैर्य से वैठी रहे तव उस का धैर्य उस की इच्छा पूरण करता है। यदि औरत सुचज्जी हो। परंतु पति से डेर। तथा महिलों से सुगंधी आती हो। उस पर पति अधिक प्रसन्न होता है, यदि औरत में दुर गंधि हो तो पति उस पर प्रसन्न नहीं होता। तथा उस पर कृपा नहीं करता, यदि अधिक दुर्गंध हो तो पति उसके निकट भी नहीं आता, हे पीर जी ! यह देह अच्छी नहीं जो अपने स्वामी की सार नहीं जानती। वुरियाई का नाम दुरगंध है, यदि अहंकार है तो उस का नाम महा दुरगंध कहा है, यदि यह सभी दुर्गुण जिस में हों तो वताओ उसे पिया किस प्रकार मिलेगा। सचा स्वामी तो गुणों के साथ ही प्राप्त होता है, तव पीर ने पूछा–

॥ पीर का कथन ॥ कवण सु अखर कवण गुण कवण सु मणीआं

मंत। कवण सु वेसो हो करी जित वस आवै कंत ॥१॥ गुरू नानक देव जी को उत्तर ॥ निवण सु अखर खिवण गुण जिहबा मणीयां मंत। ए त्रै भैणे वेस कर तां वस आवी कंत। सेवा करहै कंत की कंत तिसी का होइ। सभे सैयां छड के कंत तिसी पहि होइ ॥ १ ॥

इस का परमार्थ ॥ हे पीर जी जो झुकना हैं यह प्रत्येक के लिये उत्तम है बस उस का नाम अच्तर हैं। और भली बुरी बात सुण कर आगे से उत्तर न देना इस का खिवणा है, तथा ईश्वर की ओर से सुख दुख जो भी मिल जाये तथा वाणी द्वारा जब कभी बोलना पड़े, तभी भला बोले इस का नाम मणीआं कहा जाता हैं। ऐसे लच्चणों वाली पति को पा लेती है, सभी को छोड़ कर पति देव उसी के बन जाते हैं। अर्थात जो पति की सेवा करती है तब पति उसी का बन जाता है।

जा सेवा करे कंत की तां कंत तिसी का होइ ॥
गरबी कंत न पाईए भांवें खरी सुआलिउ होइ ॥

हे पीर जी ! मूल तो सची सेवा है सेवका ही को पति परमात्मा का दीदार होता है। परंतु यदि सेवा में अहंकार है तो ऊपर से कितनी भी सुंदर हो उस पर परमात्मा प्रसन्न नहीं होता। यह अटल सिद्धांत है, वही त्यक्ता (छुट्टड़) कही जाती है। हे पीर जी यह सत्य है कि सेवा से ही ईश्वर का साच्चात कार होता हैं, यह सुन कर शेख ब्रह्म गुरू जी के चर्णों पर गिर गया। और कहने लगा, धन्य हो गुरू नानक आप धन्य हैं। आप की कृपा से हमें इलाही ज्ञान की प्राप्ति हो गई है। आज हम ने जीवन लाभ प्राप्त किया है, आज खुदा का दीदार हुआ है। गुरू जी ने कहा–हे पीर जी ! जैसे रूप और काम में प्रीति है, तथा लोभ में धन की प्रीति है, उसी प्रकार जो ईश्वर प्रस्त इनसान हैं उन की प्रीति परमारथ की बातों से होती हैं। जैसे भूखे को भोजन प्रिय है, निद्रा के समय पलंग पर बिछा बिसतर अच्छा लगता है। उसी प्रकार उस के भक्तों को उसी की बातें भली लगती हैं। और बातें उन को अच्छी नहीं लगती, ईश्वर की चर्चा के सिवाय

खामोश रहना बहुत अच्छा है।

तब पीर जी ने कहा-हे गुरुदेव ! आप कृपया एक काती प्रदान करो, जिस से हलाल किया हुआ हराम न हो जाए। तब श्री गुरु देव जी ने एक शब्द उचारण किया ।

श्लोक श्री गुरू नानक देव जी ॥ सच काती सच सभ सार । घाड़त तिस की अपर अपार। सच की साण लई चिलकाइ। गुण की थेके विच समाइ। तिस का कुठा होवे सेख। लोहू लबि विकथा देख । होइ हलालि लगै इकि जाइ। नानक दर दीदार समाइ ॥ १ ॥

वारतक ॥ हे शेख जी ! खून के स्थान पर जिस के लोभ है । जब तक लोभ है तब तक यह हराम है। जब इस में से लोभ निकल जाय तब वह हलाल हो जाता है। फिर प्रसन्न होकर शेख ने कहा-हे गुरू नानक देव जी ! यह समय उस परमात्मा की अपार कृपा से मिला है । यदि अब भी शंकाओं का समाधान नहुवा तब और कहां होगा। इस लिये मैं एक बात और पूछना चाहता हूं। गुरू जी ने कहा-जो कुछ भी आप पूछना चाहो उसे भली प्रकार पूछिये हमारी ओर से उतर दिया जाएगा । तब शेख ने कहा-हे गुरू जी ! यह माया तो छल और जीव यह लोभी है, इस माया को किस प्रकार छला जाय । तब उतर में गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया ।

श्री राग महला १ ॥ अछल छलाई न छलै नहीं घाउ कटार कर सके। जिउ साहिब राखै तिउ रहे। इस लोभी का जिउ टल पलै। बिनु तेल दीवा किउं जलै। कर चानण साहिब साहिब तौ मिलै ॥

हे शेख जी यह माया किसी से छली नहीं जाती क्यों कि जीव मन से माया निकाल नहीं सकता। यह मनुष्य लोभी है । भली समझ कर रखता है। शेख ने कहा बगैर तेल के दीवा किस प्रकार जलेगा । और बगैर दीवा जले के प्रकाश किस प्रकार होवे। तब गुरू जी ने कहा-

कुरान कतेब कमाइऐ। भौ वट्टी इत तन लाईऐ। सच बूझण आण

जलाइए। बिन तेल दीवा इऊं जलै। कर चानण साहिब त्यों मिलै।

हे शेख जी! संयम करने से सत्य का दीपक जलता है। तब साहिब को मिलता है। शेख ने कहा-हे गुरु वर! आप जो बातें कर रहे हैं, ऐसे प्रतीत होता है। जैसे आप के भीतर से खुदा बोल रहा है।

॥ साखी एक सिख की ॥

चलते २ श्री गुरू जी एक नगर में पहुँचे। वहां एक सिख का घर था, जब वह सिख बाहर आया तो उस ने देखा एक संत बैठा हुआ है और एक रबाबी उस के आगे बैठ कर रबाब बजा रहा है। और शब्द पढ़ रहा है, उस सिख ने गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार करके कहा-हे गुरू देव आप धर्मशाला में पधारें, तब गुरू जी ने हमें आज्ञा दी कि आप चलो इस की आशा पूर्ण करें। यह कह कर गुरू जी उस सिख के घर के बाहर जा बैठे। वह सिख अति निर्धन था, एक बार उसे रोटी मिलती और एक बार नहीं मिलती थी। उस की एक स्त्री तथा एक बच्चा था, उस ने यथा शक्ति गुरू जी को प्रसाद करवाया। दूसरे दिन उस सेवक का कहीं हाथ न पड़े। और न ही कोई सामान था, उस ने अपने घर में जाकर अपने शिर के बाल काट डाले और उनकी सेली बना कर बाजार में ले गया। उसे बेच कर उस ने अन्न खरीदा। प्यारे पाठक! इतना स्मर्ण रहे कि वह सिख अभी पहुल नहीं ले चुका था। यदि पौहल ली होती तो वह शिर के बाल न उतारता। उस ने अपनी पत्नी को कहा कि तुम भोजन तैय्यार करो। जब उस ने चूल्हे में आग जला कर भीतर बर्तन लेने गई तब उस का लड़का खेलता २ चूल्हे में गिर कर जल गया, और वहीं मर गया। उस स्त्री ने उस लड़के को कपड़े में लपेट कर भीतर रख छोड़ा, तथा अपने पति को खबर नहीं की। क्योंकि पति को बतलाने से विघ्न पड़ने का भय था कि कहीं वे अतिथी बगैर खाये ही चले जायें। भोजन तैयार हो चुकने पर उस ने पति को कहा-हे स्वामी! भोजन तैयार है। उस ने गुरू जी

को आ कर कहा हे महाराज! भोजन तैयार है, आप चल कर भोजन पा लो। गुरू जी घर में गये, जब भोजन परोसा गया तो गुरू जी ने उस स्त्री को कहा-कि तुम अपने बालक को बुलाओ। तब उस स्त्री ने कहा-हे महाराज! वह कहीं सो रहा होगा आप भोजन खाओ। फिर गुरू जी ने कहा-हे देवी! तेरे बालक का नाम क्या है। उस ने कहा उस का नाम लाल है। तब गुरू जी ने कहा-हे बेटा लाली! बाहर आओ। वस इस आवाज में एक शक्ति थी, कि वह बालक खेलता २ तथा हंसता हुआ बाहर आ गया। बस इस महत्त को देख कर वह सिखनी तो गुरू के चर्णों पर गिर गई और कहने लगी हे सर्व शक्तिमान गुरु देव आप धन्य हो।

फिर दूसरे दिन वही तंगी साह्मणे थी। तब उस जोड़े ने अपने पुत्र को वेचने का इरादा किया। तब श्री गुरू जी ने कहा-आप का बालक कहां है। उसे हमारे पास रहने दीजिये। सिख ने हाथ जोड़ कहा-हे अंतर्यामी! कौन सी बात है जो आप से छुपी हुई है? आप सब कुछ जानते हैं। यह कह कर वालक को गुरू जी के हाजर कर दिया गुरू जी ने बालक से पूछा-हे वेटा! तेरे माता पिता तुझे बेचना चाहते हैं। बताओ दूसरे घर जाके चक्की पीसोगे। तथा पानी भरा करोगे? लड़के ने उत्तर दिया। जो मेरी प्रारब्ध में होगा, वही होकर रहेगा। जब मैं खरीदा ही गया तब मेरा क्या उजर हो सकता है। जो कुछ हुकम होगा वही करूंगा। गुरू जी ने लड़के का उतर सुन कर कहा हे परमात्मा! धन्य हैं यह जीव जो हमेशां आप की रजा को खिड़े मस्तक सहते हैं और उफ नहीं करते। धन्य हैं इस लड़के जैसे जो सदैव प्रभु की इच्छा पर शीश झुकाते हैं। वह जहां स्वयं धन्य हैं वहां उन के माता पिता भी धन्यवाद के पात्र हैं। उस लड़के को गुरू जी ने अपने कंठ से लगा लिया तथा उस समय एक शब्द उचारण किया॥ राग मारू महला १॥ मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सुभागा। गुरु की वचनी हाट विकाना जित लाया तित लागा।

तेरे लाले क्या चतुराई। साहिब का हुकम न करना जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मां लाली प्यो लाला मेरा हौ लाले का जाया। लाला गावै लाली नाचै भगति करउ तेरी राया।२। पी अहि तां पाणी आणी मीरां खाहि ते पीसण जाऊ। पखा फेरी पाउ मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥ ३ ॥ लूण हरामी नानक लाला बखसहि तुद वडिआई। आदि जुगादि दया पति दाता तुद विणु मुक्ति न पाई ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

यह सुन कर वे सिख गुरू जी के चर्णों में गिर गये। तब गुरू जी ने उपदेश दिया। हे भाई! धर्म की कमाई करो। आये गये सिख अथवा साधु संत की सेवा करो। दसवंद निकालो सत्य बोलो। नाम स्मार्ण करो। इस से तुमारा लोक परलोक उज्वल होगा। तब सभी सेवकों ने गुरू जी के चर्ण धोकर पहुल ली, और नाम स्मर्ण में लग गये। सत्य बोलना तथा नेक कमाई करनी यह उनों ने अपने जीवन का लच्च बना लिया। गुरू महाराज! सव को सुमार्ग पर लगा कर आगे गये

॥ साखी आरती सोहले की ॥

एक दिन गुरू नानक देव जी परमात्मा के ध्यान में मस्त थे। क्या देखा कि निरंकार परमात्मा कह रहे हैं। कि हे नानक संसार के लोग पाप कर्म में लगे हुए हैं तथा सुकर्म की ओर किसी का भी ध्यान नहीं। परंतु जीव के कर्मों को परमात्मा के दर्बार में लिखा जाता देखा गया। उस कौतुक को देख कर गुरू जी के मन में दया आई। तब उस परमेश्वर ने कहा–हे नानक देव! मुझे तो कोई स्मर्ण ही नहीं करता। प्रत्येक प्राणी माया के पीछे भाग रहा है। हे नानक! जैसे तुम चाहो मैं वही करने को तैयार हूँ। तब गुरू जी ने कहा–हे पिता! फिर भी दयालू हैं संसार की रच्चा करनी आप का लच्च है। आप अपने नाम की लज्जा रखने के लिये जीवों का कल्याण ही करना। तब निरंकार ने कहा–हे नानक! यह लोग

तो मेरा नाम कभी भी नहीं लेते। वह तो मुझे जानते ही नहीं । वे लोग तो अहंकार में डूबे हुए हैं। जब मैं उन को कुछ भूख प्यास की तकलीफ देता हूँ। तब वे लोक कुछ मेरे अर्पण दान पुन्य करते और मेरा नाम स्मर्ण करने लग जाते हैं। हे नानक! अभी तो इन प्राणीयों की उमर अल्प है, फिर भी यह मुझे भूले हुऐ हैं। तब गुरू जी ने कहा हे सर्व शक्तिमान! आप ने मुझे धर्म की रक्षा के लिये संसार में भेजा है । मैं संसार को सन्मार्ग पर लगाऊंगा परंतु आप ने अपनी ओर से संसारी जीवों पर दया ही करनी क्यों कि जीव अलपज्ञ है भूलन हार है। तब प्रभु ने कहा तुम मेरे सचे प्रेमी हो। तुमारा मन मुझ में ही लगा रहता है तब कर्तार ने कहा-हे नानक! मैं तेरा कथन अवश्य ही मानूंगा । अब मैं तुम को आग्या देता हूं। कि तुम सारे संसार को मेरा नाम जपाओ। तथा सन्मार्ग पर लगाओ। मेरे नाम का चक्र तमाम संसार में फेर दो। हे नानक! जो प्राणी बताए मार्ग पर चलेगा। उसे मैं इस संसार में कीर्ति दिला कर मरने पर अपने पवित्र धाम में स्थान दूंगा। और जो तुमारे बताए मार्ग पर नहीं चलेंगे। वे संसार में दुखी रह कर मरने के पीछे नर्कों में वास करेंगे तथा हे नानक जो तेरा नाम जपेगा। तथा तेरे बताये मारग पर अग्रसर होगा। उसे संसार के सभी सुख सहिज ही प्राप्त होंगे। इस में रंचक संदेह नहीं हैं। हे प्यारे नानक! तू सदैव मुझे ही स्मर्ण करता है। इस लिये मैं तेरा जपने वाले को अपना नाम जपने वाला जान कर उसे उत्तम से गति प्रदान करूंगा। तेरा जो भगत होगा। उसे अपना भक्त मानूंगा । क्यों कि तू मेरा ही रूप है। तुझ में और मुझ में कोई भेद नहीं है। तेरे नाम लेवा को यम नहीं पकड़ेगा। यह कर्तार के शब्द सुन कर गुरू नानक देव जी ने नमस्कार किया।

अब गुरू जी सभी काम छोड़ कर प्रभु नाम स्मर्ण का प्रचार करने लगे, तथा जो भी आता उसे सनमार्ग पर चलाते। भलाई सचाई का उपदेश देते थे, संसारी जीवों को गुरू जी ने कहा-हे मित्रो! इस घोर कलियुग में

सब से बढ़ कर प्रभु नाम स्मरण ही मोक्ष का दाता है। इस लिये यदि सुख चाहते हो तो प्रभु नाम स्मर्ण में लग जाओ, इस के ऊपर गुरू जी ने एक पवित्र शब्द भी उचारण किया-

गौड़ी दीपकी महला १ ॥ जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बिचारो। तितु घरि गावहु सोहला सिवरहु सिरजण हारो। तुम गावहु मेरे निरभौ का सोहला हौ वारी जितु सोहलै सदा सुख होइ ॥१॥रहाउ॥ नित नित जीअड़े समालीअन देखेगा देवनु हार। तेरे दाने कीमति ना पवै तिस दाते कवण सुमार ॥२॥ संबत साहा लिखिआ मिल कर पावहु तेल। देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवन्न। सदण हारा सिमरीऐ नानक से दिह आवन्न ॥४॥

॥ इस का परमार्थ ॥ सुणो मित्रो जो परमेश्वर की शक्तियों तथा कृपाओं का स्मर्ण करेगा, वही सुख और मुक्ति को प्राप्त करेगा। जहां संत लोक हो वहां बैठो तथा ईश्वर का नाम स्मर्ण करो। और परमातमा के ही सोहणे सोहले गाओ, फिर यह विचार करो कि चौरासी लाख योनीयें हैं सभी का परमातमा भरण पोषण पालन करता है। परमेश्वर की कृपा अपार है। परमेशर का स्मर्ण ही अच्छा है, हे भाई! वह परमेशर अपार और असीम वा अनीह है। उस की महिमा को संत लोक ही जानते हैं। उन संतों की सेवा करके उन से तुम आशीर्वाद प्राप्त करो, इसी में प्रभु प्रसन्न होते हैं। परमात्मा के दरबार में सभी का हिसाब है, कि अमुक जीव इतनी देर संसार में रहेगा। और इस समय वापस बुला लिया जायगा। जो मेरा भक्त है वह मर कर मुझे प्राप्त कर लेगा और जीवित संसार में आनंद मानेगा। हे जीव! यदि तुम ने परमात्मा को विसार दिया, तो तू महान दुख दायक नर्कों में जायगा, जब प्राणी ने नाम जपने का विश्वास दिलाया था, तभी परमात्मा ने उसे संसार में भेजा था। इसे उस प्रभु का नाम स्मर्ण करना उचित था। परंतु इस जीव ने माया के लोभ से परमेश्वर को भुला दिया। जैसे किसी कुमारी को एक दिन कोई विवाह कर ले जाता है, उसी

प्रकार इस जीव को एक दिन यमदूत ले जायगा । तब इस का कोई भी चारा नहीं चलेगा, आओ हम सभी मिल कर उस प्रभु की आरती गाएं और अपना जन्म सफल करें ।

राग धनासरी महला १ ॥ गगन में थाल रवि चंद्र दीपक बनै तारका मंडल जनक मोती । धूप मलि आनलो पवण चवरो करे सगल बनराइ फुलंत जोती । कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही । सहस पद विमल नन एक पद गंध बिन सहस तव गंध इव चलत मोही । सब महि जोति जोति है सोइ । तिस दे चानण सभ महि चानण होइ । गुर साखी जोति प्रगट होइ । जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ हरि चरन कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा । क्रिपा जल देहि नानक सारंग कउ होइ जाते तेरै नाइ वासा ।

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी फरमाते हैं हे प्रभु ! आकाश और धरती जो है । यह दोनों मंडल हैं । अर्थात यह दोनों आप की आरती करने के थाल हैं । चंद्र और सूर्य की उन में ज्योति जल रही हैं । आकाश के जो सितारे हैं वे सभी थाल में मोती हैं । और पवन का चवर हो रहा है । और जितनी वन राय है वह भी आप को पुष्प अर्पण करने में लगी हैं । हे भव सागर से पार करने वाले परमात्मा माया को दूर करके मुझे अपने चर्णों में लगा ले । यह आरती आप की हर समय हो रही है और अनाहद शब्द जो हो रहा है वह दशम द्वार की सूचना दे रहा है । संसार के जीवों के मुख तथा नैनों में आप की ज्योति ही चमक रही है । उन से ही वह उजाला है । हे प्रभु ! आप के हजारों चर्ण हैं । अनेकों गंधर्व आप की स्तुति के गीत गा रहे हैं और अनेकों देवता आप को नेति नेति कह कर ध्यान धरते हैं । परंतु आप के पार को नहीं पाते । हे नाथ ! आप घट घट में निवास कर रहे हो कोई स्थान भी आप के विना नहीं है । आप अनादि हैं

हे प्रभु ! अधिक क्या कहें। यदि कहते ही जायें, तो मन नहीं भरता। परंतु ग्रंथ का विस्तार अधिक होने का भय है। इस लिये यहां ही समाप्त करता हूँ। हे नाथ आप के चर्णों का ध्यान हमें कभी न भूले।

फिर उस सर्व शक्तिमान परमात्मा ने कहा—हे नानक ! मैं तेरे ऊपर अत्यंत प्रसन्न हूँ। तू मेरा नाम जपा कर तमाम संसार को सद उपदेश देकर अच्छे मार्ग पर लगा रहे हो, इस में मैं तेरी अधिक सिफत नहीं कर सकता, क्योंकि संसार का उपकार करना तेरा कर्तव्य है। क्योंकि संसार में तू इसी लिये गया हुआ है, और मेरी जो आज्ञा है उसे तुम पालन करने में रात्री दिवस एक कर रहे हो। इस लिये मैं तुम पर बहुत ही प्रसन्न हूँ। अधिक क्या कहूं। तू मुझे बहुत ही प्यारा है तेरा प्रत्येक कर्तव्य मुझे प्रिय है।

इधर गुरू जी के मन में यह विचार था कि कलियुग के जीव भारी कुकर्मों में लगे हुए हैं। तथा कलि काल में केवल नाम स्मर्ण ही भवसागर से पार होने का एक जहाज है, परमेश्वर के नाम का स्मर्ण कराना। यह एक सभ से उत्तम काम है, इसी से संसार का कल्याण है। तथा संसार के भले में अपना भला है। यह. विचार कर सतिगुरू श्री नानक देव जी महाराज उस अकाल पुरुष की आज्ञा मान कर इस संसार में जीवों से प्रभु नाम स्मर्ण कराना ही अपना परम ध्येय वना गये हैं, उन की कृपा से जीवों का कल्यान है।

॥ साखी संतों से ॥

भ्रमण करते करते श्री गुरू जी महाराज ! पूर्व देश में पौंहच गये। वहां आप को कुछ महापुरुष मिले। उनों ने गुरू जी को प्रणाम करके फिर कहा—हे वावा जी राम राम। गुरू जी ने कहा आओ संतो सत्य राम वैठो। उनों ने वैठ कर कहा हम आप के नाम पर वलिहार हैं। उनों ने कहा कि यदि आप की आग्या हो तो हम कुछ प्रार्थना करने आये हैं। हमें एक शंका है। गुरू जी ने कहा—हे महाराज ! आप निःसंकोच जो

कहना हो सो कहो। उनों ने कहा अनेकों पुन्य करते हैं अनेकां हवन यग्य करते हैं। तथा अनेकों तीथ यात्रा करते हैं। उन को कौन २ सा फल होगा। क्या उन की मुकति होगी अथवा नहीं होगी। तब गुरू जी ने एक शव्द कहा–

राग भैरों महला १ ॥

जगन होम पुन्य तप पूजा देह दुखी नित दुख सहै। राम नाम बिन मुक्त न पावस मुक्ति नाम गुरमुखि लहै। राम नाम बिन बिरथे जग जनमा। बिख खावे बिख बोली बोलै बिन नावै निहफल मरि भ्रमचा ॥ रहाउ ॥ पुस्तक पाठ व्याकरण बखाणहि संध्या कर्म तिकाल करै। बिनु गुरू शब्द मुकत कहि प्राणी राम नाम बिन उरझि मरै। डंड कमंडल सिखा सूत धोती कीनी तीरथ गवण अति भ्रमण करै। राम नाम बिन शांति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पार परै ॥३॥ जरा मुकुट तन भस्म रमाई बस्तर छोडि तन नगन भया। राम नाम बिनु त्रिपति न आवै किरत के बांधे भेख भया ॥ ४ ॥ जेते जीआ जंत जल थल महि जत्र कत्र तू सरब जीआ। गुर प्रसादि राखि लेहु जल कउ हरि नानक रस झोल पीआ।

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी कैहते हैं हे संतो! चाहे कोई हवन यज्ञ करे चाहे तीरथों पर जाए, योगी सन्यासी चाहे ब्रहमचारी वने। चाहे नांगा और करवत कराये, चाहे सारी पृथिवी फिरे देवी देवताओं का पूजन करे। बहुत तपस्या भी करे, फिर प्रभु का नाम स्मर्ण के विना यह जीव मुक्त नहीं होता। मुक्ति तभी होगी जव सतगुरू जी के चर्णों का सहारा लेकर शुद्ध मन से राम नाम का स्मर्ण करे, तव इस का जन्म सुधरता है नहीं तो यह आवा गमण में ही पड़ा रहता है। परमेश्वर के नाम विना यह जीव विप खाता है और विष ही पान करता है। तथा विप ही वोलता है इस विप व्योहार का क्या फल होगा। यह वार २ जन्मता और मरता है, तथा अनेकों दुख पाता है। तथा अनेकों योनिओं में यह भटकता है। तव महा पुरुषों ने कहा एक

पुस्तकें पढ़ते हैं एक तीन काल संध्या वंधन तर्पण आदिक करते हैं, क्या उन की मुक्ति होगी या नहीं। गुरू जी ने कहा यदि चारों वेद पढ़े, चाहे तीन वार संध्या आदिक करे अठारां वार अठारह पुराण पढ़े। तब भी मुक्ति नहीं होगी, मुक्ति तभी होगी जब गुरुओं के चर्णों के आश्रित होकर नाम स्मर्ण करे। फिर संतों ने कहा–यदि गृहस्थ को त्याग कर वन में चला जाय तो क्या मुक्ति होगी अथवा नहीं। गुरू जी ने कहा सभी कुछ त्याग कर दंड कमंडल लेकर बनों में भी चला जाय। तो भी नाम स्मर्ण के बिना मुक्ति नहीं मिलती, भले ही सारा संसार का भ्रमण करे चाहे सप्त समुद्रों में स्नान करे परंतु नाम नहीं जपता तो इस का कल्याण नहीं हो सकती। मुक्ति तो केवल शुद्ध हृदय से प्रभु नाम जपने से ही मिलेगी, फिर संतों ने कहा एक जटा जूट बना कर फिरते हैं एक तन पर भस्म रमा लेते हैं एक वस्त्र रंगा कर पहिनते हैं एक कान छिदा लेते हैं गुरू जी ने कहा हे संतो! इन आडंबरों में मुक्ति नहीं मुक्ति तो सतगुर की शरण में जाकर नाम स्मर्ण में है, जब प्राणी अहंकार को त्याग कर परमेश्वर चिंतन करता है तब इस की मुक्ति होती है। नगन फिरने से कोई मुक्त नहीं हुआ। और न ही होगा, फिर संतों ने कहा जो जल थल में रहते हैं उन की मुक्ति कैसे होती है। गुरू जी ने कहा हे संतो जल थल में रहने वालों का भी भरण पोषण करने वाला वह परमात्मा ही है। वे भी जब परमेश्वर को याद करते हैं तब वे भी मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं, गुरू जी ने कहा हम ने तो अपना अनुभव कह दिया है आगे उस को गति वही जानता है। उस की गति अपार है, वह परमात्मा अनंत है उस को क्या स्वीकार है यह तो वही जानता है। वह सर्व शक्तिमान है जो चाहे कर सकता है, उस को रोकने वाला कोई भी नहीं है।

यह सुन कर वे संत धन्य हो कह कर गुरू जी के चर्णों में प्रणाम करने लगे। कहने लगे हे महाराज आप तो साक्षात परमात्मा हो हमें भव जल से पार करो। गुरू जी ने कहा आप एक मन होकर नाम स्मर्ण

करो, तब वह परमेश्वर आप का कल्याण करेगा। इस में संदेह नहीं है। तब वे संत गुरू जी के शिश्य होकर नाम जपने लगे। फिर गुरू जी वहां से आगे चले।

॥ साखी अरब देश के बादशाह से ॥

एक दिन मर्दाने ने कहा-हे गुरू जी ! अरब देश कैसा है, गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! क्या तेरा मन अरब देश देखने को चाहता है। यदि तुझे इच्छा है तो हम तुम को वहां ले चलेंगे। बस गुरू जी हम दोनों को लेकर अरब में जा पहुँचे। उस देश का बादशाह उस समय लाज वरद नाम का था। वह बहुत ही ज़ालम था, जो कोई हिंदुस्तान का निवासी वहां आ जाता तो बादशाह उस की गर्दन उड़ा देता था। जब लोग बहुत दुखी हुए तब उनों ने ईश्वर के दर्बार में प्रार्थना की। तथा उन की पुकार ईश्वर के दर्बार में स्वीकार हो गई।

एक दिन गुरू नानक जी के प्रति अकाश बाणी हुई कि हे नानक मैं तेरे ऊपर अति प्रसन्न हूँ। मैं तुमें यह खलीता भेज रहा हूं। वह खलीता तो गुरू जी ने ले लिया। उस खिलीते पर ईश्वरीय भाषा के अक्षर थे। अरबी तुरकी अर्बी फारसी तथा हिंदी के अक्षर थे। वह खिलता पहिन कर गुरू जी के उस नगर बाहर जा बैठे। जब लोगों ने देखा तो बादशाह से कहा हे जहां पनाह बाहर एक संत बैठा है। उसके गले में चोला है। उस पर तो क़ुरान शरीफ के तीस पारे लिखे हुए हैं। तब बादशाह ने वजीर को कहा-तुम जाओ और उस फकीर के गले से वह खिलता उतार कर ले आओ, तब वजीर गुरू जी के पास आया कहने लगा। हे साईं जी यह खिलता उतार कर हमें दे दो, क्यों कि बादशाह का यही हुक्म है। यदि तुम ने शाही हुक्म न माना तो बादशाह तुम को दुःख देगा। वजीर का हुक्म पाकर जो नौकर थे वह क़ुदरत की ओर से मिला हुआ कुरता उनसे कौन उतार सकता था। खिलता नहीं उतरा जब सभी ताकत

लगा के तब उनों ने बादशाह से जाकर कहा–हे जहां पनाह खिलता नहीं उतरने का। तब बादशाह ने अति क्रोध के साथ कहा–कि तुम उस हिंदु फ़कीर को दरया में डुबो दो, बस वज़ीर ने अपने नौकरों को हुकम दिया कि इस फ़कीर को दरया में डुबो दो। तब नौकरों ने किया कि गुरू जी को बहते दरया में डुबो दिया। देखने वाले तमाशा देखते रहे, परंतु अचंबा यह था कि न तो गल का कुरता ही भीगा और न ही गुरू जी को जल ने स्पर्श किया। वरुण देवता ने गुरू जी को अपने हाथों पर उठा लिया, तथा गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया जब वरुण ने गुरू जी को आदर के साथ किनारे पर बैठा दिया तब सभी लोग अचंभे में आ गये।

जब बादशाह ने ऊपर की बात सुनी तब फिर महान क्रोध में आकर हुकम दिया कि उस फक़ीर को आग में जला दो, वज़ीर ने गुरू जी के इर्द गिर्द लकड़ी इकठी करके आग लगा दी। उसी समय अग्नि देव ने गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया। तथा आग ने गुरू जी का कुछ भी बिगड़ने नहीं दिया फिर देखने वाले लोग अत्यंत ही परेशान हो गये। बादशाह ने यह भी तमाम बात सुनी, तो कहने लगा यह फकीर कोई जादूगर हैं। इसे किसी पहाड़ के ऊपर से गेर कर खतम कर दो, वजीर ने एक बहुत ऊंचे पहाड़ से गुरू जी को नीचे पटक दिया। पवन देवता ने गिरते हुए गुरू जी को अपने हाथों पर रख लिया, तथा रंचक भी चोट नहीं लगी। तथा एक फूलों के सुंदर मंच पर गुरू जी को सब ने बैठे देखा। देख कर लोग भय भीत हो गये। लोगों ने बादशाह को क़हा–कि वह साधू अभी तक जीवित है। तब पातशाह ने वजीर को बुलाकर कहा–कि यह साधू कोई भारा जादूगर है। इसे कोई बड़ा सा गहरा गढ़ा खोद कर उस में डाल कर ऊपर मट्टी पत्थर आदिक गेर कर दबा दो, वजीर ने वैसे ही किया–गुरू जी को एक गढ़े में डाल कर हजारों मनों के पत्थर आदिक डाल दिये। तथा फिर सभी अपने२ घरों को आ गए।

जब दूसरे दिन लोक उधर गये तब उनों ने गुरू जी को वहीं चौकड़ा

मारे हुए बैठे देखा। अनेक जो बुद्धिमान थे, कहने लगे कि भाई! जिस का भगवान रत्तक हो उस को कौन मार सकता है। फिर लोगों ने बादशाह को गुरूजी का जिंदा निकलना बताया तो फिर बादशाह ने वजीर को कहा कि उस फकीर को मेरे साह्मणे लाकर उस की ग्रीवा उतारी जाये। अब गुरू जी को बादशाह के साह्मणे लाकर कतल करने लगे। तब जो भी शस्त्र चलाते थे। वह एक भी बाबा जी को आघात नहीं पहुँचाता था। बादशाह को अत्यंत क्रोध हुआ। फिर हुकम दिया कि इस को सूली पर चढ़ा दिया जाय। जब जल्लाद उसे सूली पर चढ़ानें लगे, तब वह सूली सवज हो गई। जैसे सूखा वृत्त हरा हो जाता है, सभी लोग और वजीर हैरान हो गये तथा भयभीत भी हो गये, कहने लगे हे खुदावंद! यह फकीर क्या बला है जो आग पाणी पत्थर शस्त्र और सूली आदिक से भी नहीं मरता। और नाहि इस के कंठ से कुरता ही उतरता है। यह क्या माजरा है ?

इधर जो बादशाह के दर्बार में बुद्धिमान थे, उनों ने कहा–हे जहां पनाह! यह फकीर तो कोई महापुरुष नजर आता है। ऐसा मालूम होता है, कि परमात्मा ने फकीर का रूप धार रखा है। क्यों अग्नि जल पवन आदिक सभी इस की आग्या को मानते हैं हमें तो यह मालूम होता है। कि यह साधू नहीं है। परमात्मा ही तुमारी परीत्ता लेने आया है, इधर तो यह बातें हो रहीं थीं उधर मर्दाने ने और मैंनें (बाले) गुरू जी से प्रार्थना की कि–हे गुरुदेव! यह बादशाह अत्यंत पापी है। इसे दंड अवश्य ही देना चाहीये। तब गुरू जी ने हंस कर उतर दिया हे बाला और मर्दाना! जो कुछ प्यारे की इच्छा है वही हो रहा है। हमें तो उस परमेश्वर की आग्या है कि हम संसार को अच्छे मार्ग पर लगायें। जैसे किसी की प्रकृति होती है। वह वैसा ही कर्तव्य करता है। और जिस की रत्ता ईश्वर करता है उस को कौन मारने वाला है। जो पुरुष जैसा कर्म करता है। उस का फल वह परमात्मा ही देता है। हमारा किसी से कोई वैर विरोध नहीं है।

जो पाप करेगा। उस का उतर दायत्व उसी पर ही होगा। हे मर्दाना! तुम शांत रहो जो कुछ होता हैं, उसे देखते जाओ।

मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि जब इस से कोई महान कुकर्म हो जाय तब स्वाभाविक इसे अपने कृत्य से ग्लानी हो जाती है, तथा पश्चाताप से जलने लग जाता है बादशाह की आंख खुली,तब वह नंगे पैर और कंठ में कपड़ा डारे तथा मुख में घास लेकर श्री गुरू जी के चर्णों में उपस्थित हुआ। तथा त्राहिमां २ के शब्द कहने लगा, हे महाराज मैं अधम हूँ पापी हूँ आप मुझे क्षमा कर दें। मैं भारी गुनहगार हूं। और आप बक्षमहार हैं मुझ पर कृपा करो। मैं आप का दास हूं फिर कांपता २ बादशार गुरू जी महाराज के ऊपर ही गिर गया, तथा फिर हाथ बांध कर कहने लगा हे खुदा के रूप फकीर जी! आप मेरे सहित मेरे देश को क्षमा कर दो मेरे तो भय से प्राण सूख रहे हैं। आप दयालू हो, सभी कुछ आप के ही वश है। फिर बहु मूल्य भेंट गुरू जी के आगे रख कर लाख प्रकार से प्रार्थना की, और कहा कि आगे से जैसे आप की आज्ञा होगी वैसे ही किया जायगा।

गुरू जी ने कृपा करके कहा—हे बादशाह हम तब तेरे पर प्रसन्न होंगे, जब तू यह प्रण करे कि मैं आगे से किसी मनुष्य को दुःख नहीं दूंगा। तथा पच्चाताप को छोड़ कर सदैव न्याय करूंगा। नेक रहूँगा यदि तुम ने प्रण करके फिर भी वैसा ही बुरा बर्ताव रखा तो याद रखो फिर तुम को भारी दोज़ख में डाल दिया जायगा, और फिर कभी तुमारे ऊपर कृपा नहीं की जायगी। बादशाह ने कहा—हे गुरू देव अब तो मुझ में एक तिनका भी तोड़ने की सामर्थ्य नहीं है। जैसे आप आज्ञा दोगे उसी प्रकार समस्त आयुभार करूंगा। यह मेरा सच प्रण हैं, गुरू जी ने कहा—देखो उस प्रमात्मा का नाम जपो और अपने देश में लंगर की प्रथा चलाओ। गरीबों की पालना करो, पापों को दूर से ही त्याग दो। न्याय करो सिपारश न मानों, तब बादशाह ने गुरू जी की सभी आज्ञायें स्वीकार कीं। तथा उसी दिन गुरू जी का शिश्य बन गया। जब देश का बादशाह ही गुरू जी का

मुरीद हुआ तो फिर प्रजा कब पीछे रहने लगी थी। क्योंकि कहा है कि-यथा राजा तथा प्रजा ॥ इस प्रमाण के अनुसार सभी जनता श्री गुरू नानक देव जी महाराज की शिश्य हो गई, अब गुरू जी कुछ दिन उस बादशाह के महिमान रह कर फिर भ्रमण पर चले गये।

॥ साखी एक पठान की ॥

एक वार गुरू जी भ्रमण करते पठानो की बस्ती में जा पहुंचे। गांव के वाहर एक हुजरा था। मर्दाने ने पूछा हे महाराज! यह हुजरा यहां किस ने वनवाया है गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! इसी गांव का एक पठान है उसी ने यह हुजरा वनवाया है। वह इसी जगा आकर शाम की निमाज पढ़ता है। और उस को यहां बड़े २ आलम लोग मसले सुनाते हैं। परंतु उस के मन में रंचक भी दया नहीं आती। दिन के समय वह नगरों को लूट लेता है। हम उस को मिलने के लिये इधर आए हैं। परंतु ऐसे पुरुष को मिलना अच्छा नहीं होता परंतु हमें तो दूसरों के कुकृत्यों पर दया आ जाती है।

इतनी वातें हो रही थीं तव शाम हो गई तव वह पठान बड़े अहंकार के अंदर आया हुआ इस हुजरे में आ गया। काजी मुल्लां जो उस के साथ थे, सभी ने निमाज के पश्चात मसले कहने आरंभ किये। तव वह पठान सुन २ कर धन्य अलाह धन्य है खुदा। इस किसम के शब्द कहने लगा। गुरू जी जो निकट ही वैठे थे, उस की ओर देख कर हंसनें लगे। तव उस पठान ने कहा-हे फकीर! हम खुदा का नाम ले रहे हैं। और तुम हंस रहे हो। यह हंसी गैर वाजव है, तव श्री गुरु जी ने एक श्लोक उचारण किया-

॥ श्लोक महला १ ॥

हरणा वाजां ते सिकदारां इना पढ़िआ नाउ। फादी लगी जात फहाइन अगै नाही थाउ। सो पढ़िआ सो पंडित वीना जिनी कमाणा नाउ।

पहिलों दे जढ़ अंदर जम्मै उपर होवे छाउ। राजे सीह मुकदम कुते। जाइ जगाइन बैठे सुते। चाकर नहिंदा पाइन घाहु। रत पित कुति हो चट जाहु। जिथे जीआं होसी सार। निकी वडी लाइ तवार।

॥ वारतक ॥

जव उस ने गुरू जी के मुख से यह श्लोक सुना तो कैहने लगा–हे फकीर साईं ! क्या ईश्वर का नाम जपने से छुटकारा नहीं होगा ? तो और किस प्रकार से छुटकारा हो सकता है ? गुरू जी ने कहा–हे पठान ! तू भूला हुआ है। यहां तो तू मसले सुनता और खुदा का नाम भी लेता हैं, तथा नगर में जाकर तू पूरा२ मक्कार बन जाता है। तथा गरीबों का खून पीता है। इन फरेबी कर्मों के लिये परमात्मा तुझ को दंड देगा और फरिश्ते तुम को नरकों में डाल देंगे। पठान ने कहा–हे साईं ! मैं तो आपना लाभ देख कर खुदा का नाम लेता हूं। फिर अंतर्यामी श्री गुरू नानक देव जी महाराज ने एक और शब्द उचारण किया–

राग मल्हार श्लोक महला १ ॥

सौ मण हस्ती घ्यो गुड़ खावै पंज सै दाना खाइ। डकै फूकै खेह उडावै साहि गैये पछुताइ। अंधी फूक मूई देवानी। खसम मिटी फिर भानी। अधगुला चिड़ी चुगन गैन चढ़ी बिललाइ। खसमै भावै ओहा चंगी जे करे खुदाइ खदाइ। सकता सींह मारै पैवगै सभ पिछै पैखाइ। होइ सताणा घरै नाम वैसाहि गइऐ पछुताइ। अंधा किस नो बुझ सुणावै। खसमै मूल न भावै। अक स्यो प्रीत करे अकतिडा अक डाली वहि खाहि। खसमैं भावै ओहो चंगा जि करै खुदाइ खुदाइ। नानक दुनीआं चार दिहाड़े सुख कीते दुख होई। गल्लां वाले हैन घनेरे छड्ड स सकै कोई। मखी मिठै मरणा। जिन तू राखहि तिन नेड़ि वाले हैन घनेरे छड्ड न सकै। जिन तूं रखहि तिन नेड़ि न आवैं जिन भौ सागर तरना।

॥ वारतक ॥

जव यह श्लोक गुरू जी ने सुना तव पठान ने गुरू जी के चणों पर

सिर रख दिया। और कहा हे महाराज ! हम ने जाना कि राज्य में आनंद है। परंतु अब जाना हैं कि राज्य के पश्चात नर्क होगा। यह भारी दुःख है। अब हमारी सद गति कैसे होगी। यह सुन कर गुरू जी ने एक परम पवित्र श्लोक उच्चारण किया-

॥ श्लोक ॥

राज माल रप जाति जोबन पंजे ठग्ग। इनी ठग्गी जग ठगिआ किने न रखी लज। एना ठगन ठग से जे गुर की पैरी पाइ। नानक कर्मा वाहिरे होर केते मुठे जाहि ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

यह श्लोक सुन कर पठान श्री गुरू जी के चर्णों पर गिर गया। और कहने लगा साधू तो परमात्मा के प्यारे होते हैं। आप मेरा गुनाह मुवाफ करो, हे महाराज ! मैं तो आप की शरण हूँ। गुरू जी ने कहा-हे भाई ! आज तो तुमको क्षमा की जाती है परंतु आगे से कोई बुरा काम नहीं करना होगा। नेकी के मार्ग पर सदैव चलना होगा। तब वह पठान श्री गुरू नानक देव जी के दरबार में शिश्य हो गया। इस प्रकार उस का कल्याण करने के लिये तथा उस की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए गुरूजी उसके घरमें ठीक नौ मास व्यतीत करके उस पर अति प्रसन्न होकर उसे अभयदान दिया, अब गुरू जी ने कहा-कि आप लोग जो कुछ मंगनां चाहो मांग लो, उनों ने कहा-हे गुरू जी आप अपनी कृपा से वह वस्तु हमें दो। जिस को हमारी आगे की संतान भी देख कर आप की दया स्मर्ण रखे। गुरू जी ने कहा-आप कड़ाह प्रसाद बनवाओ। जिस में मैदा चीनी और घी बराबर का हो, उनों ने एक हिंदु हलवाई से कड़ाह प्रसाद बनवाया। तथा गुरू जी के आगे रखवा दिया। गुरू जी ने कहा-तुम लोग इस पर एक चादर डालो जब चादर डाली गई। तब गुरूजी ने कहा-तुम बैठ कर वाहिगुरु२ का जप करो। उन पठानों ने वैसे ही किया। फिर गुरू जी ने मुझे कहा-हे बाला यह चादर उठा कर इन को दे दो। मैंने चादर उतार कर उन लोगों को दे

दी, गुरू जी ने आग्या दी कि तुम कड़ाह प्रसाद इन लोगों में बांट दो जब चादर उठाई गई तो उस कड़ाह में एक पंजेका निशान लगाहुआ देखा तब गुरू जी ने उन से कहा—कि जब तुम को कोई कठिन काम आ पड़े। तब इसी प्रकार कड़ाह प्रसाद बना कर नाम जपना। चादर डाल कर प्रभु से बिनती करनी। जब चादर उतरने पर पंजे का निशान देखो। तो जान लेना कि तुमारा कार्य अवश्य ठीक होगा। और फिर कड़ाह को बांट देना। यदि पंजा न लगे तो फिर वह कड़ाह प्रसाद नहीं बांटना। पठानों में आज तक यही रीति है। वे सभी पठान गुरू जी के शिश्य बन गये। उन का उद्धार करके श्री गुरू जी महाराज वहां से रवाना हुए।

॥ साखी भगतों के साथ ॥

एक दिन गुरू जी के पास कुछ भक्त लोक आये और कहने लगे हे महाराज! हम ने कुछ पूछना है। अगर आज्ञा हो तो हम पूछें! गुरू जी ने कहा हे भगवानके प्यारो?जो कुछ आपकी इच्छाहो वह पूछो।उनोंने कहा—हे महाराज! यह जीव जो कुछ पुन्य पाप करता है। और जो यह माया के पीछे भागा भागा फिरता है, क्या यह किसी की प्रेरणा से करता है अथवा यह स्वयं स्वतंत्र रूप से करता है? इस के उत्तर में श्री गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया—

राग बलावल महला १ ॥

मन का कहिआ मनसा करै। इह मन पाप पुन्न उचरै। माया मद माते त्रिपत न आवै। त्रिपत मुक्त मन साचा भावै ॥१॥ तन धन चलत सभ देख अभिमाना। विन नावै किछ संग न जाना ॥१॥रहाउ॥ कीजै रस भोग खुसीआ मन केरी। धन लोका तनु भसमैं ढेरी। खाकु खाक रले सभ फैल। बिन सबदै नहीं उतरै मैल ॥ २ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी कहते हैं, हे राम के भक्तो यह प्राणी राज भी करता है, और

योग भी करता है। और धन को एकत्र करके खज़ाने भी भर लेता है, धन माया के जो आनंद हैं वह इस के साथ नहीं जाते। तथा शरीर भस्म हो जायगा। और दौलत को अन्य लोग ले जाएंगे। धन के लिये जो इस ने पाप किये, वे सभी इस को नर्क में जा गेरेंगे। परमात्मा के नाम के बगैर इस का कोई मित्र नहीं होगा।जब तक यह परमात्मा का भजन और गुरू की शरण प्राप्त नहीं करेगा। तब तक इस की मैल दूर नहीं होगी, ईश्वर भजन से इस का छुटकारा होगा।

फिर उनों ने पूछा हे महाराज! यह प्राणी जिस योनी में जाता हैं, तथा जिस में नाचता है। यह उस नाचने से किस प्रकार छूटेगा। फिर गुरू जी ने पौड़ी कही–

॥ पौड़ी ॥

गीत नाद घन ताल सकूरे त्रिहु गुण उपजै बिनसै दूरै। दूजी दुरमति दरद न जाइ॥ छूटे गुरमुखि दारू गुन गाइ॥ ३॥

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी कहते हैं हे भक्त जनों! मरने वाले को तो गीत नाद ताल पखावज वजाये जाते हैं तव वह प्राणी उन के ही कारण नाचता है। और यह प्राणी जो योनी में पड़ता है। इनी करके काम क्रोध लोभ मोह अहंकार तथा ममता के लिये अनेकों योनियों में जाता है। बार २ इस का नाश होता है तथा वार वार यह उपजता है। अव का बिछुड़ा हुआ फिर नहीं मिलेगा। एक प्राणीयों की आयुएं अनेकों वर्षों की हैं, जैसे लाखों वर्ष एक पाषाण की आयु है। यह उन में भ्रमण करता रहता है। इस प्रकार मनुष्य जन्म का गया हुआ प्राणी बहुत ही दूर चला जाता है, दुरमति वड़ा भारी रोग है। फिर भक्त कहने लगे हे गुरू देव! इस जीव का यह दुरमति रोग किस प्रकार दूर होता है? गुरू जी ने कहा–इस का इलाज प्रभु का नाम है। जव यह नाम स्मर्ण करता है, तव यह रोग अपने आप ही दूर हो जाता है। फिर उन भक्तों ने

कहा हे गुरू जी ! एक वैशनव कहलाते हैं तथा एक तपस्वी तथा एक पं कहलाते हैं। और एक जैनी आदिक हैं इन में उत्तम कौन से हैं ? गुरू जी ने पौड़ी कही।

॥ पौड़ी ॥

धोती उजल तिलक गल माला। अंतर क्रोध पड़हि नट साला। विसार माया मद पीआ। विन गुरू भगत नहीं सुख थीआ।

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी ने कहा–हे भक्तो ! यह सभी नट की विद्या है, जैसे नाटक करता है वे वैसा ही प्रतीत होता है। जैसे धोतीएं पहिननी मा धारन करनी तिलक आदिक यह वैशनवों के स्वांग हैं। नट की भांति तक इस के मन में कामादिक ममता माया रहती हैं तब क्या, यदि का स्वांग कर लिया तो क्या ? उस परमात्मा की अनन्य भक्ति के भक्त नहीं कहला सकते।

फिर उनों ने कहा–हे गुरू जी ! जो मुख से तो किसी को गुरू हैं। परंतु गुरू आज्ञा की अवहेलना करते हैं, उन की क्या गति हो फिर गुरू जी ने आगे की पौड़ी उचारण की–

॥ पौड़ी ॥

सूकर स्वान गरधभ मंझारा। पसू मलेछ नीच चंडारा। गुर ते फेरे तिन जन भोगाईऐ। बंधन बाधिआ मर आईऐ जाईऐ।

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी कहते हैं जो गुरू की आग्या नहीं मानते वे प्राणी चंडाल कौवा कुता आदिक की योनी को पाते हैं अन्य वहुत सी पशुय हैं उन में जाएंगे। तथा भूत प्रेतादिक बनेंगे। यह सभी योनियें नि मानी गई हैं। गुरू की अवलेना से यही योनीएं प्राप्त होती हैं।

फिर उनों ने कहा–हे महाराज ! जो सतगुर को प्राप्त करके सदैव के सन्मुख रहते हैं उनकी क्या गति होगी। कृपया यह भी बता दो।

आसा महला १ छंतु घर ३ ॥

तू सुण हरणा कालया की वाड़ीऐ राता राम । बिख फल मीठा चार दिन फिर होवे ताता राम । फिर होइ ताता खरा माता नाम बिन पछता पए । उह जेव खाइर देइ लहिरी बिजल जिवें चमकए । हर बाझ राखा कोइ नाही सो क्यों तुझै बिसारिआ । सच कहै नानक चेत रे मन मरहि हरना कालया ॥ १ ॥

परमार्थ ॥ श्रीगुरू नानक देव कहते हैं-हे मन ! जो काला हरण है सो तू हैं । मैं तुझ को शिक्षा देता हूँ । कि जो वस्तु त्याज्य है उसे न कर । यदि तू उस की दी वस्तु को खायगा तो वह अमृत है । और यदि तू त्याज्य वस्तु को अंगीकार करेगा । तो तू फाही में फसेगा । जिस प्रकार यह हरण काबू आ गया है । उसी प्रकार तू भी दुखी होगा । तथा तू परमेश्वर के हुकम की अवहेलना करेगा । तो तेरा इसी हरण के समान बुरा हाल होगा । उस भगवान के सिवा तेरा और कोई रक्षक नहीं है । सो तू परमेश्वर का स्मर्ण कर तव तू यम धाम के दंड से बचेगा ।

॥ साखी भ्रमर की ॥

एक दिन सतगुरू नानक देव जी एक सुंदर तालाब के तट पर जा वैठे । वहां गुरू जी ने अनेक कमल फूल खिले हुए देखे, जिन पर एक भ्रमर गुंजार कर रहा था, तथा उन पुष्पों की सुगंधी में मस्त होकर उनका मधु पान कर रहा था ! जब सायंकाल हुआ तो वह भ्रमर एक खिले हुए कमल पुष्प पर बैठ गया । जब रात्री काल हुआ तो वह कमल पुष्प मिट गया, तथा भ्रमर उसी में बंदी हो गया । तब श्री गुरू जी ने उस भ्रमरे को निमित्त करके अपने मन को शिक्षा देते हैं । जिस से समस्त संसार को उपदेश हो जाय, तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

छंत महला १ ॥ भवरा फूल भवंतिआ दुख अति भारी राम । मै गुर पुछिआ आपणा साचा वीचारी राम । वीचार सतगुर तुझै पूछिआ भवर

वेली रात ओ। सूरज चढ़िआ पिंड पड़िआ तेल तावण तात ओ। जग मग बाधा खाहि चोटा सबद बिन बैतालिआ। सच कहै नानक चेत रे मन मरहि भवरा कालिआ।

॥ परमार्थ ॥ गुरू जी फरमाते हैं हे मेरे मन तू ने भवरे का खेल देखा है। जो सुगंधी के लोभ में अपने प्राणों से हाथ धो बैठा है, तू भी इसी भ्रमर की नयाईं माया के बंदी बन कर अपने प्राण गुवा बैठेगा, यह लालच महान बुरी बला है, तथा तूं पाप कर्म की सज़ा पायेगा। माया की प्रीति उसी भ्रमर के सदृश्य तुझे कष्ट प्रद होगी। जैसे किसी कड़ाहा में तेल तपता है, उसी प्रकार हे मेरे मन तू भी अग्नि में ही जलाया जायगा। जैसे बेताल को अत्यंत पीटा जाता हैं उसी प्रकार तेरी भी गति होगी। यदि तू माया के साथ ही मोह करता रहा, तब तेरा कोई भी सहायक नहीं होगा। तुझे उचित है कि परमात्मा के साथ प्रेम कर।



॥ साखी झीवर के जाल की ॥

एक समय श्री गुरू जी एक नदी के तट पर जा बैठे वहां एक झीवर ने नदी के भीतर मछली पकड़ने को जाल डाल रखा था, बहुत सी मछलियें उस जाल में आ गईं। तब उन को काबू करके वह झीवर अपने घर की ओर रवाना हुवा तड़पती मछलीयें गुरू जी ने जब देखी तब आप ने मन मन को निमित्त बना कर संसार को उपदेश दिया।

छंत महला १ ॥

मेरे जी अड़िआ परदेसीआ कित पवहि जंजाले राम। साचा साहिब मन वसै की फासहि जम जाले राम। मछली विछुन्नी भर नैन रुन्नी जाल बधक पाया। संसार माया मोह मीठा अंत भरमु चुकाया। भगति करि चित लाइ हरि सो छोड मनहु अंदेसिआ। सच कहै नानक चेत रे मन जीअड़िया परदेसिआ ॥ ३ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी फरमाते हैं हे मेरे मन यह तमाशा देख कि जो मछली पाताल में थी, उसे जाल लगा कर झीवर अपने घर को ले गया है। हे मन तू भी इसी प्रकार यम दूतों के हाथ लग जायगा। यहां तेरा अपना सिवाय उस प्रभु के और कोई भी नहीं है। इस लिये ईश्वर स्मर्ण कर। जब मछलीयें जो अचेत और अग्यान में थी उन को झीवर ले गया है। उसी प्रकार तू भी मोह माया में अचेत हो रहा है। तो तुझे यम दूत झीवर की भांति पकड़ लेंगे। तब तू मछलियों की भांति विरलाप करेगा। परंतु सभी व्यर्थ होगा। जब अंत समय होगा तब तेरा यह प्रमाद उतर जायगा, इस लिये तू प्रथम ही परमेश्वर का भजन कर तब तेरा कल्याण होगा। इस के पश्चात उसी नदी के तट पर ही चलते २ गुरू जी आगे की ओर रवाना हुए ॥ ११ ॥

॥ साखी नदी के प्रवाह की ॥

जब श्री गुरू जी महाराज उस नदी के प्रवाह की ओर जा रहे थे। तब क्या देखा कि उस नदी के प्रवाह के दो भाग हो गये हैं। जो एक दक्षिण की ओर तथा एक पूर्व की ओर जा रहा है। यह देखकर श्री गुरू जी संसार को निम्नलिखित शब्द से परम मनोहर उपदेश देते हैं-

छंत महला १ ॥ नदीआ वाहि विछुंनिआ मेला संजोगी राम। जुग जुग मीठा विस भरे को जाणै जोगी राम। कोइ साहिब जाणै हरि पछानै सतिगुर जिन चेतिआ। बिन नाम हरि के भरम भूलै पचहि मुगध अचेतिआ। हरि नाम भगति नाहिदे साचा से अंत धारी रुंनिआ। साच कहै नानक सबद साचा मेल चिरीं विछुंनिआ ॥

॥ परमार्थ ॥

गुरू जी प्रवचन करते हैं कि हे मेरे मन ! यह जो तू नदी का प्रवाह विछड़ता देख रहा है अब यह प्रारब्ध से ही मिलेगा। यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो मेल होगा। नहीं तो वियोग तो तुमारे समक्ष ही है। इस से

यह पता चलता है कि परमेश्वर से मिला रहो। यदि विछोड़ा हो ग
तब फिर ऐसा समय फिर बने, अथवा न बने। अर्थात मनुष्य शरीर
मिले या न मिले। समय निकल गया तो ईश्वर की आज्ञा से तुझे चौर
लक्ष योनी में धकेला जायगा। जो प्राणी मीठा अधिक खाता है।
वह ईश्वर अर्पण किये वगैर खा लेता है तो वह विष के तुल्य होता
इस बात को उत्तम पुरुष जानते हैं हे मन! स्मर्ण का परम सुख है वह
तब अनुभव होगा जब तू ईश्वर स्मर्ण में लग जायगा तथा जिस ने
गुरू शरण प्राप्त नहीं की। उसे सच्चे सुख का तो अनुभव हो नहीं सक
जो अचेत तथा अज्ञानी हैं वे माया के मोह में मरे हुए हैं। वह
नर्कगामी हैं हे मन! तू उस प्रभु का स्मर्ण कर।

जब यह गुरू जी का उतम उपदेश बाले ने श्री गुरू अंगद देव
को सुनाया। तब गुरू अंगद देव जी अपने ही स्वरूप में लीन हो ग
और तमाम संगत परम प्रसन्न हुई। तथा गुरू अंगद जी
चर्ण कमलों में नमस्कार करके जाती २ कहने लगी। हे भाई बाला!
धन्य हो, जिस ने परम सतिगुरु नानक देव जी के सभी कौतक नने
देखे तथा श्रोत्रों द्वारा श्रवण किये हैं। इन कौतुकों को जो प्राणी
श्रद्धा से पढ़ेगा अथवा सुनेगा। वह परम धाम को प्राप्त करेगा।
गुरू नानक देव!

॥ साखी शहु सुहागण की ॥

एक दिन श्री गुरू नानक देव जी एक नगर में गये। एक माता
घर में जा बैठे। उसी नगर में एक फकीर रहता था। जिस दिन च
चढ़ता था, उस दिन उस के घर में बहुत जनता आती थी। बहुत
अनेक प्रकार की भेंट बाजों की ध्वनी में लेकर आते थे। उस फकीर
मकान पर एक खासा मेला लग जाता था। यदि कोई पूछे के आज
क्या है तब उतर मिलता था कि इस के घर में शहु ने आना है।

फकीर कहता था कि मेरे मकान में कोई भी न आए ! और घर में फूलों की शैय्या बना रखता था, तथा इतर गुलाब आदिक छिड़कता था । उस रोज वह फकीर किसी को अपना मुख नहीं दिखाता था। और न ही किसी का मुख देखता था । तथा मकान के भीतर ही तमाम रात्री बैठा रहता था । तथा बुरका पहिनता और अपने को स्त्री समझता था । यह बातें तमाम जनता में होती थीं । उधर उस बुढ़िया के घर में श्री गुरू जी महाराज बिराजमान थे । उस बुढ़िया ने स्वच्छ भोजन तैयार करके गुरू जी के आगे रख कर प्रार्थना की-हे महाराज ! इस रूखी सूखी रोटी को ग्रहन करें । तब गुरू जी ने कहा भोजन तो हम पा लेंगे, परंतु यह नगर में शोर किस बात का है ? तब उस देवी ने कहा हे महाराज ! इस नगर में एक फकीर रैहता है, वह कहता है कि शुक्ल पक्ष की दूज को मेरे घर में शहु आता है । यह बात सुन कर गुरू जी ने मुझे और मर्दाने को कहा-चलो हम भी उस फकीर को देखें, और शहु सुहागन का दीदार करें । तब हम लोग गुरू जी के साथ उस फकीर के द्वार पर जा कर खड़े हो गये, देखा बहुत दुनीयां खड़ी है । तथा किसी को भीतर जाने नहीं दिया जाता । अब गुरू जी ने भीतर जाना चाहा तो लोगों ने रोक दिया । तब गुरू जी ने उस के दरवानों को कहा-हे भाई ! फकीर जी को कहो कि बाहर साधु खड़े हैं । और तुमारा दीदार मांग रहे हैं, तब फकीर ने उन दरवानों को कहा-भाई मैंने तो आज अपने शहु का दीदार करना है, आज मैं ने किसी को दरशन नहीं देना । जब दरवानों से सुना कि वह फकीर इनकार करता है । तब हमें गुरू जी ने कहा सुनो मित्रो-यहां कुछ भी नहीं है यहां झूठा स्वांग है, यदि इसको शहु का दीदार हो जाता तो हर बुरके में शहु को पहिचान लेता । तब गुरू जी वहां से उठ कर एक पहाड़ी पर जा बैठे । तब उधर जनता में दैव योग से लड़ाई हो पड़ी । कोई झंडा उतार कर ले गया तो कोई नगारे उठाकर भाग गया । लड़ाई में सभी साज बाज दरहम बरहम हो

गया। अनेकों को सखत चोटें आईं खून की होली खेली गई। उस फकीर का मेला नष्ट होगया अब उस फकीर की चारों ओर निंदा होने लगी, महिमा पलों में घट गई, तमाम दुनीयां उस फकीर को झूठा२ कैहने लगी।

एक महीने के पश्चात उसी बुढ़ीया के घर में आए और पूछने लगे। हे बुढ़िआ! आज भी चांद की पहिली है मां उस फकीर के यहां आज मेला नहीं लगा? उस ने उतर दिया हे महाराज! उस फकीर का सभी नाटक बिलकुल झूठ ही निकला।

एक दिन गुरू जी शहर के बाहर गये, तब एक लंगड़ा आदमी नगर के बाहर इधर उधर मांगता मिला। वह गुरू जी को देखते ही चर्णों में आ गिरा। गुरू जी ने उस लंगड़े पिंगले की ओर कृपा दृष्टी से देखा तब उस के सभी अंग ठीक हो गये। उस ने गुरु जी की महान स्तुति की, अब गुरू जी उसे कहने लगे हे मित्र! यदि तुम को कोई पूछे कि तुमारे हाथ पैर किस ने ठीक किये हैं तो तुम ने कहना कि मेरे हाथ पैर ठीक करने वाला वही शहु सुहागण जी हैं। बस जब उसे पूछा जाता तो वह शहु सुहागण का ही नाम लेता था फिरता२ वह शहु सुहागण को भी जा मिला, शहु सुहागण के पूछने पर उस ने कहा कि मेरे हाथ पैर शहु सुहागण फकीर ने ठीक किये हैं। उस शहु सुहागण ने कहा हे भाई! वह कहां है। उस ने कहा कि वह तो एक बुढ़िआ के घर में रह रहे हैं। तब वह झूठा फकीर उस पिंगले के साथ गुरू जी के निकट आया। तो बस देखते ही चर्णों पर गिर पड़ा। और हाथ बांध कर बेनती करने लगा और कहने लगा हे महाराज! आप मुझे क्षमा कर दो। मैं भूला हुआ था। मुझे क्षमा करो सत्य बात तो यह है कि मैंने आप को पहिचाना नहीं था, गुरू जी ने दया दृष्टी करते हुए कहा–हे मित्र प्रत्येक बुरके में उस शहु को जान कर और सभी को दीदार देना लेना अच्छा है। जब तू परमेश्वर का भजन करेगा तब वह सचा शहु तेरे बिन बुलाये तेरे पास स्वयं चला आएगा। फिर गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार करके तथा आग्या लेकर

वह शहु सुहागण फकीर अपने ठिकाने जा बैठा।

उधर वह पिंगला शहु सुहागण का प्रचार कर रहा था, तब उस का उजड़ा मेला फिर से लगने लगा। तब गुरू जी की कृपा समझ कर वह शहु सुहागण फकीर गुरूजी का शिश्य बन कर नाम जपने लगा। तब श्री गुरू जो ने वहां एक श्लोक उचारण किया।

श्लोक महला १॥

तुद भावहि ता वावहि गावहि तुध भावहि जल नावहि।जा तुध भावहि ता करहि बिभूता सिंडी नाद वजावहि। जां तुध भावै तां पढ़हि कतेबां मुल्लां शेख कहावहि। जां तुध भावहि तां होवहिं राजे रस कस बहुत कमावहि। जां तुध भावहि तां तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि। जां तुध भावहि तां जाइ दिसंतर सुण गल्लां घर आवहि। जां तुध भावहि तां नाइ रचावहि तुध भाणे तू भावहि। नानक एक कहै बेनंती होर सगले कूड़ कमावहि॥ १॥

॥ वारतक॥

यह श्लोक सुन कर सभी लोग गुरू जी के चर्णों पर गिर कर प्रणाम करने लगे, तव गुरू जी उन पर अपनी कृपा दृष्टी करके तथा अनेकों की कामना पूर्ण करके चल दिये।

॥ साखी एक सिख के साथ॥

बाले ने कहा हे गुरू अंगद देव जी! श्री गुरू नानक देव जी महाराज संसारी जीवों का कल्याण करते चले जा रहे थे, तब मार्ग में एक सिख से भेंट हो गई। उस ने प्रार्थना की कि हे महाराज! सिखी उत्तम है अथवा फकीरी उत्तम है? तव गुरू जी ने कहा–हे सिख! पहिले तू हमारा काम कर, अमुक नगर में एक हमारा सिख रहता है। हमारा लिखा संदेश उस को देना। और भोजन भी उसी के घर में खाना, जब तू लौट कर आयेगा, तब तुझे तेरे प्रश्न का उत्तर दे दिया जायगा, तब उस ने हाथ जोड़ कर

कहा-हे महाराज जैसे आप की आज्ञा। तब गुरू जी ने एक आज्ञा पत्र लिख कर दे दिया। तब वह सिख आज्ञा पत्र लेकर चल दिया, गुरू जी के बताये नगर में जाकर पूछने लगा भाई! अमुक सिख का घर कौन सी ओर है? पूछता२ वह उस सिख को जा मिला। तब उस सिख ने इस का आदर सतकार सहित कुशल मंगल पूछा, परंतु वह सिख घर से अति निर्धन था। कभी अन्न मिलता और कभी न मिलता था, उस सिख के घर में एक लड़की थी। उस लड़की का एक साहुकार एक सहस्र रुपया देता था, और कन्या मांगता था। परंतु यह लड़की देने को तैय्यार नहीं था, उस सिख ने आ कर कहा-हे प्यारे! भोजन तैय्यार है, सो आप भोजन कर लो, उस ने कहा-हे मित्र! यह आज्ञा पत्र गुरू जी ने तुझे भेजा है। पहिले इसे पढ़ लो, उस ने हुकम नामा लेकर नेत्रों से लगाया। और अपने शिर पर रख लिया। जब खोल कर पढ़ा तो उस पर लिखा था कि-दो सौ रुपया हमारी भेंट और पचास रुपये इस सिख की भेंट करो, जो हमारा हुकम नामा तुमारे पास लाया है। वह हुकम नामा लेकर अपनी पत्नी के पास आ कर कहने लगा हे गुरू की प्यारी! यह गुरू जी का आज्ञा पत्र है अब क्या किया जाय। उस ने कहा-हे स्वामिन अब चिंता की क्या वात है। हमारा तन मन धन सर्वस्व गुरू जी का है और हमारी कन्या भी गुरू जी की है। और अमुक शाहुकार लड़की का एक हज़ार रुपया देता है, आप उस से जितने रुपये दरकार हैं लेकर उस से कन्या विवाह दो।

उधर हुकम नामा लाने वाला सिख सोचने लगा हे भगवान! यह तो अत्यंत दरिद्री हैं गुरु जी के लिये रुपया कहां से लायेंगे? इधर यह विचार रहा था। उधर वह सिख शाहुकार के घर गया। तथा सत श्री अकाल कह कर वैठ गया। शाहुकार ने पूछा आओ! किस प्रकार तुमारा आना हुआ। सिख ने कहा-आप मुझे अढ़ाई सौ रुपया दे दो तथा मेरी कन्या से विवाह कर लो। उस धनी ने उसे अढ़ाई सौ रुपया देकर विदा किया। यह उस हुकम नामा लाने वाले के निकट आया। उस ने हुकम

नामे की भेंट दो सौ रुपये किये और पचास लाने वाले को देकर कहा–प्रसाद पाओ। भोजन खाकर वह सिख वहां से लौट कर गुरू जी के निकट आया, उस रुपया देने वाले सिख ने अपने अहोभाग्या जाने और सतकार पूर्वक विदा किया।

मार्ग में उस सिख ने कहा–धन्य हैं गुरू जी के सिख और धन्य हैं गुरु जी महाराज ! इतने में रास्ता में उसे फकीर मिला। यह उस के पास छाया देख कर बैठ गया। उस फकीर के पास एक सौदागर आया। उस सौदागर ने एक थाल भोजन का धर कर नमस्कार किया। और एक दोशाला फकीर के ऊपर दे दिया। दो घड़ी के पश्चात एक और मुसाफर आया उस फकीर के आगे भोजन मिठाई का थाल धरा धराया उठा लिया तथा दोशाला भी उतार कर चलता बना। फकीर ने अपने मुख से देने वाले को अशीर्वाद नहीं दिया तथा ले जाने वाले को बुरा नहीं कहा–आए का हरप नहीं, तथा गये का शोक नहीं किया। एक रस रहा।

चार घड़ी बैठ कर वह सिख उठ कर चल दिया। मार्ग में उस सिख को रात हो गई। तब वह एक वृक्ष के नीचे जा बैठा। उस वृक्ष पर पक्षीयों का जोड़ा रहता था। वह पक्षी भी गुरू जी के श्रद्धालु थे। पक्षी ने उस सिख को देख कर अपनी स्त्री से पूछा–कि हमारे घर यह अतिथी आया है, यदि यह भूखा रहा तो हमें पाप लगेगा। पक्षी का मादा ने कहा हे भले ! यदि दिन का समय होता तो हम कुछ उपाय करते। परंतु इस समय तो हमारा शरीर हाजर है। इतना कह कर वह पक्षी के मादा एक अग्नि का चिंगाड़ा चोंच में पकड़ कर लाई। वह चिंगाड़ा उस सिख के आगे फैंक दिया। फिर कुछ सूखे तिन के डाल दिये। अब आग जली तो उग्र का उजाला हुआ। उस सिख ने इधर उधर से सूखी लकड़ी एकत्र करके एक वड़ी सी अग्नी जला ली। पक्षी की स्त्री ने कहा–हे स्वामी ! अब मैं इस में जा गिरती हूं। और यह मुझे उस में भून कर खा लेगा। बस फिर क्या था, वह पक्षी की मादा उस अग्नि में जा गिरी। पक्षी ने देख

कर कहा–मेरी मादा तो मुक्त हो गई है। तथा मैं जीवित रह
करूंगा। यह विचार कर पक्षी भी उस में जा गिरा वह मनुष्य दे
भून कर खा गया, और फिर शयन करने लगा। प्रातः वह सिख
के पास आ गया। नमस्कार करके बैठ गया।

गुरू जी ने कहा–हे प्यारे ! क्या तुझे प्रश्न का उत्तर मिला है
नहीं। उस ने कहा–हे सर्व शक्तिमान गुरू देव ! धन्य हो आप अ
हैं आप के सिख ! गुरू जी ने कहा हे भाई, यदि गृहस्थी सिख ब
तो उस हुकम नामा मानने वाले जैसा बनें। अथवा उन पक्षियों जै
और यदि फकीर होना है। तो उस फकीर जैसा बनना उचित है।
सिख ने प्रार्थना करके कहा हे गुरू देव ! यह तो दोनों ही मार्ग कठि
आप मुझ पर अपनी कृपा दृष्टी करके मेरी भूल को क्षमा कर दो,
जी ने उसे दिव्य दृष्टी देकर उस के कपाट खोल दिये। जिस से
ज्ञानी हो गया। तब गुरू जी ने उसे परम पवित्र उपदेश दिया,
नाम स्मर्ण का उपदेश दिया। और कहा हे प्रियवर ! इस से तुमारा
तो यश होगा, और मरने के पश्चात तेरी मुक्ति होगी। यह तू
करके मान।

—o—

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चौथी उदासी

॥ आगे साखी वीरां नाउ मलार नाल ॥

एक वार श्री गुरू नानक देव जी धनासरी देस के आगे क
एक चारपाई गुरू जी ने बनवाई, उस पर मर्दाना रबाबी और सी
घिहो यह हम चारों बैठे हुए थे। उस समय गुरू जी की समाधी ल
जब गुरू जी की उत्थान अवस्था हुई तब सिखों ने प्रार्थना क
महाराज ! आप का ध्यान किधर गया है । तब गुरू जी ने कहा

मन उठ खड़ा हुआ है, तब मर्दाने ने कहा-आप अब किधर जाओगे। गुरू जी ने कहा वीरां नाम का मलार है। और आगे के गांव में उस का घर है। उस से मिल कर खेलेंगे, फिर मैं (बाला) और मर्दाना चलते२ वहां जा पौंहचे। वहां जाकर मर्दाने ने पूछा-भाई वीरां मलार कहां रैहता है? लोगों ने कहा-वह जो साहमणे घर है उसी में वीरां मलार रहे हैं तब गुरू जी उसी स्थान पर जा पहुँचे। जहां वीरां बैठा था, गुरू जी ने कहा हे वीरां उस अलेख को सलाम है, तब वीरां ने नमस्कार करके पूछा-आप कौन हैं? और कहां से आ रहे हो तथा हम से क्या कुछ काम है। गुरू जी ने कहा-हम आप से दो बातें परमात्म पथ की पूछने के लिये आये हैं, उस ने कहा-आप इन लोगों से पूछ लो। हम से क्यों पूछते हो? हम लोग तो निर्धन सवजी वेचने वाले हैं, हमें आत्म वस्तु का क्या पता हो सकता है? मर्दाने ने कहा-हे मित्र! यह नानक देव निरंकारी हैं, जो कुछ तुम जानते हो सो कहो। तव उस ने कहा-हमारे अहोभाग्य जो इन के दर्शण हुए हैं। वीरां ने कहा-हे महाराज! आप कृपया यह बताओ कि वह परमात्मा कैसा है? और उस का निवास कहां है, मुसलमान कैहते हैं कि हजरत मुहंमद खुदा के निकट वर्ती हैं तथा हिंदु कहते हैं कि ब्रह्मा विश्नु महेश उस परमात्मा का रूप हैं। और रामचंद्र तथा कृष्ण यह परमात्मा हुए हैं, आप कृपया यह मुझे वताओ कि यह परमात्मा हैं अथवा ईश्वर कोई और ही है यह सुन कर श्री गुरू देव जी ने श्लोक कहा-

॥ श्लोक महला १ ॥

जित दर लख मुहमदा लख ब्रहमे बिशन महेश ॥
लख लख राम वडीरीअहि लख राही लख वेस ॥

गुरू जी ने कहा उस के दरवार में लाखों ब्रहमा विशणु महेश पड़े हैं, और अनेकों मुहमद भी वहां पड़े हैं। हे भाई उस के दर्बार में अनेकों राम वड़ाई पा रहे हैं। और अनेकों प्रकार के भेस उस के मार्ग में हैं।

लख लख ओथे जती है सतीअह ते सन्यास ॥

तथा अनेकों वहां सती निवास करते हैं। और कई लाख वहां यती हैं। और अनेकों लाख सन्यासी वहां हैं।

लख लख ओथे गोरखा लख लख नाथां नाथ ॥

वहां लाखों गोरख हैं। लाखों नाथ वहां फिरते हैं।

लख लख ओथे आसना गुरु चेले रहिरास ॥

वहां लाखों आसन धारी हैं। और अनेकों लाख गुरु चेले वहां हैं।

लख लख देवी देवते दानों लख निवास ॥

हे भाई मलार! उस निरंकार के दरबार में लाखों देवी देवता हैं। तथा लाखों ही दानव हैं। और लाखों देव हैं।

लख पीर पैकंबर औलीये लख काजी मुल्लां शेख ॥

वहां लाखों पीर पैगंबर हैं। मुल्लां काजी भी लाखों हैं वहां लाखों शेख फिर रहे हैं।

किसे शांत ना आया बिन सतिगुर दे उपदेश ॥

सुन भाई वीरा! यह सब आप ही आप कहलाये हैं, और यकीन करो जिनों ने गुरु का आश्रय नहीं लिया। और अदीक्षित हैं उपदेश से वंचित हैं उन को शांति प्राप्त नहीं होती। हे मित्र! गुरु के बगैर सद गति नहीं।

साधक सिद्ध अगणित हैं केते लख हजार ॥

और जो साधक सिद्ध हैं उन की तो गणना ही नहीं वे सभी अपार बेशुमार हैं। गिणती ही नहीं है।

एतड़िआं अपवित्र हैं विन सतिगुर के शब्द विचार ॥

हे भ्राता! यदि कभी इतने पाठ पढ़े और अमल बगैर तथा गुरू कृपा के विना यह सभी अपवित्र हैं, क्योंकि उसके विना गति नहीं होती।

सिर नाथा के इक नाथ सतिनाम करतार ॥

हे मित्र! जितने अवतार नाथ देवी देवता इन के ऊपर जो उस प्रभु

का नाम है वही सभी का नाथ है।

नानक ताकी कीमति ना पवै बेअंत बे शुमार ॥

तब गुरू नानक देव जी कैहते हैं हे मलार! उस कर्तार की कीमत मुझ नानक से नहीं पाई जाती। क्योंकि उस का अंत नहीं है। और शुमार भी कोई नहीं, मलार ने कहा हे गुरू देव जैसे आप की इच्छा वही सत्य हैं। और आप धन्य हैं, फिर वीरां मलार से श्री गुरू नानक देव जी से विदा हुए, तथा संगत को गुरू दर्शण से अपार प्रसन्नता हुई। मलार के सहित सभी का कल्याण करके सतिगुर श्री नानक देव जी आगे को रवाना हो गये, वाहिगुरू जी का खालसा वाहिगुरू जी की फतह।



॥ साखी पीर जलाल दीन ॥

भाई बाला कहने लगा-एक दिन श्री गुरू नानक देव जी समुंद्र के तट पर उस स्थान पर गये। जहां पीर जलाल दीन समुंद्र के जल पर अपना मुसल्ला विछा कर खेला करता था। उस पीर ने गुरू जी को देख कर कहा-असलामो लेकम, गुरू जी ने कहा-हे पीर! उस अलेख को सलाम है। शिष्टाचार के पश्चात पीर और गुरू जी हाथ से हाथ मिला कर प्रेम पूर्वक बैठ गये। पीर ने कहा हे गुरू नानक! आप हमारे साथ समुंद्र-सैर को चलो, तब गुरू जी ने कहा हे जलाल कुरैशी! क्या सैर करते२ समुंद्र में कुछ देखा भी हैं तब पीर ने कहा-हां एक दिन एक मीनार देखा था। गुरू जी ने कहा-अच्छा उस मीनार की खबर लाओ। गुरू जी का कथन मान कर पीर ने अपना मुसल्ला समुंद्र जल पर विछा कर ऊपर बैठ गया, जाते २ वहां पहुँचा जहां एक मीनार था। उस स्थान पर बीस आदमी बैठे देखे, पीर ने उन को सलाम किया। तथा प्रेम पूर्वक बैठ गया। जब रात्री काल हुवा तो आकाश से इक्कीस थाल रसोई के उतरे। फकीरों ने वह भोजन बांट कर खाया, तथा ईश्वर की भक्ति में सारी रात व्यतीत की। प्रातः सभी

फकीर चले गये, वहां केवल पीर ही रह गया।

पीर ने देखा कि समुद्र के अथाह पानी में एक जहाज डूबने लगा है। फकीरों का हृदय नम्र होता है। पीर ने कहा-हे परमात्मा! इस जहाज में जो मुसाफर हैं। उन में से कोई तो अपने पुत्रादिक को छोड़ कर आया है। इस लिये हे मालक दया कर। जिस से जहाज को क्षती न पहुंचे। ईश्वर कृपा से जहाज बच गया। जब रात्री हुई तो वही बीस फकीर फिर वहां आ गये। फिर आकाश से भोजन आया, परंतु अब तो भोजन उनीं बीस फकीरों के लिये था। पीर के लिये नहीं था। उनों ने बांट कर खा लिया। पीर भूखा ही रह गया। तमाम रात उनों ने बंदगी में गुजारी, प्रातः वह वहां से रवाना हुए। दूसरे दिन पीर ने देखा कि मीनार गिरने लगा है। उस समय पीर ने कहा-कि यह मिनार गिरे नहीं। बस फकीर के शब्दों से वह मीनार नहीं गिरा जब फिर रात्री हुई तो वे फकीर फिर आ गये। परंतु अब की बार खाना नहीं उतरा। तब उन फकीरों ने कहा-हे भाई! मालूम होता है कि किसी मंद भाग्या प्राणी ने ईश्वरीय कर्म में कंटक बन दिखाया है। तब पीर ने कहा-भ्राताओ! दो काम मैंनें किये हैं। एक तो डूबते जहाज को बचाया है तथा एक गिरता मीनार गिरने से रोक लिया है, उनों ने कहा-भाई! तुमारा नाम क्या है,और कौन होते हो तुम हमें अपना परिचय दो। पीर ने कहा-मेरा नाम पीर जलाल दीन है। उनों ने कहा-हे भ्राता! यहां पीरों और बादशाहों के लिये कोई स्थान नहीं है। क्यों कि पीर और पातशाह इन के लिये दुनीयां में स्थान है। यहां तो परमात्मा के प्यारे ही समय व्यतीत कर सकते हैं। अब पीर ने अपना मुसल्ला पानी के ऊपर बिछा दिया। और स्वयं उस पर बैठ गया। परंतु वह मुसल्ला चलता नहीं था। तब वहां फकीर आए, उनों ने मुसल्ले पर पीर को बैठे देखा। और कहा-हे भाई! तुम यहां क्यों बैठे हो? पीर ने कहा-हे मित्रो! मेरा मुसल्ला चलता नहीं। मैं सोच रहा हूँ कि अब क्या करूं? उनों ने कहा-हे पीर! तुम श्री गुरू नानक देव जी को स्मर्ण करो,

तब तेरा मुसल्ला पूर्ववत चलने लगेगा। पीर ने कहा आप अपना परिचय दो। उनों ने कहा-हम श्री गुरू नानक देव जी के शिश्य (सेवक) हैं। अब पीर ने गुरू जी को स्मर्ण किया। तब वह मुसल्ला चल पड़ा। तथा गुरू जी के पास आ गया, पीर ने गुरू जी को नमस्कार किया। तथा आज्ञा ले कर बैठ गया। गुरू जी ने कहा-सुनाओ पीर जी सैर में क्या कुछ देखा है? पीर ने कहा-हे महाराज! आप अंतर्यामी हो, सभी कुछ आप जानते हैं। मैं तो आप के शिश्यों की कृपा से वापस आ गया हूं। नहीं तो मेरा वापस आना असंभव था, तब श्री गुरू जी ने एक शब्द फुरमाया-

॥ शब्द ॥ लख उलांभे दिवस के राती मिलन सहंस। सिफ़त सलाहण छड के करंगी लगा हंस॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

गुरू जी ने कहा-हे पीर जी! यहां कर्म कुरंग है, यहां हंसों की मनाही है। यहां न बैठें, यह सुन कर पीर ने गुरू जी के चर्ण चूम लिये, तथा अपना मुसल्ला फैंक दिया, गुरू जी ने कहा-हे जलाल दीन! जाओ पहिले किसी अच्छे गुरू की भाल करो, पीर ने कहा-हे महाराज! मैं कौन सा गुरू देखूं। गुरू जी ने फरमाया सब का गुरू वही सतगुर है फिर गुरू जी से आज्ञा लेकर जलाल दीन एक ओर को चल दिया, और गुरू जी एक ओर रवाना हो गये।



॥ साखी सिद्ध मंडली की ॥

एक वार गुरू जी समुंद्र के भीतर जहां रेतीला सा टापू है वहां जा पौंहचे। गुरू जी ने वहां सिद्ध मंडली को बैठे देखा, गुरू जी ने उन को आदेश किया। उन में से गोरख नाथ नें कहा आदेश है उस अलेख प्रभु को। गोरख नाथ ने गुरू जी का स्वागत करके आसन पर बैठाया। और कुशल मंगल पूछा।

तब तेरा मुसल्ला पूर्ववत चलने लगेगा। पीर ने कहा आप अपना परिचय दो। उनों ने कहा-हम श्री गुरू नानक देव जी के शिश्य (सेवक) हैं। अब पीर ने गुरू जी को स्मर्ण किया। तब वह मुसल्ला चल पड़ा। तथा गुरू जी के पास आ गया, पीर ने गुरू जी को नमस्कार किया। तथा आज्ञा ले कर बैठ गया। गुरू जी ने कहा-सुनाओ पीर जी सैर में क्या कुछ देखा है? पीर ने कहा-हे महाराज! आप अंतर्यामी हो, सभी कुछ आप जानते हैं। मैं तो आप के शिश्यों की कृपा से वापस आ गया हूं। नहीं तो मेरा वापस आना असंभव था, तब श्री गुरू जी ने एक शब्द फुरमाया-

॥ शब्द ॥ लख उलांभे दिवस के राती मिलन सहंस। सिफ़त सलाहण छड के करंगी लगा हंस ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

गुरू जी ने कहा-हे पीर जी! यहां कर्म कुरंग हैं, यहां हंसों की मनाही है। यहां न बैठें, यह सुन कर पीर ने गुरू जी के चर्ण चूम लिये, तथा अपना मुसल्ला फैंक दिया, गुरू जी ने कहा-हे जलाल दीन! जाओ पहिले किसी अच्छे गुरू की भाल करो, पीर ने कहा-हे महाराज! मैं कौन सा गुरू देखूं। गुरू जी ने फरमाया सब का गुरू वही सतगुर है फिर गुरू जी से आज्ञा लेकर जलाल दीन एक ओर को चल दिया, और गुरू जी एक ओर रवाना हो गये।



॥ साखी सिद्ध मंडली की ॥

एक वार गुरू जी समुंद्र के भीतर जहां रेतीला सा टापू है वहां जा पौंहचे। गुरू जी ने वहां सिद्ध मंडली को बैठे देखा, गुरू जी ने उन को आदेश किया। उन में से गोरख नाथ ने कहा आदेश है उस अलेख प्रभु को। गोरख नाथ ने गुरू जी का स्वागत करके आसन पर बैठाया। और कुशल मंगल पूछा।

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा-कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा-हे भरतरी! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े। तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेढ़ प्रहर दिन शेष था! जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे। जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ! हम स्नान करने जाते हैं। और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा-हे गोली! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ। गोली भरतृ को पकड़ कर

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा-कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा-हे भरतरी ! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े । तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेढ़ प्रहर दिन शेष था ! जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे । जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ ! हम स्नान करने जाते हैं । और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा-हे गोली ! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ । गोली भरतृ को पकड़ कर रानी के साहमणे ले आई। रानी ने भरतृ के पैर में पदम देखा। और तभी उठ कर भरतृ का कपड़ा पकड़ कर खड़ी हो गई। तब भरतृ ने कहा-अरी हम तो साधू हैं। बताओ तू हमें क्या कहती है। रानी ने कहा-तुम साधू नहीं हो । तुम तो महाराजा भरतरी हो, हे राजन ! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार हमारा तुमारा संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तो तेरी प्रतीक्षा भी कर रही हूँ। यह बातें सुन कर गोलीयें उस की माता के निकट गईं । और कहा कि बाग में एक जोगी आया है, तथा आप की पुत्री ने उसे पकड़ रखा है । तथा उसी साधू के साथ जाना ही चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने यह खबर सुनी तो उस ने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू के पकड़ने का हुक्म दे दिया । हुकम की पालना वजीर ने की। और साधु को राजा के सन्मुख पेश किया गया,

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा-कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा-हे भरतरी ! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े । तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेड़ प्रहर दिन शेष था ! जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे । जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ ! हम स्नान करने जाते हैं । और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा-हे गोली ! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ । गोली भरतृ को पकड़ कर रानी के साहमणे ले आई। रानी ने भरतृ के पैर में पदम देखा। और तभी उठ कर भरतृ का कपड़ा पकड़ कर खड़ी हो गई। तब भरतृ ने कहा-अरी हम तो साधू हैं। बताओ तू हमें क्या कहती है। रानी ने कहा-तुम साधू नहीं हो । तुम तो महाराजा भरतरी हो, हे राजन ! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार हमारा तुमारा संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तो तेरी प्रतीक्षा भी कर रही हूँ। यह बातें सुन कर गोलीयें उस की माता के निकट गईं । और कहा कि बाग में एक जोगी आया है, तथा आप की पुत्री ने उसे पकड़ रखा है । तथा उसी साधू के साथ जाना ही चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने यह खबर सुनी तो उस ने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू के पकड़ने का हुकम दे दिया । हुकम की पालना वजीर ने की। और साधु को राजा के सन्मुख पेश किया गया,

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा-कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा-हे भरतरी! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े। तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेढ़ प्रहर दिन शेष था। जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे। जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ! हम स्नान करने जाते हैं। और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा-हे गोली! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ। गोली भरतृ को पकड़ कर रानी के साहमणे ले आई। रानी ने भरतृ के पैर में पदम देखा। और तभी उठ कर भरतृ का कपड़ा पकड़ कर खड़ी हो गई। तब भरतृ ने कहा-अरी हम तो साधू हैं। बताओ तू हमें क्या कहती है। रानी ने कहा-तुम साधू नहीं हो। तुम तो महाराजा भरतरी हो, हे राजन! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार हमारा तुमारा संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तो तेरी प्रतीक्षा भी कर रही हूँ। यह बातें सुन कर गोलीयें उस की माता के निकट गईं। और कहा कि बाग में एक जोगी आया है, तथा आप की पुत्री ने उसे पकड़ रखा है। तथा उसी साधू के साथ जाना ही चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने यह खबर सुनी तो उस ने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू के पकड़ने का हुक्म दे दिया। हुक्म की पालना वजीर ने की। और साधु को राजा के सन्मुख पेश किया गया,

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा—कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा—हे भरतरी! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े। तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेढ़ प्रहर दिन शेष था! जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे। जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ! हम स्नान करने जाते हैं। और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा—हे गोली! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ। गोली भरतृ को पकड़ कर रानी के साहमणे ले आई। रानी ने भरतृ के पैर में पदम देखा। और तभी उठ कर भरतृ का कपड़ा पकड़ कर खड़ी हो गई। तब भरतृ ने कहा—अरी हम तो साधू हैं। बताओ तू हमें क्या कहती है। रानी ने कहा—तुम साधू नहीं हो। तुम तो महाराजा भरतरी हो, हे राजन! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार हमारा तुमारा संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तो तेरी प्रतीक्षा भी कर रही हूँ। यह बातें सुन कर गोलीयें उस की माता के निकट गईं। और कहा कि बाग में एक जोगी आया है, तथा आप की पुत्री ने उसे पकड़ रखा है। तथा उसी साधू के साथ जाना ही चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने यह खबर सुनी तो उस ने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू के पकड़ने का हुकम दे दिया। हुकम की पालना वजीर ने की। और साधु को राजा के सन्मुख पेश किया गया,

राजा ने आग्या दी कि इस को टुकड़े २ करके नदी में बहा दो। बस फिर क्या था भरतृ के टुकड़े २ करके नदी में फैंक दिया गया।

मर्दाने ने गुरू जी को कहा हे महाराज ! भरतृ को टुकड़े २ करके नदी में बहा दिया गया हैं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! भरतृ मरने का नहीं। उधर भरतृ फिर से सावधान होकर उसी धौलर पर जा बैठा। राजा को फिर सूचना मिली कि वही साधू फिर राज कुमारी के मैहलों में देखा गया है। राजा ने फिर उसे पकड़ कर मंगवा लिया। तथा एक चिता में बैठा कर उसे आग लगा दी गई। गुरू जी को मर्दाने ने कहा–हे गुरु देव ! भरतृ को चिता में जला दिया गया है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! भरतृ जलेगा नहीं। इधर भरतृ फिर चिता से उड़ कर राज कुमारी के मैहलों में जा बैठा।

राजा ने फिर हुक्म दिया कि उस साधू को एक गढ़े में डाल दो और ऊपर एक दीवार खड़ी कर दो। राजा के हुक्म की पालना की गई, मर्दाने ने कहा हे गुरू जी ! भरतृ को गढ़े में डाल कर ऊपर दीवार चिना दी गई हैं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! भरतृ मरणे का नहीं है उधर भरतृ फिर राज कुमारी के मैहलों में चला गया। राजा को फिर सूचना मिली। तब राजा ने वजीर से पूछा कि यह क्या बात है। वजीर ने कहा हे राजन ! यह फकीर कोई जादूगर नजर आता है। अब तो उसे रस्सी से बांध कर सूली पर लटकाया जाय तो अच्छा है। साधू को रस्सी से बांध कर ढोल बजते में सूली चढ़ाने चले। मर्दाने ने सब समाचार गुरू जी को सुना दिया, तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! अब भरतृ की रक्षा हमें करनी होगी, अब गुरू जी सूली के निकट जा कर खड़े हो गये। जब गुरू जी ने सूली की ओर देखा तो वह सूली सर सबज हो गई। राजा ने हैरान होकर पूछा कि यह जो नया साधू आया है जिस के आने से सूली सबज हो गई है। यह कौन है। उस राजा ने मर्दाने से गुरू जी का परिचय पूछा। मर्दाने ने कहा–हे राजन ! यह सीख कलंदर रूपी गुरू नानक देव हैं। और

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा—कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा—हे भरतरी! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े। तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेड़ प्रहर दिन शेष था! जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे। जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ! हम स्नान करने जाते हैं। और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा—हे गोली! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ। गोली भरतृ को पकड़ कर रानी के साहमणे ले आई। रानी ने भरतृ के पैर में पदम देखा। और तभी उठ कर भरतृ का कपड़ा पकड़ कर खड़ी हो गई। तब भरतृ ने कहा—अरी हम तो साधू हैं। बताओ तू हमें क्या कहती है। रानी ने कहा—तुम साधू नहीं हो। तुम तो महाराजा भरतरी हो, हे राजन! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार हमारा तुमारा संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तो तेरी प्रतीक्षा भी कर रही हूँ। यह बातें सुन कर गोलीयें उस की माता के निकट गईं। और कहा कि बाग में एक जोगी आया है, तथा आप की पुत्री ने उसे पकड़ रखा है। तथा उसी साधू के साथ जाना ही चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने यह खबर सुनी तो उस ने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू के पकड़ने का हुकम दे दिया। हुकम की पालना वजीर ने की। और साधु को राजा के सन्मुख पेश किया गया,

क्रोड़ कोस का अंतर है। यह सुन कर सभी ने कहा—कि यह तो अत्यंत कठिन है। तब भरतरी रोने लग गया, उस समय गुरू नानक देव जी ने भरतरी को कहा—हे भरतरी ! तुम रोवो नहीं, चलो हम तेरे साथ चलते हैं, हम तुम को नर्क में नहीं जाने देंगे।

फिर गुरू जी सीख कलंदरी रूप खड़े हो गये। गुरू जी ने मृग चर्म की सवारी की। मर्दाने ने रबाब की सुवारी की और भरतृ ने डंडे की सुवारी की। गोरख आदिक को आदेश करके सभी आकाश मार्ग में उड़े। तथा सूरज से चार जोजन इधर गये। तो धरती पर जा उतरे। उस समय डेड़ प्रहर दिन शेष था। जब जूना पति राजा के नगर जा पहुँचे। जब बाग में गये। तब गुरू जी ने कहा हे भरतृ ! हम स्नान करने जाते हैं। और तू इस बाग में चला जा तब भरतृ उस बाग में चला गया। आगे कवल-पति राणी का महल था। और वह राणी बारी में बैठी हुई देखी रानी ने भरतृ को देख दर गोली को कहा—हे गोली ! वह जो साधू बाग में टहल रहा है। इसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ। गोली भरतृ को पकड़ कर रानी के साहमणे ले आई। रानी ने भरतृ के पैर में पदम देखा। और तभी उठ कर भरतृ का कपड़ा पकड़ कर खड़ी हो गई। तब भरतृ ने कहा—अरी हम तो साधू हैं। बताओ तू हमें क्या कहती है। रानी ने कहा—तुम साधू नहीं हो। तुम तो महाराजा भरतरी हो, हे राजन ! दो बार आगे मैं तेरी रानी रह चुकी हूं। अब तीसरी बार हमारा तुमारा संयोग है। अब तुम जा नहीं सकते। मैं तो तेरी प्रतीक्षा भी कर रही हूँ। यह बातें सुन कर गोलीयें उस की माता के निकट गईं। और कहा कि बाग में एक जोगी आया है, तथा आप की पुत्री ने उसे पकड़ रखा है। तथा उसी साधू के साथ जाना ही चाहती है। हम ने यह सूचना तुम को दे दी है। जब रानी ने यह खबर सुनी तो उस ने अपने पति को तमाम बात बता दी। राजा ने उस साधू के पकड़ने का हुक्म दे दिया। हुक्म की पालना वजीर ने की। और साधु को राजा के सन्मुख पेश किया गया,

राजा ने आग्या दी कि इस को टुकड़े २ करके नदी में बहा दो। बस फिर क्या था भरतृ के टुकड़े २ करके नदी में फैंक दिया गया।

मर्दाने ने गुरू जी को कहा हे महाराज ! भरतृ को टुकड़े २ करके नदी में बहा दिया गया हैं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! भरतृ मरने का नहीं। उधर भरतृ फिर से सावधान होकर उसी धौलर पर जा बैठा। राजा को फिर सूचना मिली कि वही साधू फिर राज कुमारी के मैहलों में देखा गया है। राजा ने फिर उसे पकड़ कर मंगवा लिया। तथा एक चिता में बैठा कर उसे आग लगा दी गई। गुरू जी को मर्दाने ने कहा–हे गुरु देव ! भरतृ को चिता में जला दिया गया है। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! भरतृ जलेगा नहीं। इधर भरतृ फिर चिता से उड़ कर राज कुमारी के मैहलों में जा बैठा।

राजा ने फिर हुकम दिया कि उस साधू को एक गढ़े में डाल दो और ऊपर एक दीवार खड़ी कर दो। राजा के हुकम की पालना की गई, मर्दाने ने कहा हे गुरू जी ! भरतृ को गढ़े में डाल कर ऊपर दीवार चिना दी गई हैं। गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! भरतृ मरणे का नहीं है उधर भरतृ फिर राज कुमारी के मैहलों में चला गया। राजा को फिर सूचना मिली। तब राजा ने वजीर से पूछा कि यह क्या बात हैं। वजीर ने कहा हे राजन ! यह फकीर कोई जादूगर नजर आता है। अब तो उसे रस्सी से बांध कर सूली पर लटकाया जाय तो अच्छा है। साधू को रस्सी से बांध कर ढोल बजते में सूली चढ़ाने चले। मर्दाने ने सब समाचार गुरू जी को सुना दिया, तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! अब भरतृ की रक्षा हमें करनी होगी, अब गुरू जी सूली के निकट जा कर खड़े हो गये। जब गुरू जी ने सूली की ओर देखा तो वह सूली सर सबज हो गई। राजा ने हैरान होकर पूछा कि यह जो नया साधू आया है जिस के आने से सूली सबज हो गई है। यह कौन है। उस राजा ने मर्दाने से गुरू जी का परिचय पूछा। मर्दाने ने कहा–हे राजन ! यह सीख कलंदर रूपी गुरू नानक देव हैं। और जिस

ो सूली दी जा रही है। यह राजा गंधर्व सेन का पुत्र महाराजा भरतृ है, ाजा ने कहा—यह लोग हम से क्या चाहते हैं मर्दाने ने कहा हे राजन ! ो तुमारी कन्या है। यह भरतृ के साथ इस से पूर्व दो बार विवाही गई ;, अब यह तीसरी बेर तेरी कन्या को लेने के किये आये हैं। बस उसी मय जूना राजा श्री गुरू जी के चर्णों पर गिर गया। और हाथ जोड़ र कहने लगा हे प्यारे गुरू देव ! आप मेरे योग्य जो भी सेवा हो वह कहो ं तो आप के चर्णों का दास हूँ। गुरू जी ने कहा—हे राजन ! आप प्रपनी कन्या भरतृ को दे दो। आज की रात्री में तेरी कन्या तथा भरतृ का संयोग है। तव राजा ने कहा हे महाराज ! लोक लज्जा को सन्मुख ख कर प्रार्थना है कि कुछ बरात आदिक का प्रबंध हो जाय तो हमें कुछ ासन्नता हो जायगी। क्यों कि मैं आखिर राजा हूँ। गुरू जी ने कहा—हे ाजन ! तू बरात के स्वागत का सामान कर बरात आयगी। यह सुन कर ाजा अपने घर की ओर चला गया।

इधर गुरू जी ने परमेश्वर से प्रार्थना की हे महाराज ! आप के पास जो छिन्नवें क्रोड़ मेघमाला है उन के जो अधिष्ठाता देवता हैं उन को कृपया हमारे पास भेज दो। बस फिर क्या था देवताओं की बरात सज गई। वाजे वजाने वाले नृत्य मंगल करने वाले सभी देवता आ गये।

उधर राजा को सूचना मिली, हे राजन ! बरात इतनी है कि तुमारे राज्य में उन के वैठने को भी स्थान नहीं है। राजा ने सोचा कि मैं यदि अपने सारे राज्य की सामग्री भी जुटा लूं तव भी एक समय का भोजन एकत्र नहीं हो सकता। तव राजा ने अपने कंठ में कपड़ा डाला और श्री गुरू नानक देव जी महाराज के चर्णों में आ गिरा। और कहने लगा, हे गुरू देव यह आप की अपार माया तो मेरी वे इज़ती करने पर तुल गई है, गुरू जी ने कहा—हे राजन ! वरात की मांग तुम ने ही की थी। सो हम ने वरात एकत्र कर ली है, परंतु हे राजन ! तुम चिंता क्यों करते हो जहां से वरात आई है, वहां से ही इन की खुराक आ जायेगी। फिर गुरू जी ने

को सूली दी जा रही है। यह राजा गंधर्व सेन का पुत्र महाराजा भरतृ है, राजा ने कहा-यह लोग हम से क्या चाहते हैं मर्दाने ने कहा हे राजन! जो तुमारी कन्या है। यह भरतृ के साथ इस से पूर्व दो बार विवाही गई है, अब यह तीसरी बेर तेरी कन्या को लेने के किये आये हैं। बस उसी समय जूना राजा श्री गुरू जी के चर्णों पर गिर गया। और हाथ जोड़ कर कहने लगा हे प्यारे गुरू देव! आप मेरे योग्य जो भी सेवा हो वह कहो मैं तो आप के चर्णों का दास हूँ। गुरू जी ने कहा-हे राजन! आप अपनी कन्या भरतृ को दे दो। आज की रात्री में तेरी कन्या तथा भरतृ का संयोग हैं। तब राजा ने कहा हे महाराज! लोक लल्जा को सन्मुख रख कर प्रार्थना है कि कुछ बरात आदिक का प्रबंध हो जाय तो हमें कुछ प्रसन्नता हो जायगी। क्यों कि मैं आखिर राजा हूँ। गुरू जी ने कहा-हे राजन! तू बरात के स्वागत का सामान कर बरात आयगी। यह सुन कर राजा अपने घर की ओर चला गया।

इधर गुरू जी ने परमेश्वर से प्रार्थना की हे महाराज! आप के पास जो छिन्नवें क्रोड़ मेघमाला है उन के जो अधिष्ठाता देवता हैं उन को कृपया हमारे पास भेज दो। बस फिर क्या था देवताओं की बरात सज गई। वाजें वजाने वाले नृत्य मंगल करने वाले सभी देवता आ गये।

उधर राजा को सूचना मिली, हे राजन! बरात इतनी हैं कि तुमारे राज्य में उन के बैठने को भी स्थान नहीं है। राजा ने सोचा कि मैं यदि अपने सारे राज्य की सामग्री भी जुटा लूं तब भी एक समय का भोजन एकत्र नहीं हो सकता। तव राजा ने अपने कंठ में कपड़ा डाला और श्री गुरू नानक देव जी महाराज के चर्णों में आ गिरा। और कहने लगा, हे गुरू देव यह आप की अपार माया तो मेरी बे इज़ती करने पर तुल गई है, गुरू जी ने कहा-हे राजन! वरात की मांग तुम ने ही की थी। सो हम ने वरात एकत्र कर ली हैं, परंतु हे राजन! तुम चिंता क्यों करते हो जहां से वरात आई है, वहां से ही इन की खुराक आ जायेगी। फिर गुरू जी ने

निरंकार के प्रति प्रार्थना की हे कृपालो ! आप इस बरात के जीमने के लिये सामान भी भेजो। बस छतीस प्रकार के भोजन जो परम पवित्र तथा स्वादु थे, अपने आप ही एकत्र हो गये। खूब स्वागत किया गया, आधी रात्री के समय भरतरी का विवाह हो गया। राजा ने कहा हे महाराज यह तिल पुष्प सहित आप मेरी कन्या को स्वीकार करके ले जाओ। गुरू जी ने कहा–हे राजा यह दहेज की वस्तु नहीं चाहिये। राजा यह सुन कर मौन ही हो गया, फिर कवला वती गुरू जी के चर्णों में पड़ गई। और कहने लगी हे गुरू देव ! मैं तो आप की दासी हूँ। मैं तो आप के चर्णों की सेवा करूंगी, गुरू जी ने कहा हे कवला वती ! यदि तू दश हज़ार वर्ष तपस्या करे तो फिर तू हमारे साथ समायगी। यह सुन कर कवला वती चुप हो गई, और एक दोपट्टा मर्दाने को देकर कहा–हे मर्दाना। यह मेरी सहदानी है इसे तू अपने साथ ले जा।

अब वहां से विदा हुए तो मर्दाने का रबाब चलता नहीं था, उस समय गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यदि कोई वस्तु किसी गृहस्थी की तुमारे पास हो तो वह लौटा दो, मर्दाने ने कहा हे महाराज ! मेरे पास रानी का दिया हुआ एक दोपटा है गुरू जी ने कहा–दिखाओ तो, जब देखा गया तो वह दोपटा दश हज़ार रुपये कीमत का पाया गया। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! मैं किस मुंह से ले आया हूँ। और अब किस मुंह से वापस करूं, गुरू जी ने मर्दाने के मुख़ पर हाथ फेरा तो मर्दाने का दाहड़ा सफैद हो गया। तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! जाओ उस मुंह से लाये थे, और इस मुंह से वापस कर आओ। जब मर्दाना दोपटा दे आया, तब गुरू जी ने कहा कहो मर्दाना वह वस्त्र लौटा दिया क्या। मर्दाने ने कहा हे गुरू देव ! आप की आज्ञा का पालन किया गया है, इस के पश्चात सभी वहां से उड़ कर सिद्ध मंडली में आ गये।

सभी को आदेश किया कुशल मंगल पूछा, गोरख नाथ ने कहा–हे भाई ! सभी काम आप की कृपा से हो गया है, फिर गुरू जी ने

गोरख नाथ से विदा मांगी। तब गोरख नाथ ने कहा–आप कुछ समय और ठहरने की कृपा करो। गुरू जी ने कहा–हे गोरख जी ! हम रमते हैं, इस लिये आप हमें जाने की आज्ञा दो। बस फिर गुरू जी सभी सिद्धों से प्रेम पूर्वक मिल कर वहां से रवाना हुए।

॥ साखी कलकत्ता की ॥

भ्रमण करते २ श्री गुरू नानक देव जी कलकत्ता नगर में चले आये, आगे देखा कि नगर में बीमारी फैली हुई है राजा भी बीमार है तब लोगों ने कहा हे महाराज ! आप हमारी इस बुरी हालत को देखो, हम सभी दुखी हो रहे हैं। गुरू जी के आने की खबर तमाम नगर में हो गई, तब अनेक नर नारी गुरू जी के पास आने लगे। अनेकों को सुख शांति प्राप्त होने लगी। यह खबर राजा को भी हुई, तब राजा भी पालकी में बैठ कर दर्शणों को आया। तथा हाथ जोड़ कर कहने लगा हे महाराज ! मेरे पेट में दर्द रहता है। आप कृपा करके मेरा रोग दूर करो, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना तू रबाब बजा। मर्दाना रबाब बजाने लगा, तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया–

राग भैरो अष्टपदी महला १ घर २ ॥

आतम महि राम राम महि आतम चीनस गुरू बीचारा अमृत बाणी सबद पछाणी दुख काटे हौ मारा ॥ १ ॥ नानक हौमे रोग बुरे। जह देखा तह एका बेदन आपे बखसे सबद धुरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे परखै परखन हारा बहुर सूलाक न होई। जिन कउ नदर भई गुर मेले प्रभ भाणा साचा सोई। पौण पौणी बैसंतर रोगी रोगी धरत सभोगी॥मात पिता माया देह सी रोगी रोगी कुटंब संजोगी॥३॥रोगी ब्रहमा बिसन सरुद्रा रोगी सगल संसारा। हरि पद चीन भए से मुकता गुरु का सबद वीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुंदरि नदियां खंड पताल से रोग भरे। हरि के लोक से साच सुहेले थांई नदर करे ॥ ५ ॥ रोगी खट दरसन भेख धारी नाना हठी अनेकां।

गोरख नाथ से विदा मांगी। तब गोरख नाथ ने कहा-आप कुछ समय और ठहरने की कृपा करो। गुरू जी ने कहा-हे गोरख जी! हम रमते हैं, इस लिये आप हमें जाने की आज्ञा दो। बस फिर गुरू जी सभी सिद्धों से प्रेम पूर्वक मिल कर वहां से रवाना हुए।

॥ साखी कलकत्ता की ॥

भ्रमण करते २ श्री गुरू नानक देव जी कलकत्ता नगर में चले आये, आगे देखा कि नगर में बीमारी फैली हुई है राजा भी बीमार हैं तब लोगों ने कहा हे महाराज! आप हमारी इस बुरी हालत को देखो, हम सभी दुखी हो रहे हैं। गुरू जी के आने की खबर तमाम नगर में हो गई, तब अनेक नर नारी गुरू जी के पास आने लगे। अनेकों को सुख शांति प्राप्त होने लगी। यह खबर राजा को भी हुई, तब राजा भी पालकी में बैठ कर दर्शणों को आया। तथा हाथ जोड़ कर कहने लगा हे महाराज! मेरे पेट में दर्द रहता है। आप कृपा करके मेरा रोग दूर करो, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना तू रबाब बजा। मर्दाना रबाब बजाने लगा, तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

राग भैरो अष्टपदी महला १ घर २ ॥

आतम महि राम राम महि आतम चीनस गुरू वीचारा अमृत बाणी सबद पछाणी दुख काटे हो मारा ॥ १ ॥ नानक हौमे रोग बुरे। जह देखा तह एका वेदन आपे बखसे सबद धुरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे परखै परखन हारा बहुर सुलाक न होई। जिन कउ नदर भई गुर मेले प्रभ भाणा साचा सोई। पौण पौणी बैसंतर रोगी रोगी धरत सभोगी।मात पिता माया देह सी रोगी रोगी कुटंब संजोगी॥३॥रोगी ब्रहमा बिसन सरुद्रा रोगी सगल संसारा। हरि पद चीन भए से मुकता गुरु का सबद वीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुंदरि नदियां खंड पताल से रोग भरे। हरि के लोक से साच सुहेले थांई नदर करे ॥ ५ ॥ रोगी खट दरसन भेख धारी नाना हठी अनेकां।

गोरख नाथ से विदा मांगी। तब गोरख नाथ ने कहा-आप कुछ समय और ठहरने की कृपा करो। गुरू जी ने कहा-हे गोरख जी ! हम रमते हैं, इस लिये आप हमें जाने की आज्ञा दो। बस फिर गुरू जी सभी सिद्धों से प्रेम पूर्वक मिल कर वहां से रवाना हुए।

॥ साखी कलकत्ता की ॥

भ्रमण करते २ श्री गुरू नानक देव जी कलकत्ता नगर में चले आये, आगे देखा कि नगर में बीमारी फैली हुई है राजा भी बीमार हैं तब लोगों ने कहा हे महाराज ! आप हमारी इस बुरी हालत को देखो, हम सभी दुखी हो रहे हैं। गुरू जी के आने की खबर तमाम नगर में हो गई, तब अनेक नर नारी गुरू जी के पास आने लगे। अनेकों को सुख शांति प्राप्त होने लगी। यह खबर राजा को भी हुई, तब राजा भी पालकी में बैठ कर दर्शणों को आया। तथा हाथ जोड़ कर कहने लगा हे महाराज ! मेरे पेट में दर्द रहता है। आप कृपा करके मेरा रोग दूर करो, तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना तू रबाब बजा। मर्दाना रबाब बजाने लगा, तब गुरू जी ने एक शब्द उचारण किया-

राग भैरो अष्टपदी महला १ घर २ ॥

आतम महि राम राम महि आतम चीनस गुरू बीचारा अमृत बाणी सबद पछाणी दुख काटे हौ मारा ॥ १ ॥ नानक हौमे रोग बुरे। जह देखा तह एका बेदन आपे बखसे सबद धुरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे परखै परखन हारा बहुर सूलाक न होई। जिन कउ नदर भई गुर मेले प्रभ भाणा साचा सोई। पौण पौणी बैसंतर रोगी रोगी धरत सभोगी॥मात पिता माया देह सी रोगी रोगी कुटंब संजोगी॥३॥रोगी ब्रहमा बिसन सरुद्रा रोगी सगल संसारा। हरि पद चीन भए से मुकता गुरु का सबद बीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुंदरि नदियां खंड पताल से रोग भरे। हरि के लोक से साच सुहेले थांई नदर करे ॥ ५ ॥ रोगी खट दरसन भेख धारी नाना हठी अनेकां।

बेद कतेव कहहि कहि बपुरे नह बूझसि इक एका ॥ ६ ॥ मिठरस खाय सु रोग भीरीजै कंद मूल सुख नाही । नाम बिसार चले अन मारग अंत काल पछताही ॥ ७ ॥ तीरथ भरमे रोग न छूटसि पड़िया बाद बिबाद भया । दुबिधा रोग सु अधिक वडेरा माया का मुहिताज भया ॥ ८ ॥ गुरुमुख साचा सबद सलाहहि मन साचा तिस रोग गया । नानक हरिजन अन दिन निर्मल जिन कौ करमु नीसाणु पया ।६।

॥ वारतक ॥

श्री गुरू जी ने कहा–हे राजन ! आत्मा में ही राम का निवास है । उसे पहिचानो और हे राजन पूरण गुरू धारण करो जिस से तुमारे सभी रोग दूर हों । गुरुबाणी का जप करो । मन में सत्य को स्थान दो । सदैव अपने मन को निर्मल रखो । तब तुमारा सभी रोग दूर हो जायगा । यह सुन कर राजा गुरु जी के चर्णों पर गिर कर प्रार्थना करने लगा । हे महाराज ! आप अंतर्यामी हो, आप मुझ पर भी कृपा करके अपना सेवक बनाओ । यह कह कर राजा गुरू जी का सेवक बन गया । उस के तमाम रोग जाते रहे नगर निवासी भी गुरू के सेवक बने, नगर से बीमारी सभी दूर हो गई । सभी लोग प्रभु कीरतन आदि शुभ गुणों को धारण करने लगे । राजा ने एक अति सुंदर धर्मशाला बनवाई । तथा गुरू जी की अपार कृपा से गुरुबाणी का प्रवाह चलने लगा । फिर गुरू जी ने राजा को परम पवित्र उपदेश दिया ।

एक दिन वहां एक सन्यासी आ गया । जिस के शिर लंबी २ जटायें थीं । हाथ में डंडा और कमंडल था । धोती गमछा और शरीर पर भस्म रमाई हुई थी । वह साधु गुरू जी के पास आकर कहने लगा। आप कौन हैं, आप ने तो बिश्नु महेश आदि की पूजन हटा कर वाहिगुरु २ का स्मर्ण सिखाना अपना ध्येय बना रखा है । गुरु जी ने सन्यासी की बात सुन कर मर्दाने को कहा–हे मर्दाना ! ज़रा रबाब तो बजाओ। मर्दाना रबाब बजाने लगा, गुरु जी ने शब्द कहा–

राग भैरव महला १ ॥

जग न होम पुन्न तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै। राम नाम बिन मुकत न पावसि मुकत नाम गुरु मुख लहै। राम नाम बिन बिरथे सभ जनमा। विष खावै बिस बोली बोलै बिन नावै निहफल मरि भ्रमना ॥१॥ रहाउ ॥ पुस्तक पाठ व्याकरण बखानै संध्या करम त्रिकाल करै। बिन गुर शब्द मुक्ति कहां प्रानी राम नाम विन उरझ मरै ॥२॥ डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवन अत भ्रमन करै। राम नाम बिन सांति न आवै जप हरि हरि नाम सु पार परै ॥३॥ जटा मुकत तन भसम लगाय बसत्र छोड़ तन नगन भया। राम नाम बिन त्रिप्त न आवै किरत के बाधे मेख भया ॥४॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र तत्र तू सरब जीआ। गुरु प्रसादि राख लेहु जन को हरि रसि नानक झोल पीआ ॥५॥

॥ वारतक ॥

जब यह शब्द गुरू जी के पवित्र मुख द्वारा सुना तब वह सन्यासी गुरू जी के चर्णों में गिर पड़ा। और कहने लगा, मैं आप का दास हूँ। जैसे आप मुझे रखो वैसे ही रहूँगा। तब गुरू जी ने उस सन्यासी को उपदेश दिया, हे संत जी ! बगैर प्रभु नाम के कभी मुक्ति नहीं होती। उस सन्यासी ने कहा आप मेरे गुरू हो, गुरू जी ने कहा हे मित्र! तुम पर परमात्मा प्रसन्न है, जाओ तुमारा कल्याण होगा। राजा को फिर उपदेश करके गुरू जी वहां से चलते बने, वहां के निवासी गुरू जी के वियोग में दुःखी होने लगे। परंतु संसार को एक दृष्टी देखने वाले पूर्ण गुरू एक ही स्थान पर न रह कर वहां से विदा हुए। क्योंकि आप ने तो सारे संसार का कल्याण करना था।

॥ सय्यद जलाल की साखी ॥

बाले ने फिर कहना आरंभ किया, हे गुरू अंगद देव जी महाराज! एक दिन श्री गुरू नानक देव जी महाराज सय्यद जलाल दीन उच्च के पास

राग भैरव महला १ ॥

जग न होम पुन्न तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै। राम नाम बिन मुकत न पावसि मुकत नाम गुरु मुख लहै । राम नाम बिन बिरथे सभ जनमा। विष खावै विस बोली बोलै बिन नावै निहफल मरि भ्रमना ॥१॥ रहाउ ॥ पुस्तक पाठ व्याकरण बखानै संध्या करम त्रिकाल करै। बिन गुर शब्द मुक्ति कहां प्रानी राम नाम बिन उरझ मरै ॥२॥ डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवन अत भ्रमन करै। राम नाम बिन सांति न आवै जप हरि हरि नाम सु पार परै ॥३॥ जटा मुकत तन भसम लगाय बसत्र छोड़ तन नगन भया। राम नाम बिन त्रिप्त न आवै किरत के बाधे भेख भया ॥४॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र तत्र तू सरब जीआ। गुरु प्रसादि राख लेहु जन को हरि रसि नानक झोल पीआ ॥५॥

॥ वारतक ॥

जब यह शब्द गुरू जी के पवित्र मुख द्वारा सुना तब वह सन्यासी गुरू जी के चर्णों में गिर पड़ा। और कहने लगा, मैं आप का दास हूँ। जैसे आप मुझे रखो वैसे हीं रहूँगा। तब गुरू जी ने उस सन्यासी को उपदेश दिया, हे संत जी ! बगैर प्रभु नाम के कभी मुक्ति नहीं होती। उस सन्यासी ने कहा आप मेरे गुरू हो, गुरू जी ने कहा हे मित्र ! तुम पर परमात्मा प्रसन्न है, जाओ तुमारा कल्याण होगा। राजा को फिर उपदेश करके गुरू जी वहां से चलते बने, वहां के निवासी गुरू जी के वियोग में दुःखी होने लगे। परंतु संसार को एक दृष्टी देखने वाले पूर्ण गुरू एक ही स्थान पर न रह कर वहां से विदा हुए। क्योंकि आप ने तो सारे संसार का कल्याण करना था।

॥ सय्यद जलाल की साखी ॥

बाले ने फिर कहना आरंभ किया, हे गुरू अंगद देव जी महाराज ! एक दिन श्री गुरू नानक देव जी महाराज सय्यद जलाल दीन उच्च के पास

॥ शब्द ॥

देस हमारा बेगम पुर कहाइ। तिस वतन सो आए। राजा तिस का एकंकार है तिस ने ईहां पठाए। माण चंद को राह बताया निरमल मारग पाया। नानक कहे सुण माण चंद जी हम तुम कउ तभी बुलाया।

तब माण चंद ने कहा–तुम तो और ही बातें करते हो, यह बातें व्यवहारिक नहीं हैं। गुरू जी ने कहा हे माण चंद! यह बातें सत्य हैं बाकी की बातें असत्य हैं फिर गुरू जी ने शब्द कहा–

॥ राग तिलंग महला १ ॥

जिन कीया तिन देखिआ क्या कहीऐ भाई। आपे जाणै करे आप जिन वाड़ी है लाई। राइसा पिआरे कराइसा सदा सुख होई। हो प्यारे राइसा जित दूख रहे ना काई ॥१॥ रहाउ ॥ जिह रंग कंत न राविआ सा पछोताणी। हथ पिछोड़ै सिर धुणै जब रैण विहाणी। पछो तावा ना मिले जब चूकेगी सारी। तद फिर पिआरा रावीऐ आवेगी वारी ॥ ५ ॥ कंतलीआ सोहागणी मैथों वधवी एह। से गुन मंझ न आवनी कैजी दोस धरेह। जिनी सखिये सहु राविआ तिन पूछोगी जाय। पाइ लगहुं बिनती करउ लेउगी पंथ बताय। आप पछाणे नानका भय चंदन लावै। गुन कामन कामन करै तउ प्यारे कउ पावै ॥ ६ ॥ पाना वाड़ी होइ घर खर सार न जाणै। रसीया होवे मुसक का तब फूल पछाणै ॥७॥ धात मिलै फुनि धात कउ लिव लिवै को धावै ॥ सहिजे सहिजे मिलि रहै अन भौ कउ पावै ॥८॥ जो दिल मिलया सो मिल रहिआ मिलिआ कहीऐ रे होई जे बहु तेरा लोचीऐ वाती मेल न होई ॥ ९ ॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रम भ्रमहि समावै। गुर परसादी जाणीऐ अमरा पद पावै ॥१०॥

॥ वारतक ॥

फिर माण चंद ने कहा–हे गुरू जी! इस जीव का भला कैसे हो? गुरू जी ने कहा–हे भाई! इस जीव का भला तभी होता है जब इस की परमेश्वर में अनन्य भक्ति होती है, तब माण चंद ने कहा–आप कोई विधि

बताओ। जैसे अनन्य भक्ति उत्पन्न हो जाय। गुरू जी ने कहा-सुनो ! भूख और नगेपन की परवाह न करे। एक करतार का ही ध्यान करे। अगर ईश्वर दिल से निकले तो महान दुखी हो जाय। तब माण चंद कहने लगा आप धन्य हैं यह कह कर चर्णों पर गिर गया। तब गुरू जी ने अपने हाथ का डंडा दिया। और कहा कि इस डंडे को होश्यार होकर रखें। माण सिंघ ने वह डंडा सिर आंखों से लगाया। उस के प्रताप से माण सिंघ के ग्यान चक्षु खुल गये। श्री गुरू नानक देव जी की कृपा से उस का उद्धार हो गया, फिर गुरू जी ने उसे उतम उपदेश दिया। फिर गुरु जी वहां से चल कर कावल धरती पर गये। और वहां अनेकों जीवों का कल्याण किया, फिर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना ! चलो अब तुम को सिंघ प्रदेश की सैर करावें। फिर मुझे (बाले) और मर्दाने को साथ लेकर गुरु जी वहां से रवाना हुये।

॥ साखी बाल गुंदाई के टिल्ले की ॥

वहां से श्रीगुरु नानक देव बाल गुंदाई के टिल्ले पर आ विराजे बाल गुंदाई के टिल्ले से आधा कोस की दूरी पर आप ने आसन जमाया। बाल गुंदाई पर एक संत रहा करता था। वस्त्र और भोजन तैयार करवा कर रख छोड़ता था। प्रत्येक अतिथी की सेवा किया करता था। यदि कोई साधू अतिथी आता सुने तो उस के सतकार को पालकी घोड़ा आदि भेज कर उसे भोजन खिलाने को बुला भेजता था, उस ने गुरू जी का आना सुना। तो अपने साथी तपस्यिों को कहा कि तुम जा कर उन को आदर सहित ले आओ। तपास्वीयों ने गुरू जी को आ कर कहा-हे महाराज ! आप आश्रम में चलो। क्यों कि बादल बरसने वाला है। गुरू जी ने उत्तर दिया, भाई ! हम तो अतीत साधु हैं जहां गुजरती हैं वहां ही गुजार लेते हैं। तुम को मंदिर में आराम है। और हम यहां ही प्रसन्न हैं। उनों ने बाल गुंदाई को जा कर कहा-कि बाहर तीन साधू आये हैं। हम ने बतहु

कहा है। परंतु वे आते नहीं हैं। तब वह नाथ स्वयं गुरू जी के पास आया, उस ने गुरू जी को आदेश कहा-तब गुरू जी ने कहा-आदेश उस अकाल पुरुष को है। आओ बाल गुंदाई जी बैठो। बाल गुंदाई ने कहा-हे महाराज आप का शुभ नाम क्या है? गुरू जी ने कहा-हे नाथ! हमारा नाम नानक निरंकारी है। नाथ ने कहा-हे नानक निरंकारी! आप मेरे मंदिर में चलो। क्यों कि ऊपर से वर्षा आने वाली है, फिर नाथ ने गुरू जी को नमस्कार किया। गुरू जी ने कहा-हम अतीत हैं जहां बीती वहां ही बिता ली। मंदिर खोजने की हमारी मर्यादा नहीं। बाल गुंदाई ने कहा सत्य है फकीर की यही मर्यादा होनी चाहीये। परंतु यदि अकाल पुरुष कोई सहूलत प्रदान करे तो स्वीकार करनी भी साधू मर्यादा है। इस लिये आप को मंदिर में चलना ही उचित है। फिर गुरू जी उस के साथ हो लिये, पहिले तो उस नाथ ने गुरू जी को नाना प्रकार के मंदिर दिखायेऔर फिरघोड़े वस्त्र आदिकदिखाये फिर भोजनालय आदिक दिखाये देख कर गुरू जी ने कहा हे नाथ जी! राज्य ठाठ का क्या देखना, नाथ ने कहा हे नानक देव! यह सभी उस अकाल पुरुष की माया है, हम तो केवल सेवा करने वाले हैं। संतों की अतिथियों की सेवा करना हमारा धर्म है, तथा हमारे लिये तो यह भखड़े की रोटी यह पड़ी हैं। और निमक के बिना यह शाकभाजी है। हम और कुछ भी अंगीकार नहीं करते, गुरू जी ने कहा हे बाल गुंदाई! आप तो सचे योगी हैं। आप ने भली ही समझी है, गृहस्थ को त्याग कर योगी होना। और फिर रस न छोड़ने इस में योगी होने का क्या लाभ है? महात्माओं के दो ही लक्षण हैं। १ परमात्मा के साथ मन को लगाना, २ संसारी पदार्थों से मन को मोड़ना, और सभी में पूरण ईश्वर को जानना, तथा भूखे नंगे को अन्न वस्त्र देना, आप तो पूर्ण साधू हैं।

तब उस नाथ ने गुरू जी से अनेक प्रकार के प्रश्न किये, तथा पूर्ण उत्तर सुन कर गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया। रात्री के समय विश्राम

करके प्रातः गुरू जी ने नित्य कर्म करके बाल गुंदाई से विदा मांगी। उस ने कहा हे नानक देव ! उदास होने का तो कोई कारण नहीं, आप कुछ दिन यहां विश्राम करो, आप की बातों से मन प्रसन्न होता है। फिर गुरू जी ने उन सब को कृपा दृष्टी से देखा तो सभी आनंदित हुए। फिर गुरू जी वहां से चल दिये।

॥ साखी एक राजा की ॥

बाले ने कहा–हे गुरू अंगद देव जी ! एक बार हमें साथ लेकर गुरू जी महाराज एक ऐसे देश में पहुंचे, जहां पर न तो वहां अन्न था, और न ही वहां अग्नि थी। यह दोनों वस्तु वहां नहीं थीं, वे लोग एक दुंबा मार कर उस के मांस पर एक पत्थर रख कर सूर्य का यप करते थे। जिस से वह मांस पक जाता था, फिर उसे खाते थे। अतिथी की सेवा भी मांस से ही करते थे। उस नगर के बाहर गुरू जी जा बैठे, वहां एक अयाली (दुंबे चारने वाला) वहां आया, उस ने गुरू जी को नमस्कार करके कहा–हे संत जी ! यदि आप की आज्ञा हो तो मैं एक दुंबा मारता हूँ। आप उसे खाना यदि मैं इस प्रकार आप की सेवा न करूं तो मुझे मेरा स्वामी क्रुद्ध होकर दंड देगा। और कहेगा कि तुम ने अतिथियों को भूखे क्यों रखा, यह हमारे नगर का नियम है हमारे देश में अन्न और अग्नि दोनों ही नहीं होते। गुरू जी ने कहा–जैसे तुमारी मर्यादा है करो, तब वह एक दुंबा मार कर उस का मांस एक पत्थर पर रख कर उस के ऊपर दूसरा पत्थर रख कर सूर्य का यप करने लगा। सवा प्रहर बीतने पर मांस बन गया, तब उस ने प्रार्थना की कि आप इसे स्वीकार करो। गुरू जी ने कहा–इस दुंबे की खाल और आस्थियें एकत्र करो जब की गइ तब गुरु जी ने कहा–हे दुंबे ! उठ कर घास खाओ, बस वह दुंबा सावधान होकर घास चरने लगा। यह कौतुक देख कर अयाली हैरान हो गया, तब गुरू जी ने अयाली को कहा–हे मित्र ! तू नगर में जा कर किसी बड़े आदमी को कह कि चलो बाहर

एक संत तुम को बुला रहा है। और परमात्मा से तुम को अन्न अग्नि ले कर दिखायेगा। उस अयाली ने नगर के एक धनी से कहा कि बाहर एक संत बैठा है, उस ने दुंबे को सावधान किया है। तथा अब वह कहता है कि मैं इस नगर के निवासीयों को अग्नि अन्न परमात्मा से दिला सकता हूँ।

यह सुन कर वह धनी गुरू जी के पास आकर प्रणाम करके बैठ गया, गुरू जी ने कहा—हे मित्र! साधु के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहीये, आप थोड़ा सा अन्न ले आओ। उस धनी ने कहा-महाराज! हमारे यहां पर अन्न नहीं होता। हां यदि कहो तो मैं राजा से जा कर कह देता हूँ तब वह धनी राजा के निकट गया। और कहने लगा हे राजन। नगर के बाहर एक साधू हैं। वह कहता हैं मै परमात्मा से तुम लोगों को अन्न और अग्नि दिलवा दूंगा तब राजा अपने मंत्री को साथ लेकर गुरू जी के पास आया, और नमस्कार किया। गुरू जी ने कहा—हे राजन! यदि तुम लोग ईश्वर की भक्ति सचे दिल से ग्रहण करो तो वह परमात्मा सभी कुछ दे देगा। तब तमाम प्रजा के साथ राजा गुरू जी का शिश्य हो गया।

फिर गुरु जी ने कहा—हे राजन! नगर से अन्न ले आओ। तब सारे नगर से एक सेर भर अन्न मिला। गुरू जी की आग्या से वह अन्न बो दिया। जब वह पक गया तो गुरू जी ने कहा—इसे काट कर गाह लो, जब सभी काम पूर्ण हो गया। तब गुरू कृपा से अपार अन्न हो गया फिर गुरू जी ने कहा—हे राजन! इसी प्रकार समय पर उस ईश्वर का नाम ले कर अन्न बोया करो। तब वह ईश्वर कोई त्रुटी नहीं आने देगा। फिर गुरू जी ने पत्थर पर पत्थर मार कर उन को अग्नि प्रदान कर दी। तब उस नगर में सभी ओर धन्य गुरू नानक धन्य श्री गुरू नानक देव के जयकारे होने लगे। सभी नर नारी गुरू जी के चर्णों में लग गये। गुरू जी ने कहा—अतिथी की सेवा करो गरीब की पालना करो। ईश्वर स्मर्ण

करो तब तुम सब का कल्याण होगा। इस के पश्चात गुरु जी वहां से चलने लगे,तब लोग उदास हो गये फिर गुरु जी ने कुछ समय वहां व्यतीत किया फिर सब को प्रसन्न करके श्री गुरु नानक देव वहां से रवाना हुए।

॥ भुटंतर देश की साखी ॥

श्री गुरू नानक देव जी चलते२ एक नगर में जा पौंहचे, और नगर के बाहर एक स्थान पर जा बैठे। जो कोई आता था वह दर्शण करके वहीं बैठ जाता था। तथा जाने का नाम न लेता था, नगर में यह चर्चा होने लगा कि एक संत आये हैं वे न तो किसी से कुछ मांगते हैं और न ही किसी से बात करते हैं। बहुत ही संतोषी हैं, यह बातें उस नगर के राजा ने भी सुनीं। राजा ने बहुत ही अच्छीर वस्तु लेकर गुरू जी के आगे रख दीं और नमस्कार किया,उस देशकी मर्यादा थी कि राजा वहांका घास खोदा करता था। तथा राजा के कपड़े जत के थे, गुरू जी ने कहा हे राजन! तुम यह सभी वस्तु उठा कर ले जाओ। और ईश्वर अर्पण गरीबों में बांट दो। राजा ने गुरू जी की आज्ञा मान सभी वस्तु ले जा कर गरीबों को बांट दी, फिर राजा ने हाथ जोड़ कर कहा हे महाराज! आप नें हमें दर्शण देकर हमारे जन्म जन्म के पापों को दूर कर दिया है। आप को तो किसी भी वस्तु की इच्छा नहीं है आप उपकारी हैं, परंतु मैं आप की शर्ण हूँ। आप का यहां पदार्पण हमारे कल्याण के लिये हुआ है। तब गुरू जी ने कृपा करके कहा–हे राजन! आप अपनी इच्छा कहो, राजा ने कहा–हे महाराज! मेरे देश में चावल और पशम यह दो ही वस्तु होती हैं, और कुछ नहीं होता। आप कृपा करो तो मेरे देश में अन्नादिक भी उत्पन हो जाया करें। और कपास भी पैदा हो, फिर राजा अपनी प्रजा के सहित गुरू जी का सेवक बन गया। गुरू जी ने कृपा करके कहा–हे राजन! तेरे देश में सभी प्रकार की वस्तु होंगी। गुरू जी के कृपा वाक्यों करके उस देश में सभी वस्तु होने लगीं, फिर गुरू जी ने राजा तथा उस की प्रजा को उत्तम

उपदेश दिया। अब गुरू जी वहां से चलने को तैयार हुए, तब सभी लोग उदास हो गये। सब ने कहा हे महाराज ! आप के आने से सभी प्रकार का आनंद हो रहा है। कृपया यहां ही निवास करो, तब गुरू जी ने फरमाया हे राजन ! तेरे देश में अनेक प्रकार के खनिज पदारथ उत्पन्न होंगे। हम ने उस परमात्मा से तुझे बहुत सा ऐश्वर्य ले दिया है। कपास, चांदी, स्वर्ण आदिक सभी वस्तु होगी परम आनंद रहेगा, परंतु हमारे उपदेश के अनुसार सदैव चलते रहना। जब उसी प्रकार लोग उदास देखे, तो गुरू जी ने कहा–हे राजन ! तुमारे प्रकार और संसारी भी हमें चाहते हैं। और हम सारे संसार के लिये हैं, इस प्रकार सब को पवित्र उपदेश से प्रसन्न कर के जगत के स्वामी गुरू नानक देव जी ने वहां से प्रस्थान किया।

॥ साखी समुंद्र के ग्राम बहाने की ॥

चलते २ श्री गुरु नानक देव जी समुंद्र तट पर चले गये। तथा एक् गांव में जा डेरा डाला। वहां की जनता ने गुरु जी का अपार सतकार किया। जब वहां छः मास हो गये। तब वहां के तमाम लोग तैयारी करने लगे तो उनों ने गुरू जी को कहा–हे महाराज ! अब आप भी चलने की तैयारी करो। देखो तमाम जनता अपना सामान उठा कर इस नगर के बाहर हो रही हैं। अब किसी और स्थान पर निवास किया जायगा। क्यों कि छः मास के पश्चात समुंद्र हमारे गांव को बहा ले जाता है। छः मास के पश्चात हम फिर इस को आबाद करते हैं। गुरू जी ने कहा–हे भाई ! यदि समुंद्र तुमारे गांव को न बहाये तब तुम हमारे शिश्य बन कर अपना भला करोगे। उनों ने कहा हे महाराज अगर तुमारी कृपा हो तो हम आप के शिश्य हो जायेंगे। गुरू जी ने कहा–अच्छा अब तुम जाओ। और हम यहां ही रहेंगे। जब तुम छः मास के पीछे आओगे तब तुमारे यह मकान ऐसे ही होंगे। अर्थात वहेंगे नहीं। तब सभी चले गये। परंतु गुरू जी वहां ही बैठे रहे, कुछ दिनों के पीछे समुंद्र की लहरें उठीं।

तब गुरू जी ने अपना चर्ण आगे किया। समुंद्र गुरू जी के चर्ण चूम कर पीछे हट गया। और अपने ठिकाने पर चला गया, सभी घर वैसे ही बने रहे।

जब वहां के निवासी छः मास के पीछे वहां आये तो सभ ने अपने २ घर वैसे ही देखे, सभी इकठे होकर गुरू जी के पास आ कर स्तुति करने लगे। अब उनों ने सुंदर सुंदर भेंट गुरू जी के आगे अर्पण करके प्रार्थना की–हे गुरू देव! आप हमें अपनी शरण में ले लो। तब गुरू जी ने अपने चर्णों के जल की उन को पाहुल प्रदान की और उपदेश दिया, कि ईश्वर का नाम जपो, धर्मशाला बनवाओ, शब्द कीर्तन करो, अतिथी की सेवा करो।

इस के पश्चात जितने भी समुंद्र तट के ग्राम थे, सभी में उपदेश अमृत बर्साया। और सभी को ईश्वर की अनन्य भक्ति सिखलाई। फिर कुछ समय वहां निवास किया, तथा पश्चात वहां से गुरू जी किसी दूसरे स्थान को चल दिये।

॥ साखी इक देव की ॥

गुरू नानक देव जी चलते २ एक नगर में जा पहुँचे उस नगर का नाम हारू पुर था, नगर के बाहर गुरू जी ने डेरा डाला। गुरू जी के दरशणों को अनेक नर नारी आते तथा अपनी २ मुंह मांगी मुराद पाते थे। एक दिन वहां के तमाम लोग अपना माल सबाब बांध कर नगर छोड़ कर चलने को तैयार देखे। तब गुरू जी ने पूछा–कि आप कहां जा रहे हो, उनों ने कहा हे गुरू जी हम क्या बतायें। छः मास के पश्चात हमारे घरों को यहां अचानक आग लग जाती है। और हमारा सामान जल जाता है, इस लिये हम सामान निकाल कर चले जाएंगे तथा जले हुए मकान फिर बना लेंगे। अब आप भी हमारे साथ ही चलो तो अच्छा है। जब गुरू जी ने आग लगने का कारण पूछा तो उनों ने कहा–हे महाराज!

एक देव है, जो हमारे घरों को जला देता है। यदि आप कुछ कृपा करो तो शायद हम बच जायें। तब गुरू जी ने कहा-हे मित्रो! यदि तुम परमेश्वर का नाम स्मर्ण करो, तथा अन्नय भक्ति करो, तो तुमारे मकान कभी भी नहीं जलेंगे। और सभी भय दूर हो जायेंगे, आगे से कभी अग्नि नहीं लगेगी। परंतु यहां एक धर्म शाला बनवानी होगी, और अतिथी के लिये लंगर भी होना चाहीये, धार्मिक भाव रखने होंगे।

जब अग्नि लगने का समय हुआ। तो लोग भयभीत होकर गुरू जी के निकट एकत्र होकर ईश्वर नाम जपने लगे। तथा कुछ भी सामान नहीं निकाला। जब वह समय आया। तो क्या देखा कि एक भीम काय देव आ रहा है। उस का शिर आकाश से लगा हुआ है तो पांव पाताल को छूह रहे हैं। उस का शरीर भयानक है। उस के मस्तक में अग्नि है, काला वर्ण है। देव ने देखा कि पहिले की भांति यह लोग निकले नहीं। देव को हंकार हो गया। कहने लगा कि मैं अब इन सभ को जला कर जाऊंगा। आगे तो मकान ही जलाता था। परंतु अब तो मैं उन को भी नहीं छोड़ूंगा। अब वह देव अपने होठों पर जुबान फेरता आया। तब सभी लोग भयभीत हो गये। तथा सभी गुरु जी को कहने लगे-हे महाराज! आगे तो हम भाग कर अपने प्राण बचाते चले आये हैं। परंतु यह देव तो हमें अब भागने भी नहीं देगा अब आप हमारी रक्षा करो। तब गुरू जी ने अपनी दृष्टी उस देव पर डाली। तो वह देव उसी क्षण गिर पड़ा। और मूर्छा हो गया। परंतु दया दे समुंद्र गुरू जी ने जब देव का बुरा हाल देखा तो मन में दया आ गई। और अपना चर्ण उस देव के शिर से लगाया। चर्ण लगने से देव उठ कर बैठ गया। और गुरु जी के चर्णों पर गिर पड़ा। और तब हाथ बांधकर बोला। हे महाराज! आप मेरे ऊपर दया करो, मैं आप का दास हूँ। आप परमेश्वर हो मैं मूढ़ अल्पज्ञ हूँ। महापुरुष सदैव दयालू होते हैं। मैं इन के मकान जलाता था। और अपनी ईंन मनवा लेता था; यह मेरा अहंकार था, हे प्रभु! आप ने इन

को अभयदान दिया है। तब मेरी क्या सामर्थ्या है ! जो इन का बाल भी बीका कर सकूं। इन के भाग्य उदय हुए हैं। जो आप के दरशण कर रहे हैं। मैं भी आप का दास हूं। अब गुरु जी ने कहा इस नगर में एक सुंदर धर्मशाला बनवाओ। शब्द कीर्तन नित्य करो। ईश्वर स्मर्ण करो। फिर देव को कहा-हे देव तेरा कल्याण तब होगा जब तू इस धर्मशाला में जल भरने की सेवा करेगा। फिर गुरू जी ने कहा-जो पुरुष धर्मशाला की सेवा करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है। वह देव और वह तमाम नगर निवासी गुरु जी के शिश्य हुए, परम आनंद छा गया। बाले ने कहा हे गुरु अंगद देव जी हम आप के समक्ष वहां के आनंदोत्सव का कहां तक कहें, धन्य हैं गुरू जी।

॥ साखी अपने देश आने की ॥

एक दिन गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! अब किधर जाने का विचार है, मर्दाने ने कहा-हे गुरू देव ! जिधर को आप की इच्छा हो उधर ही ठीक है। हम तो आप के अनुचर हैं, फिर गुरू जी मुझे कहने लगे हे बाला ! तुम बताओ अब किधर चला जाय। मैं ने हाथ बांध कर कहा हे कृपा सागर आप जहां ले चलोगे उधर ही चले जायेंगे, बस फिर क्या था गुरू जी की आज्ञा से हम ने आंखें बंद कीं जब क्षण के पीछे खोलीं तो हम रावी नदी के तट पर थे, तब गुरू जी ने कहा कि यहां से अजिते को हम ने साथ ले चलना है। तब अजिता वहां आ मिला। उस ने गुरू जी को प्रणाम किया, गुरू जी कहने लगे-भाई ! एक अबदुल रहमान फ़कीर डल्ले के चक में रहता है, हम उसे मिलना चाहते हैं। वह हम से घी मांगता रहा है। तब अजिते ने कहा-हे महाराज ! चलो, तब गुरू जी ने कहा अजिता तुम आंखें बंद कर, जब सब ने आंखें मूंदीं तो सभी वहां से डाले के चक में आ गये। तब गुरू नानक देव जी अबदुल रहिमान के पास दो कोसों पर जा बैठे, और अजिते को कहा-तुम जाकर मीआं जी को कहो

कि तुमें नानक निरंकारी बुला रहा है। परंतु मान से कहना, जब अजिते ने मीएं को संदेश दिया। तो मीआं फौरन ही चल पड़ा, तथा और भी लोग उस के साथ आये, गुरू जी ने देखा मीआं आ रहा है। परंतु लोगों को दुआई देता आ रहा है। और लोगों को लौटाता भी आता है, यह देख कर गुरू जी ने एक श्लोक कहा-

श्लोक महला १ ॥

देन दुआई से मरना लैंदे भी मर जाहि। लखी न जाई नानका किथे जाय समाइ ॥ १ ॥

यह सुन कर मीआं कुछ चमका, आगे जा कर सलाम की। तब गुरू जी ने कहा हे मीआं जी! कहो राज़ी खुशी हो ? तब उस ने उत्तर दिया, हां साईं लोक जी! हम अच्छे भले हैं फिर गुरू जी ने कहा हे मीआं जी आप ने कैसे कहा-कि कराड़ी ने घी जमा कर रखा है। परंतु हम ऐसे लेंगे जैसे किसी शाक भाजी पर खट्टे की फांक नचोड़ ली जाती है। और फोक को फैंक दिया जाता हैं, जब मीए ने यह सुना तो बस खाली हो बैठा। कहने लगा मैं तो कुछ लेने को आया था परंतु अपनी भी दे बैठा हूँ।

उस मीएं साथ एक और मीआं आया था,इसके मन में आया कि यह क्या कहेगा कि हिंदू के आगे अपनी भी करामात खतम करवा आया है। इतने में दूसरा भी आ गया और हंकार के साथ गुरू जी के निकट जा बैठा। तब गुरू जी ने एक दृष्टि से उस की भी सत्ता खींच ली, वह भी खाली हो गया। मीएं ने कहा-भाई! शेष नाग के नीचे आ पड़े है, देखें खुदा जिंदा भी रखता है या नहीं अब तो ज़िंदा रहने की फ़िकर है। करामात लुट जाने का भय नहीं है, गुरू जी ने देखा कि मीआं बहुत ही हताश हो रहा है। और भय भीत है, गुरू जी ने कहा-हे मीआं! यदि समुंद्र में छपड़ी पड़ गई तो क्या अचंभा है ? परंतु इतने शब्द नहीं कहने चाहीये। जिस की वस्तु हो उसी के पास चली जाय तो क्या अचंभा है। जब यह कहा तो फिर उन की करामात उन के पास ही चली गई, बस फिर

वह सभी गुरू जी के चर्णों के भ्रमरे बन गये। और कहने लगे, हे महाराज! आप हमारे हुजरे में चलें। तब गुरू जी कृपा करके मीएं अबदुल रहिमान के साथ चल पड़े। मार्ग में चलते२ गुरू जी ने धरती की ओर देखा तो वहां स्वर्ण की मोहरें बन गईं तब गुरू जी ने कहा मीआं जी हम रास्ता भूल गये हैं। मार्ग तो दाएं हाथ रह गया है, मीयें ने कहा-अच्छा अब आप दायें ही चले चलो, रास्ते में मीएं ने देखा कि मार्ग में मन२ भर की ढीमें पड़ी हैं, आखिर गुरू जी हुजरे में जा बैठे।

मीएं ने गुरु जी की अपार सेवा की। गुरू जी ने कहा हे मीआं जी आप हुजरे में कब तब किस मर्यादा से निवास करते हो? मीयें ने कहा हे गुरु जी मैं तो छः महीने के पश्चात हुजरे से बाहर आता हूँ। तो फिर एक लोटा पानी और एक सेर भर जौं लेकर हुजरे के भीतर चला जाता हूँ। तब गुरु जी ने कहा-हे अजिते! आज से हम भी एक मुष्टी भर बालू ही खाया करेंगे जब यह सुना तो मीयें ने गुरू जी को प्रणाम किया, और कहा-हे गुरू जी! आप ने हम लोगों पर अपार कृपा की हैं, हम लोग आगे से आप के सेवक वन गये हैं। और हम अपने अहो भाग्य मानते हैं। हम भूले हुए थे, आप हमें क्षमा करो। गुरू जी ने कहा-हे मीयां जी! आगे से तुम को बख्शीश दान मिल गया है। और तुम ने पूर्ण गुरु को प्राप्त कर लिया है। तुमारा जन्म सफल हो गया है। फिर मीयें ने गद गद होकर गुरू जी के चर्णों का बोसा लिया। गुरू जी ने उस पर अपार प्रसन्न होकर उसे अपनी शर्ण में लेकर उस को पाप मुक्त करके फिर वहां से प्रस्थान किया।

॥ साखी मरदाने के साथ ॥

गुरू जी महाराज हम दोनों को साथ लेकर चलते २ एक नगर में पहुँचे, तब मर्दाने ने कहा-हे गुरुदेव! यदि आप आग्या दें तो मैं इस धरती में जाकर कुछ खाने के लिये ले आऊं। गुरू जी ने कहा-हे भाई

मर्दाना ! जैसे तेरे मन में आवे वैसा कर। अब मर्दाना उस नगर में चला गया, उन लोगों से मर्दाने ने रस्त (कच्चा भोजन) मांगा। तब लोगों ने भोजन का सामान तो दे दिया। परंतु सब को कह दिया, कि इस को अग्नि और जल न दिया जाय। मर्दाने ने जिस से आग पानी मांगा। उसी ने इनकार कर दिया। अब मर्दाना ! उदास होकर गुरू जी के पास आ बैठा। अंतर्यामी गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना इस स्थान से पत्थर उठाओ। जब मर्दाने ने पत्थर उठाया। तो उस के नीचे से अत्यंत सुंदर तालाब निकल आया। जिस में निर्मल जल भरा हुवा देखा गया। फिर गुरू जी ने आग्या दी। हे मर्दाना ! तू इस तालाब में रोटी बना बना कर छोड़ता जा, और जो बाकी दाल चावल आदिक हैं वह सभी किसी वस्त्र में बांध कर इसी पानी में डाल दे। और ईश्वर का स्मर्ण कर। तब मर्दाने ने श्री गुरू जी की आग्या का पालन करते हुए सभी कुछ पानी में डाल दिया। और ईश्वर स्मर्ण भी किया। परंतु मर्दाना उदास होकर कहने लगा, हे महाराज ! यह सारा अनाज हमारा तो व्यर्थ ही गया है। तब गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! तू परमेश्वर से प्रार्थना कर और कहो कि हे ईश्वर ! यदि हमारा अन्न निकल आय तो हम आप के नाम पर एक रोटी दान करेंगे। जब मर्दाने ने गुरू जी की आग्या मान कर वैसे ही प्रार्थना की तो तभी तमाम रोटीयें और दाल चावल पके पकाये बाहर आ गये। तब गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! इसी प्रकार जो ईश्वर के निमित कुछ देकर प्रार्थी होता है उस का डूबा हुआ धन भी उसे प्राप्त हो जाता है, तब मर्दाना श्री गुरू जी के चर्णों पर गिर कर प्रणाम करने लगा।

अब यह चर्चा सारे नगर में होने लगा-कि यह तो फकीर कोई महान शक्तिमान है हम ने तो आग पानी नहीं दिया था, परंतु उस ने तालाब निकाल लिया है, और उसी के द्वारा अन्न भी तैयार करवा लिया है। यह तो कोई महापुरुष है। तब वहां का राजा अपने अहलकार लेकर गुरू जी के चर्णों में आकर प्रार्थना करने लगा-हे महाराज ! हम लोक बहुत

ही निकृष्ट है, तथा आप दयालू हैं हम पर कृपा करो और जो हम से भूल हो गई है, उसे क्षमा कर दो। तब गुरु जी ने कहा–

वास देव सर बतर महि ऊन न कतहू ठाइ ॥
अंतर बाहर संग है नानक काइ दुहाइ ॥

अर्थात परमात्मा सर्व व्यापक है, कोई स्थान उस से रिक्त नहीं है। वह सदैव अंग संग है, उस अंतर्यामी से कोई भी बात छुपी हुई नहीं है। तुम भी उसी का स्मर्ण करो, तब तुमारा भी कल्याण होगा। तब राजा तथा प्रजा सभी गुरू जी के सेवक शिश्य हो गये। फिर गुरू जी ने फरमाया कि एक धर्म शाला बनवाओ तथा लंगर और कीर्तन प्रति दिन करना प्रारंभ करो, अतिथि सेवा को सदैव करो। फिर तुमारा लोक परलोक भला होगा, इतनी कह कर गुरू जी वहां से रवाना हुए।

॥ साखी कुष्टी फ़कीर की ॥

एक वार श्री गुरू जी महाराज जाते २ एक ऐसे नगर में जा पौंहचे जहां गुरू जी को निवास के लिये काई भी स्थान नहीं मिला। तब आप एक कुष्टी फकीर की कुटीया में चले गये। उस कुटीया में दीपक का प्रकाश भी नहीं था, गुरू जी को उस फकीर ने नहीं देखा। और न ही गुरु जी ने उसे देखा। रात्री वहां व्यतीत करली।

प्रातःकाल उस कुष्टी ने गुरू जी का दर्शण किया। हाथ जोड़ कर कहने लगा। हे महाराज! मेरे निकट तो दिन के समय भी कोई नहीं आता, मैं अपने अहोभाग्य मानता हूं। जो आप ने दर्शणों से मुझ को कृत कृत्य किया है, आज मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा कल्याण अवश्य होगा।

बाले ने कहा–हे गुरू अंगद देव जी! हम ने गुरू जी साथ उस कुष्टी की कुटीया में चार प्रहर रात्री तो व्यतीत की परंतु दुर्गंधी से हमारे नाक में दम आ गया। तथा वह कुष्टी रात्री भर जोर २ से रोता ही रहा,

उसे महान दुखी देख कर दीन दयालु श्री गुरु जी ने एक शब्द कहा–

राग धनाश्री महला १ ॥

जिऊ तपति है बारो बार। तपि तपि खपै बहुत विकार । जै तनि बाणी बिसरि जाइ। जिउ पका रोगी बिल लाइ ॥ १ ॥ बहुता बोलन झखन होइ। विण बोलै जाणै सभ कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कन्न कीते अखी नाक। जिन जिव्हा दिती बोलै तात। जिनि मन राखया अगनी पाइ। वाजै पवन आखै सब वाइ ॥ २ ॥ जेता मोह परीत सुआद । सभा कालख दागा दाग। दाग दोस मोहि चलिआ लाइ। दरगहि बैसण नाही जाइ ॥ ३ ॥ करम मिलै आखण तेरा नाउ। जित लग तरना होर नाही थाउ। जे को डूबे फिर होवै सार। नानक साचा सरब दातार ॥४॥१॥

यह शब्द सुन कर वह कुष्टी गुरू जी के चर्णों पर पड़ गया उस का शरीर अरोग्य हो गया। तथा उस की बुद्धी निर्मल हो गई । तमाम रोग दूर हो गया। अब यह चर्चा सारे नगर में होने लगी। कि जिस साधु को हम ने नगर में स्थान नहीं दिया उसकी कृपा से वह कुष्टी बिलकुल तंदरुस्त हो गया हैं, उस का शरीर उसी संत ने कुंदन जैसा कर दिया है। अब वह कुष्टी फकीर भी नगर में जा कर गुरू जी की स्तुति करने लगा। अभ नगर के लोग भागते हुए गुरू जी के चर्णों में आये । और दीन होकर सभी कहने लगे हे महाराज ! हम से तो अक्षम्य पाप हो गया है । जो आप को रहने के लिये स्थान नहीं दिया, तथा आप का निरादर किया है। आप दयालू उपकारी हैं, हमें भी अपने शिश्य बना कर भवसागर से पार करो हे स्वामी दया करो ! हम भूले भटके पापी जीव हैं और आप तारन हार हो। तव दया के स्वरूप गुरू जी उन की करुणा कुंदन सुन कर दया में हो गये। और उसी स्थान पर बैठ गये। और फरमाने लगे–हे मित्रो ! यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो यहां एक समय अथवा धर्मार्थ धर्म शाला वनवाओ। जहां अतिथि आकर आराम प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार गुरू जी ने और भी वहुत सा उपदेश किया। जो गुरू जी ने शिक्षा दी।

वह उनों ने सहर्ष स्वीकार की। वहां एक धमशाला बनवाई गई। फिर गुरू जी ने अपने चर्णों का जल दे कर उन को अपना शिश्य बनाया।

एक दिन एक सेवक ने कहा—हे महाराज! मुझे एक शंका है, आप मेरी शंका निवारण करें। गुरू जी ने कहा हे भाई तुम अपनी शंका कहो, तब उस शिश्य ने कहा—हे गुरू देव! यह जो सिखी है यह किस प्रकार पूर्ण की जाती है। बस मैं यही सुनना चाहता हूँ। तब गुरू जी ने कहा—हे मित्रो मैं तुम को एक साखी सुनाता हूं ध्यान लगा कर सुनो—

॥ श्री मुख वाक्य ॥

एक राजा था, उस ने जहां अपना उद्धार किया वहां उस ने अपने गुरू का भी उद्धार भी किया था। तथा उसे साक्षातकार परमात्मा का दर्शण भी होता था।

तब बाबा जी ने कहा—

गुरु कहा सो कार कमावहु ॥ गुरु की करनी काहे धावहु ॥

हे मित्रो! एक राजा अपने मन से भक्ति भी करता था, और राज्य भी करता था। एक दिन उस के मन में आया कि मैं ने बहुत काल तक राज्य भी किया है, तो अभी और कहां तक मुझे राज्य करना होगा। यह कोई पता नहीं, वह राजा आगे भी गृहस्थ में उदास रहता था। उस ने अपने पुत्र को राज्य देकर यह शिक्षा दी, हे पुत्र! तुम ने राज्य न्याय से करना। तथा राज्य सुख को अपना न जान कर यह परमात्मा की देन ही मानना, इस प्रकार सभी राज्य त्याग कर राजा ने बण गमण किया। परंतु एक लाल उस राजा ने अपनी जेब में डाल लिया, बन में जाकर मुक्ति की इच्छा से राजा ईश्वर स्मर्ण में लीन रहने लगा।

जब राजा घर से रवाना हुआ था, तब एक चोर भी राजा के साथ २ चल पड़ा, उस चोर ने सोचा कि यह राजा घर बार त्याग कर चला है। परंतु राजा होने के नाते इस ने थोड़ी बहुत संपदा साथ ज़रूर ले ली होगी, मैं जैसे भी हो सके इस से वही संपदा प्राप्त करूंगा। भले ही मुझे

इस के प्राण ही लेने क्यों न पड़ें । अब वह चोर राजा के इर्द गिर्द ही रहता था।

एक दिन एक पर्व का दिन था, राजा एक नदी के तट पर स्नान करने गया। वहां आगे कथा हो रही थी उस समय कथा यह प्रसंग था कि गुरू के बगैर सदगति नहीं हो सकती, चाहे अनंत काल तक भी तप जप किया जाये परंतु गुरू के बगैर गति नहीं होगी । तथा परमात्मा के जितने भी अवतार हुए हैं, उन में दो अवतार तो मशहूर हैं । राम और कृष्ण यह दोनों परमोत कृष्ट अवतार माने जाते हैं, इनों ने भी गुरू धारण किये थे। जैसे राम चंद्र जी ने अपने गुरू यसिष्ट रिषी माने हैं, और श्री कृष्ण जी ने महात्मा संदीपन को गुरू धारण किया था। इस लिये गुरू के बिना गति नहीं हो सकती, जितने भी अवतार ज्ञानी संत महंत हुए हैं सभी ने गुरू धारण किया है । गुरू धारण करना प्रत्येक प्राणी का परम धर्म है।

कथा समाप्त होने पर राजा अपने स्थान की ओर चल पड़ा । इधर चोर भी राजा के साथ २ था। और सोच रहा था, कि राजा सो जाये तो उसे मार कर लक्ष्मी जो इसके पास होगी वह ले लूंगा परंतु राजा ईश्वर के प्रेम में इतना लीन रहे कि सोना भूल ही गया था, अब राजा को गुरू की भाल हुई। अंत राजा ने सोचा कि जो प्रातःकाल एक प्रहर रात्री रहे मुझे मिल जायगा। मैं उसी को ही गुरु मान लूंगा। उधर चोर ने सोचा कि मैं लक्ष्मी की प्राप्ति की इच्छा में बहुत समय जाग्रत रहता हूँ । परंच यह राजा तो बिलकुल ही नहीं सोता। आज मैं इस राजा की परीक्षा लूंगा। देखूं यह कौन से मसय सोता है ? जब बहुत दिन गुजर गये, और राजा को सोते न देखा तो,एक दिन चोर ने यह सोचा कि आज प्रातः होने से पूर्व ही इंस राजा को मारूंगा। यह वही दिन था, जिस दिन राजे ने गुरू धारण का संकल्प किया था।

प्रातःकाल होने से पहिले ही यह चोर राजा को मारने आया । तब

राजा ने कहा–अह ! आज मेरे भाग्य तो उदय हो गये हैं। आज का दिन भाग्य वान है, जो आप के दर्शण हुए हैं, यह कह कर राजा चोर के पांव पकड़ने को आया। चोर ने सोचा राजा मुझे पकड़ने आया है । तब चोर ने विचार किया कि कोई बात नहीं, राजा भी अकेला हैं, और मैं भी अकेला हूँ। मैं राजा के साथ लड़ूंगा। अब राजा ने चोर के पांव पकड़ लिये । चोर ने सोचा कि राजा मुझ से डर गया है। परंतु मैं इसे छोड़ूंगा नहीं। उधर राजा ने चोर के पैरों पर शीश रख कर कहा–हे स्वामी ! हे गुरुदेव ! आप धन्य हो आप ने मुझे दरशणों से कृतार्थ किया है । चोर ने हैरान होकर कहा–हे राजन ! तुम गुरू किस को कह रहे हो, राजा ने हाथ बांध कर कहा हे गुरुदेव ! मैं आप पर बलिहार हूँ। तथा मैं आप को गुरू रूप में पाकर कृतार्थ हो गया हूं। चोर ने कहा मैं तो चोर हूँ। राजा ने कहा–हे प्यारे गुरुदेव ! आप मुझे धोखा न दें। चोर ने कहा–हे राजा ! तूं मुझ से क्या चाहता हैं। राजा ने कहा–हे महाराज ! मैं तो आप का शिश्य बनने को उपस्थित हूं। आप ने मुझ पर परम अनुग्रह किया हैं। जो प्रातः काल के पूर्व ही दर्शण दिया है, आप मेरे गुरु बनो, और मुझे अपना शिश्य स्वीकार करो। आप तो पूर्ण गुरू हो । चोर ने कहा–हे राजा ! किस को गुरू धारण करना हो तो उस की प्रत्येक आज्ञा को प्रेम से मानना होता है। और गुरु के अर्पण तन मन धन अर्पण करना होता है। यदि तू मुझे गुरु मानता है। तो जो कुछ तू अपने घर से लाया है। वह मेरे अर्पण करदे। तब मैं तेरा गुरू बनूंगा। राजा ने कहा–हे तारन हार गुरु देव ! मैं तो घर से केवल एक रत्न अपने साथ लाया हूँ। सो यह आप की भेंट है। यह लाल और यह मेरा शरीर दोनों ही आप के आगे हैं। जैसे चाहो इन को अपने बर्ताव में ला सकते हो। तब चोर ने कहा–हे राजा गुरु की आज्ञा सदैव माननी। मैं तुम को आज्ञा देता हूँ। कि जब तक मैं वापस न आऊं। तब तक तुम ने यहां ही बैठे रहना होगा। राजा ने कहा–हे गुरु देव ! जब तक आप दर्शण न दोगे तब तक मैं इस **स्थान** से एक इंच

भर भी नहीं उठूंगा। तब चोर लाल लेकर उठ कर भागा। उस के मन में था। कि कहीं राजा मेरा पीछा ही न करे। आखर भागता २ चोर एक नगर में आ गया।

इधर राजा उसी स्थान पर बैठा ईश्वर चिंतन कर रहा था, जब एक वर्ष बीत गया। तब उस परमात्मा के हृदय में दया का संचार हुआ, तथा राजा के निकट आ कर कहने लगे, हे राजन! तुम यहां क्यों बैठे हो। यहां बैठने से तेरा कोई भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा, तुम किसी तीर्थ पर जा कर तपस्या करो। अथवा किसी संत रिषी या किसी योगी के निकट जाओ, अथवा किसी नगर में निवास करो। राजा ने कहा–हे महात्मा! हम को गुरू जी की आज्ञा ही ऐसी है। कि मेरी वापसी तक इसी स्थान पर बैठे रहना। इस लिये मैं गुरू की आज्ञा मानूंगा, और यहीं बैठूंगा। तब उस ने (परमात्मा ने) कहा–हे राजन! वह तो चोर था, जिस को तुम गुरू मान रहे हो। उस की आज्ञा मान कर तुमें नर्क में जाना होगा अब भी किसी पहुंचे हुए योगी को अपना गुरू बना लो। तब तेरी सद गति होगी, राजा ने कहा–हे महात्मन! मैं ने अपने गुरू जैसा और कोई महा पुरुष नहीं देखा। वह मेरा गुरू है, भले ही साधु है अथवा चोर। मेरे लिये तो वही सर्वस्व है, यह उत्तर सुन कर विधाता जी वहां से चले गये।

जब तीन वर्ष व्यतीत हो गये, परंतु राजा वहीं बैठा रहा–तब ब्रह्मा जी फिर राजा के पास आये। कहने लगे हे राजन! उठ कर खड़े हो जाओ, राजा ने कहा–गुरू आज्ञा के बगैर मैं उठने को तैय्यार नहीं हूँ। तब विधाता ने कहा हे राजन! जिस का तू स्मर्ण करता है मैं वही हूँ। तेरा जप पूर्ण हो गया है। उठ और बैकुंठ को प्राप्त कर, राजा ने कहा–हे परमेश्वर! आप ने मुझ पर बहुत कृपा करके दरशण दिया है। मैं आप का सेवक हूँ। परंतु गुरू आज्ञा के बिना तो मुझ से उठा नहीं जायगा, ब्रह्मा ने कहा–हे राजा! वह तो चोर था, और तुम को ठगने के लिये आया था। तुम से रत्न ठग कर ले गया है, अब तू उस की क्या प्रतीक्षा कर

रहा है। क्या चोर के साथ नर्क में जाना चाहते हो, राजा ने कहा—यदि गुरू देव के साथ नर्क में भी जाना पड़े तो मैं नर्क निवास भी अच्छा जानूंगा। परंतु गुरू की आज्ञा के उलट यहां से उठूंगा नहीं, तब ब्रह्मा जी उस चोर के पास आ कर कहने लगे। अरे तू उस राजा को वहां बैठा कर आया है, और फिर तू ने उस की खबर तक नहीं ली। अब जा कर उस राजा की दशा ता देख, चोर ने कहा—अरे भाई! तू किस की बात करता है, मैं किस को बैठा कर आया हूँ। तब ब्रह्मा ने कहा—अरे जिस से तू ने रत्न ठगा है, मैं उसी की बात करता हूं। क्या तू उस राजा को नहीं जानता? जो बन के भीतर बैठा हुआ है, और तेरी आज्ञा के बिना उठने का नहीं है।

चोर ने सोचा कि क्या राजा अभी तक वहीं बैठा है और यह मनुष्य कौन है, जिस ने मुझे पहिचान लिया है। चोर ने पूछा हे भाई तुम कौन हो, तब ब्रह्मा जी ने कहा मैं ब्रह्म देव हूँ। अब उस चोर ने ब्रह्मा के चर्णों पर अपना शिर धर कर प्रणाम किया, और राजा की ओर चल दिया। ब्रह्मा जी और चोर दोनों राजा के पास आये, राजा ने देख कर कहा—अहोभाग्य जो मैं अपने गुरू देव के दर्शण कर रहा हूँ। आज मेरे जैसे और पुण्यात्मा कौन है, यह कह कर राजा ने उठ कर गुरू जी के चर्ण पूजने चाहे। तब चोर ने कहा—हे राजन! यह मेरे साथ ब्रह्मा जी हैं, तू इन के चर्णों का पूजन कर, परंतु राजा ने पहिले चोर के चर्ण पूजे और पीछे ब्रह्म देव के चर्णों पर शीश रखा। ब्रह्मा ने कहा हे राजन! तू उसी चोर को नमस्कार कर, मेरे चर्णों को छोड़ दे। राजा ने कहा—क्षमा करें चोर तो आप हो, जब मैं अपने गुरू के चर्ण पकड़े तब आप ने भी दरशण दे दिये, पहिले तो आप ने कभी कृपा नहीं की, मुझ पर तो इसी संत (चोर) की कृपा हैं। जिस ने आप के दरशण करवा दिये हैं, तब ब्रह्मा ने कहा—हे राजन तुम धन्य हो। अब तुमारा मोक्ष हो गया है, और तेरे ही कारण यह चोर भी मुक्त हो गया है, नहीं तो इस ने नर्क में ही जाना था।

॥ श्री मुख वाक्य ॥

मन्नै तरै तारे गुर सिख ॥ मन्नै नानक भवै न भिख ॥

फिर गुरू जी ने कहा–हे मित्रो ! जिस को गुरू चर्णों पर पूर्ण श्रद्धा और दृढ़ता हो वही शिश्य मुक्ती को प्राप्त करता है यह उपदेश सुन कर सभी ने गुरू नानक देव जी महाराज के चर्णों में प्रणाम किया । फिर गुरू जी ने सभी को आनंद करके उस से आगे प्रस्थान किया ।

॥ साखी आगे और चली ॥

फिर भाई बाले नेकहा–हे गुरू अंगद देव जी ! वैसे तो सत गुरू श्री नानक देव जी महाराज के सहस्त्रों पवित्र से पवित्र जगह उद्धारक कर्म हैं, परंतु प्रत्येक लीला में एक बात प्रत्यत्त हो रही है। कि संसार का कल्याण करना गुरू जी का मुख्य मंतव्य था, इस के अति रिक्त संसार से आडंबर का नाश करना भी कल्याण में छुपा हुआ एक रहस्य हैं । गुरू जी के सुंदर कृत्यों का जो भी पाठ करेगा । तथा स्मर्ण है वह पुरुष के भवसागर तरने को एक जहाज के सदृश्य है। यह सुन कर श्री अंगद देव जी ने कहा–हे भाई बाला ! आप धन्य हो जिनों ने श्री गुरू जी महाराज के साथ रह कर उन के संसार उद्धारक सुकृत्यों को अपने नेत्रों द्वारा देखा, तथा गुरू जी के मनोहर उपदेशों द्वारा अपने कर्णों को पवित्र किया है । अब हमारा मन चाहता है कि हम श्री गुरू नानक देव जी की पवित्र और सुंदर कथा मन भर कर सुनूं । अब आप यह बताओ कि गुरू जी ने आगे क्या कुछ किया, और कहां २ की जनता को संसार सागर से पार किया है। कृपाया सुनाने का कष्ट करो।

॥ भाई बाला का कथन ॥

भ्रमण करते २ गुरू जी महाराज एक पठान के देश में गये । और वाहर रोड़ी पर आसन जमा लिया। वहां एक रुहेला पठान आ पहुँचा तब गुरू जी ने हमें कहा कि तुम (बाला) और मर्दाना गुप्त होकर खेलो,

और स्वयं गुरु जी बारां वर्ष की अवस्था धारण करके बैठ गये । इतने में वह पठान निकट आ पहुँचा । और गुरू जी को अकेले देख कर आप को पकड़ कर ले गया । अपने घर जाकर के अपनी धर्म पत्नी को कहने लगा–हे खुदा की बंदी आज यह हिंदु लड़का मेरे हाथ आया है, मैं इस की बहुत ही कीमत वसूल करूंगा । देख तो यह लड़का कैसा सुंदर है उस की औरत देख कर बहुत ही प्रसन्न हुई । और कहने लगी कि इस लड़के को तो मैं अपने पास ही रखूंगी, इस को बेचना ही नहीं है । तब उस पठान ने कहा–हे भली लोक इस के दो घोड़े मिलते हैं, औरत ने कहा जैसे आप की इच्छा ।

वह पठान गुरू जी को जो बालक बने हुए थे, बेचने के लिये बाज़ार ले गया, असल बात यह थी कि वे लोग अत्यंत नास्तिक तथा पीर मुरशद से मुनकर थे । उन को सन्मार्ग पर लाने के लिये गुरू जी उस देश में गये थे । तब वह पठान ने गुरू जी के दो घोड़े ले लिये । मैं और मर्दाना चाहे गुप्त थे । परंतु गुरू जी के ही अंग संग रहते थे, जो पठान गुरू जी को अपने घर खरीद कर ले गया था, उस की औरत ने गुरू जी को देखा तो गुरू जी उसे बहुत ही अच्छे लगे । प्रसन्न होकर कहने लगी, इस को तो हम अपने घर में रखेंगे । पठान ने कहा–इसे कौन सी सेवा दी जाय । पठानी ने कहा–इसे घर का पानी भरने पर ही लगाउंगी । अब गुरु जी को पानी भर लाना कहा गया । जब घड़ा लेकर गुरू जी कूए पर गये, तो ख्वाजा खिजर ने गुरू जी को पहिचान कर प्रणाम किया । गुरू जी ने कहा हे ख्वाजा खिजर जब तक हम आज्ञा न दें तब तक तुम ने किसी को जल नहीं देना होगा । गुरू जी की आज्ञा उस ने स्वीकार करके नगर के तमाम खूहों का जल सुखा दिया अब गुरू जी खाली घट लेकर पठान के घर को आ गये, तथा पठान को कहा–कि मिआं जी खूहे में तो पानी का निशान तक नहीं है । पठान ने कहा–तुम दूसरे खूहे में से ले आओ । दूसरे खूहे से भी गुरु जी खाली ही लौटे, तथा कहने लगे । वहां भी पानी

नहीं है। अंत तो गत्वा सारे नगर में त्राहि २ मच गई। सभी ईश्वर से प्रार्थना करने लगे हे ईश्वर क्या तू हम सब को प्यासे मारने का विचार कर रखा है? अभी २ हम ने कल तमाम खूहों में पानी देखा था, परंतु आज क्या हो गया। जो तमाम खूहे सूख गये हैं? अब तमाम जनता दिल गीर होने लगी सारे नगर में एक गुरू जी ही थे,जो प्रसन्न नजर आते थे। बाकी सभी के मुंह कुमलाये हुए थे, लोगों ने पठान से कहा-हे मिआं! एक तुमारा गुलाम हो खुश नजर आ रहा है बाकी तो तमाम नर नारी दुखी हो रहे हैं। यह गुलाम कहां से लाये हो। उस पठान ने कहा-इसे तो मैं कल ही खरीद कर लाया हूँ। काम को बहुत ही होश्यार है। और खाता पीता भी कुछ नहीं। और हर समय प्रसन्न रहता है। उन में कुछ बुद्धिमान भी थे,वे सभी गुरुजीके चर्णों में आ गिरे कहने लगे आप तो कोई महापुरुष हो। आप हम पर कृपा करो। नहीं तो हम सभी पानी से प्यासे मौत के मुख में चले जायेंगे। तब गुरू जी ने कहा देखो यदि गुरू नानक मिशन को मान कर तुम शिश्य बनों तब तुम को पानी मिलेगा। तब उनों ने शिश्य होना माना तब गुरू जी ने ख्वाजा खिजर को कहा-कि अब इन को पानी दे दो। गुरू जी की आज्ञा मान कर ख्वाजा खिजर ने प्रत्येक कूप में पानी भेज दिया। तब गुरू जी ने अपने को भी प्रकट किया, और तमाम प्रदेश गुरू जी का सेवक हो गया गुरू जी ने उन को उत्तम उपदेश से कृतार्थ किया। और अनेक धर्म शालायें बनवाईं। सभी लोग रात्री को कीर्तन करने लगे। और बाणी का पाठ कंठ करने लगे, फिर गुरू जी ने कहा-देखो जैसे हम को पकड़ा है ऐसे किसी को फिर नहीं पकड़ना। अपितु प्रत्येक की सेवा करनी।

अब गुरू जी से उस पठान ने क्षमा मांगी, तब गुरू जी ने कहा-हे मित्र! जितनी कीमत में तुम ने हमें खरीदा है, उस से अधिक तुम को मिल जाय तब हम तुम को छोड़ कर जायेंगे। उस पठान ने बहुत अनुनय विनय की और कहा-हे महाराज! जो कुछ भी हमारा है तथा जो कुछ भी मेरे

देश वासीयों का है सभी आप का है। आप हमें क्षमा करें जहां भी आप की इच्छा हो जा सकते हो, आप को कोई भी प्रतिबंध नहीं है।

गुरू जी ने कुछ सोच कर कहा—अच्छा वह जो सामणे टीला है वहां जाकर एक पत्थर को उखाड़ लो। संकेत किये हुए टीले से जब पत्थर उखाड़ा गया तो नीचे उस के हीरे लालों से भरा हुआ एक धन कोष देखा, गुरू जी ने कहा—जितना धन चाहो यहां से ले लो, तथा अब हमें जाने दो। सभी ने चर्ण वंदना की, और गुरू जी फिर उसी रोड़ी के स्थान पर आ बैठे।

एक बार वही रुहेला जो पहिले गुरू जी को पकड़ कर ले गया था, फिर आया, उसने गुरू जीको उसी बाल अवस्था में देखा तो फिर पकड़ कर ले गया। घर में जब पठानी ने देखा तो पहिचान कर बोली यह तो वही लड़का है। मैं तो इसे अपने घर में ही रखूंगी, अब उस पठान ने सोचा कि मेरी औरत तो इस पर ही आसक्त हो रही है। दूसरे रोज़ वह पठान गुरू जी को साथ लेकर किसी दूसरे नगर में चला गया, और गुरू जी को बेच कर कुछ घोड़े ले आया। जिस ने गुरू जी को खरीदा था वह आप को अपने घर में ले गया, और घर का सभी काम गुरू जी को सौंप दिया। गुरू जी ने दूसरे दिन उस नगर का अन्न पानी और अग्नि तीनों वस्तु बंद कर दिये। तब सभी नर नारी हैरान हो गये, सभी परमात्मा से प्रार्थना करने लगे हे खुदा यह क्या कहर नाज़ल हुआ है जो सभी कुछ हमारा रुक गया है। अब सभी लोग इकठे होकर अपने पीर मुरशद मनाने लगे, सभी ने बहुत ही ज़ोर लगाया। परंतु कुछ भी न बना, तब गुरू जी ने अपने पठान से कहा—यदि तुम गुरू नानक धर्म को स्वीकार करो तो सभी वस्तु तुम को प्राप्त हो जायेंगी। यदि तुम अपने ही पीर फकीर मनाते रहे तो तुम को कुछ भी मिलने का नहीं, उस पठान ने लोगों को बुला कर कहा—कि मैं जो गुलाम कल खरीद कर लाया हूँ। वह कहता है कि गुरू के शिश्य बनों तब यह खुदा का कहर दूर होगा। नहीं तो कभी भी नहीं

होगा, लोगों ने कहा—भाई मरता क्या नहीं करता चलो इस गुलाम की बात ही मान कर देख लो, वह सभी गुरू जी के शिश्य हो गये। गुरू जी ने अपने पवित्र पांउ धो कर चर्णामृत पिलाया। तब सभी पदार्थ उन को भली प्रकार प्राप्त हो गये, तब सभी ने गुरू जी की अपार स्तुति की। गुरू जी ने उन को सत्य-दया अतिथी सतकार साधू संत की सेवा, धर्म शाला का बनाना, सब से प्रेम आदिक पवित्र उपदेश किया। पहिली प्रकार उस पठान को पत्थर के नीचे से अपार धन दिलाया। उस मुगल ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और कहा—हे महाराज! अब आप पर कोई भी प्रतिबंधन नहीं है, परंतु हे महाराज! मैं आप को किस मुख से कहूँ। कि आप चले जायें, जाना और रहना यह तो आप की इच्छा पर है। गुरू जी ने कहा—भाई! यह माया सभ तेरी है तू इस को संभाल ले। हम तो अब जायेंगे, तब गुरू जी उन पठानों को प्रसन्न करके फिर उसी रोड़ा के ऊपर आ बैठे दूसरे दिन वही रुहेला फिर आया। उस ने फिर गुरूजी को जो बालक बने बैठे थे। फिर ले गया। और किसी और नगर में आप को बेच आया। जो ले गया उस की भी औरत गुरू जी को अत्यंत ही चाहने लगी। जो गुरू जी को खरीद कर ले गया था, उस ने गुरू जी को कहा—हे लड़के! तू हमारे दुंबे चराने जाया करो। गुरू जी ने कहा—हे मालक! मुझ में एक ऐब है कि मैं जिस दुंबे को छड़ी लगा दूं वह दुंबा मर जाता है। इसी लिये मेरे मां बाप ने मुझे घर से निकाला हुआ है। अगर तुमे विश्वास नहीं तो तुम मेरी परीक्षा लेकर देख लो। पठान ने कहा—अच्छा इस दुंबे को छड़ी लगाओ। जब गुरू जी ने उसे छड़ी लगाई तब वह दुंबा उसी क्षण मर गया। अब उस पठान ने कहा—हे लड़के! अब तू इस दुंबे को जीवित कर के दिखा। फिर मैं तुमको और कोई काम दे दूंगा गुरू जी ने उस मरे हुए दुंबे को कहा—हे दुंबे! चर बस वह दुंबा उठ कर घास चरने लग पड़ा। फिर उस मुगल ने कहा—हे लड़के आज से तू मेरे बागकी हिफाजत किया कर तब गुरू जी ने कहा—हे मुगल!

मेरे जाने से तुमारा बाग सूख जायेगा। परंतु मुगल न माना। वह गुरु जी को साथ लेकर बाग में गया। तब उसी क्षण सारा बाग सूख गया। तब मुगल ने कहा-हे लड़के! तूं बाग से बाहर आ जा। जब गुरु जी बाहर निकले तो उसी क्षण बाग पहिले की भांति सब्ज़ हो गया। परंतु गुरू ज़ी की अपार माया ने पठान की बुद्धि नाश कर रखी थी, उस ने अभी तक भी गुरू जी को नहीं पहिचाना। फिर उस मुगल ने कहा-हे बालक! तूं मेरे दाने पीसने का काम करो, गुरू जी ने कहा-मुझे तो स्वीकार है। परंतु आटा कहां से प्राप्त करोगे? क्योंकि जन्म से लेकर आज तक मेरा पेट नहीं भरा है, मेरा आहार सौ मन दैनिक हैं। उस पठान ने कहा इस कोठी में सौ मन कणक है। उसे तुम पीसो, फिर देखूंगा कि आटा किधर चला जाता है। फिर दूसरे नौकरों से कहा तुम इस लड़के को गंदुम निकाल कर दे दो, अंत तो गत्ता सभी कणक चक्की में डाली गई। गुरू जी ने हाथ भी नहीं लगाया, परंतु चक्की चलती रही। और एक तोला भी आटा नहीं निकला, जब यह दृश्य मुगलानी ने देखा तो उस ने शोर मचाना शुरू कर दिया। हे मालक यह लड़का तुम कहां से ले आये हो, इस ने तो हमारा घर तबाह कर दिया है, पठानी का शोर सुन कर लोग इकठे हो गये। इतने में वह पठान भी आ गया, जब उस ने यह कौतुक देखा तो हैरान होकर कहने लगा कि यह लड़का तो कोई औलिया अथवा पैगंबर है। अब वे सभी गुरू जी के पांव पर गिर कर कहने लगे-हे महाराज! हमें क्षमा कर दो, और आज से तुम स्वतंत्र हो जिधर आप की इच्छा हो उधर जा सकते हो! गुरू जी ने कहा-हे भाई! जितने रुपये तुमारे खर्च हुए हैं, उन से दूने जब तुमें मिलेंगे तब हम जायेंगे। गुरू जी लक्ष्मी देते थे, परंतु मुगल नहीं लेता था। फिर गुरू जी ने अपनी रोटी में से एक लाल निकाल कर दिया, और कहा कि यदि तुमें इस का मूल्य कम मिले तो यह लाल मेरे पास लौटा कर ले आना। लाल लेकर वह मुगल एक जौहरी के यहां गया उस ज़ौहरी ने लाल देख कर कहा-हे भाई!

इस की कीमत तो मेरे पास नहीं हैं। अपितु जितने रुपये तुम को दरकार हो सो ले जा सकते हो। अब वह मुगल लाल लेकर गुरू जी के पास आ कर कहने लगा, हे महाराज! यह लाल आप ही ले लो तब मुझे प्रसन्नता होगी। तब गुरू जी ने कहा-हे भाई! आप तो लोगों को बेच कर पेट पूजा करते थे जिस से तुमें नर्क भोगना पड़ना था परंतु अब तो उस परमात्मा की तुम पर कृपा हो गई है। तथा तुम को लाल देकर कुकर्म से बचा लिया है।

बस फिर क्या था। वह मुगल गुरू जी के चर्णों में गिर गया। तथा गुरू जी का शिश्य हो गया। देखा देखी बहुत से मुगल गुरू जी के शिश्य बन गये, और सभी वाहिगुरु नाम स्मर्ण करने लगे। गुरू जी ने उन को दिव्य उपदेश दिया। तथा कहा कि किसी जीव को न पकड़ो और न ही बेचो। अतिथी की सेवा करो। दीनों पर दया करो। परमात्मा को सर्व व्यापक जान कर पाप से बचो। धर्मशाला बनवाओ कीर्तन लंगर नित्य प्रति लगा रहना चाहीचे। सत्य बोलो पर स्त्री को माता जानो पर धन को मटी मानो। तथा अपने समान सब प्राणी जान कर सभी से प्रेम करो। दशमांश दान देना मनुष्य का परम कर्तव्य है। इस प्रकार परमोतम उपदेश देकर गुरू जी वहां से रवाना हुए। उन का कल्याण करके जगत के स्मामी गुरू जी फिर उसी रोड़ी पर जा कर अपना आसन बिछा कर बैठ गये।

॥ साखी काबल की मसीत की ॥

एक दिन गुरू जी महाराज हमें साथ लेकर काबल में जा पौंहचे। और एक मसीत में जा बैठे। जब वहां का काजी आया तो उस ने गुरू जी को कहा-आप लोग हिंदु नजर आ रहे हो तथा यह मसीत एक प्रसिद्ध मुल्ला की है, गुरू जी ने कहा-हे भाई! हम तो इसी स्थान पर बैठेंगे। तब वह काजी गुरू जी को बहुत ही कहने लगा कि तुम नकलि जाओ,

तब गुरू जी ने कहा–हे काजी क्या तुम इस मसीत को रख लोगे। तब उस ने कहा–कि भला मसीत कहां जायेगी। और इसे कौन ले जायेगा। तब गुरु जी ने कहा–हे काजी अहंकार न करो। फिर उसी क्षण गुरु जी उस मसीत पर चढ़ बैठे और वह मसीत कावल के इर्द गिर्द चक्कर लगाने लगी। यह देख कर कावल निवासी हैरान हो गये। तब मसीत का स्वामी काजी भी आ गया। देख कर हैरान हो गया। और कहने लगा हे मित्रो! यह तो कोई पहुंचा हुआ साधू कामल फकीर है। और करामात का धनी है, यह कह कर कुछ आदमी साथ लेकर और अपने हाथ बांध कर प्रार्थना करने लगा। हे खुदा के दोस्त! तुम को जिस ने जन्म दिया है, वह धन्य माता है। उसी की दोहाई देकर प्रार्थना करता हूँ कि इस समजिद को खड़ी कर, फिर गुरू जी ने सब के साहमणे मसीत को खड़ी कर लिया। फिर तो सभी लोग गुरू जी के चर्णों में आ गिरे। तब गुरू जी ने मुसलमानों को कहा कि तुम दाहना पैर पूजो। तथा हिंदुओं को कहा–कि तुम बाया पैर पूजो। यह सुन कर गुरू जी ने अपने औगुड़ कहला कर अपने शिश्य किये, उन सब ने गुरू जी की आज्ञा का पालन किया तथा सब को कहा–कि तुम सत्य नाम का यप किया करो। फिर आप ने एक पवित्र शब्द उचारण किया–

॥ शब्द ॥

मुल्लां दिल सिउ दिलहि मिलावै। तब भेद साहिब का पावै ॥ १ ॥ खालक खसम खैर अर खूबी इस दिल में तसबी तोसा दिल दे अंदर चढ़े शरीनी शकर खंड समोसा ॥ २ ॥ दिल में तालब तीरथ कीआ दिल में मुहमद जाना। दिल में हसन हुसैन फातमा दिल ही में मौलाना ॥ ३ ॥ दिल में मेहर मुहबत काबा दिल में गोर सतानी। हक हलाल दोऊ दिल भीतर खाइ पछान पछानी। दिल में ग्यान कथा, अर पूजा दिल महि रब रसूलू। नानक खोजी दिल में खोजे तां दरगाहे पवहि कबूलू ॥ ४ ॥

अर्थ वारतक ॥

उपरोक्त शब्द का गुरू जी ने खुलासा उत्तर देकर उन को परम कृतार्थ किया।

फिर गुरू जी ने अपनी सूरत शकल अजीब सी बना ली, जैसे कोई नीम बैरागी सा होता है। एक पैर में बड़ा सा पैर जूती का पहिना, तथा एक पैर में खड़ांवां और ऊपर एक भगवी चादर ओढ़ ली। एक चादर लक में बांध ली शिर पर टोपी पहिन ली, मस्तक पर तिलक लगा लिया। तथा अपने मन की मौज से इधर उधर घूमने लगे, और गले में अंबुए रंग का चोला पहिन लिया। गुरू जी को देखने वाले कुछ तो हिंदु कहते और कुछ मुसलमान समझते थे। हिंदु मिल कर प्रणाम करता तो वैसा हिंदुओं जैसा उत्तर देते तथा मुसलमान के सलामोलेकम कहने पर मुसलमाना उत्तर देते थे, इस शक्ल में गुरू जी ईश्वर का उपदेश देते फिरे, जो कोई गुरू जी का दरशण करता सो निहाल हो जाता था। गुरू जी का यह उपदेश था कि पहिरावा चाहे कैसा भी हो, परंतु मन में परमात्मा की अनन्य भक्ति चाहीये बाहर का दिखावा उस के दरबार में कोई ताकत नहीं रखता, यदि बाहर से साफ सुथरा हो और दिखावे के लिये माला चऊदिक लगाने से कोई मोक्ष को नहीं पाता। इस प्रकार कह कर गुरू जी आगे रवाना हुए।

॥ साखी मूले खत्री की ॥

गुरू जी फिरते फिरते एक दिन मूला नामक क्षत्री के घर जा पौंहचे, मूले की स्त्री ने गुरू जी को देखा तो भाग कर भीतर चली गई। जाकर पति को कहने लगी जी आप का एक दोस्त जिस का नाम नानक है, वह बुरी हालत में आया है। आगे तो घोड़ी पालकी पर सुवार होकर आता था, और पोशाक भी अच्छी होती थी। परंतु आज तो ऐसे मालूम होता है जैसे किसी ने उसे लूट लिया है। और ऐसा मालूम होता है कि तुम से

कुछ मांगने के लिये ही आया है। अब तुम छुप जाओ।

इतने में गुरू जी ने मूले को आवाज दी। तब मूला भीतर कोठरी में जा छुपा। अब गुरू जी ने उस की स्त्री से पूछा कि बीबी जी मूला कहां है। तब उस ने कहा– मूला तो घर नहीं। तब गुरू जी ने जोर से कहा–हे मूला! हम तो तुम को मिलने के लिये आए हैं। और तू आगे से छिप कर बैठ गया है। तब मूले के कर्तव्य पर एक श्लोक कहा–

॥ श्लोक ॥

नाल कराड़ां दोस्ती एवे करे गुवाउ। मरण न जापी मूलिआ आवै किते थाउ॥ १॥

यह श्लोक उच्चारण करके गुरू जी पीछे लौट पड़े। और आकर बाहर बैठ गये।

उधर मूला जब कोठरी में छुपने गया। तब उसे वहां जाते ही सर्प ने काट खाया। भाग कर बाहर आकर कहने लगा। हे भली लोग! वह साधू किधर गया है? वह कहने लगी। वह तो बाहर को चला गया। अब मूला बाहर की ओर चला। परंतु उसे अब जहर का विष चढ़ने लगा, अब मूले को एक चारपाई पर डाल कर गुरू जी के पास ले जाया गया। अब यह बात प्रसिद्ध हो गई कि गुरू जी मिलने आये थे, परंतु मूला कोठरी में जा छुपा था। तथा वहां उसे सर्प ने काट लिया है। जिस से उस की मौत हो गई है। फिर लोगों ने गुरू जी से फरयाद की हे महाराज! मूले से भूल हो गई है। आप कृपा करके इसे प्राण दान दीजिये। आप तो दयालू तथा काल के भी काल हो। यम राज तो आप का एक साधारण सा अनुचर है। गुरू जी ने कहा हे मित्रो! मूला तो मर चुका है, परंतु सर्प के डसे की मुक्ती नहीं होती। परंतु इस की मुक्ती अवश्य होगी। अंत समय इस ने हमारा दर्शण किया है। हम इस की सदगति ज़रूर करेंगे। अब तुम इसे शीघ्र ही घर को ले जाओ। उस समय अंतिम स्वास थे। मूले को लोग घर ले आये। जहां आते ही उस के प्राण

ऊपर से शिला (पहाड़ का टुकड़ा) गिरा दी। वह शीला मार्ग के वृक्षों को तोड़ती २ नीचे की ओर आ रही थी। गुरू जी ने देखा। तब अपना हाथ ऊंचा कर लिया। उस शिला में गुरू जी के हाथ की हथेली खुब गई। तथा शिला उसी स्थान पर रुक गई। ऊपर से वली कंधारी ने सब कुछ देखा। तथा शर्मिंदा हो कर देखने लगा। तथा गुरू जी की महता को मान गया। भागा २ आया और गुरू जी के चर्णों पर गिर कर प्रार्थना करने लगा। तब गुरू जी ने वली को कहा-हे मित्र! पहिले अहंकार त्यागो, तब तुमारा कल्याण होगा। इस प्रकार वली का तप्त हृदय शांत करके गुरू जी आगे की ओर रवाना हुए।

॥ साखी कशमीर के पाली की ॥

अब गुरू जी कशमीर की अलौकिक मन हर भूमी में जा पौंहचे, एक पर्वत पर गुरू जी ने अपना आसन लगाया गुरू जी को एक ही स्थान पर बैठे २ बारह दिन व्यतीत हो गये। किसी ने जल तक भी नहीं पूछा, तेहरवें दिन एक अयाली पशु चारता २ आ गया। और कहने लगा आप कौन हैं, तब गुरू जी ने कहा-तुम को हम कौन नज़र आ रहे हैं, उस ने कहा-आप कोई भले पुरुष नहीं नजर आते। जो नगर से बाहर चोरों और डकैतों की भांति निवास कर रहे हो, यदि तुम साधू होते तो अवश्य किसी नगर में जाते गुरू जी ने कहा हे भाई! भले ही हम कोई हों आप अपने घर को जाओ, हम से उलझने का कोई भी लाभ नहीं है। परमात्मा इधर ले आया तो हम इधर आ गये हैं, तब उस अयाली ने हंस कर लौटना चाहा, देखा तो सारा ही अयाल (इज्जड़) मरा पड़ा है। अब वह हैरान होकर कहने लगा या खुदा! यह अभी अच्छे भले थे, अभी २ इन को क्या हो गया है। अब उसे ज्ञान हुआ कहने लगा, यह सभ उसी फकीर की करनी का फल है। अब मैं उस साधू के निकट जा कर अपनी भूल को क्षमा करवाऊंगा, नहीं तो मेरा बुरा हाल होगा। क्योंकि जिन के पशु हैं

वह मुझे क्या कहेगा, और मेरी औलाद का पालन पोषण किस प्रकार होगा। यह विचार कर कशमीरी ने आकर गुरू जी के चर्ण पकड़ लिये, और क्षमा २ की प्रार्थना करने लगा। गुरू जी ने कहा-हे भाई ! अब क्या बात है, तब उस ने कहा-हे दयालू ! मेरा गुज़रान दुंबे चरा कर ही होता है मेरे दुंवे अभी अच्छे भले थे, जब मैं ने आप का दीदार किया। जा कर देखा तो सभी मरे पड़े थे। अब मैं घर जाऊं तो दुंबों का मालक मेरा बहुत ही बुरा हाल करेगा। अब मैं निराश होकर आप की शरण आया हूँ। आप उस परमात्मा के प्यारे हैं तथा दयावान हैं, अब आप ही कृपा करो उस का गिड़ गिड़ाना देख कर दयालू गुरू जी के मन में दया आ गई। कहने लगे हे भाई ! तू प्रत्येक दुंबे के कान में धन्य श्री वाहिगुरू...... यह शब्द कहो, जब अयाली ने इसी प्रकार गुरू जी की आज्ञा पालन की तो एक एक दुंबा उठ कर चरने लग गया। इसी प्रकार वह सारे सावधान हो गये, अयाली हैरान हो कर गुरू जी के चर्ण पकड़ कर कहने लगा हे अंतर्यामी आप मेरे पर मेहर करो। फिर वह अयाली सारी रात गुरू जी की सेवा में ही रहा।

उधर दूसरा दिन निकल आया, इज्जड़ के मालक ने सोचा कि कल का इज्जड़ गया हुआ अभी तक नहीं लौटा चल कर पता करूं, उस ने वहां आकर देखा तो दुंबे चर रहे हैं और पाली गुरू जी की सेवा में बैठा हुआ है। उस ने भी गुरू जी को प्रणाम किया, गुरू जी को रब्बी मस्ती में मस्त देखा तथा अयाली भी मस्त देखा, उस ने गुरू जी से कहा-हे महाराज ! यह अयाली और दुंबे सभी रात्री के समय घर आ जाया करते थे। परंतु इस रात्री को नहीं आए, मैं इस की भाल करके इधर आ गया हूँ इसी बहाने मुझे आप के पवित्र दर्शण हो गये हैं। तब अयाली ने कहा-हे मालक ! यह जो संत जी हैं यह तो साक्षात ईश्वर का रूप हैं, परमात्मा इन के घट में है। शायद आप को कोई संदेह हो, यदि हो तो मेरी बात सत्य मानो और यकीन करो। उस ने कहा कि हे पाली ! तू जो इस संत की स्तुति

करते हो, सो तुम को यह ज्ञान किस प्रकार है ? तब अयाली ने सारी बात आद्योपांत सुनाई। जिस प्रकार वह गुरू जी के निकट आया और कहा कि तुम कोई चोर या डाकू हो, फिर दुंबों का मरणा फिर जीवित होना सभी बात विस्तार से कही। तब गुरू जी ने कहा कि अब तुम अपने दुंबे ले जाओ, तब वे अपने पशु ले गये।

अब सारे नगर में यह चर्चा होने लगी कि यह जो साधु हैं वह परमेश्वर का ही रूप है। तथा यहां के लोगों ने उन को पानी तक भी नहीं पूछा। तब सभी लोग गुरू जी के चर्णों में आपड़े और क्षमा प्रार्थना करने लगे। हे महाराज ! हम ने आप की सेवा कुछ भी नहीं की। हम बहुत ही पापी और अधम हैं। आप दयालू हो हम आप के बच्चे हैं। माता पिता और गुरू हमेशा संतान पर कृपा ही करते हैं। सो आप कृपा करो। तब दयालू गुरू जी ने उन की बुराई क्षमा करदी। और उन को उतम उपदेश दीया। तथा नाम जपने का पवित्र उपदेश दिया। और उन को नेक रास्ते पर डाला। वह सभी गुरू जी के शिक्ष बन गये।

एक साधू कशमीर में निवास करता था। उस ने गुरू नानक जी महाराज की स्तुति सुनी। उस ने गुरू जी के दरशण की लालसा की। उस पंडित के गले में शाल ग्राम की प्रतिमा थी। तथा पूजा का सामान सदैव उस के बगल में रहता था। वह कटर सनातन धर्मी हिंदु साधु था, उस ने श्री गुरू नानक देव जी महाराज को राम राम कह कर एक आसन पर बैठ गया। गुरू जी ने कहा-हे पंडित जी ! आप ने कोई गुरू भी धारण किया है अथवा नहीं। उस ने कहा हे संत जी आप जिस को कहो मैं उसे गुरु धारण करने को तैयार हूँ। जिस से मन एकाग्र हो जाय। तब गुरू जी ने कहा हे पंडित जी मन तो गुरू धारण किये बगैर कभी भी एकाग्र नहीं होता। तथा आप ने जो गुरू के लिये पूछा है सो आप उद्यान में चले जाओ वहां साधु मिलेंगे उन से भली प्रकार गुरू का पता मिल जायगा, अब वह पंडित वन में गया। वहां उसे चार साधू बैठे हुए मिले, नमस्कार

करके एक ओर बैठ गया। उन में से एक ने पूछा हे पंडित जी! आप अपने आने का कारण बताओ, तब उस ने कहा–मैं गुरू की भाल कर रहा हूँ। यदि आप कुछ जानते हो तो कृपया बताओ। कि मैं किस को गुरू धारण करूं? उनों ने संकेत करके कहा हे ब्राह्मण देवता वह जो ऊंचा मकान है उस में तुमारा गुरू है। आप उस के पास जाओ। ब्राह्मण वहां गया तो जब मकान के भीतर देखा तो एक परम सुंदरी औरत रक्त वर्ण के सुंदर वस्त्र पहिरे बैठी नजर आई। वह अपने ही ध्यान में खेल रही थी। उस के पांवों में जूता था उस ने जूती फैंकी। वह जूता इस पंडित के शिर पर लगा। वहां से रोता चिल्लाता वह पंडित फिर उनीं संतों के पास आया। उनों ने पूछा कि क्या आप को गुरू मिला है। तब उस ने तमाम वार्ता सुनादी। उनों ने कहा–हे मित्र! जिस की तुम पूजा कर रहे हो वह तो माया है। इतनी सुन कर वह पंडित फिर लौट कर गुरू जी के पास आया। और गुरू नानक देव जी के चर्ण पकड़ लिये, और जो कुछ सामान वह उठाई फिरता था। वह सभी फैंक दिया। सभी पुस्तकें लुटा दीं और श्री गुरू नानक देव जी का शिष्य बन गया तव गुरू जी ने उस के नमित एक श्लोक उचारण किया।

॥ श्लोक श्री गुरू जी ॥

गुरु मिलिऐ मन रहसीऐ ज्यो वुठै धरन सीगार। सभ दिसे हरयावली सर भरे सुभर ताल। अंदर रचे रंग ज्यों मजीठै लाल गुलाल। कमल विगसैं सच मन गुर कै सवद निहाल। मनसुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहाल। फाही फाथे मृग ज्यों सिर दिसै जम काल। खुदिआ त्रिशना निंदा बुरी काम क्रोध विकराल। एनीं अखीं नदर न आवही जिचर सवद न करे प्यार। तुद भावै संतोखीआ चूकै आल जंजाल। मूल रहै गुर सेविऐ गुर पउड़ी बो हिथ नानक लगी तत लै तू सचा मन सच ॥१॥

॥ वारतक ॥

जब यह शब्द गुरू जी ने उचारण किया तब और पंडित कशमीर के

मिल कर गुरू जी के निकट आ बैठे। और कहने लगे हे महाराज ! हम सभी वेद पाठ करते हैं और पुराणों को श्रवण करते हैं। परंतु हमारे मन से अहंकार नहीं जाता, आप ऐसी कृपा करो जिस से हमारा अहंकार दूर हो जाए। तब गुरू जी उन की प्रार्थना सुन कर पंडितों के नमित एक शब्द उचारण किया।

श्री राग महला १ ॥

लब कुता कूड़ चूड़ा ठग खादा मुरदार। पर निंदा परमल मुख सुधी अग्नि क्रोध चंडाल। रस कस आप सलाहणा एह करम मेरे करतार ॥१॥ बाबा बोलीऐ पत होय। उत्तम से दर उत्तम कहीअहि नीच करम बहि रोय ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रस सुइना रस रुपा कामण रस परमल की वास। रस घोड़े रस सेजा मंदर रस मीठ रस मास। एते रस सरीर के कै घटि नाम निवास ॥२॥ जिस बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाण। फिका बोल विगुचणा सुन मूरख मन अजाण। जो तिस भावहि सो भले होर कि कहण वखाण ॥३॥ तिन मति तिन पति तिन धन पलै जिन हिरदै रिहा समाय। तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिओ काय। नानक नदरी बाहरे राचे दान न नाय ॥ ४ ॥ १ ॥

॥ परमार्थ ॥

श्री गुरू नानक देव जी फरमाते हैं हे पंडित जी ! लोभ इस सरीर में कुत्ते की भांति है। झूठ चंडाल है और ठगी करमी मुरदे के समान है, तथा परनिंदा चूहड़ी के सदृश्य है, मल अग्नि के तुल्य है, रस कस आदिक बुरे कर्म हैं। बताओ परमात्मा का नाम भीतर कैसे प्रवेश कर सकता है जब तक सतसंग न हो तब तक मन की शुद्धि नहीं हो सकती उत्तम कर्म करने वाला उत्तम होता है, तथा नीच कर्म करने वाला नीच कहलाता है। हे पंडित जी नाम स्मर्ण करने से तथा नाम जपने एवम मनन करने से शरीर में शांति का वास होता है। और वही मुक्ति को प्राप्त होता है, यह सुन कर वह पंडित जी श्री गुरू जी के चर्णों पर पड़ गये। और गुरू जी

के शिश्य हो गये, गुरू जी ने फरमाया हे मित्र ! विद्या का अभिमान नहीं करना। संतों की सेवा अतिथि सन्मान सदैव करना उत्तम है नाम जपना दान करना मिथ्या भाषण नहीं करना। यह परम धर्म कहा है, यह कह कर गुरू जी वहां से चले।

॥ साखी अजित्ते रंधावे की ॥

एक दिन श्री गुरू नानक देव जी नगर कर्तार पुर में एकांन में बैठे थे। उस समय आप ने एक शब्द कहा-

॥ श्री राग महला १ ॥

कोटि कोटी मेरी आरजा पौण पीअण अपिआउ । चंद सूरज दुइ गुफै न देखा सुपने सौण न थाउ। भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवड आखा नाउ। साचा निरंकार निज थाउ। सुण सुण आखण आखणा जे भावै करै तमाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंखी होइकै जे भवां सै असमानी जाउ। नदरी किसे न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ। भी तेरी कीमति न पवै हउ केवड आखा नाउ ॥ २ ॥ कुसा कटिआ वार वार पीसन पीसा पाउ। अग्गी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ। भी तेरी कीमति न पवै हउ केवड आखा नाउ ॥ ३ ॥ नानक कागद लखमणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ । मसु तोटि न आवई लेखण पौण चलाउ। भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवड आखा नाउ ॥ ४ ॥

॥ वारतक ॥

यह शब्द जब गुरू जी ने वैराग्य पूर्ण कहा-तब इसे अजिते रंधावे ने भी सुना। सुन करके भयभीत हो गया। गुरू जी को उस ने पूर्ण वैराग्य में देखा। अत्यंत उदासी में देख कर वह हाथ जोड़ कर बैठ गया। गुरू जी को वैराग्य में देख कर बहुत ही उदास हो गया। जब दो घड़ी इसी प्रकार व्यतीत हुई तो उस ने गुरू जी को दया में देखा। गुरू जी ने कहा-हे बेटा तुम भयभीत क्यों हो रहे हो ? अजिते ने कहा-हे महाराज ! आप

का पवित्र शब्द सुन कर मेरे मन में अनेकों प्रकार की बातें आई हैं। तब गुरू जी ने कहा–हे बेटा ! जो कुछ तेरे मन में है सो तू हम से कहो, हमारी ओर से उतर पूर्ण दिया जायेगा। तब उस ने कहा–हे गुरुदेव ! यदि आप दयालू हुए है तो कृपया मुझे ऊपर के शब्द का भाव समझाओ। तब गुरू जी ने कहा–हे अजिते। तू धन्य है जिस ने यह प्रश्न किया है। शिश्य और पुत्र तेरे जैसे ही होने चाहीये। जिस के द्वारा सिखी का उद्धार हो। अब तू इस पद का विचार हम से ध्यान पूर्वक सुन। यदि कोई कहे कि मैं उस बे शुमार की कीमत पालू–तो कभी भी नहीं पाई जाती, अनेकों लोग यत्न करते हैं। यदि कोई कहे मैंनें पवन का आहार किया हैं। तो यह नहीं होता। जब तक चंद्र सूर्य एक गुफा में न हों तब तक स्वप्न में भी सोना नहीं प्राप्त होता, और सत्य पुरुष का जो निवास हैं सो उस के निज स्थान में है। यदि उसे देख ले तो बस आवा गमण से वह प्राणी रहित हो जाता है। निज स्थान का भाव यह है कि घट में ही उस परम पुरुष का निवास है, जो इस उत्तम रहस्य को जान जाता है। परमात्मा सर्व व्यापक है परंतु किसी ने देखा नहीं है, कि वह परमात्मा किस रंग रूप में है। सत्य बात तो यह है कि उस अलेख का कोई भी पार नहीं पा सकता, चाहे कोई कितना भी चतुर हो परंतु उस अगाध परमात्मा की गति को कोई भी नहीं लिख सकता। तमाम पृथिवी कागज़ बन जाय, और जितने वृक्ष हैं वे सभी कलम का रूप धारण कर लें, तथा जितने समुद्र हैं वे सभी स्याही अर्थात दुवात बन जायें। और शारदा जैसे वक्ता कहने वाले हों और लेखक गणेश जैसे हों, और जितनी पृथिवी की आयु है तव तक लिखते चले जायें, तो भी उस परमात्मा की महिमा का पार नहीं पा सकते।

तव अजिते ने कहा–हे महाराज ! जो लोग वेदादिक सदग्रंथों के कहे अनुसार आचरण करके कैहते हैं कि हम ने उसे प्राप्त कर लिया है। इस का क्या तातपर्य है ? यह संसार अनेकों ही उलझनों में पच पच कर

मर रहा है। मुझे तो यथार्थ कहने की कृपा करें, तब गुरू जी ने एक श्लोक उच्चारण किया–

॥ श्लोक ॥

न भीजै रागी नादी बेद। न भीजै सुरती ज्ञानी जोग। न भीजै सोगी कीते रोज। न भीजै रूपी माली रंग। न भीजै बाहरि बैठिआ सुन्नि। न भीजै भेड़ मरहि भिड़ सूर। न भीजै केतक होवै धूड़। लेखा लिखीऐ मन कै भाइ। नानक भीजै साचै नाइ।

॥ वारतक ॥

हे अजिता! वह परमात्मा अगम्य अपार है, वह बे परवाह वेदादिक के बंधनों से मुक्त है। यदि कोई कहे कि मैं अपार बली योधा तथा पंडित हूं। मैं उसी बल से उस तक पहुंच सकता हूँ। यह बिलकुल असत्य है। वह तो केवल अनुभव का विषय है। संसार की किसी चतुराई से वह ईश्वर जाना नहीं जाता। वेद शास्त्र योगाभ्यास आदिक सभी मनुष्य कृत श्रेणीयें हैं परंतु वह अपार परमात्मा इन से दूर है। उपरोक्त सभी कुछ तीन गुणों का जाल हैं। हे भाई! जती रह कर सत्य भाषण करना उत्तम है। चिंता और निंदा इन से दूर रह कर सभी कुछ उस की इच्छा समझ कर निश्चिंत रहना उतम है।

॥ श्लाक ॥

जूठ न रागी जूठ न बेदी॥ जूठ न चंद सूरज की भेदी॥
जूठ न अन्नी जूठ न नाई॥ जूठ न मीह वरिहै सभ थाई॥
जूठ न धरती जूठ न पाणी॥ जूठ न पवणै माहि समाणी॥
नानक निगुरिआ गुण नाही कोइ॥ मुह फेरे मुह जूठा होइ॥३॥

वारतक अर्थ॥

हे अजिते! राग बेदी चंद्र सूर्यादिक स्थान सभी उसी परमात्मा के हैं अतः मिथ्या नहीं हैं। जूठा तो वही है जिस ने गुरू शब्दों से अपना मुख फेर लिया है तथा जो गुरू से हीन प्राणी हैं। उन की क्या गति होगी?

गुरू से विछुड़े हुए प्राणी फिर कभी भी गुरू जी से नहीं मिल सकते। यह सुन कर अजिते ने अचंभे में आ कर पूछा हे गुरुदेव ! आप का चिन्ह रूप रंग यही है अथवा और भी कोई है ? तब गुरू जी ने कहा हे अजिता ! तुम ने अच्छी बात पूछी है यह किसी समय दूसरे प्राणीयों के काम आने वाला प्रश्न है। जैसे कोई नट अपना वेष बदलता है और पहिचाना नहीं जाता। उसी प्रकार गुरू भी वेष बदलता है तथा जाना नहीं जाता कि यह गुरू है अथवा कोई और है।

श्लोक ॥

धुंधूकार अजब है एको एक हरिराय ॥
आया आप उकास कर नानक दरस दिखाय ॥ ४ ॥

वारतक ॥

हे अजिते ! धुंधूकार में एक निरंकार ही रहेगा। उस समय अकेला था दूसरा कोई नहीं था। फिर वह अपनी इच्छा से अनेक रूप हो गया। उस के अनेकों कर्म हैं, अनेकों ही दृश्यों में सुभायमान हो रहा है। तथा गुरू के रूप में भी वही सर्व शक्तिमान व्यापक है। जिन को उस का पर्शण हो जाता है उन को ही पूर्ण विश्वास होता है।

॥ श्लोक ॥

हे बबेक एह नाहीं दीसै कपटी भगत। राग पाइ रागणी गावै किसे न आवै गुरू की मत्त। सरापहु अंतर लै बोरे जीवण की एह गति। कहु नानक प्रभु अगम अगोचर कौण जुगतां की होय भगत ॥५॥

॥ परमार्थ ॥

हे भाई अजिते ! कलियुग में धर्म क्षीण होगा, तथा कपटी भगत होंगे। संसार में बड़ा कहलाने का लालच हृदय में होगा, राग रागणी परमार्थ के लिये न होकर केवल उदर पूर्ती के लिये स्वरें लगायेंगे। खान पान के मेले लगेंगे, गुरू का अर्थ कोई २ जानेगा। संसार भोगों में लग जायगा, शब्द की भाल कोई २ करेगा। जो भी संसार में बुराई है, उस की

ओर संसार लग जायेगा। तथा भलाई से लोगों को घृणा हो जायगी।

हे अजिता ! घर घर में आसन और पलंग बिछा कर गुरू बन कर बैठ जाएंगे। तथा प्रत्येक को अपनी पूजा करवाने का चसका पड़ जायगा, नकली गुरू संसार को ठगना प्रारंभ कर देंगे। फिर समय पाकर वह प्रभु स्वयं पाप का संहार करेंगे, जहां २ पापी होंगे। वहां २ उन का संहार होगा, धर्म उदय होगा।

हे अजिता ! कलयुग के लंपट पुरुष सुख के लिये मन्नतें मानेंगे। मिथ्या स्थानों की पूजा करेंगे। पीरों की कबरों पर जा कर नाक रगड़ेंगे और चौरासी का भ्रमण करेंगे। कलियुग के गुरू गुसाईं भी वैसे ही होंगे। उन का अपना उद्धार कठिन होगा। तो वह दूसरों का उद्धार क्या करेंगे। परंतु यह निर्विवाद सत्य है कि गुरू के बिना किसी का भी उद्धार नहीं होगा। संसार की गति खेल तमाशों तथा गीतों की ओर देख कर मैं एक सुझाव रखता हूँ कि तमाम किस्म के हास्य वा विलासादिक भी गुरू शरण प्राप्ति के द्वारा भी हो सकते हैं। जैसे अच्छे २ भोजन गुरू जी के अर्पण करके फिर प्रसाद स्वरूप उन में से जो कुछ प्राप्त हो उसे ग्रहण करना तथा गुरू जी के गीत गाना तथा गुरू सेवा संतुष्ट हो कर विचारणा आदिक संसारिक भोगों में छुपा हुआ नर्क हैं और गुरू सेवा से परमात्मा की प्राप्ति तथा स्वर्गादिक लोकों की प्राप्ति निश्चित है। इस लिये संसारिक सुखों का मार्ग त्याग कर सतगुरू का बतलाया हुआ मार्ग ग्रहण करना ही कल्याण मार्ग हैं।

श्लोक ॥

फंदी दर बाज़ार देवाने ॥ पसरे केसू फूल फुलाने ॥
करे मोह त्रिया लावै अंग ॥ नानक चौरासी का पावै संग ॥

भावार्थ ॥

हे अजिते ! वे किस प्रकार के पुरुष होंगे जो कोई गुरू के जानने वाला साधू होगा उस का संग करेंगे और जो बाज़ारी कार्य करेंगे।

जैसे बाज़ार में जो कूजड़े और भठयारे लड़ते हैं। वैसे ही वे लोग भी लड़ेंगे। और पागलों की भांति बातें करेंगे। और बिखरी पंखड़ीयों वाले पुष्प की भांति आपस में मिल बैठना त्याग देंगे। वे अपनी अथवा पर स्त्री से मोह करेंगे तथा गुरू से विमुख हो जायेंगे। वे चौरासी लाख योनियों में भटकेंगे। तब अजिते ने कहा–हे गुरुदेव ! जो आप के सिख होंगे। आप के ही गुणानुवाद गायेंगे। उन का आप लक्षण कहो। फिर जगत के स्वामी गुरू जी फरमाने लगे–

॥ श्लोक ॥

लुकमे जग्ग गिरासिआ लुकमे की महिमा खूब। लुकमे विचहु गिरासिआ कली काल फाथा सिंघ करतूब। गदहा कड़के निकले बहि बहि हींगहि बान। फिट अवेहा खाया सिर मारै शैतान।

परमार्थ ॥ हे भाई अजिते ! इस कलियुग में जो सचे गुरू के सिख होंगें, उनकी गिणती साधारण ही होगी। एक ऐसा समय भी आयेगा, कि जहां पर टुकड़ा होगा वहीं के ही हो रहेंगे, और उसी के ही गीत गायेंगे। अर्थात धनाड गुरू धारण करेंगे मन में यह भाव होगा कि धनी गुरू धारण करने से हमारा हलवाह मांडा चलता रहेगा। इस प्रकार की सिखी कलियुग में नज़र आयेगी, जिस का खायेंगे उसी के गीत गायेंगे। जैसे जंगल का शेर तमाम उमर भर खान पान में लगा रहता है उस के मन में कभी भी प्रलोक का भय उत्पन्न नहीं होता। परंतु जब वह किसी शिकारी के जाल में फंस जाता है, तब उसे खान पान तथा जंगल की मौज बहार सभी भूल जाती है। तथा उसे अपने प्राणों की पड़ी होती है, इसी प्रकार विषय भोगों में पड़े हुए प्राणी को जब यमदूत पकड़ते हैं तब इसे सभी सुख स्वप्न वत हो जाते हैं और फिर घोर पश्चाताप होता है। उस समय यह प्राणी अपने को कोसता है, और कहता है कि मेरे खाये पीये को धिक्कार है। जो मैं ने किसी पूज्य गुरू की शरण न ली, और न ही अपना उद्धार किया। परंतु "अब पछताये क्या होत जब चिड़िआ चुग गई खेत।"

फिर अजिते ने कहा–हे महाराज ! जो किसी की सेवा करता है क्या उस की सेवा निश्फल जाती है, अथवा उस का कोई फल भी होता है ? क्रिपया यह आप जरूर ही बतायें, इस पर गुरू जी ने फरमाया–

॥ श्लोक ॥

सेवक मोहनि विचोले । काग जोन विष्टा रोले । करै सेवा सतिगुर ना भावै । सो सेवक सेवा खोइ जावै । लिखिआ लेख नाही धरि रंग । नानक तिस ते चुपे चंग ॥ ३२ ॥

॥ परमार्थ ॥

हे मित्र ! जो पुरुष सेवा करके अहंकार करता है, कि अमुक सेवा मैं ने की है । तथा मैं आज बड़ा हो गया हूँ । ऐसा पुरुष कव्वे की योनी में पड़ता है, और उसे विष्टा खाने को मिलता है । जो गुरू को कुछ देकर मन में यह कहता है कि मैं ने गुरू को यह वस्तु दी है । और गुरू तो मेरे आश्रित ही है, यह सोचता हैं तथा गुरू की आज्ञा मानता नहीं है । ऐसा शिश्य गुरू के मन को अच्छा नहीं लगता, तथा उस की की हुई सेवा निषफल ही जाती है । ऐसे आदमी देखा देखी सेवा करता है, उन को कुछ भी फल नहीं होता । इस सेवा से तो सेवा न करनी ही अच्छी है, अगर शुद्ध हृदय से कर्तव्य जान कर प्रेम भाव से सेवा करता है तो उसे अवश्य हीं उत्तम फल की प्राप्ति होती हैं ।

अजिते ने कहा–हे महाराज ! कलियुग के भीतर जो पाखंडी साधु होंगे, और उन की पूजा किस प्रकार होती हैं। आप कृपा करके यह बतायें । तब गुरू जी ने फरमाया–

॥ श्लोक ॥

साध कहाइ मुख बुरा लो बोले । जीआं घात कर अनरथ तोलै । लहै सजाइ दरगहि नाहि ढोई । कहै नानक तिन मिलिआ मुकत न होई ।

हे भाई अजिते ! कलियुग में जिन की अधिक पूजा होने लगे गी । वह बुरे चाल चलन करके खोटी बाणी बोलने लगेंगे । वह तो साधु समझ

आप बलिदान किया है। तथा सदैव कृतग्य रहेंगे। यदि उस समय गुरू जी धर्म की रक्षा न करेंगे। तो सभी हिंदु मलेच्छ हो जायेंगे । फिर वही गुरू दशम अवतार धारण करके अन्य नीति को हस्तगत करेंगे। तथा कोई धर्म बिरोधी होगा, उस का खातमा करेंगे । तथा नवीन धर्म की नींव रखी जायेगी।

॥ श्लोक ॥

बाबा पहिले मैहल सी दसवां प्रगटी आइ। जिस नो बखशे नानका तिस को देइ बुझाइ ॥ ४० ॥

हे अजिते इस पैहले रूप से जो दशम रूप होगा वह निराला ही होगा, और जो मध्य में चोले होंगे। उन के द्वारा शब्दों में प्रचार किया जायगा, तथा दशम चोले में गुरू अपने को प्रकट करेगा। तथा नवीन मार्ग जो हिंदु तथा मुसलमानों से न्यारा ही होगा, उस से न्यारा ही प्रगट करेगा। उसी मारग पर चलने वाले नर नारी उत्तम गति को प्राप्त करेंगे परंतु उस परम धर्म की जो मर्यादा होगी वह कठिन होगी। अनेक नर नारी उस पर चलना कठिन मानेंगे, मन में श्रद्धा परंतु कठिनता उन लोगों को रुकावट पैदा करेगी। फिर भी संसार का आत्मा उसी पवित्र धर्म की ओर अवश्य ही अग्रसर होगा, उस समय दशम अवतार के पीछे तुरक लोग पड़ जायेंगे, परंतु धर्मावतार दशम गुरू उन के हाथ नहीं लगेगा। तथा संसार का कल्याण करेगा।

उस समय अजिते ने कहा—हे महाराज! बाबर को पादशाही कैसे प्राप्त हो गई, तब श्री गुरू जी ने एक श्लोक कहा—

॥ श्लोक ॥

बाबर धाणा काबलो आया हिंदोस्तान। पहिलो मारया सैदपुर होई बहुत कतलाम। रहिंदे बंदी कीती उस सौंपे फेर शैतान। अगो दे जे चेतिऐ तां क्यों होईऐ परेशान। गुरू देख न सकिआ बंद को बहुती मिले सजाइ। बाबर को फुरमाया सभ बंदी देइ छुडाइ। बाबर चरनी ढह पिआ मुझ को

करो दुआइ। पातशाही चिर ताईं करहु फेर न काहे जाइ। बाबर की बेनती सुनी सतिगुर भये दयाल। पातशाही चिर तीकर दितिआ नानक नदरि निहाल ॥ ४२ ॥

॥ श्लोक का अर्थ ॥

हे अजिता! पहिले बाबर ने काबल से आ कर हिंदोस्तान को जीता, उस समय हम सैद पुर में थे। सैद पुर के लोग अत्यंत निर्दय थे, तथा किसी पीर फकीर को नहीं मानते थे। गुरू की आज्ञा से वे मारे गये। और अनेक बंदी किये गये, उन बंदीओं को देख कर गुरू को कुछ दया का संचार हुआ। तब गुरू ने शब्दों द्वारा बाबर को बुलाया, और शब्दों द्वारा ही गुरू ने बाबर को भयभीत किया, तब बाबर ने कहा–हे महाराज आप मुझ पर कृपा करो। तब गुरू ने कहा हे बाबर यह जितने भी बंदी हैं इन को छोड़ दे, बाबर ने कहा–हे कृपालो मैं इन को छोड़ देता हूं। परंतु मैं चाहता हूँ कि मेरा राज्य चिरकालीन तक रहे। गुरू जी ने तथास्तु कहा, और फरमाया हे बाबर! तेरा राज्य बहुत देर तक रहेगा। फिर जब गुरू की इच्छा होगी, तब और को राज्य दिया जायगा। और हे बाबर तेरी संतान सिखी भी धारण करेगी। परंतु कुछ २ विरोधी भी रहेंगे, हे अजिते! जब गुरू दशम अवतार धारेगा, तब संसार में शोर बहुत होगा। तथा गुरू की ओर से दुष्टों को दंड का विधान होगा, तब नीच लोग भय भीत हो जायेंगे। फिर गुरू संसार में से अपने शिश्य चुन लेगा। जैसे रेत में से स्वर्ण चुना जाता है उसी प्रकार अपने असली सिख गुरू चुन लेगा। तथा नियम इतने कठोर होंगे, जिस की पालना साधारण पुरुष कर ही नहीं सकेंगे। जब संसारी उन कठिन नियमों को पाल कर एकत्र होकर अरदास करेंगे, तब गुरू को बहुत ही प्रसन्नता होगी।

हे अजिते! गुरू जी का अवतार संसार से पार करने के लिये एक जहाज के तुल्य है। जिस प्रकार समुद्र का पानी खारी होता है, उसी प्रकार संसार सागर भी पापों के कारण खारी है। जो गुरू बाणी के जहाज

चढ़ेगा, वह संसार सागर को पार कर जायगा। जैसे जहाज पर चढ़ने वाला अथाह समुंद्र को पार कर लेता है। और जो गुरू विमुख होगा, उसे जहाज की प्राप्ति कभी भी नहीं होगी। जब जहाज ही नहीं मिला, तब समंद्र को तैरना हो ही नहीं सकता। हे अजिते! गुरू जी के सिख ही संसार सागर से पार होंगे, उन की लाख चौरासी मिट जायेगी। सिख को उचित होगा कि किसी भी सिख की निंदा न करे, और मन का दृढ़ हौसला नहीं त्यागे। तथा सिदक में रहे ललचाये नहीं, ऐसे सिख को जो सूली होनी होगी, वह गुरू की दया से सूल हो जायगी। यह गुरू के अधीन है, हे रंधावा! जो सत पुरुषों के बचन होते हैं वे अमिट हो जाते हैं। तथा गुरू बाणी सहायता करती है, हे अजिते! गुरू की आज्ञा पालन करने वालों के लिये नर्क नहीं है। नर्क तो विमुख नर नारीयों के लिये रचे गये हैं, हे रंधावे! जो संसार को मुख लगाते हैं, उन को संसार की लज्जा मार लेती है। परंतु जो संसार को त्याग कर गुरू शरण प्राप्त करते हैं उनी के अहो भाग्य होते हैं। तथा परम सुख उनी के भाग्य में लिखा होता है, हे भाई! गुरू के दशहों चोले प्रत्येक सिख की मनो कामना पूरण करने वाले एक जैसे हैं। जो इन में कुछ भेद मानेगा वह मूरख होगा, भेद दृष्टी से विश्वास की हानि होती है। विश्वास हीनत से आत्मा निर्बल होता है निर्बलता से विश्वास दूर होता है। तथा यह जीव लाख चौरासी में भटकता रहता है, और कल्याण नहीं पाता।

हे अजिता! इस कलिकाल में अनेक चतुर पुरुष अपने २ मत चला कर जीवों को गुम राह करेंगे। उन से बच कर रहना। गुरुमुख सिख का परम कर्तव्य होगा। भाई! कलियुग है। इस में तो कपट प्रधान होगा।

॥ श्लोक ।

धुंधू कार जो वरतसी ना हिंदु ना मुसलमान। राम रहीम न जाणसी ना को कहे कलाम। गायत्री ना तरपण ना फाइता ना दरूद। ना तीरथ ना देहरा ना देवी की पूज। गुरुमुख कोई ना जानसी नां को लए उपदेश।

इक्को वरतण वरती है ना को करे अदेस। बेद कतेब न जाणसन न दवारा न मसीत। रोजा बांग न वरत नेम ना को कढे हदीस। कोई ना किस की जाणसी ना को करे सलाम। नानक सबद वरतदा जिस कोटी मधी जाण।

॥ परमार्थ वारतक ॥

हे अजिते! जब गुरुदेव! इस धरती से अदृष्ट हो जायेंगे। तब संसार में कोई किसी की बात नहीं मानेगा। और महान अंधकार फैल जायगा, राम को मानने वाले न तो हिंदु रहेंगे। और न ही रहीम को मानने वाले मुसलमान ही नजर आयेंगे। गायत्री-तर्पण-जप तप ग्यान संयम पूजा तीर्थ धर्मशाला मंदिर ना बांग निमाज़ कुछ भी नहीं रहेगा। सभी संसार कुमार्ग गामी हो जायगा, लोक लज्जा तथा परलोक भय सभी के हृदय से लोप-हो जायगा, हां! कहीं २ कोई परमार्थ का नाम लेगा। उस समय एक भक्त प्रकट होगा। जो नील वस्त्र पहिरे तथा अपने भीतर से ही सत्योपदोरा की पुस्तकें उच्चारण करेगा। उस की सहायता के लिये वह सर्व शक्तिमान समर्थ पधारेगा।

तब अजिते रंधावे ने प्रार्थना की-हे महाराज! वह नील वस्त्र धारी कौन भक्त होगा, फिर गुरू जी ने प्रवचन किया हे अजिते ध्यान से सुन।

॥ श्लोक ॥

निह कलंक होइ उतरसी महा बली अवतार॥ संत रखिआ युगयुग करे दुष्टां करे संहार॥ नवां धर्म चलायसी जग होम होवहि वार॥ नानक कलजुग तारसी कीर्तन नाम अधार॥

॥ परमार्थ ॥

हे अजिते! एक समय आयगा, जब धर्म के पीछे मलेछ लोग हाथ धो कर पड़ जायेंगे, अंधकार वरत जायगा। जहां पुन्य कर्म होता होगा, वहीं उस का नाश करने को पापी पहुंच जायेंगे। मलेछों की तूती बजने लगेगी। उस समय एक संत प्रभु पूजन करेगा। तब उस के घर में एक अत्यंत नीच नारी होगी। जो लोगों के आगे जा कर निंदा करेगी। उस

के कारण उस संत को एक दैव्य दुख देगा। उस संत की रचा के लिये गुरु जी अवतार लेंगे। जहां कहीं संत का द्रोषी चुन चुन कर मारा जायगा। और नवीन धर्म को चलायेगा। दुष्टों का संहार करेगा। तथा चौरासी जामे कलियुग में पूरण होंगे।

तब अजिते ने कहा-हे गुरू देव! आप मुझे क्षमा कर दो मैंने आप के सन्मुख वहुत सी बातें कही हैं। गुरू जी ने कहा-हे मित्र तेरी बातें तो महान मंत्र हैं। इंन से संसार का महान कल्याण होगा, इसे सुनने पढ़ने वाला मोक्ष को प्रप्त करेगा। इस में कोई भी संदेह नहीं हैं। परंतु श्रद्धा और भक्ति पूर्ण हो। श्रद्धा तथा प्रेम के चप्पू ही नौका को पार करने के प्रधान साधन होते हैं।

॥ श्लोक ॥

अमर बचन गुरु देव दे जिह जन रिदे बसाय। मुकत मुगत अर माल धन जुगो जुगंतर खाय। शब्द अखर जिस मन बसै खिन महि होय उधार। पुन परमारथ नानका जिस लग तरै संसार। गोसट सतिगुरू निरंकार जी नाल जिते रंधावे किया उचार। जो सिख पड़ै पीत कर सोई उतरै पार॥ दोहरा॥ जन्म मरन तांका मिटै पड़ै जु प्रीत लगाय। जीवन तिस का सफल है नानक नाम धिआय। नानक मूरत नाम जी जपिआं सब दुख दूर। नानक तिस बलिहारने जो सदा रहिंदे हजूर।

॥ गोष्ट अजिते रंधावे की समाप्त॥

॥ साखी समुंद्र की ॥

एक दिन मर्दाने ने कहा हे महाराज! मेरा मन चाहता है कि समुंद्र में जो लंका है वहां का भ्रमण किया जाय, गुरू जी ने कहा अच्छा आप लोग अपने नेत्र वंद करो। जब मैं और मर्दाने ने नेत्र बंद करके क्षण के पीछे खोले तो हम लोग गुरू जी के साथ महान समुंद्र के तट पर खड़े थे, अब गुरू जी ने हमें कहा कि तुम लोग समुंद्र के जल पर वाहिगुरू जप

करते पैदल ही चले आओ, हे गुरू अंगद जी ! हम लोग गुरू जी के पीछे२ उसी प्रकार जा रहे थे जैसे सूखी पृथिवी पर चला जाता है। आगे२ गुरू जी ओम सोहं का यप करते चले जा रहे थे, तब मर्दाने ने सोचा कि हम भी ओम सोहं का जप क्यों न करें। अब मर्दाना भी ओम सोहं की रट लगाने लगा, बस वह लगा गोते खाने। गुरू जी ने पीछे देखा तो हंस कर कहने लगे, हे मर्दाना ! शिश्य का धर्म है कि वह गुरू के बताये मार्ग पर चले, इस लिये तू वाहिगुरू ही जप तेरा उसी में कल्याण है। जब मर्दाने ने वाहिगुरू नाम की रट लगाई तब फिर पूर्व प्रकार पानी पर चलने लगा, गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! तुम जब कभी मनंमानी करते हो तभी तुमें कष्ट होता है। यदि हमारी आज्ञा में रहो तो तुमें कदापि दुख न हो, गुरू की करनी की ओर ध्यान देना शिक्ष का कर्तव्य नहीं। शिश्य का कर्तव्य तो गुरू आज्ञानुगामी होना है, इसी प्रकार चलते २ हम लोग मान सरोवर पर जा पहुँचे। जहां परम सुंदर मोतियों का भोग लगा रहे हस विद्यमान थे, उस दृश्य को देख कर मर्दाना गद गद प्रसन्न हो गया। तथा कहने लगा हे गुरू वर आप धन्य हैं।

फिर गुरू जी की आज्ञा से आंखें बंद करके जब क्षण के पश्चात खोलीं तो हम ने हारू नगर के निकट अपने को पाया। हारू देश का पातशाह एक योगी का सिख था, वह योगी सरेवड़ा था। और अपने आप को वह योगी परमेश्वर कहता था। और राजा उस की आज्ञा भीतर रहता था, उस ने राजा को यह निश्चय दिला रखा था कि मेरे बगैर दूसरा कोई भी परमेश्वर वगैरा नहीं है। मैं ही सभी कुछ हूँ। जो कुछ तुम मुझ से मांगों उसी वस्तु को मैं देने वाला हूँ। वह योगी मंतर यंत्र तंत्रादिक द्वारा हर एक की मनो कामना पूरण करता था। पुत्र पौत्र धन द्वारा यहां तक कि यदि बारश की आवश्यकता हो तो वे योगी बारश बरसा देता था। गुरु जी ने उस नगर के बाहर जाकर आसन लगा लिया। शनै २ ख्याती बढ़ती गई एक दिन राजा प्रजा दोनों ही गुरू जी के निकट गये। सभी

ने गुरू जी को प्रणाम किया। गुरू जी ने कहा–हे राजन ! एक बात सुनी गई है कि तुम लोग परमेश्वर को नहीं जपते तब राजा ने कहा–हे महाराज ! हमारा जो गुरू है। वही ईश्वर है। उस से अतिरिक्त और कोई भी परमात्मा नहीं है। तब गुरू जी ने कहा–हे राजन ! आप लोगों का व्यवहार किस प्रकार चलता है। राजा ने कहा–हे संत जी ! हमे जल अग्नि प्रकाश पुत्र धन आदिक जिस वस्तु की आवश्कता होती है। वह सभी कुछ गुरु देव की कृपा से हमे प्राप्त हो जाता है। भाव यह है, कि हमारी सभी कामनाएं वे गुरुदेव ही पूर्ण कर देते हैं। जब यह बात गुरु जी ने सुनी, तब गुरू जी ने उस योगी की सारी शक्ति खींच ली। उस से वर्षा रुक गई, जब सभी लोग पानी न मिलने से दुखी हुए। यहां तक कि पीने तक को भी पानी न रहा। तब राजा ने प्रजा के चंद बड़े आदमी लेकर योगी के पास जाकर कहने लगे हे योगी जी ! हम लोग तो मारे प्यास के मरने लगे हैं, कृपया वर्षा करो। तब योगी ने बहुत यंत्र मंत्र किये। परंतु कुछ पार न बसाई राजा प्रजा निराश होकर श्री गुरू जी के निकट आकर प्रार्थना कहने लगे। गुरू जी ने कहा–हे राजन ! मींह तभी बरसेगा। जब तुम लोग वाहिगुरु जी से प्रार्थना करोगे तब। सत्य नाम का यप करो। कड़ाह प्रसाद बनवा कर संगत में वर्ताओ, कीर्तन करो तब परमात्मा तुमारी मन इच्छा पूर्ण करेंगे जब गुरू जी की आज्ञा का पूरण रूप से पालन करके दिखाया गया तब बहुत वर्षा होने लगी। तब अनेकों ने प्रार्थना की हे महाराज ! आप हमारे पास ही रहो, फिर इस के पश्चात गुरू जी के अनेकों शिश्य बने। राजा भी गुरू जी का सेवक बन गया, फिर गुरू जी ने अपने पवित्र मिशन का उपदेश दिया। फिर गुरू जी ने उन सभ को एक करके कीर्तन करवा कर सद उददेश दिया, तथा कहा हे सज्जनो ! कोई जन्मने तथा मरने वाला ईश्वर नहीं होता। स्मर्ण तो उसी अयोनी का करना उत्तम है, अन्य का भजन अथवा स्मर्ण लाभ के स्थान पर हानि ही होगी, तब राजा ने जवाहरात का थाल भर कर गुरू जी को भेंट किया। गुरू जी ने कहा

हे राजन ! हमारे पास नाम धन है, इस धन की अब हमें आवश्यकता नहीं मर्दाने ने कहा–हे महाराज ! इन में से दो चार हीरे ही उठा लो कभी काम ही आयेंगे। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! यह तो दुखों का रूप है, और अरे मर्दाने ! हम ने तो तुम को नाम के हीरों का खज़ाना दिया है क्या तुझे उस से तृप्ति नहीं होती मर्दाने को ततक्षण ज्ञान हो गया। तब उस ने गुरू जी के चर्णों में बार बार नमस्कार की और क्षमा याचना की, फिर गुरू जी ने उन सभों को उपदेश देकर आगे की ओर प्रस्थान किया।

॥ साखी सिखों के साथ हुई ॥

एक दिन बहुत से देशों के नर नारीयों का कल्याण करके श्री गुरू जी अपने आसन पर बैठे हुए थे, तब चार सिख गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार करके बैठ गये, तब उनों ने पूछा हे महाराज ! संतों की सेवा करने से क्या लाभ होता है कृपा करके हमें बताओ, तब कृपा के सागर गुरू जी कहने लगे–हे गुरमुखो ! एक ब्राह्मण गंगा के तट पर रहता था, वहां एक ठाकुर जी का मंदिर था वहां संत लोग आया करते थे। क्योंकि वहां संतों की सेवा बहुत होती थी, तहां संत जन बैठ कर ज्ञान चर्चा करते थे। उस ब्राह्मण का डेरा उस ठाकुर द्वारे के निकट ही था जो संत आता था, उस का दर्शण उस ब्राह्मण को होता था। वह ब्राह्मण चमड़े की ढालें बना कर बेचा करता था, संतों का दरशण भी वह श्रद्धा से नहीं करता था। साधारण रूप से संत मंदिर में आते थे तब अचानक उन का दरशण हो जाया करता था। जब उस की जीवन यात्रा पूर्ण होने को आई, तब धर्म राज ने अपने दूतों को आज्ञा दी कि उस पापी ब्राह्मण को पकड़ कर ले आओ। और उसे पीटते हुए लाना, क्योंकि उस ने मनुष्य तन व्यर्थ ही खो दिया है। धर्म राज के दूत उस ब्राह्मण को बड़ी २ हथकड़ीयों तथा बेड़ीयों से बांध कर और मार्ग में खूब मारते हुए घसीट कर ले आये। धर्म राज ने हुकम दिया कि इसे कुंभीपाक नर्क में डाल दो, उस नर्क का मुख तो एक घट

जितना है। परंतु नीचे से वह अनेकों योजनों में हैं, जब उस को फैंका गया तव उस का शब्द हुआ, जैसे किसी कूप में ईंट फैंको तो उस का प्रति शब्द होता है। उस नर्क में अनेकों जीवों के रोने कुरलाने की आवाज़ आ रही थी और भयानक दुर्गंधि भी थी, जब उसे फैंका गया तो दुर्गंधि एक दम दूर हो गई। तथा जो उन जीवों को जलन होती थी वह भी जाती रही, जब यह कौतुक देखा तो चित्र गुप्त ने कहा-हैं यह क्या वही ब्राह्मण है अथवा कोई दूसरा ही ले आये हो ? इस के गिरने से नर्कों की अग्नि ठंडी हो गई है, देखो कहीं भूल से कोई महा पुरुष तो नहीं फैंका गया। यम दूतों ने कहा हे महाराज ! यह तो वही ब्राह्मण है जिस ने अपना धर्म त्याग कर नीच वृत्ती ग्रहण कर रखी थी। सुरापान करता था, मांस मछली आदिक सभी सेवन करता रहता था।

उधर नर्कों के तमाम जीव उस की शरण में आ गये। तब यम राज ने आज्ञा दी कि इस के कर्मों को फिर से देखा जाय। जब लेखा देखा गया तो पता चला कि यह मनुष्य आयु भर संतों का दर्शण करता रहा है, और अनेकों संतों की चर्ण धूड़ी इस के शरीर पर पड़ती रही है, इस लिये इस का शरीर परम पवित्र हो रहा है, तव धर्म राम की आज्ञा से उस को वहां से निकालने के लिये यम दूत आये। कहनें लगे हे भाई ! हम ने भूल से तुम को यहां धकेल दिया है। अब तुम निकल आओ तब उस ने कहा-में तो अब तब निकलूंगा। जब तुम इन सब को बाहर निकालोगे, दूतों ने धर्मराज को कहा हे महाराज वह तो सारे नर्क खाली करवाने मांगता है। नहीं तो बाहर नहीं निकलता। धर्मराज ने कहा अच्छा उस का कहना मान कर सब को निकाल लाओ। तव सभी को मातलोक में भेजा गया। और उस ब्राहमण को बैकुंठ की ओर रवाना किया गया, फिर वह परमात्मा का भजन करने लगा। गुरू जी ने कहा-हे मित्रो ! यह हैं संतों के दरशन का फल। तव उन सिखों ने गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया। तथा परम स्तुति की, कहने लगे हे महाराज ! अब हमारा संशय

दूर हुआ है। तथा आज हमारा कल्याण हो गया है। हे गुरुदेव ! आप में और परमात्मा में कोई भी भेद नहीं है। उस समय गुरु जी ने एक श्लोक कहा।

॥ राग मारू महला पहिला १ ॥

मोहनी मोहि लिये त्रै गुनीआ। लोभ विआपी झूठी दुनीआ। मेरी मेरी करके संची अंत की बार सगल है छलीआ ॥ १ ॥ निरभौ निरंकार दइ अलिआ। जीअ जंत सगले प्रति पलिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एकै सम सर गाडी गड है। एकै सुपने दाम न छड है। राज कमाय करी जिन थैली ताके संग न चंचल चलीआ। एकै प्रान पिंड ते प्यारी। एक संची तज बाप महितारी। सुत मीत भ्रात ते गुहजी ताके निकट न होई खलीआ ॥३॥ होई अवधूत बैठा लाय ताड़ी। जोगी जती पंडित बीचारी। गृह मड़ी मसाणी बन में वसते ऊठ तिनां के लागी पलीआ ॥४॥ काटे बंधन ठाकुर जाके। हरि हरि नाम वसिओ जीअताके साध संग भये जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलिआ ॥ ५ ॥ १ ॥

गुरू जी के इस उपदेश को सभी संगत सुन रही थी, उस में एक खत्री बैठा था जा चार क्रोड़ रुपये की संपदा का स्वामी था। परंतु किसी को भी एक कौड़ी नहीं देता था और न ही कुछ पुन्य करता था। जब उस ने गुरू जी के मुख से शब्द सुना तो उस का हृदय कांप गया। उस नेगुरू जी के चर्ण पकड़ कर कहा—हे महाराज ! आप कुछ मुझे भी उपदेश करो। जिस से मेरा भी कल्याण हो। तब गुरू जी ने कहा—हे मित्र ! एक चत्री तेरे जैसा ही धनी था उस ने जो कष्ट पाया था, वह तुम को सुनाता हूँ। उस के पास जो धन था। उसी के ऊपर बैठा रहता था। किसी को निकट नहीं आने देता था। न ही किसी को खिलाता और न आप ही खाता था। जब अंत समय आया। तब प्रभु का हुकम हुआ इसे केशों से पकड़ जमीन पर मारो। जब उसे यम दूतों ने पकड़ा। तब उस ने पूछा तुम कौन हो। तब उन को उतर मिला हम यम दूत हैं। तथा तुम को धर्मराज के सनमुख

ले जायेंगे। उस ने कहा–आप मेरी एक बात सुनो। दूतों ने कहा–बताओ, उस ने कहा–आप मेरी संपदा का चतुर्थ भाग ले लो और मुझ को छोड़ दो, यह सुन कर दूतों ने उसे बहुत ही मारा, अब उस ने कहा–तुम आधा धन ले लो। उनों ने कहा हम धन लेने नहीं आये हम तुमें लेने को आये हैं। तब उस ने कहा अच्छा तुम मेरी संपदा के तीन हिस्से ले लो मुझे छोड़ दो। फिर उसे यमदूतों ने बहुत मारा। तब उस ने कहा अच्छा भाई सारा धन ले लो परंतु मुझे छोड़ दो। यमदूत बोले तू पागल है। अरे यदि तीन लोकों की संपदा भी मिले तो भी हमारे को स्वीकार नहीं है। हम तो तुम को ही लेकर जायेंगे। तब उस धनी ने कहा–अच्छा ईश्वर के लिये मुझे इस धन से दो चार बातें कर लेने दो। तब यम दूतों ने लक्ष्मी के पास उसे ले जाकर खड़ा कर दिया। उस ने दौलत को कहा–हे दौलत! मैनें तुमारी बहुत सेवा की है। तथा सब से अधिक मैनें तुझ से प्यार किया है, और दिन रात तेरी रक्षा करता रहा हूं। मन में विचार था कि तू मेरे अंत समय में काम आयगी। कष्ट में सहायक बनेगी। हे लक्ष्मी! मैं ने तुमे खाया भी नहीं। अपना आप भूखा रख के भी मैनें तुझ से प्रेम किया हैं, मैं तुझ को सब से अधिक मानता रहा हूँ। अब तू उसी स्थान पर पड़ी है, दो चार कदम मेरे साथ तो चल। लक्ष्मी ने कहा–अरे अधम जीव! तू ने मेरे लिये कोई सुकर्म भी नहीं किया। और नाहीं तू ने अपने किसी मित्र संबंधी के हितार्थ ही मुझ को लगाया। और न ही गुरू अरपण किया। न यज्ञ न हवन। कोई पर उपकार का कार्य तू ने मेरे लिये नहीं किया। न किसी निर्धन को कपड़ा जूता ही लेकर दिया। अरे तूने तो कोई धर्मशाला भी नहीं बनवाई न कूप लगवाया। और भैण भाई को भी देकर सहायता नहीं की। अरे नीच किसी को खिलाना तो एक ओर तुम ने अपने तन के लिये भी मुझे नहीं हिलाया। अरे पापी अगर तू मुझे भले काम में लगाता, तो मैं तुझे वैकुंठ में ले चलती, जहां तुझे अपार सुख मिलता। अरे नीच जैसे तू मुझे तमाम उमर धरती में दबाये बैठा रहा है वैसे मैं भी

तुझे अनंत काल तक नर्कों में डाले रखूंगी। इतनी कह कर लक्ष्मी अंतर ध्यान हो गई, तथा यम दूत उसे मारते पीटते धर्म राज के सनमुख ले गये। तब धर्म राज ने उसे घोर नर्क में डाल दिया।

गुरू जी ने कहा—जो माया को इस प्रकार दबायेगा, तो उस का वही हाल होगा। जो ऊपर की कथा में भली प्रकार कहा गया है, यह सुन कर वह क्षत्री अति भयभीत हो गया। कहने लगा हे महाराज! अब आप मेरा कल्याण करो, गुरू जी ने कहा हे मित्र! तू अब एक धर्मशाला बनवा। उस में संतों की सेवा कर लंगर लगवा, अतिथी की सेवा कर ईश्वर स्मर्ण कर नाम जपना कीरतन करना और धर्म चर्चा नित्य प्रति सुनना यह अपनी दैनिक क्रिया बना। तब तेरा कल्याण होगा। जिस ने धन एकत्र करके रखा है तथा कोई पुन्य कर्म नहीं किया। उसे यह लक्ष्मी नरकों डाल देगी। यह मोहनी है मोह करके पुरुष का घात करती है माया छ रूप है। जो इसे ईश्वर अर्पण लगाता है। उसी का यह कल्याण करती और जो इसे संभाल कर छोड़ जाता है उस की यह दुशमण है। इस सद उपयोग ईश्वर अरपण लगाना है। तब यह परलोक में सुख देती नहीं तो यह नरकों की टिकट है। सतसंग साधू संग और पुन्य करम से यह मित्र बनती है, नहीं तो यह महान दुशमण है। तथा किसी साथ नहीं जाती, यहां ही रह कर इस जीव को नरक में पहुँचाती है। पश्चात गुरू जी वहां से आगे चले।

फिर लौट कर मृतक के कान और रसना सूंघ कर हट गया। तब मर्दा
ने हैरान होकर गुरू जी से पूछा हे महाराज! यह भूखा बाघ इस मृत
को सूंघ कर क्यों चला गया है? तब गुरू जी ने मर्दाने की बात सुन क
बाघ को अपने निकट बुला कर कहा–हे बाघ तुम भूखे हो इस मृतक
मांस क्यों नहीं खाते उस ने कहा–हे महात्मन! आप के दर्शणों से मेरा म
शुद्ध हो गया है। मैं ने इस के तमाम अंग सूंघ कर देखे हैं कोई भी अं
इस का पवित्र नहीं है। रसना से तो इस ने कभी नाम नहीं जपा, श्रोत्रों
कथा वा उपदेश नहीं सुना। पैरों से यह पापी कभी किसी मंदिर गुरद्वा
तक नहीं गया, और न ही तीर्थ यात्रा की है। मन से इस ने किसी
भला नहीं चाहा, हे भगवन! अधिक क्या कहूँ इस का कोई भी अंग उत्त
नहीं है। इस का मांस खाने वाला अधोगति को जायगा, क्योंकि नीच
हे महात्मन! इस के मांस को खा कर प्राण रक्षा करने से तो भूखे मर जा
ही उत्तम है। गुरू जी ने प्रसन्न हो कर उस मृतक और उस बाघ की ओ
देखा तब उन दोनो की कल्याण हो गई। तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना
जो प्राणी पुरुष शरीर धारण करके भी भला काम परमात्मा का स्म
आदिक शुभ कर्म नहीं करते उन का होना निशफल तथा व्यर्थ होता है
मनुष्य देह उत्तम गति प्राप्त करने को मिलती है, जो ऐसा अमूल्य सम
को पाकर भी कुछ नहीं करते उन के समान संसार में कौन मूरख है। उ
की कभी भी सदगति नहीं होती, यह सुन कर मैं और मर्दाने ने गुरू ज
को नमस्कार किया।

॥ साखी राक्षसों की ॥

एक बार हम लोग गुरु जी के साथ एक गहण बन मे जा बैठे। व
अनेकों राक्षस फिरते देखे। मर्दाने का मुख पीला पड़ गया। गुरू जी
कहा–हे मर्दाना! तुम को क्या हुआ है? मर्दाने ने कहा हे महाराज य
जो राक्षस हैं यह तो हमें खा जाएंगे। हे महाराज! आप तो निरभय

और न ही आप को कोई मार सकता हैं। परंतु हम लोग तो बस इन का एक ही ग्रास हो जायेंगे। गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना तू रबाब बजा। और शब्द पढ़ फिर तेरे निकट कोई नहीं आयेगा। जब मर्दाना रबाब के साथ शब्द गाने लगा। तब राक्षसों ने कहा-हे ईश्वर तू धन्य है जो परिश्रम के बिना ही हमें आहार भेज दिया है। उन में जो विशाल कार्य सर्दार था, उस ने कहा-हे मित्रो! आज खुशी का दिन है,जो हमें मनुष्य का मांस खाने को मिला है, इनको खा कर क्षुधा दूर करो जब वह निकट आये तो उन को शब्द की आवाज सुनाई दी। तब उन का मन परम शांत हो गया। वे सभी गुरू जी के और हमारे निकट आकर बैठते गए। तब उस शब्द का भोग पड़ा तो उनों ने गुरू जी के चर्णों में प्रेम सहित प्रणाम किया। सर्दार ने कहा-हे संत जी! हम तो तामस तन के जीव हैं। और हम लोग मनुष्यों का मास खाने वाले हैं। परंतु आप का दरशण करके हमें शांति हो गई है हमें यह निश्चय हो गया है कि आप के पवित्र शब्द से हमें उतम गति मिलेगी। सो हे संत जी! आप हम पर कृपा करके हमारी सदगति करो हे महाराज! हम तो आप को मारने आये थे, परंतु आप के मनोहर गीत ने हमें सातिक कर दिया है। अब हमें विश्वास हो गया है। कि आप की कृपा से हमारा तो अवश्य ही कल्याण होगा। आप दया के समुंद्र हो कृपया हमारी मुक्ति करो। गुरू जी ने कहा-हे भाई! तुम सत्य नाम प्रभु का स्मर्ण करो और हारू नगर में जाओ वहां हम सिखी का सागर लगा आये हैं। वहां उन लोगों के साथ सतसंग करो। और धर्मशाला में सेवा किया करो, और प्रभु नाम जपा करो, तब तुम लोगों की अवश्य ही सदगति होगी। वहां प्रसाद जो कड़ाह प्रसाद मिले उसे खाने से तुमारे पाप दूर होंगे। फिर तुमारी मुक्ती होगी। यह कह कर गुरू जी आगे की ओर चले।



॥ साखी लंका नगर का ॥

बाला कहने लगा हे महाराज! मैंने एक दिन श्री गुरू नानक देव जी महाराज के आगे प्रार्थना की। हे गुरू जी मेरा मन चाहता है कि राजा राम चंद्र जी ने जिस लंका को जीत कर तथा रावन को मार कर भारत की शान को चार चांद लगाये थे उस लंका को देखूं। तब गुरू जी ने कहा-हे बाला! और मर्दाना! तुम दोनों नेत्र बंद करो। जब हम ने अपने नेत्र बंद करके क्षण के पश्चात खोले तो हम रामेश्वर के स्थान पर सागर के किनारे खड़े थे। मर्दाने ने वहां शिव मंदिर देख कर गुरू जी से पूछा हे महाराज! यह शिव मंदिर कैसा है। तब गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! जब राजा राम चंद्र ने लंका पर चढ़ाई की थी, तब यहां राम जी ने जीतने की कामना से शिव जी की पूजा की थी। फिर बानरों की सहायता से एक विशाल पुल बांधा गया था, उसी पुल के द्वारा बानर सेना समुंद्र के पार गई थी। मैनें (बाले ने) कहा-हे महाराज! यदि राम चंद्र चाहते तो समुंद्र को सुखा सकते थे, तथा सेना को पार ले जाते। तब गुरू जी ने कहा-हे बाला! राम भगवान मर्यादा पुरुषोतम थे। यदि समुंद्र को सुखा देते तो अनंत जीव जो समुंद्र में ही निवास करते हैं। वे सभी व्यर्थ ही मर जाते। श्री राम चंद्र जी ने यह विचार कर तथा दयातुर हो कर पुल बांधना ही उतम जाना था यह सुन कर बाले ने श्री गुरू नानक देव जी के चर्णों पर प्रणाम किया।

फिर गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! चलो आप लोगों को लंका दिखा लायें। मर्दाने ने कहा-हे गुरू जी पुल पर से ही चल पड़ते हैं तब गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना! पुल पर से नहीं जाया जायगा, क्योंकि पुल तो भगवान राम की आज्ञा से आती बार तोड़ा गया था। अब हमें लंका में किसी दूसरे तरीके से जाना पड़ेगा, तब गुरू जी समुंद्र के जल के ऊपर से चल पड़े तथा पीछे २ हम भी सत्यनाम वाहिगुरू

का स्मर्ण करते चलने लगे। जब हम लंका के निकट पहुँचे तो वहां अनेकों राक्षस फिरते देखे, मर्दाना उन को देख कर डर गया। अंतर्यामी गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! इस देह को अनित्य जान कर ईश्वर स्मर्ण कर।

इतने में दो राक्षस गुरू जी के पास आये, तथा वे कहने लगे भाई ! तुम कौन हो और कहां से आ रहे हो ? गुरू जी ने कहा–हे मित्रो ! हम भगवान राम के दूत हैं और विभीषण को मिलने आये हैं। उनों ने राजा विभीषण को जा कर कहा–कि तीन आदमी आप से मिलना चाहते हैं, वे कैहते हैं कि हम रामचंद्र के दूत हैं। विभीषण ने जब यह सुना–तब मंत्री को साथ लेकर नंगे पैर गुरू जी के निकट पहुंचा। गुरू जी के चर्णों में प्रणाम करके फल पुष्पादिक भेंट आगे रखे। तब गुरू जी ने कहा–हे विभीषण जी ! आप कब से राम भगवान से जुदा हुए हो। विभीषण ने कहा–हे संत जी जुदाई तब होती है जब मन से भूला जाय। हे संत जी ! मैं तो एक क्षण भरके लिये भी भगवान राम को नहीं भूलता, हे महाराज ! जब मैं ने राम भगवान के दरशण किये तो मैंने यह समझा कि राज्य भोग आदिक अंधकूप की भांति है प्रथम भेंट में भगवान ने कहा–आओ लंका पति ! मैंने प्रभु प्रार्थना की हे महाराज ! मुझे राज्य का लोभ नहीं है, भगवान ने कहा–हे विभीषण जब तुम पहिले घर से चले थे। तब तुमारे मन में राज्य पद की इच्छा थी। हे भक्त राज ! हमारी यह मर्यादा है कि पहिले किसी भक्त की जो प्रथम कामना हो उसे पूर्ण करते हैं, पीछे निष्कामता प्रदान करके उसे मोक्ष का अधिकारी बनाते हैं। तब मैंने भगवान राम के चर्णों पर प्रणाम किया।

तब गुरू जी कहने लगे हे विभीषण आप धन्य हो तथा आप चिरायु हो और जीवन मुक्त हो, तब विभीषण ने कहा हे संतवर ! परमात्मा में और संतों में कोई भी भेद नहीं होता। इस लिये आप परमेश्वर रूप हैं आप कृपा मुझे ऐसा उपदेश करो जिस से मेरा आतमा शांति को प्राप्त हो, ... हे ... ! समुद्र रूपी भवजल है जिस पर संतों

के प्रवचण पुल के समान हैं अविद्या रूपी लंका को प्रभु ने लूटा। राम ने क्रोधादिक दुष्टों को मारा। तथा नाम रूपी गरुड़ ने मोह माया के सांपों का हनन किया है। नाम की महिमा यह है कि पत्थर हृदयों को भी नाम के महा मंत्र ने तार दिया है। हे राजन! तुम को तो राम रूपी गुरू प्राप्त हुए हैं, उनीं का बताया परमात्मा के नाम का महामंत्र है। उसी के द्वारा तुमारा कल्याण हुआ है। तथा उस के ही द्वारा तुमें मोक्ष पद की प्राप्ति होगी, मैं ने तुमारे सामणे यह अध्यात्म विचार रखा है। आशा है कि यह विचार तुमारे मन में शांति का संदेश लेकर जायगा।

यह सुन कर विभीषण ने गुरू जी के चर्णों पर प्रेम से नमस्कार किया, बाले ने कहा—हे भक्तराज! यहां लंका में सुना है कि वीर हनुमान जी रहते हैं। तब विभीषण ने कहा हे महाराज! हनुमान जी तो रावण की चिखा के ऊपर ही बैठे रहते हैं यदि आप कहो तो मैं उन को बुला लाता हूँ परंतु उस ने भगवान राम रूप को नमस्कार करना है। और किसी के आगे उस ने अपना शीश नहीं झुकाना, तब गुरू जी ने कहा—हम उस को भगवान राम के दर्शण करायेंगे। तब विभीषण ने हनुमान जी को बुलाया। इधर गुरू जी ने अपना रूप राम का बनाया, और मुझे (बाला) लक्ष्मण बनाया और मर्दाने को सीता का रूप बना दिया। हनुमान ने आते ही गुरू जी के चर्णों पर नमस्कार किया, तब गुरू जो ने कहा हे महावीर! तू हमें सदैव सर्व व्यापक माना कर। हे हनुमान! जितने भी संसार में जीव हैं सभी में व्यापक राम होने से राम रूप ही हैं, हे भक्तवर! जितने भी सुग्रीव अंगद जांभवान आदि सैनक थे सभी में राम सत्ता बिराजमान थी उसी राम शक्ति ने रावण कुंभ करण आदिक का संहार किया है। तथा संसार का कल्याण किया है, प्रभु राम सृष्टी को उत्पन्न करने पालन तथा संहार करने वाले हैं। तब हनुमान ने कहा—हे महाराज! मैं उपासना के बल से आप को जानता हूं। आप तो भगवान ही हैं, ज्ञानीओं में श्रेष्ट होने के नाते भी आप महान हैं, तथा मैं तो आप का दासानुदास हूं। आप ही राम

हैं तथा राम होने के नाते आप मेरे इष्ट हो। मुझ पर आप की कृपा बनी रहे। बस यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है, तब हनुमान जी ने श्री गुरू जी महाराज को नमस्कार करके एवं आज्ञा लेकर अपने स्थान पर चले गए। और विभीषण भी गुरू जी को प्रणाम करके चला गया, फिर गुरू जी भी वहां से किसी अन्य स्थान को रवाना हुए।

॥ साखी मरदाने के चलाने की ॥

एक बार श्री गुरू नानक देव जी महाराज! समुंद्र के तट पर खड़े थे तब मर्दाने ने पूछा हे गुरू जी! आप घर में कब तक जाओगे। तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना! जब हमें वह परमात्मा ले जायेगा तभी जायेंगे। परंतु यदि तू उतावला है तो तुमें हम अभी ले जा सकते हैं। तब मर्दाने ने निराश सा होकर कहा–हे महाराज! आप तो मुझे अभी ही अपने से विछोड़ना चाहते हो। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना! तुम ने स्वयं ही घर को याद किया है। तब मर्दाने ने कहा–हे गुरुदेव! मैंने तो साधारण रूप से बात की थी। तब गुरू जी ने कहा–हे भाई बाला! चलो क्यों कि मर्दाना अब हम से विछुड़ना चाहता है। मर्दाने ने कहा–हे महाराज! मुझे अपने साथ ही रखना। देखना कहीं मुझे आप ने त्याग न देना। हे महाराज! आज मुझे दो पुरुष मिले थे उनों ने मुझे पुष्प दिये हैं। वह पुष्प कुमलाने वाले नहीं हैं। तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना! वे दोनों गंधर्व थे जो तुम को लेने के लिये आये हैं। अब तुम आगे चलो, जब हम वैकुंठ धाम को जायेंगे। तब तुम को भी अपने साथ ले चलेंगे, मर्दाना ने कहा–हे गुरुदेव! जैसे आप की इच्छा। परंतु आप यह तो बता दो कि मेरा शरीर किस स्थान पर छूटेगा। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना! तुमारी देह किसी भली जगह पर ही छूटेगी। उस समय हम तेरे पास ही होंगे। हे मर्दाना! जब ब्राहमण शरीर छोड़ता है तो उस का संसकार जल में करते हैं क्षत्री का अग्नि में होता है वैश्यका पवण में संसकार होता है तथा शूद्र को मटी में

दबा दिया जाता है, अब तुम जैसे कहो वैसे ही तुमारा संसकार किया जाये, यदि तुम चाहो तो तुमारी कब्र बना दी जाये। तब मर्दाने ने कहा हे गुरुदेव ! चमड़े की कबर से निकल कर फिर ईंट पत्थर की कबर में पड़ना नहीं चाहता। गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! क्या तुम ने ब्रह्म को पहिचाना है ? मर्दाने ने कहा–हे महाराज ! आप की कृपा से जो कुछ ईश्वर ने दिखाया है वह मैने देखा है। मर्दानेने कहा–जो यहां जलाये जाते हैं वे पवित्र हो जाते हैं, और जिन को यहां दबाया जाता है, उन के आगे फिर जलाया जाता है, सो मेरी प्रार्थना है कि मेरा दाह संसकार किया जाये ।

यह बातें करते करते गुरू जी दरबेला नगर में आ पहुंचे। मर्दाने ने पूछा हे गुरू जी क्या मेरा शरीर यहां छूटेगा तब गुरू जी ने कहा हे मर्दाना ! यहां तेरी संतान रहेगी। और तुम को हम खुरम नगर में ले चलते हैं, वहां तेरी मृत्यु होगी, क्यों कि खुरम नगर में तुमारा अन्न जल अभी शेष रहता है पांचवें दिन मर्दाने ने वहां आकर खुरमे खाये । जब तीन घड़ी दिन रहा तो गुरू जी ने मर्दाने से पूछा–हे मर्दाना ! बताओ आत्मा की क्या अवस्था है। मर्दाने ने उत्तर दिया हे गुरुदेव ! अब तो तैयारी है। क्यों कि मेरी नाभी में से श्वासों की ग्रंथी खुल गई है, अब मेरे नव्वे श्वास बाकी रहते हैं। तब बाले को गुरू जी ने कहा–तुम गिणते जाओ, जब नव्वे श्वास हो गये। तब मर्दाने की देह ठंडी हो गई। गुरू जी ने हाथ लगा कर देखा तो मर्दाने के प्राण पंखेरू उड़ चुके थे, तब मैंने (बाले) कहा–हे महाराज ! मर्दाना तो समाप्त हो चुका है, तब गुरू जी ने करतार को नमस्कार किया, और कहा–बाला ! उस ईश्वर के रंग देखो। इस पर प्रभु की बहुत कृपा थी। मैनें कहा–हे महाराज ! करतार धन्य है और आप भी धन्य हो। जिस के ऊपर आप की कृपा हो, उस पर करतार की कृपा कैसे न हो।

फिर गुरू जी की आज्ञा से खुरमे की लकड़ी एकत्र की गई, फिर गुरू

जी ने कपड़े की तीन चादर बनाईं । एक मर्दाने के लिये तथा एक अपने लिये और एक मेरे लिये, यह तीनों कफ़न तैयार करवाए । फिर मर्दाने का संसकार भली प्रकार विधी के साथ किया गया, गुरू जी ने स्वयं अपने हाथ से मर्दाने को जलाया । फिर मुझे कहा हे बाला इस स्थान पर मर्दाने की संतान को ला कर बसाना ही उत्तम है, मैं ने कहा—हे गुरू वर ! जैसे आप की इच्छा ।

॥ आगे साखी और चली ॥

एक दिन श्री गुरू नानक देव जी महाराज बैठे हुए थे, मुझे कहने लगे हे बाला ! आज हम पखो के रंधावे जाना चाहते हैं परंतु मूले का स्वभाव अत्यंत कठोर है, तब मैं ने कहा—हे महाराज ! अब तो हम ने बहुत ही भ्रमण कर लिया है अब तो श्री चंद्र लछमी दास और माता चोणी जी आदिक को मिलना चाहीये । आप वहां विश्राम करना और मैं आप की आज्ञा लेकर तलवंडी जाऊंगा तब गुरू जी ने कहा—हे बाला ! तुम कुछ दिन और हमारे साथ रहो, एक दिन गुरू जी अजिते रंधावे के कूप पर जा बैठे अजिते ने गुरू जी को देखा । उस ने गुरू जी को प्रणाम किया गुरू जी ने मौन समाधी लगा ली । जब समाधी से उठे तब गुरू जी ने देखा उस की भी वही मौन समाधी है, तब गुरू जी ने कहा हे प्रभु के प्यारे उठो तीसरी बार कहिने से वह उठ बैठा । तब गुरू जी ने कहा—हे अजिते ! जो कुछ भी तुम मांगो वह तुमें हम देंगे, उस ने कहा—आप सभी कुछ जानते हैं कहने की बात नहीं । तब गुरू जी ने कहा—हे भाई ! काम तो पूरण हो चुका है जाह तूं कर्मों का बली है, अब तू राय बुलार से हज़ार कदम आगे हो गया है । उस की दृष्टी देह में नहीं खुली, परंतु तेरी खुल गई है । अब अजिते के कपाट खुल गये, अजिते का शरीर दिव्य कांति का हो गया ।

एक दिन रंधावा बकरीयें चराता आ रहा था तब गुरू जी ने मुझे

कहा–हे बाला ! वह जो भेड बकरी चरा रहा है उसे मेरे पास ले आओ। तब उस बूड़े ने गुरू जी को आकर प्रणाम किया, गुरू जी ने कहा हे भाई तू कौन है उस ने कहा मैं जाट हूँ। मैं संधू रंधावे का पुत्र हूँ और आप के निकट रहता हूँ। उस ने कहा हे महाराज ! आप ने मुझे बुलाया है परंतु कहा कुछ भी नहीं, और अब कहते हो जाओ। गुरू जी ने कहा बाला किसी दिन को साधू होगा, और इस की गद्धी चलेगी। जब दूसरे दिन बूड़ा अपने घर को जाने लगा, तब याद आया कि गुरू जी का दर्शण करना है। परंतु खाली हाथ जाना अच्छा नहीं तब उस ने ताज़े माखन का कटोरा भर कर गुरू जी के आगे लाकर रख दिया, गुरू जी ने कहा–हे भाई नींगरा ! यह कहां से लाये हो, तब बूड़े ने कहा–हे महाराज ! यह मैं अपने घर से ला हरा हूं। गुरू जी ने कहा–हे भाई तुम ने कोई घर बनाया हुवा है। उस ने कहा हे गुरू जी ! मेरे माता पिता अभी है गुरू जी ने कहा नींगर ! तुम को पिता मारेगा तो, यह सुन कर उस के मन में कुछ वैराग सा हो गया। और रोने लगा गया, गुरू जी ने कहा–भाई तू रोता क्यों है उस ने कहा–कि मेरा पिता भले ही मुझे मारे उस की मुझे चिंता नहीं है। परंतु मुझे क्यों इलाहदा कर रहे हो, गुरू जी कहने लगे हे बाला ! देखो तो यह क्या कह रहा है ? बाले ने कहा हेभाई!गुरुजी जो कुछ भी फरमा रहे हैं उसी में तेरा भला है उसने कहा हे बाला ! गुरुजी तो पूर्ण संत हैं इनमें और परम.त्मा में कोई भी भेद नहीं हैं, परंतु आप दीपक जला कर उसे फ़िर बुझाना चाहते हैं। जब उस ने यह शब्द कहे तब गुरू जी ने कहा हे भाई ! तू पहिले भगवान के आगे नमस्कार कर। उस ने नमस्कार किया तब गुरू जी ने कहा–हे भाई ! प्रातःकाल उठ कर स्नान करके ईश्वर का नाम स्मर्ण किया कर। उस ने कहा–हे गुरु देव ! आप का दरशण करके जन्म जन्मांतर की मल दूर हो गई है, अब आप मुझे दोबारा स्नान की क्यों आज्ञा दे रहे हैं। गुरू जी ने कहा–हे मित्र ! तुमारी ओर देख कर और लोग भी स्नान करेंगे, और तुझे मिल

कर अन्य अनेकों का उद्धार होगा तू गुर मर्यादा को चलाने वालों में सर्दार होगा, जो तेरा दरशण करेंगे उन का भी भला होगा। यह कह कर गुरू जी करतार पुर की ओर रवाना हो गये।

१ ओं सतिगुर प्रसाद ॥

एक समय श्री गुरू नानक देव जी करतार पुर में बैठे थे। आप के मन में कुछ तरंग उत्पन हुई। कि हम ने बहुत भ्रमण किया। ईश्वर की आज्ञा थी, कि जीवों का कल्याण करो। वह भी किया। अब मन में आता है कि अपने अंग से अंगद को उत्पन करूं उसे सर्वशक्ति प्रदान करके संसार के लिये मुक्ती का मारग खोलदूं। इधर मन में यह विचार हुआ। उधर निरंकार की ओर से निमंत्रण हुआ, कि हे नानक देव! तुम हमारे पास आओ तब गुरू जी ने कहा-हे भगवान! आप की आज्ञा थी कि तुमारा पंथ चलेगा। तथा मेरे नाम का अर्थात परमात्मा के नाम का उपदेश संसार को दो ताकि कलयुग के जीव नाम रूपी जहाज पर चढ़ कर भवसागर को तरें, सो हे कृपा नाथ! आप कोई योग्य पुरुष भेजो। मैं उसे आपका पवित्र संदेश सुना कर तथा अपना उतरा धिकारी बना कर आप स्वयं आप के चरणों में उपस्थित हो जाऊं। तब प्रभु ने कहा हे नानक देव। जब मैंने बावन अवतार धारण किया था, तब मैंनें त्रिलोचन रिषी को अपना गुरु नियत किया था, वही त्रिलोचन पीछे देवताओं का और रिषिओं का भी गुरु रहा, फिर वह तपस्या भी करता रहा। त्रैता युग में ठाकुर जी ने उस से भक्ति भी करवाई थी। तब करतार ने कहा हे त्रिलोचन तुम कलियुग में जन्म लेकर कलि के जीवों का कल्याण करो, संसार में भगती की स्थापना करो। और गुरु नानक की मर्यादा का पूर्ण प्रचार करो।

प्रभु आज्ञा पाकर त्रिलोचन जी विदा हुए, तथा कलियुग में आप ने जन्म लिया। पंजाब की भूमि पर मत्ते की सराय में त्रेहन क्षत्री वंश में श्री लाला फेरू राम जी के घर में आप ने जन्म लिया, जन्म से ही आप

को श्रेष्ठ बुद्धि ईश्वर की देन थी। चौदा वर्ष की आयु में आप का विवाह खडूर नगर में हो गया, जब आप अठारह वर्ष के हुए तब आप के गृह में पुत्र हुआ जिस का नाम दासू था, फिर बीबी अमरो और सभराई हुई। गुरू जी की महिला का नाम भराई था, आप का मेल जोल गुरू घर के प्रेमीओं के साथ था। जिस से आप ने बाणी कंठ की तथा शब्द गाने लगे, आप के नगर में बहुत से लोग देवी के भक्त थे। आप का नाम लहिणा रखा गया था एक दिन एक सिख से शब्द सुन कर लहणे ने कहा हे भाई! यह शब्द किस ने लिखा है, उस ने कहा हे मित्र! यह बाणी सतगुरू नानक देव जी ने उच्चारण की हुई है। अब लैहणे के मन में बाणी के करता के दरशणों की इच्छा पैदा हो गई।

जब नवरात्रों के दिन आये तो संगत देवी के दर्शणों को तैयार हुई, लोगों ने लैहणे को कहा हे मित्र! चलो दुर्गा यात्रा करें, उन लोगों के साथ लैहणा भी दुर्गा दर्शणों को चल पड़ा। चलतेर यह लोग कर्तार पुर पहुंचे, किसी ने नगर वासीयों से पूछा भाई! यह नगर किस का है और इस नगर का नाम क्या है? नगर निवासी ने कहा–यह गांव श्री नानक जी का है, एक ने कहा–हे भक्तवर! तुम जिस नानक की बाणी गाया करते हो यह नगर उसी का है, उधर गुरू नानक जी को अनुभव हुआ कि मेरा उत्तराधिकारी मेरे ही नगर में आया है। तब गुरू जी घर से निकल कर बाहर आकर एक ओर एकांत में खड़े हो गये तब लैहणा इन के पास आ कर कहने लगा, हे भाई! क्या मुझे गुरू नानक देव जी का दरशण भी हो सकता है? तब गुरू जी ने कहा–हे मित्र! तू मेरे साथ चल मैं तुझे गुरू नानक के पास ले चलता हूँ।

अब गुरू जी के साथ लैहणा महलों की ओर को आये मैहलों के द्वार पर गुरू जी ने कहा–हे मित्र जो सोह्मणे वृक्ष है उस के साथ तू अपनी घोड़ी बांध दे जब वह घोड़ी बांधने गया तो गुरू जी एक दरवाजे से भीतर जाकर एक चबूतरे पर आसन जमा कर ध्यान में मस्त होकर बैठ गये।

इधर घोड़ी बांध कर लैहणा भीतर गया तो गुरू जी को आसन पर बैठा देख कर हैरान हो गया। सोचने लगा कि यह तो वही है जो मुझे यहां तक लेकर आया है, यदि मुझे पता चल जाता कि मुझे यहां तक लाने वाले गुरू जी हैं। तो मैं सतकार पूर्वक घोड़ी पर चढ़ा कर लाता, इस प्रकार का पश्चाताप करके लैहणा गुरू जी के पवित्र चर्णों पर गिर गया। अब गुरू जी ने पूछा हे भाई! तेरा नाम क्या है, उस ने उत्तर दिया हे महाराज! मेरा नाम लैहणा है, गुरू जी सुन कर मुसकाये और कैहने लगे भाई तू लैहणा है और हम ने तुमारा देना है। आज से तुमारा नाम अंगद रखो जाता है, आज से तू मेरा अंग है और कभी भी जुदाई न होगी। अब तुम जाओ तथा कल इसी स्थान पर आना,अंगदने सोचा यह तो कोई महा पुरुष हैं।

अब लैहणे से अंगद बन कर जब अपने संग में आया तो साथीओं को कहने लगा हे मित्रो! मेरी आप को राम राम है। साथीयों ने कहा– क्या तुम अबदुर्गा के भवन तक नहीं जाओगे? उस ने उत्तर दिया, मुझे जब इसी जगा भगवान मिल जाय तो मैं ने वहां जाकर क्या करना है। साथीओं ने कहा हे लैहणा! हमारा क्या बनेगा। तब अंगद ने उतर दिया, जब तुम लौट कर यहां आओगे तब तुमारा भी कल्याण होगा। अब लैहणा उन को आगे तोर कर स्वयं अपने घर में आ गया, घर वालों ने पूछा कि आप लौट क्यों आये हैं। उस ने कहा मैं संग को तो आगे तोर आया हूँ। परंतु अब मैं नहीं जाऊंगा। यह सुन कर सभी चुप हो गये। लैहणा का मन गुरू चर्णों में था। श्रीगुरू जीके बिना लैहणा को चैन कहां, तमाम रात तड़प कर व्यतीत की। प्रातःकाल लैहणे ने अपने भाणजे को कहा कि एक मन भर अनाज और निमक ले आओ। अब लैहणा वह बोझ उठा कर चल पड़ा।

अब लैहणा करतार पुर आकर गुरू धाम में गया। आगे माता चौणी जी बैठे थे, उनों ने पूछा भाई तू कौन है, तथा कैसे आया है।

आप ने उत्तर दिया मैं शिश्य होने आया हूँ तथा यह भेंट आप स्वीकार करें, माता जी ने वह गठड़ी भीतर रख कर कहा–कि आप तो उस साह्मणे वाले खेत में गये हैं। लैहणा तुर्त गुरू जी के निकट पौंहच गया, चर्णों पर प्रणाम किया। बस गुरू जी ने उसे उठा कर अपने कंठ से लगा लिया फिर क्या था, ज्योतिके साथ ज्योतिमिलगई लैहणेने सेवा भाव से कहा हे महाराज! मुझे भी सेवा बखो। गुरू जी कहा–अच्छा यह पूला उठाकर घर ले चलो, जब पूला उठाया तो उस को कीचड़ लगा था, उस से लैहणे का सुंदर कुड़ता भीग गया, माता चौणी ने लैहणे की कमीज कीचड़ में लथ पथ देख कर कहा–हे गुरू देव! आप का स्मभाव भी तो विचित्र है, इस बेचारे को गीला घास उठवा दिया, जिस से इस के वस्त्र खराब हो गये हैं, किसी और साधारण नौकर को उठा देते। यदि आप इसी प्रकार की सेवा लोगे तो दुबारा कौन आएगा। गुरू जी ने कहा–हे भोली! यह कीचड़ नहीं यह तो केसर है। तिनकों की गठड़ी नहीं है, यह तीन लोक के राज्य का छतर है। इस का नाम अंगद है। यह मेरे अंग से पैदा हुआ है। जब यह बात अंगद ने सुणी तो गद गद होकर गुरू जी के चर्णों में लग गया। तब गुरू जी ने अंगद को उठा कर अपने कंठ से लगा कर उसे परि पूर्ण कर दिया। उस के हृदय के कपाट खुल गये। अब अंगद देव जी गुरू सेवा में मगन रहने लगे।

उधर उस के संगी दुर्गा परस कर लौटे तो सभी गुरू जी के चर्णों में प्रणाम करने आये, गुरू जी ने सभी को उपदेश देकर विदा किया। परंतु अंगद जी वहीं रहे, अब गुरू जी की अनन्य भक्ति से सेवा करनी अंगद जी की नित्य क्रिया हो गई।

एक दिन अंगद देव जी गुरू जी के लिये जल लेकर आ रहे थे, तब एक लड़की सोलां वर्ष की आयु परम सुंदरी लाल वस्त्र पहिरे अंदर से बाहर को जा रही थी। उस से अंगद जी ने पूछा कि तुम कौण हो उस ने कहा–मैं दुर्गा भवानी हूं मैं नानक द्वार की सेवा करके लौट रही हूँ। सुन

भाई जो कुछ मैं अपने परम भगतों को प्रदान करती हूँ। वह सभी कुछ मैं इसी नानक द्वार से मांग कर ले जाती हूं तथा अपने भगतों को देती हूं। यह सुन कर लैहणा तो अवाक रह गया, तब से उस की श्रद्धा गुरू चर्णों में और भी अधिक हो गई। सोने पर आज सोहागे का काम हो गया, एक दिन अंगद जी गुरू जी को मुठी चाबी कर रहे थे। तब क्या देखा कि गुरू जी के पवित्र शरीर पर कुछ दाग पड़ रहे हैं जैसे कंटक लगे हों। अंगद ने पूछा हे महाराज ! यह कंटकों के दाग आप के पवित्र दैवी शरीर पर आज क्यों देख रहा हूँ। गुरू जी ने कहा–हे अंगद मेरा प्रण है कि जहां कोई बाणी में से सोहले का पाठ करे तो मैं उसी ही स्थान पर जा पौंहचता हूँ। इस समय एक सिख जो भेड़ बकरी चारने वाला है, वह आरती सोहला गाता है और साथ २ भेड़ बकरी चरा रहा है। वहां कंटक सहित वृक्ष हैं वह मेरे बदन में चुभ रहे हैं क्योंकि मैं उस के साथ२ आरती सोहला सुनता चला जा रहा हूँ। तब श्री अंगद ने कहा–हे कृपा नाथ ! आप धन्य हो।

दूसरे दिन उस अयाली सिख को मिल कर अंगद जी ने कहा–हे प्यारे ! तू आरती सोहला अपने पलंग पर बैठ कर पढ़ा कर, फिर सारी व्यतीत वार्ता सुनाई। और सभी का कहा–कि आप सोते के समय अपने२ घर में बैठ कर आरती सोहला पढ़ा करो, गुरू जी तुमारे सदा अंग संग रहेंगे। तब सारी संगत ने श्री अंगद जी का कथन स्वीकार किया और अपने २ घर को रवाना होने से पहिले गुरू जी के जगत उद्धारक पवित्र चर्णों में प्रणाम करने लगे, पश्चात गुरू जी के जय कारे बुला कर के अपने २ घर की ओर रवाना हुए।

अंगद देव जी तीन वष तक गुरू नानक देव जी की सेवा करके और गुरू आज्ञा पाकर मते की सराय अर्थात अपने घर की ओर रवाना हुए।

जब लैहणा घर पहुँचा तो लोगों ने पूछा हे लैहणा ! क्या तुम देवी की यात्रा को नहीं गये। और इतनी देर नानक देव जी के पास ही रहे हो।

हरि के नगर के अनेक नर नारी लैहणा के निकट एकत्र हो गये, उन के मन में यह चाव था। कि लैहणा श्री गुरू नानक देव जी के निकट रह कर आया है, एक तखतमल्ल चौधरी था जो लैहणे का परम मित्र था उसे भी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी से प्रेम था, उस ने सुना कि लैहणा गुरू जी की सेवा में रह कर आया है तब वह भी यह विचार कर मिलने को आया कि गुरू नानक देव पूर्ण पुरुष उस के निकट रह कर लैहणा भी अवश्य पूर्ण हो गया होगा। जब चौधरी ने लैहणा जी के चर्णों में नमस्कार करना चाहा तो लैहणे ने तखतमल्ल को गले से लगा कर कहा हे मित्र! मित्रों को कंठ लगाया जाता है तुम मेरे चर्णों पर क्यों पड़ रहे हो। उस चौधरी ने कहा हे भाई लैहणा! तुम एक महापुरुष के संसर्ग से आ रहे हो, तो अवश्य ही तुम भी महापुरुष हो गये होंगे। इस लिये आप के चर्ण स्पर्ण में ही कल्याण है, लैहणे ने कहा चौधरी देखने और सुनने में बहुत अंतर है। एक बार तुम भी श्री गुरू नानक के दरशण अवश्य करो। तब आप को अत्यंत सुख होगा। तब लैहणा (अंगद देव) ने एक शब्द सूही राग में उचारण किया—

राग सूही महला २ ॥

जिस भाउ भांडे भाउ तिनां सवारसी ॥ सूखी करे पसाउ दुख विसारसी ॥ सहिसा मूले नाहि सर पर तारसी ॥ तिना मिलिआ गुर आइ जिन कउ लीखिआ ॥ अमृत हरि का नाउ देवे दीखिआ ॥ चलहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥ जा कउ महिल हदूर दूजे निवे किस ॥ दर दरवानी नाहि मूले पुछ तिस। छुटै ताके वोल साहिब नदरि जिस। घले आने आप जिस नाही दूजा मते कोइ ॥ ढाहि उसारे साज जाणे सभ सोइ ॥ नाउ नानक वखसीस नदरी कर्म होइ ॥ १ ॥

॥ वारतक ॥

जब श्री अंगद देव जी गुरू जी से विदा होकर घर को जाने लगे थे तब श्री गुरू नानक देव जी ने कहा था—हे भाई! तू मेरे निकट ही निवास

कर, उसी बात को स्मर्ण करके अंगद जी ने शीघ्र ही गुरू जी के निकट आ कर चर्णों पर नमस्कार किया। तब श्री गुरू जी ने अपनी दिव्य ज्योति का संचार श्री अंगद जी में भी कर दिया, तव अंगद देव ने कहा हे मेरे प्यारे गुरू देव आप सर्वज्ञ और सर्व कला पूर्ण हैं। हे प्रभो ! आप की कृपा दृष्टी मोक्ष फल का देने वाली और आप अद्वितीय हैं तथा अपार हैं।

एक दिन प्रातःकाल सूर्योदय के एक प्रहर पूर्व श्री गुरू जी महाराज स्नानादक करके और वस्त्र पहिर कर इस प्रकार ईश्वर स्तुति करने लगे। जगदीश्वर परमधाम परमेश्वर परमात्मा आप धन्य हैं आप की स्तुति शिव ब्रह्मा विश्नु इंद्र कुवेर आदिक भी नहीं कर सकते। तब मेरे जैसा तुच्छ जीव आप की स्तुति करने में किस प्रकार सामर्थ्य हो। सकता है मैं तो आप के दासों का भी दास हूँ। आप को महिमा अपार तथा अनीह है। हे सर्व जगत संचालक निरगुण निरंकार जगत के उत्पन करने वाले परमात्मा आप की महिमा का दिगदर्शण सूर्य चंद्र तथा पवन नक्षत्रादिक द्वारा प्रकट हो रहा है, वृक्षों में आप का स्वरूप हरित वर्ण द्वारा दृष्टी गोचर हो रहा है। पुष्पों की सुगंधि आप की महिमा दरसा रही है, समुंद्र की गहिराई तथा बड़े२ परबतों की उंचाई आप की महिमा मुक्त कंठ से गायन कर रही है, हे अनाथों के नाथ ! यह संपूरण जगत नारी स्वरूप है। इस में आप ही एक पुरुष हैं। जगत प्रकृति है, तथा आप परिपूर्ण ब्रह्म हैं। आप ही बीज रूप होकर संसार का महान क्षेत्र उत्पन करने में सामर्थ हैं। हे कृपा के सागर वाहिगुरु ! सूर्य चंद्र आदिक अधार बिना जिस के आश्रित खड़े ही नहीं अपितु आप की शक्ति का प्रदर्शण कर रहे हैं वह शक्ति आप का ही प्रत्यक्ष रूप है। हे सर्व व्यापक ! बिना आप की सता के यह जगत एक क्षण के लिये भी स्थिर नहीं रह सकता। हे देवन देव परमात्मा ! जितने भी देवता हैं। सभी आप के द्वार के द्वारपाल हैं आप ही उन सबके भूप हैं। हे कृपालो ! मैं अधिक क्या कहूँ। हे ईश्वर आप अजन्मे हो संसार की माया से आप दूर हो। आप अनादि अचिंत हो। अगाध हो, अनीह

दशम द्वारे के रिंड से अपने प्राण त्यागन किये, तब गुरू जी ने अपने पिता जी के शरीर का अंतिम काम बहुत ही श्रद्धा से किया। अनेकों प्रकार के दान किये, साधुओं गरीबों को भोजन वस्त्र आदिक दिये गये, उन के चतुर्थ दिन को माता त्रिपता जी ने भी अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। उसी प्रकार रावी के तट पर गुरू जी ने माता का भी अंतिम संसकार विधिवत किया, दान पुन्यादिक सभी काम प्रेम भाव से किया गया, नाम स्मर्ण-दान तथा कीरतन अपार किया गया, गुरू जी ने तमाम संगत को परम सुंदर उपदेश दिया।

गुरू जी कर्तार पुर में एक पीपल के नीचे अपना पलंग बिछा कर बैठे रहने लगे, गुरू जी के घर में एक कमलीआ सिख सेवक था। वह घास लेने बन को गया तो उसे तीन योगी मिले उनों ने कमलीये को बुला कर कहा-हे भाई कमलीआ ! वे जो मट्टी का ढेला पड़ा है इसे उठा कर हमारी ओर से गुरू नानक देव जी को हमारा संदेश देना, उस ने कहा जी मैं घास खोद कर ले जाऊंगा तब आप का संदेश ले जाऊंगा। तब एक योगी ने अपने योग बल से वहां घास का ढेर लगा दिया, और कहा ले भाई जितना तुमें घास चाहीये उतना उठा ले, कमलीये ने घास उठा लिया और मटी का ढेला भी ले लिया। गुरू जी के निकट आकर घास फैंक दिया, और मटी का ढेला गुरू जी के आगे रख दिया। गुरू जी ने कहा हे कमलीये ! आज तो तुम बहुत ही शीघ्र आ गयेहो, क्या घास किसी दूसरे का ले आये हो। तब कमलीये ने कहा-कि बाहर जंगल में तीन योगी मिले हैं, उनों ने यह मटी का ढेला दिया है। और कहा है कि गुरू जी को हमारा संदेश दे देना, सो मैं ने संदेश आप को दिया है। गुरू जी ने तीन बार कहा हे कमलीये हमारा संदेश लाए हो, फिर कहा हे कमलीआ साधारन को बुला कर ले आओ। कहना कि दो बाहीं और मुंज का बाण ले करके शीघ्र ही आवे। गुरू जी प्रसाद भी साधारन के घर से ही खाया करते थे, तथा वस्त्र भी साधारण के दिये हुए ही पहिरा करते थे। कमलीये

ने साधारन को जाकर कहा हे साधारन ! आप को गुरू जी बुला रहे हैं, दो बाहीं और मुंज का वाण साथ लेकर जलदी ही चलो । उस ने कहा हे भाई ! मैं भोजन कर लूं कमलीये ने कहा-यह तो आप को आज्ञा नही है अच्छा खा लो ।

अंत में साधारण गुरू जी के निकट जा कर प्रणाम करके कहने लगा, हे महाराज ! इतने उतावले भाव से आप ने किस लिये याद किया है ? गुरू जी ने कहा हे साधारण कमलीये ने हमें महा यात्रा का संदेश लाकर दिया है तू हमारे साथ बेले में चल । तब गुरू जी और साधारण दोनों बेले में गये गुरू जी का अपना खेत जो आठ विघा में होगा, वहां जाकर कहा हे साधारण यह स्थान कैसा है ? साधारण ने कहा हे महाराज ! यह स्थान तो उत्तम है, गुरू जी ने कहा हमारी लकड़ी यहां एकत्र करनी । परंतु यह बात किसी को नहीं कहनी फिर गुरू जी ने लौट कर कहा-हमारी चादरें धो लाओ, तब साधारण जा कर चादरें धो कर ले आया । गुरू जी ने कहा इसे हमारी कोठरी में रख छोड़, और हमारा घर अच्छी प्रकार पोच कर ठीक कर दे । परंतु जप साहिब का पाठ करते रहना, साधारन ने वैसे ही किया । जब मकान ठीक हो गया तब साधारण ने गुरू जी के आगे प्रार्थना की कि हे महाराज आप चल कर देख लो । गुरू जी देख कर अति प्रसन्न हुए, तब साधारन को गुरू जी ने आशीर्वाद दिया ।

॥ आगे साखी और चली ॥

एक दिन गुरू जी महाराज कर्तार पुर में धर्मशाला में बिराजमान थे तो विचार हुई, कि अब हमें उस निराकार परमात्मा के पास पहुंचना उचित है । उधर श्री परमात्मा सच खंड में सभा लगा कर बैठे थे, तमाम मुक्त जीव हाथ बांधे अपने २ स्थान पर खड़े थे । भगवान ने कहा-हे भक्तो ! मेरा परम प्यारा भक्त जिस का नाम नानक देव है, वह मेरे लोक में आना चाहता है । तब सभी ने कहा हे

महाराज नानक देव तो आप का परम भक्त है उस की इच्छा पूरी करो। फिर सारे जगत के स्वामी परमात्मा ने अपने पवित्र दूतों को आज्ञा दी कि जाओ नानक देव को आदर सतकार के साथ लेकर आओ। वह भगवान के दूत श्री गुरू जी के निकट आ कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगे हे महाराज आप के मन में वैकुंठ जाने की जो विचार हुई है, उसी को पूरा करने के लिये परमब्रह्मण परमात्मा की आज्ञा मान कर हम लोग आप के पास उपस्थित हुए हैं, कि आप वैकुंठ लोक में हमारे साथ पधारो, आप के निवास के लिये सच खंड में महल बनवाकर सजाये गये हैं, तब गुरू जी ने कहा हे मेरे स्वामी आप धन्य हो आप के बगैर कौन है जो मुझ दास की कामनायें पूरण करे, यह कह कर सेवकों के साथ जाकर गुरू जी ने भगवान के चर्णों पर नमस्कार की तब परमात्मा ने कहा—आओ प्यारे नानक! तू तो मेरा परम भक्त है, तेरे मन में मुझे मिलने की इच्छा थी, सो हम ने पूर्ण कर दी है। तब गुरू जी ने कहा हे प्रभु आप धन्य हो। आप के बिना मेरे मन की कौन जान सकता है। तथा मैं तो आप के चर्णों का दास हूँ। तब निरंकार ने कहा हे नानक तुम ने अपने उत्तरा धिकारी अंगद को यही समझाना कि तुमारे सदृश्य मेरे नाम स्मर्ण में संसार को लगावे। और जो पद्धिति तुम ने अपनाई है उस से इधर उधर नहीं होना, फिर गुरू जी कर्तार की बात भली प्रकार समझ कर वापस मात लोक में लौट आये। तथा फिर उसी समय श्री अंगद देव को बुला कर सभी बात समझा दी और पांच पैसे नारयल अंगद देव जी के आगे रखकर तथा परिक्रमा करके गुरू नानक देवजी ने अंगद देव के चर्णों पर प्रणाम किया, तथा अंगद देवजी ने गुरू जी को नमस्कार किया। और कहा हे महाराज! आप ने मुझे नमस्कार किया है, इस से तो मुझे पाप लगेगा। गुरू जी ने कहा—हे अंगद देव! तुम अपना स्वरूप पहिचानो, मेरी और तेरी चैतन्य कला एक हुई है। जैसे सौ घट पानी का है परंतु सूर्य एक है परंतु प्रत्येक घट में प्रतिबिंब पृथक है। तैसे ही सर्व शरीरों में परमात्मा एक जैसा ही विराजमान है,

तुम तो पूरण ज्ञान को जानते हो, जिस ज्ञान शक्ति का संचार आप में हुआ है हम ने तो उसे ही नमस्कार किया है। इतनी कह कर गुरू नानक देव जी ने गुरू अंगद को कंठ से लगा लिया, और गुरु गद्दी पर बैठा दिया। और तमाम संगत को आज्ञा हुई कि इन को नमस्कार करो तथा हमारा रूप जानो, फिर गुरू जी ने अपने पुत्रों को बुलाया परंतु उनों ने देर कर दी। फिर भाई बुडे को आज्ञा हुई कि तुम अंगद देव जी को तिलक लगा दो, तिलक किया गया।

फिर गुरू जी ने कहा-हे अंगद देव! अब तुम खडूर में जाकर निवास करो, क्योंकि यहां रहने से परस्पर वाद विवाद का भय है। श्री चंद्र आदिक तुम से झगड़ा करेंगे, तब अंगद जी ने कहा-हे महाराज! मैं आप की अंतिम यात्रा के समय आ जाऊं, गुरू जी ने कहा-हम तुमारे भीतर से हो कर ही जायेंगे, परमात्मा की यही आज्ञा है। जैसे परमात्मा की हमें आज्ञा हुई वैसें हम ने किया, तुम ने भी इसी प्रकार करना होगा। ईश्वर नाम स्मर्ण तथा दीनों पर दया, श्रद्धा प्रेम और परमात्मा पर पूण विश्वास बांट कर खाना चोरी व्यभिचार से दूर रहना तथा सत्य बोलना यही मनुष्य जीवन का महान कर्तव्य है। अब हम उस महान ज्योति का दर्शण करने के लिये महा यात्रा कर रहे हैं, यदि आप ने कुछ और पूछना हो तो निःसंकोच पूछीये।

गुरू जी के यह वाक्य सुन अंगद देव का मन पसीज गया, उन के नेत्रों में आंसु आ गये। तब गुरू जी ने उपदेश द्वारा उन को शांत किया, फिर गुरू जी ने स्नान किया। और अंगद देव को रवाना किया, अंगद देव अनेक दिन पूर्व गुरू से विछुड़ कर खडूर में आ गये तथा गुरू नानक देव करतार पुर में ही बिराजते रहे, नित्य कीर्तन उपदेश आदिक होता रहता था, संगत मिल कर जपुजी का पाठ आसा दी वार आरती सोहला आदिक पुन्य कार्य करते, गुरू जी ने अपने मुखाविंद से परमेश्वर का जाप कहा, जो परमेश्वर सतचित आनंद रूप है, और तीन गुणों से रहित है।

जन्म मरण हानि लाभ सुख से अतीत है। सांसारिक विकारों से परे है। ऐसे ईश्वर को जपने वाला ईश्वर में ही समा जायेगा। तथा महान में जाकर स्वयं महान हो जायगा।

इस के पश्चात गुरू जी ने एक परदा तनवा दिया, और सभी सामान अपने निकट रख लिया। धरती पर बिस्तर बिछा कर तथा दो चादरें ओढ़ कर पदमासन लगा कर बैठ गये। और भीतर किसी के न आने का आदेश दिया, जब एक प्रहर रात्री शेष रह गई तब श्री गुरू नानक देव जी महाराज ध्यान में लीन हो गये। तब श्री पारब्रह्म परमेश्वर स्वयं गुरू जी के निकट आये, जब भगवान कनात में पौंहचे तो महान प्रकाश तमाम जनता ने अपने नेत्रों द्वारा देखा, बैकुंठ में जो मुक्त पुरष थे वह सभी गुरूजी का स्वागत करने के लिये तथा दर्शणों के लिये उत्सक हो रहेथे, सब ने आश्चर्य हो कर देखा कि एक महान भक्त को सर्व कला पूर्ण भगवान स्वयं लेने को गये हैं। आज तक यम दूत पापीओं को लाने के लिये जातें हैं तथा महा पुरुषों को ईश्वर के पार्बद जाया करते हैं, परंतु श्री गुरू नानक देव जी महाराज को लाने के लिये सब शक्तिमान परमात्मा स्वयं मात लोक के कर्तार पुर कसबे में पधार रहे हैं। यह अचंभा नहीं है तो और क्या है? धन्य हैं गुरू नानक देव जिन को ईश्वर स्वयं ले कर पधारे हैं। ब्रह्मा विश्नु महेश दिनेश गणेश शेष आदिक तेतीस क्रोड़ देवता भी परमात्मा के साथ कर्तार पुर में पधारे। कहां तक कहा जावे सिद्ध पच्छ गंधर्व योगी यति तथा अपसरायें भी श्री गुरू जी के पवित्र दरशणों को उपस्थित हुए, तब गुरू जी ध्यानावस्था से उत्थान अवस्था में होकर भगवान को नमस्कार करने लगे। तथा कहने लगे मेरे अहोभाग्य हैं जो मैं आज अजन्मे भगवान को चर्म चक्षुओं द्वारा देख रहा हूं। मैं एक तुच्छ जीव हूं तथा सवत परमात्मा मेरे निकट पधार रहे हैं यह मेर परम भाग्य हैं। तब प्रभु ने कहा हे नानक देव तुम ने मुझे भक्ती की जंजीरों से कस कर बांध लिया है। मुझे केवल भक्ती

ही प्यारी हैं, मैं न तो उच्च वर्ण देखता हूँ तथा न मैं विद्या देखता हूँ। आचार विचार व्यवहार आदिक नहीं देखता। मुझे धन-बल-ऐश्वर्य तथा सुंदरता वा बुद्धि कुछ भी नहीं भाते। मैं तो प्रेम भक्ती का देखने वाला हूँ। सो हे नानक ! तेरे में प्रेम भक्ती का समुंद्र ठाठें मार रहा है, जिस पर मैं प्रसन्न होकर तेरे दर्शणों को चला आ रहा हूँ। मुझे अपने आप से भी अपने भक्त अधिक प्रिय होते हैं, मैं भक्तों के लिये जो कुछ नहीं करना होता वह भी करने को तैयार हो जाता हूं भक्तों के लिये अनेक बार अवतार भी धारण कर लेता हूँ। तुमारा दर्शण करके मैं अपने को धन्य मानने लग जाता हूं। अब मैं तुम को अपने लोक में रखूंगा। जो नर नारी तेरी पवित्र बाणी पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसे भी मुक्ती प्रदान करूंगा। संमत विक्रम १५९६ अश्विन वदी दशमी के दिन श्री गुरू जी को साथ लेकर सर्व शक्तिमान परमात्मा अपने वैकुंठ लोक को चले गये। अर्थात आश्विन यदि दशमी के दिन १५९६ विक्रमी में गुरू नानक देव जी महाराज का महा प्रस्थान हुआ। प्रहर रात्री शेष थी जब गुरू जी महाराज की पवित्र ज्योति उस महान ज्योति में तदाकार हो गई, जैसे घट का जल समुंद्र के जल में अभेद हो जाता है। सारे परिवार में शोक के बादल छा गये, सभी के नेत्रों से जल बहने लगा। तब मुसलमान पठान मिल कर दर्शणों को आ गये, हिंदुओं ने कहा-हे मित्रो ! अब आप का समय नहीं है, क्योंकि गुरू जी तो सदैव के लिये हमें विछोड़ा दे गये हैं। उनों ने कहा-नहीं २ यह तो हमारे पीर मुरशद थे, हमें इन के दीदार से कोई भी नहीं रोक सकता। हम तो इन का सभी काम इसलाम के मुताबक ही करेंगे, हिंदु कहें नहीं २ श्री गुरू नानक देव जी पूर्ण हिंदु थे, क्षत्री वंश के सूय थे मुसलमानों को कोइ अधिकार नहीं है। इन को विधि के अनुसार जलाया जायगा, कौन है जो इन को किसी अन्य मत के कहे। हिंदुओं और मुसलमानों में इसी विवाद में जब झगड़ा बड़ने लगा तब कुछ समझदारों ने दोनों ओर के आवेष में आये हुए हिंदुओं तथा मुसलमानों में शांति का

उपदेश किया, और कहा चलो भीतर चल कर प्रथम गुरू जी का अंतिम दर्शण तो करें।

जब सब लोग भीतर आये जहां गुरू जी का पांच भौतिक पवित्र शरीर पड़ा था। वहां आकर देखा तो बस केवल चादर ही चादर थी शरीर का कहीं नाम तक नहीं थी, हिंदु और मुसलमान दोनों ही अवाक रह गये। सभी झगड़ा दूर हो गया, और परेशानी से एक दूसरे की ओर देखने लगे। जो निरपक्ष सेवक थे वे एक ही बार बोल उठे धन्य हैं श्री गुरू नानक देव धन्य आप की लीला, कोई कहे भाई! हैरान होने की कोई बात नहीं है गुरू जी तो साक्षात पूर्ण ब्रह्म थे। कोई कहे महाराज आप को किसी मजहब का बंधन बांध नहीं सकता था, हिंदु वा मुसलमान इन को परस्पर झगड़ते देखकर गुरू जी ने स्वयं सभी फैसला कर दिया है, झगड़ा तो शरीर का था सो गुरू जी तो अपना शरीर भी साथ ही ले गये हैं ताकि शरीर न होगा तो यह दोनों पक्ष नहीं झगड़ेंगे। धन्य श्री गुरू नानक देव! फिर दोनों ही कौमों के नेता एकत्र होकर गुरू जी के गुणानुवाद गायन करने लगे। अब पश्चाताप की ओर ध्यान गया। हिंदुओं ने कहा-भाई! हमारे हाथ में हीरा आया था, हम पहिचान नहीं सके। और हम कोई भी सेवा न कर सके, यह हमारे अति दुभार्गय हैं, भवसागर के मल्लाह को पा कर भी हम मूरख जीव गुरू जी के उपकार से वंचित रह गये, हा! शोक महा शोक। फिर मुसलमान बोले कि गुरू जी तो हमें जनत में ले जाने के लिये आए थे, अल्लाह में और आप में कोई भी फरक नहीं था, हाय! हम ने कोई भी फायदा नहीं उठाया। हम पूरे ना अहिल साबत हुए जो बावा जी की पहिचान नहीं कर सके। इस प्रकार दोनों कौमें पश्चाताप कर रही थीं, फिर यह कहने लगे भाई! गुरू जी ने तो दोनों कौमों का एक जैसा दिव्य उपदेश दिया है। दोनों को ही भवसागर से पार उतारा है। धन्य हैं वे लोग जो बावा श्री गुरू नानक जी के पवित्र उपदेश को मान कर उन के हो गए हैं।

अंत तो गत्वा-गुरू जी की चादर के दो टुकड़े किये गए। आधी हिंदुओं ने लेकर विमान बना कर चिता में विधि अनुसार जला दी। तथा आधी को मुसलमानों ने शरह के मुताबक दफन कर दिया, तथा दोनों ने अपने २ मत के अनुसार सभी कार्य पूरण किये। श्री गुरू नानक देव जी महाराज इस शरीर के सहित ही वैकुंठ को गए हैं, यह कथा बाबा बुडा जी ने श्री गुरू अंगद देव जी तथा भाई बाले की उपस्थिती में जनता को सुनाई, तब गुरू अंगद देव जी ने फरमाया हे सज्जनो! जो भाग्यवान पुरुष श्री गुरू जो के उपदेश को मानेगा, और बाणी पढ़ेगा, धर्म कर्म में मन लगायेगा। श्री गुरू जी की साखीयें (लीला) सुनेगा, वा सुनायेगा। वह नर नारी मुक्ती को प्राप्त करेगा। और अंत में श्री गुरू जी के पवित्र धाम में जायगा फिर भाई बाला ने प्रेम से प्रणाम किया। और कहा-इन महान पवित्र साखीयों को लिखने लिखाने वाला भी मोक्ष पायेगा।

॥ जन्म साखी की भूमिका ॥

संवत १५२० विक्रम से आज तक जितनी भी जन्म साखीयें श्री गुरू नानक देव जी की बन चुकी हैं, भले ही उन के लेख परस्पर मिलते नहीं हैं। फिर भी उद्धेश्य सभी का एक ही है, गुरू जी का जन्म अनेकों पुस्तकों में और नानक प्रकाश के लेखक भाई संतोख सिंह जी ने कार्तिक पूरणमाशी का लिखा है। तथा भाई मणी सिंह जी और वलायत वाली साखी में गुरू जी का जन्म वैशाख शुदी तृतीया का लिखा पाया जाता है।

जहां तक खोज का संबंध है वहां तक गुरू नानक देव का जन्म वैशाख तृतीया का ही सिद्ध होता है, परंतु जो बात सत्य अथवा प्रवाह रूप से प्रचलित हो जाय उस का बदलना अत्यंत कठिन हो जाता है। यदि कोई वीर उसे ठीक करने की चेष्टा करता है, तो साधारण जन समूह उस का अनुकरण नहीं करता। अतः उस का परिश्रम सफल नहीं होता परंतु हमें विश्वास है कि वर्तमान सिख नेता तथा नेतृत्व करने वाली संस्थायें एकत्र

होकर इस का निर्णय कर दें तो कठिन नहीं है।

ऊपर के लिखे को पढ़ कर हमारे ऊपर शंका होगी कि यदि वैशाख का जन्म निश्चित है तो इस जन्स साखी में कार्तिक का क्यों लिखा गया है। उत्तर में प्रार्थना है कि अनेकों जन्म साखीयों में दो जन्म साखीयें प्रख्यात हैं एक तो भाई मणी सिंह जी की और दूसरी भाई बाला जी की, भाई मणी सिंह जी की तो श्री गुरू गोबिंद सिंह जी के समय में बनी थीं। और जो दूसरी भाई बाले की है उसे श्री गुरू अंगद देव वाली भी कहा जाता है। यह गुरू अंगद देव जी के चर्णों में बैठ कर भाई वाला ने लिखी थी ।

जो भाई बाले ने लिखी है वह तो प्रेम के वश होकर तथा अपनी स्मृति के अनुसार लिखी गई है, और जो मणी सिंह की है। वह एक ऐसे समय में लिखी गई है जिस समय सभी निर्णय करके लिखने का समय मिलता था। इस लिये वही लेख ठीक मालूम होता है, क्योंकि श्री गुरू दशमेश जी ने अनेक इतिहास और अनेक अनुवाद रचे तथा रचाए हैं। जन्म साखी के लेखक मणी सिंह जी को भी गुरू गोबिंद सिंह जी ने यह आज्ञा प्रदान की हो कि जो बात लिखो वह निर्णय करके लिखो तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। दूसरे हम ने यह भाई बाले अथवा गुरू अंगद देव जी की जन्म साखी छापी है, इस लिए प्राचीन लिखे को नहीं बदला।

जब कभी हम भाई मणी सिंह वाली जन्म साखी अच्छी प्रकार निर्णय करके छापेंगे तब इस का निर्णय करेंगे। वैसे साखीयें तो बहुत मिलती हैं परंतु सत्यवात गुरू जी का धर्मोपदेश नम्रता आदिक जो परम गति के साधन कहे गए हैं वे सभी में एक जैसे ही पाए जाते हैं। भेद इतना ही है कि जो साखीयें विरोधीयों के हाथ पड़ गईं, तथा जिन में उन विरोधियों के पंथ अथवा गुरू पीर आदिक की कमज़ोरी प्रकट करने वाली साखीयें थीं, उन में उनो ने गोल माल कर दी। जिस से उन के गुरू पीरों की

निर्बलता दृष्टी गोचर न हो सके, उदाहरणार्थ जब यह जन्म साखी हंदालीओं के हाथ आई तब उनों ने अपने गुरू हंदाल को बड़ा सिद्ध करने के लिये श्री गुरू नानक देव जी के ऊपर अयोग्य आक्षेप कर दिये। इसी प्रकार गुरू नानक जी से कबीर को बड़ा बनाने के लिए उन लोगों (कबीर पंथीओं) ने श्री नानक देव जी से कबीर को बड़ा सिद्ध करते हुए कुछ अंड बंड लिख दिया। अभी २ एक और पंथ वाले ने एक जन्म साखी में मक्के की साखी के कुछ और ही मन मरज़ी के अर्थ कर दिये, प्यारे सज्जनों ! यदि कोई श्री गुरू ज़ी का कोई अनन्य सेवक छपवावे तो यह कभी भी संभव नहीं कि उपरोक्त त्रुटियों को जान बूझ कर स्थान दे।

हम तो यह बताना चाहते हैं कि गुरू नानक देव जी ने एक ऐसे समय अवतार लिया था, जब महान अंधकार छाया हुआ था, उस काले समय में गुरू जी का संसार में आना परमोपयोगी था, गुरू जी उस अकाल पुरुष की आज्ञा से इसी अंधकार को दूर करने के लिये धरती पर पधारे थे, जिस से करीतियें तथा अधर्म का नाश हो, तथा सत्य धर्म का प्रचार हो और जगत का कल्याण हो, इस पर श्री भाई गुरदास जी कहते हैं।

॥ पौड़ी भाई गुरुदास जी ॥

जुग गरदी क्या होवहे उलटे जुग क्या होइ अवतारा । उठे गिलान जगत विच वरतै पाप भ्रष्ट संसारा। वरना वरन न भावनी खहि खहि मरन बांस अंगिआरा। निंदा चालै वेद की समझन नहि अग्यान गुबारा । बद ग्रंथ गुर हट है जिस लग भवजल पार उतारा। सतिगुर बाझ न बूझीऐ जिचर धने न गुर अवतारा। गुर परमेशर इक है साचा शाह जगत वणजारा। चढ़े सूरज मिट जाय अंधारा। भई गिलान जगत विच चार वरन आश्रम उपायें। दस नाम सन्यासीआं जोगी बारह पंथ चलायें। जंगम अते सरेवड़े दगे दिगंबर वाद कराए। ब्राहमण बहु परकार कर शासत्र बहु परकार लड़ाए। षट दरशण बहुवैर कर नाल छतीस पखंड चलाए। तंत मंत रसाइणा करामात कालख लपटाये। एकस ते बहु रूप

कर रूप करूपी घणे दिखाए। कलजुग अंदर भरम तणाए। बहु वाटी जग चलीआं जब ही भए मुहमद यारा। कौम बहतर संग कर बहु बिध बैर विरोध पसारा। रोजे ईद निमाज करमी बंध कीया संसारा। पीर पगंबर औलीए गौंस कुतुब बहु भेस सवारा। ठाकुर द्वारे ढाहिके तिह ठौरी मसीत उसारा। मारन गौ गरीब नूं धरती उपर पाप बिथारा। काफर मुलहद इरमनी रूमी जंगी दुशमन दारा। पापे दा वरतिआ वरतारा। सुणी पुकार दातार प्रभ गुर नानक जग महि पठाया॥ आदि पुनह॥ सति गुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंद जग चानण होया।

॥ वारतक ॥

ऊपर के प्रमाण से सिद्ध होता है कि गुरू जी का अवतार अदभुत कर्मों के लिए हुआ था, आप के उपदेश प्रत्येक जाति तथा संप्रदाय के पुरषों के लिये समान रूप से थे, और ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार थे। इसी लिए गुरू जी को मुसलमान आलम अपना पीर मानते थे। तथा अन्य धर्मावलंबी भी गुरू जी को सन्मान दृष्टी से देख कर आप की प्रशंसा करते थे, श्री गुरू जी ने ग्रंथ साहिब के भीतर भी इस बात की पुष्टी की है,कि जो कुछ भी अकाल पुरुष परमात्मा का आदेश होता रहा वही उपदेश संसार के प्रति गुरू जी ने अपने प्रवचनों द्वारा दिया हैं। इस पर प्रमाण एक वाक्य है।

॥ वाक्य ॥

जैसी मैं आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो।
फिर-ज्यो बोलावहि त्यो नानक दास बोलै॥ आदि...

अंत में हम श्रद्धालू सज्जनों के आगे प्रार्थना करते हैं कि यह जन्म साखी तथा आगे जो दसम पातशाही तक सभी गुरू साहिबान का प्रसंग लिखा है, उसे प्रेम पूर्वक पढ़ें और जो बातें श्री गुरू जी से मिलती हुई देखें वह अपने हृदय में धारण करके हमारे परिश्रम को सफल करें।

श्री गुरू अंगद देव जी महाराज पातशाही २॥

आप का जन्म संवत १५६१ विक्रम वैशाख शुक्ला एकम को फेरू मल्ल त्रेहण चत्री के घर में कसबा मते की सराय में मालवा प्रदेश पंजावांतरगत हुआ। आप का प्रथम नाम लैहणा था, जब प्रथम गुरू जी ने इन को गुरू गद्दी प्रदान की तब आप का नाम लैहणा से अंगद रखा गया।

इन के पिता पितामह दुर्गा के उपासक थे। आप भी अपने पूर्वजों की भांति जब एक बार दुर्गा के दरशण को संग के साथ चले। तब श्री गुरू नानक देव जी की स्तुती सुन के रास्ता में ही ठहर गये। जब आप ने गुरू जी का दरशण किया तो आप का मन शांत हो गया, फिर जब आप ने वैश्नों देवी के लिए यात्रा का विचार किया, तो गुरू जी के पवित्र द्वार पर ही देवी वैश्नों का दरशण हो गया। जैसा कि पहिले कहा गया है।

देवी ने जब यह कहा कि मैं भी गुरू नानक के दर्बार की एक भिक्षुक हूँ। तब से आप के हृदय में गुरू सेवा का समुंद्र लहरें लेने लगा। अब लैहणा जी गुरू सेवा में ही रहने लगे। तथा यात्रा का विचार छोड़ दिया।

एक दिन की बात है कि फरश के ऊपर एक चूहा मरा पड़ा था, गुरू जी ने अपने पुत्रों को कहा कि इस चूहे को बाहर फैंक दो। तब गुरू जी के पुत्र अभी सोच ही रहे थे कि लैहणा जी ने उस मरे मूसे को बाहर फैंक दिया, यह प्रथम आज्ञा पालन था।

एक दिन एक सुलेमानी पाषाण का एक कटोरा गुरू जी ने एक गंदे कीचड़ के टिब्बे में फैंक दिया, तथा पुत्रादिक को उसे निकालने का आदेश दिया। तब किसी ने भी उस गंदे टिब्बे में उतरने को इरादा न किया, उस समय भी लैहणा जी ने ततक्षण वस्त्रों सहित उस गंदे जोहड़ में से वह कटोरा बाहर लाकर रख दिया।

एक दिन एक मुरदा दरया में बहा आ रहा था, गुरू जी ने परीक्षा

के लिए सभी को कहा–कि इस मुरदे को खा लो। तब सभी पुत्रादिक वहां से चले गए। उस समय लैहणा जी ने हाथ जोड़ कर कहा हे गुरुदेव! मुरदे को पांव की अथवा शिर की ओर से जिधर से आप की आज्ञा हो मैं खाने को तैयार हूँ। इस प्रकार की अनेक परीक्षाओं में जब लैहणा उत्तीरण हुआ तब गुरू नानक देव जी ने योग्य समझ कर आश्विन कृष्णा पंचमी १५८६ विक्रम के पवित्र दिवस को पांच पैसे और नारयल जैसे कि मर्यादा है वह लैहणे (अंगद देव) के आगे रख कर अपना उतराधिकारी नियत कर दिया और नियमानुसार अंगद देव जी को नमस्कार किया।

फिर गुरू अंगद जी खडूर गांव में चले गये। वहां पर आप तपस्या करने लगे। उस स्थान का नाम अब 'तपयाणा साहिब' है। संवत १५६० विक्रम को गुरू अंगद जी ने गुरुमुखी अक्षरों का निर्माण किया। तथा भाई बाले से गुरू नानक देव जी की लीलायें सुन कर लिखवाईं। जो यह जन्म साखी के रूप में आप के हाथ में हैं।

गुरू अंगद जी सदैव रात्री के दो बजे सो कर उठते थे और चार घड़ी दिन चड़े तक आप ध्यान में मस्त रहते थे। उस के पश्चात कीर्तन होता था और तमाम दिन भर लंगर जारी रखते थे। आप की अनेक लीलायें हैं परंतु पुस्तक के आकार बढ़ जाने के भय से लिखी नहीं गईं।

अंत में आप ने संवत १६०६ विक्रम में गुरूगद्दी का उतराधिकारी तथा पूर्ण योग्य जान कर श्री अमर दास जी को चैत्र शुक्ल एकम के दिन मर्यादानुसार नियत कर दिया। और तमाम सिख संगत से भी अमर दास को नमस्कार कराया। आप दो वर्ष ६ मास से अधिक गुरूगद्दी पर बैठ कर ४७ वर्ष ११ मास की आयु में चैत्र शुक्ला चतुर्थी बुधवार के दिन संः १६०६ विक्रम को खडूर साहिब में यह शरीर त्यागन कर दिया।



श्री गुरू अमर दास जी महाराज पातशाही ३ ॥

श्री गुरू अमर दास जी का जन्म सं: १५२६ विक्रम वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को गांव बासर के (ज़िला अमृतसर) में श्री तेज भान भल्ला चत्री के घर में हुआ था।

जब आप गुरू अंगद जी की सेवा में लग गये थे उस समय आप की आयु ६२ बासठ वर्ष की थी। इतनी आयु की अवस्था में आप में अपार पुरुषार्थ था। आप प्रातःकाल उठ कर जल की गागर भर कर ब्यास नदी से लाते और उस से गुरू अंगद जी को नित्य स्नान करवाते थे। व्यासा नदी गुरू निवास से तीन कोस की दूरी पर बहती थी उस के पश्चात आप लकड़ी काट कर अपने शिर पर उठा कर लाते थे और लंगर (रसोई) के बर्तन आप स्वयं साफ करते थे। इस प्रकार सारा दिन सेवा में ही व्यतीत करते थे।

एक दिन पौष मास में वर्षा और पवन का बहुत जोर था, और रात्री अंधेरी थी, उस समय आप पानी की गागर ला रहे थे, मार्ग में एक जुलाहे का घर था, घर के वाहर एक गड़हा था, आप अंधेरे के कारण गड़हे में गिर गये, भीतर से जुलाही ने पूछा कि आवाज कैसी आई है, तब जुलाहे ने कहा-और कौन इस समय घर से निकलता है, वही अमरू नथांवां (जिस का कोई स्थान न हो) होगा उस अमरू को रात दिन चैन नहीं आता। यह जुलाहे की बात सुन कर श्री अमर दास कुछ भी विरक्त नहीं हुवे, और जल की गागर उठा कर उसी प्रकार वाहिगुरु का जप करते चले आये। अमर दास जी के जीवन में यह घटना अत्यंत ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

अंतर्यामी गुरू अंगद जी ने प्रातः दीवान में पूछा हे अमर दास रात्री को जुलाहे ने क्या शब्द कहे थे। अमर दास ने हाथ बांध कर कहा हे गुरुदेव! आप सर्वज्ञ हो, उस समय गुरू जी ने रात्री की पूर्ण घटना संगत के सन्मुख सुनाई। और अमर दास जी को निम्न लिखित वर दिया।

गुरू अमर दास नथावों का स्थान और निमाणों का मान और निओटों की ओट, निधरों की धिरतथा निगतों की गति है। तथाः

चैत्र शुक्ला एकम सं: १६०६ विक्रम को अपना उतरा धिकारी श्री अमर दास जी को नियत किया, और मर्यादानुसार नमस्कार करके उसे गोइंदवाला जो गुरू जी ने स्वयं ही बसाया था, वहां भेज दिया।

संवत १६१४ विक्रम को आप ने बावली साहिब को बनाना आरंभ किया, और १६१६ विक्रम में कड़ टूटा। इस के बारे गुरु खालसा तारीख वालों ने निम्न प्रकार लिखा हैं।

उधर बादशाह अकबर चितौड़ में जयमल फत्ता से युद्ध कर रहा था परंतु चितौड़ का दुर्ग नहीं टूटता था उस समय किसी ने बादशाह को परमर्श दिया कि गुरू नानक की गद्दी पर जो इस समय गुरू हैं उस का नाम गुरू अमर दास है। यदि उस की मन्नत मानों तो तुमारा काम सफल हो जायगा। उधर अकबर ने मन्नत मानी और इधर चितौड़ का दुर्ग सर हो गया था तब अकबर बादशाह पंजाब में आया तो गोइंदवाल में गुरू जी के दरशण कर के कृत कृत्या हो गया। उस समय बादशाह ने पांच सौ मोहर गुरू जी के अर्पण की जो गुरू जी ने गरीबों को बांट दी थी।

एक बार गुरू जी दीवान में उपदेश कर रहे थे तब एक स्त्री के रोने की आवाज़ आई। दरयाफत करने पर पता चला कि एक बेचारी विधवा स्त्री हैं उस का एक ही पुत्र था जो तैये के ताप से मर गया हैं। तब गुरू जी के मन में दया आ गई। तब कृपा कर के उस का पुत्र जीवित कर दिया और आगे से फरमाया कि किसी का पुत्र तैये बुखार से यहां पर नहीं मरेगा तथा तैये को बंदी कर लिया।

एक बार गुरू जी ने अपने पुत्रों और सिखों को थड़े (चबूतरे) बनाने की आज्ञा दी। तब सब ने बनाये तथा गुरू जी ने परीक्षा के रूप में कहा कि यह किसी काम के नहीं हैं तथा गिरा दिये गये इसी प्रकार २१ बार परीक्षा ली गई। इस के मध्य में सभी अनुतीर्ण हो गए परंतु राम दास जी

ने बदस्तूर चबूतरा बनाना जारी रखा बस गुरू जी उस पर प्रसन्न हो गए और भाद्रपद शुक्ला १३ त्रयौदशी को सं० १६३१ विक्रम में अपना उतराधिकारी विधि पूर्वक राम दास जी को नियत कर दिया।

गुरू अमर दास जी सदैव सवा प्रहर एक खूंटी को पकड़ कर तपस्या किया करते थे फिर जनता में उपदेश करतेथे जो आपने बावली बनवाई उस की चौरासी सीढ़ीयें हैं। अब वहां गुरू घर के प्रेमी प्रत्येक पौड़ी पर स्नान कर के जपुजी के चौरासी पाठ करते हैं तथा उन की चौरासी कट जाती हैं। गुरू अमर दास जी महाराज २१ वर्ष ३ मास १३ दिन गुरयाई करके १०५ वर्ष ४ मास की संपूरण आयु भोग कर संवत १६३१ विक्रम भाद्रपद की पूर्णमाशी को गोइंदवाल विखे ज्योति जोत समा गये अर्थात आप का महाप्रस्थान हुआ।

श्री गुरू राम दास जी महाराज पातशाही ४॥

श्री गुरू राम दास जी संवत १५६१ विक्रम कार्तिक वदी २ को हरदास मल्ल क्षत्री के घर में लाहौर चूना मंडी में पैदा हुए। संवत १६१६ विक्रम में लाहौर की संगत के साथ श्री राम दास जी गोइंदवाल गये। जब आप ने गुरू अमर दास जी के दरशण किये तो बस फिर वहां ही रहे।

श्री गुरू अमर दास जी ने राम दास जी को हर प्रकार से योग्य देख कर सं: १६३१ वि: में अपना उतरा धिकारी नियत कर दिया, और उन के निर्वाह के लिये संवत १६२६ विक्रम को कुछ जमीन मोल लेकर राम दास जी के नाम पर रामदास पुर बसाया। जो इस समय अमृतसर के नाम से प्रख्यात ।

राम दास जी महाराज के तीन पुत्र थे, जिन के नाम प्रिथी चंद-महा देव तथा अर्जुन देव था, परंतु सब से अधिक पिता जी को परमेश्वर रूप जानने वाले केवल अर्जुन देव ही थे, अंत में गुरू गद्धी भी इन को ही प्राप्त हुई है ।

एक बार गुरू जी ने अपने भाई के पुत्र के विवाह में अर्जुन देव को लाहौर भेजा। और कहा कि जब तक हम न बुलायें तब तक तुम ने लहौर में ही रहना होगा, तब श्री अर्जुन देव जी आज्ञा पालन करने के लिये एक वर्ष तक लाहौर में ही रहे, वियोग का वर्ष एक सौ वर्ष जितना था, अंत में अर्जुन देव जी ने एक पत्र लिखा जो माझ महला ५ से मशहूर है।

माझ महला ५ ॥

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताईं। बिलप करे चात्रिक की न्याई।
त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिन दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुरु दरसन संत पिआरे जीउ॥१॥रहाउ॥

यह पत्र एक लाहौरी सिख के हाथ अर्जुन देव जी ने अमृतसर भेजा तब पृथी चंद ने उस से पत्र लेकर गुम कर दिया। यह विचार कर लिया कि यदि यह पत्र पिता जी ने पढ़ा तो अर्जुन देव को बुला कर उस को अपना उतराधिकारी नियत कर देंगे।

फिर उस सिख को कहा कि चिठी गुरूजी को सुनाई गई है परंतु उनों ने कोई उत्तर नहीं दिया। यह कह कर उस सिख को विदा कर दिया। उस सिख ने वही उत्तर अर्जुन देव को दे दिया। फिर बीस दिन के पश्चात एक पत्र और लिखा—

शब्द ॥ तेरा मुख सुहावा जीउ सहिज धुनि बाणी ॥ चिर होआ देखे सारिंग पाणी ॥ धंन सु देस जहां तू वसिआ मेरे सजन मीत मुरारे जीउ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिस सचे गुरु दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह पत्र लिख कर एक सिख को कहा कि इसे भी ले जाओ उस पत्र का भी वही परिणाम हुआ। अब तीसरा पत्र लिखा गया—

शब्द ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुग होता ॥ हुण कद मिलीऐ प्रिअ तुद भगवंता ॥ मोहि रैण न विहावै नींद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाइ तिस सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह चिठी लिख कर ताकीद की गई कि इसे श्री गुरू महाराज के हाथ में देनी, उस सिख ने यह चिठी श्री गुरू राम दास जी के हाथ में जा कर दे दी, गुरू जी ने जब चिठी पर अंक तीसरा देखा तो प्रिथी चंद से पूछा, तब प्रिथी चंद ने साफ इनकार कर दिया, कहा मेरे पास कोई पत्र नहीं आया। फिर गुरू जी ने कहा–यदि है, तो हमें दे दो, तब उस ने कहा क्या कोई हुंडी थी। जो मैंने अपने पास रख कर लाभ उठाना था, गुरु जी ने उस चिठी लाने वाले की गुवाही ली, उस ने कहा–मैं दो पत्र इस से पूर्व दे गया हूँ। परंतु प्रिथी चंद ने फिर भी इनकार ही किया और कहा–आप मुझे झूठी तोहमत लगा बदनाम करने पर तुले हुए हो, और अर्जुन को गुरु गद्दी देने के लिये यह सब चालें चल रहे हो, यदि आप ने उसे गद्दी दे भी दी तो देख लेना में उसे सुख का एक श्वास भी नहीं लेने दूंगा।

गुरू जी ने उस की तलाशी की आज्ञा दी। जब संगत ने उस की तलाशी ली तो दोनों चिठीयें उस की जेब से निकल आईं। अब पृथी चंद अनेक अयोग्य शब्द कहता हुआ अपने घर को चला गया।

फिर लाहौर से बुला कर आज्ञा हुई कि इस शब्द को पूर्ण करो। फिर श्री अर्जुन देव जी ने चतुर्थ चर्ण कहा–

शब्द का चतुर्थ चर्ण ॥

भाग होआ गुर संत मिलाया ॥ प्रभ अविनासी घर महि पाया ॥
सेव करी पल चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ ४ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह शब्द सुन कर श्री गुरू राम दास जी महाराज अत्यंत प्रसन्न हुए, भाद्र पद शुक्ला २ द्वितीया १६३६ विक्रम अमृतसर में दीवान लगा कर मर्यादा के अनुसार अपना उतराधिकारी जगत गुरू गुरू अर्जुन देव जी महाराज को नियत करके स्वयं गुरू श्री राम दास जी ने महा प्रस्थान किया।

गुरू राम दास जी महाराज सं० १५६१ विक्रम के दिन कार्तिक वदी द्वितीया को प्रकट हुए। ६ वर्ष ११ मास १६ दिन गुरुयाई कर के ४६ वर्ष

१० मास १६ दिन की आयु भोग कर भाद्र पद शुक्ला तृतीया १६३८ को गोंदवाल में ज्योति जोत समा गये।

श्री गुरू अरजुन देव जी महाराज पातशाही ५ ॥

श्री गुरू अरजुन देव जी महाराज ने वैशाख शुक्ला ७ सप्तमी सं० १६२० विक्रम को श्री गुरू राम दास जी के गृह में गोंदवाल कसबा में अवतार धारन किया। आप ने अनेकों बड़े २ कार्य किये हैं आप ने कूप तालाबादिक अनेकों निर्माण किये हैं और गुरूओं की पवित्र बाणी का संग्रह किया। १६४१ विक्रम में आप ने संतोष सर (अमृतसर) बनवाना आरंभ किया, माघ संवत १६४४ वि: में दरबार साहिब अमृतसर की नींव रखी। संवत १७०७ विक्रम में अहमद शाह दुर्रानी ने इस मंदिर को वारूद से उड़ा दिया। इसी लिये ११ वैशाख संवत १७२१ विक्रम में फिर बुडा दल ने इस की नींव रखी।

फिर आप ने १६४७ विक्रम को कुछ जमीन मोल ले कर तरन तारन बनवाया। और १६५१ में कसबा कर्तार पुर बसाया था, और लाहौर बावली साहिब बनवाया, फिर अमृतसर तालाब की कार सेवा करवाई गई।

एक बात प्रख्यात है कि वजीर खां नायब वजीर को जलोधर का बीमारी हो गई थी, उस समय बाबा बुडा जी जैसे महापुरुष भी कार सेवा में सिर पर टोकरी धर कर सेवा में लगे हुए थे, उस समय वजीर खां गुरू जी की सेवा में आकर प्रार्थी हुआ, कहने लगा हे महाराज! आप मेरे पर कृपा करो, तब गुरू जी ने भाई बुडा से कहा भाई जी यह वजीर साहिब क्या कहते हैं? उस समय बाबा बुडा जी ने टोकरी जो गीली मट्टी से भरी हुई थी, वह वजीर खां के पाट पर दे मारी। उस के लगने से सभी बिमारी दूर हो गई। तब से एक सुखमणी का पाठी गुरू जी से मांग कर वह अपने साथ ही ले गया उसमे वजीर खां प्रत्येक दिन सुखमणी साहिब सुनता रहा, और कड़ाह प्रसाद करवाता रहा।

पश्चात अमृतसर में रामसर के तट पर बैठ कर गुरूबाणी का संग्रह किया गया, और अपनी बाणी भी उचारण करके गुरू जी ने श्री गुरू ग्रंथ साहिब को पुस्तक रूप प्रदान किया, इस महान कार्य में लग भग दो वर्ष लगे गुरू ग्रंथ साहिब की पवित्र बाणी पर एक महात्मा के विचार ध्यान से श्रवण करने योग्य हैं।

॥ कवित्त ॥

तेज भरी शांत भरी दैवि गुण क्रांति भरी,
आछी बहु भांति भरी ग्यान के समाज की।
ईस गुण वादि भरि शक्ति अहिलाद भरी,
अमृत सो सुबाहु भरी रक्षक हैं लाज की।
ओज भरी शक्ति भरी भाउ भरि भक्ति भरी,
भारी अनुरक्ति भरी ध्वंसनी कपाज की।
राग भरी योग भरी भाग भरी भोग भरी,
पुन्य में प्रयोग भरी बाणी ग्रंथ महाराज की।

॥ वारतक ॥

संवत १६५५ विः में जब आप ने श्री चंद्र जी के दर्शण बारठ गांव में जाकर किये, तो आदि गुरु पुत्र मान कर आप ने श्री चंद्र जी के आगे अत्यंत प्रेम से भेंट रखी, तब श्री चंद्र जी ने आमोद से पूछा कि आप ने अपनी दाढ़ी इतनी लंबी किस लिये की है? उत्तर में गुरू जी ने कहा–कि आप जैसे महात्माओं की चर्ण धूड़ी साफ करने के लिये मैंने अपनी दाढ़ी लंबी की है।

चंदू सुवाई जो दिल्ली में रहा करता था। उस की कन्या का रिश्ता जब सिख संगत के कहे अनुसार गुरू जी ने न लिया। तब चंदू ने अनेकों प्रकार के छल कपट और भय गुरूजी को दिये और उस समयके बादशाह से भी दबाव डाला गया, परंतु–रघुकुल रीति सदा चलि आई प्राण जांयें पर बचन न जाई।

महा पुरुषों के बचन अटल और अचल होते हैं इसी प्रथा के अनुसार गुरू जी ने अनेक कष्ट सहन किये। यहां तक कि अपने प्राण भी न्योछावर कर दिये परंतु भयभीत होकर अथवा लोभवश अपने शब्द नहीं बदले। चंदु नीच ने जो कष्ट गुरू अर्जुन देव जी को दिये, उन को स्मर्ण करके तो बड़े से बड़ा धैर्य वाला भी अधीर हो जाता है। उन का वर्णन अत्यंत कठिन है।

दिग दर्शण मात्र–चंदू महा नीच सेवा करने के बहाने गुरू जी को अपने घर ले गया। तथा कहने लगा कि यदि आप मेरी लड़की का नाता नहीं लोगे, तो मैं आप को महान कष्ट दूंगा। गुरू जी ने उचारण किया–

त्रिया तेल रण सूरमा होत न दूजी बार॥

फिर गुरू ग्रंथ साहिब में भी लिखा हुआ है।

निशि वासर नक्षत्र बिनासी रवि शशि अर बेनाधा। गिरि बसुधा जल पवन जायगा इस साधु बचन अटलाधा। अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा। चार बिनासी खटहि बिनासी इक साधु वचन निहचलाधा।

यह शब्द सुन कर चंदू ने अनेकों कष्ट देने प्रारंभ कर दिये। गर्म रेत गुरू जी के पवित्र तन पर डारी गई। और तपे हुए तवों पर गुरू जी को बैठा कर नीचे आग जलाई गई, और अनेकों उपद्रव किये जो लिखने से मन कांप जाता है, जब पापी ने यह निश्चय किया–कि कल इन को गाय की खाल में डाल कर ऊपर से सी दिया जायगा। गुरू जी यह बात सुन कर दुखी हुए, हिंदु मर्यादा का नाश होते देखना गुरू जी ने उचित नहीं समझा। तब आप ने दूसरे दिन प्रातःकाल ही उठ कर दरया रावी के तट पर जा कर धैर्य से जल समाधी द्वारा अपने प्राण त्याग दिये।

इस घटना से कुछ दिन पूर्व गुरू जी ने दरबार लगा कर अपने सुपुत्र हरगोविंद जी को प्रत्येक दृष्टी कोण से सुयोग्य जान कर और संगत की सम्मति मान कर अपना उतराधिकारी नियत कर दिया।

गुरू जी महाराज १७ वर्ष ४ मास की आयु में सिंहासन पर बैठे २५ वर्ष ६ मास गुरुगद्दी की शोभा बढ़ा कर ४३ तेतालीस वर्ष १ एक मास की आयु भोग कर ज्येष्ट शुक्ला चतुर्थी के दिन संवत १६६३ विक्रमी को लाहौर नगर में महाप्रस्थान कर गये।

श्री गुरू हरिगोविंद जी महाराज पातशाही ६॥

श्री गुरू हरिगोविंद साहिब की लीला इस स्थान पर संक्षेप ही लिखूंगा। क्योंकि आप की लीला अपार है। तथा पुस्तक के बढ़ जाने का भय है।

आप आषाढ़ वदि एकम संवत १६५२ विक्रम को वडाली गांव ज़िला अमृतसर में गुरू अर्जुन देव जी के गृह में प्रकट हुए और वैशाख वदी सप्तमी १६६३ विक्रम को गद्दी पर बिराजे। गुरगद्दी का तिलक मिलते समय आप ने दो तलवारें धारण कीं। एक मीरी की और एक पीरी की। आप ने युद्ध सामग्री एकत्र की। तथा जनता में वीरता भर दी। फिर पाप के विरुद्ध आप ने अनेकों महान युद्ध किये तथा विधर्मी राज नीति को अनेकों स्थानों पर नीचा दिखाया। फिर आप ने अकाल बुंगा बनवाया भाव यह है कि आप ने सत्य धर्म की रक्षा करने वाले शूरबीर पैदा किये। इन की अनेकों लीलाओ में एक यह भी बात स्मर्ण रखने वाली है। कि लोहगढ़ (अमृतसर) के युद्ध में आप ने लकड़ी की तोप बना कर उस से पूर्ण काम लिया। इस के अतिरिक्त और भी महान कार्य किये, जो यदि यहां पर लिखे जांय तो एक बहुत बड़ी पुस्तक बन जाय।

आप ११ ग्यारह वर्ष की आयु में गुरु गद्दी पर बिराजे तथा ३७ वर्ष १० मास गुरु गद्दी पर रह कर ४८ वर्ष ६ मास की आयु में चेत्र शुक्ला पंचमी संवत १६६० विक्रम में कीरत पुर नगर में महा प्रस्थान कर गये। इस से प्रथम सुयोग्य जान कर अपना उतराधिकारी श्री गुरू हरिराय जी को नियत कर गये थे।

श्री गुरू हरिराय साहिब जी पातशाही ७ ॥

श्री गुरू हरि राय जी बाल्य काल से ही सतोगुणी थे, भजन करना सदोपदेश करना लंगर लगाना आदिक आप की दैनिक चर्या थी, इतना स्मर्ण रहे कि श्री गुरू नानक देव जी महाराज से गुरू गोविंद सिंघ जी महाराज तक भजन पाठ तथा लंगर (गरीबों के लिये मूल्य के बिना रोटी का प्रबंध) यह नियम पूर्णतया पालन करके दिखाया है।

जो आप की शरण आ जाय उस की रक्षा करनी आप ने अपना मुख्य कर्म माना हुआ था, एक बार राजा तारा चंद का दीवान जिस का नाम सोहणू था, वह भाग कर गुरू जी के पास आ गया। तब गुरू जी ने राजा की दी हुई जागीर त्यागनी और तारा चंद का राज्य से निकल आना स्वीकार कर लिया परंतु शरण आये हुए सोहणू को नहीं धकेला, इन्हीं गुरु महाराज की आशीर्वाद से पटयाला नाभा जींद के फूल बंसी राजे अब तक राज्य करते चले आ रहे थे।

एक बार बादशाह औरंगजेब ने आप को दिल्ली में बुलाया, आप ने अपने पुत्र राम राय को दिल्ली भेज दिया, राम राय ने ७२ बहतर करामात (अलौकिक कार्य) बादशाह को दिखाईं। और बादशाह के रोहब में आकर श्री गुरू नानक देव के महा वाक्य को उलटा कर बयान किया। अर्थात मिटी मुसलमान दी के स्थान पर मिटी बेईमान दी। कह दिया, इस पर गुरू हरि राय जी ने कुपित होकर शाप दे दिया, कि बस राम राय आज से हमारे सन्मुख नहीं आए, फिर जब आप ने महा प्रस्थान निकट जाना था, तब १८१७ विक्रम में अपने छोटे सुपुत्र श्री हरि क्रिशन जी को अपना उतरा धिकारी विधि पूर्वक नियत कर दिया, आप माघ शुक्ला १३ त्रयोदशी संवत १६८७ विः को बाबा गुरू दिता जी के घर कीरत पुर में पैदा होकर १७००विक्रमी को गद्दी पर बैठे १७वर्ष ६मास गुरुयाई करके३१ वर्ष ८ मास की आयु भोग कर कातिक वदि ८ संवत १७३१ विः को

कीरत पुर में ज्योति जोत समा गये।

श्री गुरू हरि क्रिशन साहिब पातशाही ८ ॥

श्री गुरू हरि क्रिशन साहिब जी आयु में भले ही सभी गुरू साहिबान से छोटी आयु के थे, परंतु तेज प्रताप और शांति में महान थे, राम राय जो गुरू जी ने त्याग दिया था, वह फिर बादशाह के पास जाकर फरयाद करने लगा कि गद्धी का मैं अधिकारी था, परंतु मुझे वंचित किया गया है, उस की फरयाद को सुन कर बादशाह ने गुरू जी को दिल्ली में बुला भेजा आप ने फरमाया कि हम दिल्ली में तो जायेंगे। परंतु हम ने मलेच्छ बादशाह के सन्मुख नहीं जाना। और न ही उसे अपना दर्शण करवाना है, इस से पूर्व औरंगजेब जो एक धर्मांध पापी बादशाह था, उस ने अनेकों हिंदु संत धर्मात्मा मौत के घाट उतार दिये थे। और लाखों हिंदु मुसलमान कर लिये थे, इस लिए बहुत से धर्मात्मा चिंतातुर हो गए थे, परंतु गुरू जी सब को धैर्य देकर दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

दिल्ली के बादशाह की ओर से आप का स्वागत हुआ, और राजा जय सिंघ गुरू जी का सेवक बन गया, उस समय दिल्ली में ज्वर का प्रकोप था जो कोई बीमार गुरू जी का चर्णामृत पान करता था, वह अरोग्य हो जाता था, गुरू जी ने अपना महा प्रस्थान निकट जान कर ११०० एक सहस्र और एक शत रुपये का कड़ाह प्रसाद बांटा, तथा विधि के अनुसार पांच पैसे नारयल रख कर मस्तक झुका कर मुख से फरमाया कि हमारा उतरा धिकारी बाबा बकाले में तेग बहादुर है, फिर नश्वर तन को छोड़ दिया श्री गुरू हरि कृष्णा जी महाराज श्रावण वदि ६ नवमी संवत १७१३ विक्रम को कीरत पुर में गुरू हरिराय जी के गृह में उत्पन्न हुए। और १७१८ विक्रम को गुरू गद्दी पर विराजे। ३ वर्ष ५ मास ११ दिन गुरुगद्दी पर रह कर आठ वर्ष ८ मास ६ दिन की सारी आयु भोग कर चैत्र सुदी चतुर्थी संवत १७२१ विक्रम को दिल्ली में ही महाप्रस्थान कर गये।

श्री गुरू तेग बहादर जी महाराज पातशाही ९ ॥

जिस समय गुरू हरि कृष्ण जी बाबा बकाला कह कर परलोक वासी हुए तब अनेक संगत समूह बकाले में आ कर गुरू की भाल करने लगे। उस समय गुरू तेग बहादर जी छिपे रहा करते थे। तो बकाला में अनेकों गुरू बन कर बैठ गए थे अंत में मखण शाह लुबाने ने गुरू तेगबहादर जी की भाल कर ही ली। यह कथा बहुत ही लंबी है। संक्षेप यह है कि उस ने पांच सौ स्वर्ण मुद्रा भेंट करने को प्रतिज्ञा की थी। जब उस ने बहुत से गुरू बने देखे तो दो २ मोहरें रख कर प्रणाम किया। सभी ने ले लीं। जब गुरू तेग बहादर के आगे भी दो मोहरें रखीं तब उनों ने कहा कि बाकी ४९८ चार सौ अठानवें कहां हैं। बस इसी परीक्षा ने मखण शाह के नेत्र खोल दिये। उस ने शोर मचा दिया कि असली गुरू मिल गया है तब सभी ने स्वीकार कर के नमस्कार किया। संवत १७२१ विक्रम में गुरू गद्दी का तिलक बाबा गुरुदिता जी ने दे दिया। और गुरू हरि कृष्ण जी की ओर से नमस्कार किया। १७२२ विक्रम में आप ने आनंद पुर बसाया। और उसी नगर में निवास करने लगे फिर गुरू जी ने देशाटान किया जो संक्षेप से लिखा जाता है। जब गुरू जी देशाटन से संसार का कल्याण कर रहे थे तब आप ने मुसलमान हकूमत की ओर से हिंदुओं पर अत्याचार होता देखा। तथा उसी के लिये स्वयं भी कष्ट उठाये। आसाम में राजा राम राय आप का सेवक बना। १७२३ वि० में पटने से सूचना मिली कि आप के गृह में पुत्र उत्पन्न हुआ है। १७२९ विक्रम में आप आनंद पुर आ गये। तथा सारा परिवार पटने से आनंद पुर में बुला लिया।

उस समय बादशाह औरंगज़ेब हिंदु धर्म को नाश करने पर तुला हुआ था। इतिहास लेखक इस प्रकार कथन करते हैं-

औरंगज़ेब ने यह हुकम किया कि कोई हिंदु राज्य के कार्य में किसी उच्च स्थान पर नियत न किया जाय तथा हिंदुओं पर जज़ीया (कर) लगा

दिया गया। इस के अतिरिक्त अनेकों नवीन टैकस केवल हिंदुओं पर लगाये गये। इस भय से अनेकों हिंदु मुसलमान हो गये। संख पूजा आरती सभी हिंदु धरम कार्य बंद कर दिये। मंदिर गिराये गये मसजिदें बनवाई गईं। अनेकों धर्मातमा मरवा दिये गये। बादशाह के संकेत से अनेकों हाकम जो मुसलमान थे मन मानी करने और हिंदुओं को दुखी करने लग गये कलमां पढ़ो अथवा कतल हो जाओ। इस भाव का खुले रूप से प्रचार होने लगा। खखे, खोजे, बंबे, कक्केज़ई, रंगट, जाट, राजपूत, अराईं, गखड़, कंबोज, भट्टी, आदिक उसी समय के बने हुए मुसलमान हैं। उसी समय की उक्ती है कि सवा मन यज्ञोपवीत रोजाना उतार कर के औरंगज़ेब रोटी खाता था। उसी समय कशमीर के ब्राह्मण गुरू जी के दर्बार में आये। तथा अपनी करुणा कहानी सुनाई। धर्म नाश को गुरू जी ने सुना और किसी गूढ़ विचार में गुरू जी लीन हो गये। उस समय बालक गोबिंद सिंघ जी जिन की आयु उस समय ७ सात वर्ष थी, पिता जी के निकट आ कर कहने लगे। हे पिता जी ! आप किस विचार में हो। गुरू जी ने फरमाया हे बेटा ! इस समय हकूमत की ओर से हिंदु जनता पर घोर अत्याचार हो रहा है और हिंदु जनता को मुसलमान किया जा रहा है। कुरान और तलवार साह्मणे हैं यह लोग हमारी शरण आये हैं। इस समय किसी महात्मा का बलीदान होना होगा। यह सुन कर दशमेश स्वभाविक कहने लगे। हे पिता जी ! आप से बढ़ कर और कौन महात्मा है ?

यह उत्तर सुन कर गोविंद जी को सयोग्य जान कर उन कश्मीरीयों को कह दिया, कि तुम बादशाह को कहो कि हमारा पीर तेग बहादुर है, यदि वह मुसलमान हो जाये तो हम सभी इसलाम स्वीकार कर लेंगे, तब उन लोगों ने यही किया।

तब बादशाह ने गुरू जी को दिल्ली में बुला भेजा। गुरू जी गये तो आप को बंदी बना कर कहा गया कि या तो मुसलमान बनो, नहीं तो कोई करामात दिखाओ। यह झगड़ा बहुत दिन चलता रहा, गुरू जी का

एक साथी जिस का नाम मती दास था, उसे आरे से चिरवा कर मार डाला, और दूसरे साथी भाई दयाले को देगचे में पकाया गया। फिर गुरू जी को बादशाह ने कहा कि यदि तुम मुसलमान होना स्वीकार न करोगे तो कल को यही अवस्था तुमारी होगी, गुरू जी ने बलिदिवस निकट जान कर अपना उतरा धिकारी मार्ग शीर्ष शुक्ला ५ पंचवीं सं: १७३२ विक्रम को गुरू गोविंद सिंघ जी नियत करके विधि पूर्वक भेंट को आनंद पुर में भेज दिया, तथा श्लोक उचारण किया–

॥ शब्द ॥

चिंता ताकी कीजिए जो अन होनी होय ॥
इस मारग संसार को नानक थिर नहीं कोय ॥

ऐसे अनेक शब्द उचारण किये। प्रातःकाल स्नान पाठ से अभी गुरू जी आनंद विभोर ही थे, तब पापी जल्लाद ने बादशाह के हुकम से तलवार मार कर गुरू जी का शीश तन से अलग कर दिया। गुरू जी के बलिदान ने जनता में रोष पैदा कर दिया, अतः बदला लेने की धुन सवार हो गई। अनेकों शूर वीर धर्म के ऊपर न्योछावर होने को तैयार होने लगे। गुरू जी के बलिदान ने समय को ही बदल दिया, घर घर में गुरू जी की पवित्र याद के गीत गाए जाने लगे। लोग त्राहि त्राहि करने लगे। सारे भारत में अंधकार छा गया।

गुरू तेग बहादुर जी वैशाख वदी ५ पंचमीं १६७८ विक्रम में अमृतसर में श्री गुरू हर गोविंद जी के घर प्रगट हुवे, चैत्र शुक्ला चतुर्दशी १७२१ विक्रम को गद्दी पर बिराजे। १० वर्ष ५ मास १२ दिन गुरुयाई करके ५४ वर्ष ४ दिन आयु भोग कर १७३२ विक्रम मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचमी को महा प्रस्थान कर गए। महा यात्रा स्थान दिल्ली है।

श्री गुरू कलगीधर गोविंद सिंघ जी पातशाही १० ॥

जब सिखों ने गुरू तेग बहादर जी का शिर ला कर आनंद पुर में दिया तो गुरू दशमेश जी ने पिता का अंतिम संस्कार विधि पूर्वक कर के गुरुगद्दी संभाल ली और इस शब्द का उच्चारण किया-

तेग बहादर के चलत भयो जगत में शोक ॥
है है है सब जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥

पुना ॥

धर्म हेत साका जिन कीआ ॥ सीस दिया पर सिरर न दीआ ॥
साधन हेत इति जिन करी ॥ सीस दीआ पर सी न उचरी ॥

ऐसे अनेक वाक्य कहे ।

आप गुरू साहिब पोह सुदी सप्तमी १७२३ विक्रम को गुरू तेग बहादर जी के घर में पटने नगर में प्रकट हुए । संवत १७३२ विक्रम मार्ग शीर्ष शुक्ला पंचमी को गुरयाई ली । और अनेक अदभुत लीला करके सारी आयु ४२ वर्ष दो मास कम भोग कर १७६५ विक्रम कार्तिक शुक्ला पंचमी श्री अबचल नगर में महा प्रस्थान कर गये ।

प्रिय पाठक ! श्री गुरू गोविंद सिंघ जी की अनेकहा लीलायें हैं। यदि वे सब की सब लिखी जायें । तो इस ग्रंथ से दुगना तिगना ग्रंथ और बन सकता है, परंतु हम ने उन तमाम को छोड़ कर केवल एक कौतुक जो चमकौर साहिब का है वही केवल लिखना है, क्यों कि उस को छोड़ने में हम विवश हैं, वह हमे वार बार स्मर्ण आ रहा है, इस लिये वही प्रसंग संक्षेप से लिख कर ग्रंथ को समाप्त किया जायगा ।

गुरू साहिब को हिंदु धर्म से अपार प्रेम था, और साथ ही जुलम के विरुद्ध अपनी तलवार उठानी आप का मुख्य ध्येय था, परंतु गुरू जी मुसलमान जाति से कभी भी घृणा नहीं करते थे । आप तो जुलम के विरुद्ध थे । आप के मन में किसी जाति से द्वेष नहीं था । यदि आप के मन में

मुसलमान जाति से द्वेष होता तो पांच सौ मुसलमान पठान जो बुद्धू शाह ने गुरू जी के पास नौकर करवाये थे। उन को क्यों रखते। यदि हिंदुओं के पक्षपात में होते तो मसंदों को तेल में क्यों जलाते सिद्ध होता है कि गुरूजी पाप के वैरी थे। किसी जाति के दुशमण नहीं थे। आप का अवतार धर्म की रक्षा तथा पाप के नाशार्थ हुआ था। धर्म प्रचार करना गुरू जी का परम लक्ष था जैसा कि आप के शब्दों से प्रकट है।

श्री मुख वाक्य विचित्र नाटक में से ॥

हम एह काज जगत मो आए ॥ धर्म हेत गुरुदेव पठाए ॥
जहां जहां तुम धर्म बिथारो ॥ दुष्ट दोखियन पकर पछाड़ो ॥
इहै काज धरा हम जनमं ॥ समझ लेहु साधू सब मनमं ॥
धर्म चलावन संत उबारन ॥ दुष्ट सभन को मूल उपारन ॥

गुरू जी अकाल पुरुष की ओर से जिस कार्य के लिये आए थे उसी को पूर्ण करने में लगे रहे। गद्दी पर बैठते ही संगत को आज्ञा दी कि हमारे लिए घोड़ा और शस्त्र जो अच्छे लाएगा। वही हमारा कृपा पात्र बनेगा।

इस आज्ञा को सुन कर सुंदर घोड़े और शस्त्र एकत्र होने लग गये। गुरू जी ने सेना संग्रह आरंभ कर दिया। इस आज्ञा को सुन कर आसाम का राजा राम राय का पुत्र करण राय आनंद पुर में आया उस ने पंच कला शस्त्र भेंट किया। एक चंदन की चौकी अर्पण की। पांच दरयाई घोड़े एक परसादी हाथी यह वस्तु भेंट की। जब सेना बहुल एकत्र हो गई। तब गुरू जी ने सोचा कि हिंदु अत्यंत भीरू हो गए हैं तथा मुसलमानों से डरते हैं इस लिए एक तीसरा पंथ बनाया जाय। यही सोच कर केस गढ़ में दरबार लगा कर संवत १७५६ विक्रम में १ वैशाख को खालसा पंथ बनाया। उस समय सीस देने के लिए केवल पाच योधा ही उत्तीर्ण हुए।

गुरू जी ने कनात में गुप्त रूप से पांच बकरे रखे थे। फिर हाथ में तलवार लेकर कहा– कोई वीर है जो अपना शिर मुझे देवे। यह सुन कर

बहुत लोग वहां से चुपके २ चल दिए। सभ से प्रथम भाई दया सिंघ चत्री ने कहा मैं उपस्थित हूँ। उसे गुरू जी कनात में ले गये, तथा एक बकरा मार कर खून से लथ पथ तेग लेकर और उस दया सिंघ को भीतक ही बैठा कर बाहर आ गये। और फिर कहा क्या कोई और भी वीर है जो हमें अपना शीश देवे। तब एक जाट जिस का नाम धर्म सिंघ था, उस ने कहा हे महाराज मैं हाजर हूं। इसी प्रकार मोहकम सिंघ छीपा और हिम्मत सिंघ साहिब सिंघ बार बार आगे आये सभी को गुरू जी कनात के अंदर बैठा कर बकरा मार कर बाहर आने की लीला करते रहे, अंत में उन पांचों को नवीन वस्त्र धारन करवा कर वाहर ले आये, उस समय गुरू जी ने कहा कि श्री गुरू नानक देव जी के समय केवल एक अंगद देव जी ही उत्तीर्ण हुए थे, अब गुरू कृपा से पांच उत्तीर्ण हो गए हैं। इस लिए हमें विश्वास है, कि हमारी अवश्य विजय होगी, फिर अमृत पिलाया और स्वयंपान किया, इसी आशय से कहा है–वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला। भाई गुर दास जी लिखते हैं।

गुर बर अकाल के हुकम सिउ उपजिओ बिगिआना। तद सहिजे रचया खालसा साबत मरदाना। इओं उठे सिंघ भभकार कर सभ जग डरपाना। मढ़ी गोर देवल मसीत ढाहि कीए मैदाना। बेद पुरान षट शास्त्रन फुन मिटे कुराना। बांग सलाहत हटाय कर मारे सुलताना। मीर पीर सभ छप गये सभ मजहब उलटाना। मलवाने काजी पढ़ थके कुछ भरम न जाना। लख पंडत ब्राहमण जोत की विख सिउ उरझाना। फून पथर देवल पूज कर अत ही भरमाना। इओं दोनों फिरके कपट में रच रहे निदाना। तीसर मजहब खालसा उपज्यो परधाना। जिन गुरु गोबिंद के हुकम सिउं गहि खड्ग दिखाना। तिह सभ दुशमण को भेट कर अकाल जपाना। फेर ऐसा हुकम अकाल का जग में प्रगटाना। तब सुन्न कोइ न कर सके कांपत तुरकाना। इउं उम्मत सभ मुहम्मदी खप गई निदाना। तद फते डंक जग में करे दुख द्वंद मिटाना। तीसरा पंथ

चलाइअन वंड सूर गहेला । वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुर चेला ।

॥ पुना ॥

ओह गुरु गोबिंद होइ प्रगटिआ दसवें अवतारा। जिन अलख अकाल निरंजना जपिओ करतारा । जिन पंथ चलायो खालसा धर तेज करारा । सिर केस धार गहि खड़ग को सभ दुष्ट पछारा । सील जत की कछ पहिर पकड़े हथ्यारा । सच फते बुलाई गुरू की जीतिओं रण भारा । सभ दैत अरणि को घेर कर कीओ पचिहारा । तब सहजे प्रगटिओ जगत में गुर जाप अपारा । इओं उपजे सिंघ भुजंगीए नील अंबर धारा । तुरक दुष्ट सभ छै कीए हरि नाम उचारा । तिन आगे कोइ न ठहिरिओ भागे सरदारा । तिह राजे शाह अमीरड़े होए सभ छारा । फेर सुन कर ऐसी धरक को कांपे गिर भारा । सभ धरती हल चल भई छाडे घर बारा । इउं ऐसा दुंद कलेश में खपिओ संसारा । तह बिन सतिगुर को नहीं भै काटन हारा । गहि ऐसे खड़ग दिखाइऐ को सकै न झेला । वाह वाह गुरू गोविंद सिंघ आपे गुर चेला ।

सवा लाख से एक लड़ाऊं ॥ तबै गोविंद सिंघ नाम कहाऊं ॥
चिड़ीअन ते मैं बाज तुड़ाऊं ॥ तबै गोविंद सिंघ नाम कहाऊं ॥

॥ वातक ॥

पंथ स्थापना के पश्चात गुरू जी ने आनंद गढ़ होल गढ़ आदिक किलों की रचना की । और भंगाणी आदिक युद्ध भी अनेक किये । यहां बताने की बात यह है कि गुरू जी ने भारतीय हिंदु जाति पर कितना भारी उपकार किया है । यह बात बल पूर्वक कहने में कोई अति पायोक्ति नहीं है कि यदि गुरू गोबिंद सिंघ जी न होते तो भारत में एक भी हिंदु नजर न आता । शोक है कि जिस गुरू जी ने अपना पिता तथा राज्य सुख और अपने जिगर के टुकड़े युद्ध में वीर गति को प्राप्त करते स्वयं देखे । तथा गुलाब पुष्प के सदृश्य दो सुकुमार दीवार में चिनवा दिये जिस ने लाखों से अपना एक एक वीर उत्साह से टकरा दिया । जिस ने धर्म

रक्षा पर अपने अनेकों शूर वीर बलिदान कर दिये। तथा जिस के अमृत की शक्ति ने धर्म पर न्योछावर होना सिखाया। शरीर के बंद बंद कटवा कर भी जिस के वीर खालसा ने सी तक नहीं की। जिस ने मुरदा हो रहे हिंदुओं को पांच २ घूंट अमृत के पिला कर अमरत्व प्रदान कर दिया। जिस ने अपनी समस्त आयु दुःखों के बन में व्यतीत कर दी। जो प्यारे देश की स्वतंत्रता के लिये नांगे पांव पहाड़ीयों तथा कंटक पूर्ण बनों में इधर उधर फिरता रहा। घर को त्याग कर देश विदेश में भ्रमण करता रहा, जिस ने उप परमेश्वर के अतिरिक्त किसी के आगे अपना मस्तक नीचे नहीं किया, जिस ने चिड़ियों से खूंखार बाजों के छक्के छुड़वा दिये, सत्य तो यह है कि जिस ने भारत की लज्जा का जहाज जो डूबने के निकट था, उसे किनारे लगा कर दिखा दिया। उस की हम ने क्या कदर पाई।

प्यारे पाठक! गुरू जी के कष्टों की गाथा महान है, जिसे पूर्णतया लिखने की शक्ति मेरे जैसे तुच्छ लेखक में नहीं हैं, यदि कुछ किंचित मात्र है भी तो यहां स्थानाभाव से लिखने में लेखक अपने को विवश पा रहा है, परंतु हृदय में गुरू गोबिंद सिंघ जी महाराज की अपार कृपा का समुंद्र लहरें ले रहा है। धन्य थे माता गुजरी जी के लाल श्री दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंघ जी कलगीधर।

यद्यपि गुरू जी ने अनेकों युद्ध किये। परंतु लेखक अपने पूर्व कृत प्रण के अनुसार गुरू जी का एक युद्ध लिखने पर उत्साहित हो रहा हैं। इस के पश्चात यह गाथा समाप्त की जाएगी। आप ध्यान देकर सुनें। गुरू जी की महिमा तो शेश गणेश भी नहीं लिख सकते।

॥ चमकौर का युद्ध ॥

इस युद्ध के पूर्व गुरूजी ने अनेकों युध किये थे, जिस में पहाड़ी हिंदु राजे भी गुरू जी के विरुद्ध लड़ने के लिये आये थे, परंतु गुरू जी के लक्ष भेदी महानतम तीरों की बुछार के आगे उन का ठहरना असंभव था। यह

धर्म विद्रोही शाह औरंगज़ेब के अधीन थे।

सत्य बात तो यह है कि यदि यह बाईस धारा पर्वतीय राजे महाराजे गुरू जी के विरुद्ध न लड़ कर धर्म के पक्ष में युद्ध करते तो आज भारत का मान चित्र किसी और ही प्रकार से दृष्टी गोचर होता परंतु हाय री गृह कला तेरा सत्यानाश हो। तू ने भारत को गारत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी उन परबतीय नरेशों ने अनेक बार मुंह की खाई तथा संसार से अपना काला मुख ले कर यम लोक को चले गये।

गुरू जी का एक एक तीर दो दो कोस पर दुष्ट दल दलन कर रहा था उस समय दिल्ली के बादशाह ने लाहौर के सूबे दिलावर खां को और ज़बरदस्त खां तथा पेशावर के सूबे नज़ाबत खां को एक असाधारण हुकम भेजा कि तुमें अनेक वर्ष युद्ध करते व्यतीत हुए हैं परंतु मुठी भर सिख तुम अपने आधीन नहीं कर सके। अब तुम गुरू गोविंद सिंघ को शीघ्र ही हमारे सन्मुख हाजर करो। वरना तुमारा कल्याण नहीं है।

ऊपर के शाही हुकम के अनुसार उन सूबों ने अगणित सेना एकत्र कर ली। पहाड़ी राजा जो हिंदु कहलाते थे। वे भी तुरक सेना की ओर हो गये। यह समस्त सेना १० लाख हो गई।

इस सेना ने आनंदपुर को चारों ओर से घेर लिया। श्री गुरू गोबिंद सिंघ जी के पास केवल १०००० दश सहस्र सेना थी, जो तुरकी सेना के घेरे में घिर गई थी, अंत में २२ ज्यैष्ट संवत १७६१ विक्रम को दुशमणों ने काली घटा की भांति किले पर धावा कर दिया। अब बहादुर सिंघ भी वीरत्व प्राप्त करने के लिये सामने आये। एक एक वीर ने अनेकों यवनों को धरा शाई किया, यवन सेना ने अनेक आक्रमण किये, परंतु दुर्ग पर विजय न पा सके। तब मुसलमान सेना ने लड़ना छोड़ कर केवल किले के मार्ग बंद कर दिये, ता कि बाहर से राशन आदिक भीतर न जा सके। यद्यपि किले की भीतर खाद्य सामग्री पर्याप्त थी, परंतु पांच मास तक घेरा पड़ा रहने से वह समाप्त होने लगी। एक एक मुठी चने खाकर भी वीर

सिखों ने अदभुत युद्ध किया। अब गुरू जी ने देखा कि यहां से निकलना अत्यंत कठिन है, तब बहुत सा सामान सतलुज नदी में गेर दिया, हाथी घोड़े आदिक भूख से व्याकुल होकर मरने लगे। गुरू जी प्रत्येक मोरचा पर स्वयं जाकर सेना को उतसाहित करते थे। सिख वीर अब भूख से व्याकुल हो गये।

उधर देश बर्बाद होने लगा। खाद्य सामग्री का अभाव हो गया। तब मुसलमान अफसरो ने एक पत्र गुरू जी की ओर भेजा। वह पत्र इस प्रकार था।

॥ पत्र ॥

वीरवर गोबिंद सिंध हम कुरान शरीफ की कसम खा कर कहते हैं कि आप यदि दुर्ग हमारे हवाले कर दो, तथा अपनी जान और धन सामान लेकर यदि निकल जाओ तो हमें कोई भी उजर नहीं होगा, तथा हम तुमें कभी भी नहीं रोकेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि आप इस अपार जन संहार को बंद करने के लिए इस दुर्ग को हमारे हवाले करके स्वयं शांति से प्रस्थान कर जाओगे।

यह पत्र गुरू जी तक पौंहचा दिया गया, गुरू जी ने मुसलमानों की कसमों पर विश्वास तो नहीं किया परंतु मसंदों ने माता जी को विवश कर दिया। और कहा गया कि यदि आप किला नहीं छोड़ते तो हम लोग बिना आप की आज्ञा के चले जायेंगे, क्योंकि भूखे मरने से तो लड़ कर मरना कहीं अच्छा है। गुरू जी ने कहा भाई! पांच दिन और निर्बाह करो, मुसलमान सेना जाने ही वाली है यदि अब बाहर निकलोगे तो बुरी प्रकार मारे जाओगे, मुसलमानों की कसम पर विश्वास नहीं करना चाहीये। यदि परीक्षा लेनी है तो लो हम एक आज्ञा पत्र भेजते हैं, गुरू जी ने उन को लिखा कि सामान निकालने के लिये तुम ऊंट घोड़े आदिक भेज दो हम किला छोड़ देंगे। उन लोगों ने खच्चर ऊंट आदिक बहुत ही प्रसन्न हो कर भेज दिये, गुरू जी ने कूड़ा कर्कट प्याले टूटे हुए मट्टी के बर्तन उन पर लाद

कर बाहर भेज दिये। अभी थोड़ी ही दूर गये थे कि बस मुसलमान सेना लूटने पर आ गई, और सभी कुछ लूट लिया। परंतु जब लूट का माल देखा तो सभी लज्जित हो गये, यह परीक्षा लेकर गुरू जी ने सिखों को धैर्य दिया इस से सिख वीर दो दिन और लड़े। परंतु भूख ने सब कुछ भुला दिया और स्वयं किला छोड़ कर बाहर जाने को तैयार हो गये, उस समय गुरू जी ने फरमाया कि यदि आप मेरी आज्ञा नहीं मानते तो मुझे लिख कर दे दो कि हम गुरू के सिख नहीं हैं।

भूखा आदमी कौन सा पाप नहीं करता, २०० दो शत सिखों ने बेदावा लिख दिया और स्वयं चले गये। गुरू जी ने बेदावे का कागज़ अपनी जेब में रख लिया, और १५ मार्ग शीर्ष १७६१ विक्रम को मातायें और पुस्तकें डोलों में रख कर भाई धर्म सिंह और मोहकम सिंह ईशर सिंह मिलखा सिंह जुवाहर सिंह आदिक सर्दारों को साथ करके सिरमौर के राजा की ओर रवाना कर दिया। और गुलाब राय तथा श्याम सिंह को पत्र दे कर राजा की ओर भेज दिया।

फिर यथा योग्य प्रसाद पाकर गुरू जी महाराज सिखों के सहित एवम अपने सुपुत्रों को साथ लेकर प्रातःकाल अनंदपुर से प्रस्थान किया। जब कीरत पुर से कुछ आगे गये तो मुसलमानों ने हमला कर दिया, बहुत सी सेना तो नगर और किला लूटने में लग गई। शेष सेना गुरू जी के पीछे भागी, अब गुरू जी सरसा नदी के तट पर पौंहचे तो उस समय नदी में बहुत पानी आया हुआ था,वहां सामानके सहित रुकना पड़ा इतनेमें शाही सेना आ गई।

गुरू जी ने साहिब जादे के नेतृत्व में बहुत से शूरवीर सिख युद्ध के लिये आगे किये, और अनेक वैरी मार कर कुछ मार्ग बनाया। परंतु नदी के चढ़ाव ने किसी को पार नहीं जाने दिया। अनेकों सिंघ नदी की धार में बह गए, और कुछ तलवार की धार में वीर गति को प्राप्त कर गए। सामान लूटा गया। माता साहिबां जी के रथ और डोले उसी स्थान पर

ही रह गए। माताओं और सिख वीरों ने अत्यंत कठिनाई से पार किया। किसी प्रकार का नियम न रहा जिधर किसी को मार्ग मिला उधर को ही चला गया बड़ी माता जी तथा दो साहिबजादे एक खच्चर पर सुवार करा के अपने घर का सेवक जिस का नाम गंगू ब्राहमण था, वह अपने गांव (खेड़ी मोरिंडा के निकट) में ले गया, उस पापी ने माता के पास जुवाहरात देख कर तथा महान लालच वश होकर पकड़वा दिया। गुरू जी की दोनों धर्म पत्नियों को पुरुष वेष करवा कर जुवाहर सिंघ आदिक ने दिल्ली में पहुँचा दिया, वहां उन का अपना घर था, इन के साथ बीबी भागो दो गोलियां तथा भाई मनी सिंघ जी गये।

इधर दोनों बड़े साहिबजादे तथा दया सिंघ आदिक एक सौ सुवार और गुरू जी नदी पार होकर रोपड़ की ओर आये, रोपड़ के पठानों ने आप को घेरना चाहा परंतु गुरू जी उन का मुंह मोड़ कर आगे चले गए, फिर चमकौर में एक कच्ची गढ़ी में दाखल हो गए। यहां गुरू जी के साथ केवल ४० चालीस सिंघ थे, और दोनों सुपुत्र थे बाकी वीर एक पहाड़ी की दरार में उदे सिंघ के नेतृत्व में बहुत देर तक युद्ध करते वीर गति को प्राप्त कर गये, गुरू जी एक एक सिख को बाहर भेजते थे, वह एक वीर अनेकों को यम धाम पहुँचा कर वीर गति को प्राप्त होता गया। अब सिंघ थोड़े से शेश रह गये। फिर गुरू जी के बड़े सुपुत्र ने आज्ञा मांगी, तब गुरू जी ने उसे क्षत्रित्व का उपदेश देकर विदा किया। साहिब सिंघ तथा मोहकम सिंघ भी साहिबजादे अजीत सिंघ के साथ रण भूमी में आए। यह युद्ध देखने वाला था साहिबजादा रण में इस प्रकार ललकार रहा था जैसे हस्तियों के समूह में एक शेर दहाड़ रहा हो। जो सामणे आया उस ने पानी नहीं मांगा। साहिबजादे की तेग उस यवन सेना में इस प्रकार चमक रही थी जैसे कृष्ण घटाओं में पूर्ण वेग से बिजली चमकती है इस प्रकार अनेकों पापीओं को मार कर यह सभी वीर गति को प्राप्त कर गये।

जब बड़े भाई को इस प्रकार कार्य करते एवम दुष्ट संहार करके कीर्ति

प्राप्त करते देखा, तब छोटा साहिबज़ादा जुझार सिंघ कब पीछे रहने वाला था उस ने भी आज्ञा मांगी। गुरू जी ने उस का मुख धुला कर स्वयं दस्तार सजा कर उपदेश का अमृत पिलाया। छोटी सी तलवार दे कर तथा पीठ पर थापी देकर कहा—बेटा! हमारा सर्वस्व धर्म पर न्योछावर होने के लिये ही संसार में प्रकट हुआ है जाओ वैरी दल को दलन करके वीर गति प्राप्त करो। संसार में यश और परलोक में सुगति हासल करो। बालक अभी अल्पवयस्क था जब शाही सेना विशाल देखी तो कुछ अधीर हो कर युध से लोट आया आकर गुरू जी से पानी पीने के लिए मांगा। गुरू जी ने कहा—हे पुत्र! तेरे लिए अब यहां पर पानी नहीं है। तेरे पीने योग्य पानी तो तेरे अग्रज भ्राता के पास है। यह सुन कर शिंघ ललकार कर के गुरू पुत्र दुशमणों पर टूट पड़ा। हिम्मत सिंघ नंद सिंघ आलम सिंघ इन वीरों ने गुरू पुत्र का साथ दिया। अस्मत खां नाहर खां तथा और बहुत से जालमों को पछाड़ कर गुरू पुत्र ने वीर गति प्राप्त की।

इतने में रात हो गई गुरू जी ने चार सिंघों को कहा कि तुम चारों ओर तीर चलाते रहो। और स्वयं अपने सभी वस्त्र संत सिंघ को देकर उसी स्थान पर रहने की आज्ञा दी और स्वयं नंगे पैर वेष बदल कर गुरू जी रवाना हुए। रात्री के समय अनेक दुर्गम स्थानों को पार करते हुए तथा अनेकों कष्ट झीलते और उच्च के पीर बन कर बहुत दिनों के पश्चात आलम गीर गांव में पहुंचे वहां मनी सिंघ के भाई निगाहीया सिंघ ने सेवा की और एक घोड़ा भेंट किया। उस पर गुरू जी सुवार हो कर सीलो आणी गांव में आये। और कुछ आदमी भेज कर छोटे साहिबजादों की खबर मंगवाने का प्रयत्न किया।

छोटे गुरू पुत्रों का बलिदान॥

जब गुरू गोबिंद सिंघ जी आनंद पुर से चले तो उस समय गुरू पुत्र जोरावर सिंघ की आयु आठ वर्ष और छोटे गुरू पुत्र फतह सिंघ की आयु

छः वर्ष की थीं आप दोनों बड़ी माता गुजरी जी के साथ अपार धन राशी लेकर अपने घर के रसोईये ब्राह्मण गंगू के साथ उस के नगर खेड़ी में आ गए उस गंगू ने माता जी का धन तो स्वयं हजम कर लिया और नाजम सरहंद को खबर कर के माता जी को और गुरू पुत्रों को पकड़वा दिया। सूबा सरहंद ने माता जी को ठंडे बुर्ज में बंदी कर लिया। फिर सूबे ने कहा कि यदि तुम मुसलमान हो जाओगे तो बच रहोगे नहीं तो बहुत ही बुरी मौत मारे जाओगे। तब साहिबजादों ने गरज कर कहा—अरे नीच हम गुरू हर गोबिंद के प्रपौत्र तथा गुरू तेग बहादर के पौत्र और एवम गुरू कलगीधर गोविंद सिंघ के पुत्र हैं। वह कौन सी शक्ति है जो हम पर अपना प्रभाव डाल सके तथा हमारे पवित्र धर्म को हम से छीन सके। स्वल्प जीवन के लिए पतित होकर मरना कायरों का काम होता है।

यह मुंह तोड़ उत्तर सुन कर सूबा सरहंद ने हुकम दिया कि इन दोनो को दीवार में चिना कर मारा जाय। बस उसी समय दोनो गुरू पुत्रों को दीवार में चिनाना प्रारंभ हो गया। जब दीवार पेट तक आई तब फिर सूबे ने कहा यदि मुसलमान हो जाओ तो तुमें स्वतंत्र जीवन जिनमें पूर्ण भोग सामग्री होगी वह प्रदान की जायगी। मगर वे पुत्र गुरू गोविंद सिंघ के थे। वही करारा उत्तर तथा पहिले से भी कुछ तेज उत्तर सूबे को मिला। फिर दीवार चिनी जाने लगी। जब दीवार कंधों तक आई तब फिर सूबे ने कहा—हे बालको ! अब भी समय है, बस मुसलमान बन कर अपने प्राण बचा लो, और शाही मान प्राप्त कर लो। उधर से फिर इनकार हुआ। तब गुरू पुत्रों ने कहा अरे पापी यह वृथा की बकवास बंद कर, तथा जो पाप तूने करना है उसे शीघ्र पूरा कर। वह देख मेरे भाई जी मुझे अपने निकट बुला रहे हैं। तेरे पापी को देखने से महान पाप लग रहा है।

उधर माता ने सुना कि मेरे सुपुत्र के दुलारों को दीवार में चुनाया जा रहा है। तब माता गुजरी जी ठंडे बुरज से छलांग मार कर अपने

प्राणों को पति चर्णों में ले गईं। उधर गुरू जी ने बच्चों का दीवार में चुने जाना तथा पूज्या माता का बलिदान सुना तो फरमाने लगे, हे संगत वे मरे नहीं। वे तो सदैव के लिये अमर हो गये हैं, जब तक संसार में चंद्र सूर्य हैं, तब तक उन के पवित्र नाम पर पुष्प वर्षा होती रहेगी। और पापी सूबे सरहंद अथवा गंगू जैसों के नाम पर संसार थूकेगा, जो धर्मात्मा धर्म के ऊपर न्योछावर होते हैं,उनके नामकी रचा धर्म करता है। शूरवीरों को शूरवीर मारते आए हैं। परंतु इन पापीओं ने निर्दोश बच्चों का वध किया है। इन को एक दिन पश्चाताप अवश्य ही होगा। इस का फल यह होगा कि यह पापी जालम राज्य शीघ्र ही नाश हो जायगा। तथा इधर की ईंटें सतलुज से पार जा लगेंगी। गुरू जी के शब्द पूर्ण हुए। सरहंद की ईंट से ईंट बज गई, तथा अंगरेज ने सरहंद के महलों की ईंटें फरोखन कीं जो इधर आ लगीं। माझा प्रांत के कुछ सिखों ने गुरू जी को संदेश भेजा कि आप ने हकूमत से टकर लेकर उचित नहीं किया। अब भी यदि आप चाहो तो हम बादशाह से आप की सुलह करवा देते हैं,गुरू जी ने उत्तर दिया भाई ! आप कुछ गलती पर हो, मैं संसार में राज्य सुख के लिए नहीं आया। मैं तो पिता के पद चिन्हों पर चल कर धर्म मर्यादा को पालन करूंगा तब उन मझैल सिखों के होश ठिकाने आ गये।

इधर सूबा सरहंद बहुत सी सेना लेकर गुरू जी से लड़ने को चला। तब यह मझैल सिंघ क्रोध में आ गए उनों ने प्रण किया और कहा–

सूरा सो पहिचानियें जो लड़े दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कट मरे कबहूं न छाडे खेत ॥

अर्थात जब एक दिन निश्चय मरना है तो क्यों न गुरू जी के लिए ही यह नश्वर शरीर त्यागन कर दिया जाय इस विचार के केवल ४० चालीस पुरख और एक स्त्री जिस का नाम माई भागो था। यही मैदान में गरजे। यहां की पवित्र भूमी जहां मुक्तसर बसा हुआ है। यह धरती निर्जन कंटक पूर्ण वन था। यहां मोरचा लगा कर चालीस वीर छुप कर

बैठ गये।

इधर मुसलमान सेना जब निकट आई तो बहादर सिंघों ने बंदूकें दाग दीं। मुगल फौज घबरा गई। अब महान संग्राम आरंभ हो गया। उधर हजारों और इधर ४० चालीस गुरू के वीर सिंघ सिपाही थे। सिंघ वीर तलवारें लेकर वैरी सैना के टुकड़े २ करने लगे। उधर गुरू जी एक ऊंचे स्थान पर बैठ कर यह दृश्य देख रहे थे। तथा अपनी ओर से भी कुछ वीर भेजे और स्वयं भी तीरों की बुछार करने लगे।

अंत में सूबा सरहंद अपने अनेकों साथी यम लोक भिजवा कर भाग गया। क्योंकि उस स्थान से ३० कोस की दूरी पर ही जल मिल सकता था एक छंब (पानी का बड़ा जोहड़) निकट था जो गुरू जी के अधिकार में था, इस के अतिरिक्त गुरू जी की शर वृष्टी नें मुसलों के पांव उखेड़ दिये, और वे भाग निकले।

इस संग्राम में ४० चालीस सिंघ बलीदान हुए गुरू जी अब उन वीरों के निकट आकर अपने दोपटे से उन वीर गति प्राप्त योधाओं के मुख पोंछने लगे। तथा धन्य २ शब्द उचारण करने लगे। तथा पांच हजारी दश हजारी यह पदवीयें श्री मुख से प्रदान कीं। इन में महां सिंघ नाम का एक योधा अभी सिसक रहा था, गुरू जी ने उस के मुख में जल डाला। जब उसे कुछ होश हुई, तब गुरू जी ने कहा हे वीर वर! कुछ वर मांगो। उस ने कहा हे महाराज! आनंद पुर में जो भूल से सिखों ने बेदावा लिखा था, वह क्षमा करके फाड़ दो, और टूटी हुई फिर जोड़ लो, बस मैं यही चाहता हूँ। तब गुरू जी ने प्रसन्न होकर कहा-

॥ धन्य है सिखी ॥

यह कह कर वह बेदावे का कागज फाड़ दिया, फिर युद्ध में लड़ कर घायल हुई एक स्त्री का आप ने उपचार किया। वह ठीक हो गई, तब गुरू जी उस देवी को अपने साथ ही ले गये, दूसरे दिन उन वीरों का अंतिम

संस्कार किया। तथा उन को मुक्ते शब्द से सुशोभित किया, मुक्ते का अर्थ है, जिन को मोक्ष धाम प्राप्त हुआ हो। तथा उस स्थान का नाम मुक्तसर रखा, यहां आज तक माघ मास की संक्रांति को मेला लगता है।

फिर गुरू जी वहां से अनेक स्थानों पर सद उपदेश देते हुए दक्षिण में अबचल नगर में जा पहुँचे।

एक दिन गोदावरी नदी के पार माधो दास नामी बैरागी साधु के स्थान पर गुरू जी गये, उस के जादू वाले पलंग पर बैठ गए। उस समय वैरागी कहीं बाहर गया हुआ था, उस ने आकर पलंग उलटाने का प्रयत्न किया, तथा सफल न हुआ। अंत में गुरू जी के चर्णों पर गिर गया। गुरू जी ने पूछा तुम कौन हो, उस ने उत्तर दिया मैं तो (बंदा) ,हूं। गुरू जी ने फरमाया यदि तू बंदा है तो सेवा करो। उस ने कहा मेरा शिर भी आप के आगे हाजर है। कुछ दिन के पश्चात गुरू जी ने खालसा सेना का सेना पति बना कर बंदे को पांच तीर देकर उपदेश दिया-कि यती रहना गुरू नहीं बननां खालसा की सम्मती से चलना और सत्य बोलना यह बातें कभी नहीं भूलनी। यदि इन के उलट आचरण करेगा तो तुमारा नाश हो जाएगा। जाओ पापीयों का संहार करो, यह आज्ञा पाकर बंदा पंजाब की ओर आया। तथा गुरू जी सत्य नाम का उपदेश करने लगे।

कहते हैं कि एक बार बहादुर शाह गुरू जी के दर्बार में आया। और एक बहुमूल्य हीरा भेंट करके नमस्कार करके गोल कंडा की ओर चला गया था, गुरू जी ने वह हीरा नदी में फैंक दिया, जब बादशाह कुछ निराश हुआ तो गुरू जी ने बादशाह को वह नदी का घाट ही हीरों से भरा दिखाया। उस घाट का नाम आज तक हीरा घाट ही प्रख्यात है।

गुरू जी को बंदे की सफलता तथा दुष्टों के नाश की सूचना मिलती रही, और दो मुसलमान सेवक गुल खां तथा अताउल खां गुरू जी के निकट रहा करते थे, इन के पिता को गुरू हरगोविंद जी ने युद्ध में मारा था, यह दोनों बदले की ताक में रहते थे।

एक दिन गुरू जी अपने शामयाने में सो रहे थे, तब नमक हराम गुल खां को समय मिल गया, उस ने गुरू जी के पेट में कटार घोंप दी। जखम उसी वक्त सिलाया गया, एक दिन जब जखम अभी कच्चा ही था, तब गुरू जी ने एक कठोर धनुष का चिला चढ़ाया। जोर लाने से टांके टूट गए। संवत १७६५ विक्रम कार्तिक शुक्ला ५ पंचमी को गुरू जी ने स्नान किया। नवीन वस्त्र धारण किये। घोड़े को सजाया गया स्वयं शस्त्र पहिर कर दीवान लगाया, और गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश करके विधि पूर्वक पांच पैसे नारयल भेंट करके नमस्कार किया, और श्री मुख से प्रसन्न होकर उचारण किया।

दोहरा ॥ आज्ञा भई अकाल की तबी चलायो पंथ ॥
सभ सिखन को हुकम है गुरू मानीयो ग्रंथ ॥

फिर अपार कड़ाह प्रसाद बांटा गया। चंदन की एक विशाल चिता बनाई गई। उस के इर्द गिर्द कनात लगा दी गई, फिर आप घोड़े पर चढ़ कर चिता की ओर आये। फिर तमाम सिखों को आज्ञा दी, कि कनात के भीतर कोई न आये। और हमारी चिता को कोई भी नहीं फोले, और हमारी समाधी न बनाई जाय। यह हुकम कर के स्वयं कनात के भीतर चले गये फिर भीतर से आवाज आई–

श्री वाहिगुरू जी का खालसा श्री वाहिगुरू जी की फतह ॥

अंत में गुरू जी महाराज के चर्णों में प्रार्थना की जाती है हे कलगी धर महाराज जिस प्रकार आप ने कष्ट सहन कर के पंथ का सृजन किया है उसी प्रकार आप इस की रक्षा करो तथा आप सिखों के भीतर अपने द्विय गुणों का संचार कर दो। हे पिता ! हम आप को कभी न भूलें।

जो बोले सो निहाल ॥ सत्य श्री अकाल ॥

॥ संपूर्ण ॥



हिंदी में छपे हुए धार्मिक पुस्तक

इच्छा से जहाज पहाड़ से जा लगा। जहाज में से आवाज आई ! भाई ! जिस ने उतरना हो वह जहाज से उतर सकता है। पीर तत्त्तण उतर कर उस पर्वत पर चढ़ गया। ऊपर बहुत सुंदर स्थान देखा। जहां सौय्या बिछी हैं और मसनद भी सुंदर बिछ रही है। सामग्री सभी है परंतु वहां रहने वाला कोई भी नहीं है, तब पीर ने मन में सोचा यह पदार्थ अकेले नहीं हैं, यहां अवश्य कोई न कोई आएगा। फिर सय्यद जलाल उतर कर समुंद्र की सैर करने लगा। समुंद्र में वर्षा होती देख कर सय्यद ने कहा- हे खुदा ! जहां वर्षा की अवश्यकता है। वहां तो एक बूंद नहीं गिरती। अपितु जहां अवश्यकता नहीं है वहां प्रतित्तण वर्षा होती रहती है। पीर के इन शब्दों से वर्षा हट गई। तब पीर फिर परबत पर चला गया। तो वहां देखा कि बहुत से महात्मा जन अपने २ आसनों पर बैठ कर ईश्वर की भक्ति में लीन हो रहे हैं। तब पीर भी उन के निकट बैठ गया। अर्धरात्री के समय दैव कृपा से उन के लिये भोजन के थाल उतरे। तब एक ने उठ कर अपने गुरू को नमस्कार किया। गुरू ने कहा-अरे ! भोजन आया है या नहीं, उस ने उत्तर दिया हां महाराज ! भोजन तो आ गया है। परंतु हमें संतोष नहीं हुआ। गुरु ने कहा-कि संतुष्ट क्यों नही हुए ! तब उस ने कहा हे महाराज ! एक धरती का साधु आया है, उस के लिये भोजन नहीं आया। तब गुरु ने कहा-उस ने परमेश्वर की इच्छा नही मानीं होगी। इतने में भोजन पा कर सभी चले गये। और जाते नजर नहीं आये। जलाल सय्यद रात्री को विश्राम करके प्रातः फिर समुंद्र की ओर गया। क्या देखता है कि एक ग्राह जहाज को खींचे जा रहा है। और जहाज डूबता जा रहा है। तब जलाल ने कहा हे खुदा ! इस जहाज में वे भी हैं जो अपने परिवार से बिछुड़ कर आये हैं। वे भी हैं, जिनों में कृण लेकर कुछ सामान भरा है। अगर यह जहाज डूब गया। तो तेरे हाथ क्या आयेगा। यह वात सय्यद ने कही। तो वह जहाज डूबने से बच गया।

प्रातः फिर सय्यद उसी स्थान पर गया, जहां साधू थे। आज किसी के लिये भी भोजन नहीं उतरा, तब वे साधु हैरान होकर अपने गुरू के निकट गये। और गुरू को कहा हे गुरू जो ! कल वाला जो अतिथी है, वह आज भी भूखा ही रहा है। गुरू ने कहा-अच्छा उसको यहां बुला लाओ, हम देखेंगे कि उस से कौन सा अपराध हुआ है। वह संत सय्यद को बुला कर ले गया, तब उस महा पुरुष ने पूछा-हे भाई तू कौन है और अपने आने जाने का परिचय दे, सय्यद ने कहा-हे महाराज ! मैं उच्च से आ रहा हूँ। और मक्का में जा रहा हूं। महा पुरुष ने कहा-हे संत ! मक्के में जाने का क्या प्रयोजन है ? तब सैय्यद ने कहा-हे महाराज ! मैं गुरमुखों के लक्षण पूछने जा रहा हूँ। और साथ ही देखूंगा कि गुरमुख लोक किस प्रकार के होते हैं, उस संत ने कहा हे भाई ! तुमारी आयु कितनी है। सय्यद ने कहा-यह तो मुझे कुछ भी ग्यान नहीं है। उस संत ने कहा-अच्छा यह बताओ कि तुम इन दो दिनों को छोड़ कर क्या आगे भी कभी भूखे रहे हो अथवा नहीं। सय्यद ने कहा-हे महाराज ! मैं अपनी आयु में कभी भी भूखा नहीं रहा, यही दो दिन भूखे व्यतीत किये हैं। फिर उस संत ने कहा-हे भाई ! तू अपने पाप प्रकट कर, जलाल ने कहा-हे महाराज ! मैं तो इन दो दिनों में समुंद्र की सैर ही करता रहा हूं। और तरंगें ही देखता रहा हूं। एक दिन वर्षा होती देख कर कहा था हे ईश्वर तू यह क्या करता है। जहां आवश्यकता नहीं वहां तो वर्षा कर रहा है, और जहां जरूरत नहीं वहां एक बूंद भी नहीं बरसाता। मेरे इन शब्दों से वर्षा बंद हो गई थी फिर दूसरे दिन एक जहाज़ डूबते देखा तो मैं ने कहा हे खुदावंद ! इस जहाज़ में अनेक प्राणी हैं जो परिवार को छोड़ कर आ रहे हैं, तथा अनेकों ने ऋण लेकर माल भर रखा है। भला जहाज़ डुबो कर तेरे हाथ क्या आयेगा ? तब जहाज़ डूबने से बच गया था, जब सय्यद ने यह बात सुनाई तो उस महा पुरुष ने कहा-हे मित्रो ! इस मनमुख पुरुष को धक्के मार कर बाहर निकाल दो। क्योंकि यह मिथ्यावादी है अतः हमारे निकट

रहने के योग्य नहीं है, तब सय्यद ने कहा हे महाराज ! मैं ने कौन सा पाप किया है ? तथा मैं ने कौन सी बुराई की है, उस महात्मा ने कहा—अरे मूरख जो उस परमात्मा सर्व शक्तिमान की इच्छा है तू उस पर समालोचना करने वाला है। तथा उसे दयालू नहीं मानता, तेरे ही कथन से सभी काम उलट पलट हुए हैं। तथा तू उस का परिक्व प्रेमी नहीं है, जो गुरमुख होते हैं वे उस की इच्छा पर प्रसन्न होते हैं जो पुरुष उस जगदीश्वर के प्रत्येक कर्तव्य को सहर्ष ग्रहण करे, तथा उस की इच्छा पर निर्भर रहे। उस के किसी भी काम में हाथ न डाले, मन इच्छा को ईश्वर इच्छा पर न्योछावर कर दे। प्रत्येक स्थान पर परमात्मा को माने, और गुरू की आज्ञा को प्रमाण माने। हे भाई ! जिन में यह लक्षण पाये जाएं वह गुरमुख कहलाने के अधिकारी होते हैं। और जो प्राणी उस की आज्ञा न माने तथा उस पर संदेह भाव रखे, उसी को विमुख तथा मनमुख कहा जाता है। संत जलाल ने कहा हे महाराज ! मेरे अहोभाग्य हैं जो मेरे मन के संशय इसी स्थान पर दूर हो गये हैं। मैं तो इसी का उत्तर लेने के लिये मक्का जा रहा था, मन में विचार था कि मैं अपने मज़हब के विद्वानों से मिल कर इसी शंका को दूर करूं। कि विमुख और गुरमुख में क्या भेद हैं। तब उस संत ने कहा हे पीर ! क्या तुम अपने स्थान पर भी किसी को छोड़ आये हो तब जलाल ने कहा जी मैं एक दरवेश को वहां छोड़ आया हूँ। उस संत ने कहा—सुनो भाई ! जिस साधु को तुम अपने स्थान पर छोड़ आये हो, वह सभ कुछ जानते हैं। तथा सर्वांकर्यामी हैं, उन की शरण होने से तुम सभी सुख प्राप्त कर सकते हो। यहां तक कि वह परम पुरुष त्रिकालज्ञ तथा मोक्ष प्रदाता हैं। सय्यद ने कहा—आप ने मुझ पर अपार कृपा की है, मैं आप का कृतज्ञ हूँ।

फिर उस महापुरुष ने कहा हे मित्र ! अब यदि कोई ईश्वरेच्छा से जहाज इधर आ जाय, तो तुम उस पर सवार होकर वापस चले जाओ। अकस्मात एक जहाज उधर आ गया। सय्यद जलाल उस पर चढ़ कर

अपने स्थान पर आ गया। श्री गुरू नानक देव जी से मिल कर पीर जलाल बहुत प्रसन्न हुआ।

श्री गुरू जी–कहो सय्यद जी ! आप गुरमुखों का परिचय लेने गये थे। सो उस के बारे क्या पता ले कर आये हो।

सय्यद–हे श्री नानक देव ! जो कुछ मैं समझ कर आ रहा हूं वह आप भली प्रकार जानते ही हो। जो परमेश्वर की आग्या माने। और उस परमेश्वर की इच्छा पर प्रसन्न रहे। सुख दुख को सम कर जाने। उसे ही गुरमुख कहा जाता है। और जो इस के उलट आचरण करे वही विमुख है।

गुरू जी–हे सय्यद यह ग्यान तुमें कहां से प्राप्त हुआ है ?

सय्यद–हे महाराज ! मैंने इस ग्यान के साथ २ आप की पहिचान भी प्राप्त कर ली है। आप अंतर्यामी जगत के आधार रूप हैं। आप सभी कुछ जानने वाले सर्वग्य हैं। यह दोनों ग्गान एक महापुरुष की कृपा से मुझे प्राप्त हुए हैं इतनी कह कर सय्यद ने तमाम बात व्योरे वार कह कर सुना दी।

फिर कुछ दिनों के पश्चात श्री गुरू जी ने कहा–हे प्यारे सय्यद अब हम जाना चाहते हैं, उस ने कहा हे महाराज ! कुछ दिन और कृपा करो। फिर सय्यद ने श्री गुरू जी से अनेक परमार्थ की बातें कीं। और संतोष प्राप्त किया, फिर मर्दाने ने पूछा हे गुरू देव ! उस परबत पर जो साधु थे, जहां से इस ने ज्ञान प्राप्त किया है। वे साधू कौन थे, गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! वे जो साधु वहां थे, वे सभी महा रिषि नारद जी के शिश्य थे। वे पूरण साधू हैं, फिर मर्दाने ने कहा–हे गुरू देव ! अब आप का विचार किधर की सैर का है ? गुरू जी ने उत्तर दिया–हे मर्दाना ! आज तक हम ने अपना इरादा कभी भी नहीं बनाया। उस प्यारे परमात्मा की जिधर आज्ञा हो हम उधर ही चले जाते हैं। जहां जगदीश ले जाए उधर ही जाना हमारा लक्ष्य है। धन्य श्री गुरू नानक देव !

॥ साखी कंधार देश की ॥

वहां से श्री गुरू नानक देव जी महाराज तथा मैं और मर्दाना गंधा नदी के तट पर पौंहचे,वहां एक मुगल पठान फकीर था। उस का मित्र अली था वह गुरू जी को मिला, उस फकीर ने प्रशन किया-

शुमा नामा चिदारी।

तब गुरू जी ने उत्तर दिया-

हमारा नाम नानक निरंकारी

उस ने कहा-मायने फहि मीदम ॥ तब गुरू जी ने कहा-मा बंदा खुदायम ॥ उस ने कहा-शुमा पीर गुफतम ? मां पीर जिंदा यह उतर गुरू जी ने दिया फिर मुगल पूछने लगा शुमा पीर जिंदा पीर तब गुरू जी ने कहा-आर आर ।

मुगल ने कहा-मा इतकाद नेस्त।

गुरू जी-चे गुफतम।

मुग़ल-पैदाइश दे मुरदह जी।

गुरू जी-यक कुदाय पीर कुल आलम मुरीद।

श्री गुरू नानक फकीर खबर दार आहा। तब वह मुगल गुरू जी के चर्णों पर गिर गया।

फिर गुरू जी ने कहा-खुदाय दिगर सखा दार।

मुगल-शुमां पीर मा मुरीद।

गुरू जी-गुफल शुमा नाम बाबा वली कंधारी।

तब उस मुगल ने नमस्कार किया। फिर उस मुगल से ईश्वरीय वातें करके गुरू जी वहां से विदा हुए। और कहने लगे-हे बाला ! तथा मर्दाना, चलो तुमें एक और कफीर दा दर्शण करायें। फिर वहां से आप चलते २ वली कंधारी के पास आ पौंहचे।



॥ साखी वली कंधारी की ॥

बाले ने कहा–हे गुरू अंगद देव जी महाराज ! फिर हम दोनों गुरु जी के साथ चलते २ वली कंधारी के स्थान पर आ गये। उस समय वली कंधारी के निकट शरफ पठान दक्षिणी बैठा था, तब गुरु जी ने कहा–हे वली कंधारी ! असलामो लेकम। वली ने उत्तर दिया। व लेकुम सलाम आईये। तशरीफ रखीये। पीर जी शरफ हाजी हुई लुतफ हुआ। बखशीश हुआ। गुरु जी ने कहा–लुतफ खुदाय बंदा गुम राही करम बखश इलाही, तब शरफ पठान बोला पुरशी शरफ गुफत नानक दरुस्त माइना बोले कुलाह चि हवाल। तब गुरू जी ने कहा-कुलाह कुल एक खुदाय। सब ते वे परवाह। सिफत धरे एक निशाना। सब ते होई रहे बेगाना। गुफत नानक दरुस्त माइना। समझे तब जब खुले आइना।

फिर शरफ़ ने पूछा–कफ़नी चिकार करदी।

गुरू जी ने कहा–कफ़नी खौफ़ खादाय का देख मुरदा होय तजै सभ भेस ज़ालम जहान अलाह ने किआ। खलक एक अवर नहीं दूआ। गुफत नानक सुन शरफ इआणे। दरुस्त माइना जो हक्क पछाणे। शरफ़ पुरसी दंसे लीरां चिकरदी तां।

गुरू जी ने कहा–

से सालस कुल जहान। चार कतेब छुटे कुरान।
शरा शरीयत मानों नाहीं। शरीअत मारफत दावे माहीं।
बाहरों शाही अंदरों लाल। गुफत नानक दर पहुंचै हाल।

फिर शरफ़ कहने लगा–

पुरशीद कमर मुकता कि हवाल।

तब श्री गुरू नानक देव जी ने कहा–

मुकत मेहर खुदाइदी शाहद पीर बताइ। दूजे सेती फाकरा करहु ता पावहु राह निआइ। ऐसी रहणी जे रहै तां होवे दरुस्त ईमान। ज़रज़ु लम

न किसी पर करो पकड़ हलीमी खान गुफत नानक सुण शरफ आजजी मुकान ।

तब फिर शरफ़ ने कहा-गोदड़ी चिकार फकरां कन्न ।

तव गुरू नानक देव जी ने कहा-

गोदड़ी ज्ञान समझे एक खुदाय । सरी सबूरी सच तागा पाय । साध पीर मिल सीविये पाट न कबहू जाय । सब ते नीच कहाइए तो कुल अंग समाय । गुफत नानक सुण शरफ़ चलो हुकम रजाटा ।

फिर शरफ़ पुरशीद कौंस चिकार करदी ।

गुरू जी ने उत्तर दिया-

कौंस का मन बिंद कर कहीं निकल न जावे । पीर नसीहत राखीए आपणे घर आवे । लगन सगन तब जागई जब एक दिखावै । दिल दलील उठे नहीं काई मन ईमान मिलावै । गुफत नानक शरफ़ सुण तब फकर कहावै ।

फिर शरफ पुरशीद ठीकर चिह फरमूद ।

फिर उत्तर में गुरू जी ने फ़ुरमाया-

ठीकरा ऊजू को नाम भीष लेहु । नांगों एक खुदाय पै पीर फुरमाअश एहु । दूजा दिल ते दूर कर कर पैदा ना पैद । ऐसी मसलत होइ रहु कबहुं न पड़ीऐ कैद । गुफ़त नानक शरफ कीते पर कहा गुमान । फकर मारफत तउ मिलै दूजा गिड़े निशान ।

तव फिर शरफ मुरशीद-वैरागी त्रि फुरमाय । फिर गुरु श्री नानक देव जी कहने लगे-

वैराग ने ऐव होइ रहे । कीए को कीआ हीक है । करण हारे की सिफत वताय । मतलव पूरा करे खुदाय । गुफत नानक सुण शरफ इजानें । पीर पकड़े तव एक पछानें ।

शेख शरफ पठान विदर नगर का था । वह बाबा वली कंधारी के पास कुछ शंकाओं का उतर लेने के लिये आया था, यह बातें कंधार में

हुई। जब गुरू जी से शंका दूर हुई तब वह गुरू जी के चर्णों पर गिर पड़ा, और कहने लगा।

शुमा पीर बामुरीद। तब गुरू जी ने कहा-तू अपने बिदुर नगर में जाकर निवास कर। तब शरफ ने कहा-हे पीर नानक ! हमें आप का दीदार फिर कब तक होगा ? गुरू जी ने कहा-तुम अपने हृदय में ही दीदार कर लिया करो। भूल न जाना। शरफ ने कहा-हे प्यारे पीर दीदार तो दिल में होगा। फिर भी ऐसा भाग्य कहां है। गुरु जी ने कहा-यदि ऐसी ही भावना है। तो सुणो। एक शाहजादा मिरासी होगा। उस का दीदार करोगे। तो बस हमारा ही दीदार होगा। यह बात सत्य कर माननी, तब शरफ ने कहा-यह कब और कहां होगा। गुरू जी ने कहा-वह जो खुरमा नगर है वहां मर्दाने का पुत्र शहिजादा होगा। हम उसे वहां छोड़ आएंगे। फिर गुरू जी ने कहा-अब वली कंधारी का दीदार करिये।

फिर वली कंधारी ने कहा-हमें कुछ कौल इकरार कहो, गुरू जी ने कहा-हमारा यह कौल है दावा दूर करो सन्यास ख्वाजी वगैरा जितने भी फिरके हैं, सभी खुदा के हैं। यह विश्वास करे तब वह सच्चा फ़कीर है, वली कंधारी कहने लगा जब का आप का दीदार हुआ है। तब से यह दावा दूर हो गया है, फिर वली ने कहा-हे गुरू जी ! आप हमें अपने साथ ही ले चलो, गुरू जी ने कहा-हे वली ! हम ने आप को यहीं रखना है। वली ने कहा-जैसे आप की इच्छा गुरू जी ने फरमाया कि यह सारा मुलक तुमारा ही है।

॥ आगे साखी और चली ॥

गुरू जी महाराज मुझे (बाला) और मर्दाने को संग लेकर चलते २ उपदेश करते जा रहे थे, मर्दाने ने कहा-हे महाराज ! आप ने वली कंधारी पर अपार कृपा की है। इस का कारण हम सुनना चाहते हैं, गुरू जी ने कहा-हे मर्दाना ! यह वली कंधारी हमारा प्यारा मित्र है। इस ने त्रेता युग

में बहुत सेवा की थी, फिर मैं (बाले) पूछा हे महाराज ! जब यह वली कंधारी त्रेता युग में आप का मित्र रह चुका है, तब यह इस जन्म में मुसलमान कैसे हो गया। गुरू जी ने हंस कर उत्तर दिया हे बाला ! इस ने उस जन्म में एक कुत्ते को मारा था, उस के फल से उसे मुसलमान बनना पड़ा। और हम ने इस के साथ इकरार किया था और दीनानाथ से भी हम ने इकरार किया था। वली के साथ शेख शरफ़ भी पूर्ण हो गया है। मर्दाने ने पूछा हे महाराज ! शेष शरफ भी क्या वली के दरजे को पहुँचा है अथवा कुछ त्रुटी है तब गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! वली कंधारी अभी बहुत दूर है, परंतु मर्दाना शेख शरफ जैसा हो रहा है। वली कंधारी से अनेकों का भला होगा। क्योंकि वली कंधारी गुरू श्रेणी में है, मर्दाने ने पूछा हे महाराज ! दीना नाथ की क्या स्थिति है, गुरू जी ने कहा–दीना नाथ तो पहिले ही पूरण है। दीना नाथ की बिहंगम भक्ति हैं, और हमारी पंख भक्ति हैं। मर्दाने ने पूछा उस की बिहंगम भक्ति किस प्रकार हुई ? गुरू जी ने कहा उसे माया नहीं लगी, तब उस की भक्ति बिहंगम है। वह तो जन्म से ही हानि लाभ नहीं अते गृहस्थ भी नहीं, जब बड़ा होगा तब गृहस्थ करेगा। उस की संतान महा पुरुष होगी, और हमें तो पहिले ही गृहस्थ हुआ है। इस लिये हमारी भक्ति पंख है, मर्दाने ने कहा–हे महाराज ! क्या काबल नगर में भी कोई महा पुरुष है अथवा नहीं, गुरू जी ने कहा–हां एक है, परंतु पठानों में है। और बाबू खेल के शरीर में है। परंतु उसे अभी हवा नहीं लगी मर्दाने ने कहा क्या आप उस को मिलोगे या नहीं। गुरू जी ने उतर दिया कि हम ने उसे जरूर मिलना है। तव मैं और मर्दाना तथा गुरू जी बाबू खेल में चले गये। एक खाली दुकान पर जा बैठे। वहां एक पठान आया। और कहने लगा अरे गुंचे तुम कौन हो ? गुरु जी ने कहा–हम खुदा के बंदे हैं ! फिर उस ने कहा अरे गुंचे वंदे तो सभी खुदा के है। परंतु यहां बैठे हो किस से तुमारा कौन सा काम है। गुरु जी ने कहा–हम फकीर हैं तथा यहां एक

हमारा मित्र है। उस ने कहा उस का नाम बताओ तथा वह कौन होता है। गुरू जी ने उतर दिया कि वह क्षत्री है। तथा उस का नाम माणा है। फिर उस पठान ने कहा अरे गुंचे उस माणे के बाप का क्या नाम है, गुरू जी ने कहा उस के बाप का नाम खान चंद है। तब उस पठान ने कहा चलो मैं तुम को उस के पास ले चलता हूँ। गुरू जी ने कहा हम जाने को तैयार नहीं हैं। वह स्वयं यहां आ जायगा।

फिर उस पठान ने उस क्षत्री माणे को जाकर कहा अरे लाला दो फकीर तुमारे आशना आये हुए हैं। और बाजार में बैठे हैं, तथा कहते हैं, कि खानचंद क्षत्री का बेटा माणा हमारा मित्र है, मैनें उन को यहां ले आने को कहा तब उनों ने इनकार किया। और कहा कि माणा स्वयं यहां आएगा। उस माणे ने कहा मेरा तो कोई वाकफ नहीं है। पठान ने कहा वे तो तुमारा ही नाम लेते हैं नहीं तो हम अपने घर से रोटी ले जाते। जब यह सुना तो माण चंद ने सोचा मैं चलूं तो सही, परंतु अच्छा, फिर कुछ सोच कर माण चंद दो सेर मेवा लेकर गुरू जी के निकट गया। जाकर देखा तो गुरू जी बैठे हैं। माणे ने जाकर कहा–हे संत जी ! पैरी पए। फिर मेवा भेंट किया। गुरू जी ने कहा आओ हे माण चंद सत्य करतार आओ बैठ जाओ। फिर माणे ने कहा–हे महाराज ! साधु तो सभी के मित्र होते हैं। और संतों का प्रत्येक पुरुष सेवक है। परंतु लौकिक मर्यादा से मैं पूछना चाहता हूं कि आप कब से मेरे परिचित हैं ? गुरू जी ने कहा-हे माण चंद तुम को स्वय मेव पता चल जायगा। उस ने कहा आप का शुभ नाम क्या है। गुरू जी ने कहा मेरा नाम नानक निरंकारी है, और इस का नाम बाला है। एक हमारा मिरासी है वह बाहर है। माणे ने कहा आप का देश कौन सा है। गुरू जी ने कहा हे प्यारे ! हमारा देश आदिक सभी कुछ तुझे मालूम हो जायगा। तब गुरू जी ने एक मनोहर शब्द कहा–

॥ शब्द ॥

देस हमारा बेगम पुर कहाइ। तिस वतन सो आए। राजा तिस का एकंकार है तिस ने ईहां पठाए। माण चंद को राह बताया निरमल मारग पाया। नानक कहे सुण माण चंद जी हम तुम कउ तभी बुलाया।

तब माण चंद ने कहा-तुम तो और ही बातें करते हो, यह बातें व्यवहारिक नहीं हैं। गुरू जी ने कहा हे माण चंद! यह बातें सत्य हैं बाकी की बातें असत्य हैं फिर गुरू जी ने शब्द कहा-

॥ राग तिलंग महला १ ॥

जिन कीया तिन देखिआ क्या कहीऐ भाई। आपे जाणै करे आप जिन वाड़ी हैं लाई। राइसा पिआरे कराइसा सदा सुख होई। हौ प्यारे राइसा जित दूख रहे ना काई ॥१॥ रहाउ ॥ जिह रंग कंत न राविआ सा पछोताणी। हथ पिछोड़ै सिर धुणै जब रैण विहाणी। पछो तावा ना मिले जब चूकेगी सारी। तद फिर पिआरा रावीऐ आवेगी वारी ॥ ५ ॥ कंतलीआ सोहागणी मैथों वधवी एह। से गुन मंझ न आवनी कैजी दोस धरेह। जिनी सखिये सहु राविआ तिन पूछोगी जाय। पाइ लगहुं बिनती करउ लेउगी पंथ बताए। आप पछाणे नानका भय चंदन लावैं। गुन कामन कामन करै तउ प्यारे कउ पावैं ॥ ६ ॥ पाना वाड़ी होइ घर खर सार न जाणै। रसीया होवे मुसक का तब फूल पछाणै ॥७॥ धात मिलै फुनि धात कउ लिव लिवैं को धावैं ॥ सहिजे सहिजे मिलि रहै अन भौ कउ पावैं ॥८॥ जो दिल मिलया सो मिल रहिआ मिलिआ कहीऐ रे होई जे बहु तेरा लोचीऐ वाती मेल न होई ॥ ९ ॥ अपिउ पीवै जो नानका भ्रम भ्रमहि समावै। गुर परसादी जाणीऐ अमरा पद पावै ॥१०॥

॥ वारतक ॥

फिर माण चंद ने कहा-हे गुरू जी! इस जीव का भला कैसे हो? गुरू जी ने कहा-हे भाई! इस जीव का भला तभी होता है जब इस की परमेश्वर में अनन्य भक्ति होती है, तब माण चंद ने कहा-आप कोई विधि

ओ। जैसे अनन्य भक्ति उत्पन्न हो जाय। गुरू जी ने कहा-सुनो ! और नगेपन की परवाह न करे। एक करतार का ही ध्यान करे। अगर र दिल से निकले तो महान दुखी हो जाय। तब माण चंद कहने लगा । धन्य हैं यह कह कर चर्णों पर गिर गया। तब गुरू जी ने अपने । का डंडा दिया। और कहा कि इस डंडे को होश्यार होकर रखें। ण सिंघ ने वह डंडा सिर आंखों से लगाया। उस के प्रताप से माण सिंघ ग्यान चक्षु खुल गये। श्री गुरू नानक देव जी की कृपा से उस का द्धार हो गया, फिर गुरू जी ने उसे उतम उपदेश दिया। फिर गुरु जी हां से चल कर कावल धरती पर गये। और वहां अनेकों जींवों का ल्याण किया, फिर गुरु जी ने कहा-हे मर्दाना ! चलो अब तुम को ंघ प्रदेश की सैर करावें। फिर मुझे (वाले) और मर्दाने को साथ लेकर ुरु जी वहां से रवाना हुये।

॥ साखी बाल गुंदाई के टिल्ले की ॥

वहां से श्रीगुरु नानक देव बाल गुंदाई के टिल्ले पर आ बिराजे बाल गुंदाई के टिल्ले से आधा कोस की दूरी पर आप ने आसन जमाया। बाल गुंदाई पर एक संत रहा करता था। वस्त्र और भोजन तैयार करवा कर रख छोड़ता था। प्रत्येक अतिथी की सेवा किया करता था। यदि कोई साधू अतिथी आता सुने तो उस के सतकार को पालकी घोड़ा आदि भेज कर उसे भोजन खिलाने को बुला भेजना था, उस ने गुरू जी का आना सुना। तो अपने साथी तपस्यिों को कहा कि तुम जा कर उन को आदर सहित ले आओ। तपास्वीयों ने गुरू जी को आ कर कहा-हे महाराज ! आप आश्रम में चलो। क्यों कि बादल बरसने वाला है। गुरू जी ने उत्तर दिया, भाई ! हम तो अतीत साधु हैं जहां गुजरती हैं वहां ही गुजार लेते हैं। तुम को मंदिर में आराम है। और हम यहां ही प्रसन्न हैं। उनों ने बाल गुंदाई को जा कर कहा-कि बाहर तीन साधू आये हैं। हम ने बतहु